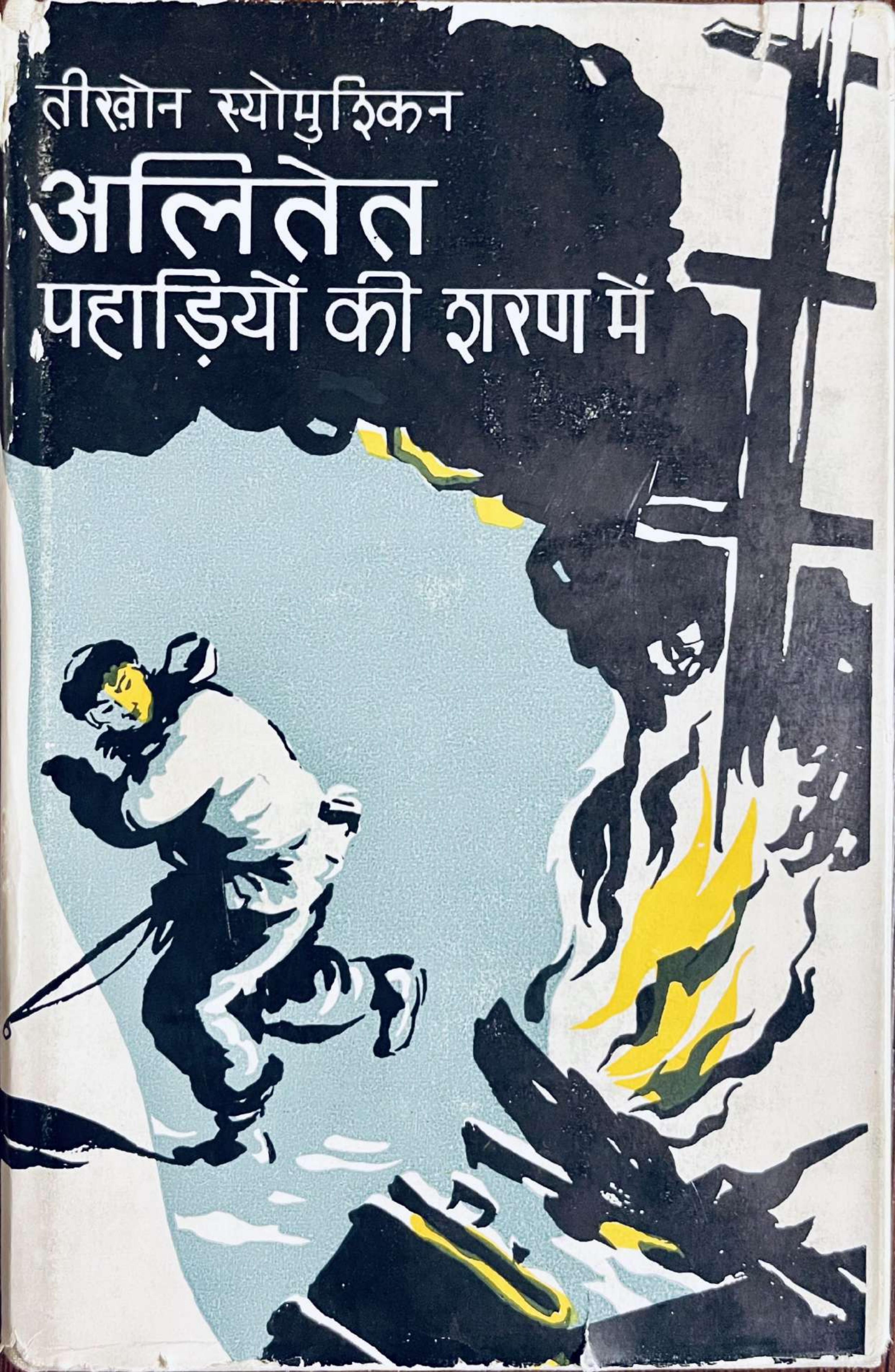

तीख़ोन स्योमुश्किन
अलितेत
पहाड़ियों की शरण में

ती ख़ोन
स्योमुश्किन

अलितेत पहाड़ियों की शरण में

'अलितेत पहाड़ियों की शरण में'—सोवियत संघ के सुदूर कोने में बसे हुए चुकोत्स्क प्रदेश से संबंधित उपन्यास। कुछ समय पहले नष्टप्राय होने जा रही चुकची जाति के नवजीवन प्रवेश की यह कहानी है।

"चुकोत्स्क में," उपन्यासकार तीख़ोन स्योमुश्किन कहते हैं, "मैं कई वर्ष रहा। बारहसिंगों और कुत्तों की गाड़ियों पर मैंने उसके असीम हिमावृत विस्तारों में २०,००० से अधिक किलोमीटर की यात्रा की। मैं धुएं से भरे चुकची यारंग और तंबू में रहा और बरफ़ के बीच सोने वाले थैले में सोया; फिर ऐसे फ़्लैटों में मैंने निवास किया जो सेंट्रल हीटिंग, बिजली और यहां तक कि टेलीफ़ोन से भी सुसज्जित थे।



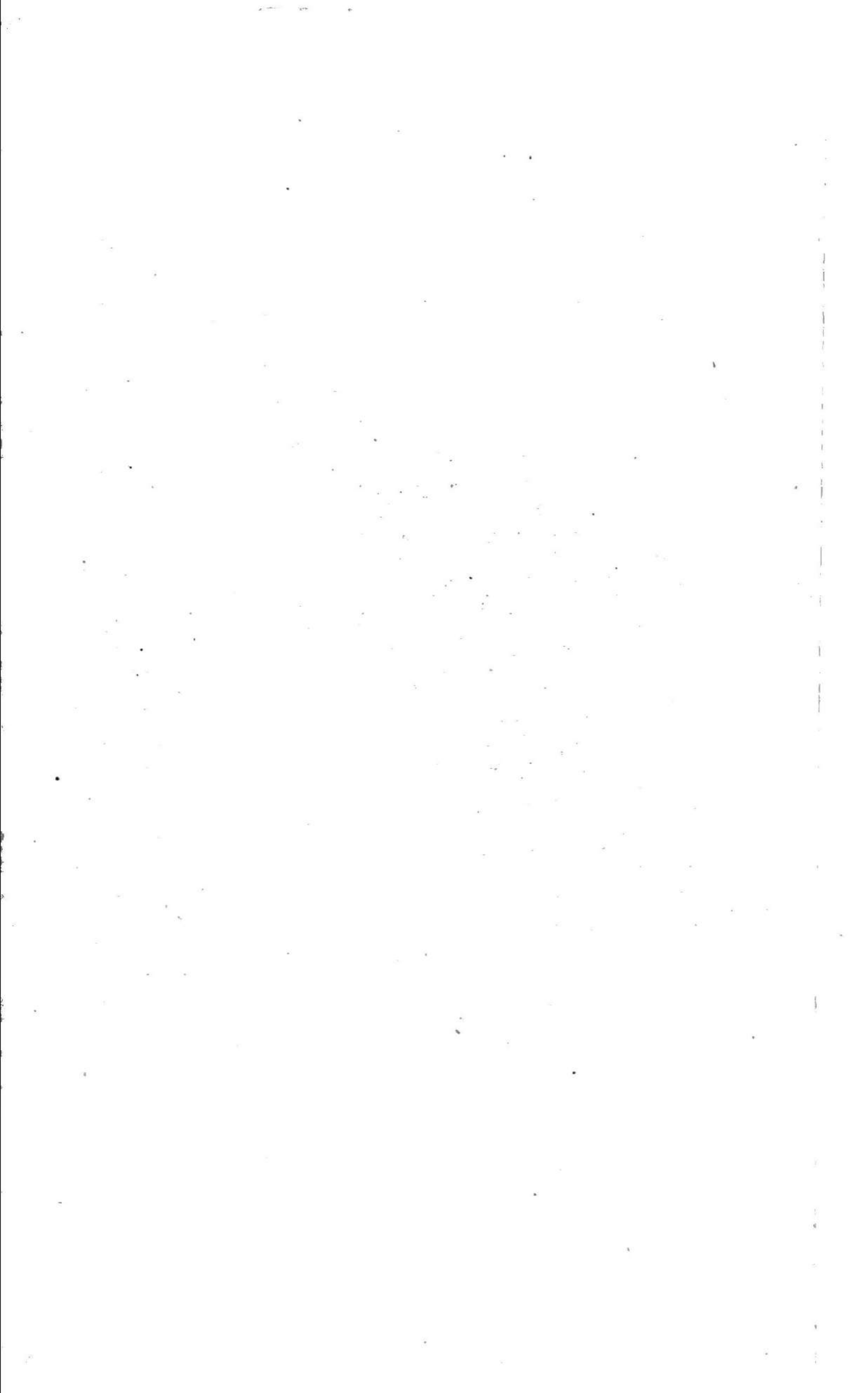
तीखोन स्योमुश्किन

अलितेत पहाड़ियों की शरण में

[illegible]

सोवियत साहित्य पुस्तकमाला





ТИХОН СЕМУШКИН

АЛИТЕТ УХОДИТ В ГОРЫ

РОМАН



ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ
Москва

तीख़ोन स्योमुश्किन

अलितेत

पहाड़ियों की शरण में

उपन्यास



विदेशी भाषा प्रकाशन गृह
मास्को

अनुवादक : यशवन्त

चित्रकार : ये० गोल्याख़ोव्स्की

विषय-सूची

प्रस्तावना

एक विदेशी व्यापारिक प्रतिष्ठान की समाप्ति के लिए आयोजित सरकारी दल के एक सदस्य के नाते मैंने सन् १६२४ में पहली बार चुकोत्स्क प्रायद्वीप का दौरा किया। बाद में मेरे उपन्यास 'अलितेत पहाड़ियों की शरण में' में 'नॉर्थ कम्पनी' के नाम से इस व्यापारिक प्रतिष्ठान का उल्लेख किया गया है।

जब मैं मास्को विश्वविद्यालय का विद्यार्थी था उस समय रूसी शोध-यात्रियों के नृवंश विद्या विषयक साहित्य द्वारा इस सुदूरवर्ती तथा विषम भूमि के बारे में बटोरी गयी मेरी जानकारी अत्यल्प तथा खंडित थी।

यहां, उत्तरी ध्रुव महासागर के तटों पर मुझे, अर्थात् मध्य रूस के समशीतोष्ण प्रदेश के एक निवासी को, एक ऐसी विशाल नयी भूमि के दर्शन हुए जिसके प्राकृतिक लक्षण असामान्य थे।

इस उत्तरी प्रदेश की प्रभावशाली विशेषताओं ने, उसके अतिविशाल विस्तार ने, मुझे आरंभ ही से मोहित कर लिया और तभी से मेरा जीवन सोवियत उत्तरी ध्रुव प्रदेश के साथ संबद्ध हो गया।

इस प्रदेश का प्रधान आकर्षण था–वहां के लोग! उत्तरी ध्रुव महासागर के शीतल तटों पर समुद्री जंतुओं को पकड़ने वालों तथा उनका शिकार करने वालों की थोड़ी सी आबादी थी और वे प्राचीन प्रणाली के अनुसार जीवनयापन करते थे।

जानवरों की खालें वे ओढ़ते थे और रहते थे ऐसे घरों में जो मनुष्य के निवास-स्थानों से शायद ही कुछ मेल खाते थे। उनकी दशा बड़ी दयनीय थी। फिर भी इन लोगों में उत्कृष्ट नैतिक गुण सुरक्षित थे। जितना अधिक मैं उनके साथ रहा उतना ही अधिक उनकी आश्चर्यजनक ईमानदारी, सहृदयता, और आतिथ्यशीलता से प्रभावित हुआ।

यहां भी सभ्यता के तथाकथित प्रतिनिधि रहा करते थे—ये थे विभिन्न जातियों के अति लोभी और भेड़िये जैसे स्वभाव वाले फेरीवाले। ये सभी सफ़ेद लोग, जिनकी नसों में काला ख़ून बहता था, निष्ठुरता के साथ इन ईमानदार तथा विश्वासपात्र शिकारियों का शोषण करते थे। इन उद्यमी सभ्यता-वाहकों द्वारा गुलाम बनाये गये चुकची अत्यंत दरिद्र हो चुके थे और अमरीका की कई इंडियन जनजातियों की तरह विनष्ट हो रहे थे।

इस देश में न स्कूल थे और न चिकित्सा सेवाएं ही। सारे तट-प्रदेश में हमें पढ़-लिख सकने वाला एक भी आदमी नहीं मिला। लोग अंधविश्वासों तथा अज्ञान में डूबे हुए थे।

सोवियत भूमि पर इस प्रकार की स्थिति सहन करना हम सोवियत शासन के प्रतिनिधियों के लिए असंभव था और हमने जनता के पुनरुत्थान के हेतु देशी तथा विदेशी शोषकों के विरुद्ध संघर्ष आरंभ किया।

उसी समय पूर्णतया परस्पर विरोधी सामाजिक श्रेणियों का प्रतिनिधित्व करने वाले लोगों के बीच के हित-संघर्षों पर आधारित उपन्यास लिखने की कल्पना भी मेरे मन में आयी।

पाशविक उपनिवेशक के प्रतिरूप का सफल चरित्र-चित्रण करना मुझे उतना कठिन नहीं लगा क्योंकि विस्तृत साहित्य-पठन द्वारा मैंने इस प्रतिरूप की सामान्य कल्पना पहले ही कर ली थी।

किन्तु चुकचियों के जीवन का चित्रण करना बड़ा कठिन रहा। मैं समझ गया कि इन लोगों की जीवन-प्रणाली, आचार-विचार तथा भाषा का गंभीर अध्ययन किये बिना मौलिक उपन्यास की रचना

असंभव है। तभी मैंने इन सीधे-सादे, सहृदय लोगों में रहकर उनका पूर्ण परिचय प्राप्त करने का निश्चय किया।

वहां के जीवन ने मुझपर गहरा प्रभाव डाला और यह निश्चय करके मैं चुकोत्स्क से विदा हुआ कि अवसर मिलते ही मैं फिर वहां आ जाऊंगा। और अगले ही वर्ष मैं सांख्यकीय तथा आर्थिक अध्ययन मंडल के एक सदस्य के नाते वहां लौट भी आया।

उत्तरी ध्रुव महासागर के सभ्यता से अछूते तट पर मैं एक वर्ष और रहा – चुकोत्स्क के गगनस्पर्शी पर्वतों के बीच, सख़्त बरफ़ की घड़घड़ाहट तथा बरफ़ीले तूफ़ानों की हहराहट के बीच और उन लोगों के बीच जिनके बारे में मैं एक तथ्याधृत पुस्तक लिखना चाहता था और जिन्हें उस पुस्तक के लिए सजीव चरित्रों के रूप में व्यवहार कर सकता था।

उस वर्ष मैंने कुत्ता तथा बारहसिंगा गाड़ियों पर बारह हज़ार किलोमीटर से भी अधिक यात्रा की। कई बार हम बरफ़ीले तूफ़ानों में फंस गये जिनकी चुभती हुई धुंधर में से उन कुत्तों को भी देखना असंभव था जो आगे आगे दौड़े जा रहे थे। इन बरफ़-गाड़ियों में जब हम गाड़ीवान – जो कि मार्गदर्शक भी था – के साथ बैठते थे तब हमारा समूचा जीवन उसी के हाथों में होता था। हम ज़रा भी समझ नहीं पाते कि उसके कुत्ते किस रास्ते जा रहे हैं, लेकिन यह निश्चित था गाड़ीवान हमें अपनी मंज़िल तक सुरक्षित ले जायेगा। आप उस गाड़ीवान में पूरा विश्वास कर लेंगे जिसके चेहरे पर शुद्ध तथा सरल भाव स्पष्ट दिखाई देते हैं। उत्तर के जीवन-व्यवहार का जानकार बर्फ़-गाड़ी-चालक आपसे कह देगा :

"हम आगे नहीं जा सकते, अब आगे बढ़ना ख़तरनाक है। हो सकता है कि हम ढालू चट्टान पर से फिसल पड़ें। हवा इतनी तेज़ है कि कुत्तों का आगे बढ़ना असंभव है। आज रात को हमें यहीं सोना होगा।"

जब पहली बार मैंने इस सुझाव को सुना तो घोर निराशा ने मुझे घेर लिया। बर्फ़-गाड़ी में बैठा हुआ मैं ठिठुर रहा था और सोच रहा था कि कब यह ख़तरनाक रास्ता ख़तम होता है।

"लेकिन हम सोयेंगे कहां?" मैंने घबड़ाकर अपने मार्गदर्शक से पूछा।

"यहीं, जहां हम इस वक़्त खड़े हैं। हम बरफ़ ही में सो जायेंगे।"

हवा तंबू को हमारे हाथों से छीन लेती है। आख़िर सख़्त मेहनत के बाद हम उसे गाड़ लेते हैं और उसके अंदर होकर बरफ़ीले तूफ़ानों से अपना बचाव कर लेते हैं। हम अपने थैलेनुमा बिस्तर में घुस जाते हैं। तंबू में चर्बी की मोमबत्ती जलती है, प्राइमस स्टोव भकभकाने लगता है, हम डिब्बाबंद खाना खाते हैं और गरम चाय पीते हैं–बस, ज़िंदगी यों गुज़रती है। फिर भी जीवन उतना कष्टकारक नहीं जितना मैंने सोचा था। धीरे धीरे मैं ऐसे पड़ावों में ठहरने का आदी हो गया; यहां तक कि मैं उन्हें लंबी यात्रा का एक एक स्टेशन समझने लगा। बरफ़ीला तूफ़ान लगातार तीन-चार दिन अखंड तांडव करता रहा है। और, इस निर्जन दुनिया में सिर्फ़ दो जीव हैं–मैं और मेरा मार्गदर्शक! उस अवधि में वह मुझे कितनी बातें बता देता है। लंबी राह लोगों को नज़दीक लाती है और मुझे एक नया मित्र मिल जाता है।

इस प्रकार की यात्राओं से मुझे सदैव मूल्यवान सामग्री मिली है।

मेरा काम समाप्त हुआ, मैं चुकोत्स्क से विदा हुआ लेकिन अगले साल फिर वापस आया। दो बरस बाद मैं लौट आया एक बोर्डिंग स्कूल तथा सांस्कृतिक सेवा केंद्र के संगठक के नाते। इस क्षेत्र में काम करते समय मैंने चुकची बच्चों का समीप से अध्ययन किया। अपने निरीक्षण के परिणामों को संग्रहीत करते हुए तथा अधिक गहराई से उनके जीवन का अध्ययन करते हुए मैं चुकची भाषा में सोच-विचार करना सीख गया और तभी जाकर मैंने अपनी पुस्तक का, पुरानी साहित्यिक प्यास बुझाने के प्रथम प्रयत्न का सूत्रपात किया।

प्रथम पुस्तक में मैंने चुकची बोर्डिंग स्कूल की चर्चा की थी। अंग्रेज़ी, स्वीडिश, आइसलैंडिक तथा कई अन्य भाषाओं में इसके अनुवाद प्रकाशित हुए।

'अलितेत पहाड़ियों की शरण में' उपन्यास लिखने से पहले मैंने काफ़ी समय सामग्री जुटाने में बिताया। प्रादेशिक अध्ययन संबंधी कार्य मैं कर रहा था और चुकोत्स्क की द्वितीय जनगणना का काम पूरा कर चुका था। उत्तरी ध्रुव प्रदेश में आठ जाड़े बिताने के बाद ही मैंने सोचा कि उपन्यास के लिए आवश्यक बहुत कुछ सामग्री मैंने एकत्र कर ली है।

इस उपन्यास के सभी पात्र प्रत्यक्ष जीवन से लिये गये हैं। मि० थामसन, साइमन्स, हैरी ब्राउन तथा अन्य पात्र ऐसे व्यक्तियों के प्रतिरूप हैं जिनसे मैं वस्तुतः मिल चुका हूं और जिनका अध्ययंन कर चुका हूं।

चुकची पात्रों का चुनाव भी वास्तविक जीवन से किया गया है। याराक, वामचो तथा आये जैसे लड़के मुझे सैकड़ों की संख्या में मिले। मैं उन चुकची कुलकों से भी मिला जो अलितेत की तरह जनता का खून चूसकर धनी बन गये थे और विदेशी निवासियों के आढ़तियों का काम करते थे—तट-प्रदेश में इस वर्ग के लोग काफ़ी मात्रा में फैले हुए थे।

समाजवादी निर्माण का परिमाण, हमारे देश में हो रहा परिवर्तन अत्यंत विशाल है। जहां पहले आबादी बहुत ही विरल थी वहीं चार-पांच साल के बाद बड़ा शहर नज़र आता है। स्तेपी के गर्दभरे मैदान में अब हरभरे वृक्षों का नया वन दिखाई देता है और जो ज़मीन कभी मृत मरुभूमि थी उसमें आज छलछलाती हुई नहर बहती है। ये शीघ्र परिवर्तन हमारे समाजवादी निर्माण की एक विशेषता हैं। मैंने सन् १९५१ में चुकोत्स्क की भूमि पर ऐसा ही क्रांतिकारी परिवर्तन देखा था।

हिमाच्छादित चट्टानों के बीच, जहां आने-जाने का साधन कुत्ता-गाड़ी ही था, आज लकड़ी के दुमंज़िले मकान दिखाई देते हैं जिनमें बिजली की बत्तियां जलती हैं। जहां हमें कोयले के बोरे अपनी पीठ पर लादकर स्टीमर तक ले जाने पड़ते थे वहां अब यंत्र-सज्ज घाट बना है और क्रेनों तथा अन्य ढुलाई-मशीनों से काम लिया जाता है।

पहले हम यहां माल-जहाज़ों पर आया करते थे। लेकिन इस समय हमने आरामदेह मुसाफ़िर-स्टीमरों में यात्रा की। यहां अब नियमित रूप से वैमानिक यातायात भी चलता है। यहां के दूरवर्ती इलाक़ों में भी अब सोवियत संघ के अन्य सभी स्थानों की तरह समाजवादी निर्माण का कार्य तेज़ी से चल रहा है।

शीतल भूमि के नवनिर्मित जीवन ने मृत मरुभूमि पर विजय प्राप्त की है।

सोवियतों ने चुकची लोगों में सांस्कृतिक तथा राजनीतिक जीवन जागृत किया है।

चुकोत्स्क के विस्तृत प्रदेशों में बारहसिंगों के अनगिनत रेवड़ चरते रहते हैं। इनमें से अधिकांश रेवड़ सामूहिक बारहसिंगा फ़ार्मों में रहते हैं। यहां पहले ही से लाखों की आमदनी वाले फ़ार्म हैं जिनके पास दसियों हज़ार बारहसिंगे हैं। गत विश्व-युद्ध के समय चुकोत्स्क के बारहसिंगा संवर्द्धकों ने भी अन्य सोवियत लोगों के साथ नाज़ी आक्रमणकारियों का विरोध करके नयी सोवियत जीवन प्रणाली का संरक्षण किया।

सारे तट-प्रदेश में समुद्री शिकार के कोलखोज़ संगठित किये गये हैं जो कि अद्ययावत् औद्योगिक साधन-सामग्री से सुसज्जित हैं। तनी हुई चमड़ी से बनायी गयी कमज़ोर बिदारकाएं (डोंगियां) जो कि जलजंतुओं को फंसाने के साधन का काम देती थीं, अब अतीत की चीज़ बन गयी हैं। इनकी जगह ले ली है पांच सौ टन तक वज़न वाली व्हेलमार नौकाओं, दो मस्तूलों वाले जहाज़ों, डोंगों तथा मछलीमार नौकाओं ने। ये सब जलयान यंत्रचालित हैं और इन्हें चुकची शिकारी खुद चलाते हैं। संस्कृति और कल्याण के क्षेत्र में लोगों का स्तर अब इतना ऊंचा उठा है कि उसे देखकर दर्शक हर क़दम पर दांतों तले उंगली दबाते हैं।

समूचे चुकोत्स्क में सामान्य प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध किया गया है। बड़ी बस्तियों तथा शहरों में माध्यमिक स्कूल, अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय, व्यावसायिक स्कूल तथा सभी प्रकार के पाठ्यक्रम (व्यापार,

हिसाबनवीसी, नागरिक सेवा, कोलखोज़ अध्यक्ष प्रशिक्षण इत्यादि के वर्ग) शुरू किये गये हैं।

अब आपको चुकोत्स्क में निरक्षर लड़के-लड़कियां नहीं दिखाई देंगे।

कई वर्षों से चुकची लड़के तथा लड़कियां ऊंची शिक्षा प्राप्त करने के लिए हर साल पेत्रोपावलोव्स्क-ऑन-कामचात्का, निकोलायेव्स्क-ऑन-अमूर, व्लादिवोस्तोक, ख़बारोव्स्क तथा मास्को के लिए रवाना होते हैं। फ़िलहाल बहुत से उत्तरी विद्यार्थी लेनिनग्राद स्थित ज्दानोव विश्वविद्यालय में तथा हर्ज़ेन अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय में अध्ययन कर रहे हैं। उत्तरी क्षेत्र की जनता के अधिकाधिक प्रतिनिधि हर साल नये सोवियत बुद्धिजीवियों में शामिल हो रहे हैं। चुकोत्स्क के स्कूलों में आधे से अधिक अध्यापक वहां के निवासी हैं।

उत्तर के नवयुवक माध्यमिक स्कूलों का पाठ्यक्रम अपने प्रदेश में पूरा करते हैं और फिर विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिए प्रधान द्वीप की यात्रा करते हैं। यहां वे सांस्कृतिक पिछड़ेपन के लिए किसी तरह की छूट-रिआयत पाये बिना मेट्रिकुलेशन परीक्षाएं उत्तीर्ण करते हैं। सोवियत शासन के प्रारंभिक वर्षों में उन्हें ज़रूर कुछ छूट दी जाती थी।

चुकोत्स्क में अब शहरी बस्तियों, औद्योगिक केन्द्रों, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों तथा मत्स्य पदार्थों के कारख़ानों, अन्य औद्योगिक कारख़ानों और अस्थि-शिल्प की कर्मशालाओं का निर्माण हुआ है।

१९३२ में पांच ज़िलों वाला एक चुकोत्स्क राष्ट्रीय क्षेत्र बनाया गया। अपने देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन करने की कला चुकची लोगों ने आत्मसात कर ली है। उदाहरणार्थ, क्षेत्रीय सोवियत की कार्यकारिणी समिति के प्रधान ओत्के नामक चुकची सज्जन ही थे। ओत्के ने लेनिनग्राद में शिक्षा प्राप्त की। १९५१ में आप चुकोत्स्क राष्ट्रीय क्षेत्र से सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के एक प्रतिनिधि के नाते चुने गये।

अनादीर में क्षेत्रीय सोवियत के अधिवेशन में भाषण देते समय बारहसिंगा संवर्द्धक तल्वावतीन ने अपनी जनता के विचार निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किये:

"मैंने लंबी ज़िंदगी देखी है। मुझे ऐसा लगता है कि हमारे अतीत के जीवन पर बरफ़ की एक बड़ी परत जमी हुई थी। फिर हमने इस परत से बाहर निकलकर सूर्य की किरणों के दर्शन किये और अब अपने भविष्यत् की ओर देखने में इस बरफ़ की कोई बाधा नहीं रही। अब हम एक नया, रोचक तथा बुद्धिमत्तापूर्ण जीवन बिता रहे हैं। यह जीवन दिन-प्रतिदिन अधिक अच्छा और अधिक रोचक होता जायेगा। मैं यह अच्छी तरह जानता हूं क्योंकि मेरे पास आंखें हैं और मैं वस्तुस्थिति देखता हूं।"

तीख़ोन स्योमुश्किन

पहला भाग





पहला अध्याय

सुबह से वायुमंडल शांत था और आदमी की आवाज़ दूर दूर तक पहुंच रही थी। सागर निश्चल था और उसका वक्ष धीरे धीरे उठ रहा था, गिर रहा था।

किन्तु संध्या के समय प्रचंड उत्तरी वायु उभड़ आयी। सागर उग्र रूप धारण करने लगा। लहरें धीरे धीरे अधिकाधिक ऊपर उठती गयीं और उनकी हहराहट तथा गर्जनाएं पहाड़ियों में प्रतिध्वनित होती रहीं। एनमकाई बस्ती के बाशिंदे वालरस (समुद्री घोड़ा) क्षेत्रों के शिकारियों से मिलने के लिए सागर तट पर आये थे।

तूफ़ानी सागर को व्यग्रता से ताकते हुए उन्होंने उत्तेजित आवाज़ों में एक दूसरे को ज़ोरों से पुकारा। इस हिस्से में बरफ़ अभी तक पिघली नहीं थी और बरफ़ की सफ़ेद पृष्ठभूमि पर रोएंदार कपड़ों में उन लोगों की बोझिल मूर्तियां विशेष स्पष्ट दिखाई देती थीं। हवा ने ज़ोर पकड़ा। भीमाकार लहरें तट पर टकराकर चूर चूर हो जातीं और उछलते हुए फेन के रूप में पीछे हट जातीं।

"अलितेत! अलितेत! अलिते-इत!" चट्टान पर खड़ा एक लड़का यकायक कर्कश आवाज़ में चिल्ला उठा।

अलितेत को देख लेने में अव्वल रहने के अभिमान में सागर की ओर संकेत करता हुआ वह चिल्लाता ही रहा।

क्षितिज पर एक व्हेल-नाव का पाल दृष्टिगोचर हुआ। ऊंची लहर के शिखर पर सवार सा वह दिखाई दिया और दूसरे ही क्षण अदृश्य होकर काले गर्त में डूब-सा गया। बातचीत बिलकुल बंद हो गयी थी। बुड्ढा वाल, जो एक मशहूर शिकारी था, घबड़ायी हुई स्त्रियों के एक समूह के पास लंगड़ाता हुआ आ पहुंचा। उसने हिरन की खाल का फटा-पुराना परका* पहन रखा था जो सील की चमड़ी की पेटी से कमर में क़ायदे से बंधा हुआ था। कटुतापूर्ण गहरी रेखाओं से अंकित उसके कठोर चेहरे पर स्थिरचित्तता तथा लौकिक अनुभव का भाव दिखाई देता था। इस बुड्ढे का सारा जीवन सागर पर बीता था। उसने कई बार मौत का मुक़ाबला किया था और लोग उसकी बातों की इज़्ज़त करते थे।

तेज़ी के साथ मिचकने वाली आंखों से तूफ़ानी सागर की ओर ताककर उसने गंभीर तथा अनुभवपूर्ण शब्दों में कहा:

"तूफ़ानी सागर में व्हेल-नाव का सफ़र ख़तरनाक नहीं होता – क्योंकि वह लकड़ी की बनी होती है और उसकी पेंदी अच्छी होती है..."

और अपने झुर्रीदार हाथों की अंजुली बनाकर उसने दिखाया कि इस पेंदी का आकार ऐसा होता है।

"हां, बिगड़े सागर में सपाट तल वाली चमड़े की डोंगियां बिलकुल बेकार हैं। हमेशा उनके उलट जाने का डर रहता है।"

बुड्ढा ऐसी बातों के बारे में बोल रहा था जिनसे हर कोई परिचित था, लेकिन फिर भी वे ग़ौर से और विशेष आदर के साथ

---

* चुकचियों का पोस्तीन।

उसकी बातें सुनते रहे। स्त्रियां जबतब सागर पर अपनी कातर दृष्टि दौड़ाती थीं। उन्हें मालूम था कि ऐसे मौक़े पर शिकारी अपनी नौकाओं की बग़लों में सील-चमड़ी की हवा भरी थैलियां बांधकर विशेष सावधानी बरतते हैं, फिर भी अपने पतियों के बारे में उनके हृदय चिंतातुर ही रहे।

दूर सागर में चमड़ेवाली डोंगियां भी नज़र आयीं। लहरों पर ऊपर-नीचे हिलती हुई वे नन्हें-नन्हें बिंदुओं के समान दिखाई दे रही थीं।

व्हेल-नाव पूरी रफ़्तार के साथ तट की ओर जा रही थी। उसकी पेंदी लहरों को चीर रही थी और तट अधिकाधिक समीप आ रहा था। उसका विशाल पाल हवा के हर झोंके को निगल रहा था।

जब व्हेल-नाव किनारे के पास पहुंची तो पाल नीचे आया और उसने डैक पर जमा मुर्दा वालरसों को ढंक दिया।

नाव के अग्रभाग पर शिकारी तूमातूगे की नाटी-गठीली मूरत खड़ी थी। वह अपने हाथ में लंबे, पतले, तस्मे की छोटी-सी गेंडुरी पकड़े था और नज़र उसकी लहरों पर गड़ी हुई थी। वह गेंडुरी खोलकर रस्सी को किनारे पर फेंकने की तैयारी में था। लहरों पर नाव ख़ूब ऊंचे उछल रही थी लेकिन तूमातूगे पांव जमाकर पैंतरे में खड़ा डगमगाती नाव में अपने शरीर का समतोल संभाले हुए था। उसका सिर नंगा हो गया और फ़व्वारों के चपेटों से उसके कपड़े सराबोर हो गये। व्हेल-नाव में बैठे हुए शिकारी व्यग्र दृष्टि से उन भीमकाय लहरों की ओर देख रहे थे।

एक भीमकाय लहर के शिखर पर नाव उछली और तूमातूगे ने हाथ से ज़ोरदार झटका देकर गेंडुरी किनारे की ओर फेंकी, लेकिन पीछे हटती हुई लहरों के साथ वह लौट आयी।

मल्लाहों के डांड़ों से नियंत्रित नाव देर तक लहरों पर उछलती रही, नाचती रही। तूमातूगे ने कई बार रस्सी को तट पर फेंकने का प्रयत्न किया लेकिन वह असफल रहा।

बुड्ढा वाल अलग बैठकर लकड़ी की बड़ी-सी चिलम के कश लगा रहा था और व्हेल-नाव का हाल देख रहा था। यकायक उसने अपने तोरबाज़ों* को उतारकर तेज़ी के साथ दूर फेंक दिया और पतलून को मोड़ लिया। फिर तूमातूगे के पास वाली गेंडुरी जैसी ही गेंडुरी एक लड़के के हाथ से छीनकर वह पानी के किनारे की ओर दौड़ा और एक प्रचंड लहर के पीछे हट जाने पर जवानों की सी तेज़ी और फुर्ती के साथ पानी में कूद पड़ा। ज़ोरदार झटका देकर बुड्ढे ने चतुराई से गेंडुरी को खोल तूमातूगे की गर्दन में फंसा दिया, पानी में एक चक्कर लगाया और फिर से उछलकर आने वाली लहर को टालने के लिए तेज़ रफ़्तार से वापस चला गया। वह हांफता हुआ बरफ़ पर गिर पड़ा। स्त्रियां उसके पास दौड़ी आयीं और बूट पहनने में उसकी मदद करने लगीं।

"ताक़त का पूरा लेकिन तदबीर का अधूरा," शिकारियों की ओर सिर हिलाकर मुस्कराते हुए वाल ने कहा।

तट पर खड़े लोगों ने व्हेल-नाव की रस्सी अपनी ओर खींची। बुड्ढा उठ खड़ा हुआ। वह शांति से और ध्यानपूर्वक उन बड़ी बड़ी लहरों को निहारता, गिनता रहा।

लोगों ने बुड्ढे की ओर नज़र दौड़ाते हुए रस्सी पकड़ ली और उसके हुक्म का इंतज़ार करते रहे।

शिकारी अपने डांड़ों को बराबर चलाते रहे ताकि समय से पहले नाव कहीं बड़ी लहर के शिखर पर न उछल जाये।

---

*ऊंचे फ़र बूट।

बुड्ढ ने कई लहरों को ऐसे ही जाने दिया और चिल्ला चिल्लाकर लोगों को बताता रहा कि वे रस्सी को कसकर पकड़े रहें। यकायक वाल हवा में उछला और पूरा ज़ोर लगाकर चिल्लाया:

"तो-होक!"

किनारे पर खड़े लोगों ने फ़ौरन रस्सी पर अपना भार डाला और चिल्लाते शोर मचाते हुए नौका को अपनी ओर खींचने लगे। लहर तट से टकराकर पीछे हट गयी और व्हेल-नाव हिमाच्छादित तट पर खड़ी हो गयी।

एक नाटा-गठीला, मज़बूत गर्दन वाला व्यक्ति शीघ्रता के साथ नौका से बाहर कूद पड़ा। उभड़ी हुई कपोल-अस्थियों वाला और हवा के चपेटे खाया हुआ उसका चेहरा ताम्रवर्ण-सा हो गया था। धूप से बचने के लिए उसने कचकड़े का अमरीकी छज्जा पहन रखा था और उसके नीचे संकुचित गड्ढों में उसकी तेज़ काली आंखें चमकती थीं। यह सच है कि बहुत देर पहले सूरज बादलों में छिप गया था, लेकिन अलितेत अपने छज्जे को कभी दूर न करता – अमरीकी चीज़ों के प्रति उसका विशेष प्रेम था। उसके नंगे सिर के चारों ओर काले, पतले, कटे हुए बालों की झालर-सी लगी हुई थी। ये बाल बहुत ही कड़े और एकदम खड़े थे। वे उसके कानों और लगभग पूरे ललाट को ढंके हुए थे। उसकी साफ़ घुटी हुई चांद चमक रही थी। अलितेत की सूरत से और उसकी नाटी-गठीली मूरत से बलिष्ठता, दृढ़ता तथा क्रूरता प्रकट होती थी। उसने सील-चमड़े की जाकेट पहन रखी थी और कमर में सील-चमड़े की पेटी के बदले दीये की लंबी बत्ती बांध रखी थी। इस पेटी से कई टोटके लटक रहे थे – चमड़े के टुकड़े, एक लाल मणि, हड्डी में खुदी हुई वालरस की एक नन्ही-सी आकृति और बीस सेंट वाला एक सिक्का। व्हेल-नाव कई टोटकों से आभूषित थी। भूत-पिशाचों, संकटों तथा बीमारियों से

बचने और जीवन तथा व्यवसाय म धनदौलत की प्राप्ति के लिए ये टोटके थे। वालरसों के शिकार के सफल परिणामों से उसका हृदय थिरक उठा था।

"आसपास वालरस नहीं हैं!" अपने इर्दगिर्द खड़े बिरादरी वालों से उसने कहा। "वालरस किनारे से बहुत दूर रहते हैं। उधर देखो, बहुत दूर!" कहते हुए अलितेत ने तपाक से सागर की ओर संकेत किया।

व्हेल-नाव की ओर मुड़कर वह कर्कश स्वर में चिल्ला उठा:

"ऐ, उधर खड़े खड़े क्या कर रहे हो? नाव को लहरों वाली जगह से हटा लो! तुम अंधे तो नहीं हो गये? देखो, वह निशान कहीं धुल न जाये!"

'सन् १९१६' का यह निशान जहाज़ के बाज़ू पर काले रंग से बनाया गया था। अलितेत को यह व्हेल-नाव बेचने वाले अमरीकन ने ख़ुद अपने हाथ से यह चिन्ह बनाया था। गत चार वर्षों से अलितेत हर साल एक बार इस चिन्ह पर रंग लगाता था यहां तक कि आख़िर '१९१६' की संख्या अब '१०१६' बन गयी थी। समृद्ध जीवन की नींव डालने वाले इस भाग्य-चिन्ह को अलितेत सावधानी से संभालकर रखता था जिसमें अंधविश्वास का पुट होता था।

"चलो, जल्दी करो, नाव को लहरों की पहुंच से हटा लो!" पूरा ज़ोर लगाकर वह चिग्घाड़-सा उठा।

नाव के इर्दगिर्द लोग लपक पड़े और उन्होंने सख़्त बरफ़ पर से उसे खींच लिया। नाव में काफ़ी गोश्त था—तीन वालरसों का मांस। ख़ून से लथपथ मुर्दा वालरसों पर घुमावदार बाहरी दांत वाले वालरसों के ग्यारह सिर पड़े हुए थे।

तूमातूगे ने सब से बड़ा सिर उसके बाहरी दांतों के सहारे पकड़कर उठा लिया और बड़ी कठिनाई से नाव से बाहर कर दिया।

दांतों के बल उसने उसे बरफ़ में घुसेड़ दिया। शीघ्र ही व्हेल-नाव के इर्दगिर्द वाली बरफ़ ख़ून से लाल हो उठी। तूमातूगे ने एक एक करके सारे ग्यारह सिर बाहर निकाले और एक क़तार में रख दिये। बरफ़ पर पड़े हुए वालरसों के गलमुच्छेदार और बड़ी बड़ी खुली आंखों वाले वे सिर सजीव-से लग रहे थे।

अलितेत जानता है कि उसके दोस्त मेरिकन को सिर्फ़ वालरस-दांतों की ज़रूरत है। गोश्त सागर में फेंक दिया जा सकता है। अलावा इसके, नाव भी तीन से अधिक वालरसों को नहीं ले जा सकती।

स्त्रियां अपने बच्चों को कंधों पर उठाये जल के किनारे खड़ी थीं। समुद्री गोभी को वे चबा रही थीं और सागर में चलने वाली डोंगियों की ओर शांति तथा व्यग्रता से देख रही थीं।

"नहीं, वालरस बहुत दूर हैं! डोंगी वाले शिकारियों को एक भी शिकार नहीं मिल सका," आत्मसंतोष सूचक मुस्कराहट के साथ अलितेत ने कहा। "मेरी व्हेल-नाव बारहसिंगे की तरह मज़बूत और तेज़ है। वालरस मुझसे बच नहीं सकते। ध्रुवप्रदेशीय रीछों की छः खालें और सफ़ेद-लाल लोमड़ियों की खालों की दो बोरियां देकर मैंने यह नाव चार्ली से ख़रीद ली है। अलावा इनके, मैंने उसको वालरस-दांतों का एक ढेर का ढेर दे दिया था। उसकी मैंने गिनती ही नहीं की!" सागर पर एक तुच्छ तिरछी नज़र दौड़ाते हुए अलितेत ने आगे कहा: "चमड़े की डोंगी में बैठकर शिकार के लिए जाना बिना बंदूक़ के लोमड़ी का पीछा करने जैसा ही है।"

बुड्ढा वाल वालरसों के सिरों के पास गया और उनपर दुःखभरी दृष्टि डालते हुए बोला:

"कितना गोश्त बेकार गया! कितने खाने का नुक़सान हुआ! पूरे आठ वालरस! अच्छा-ख़ासा खाना समुंदर के पेट में चला गया।"

"मेरिकन मेरे लिए ख़राब व्हेल-नाव थोड़े ही ला देगा," बुड्ढे की बात पर ध्यान न देते हुए अलितेत ने कहा और उस ओर चल दिया जहां मुर्दा वालरस रखे गये थे।

सारी बस्ती भर के कुत्ते वहां इकट्ठे हुए थे। अर्ध-वृत्त बनाकर वे बड़ी दीन मुद्रा के साथ वहां बैठे थे। उनकी तेज़ आंखें वालरस पर गड़ी हुई थीं और जीभें लपलपा रही थीं। बीच बीच में लंबी कराहों और चटकारों से उनकी अधीरता स्पष्ट हो रही थी। अधिक अधीर कुत्ते ख़ून से तर बरफ़ के टुकड़ों को चटपट चाटते जा रहे थे ।

लंबे अर्से से उन्हें गोश्त खाने को नहीं मिला था। बरफ़-गाड़ियां व्यवहार से उठ गयीं और तब से कुत्तों का पेट पलना मुश्किल हो गया। पार्श्वों से लटकते हुए रोवों के गुच्छोंवाले ये दुबले-पतले और लाचार कुत्ते सारी बस्ती का चक्कर लगाते और फेंकी गयीं हड्डियों के एक एक टुकड़े के लिए ज़ोरों से लड़ पड़ते। आख़िर बहुत-से कुत्ते टुंड्रा प्रदेश में भाग गये, हिंस्र बन गये और तरह तरह की गिलहरियों को मारकर अपना पेट पालने लगे। सिर्फ़ अलितेत के कुत्ते अभी भी तंदुरुस्त थे। अलितेत अच्छे कुत्तों का शौक़ीन था।

प्रतीक्षा की अग्निपरीक्षा में हारकर एक शिकारी कुत्ता आख़िर गोश्त पर टूट ही पड़ा।

"गित! अपनी पारी आने तक रुक जाओ! मैं भी मांस के एक टुकड़े के लिए यहां चुपचाप खड़ा हूं," वाल चिल्लाया और अपनी बैसाखी से कुत्ते को वहां से हटा दिया।

कुत्ता लड़खड़ाता हुआ एक ओर हो गया और उद्वेग भरी आंखों से बुड्ढे की ओर देखने लगा।

अलितेत अपनी आंखें सिकोड़कर एक विशाल वालरस-सिर की जांच कर रहा था। वालरस-दांतों को उसने बरफ़ में से उखाड़ लिया,

सिर को घुमा दिया और अपने दाहिने हाथ से उस दांत को नाप लिया।

"बड़े अच्छे दांत हैं। हरेक का वज़न बीस पौंड होगा।"

शिकारियों में से कोई भी इस 'पौंड' को और वस्तुतः किसी भी वज़न-माप को नहीं जानता था। अलितेत का चार्ली के साथ लेन-देन बराबर जारी था और अकेला वही पूरी तरह से जानता था कि पौंड क्या होता है।

रोवेंदार खालों के व्यापार-केंद्र के मालिक चार्लस थामसन ने अलितेत को अपने आढ़तिये के रूप में चुन लिया था और ऐसे ही वालरस-दांतों को अंग्रेज़ी वज़न में तौलना सिखा दिया था।

और अलितेत ने इस समय पौंड का उल्लेख किया केवल लोगों को ऐसी महत्त्वपूर्ण बातों में अपने ज्ञान की शान दिखाने के लिए। वह लोगों को दिखाना चाहता था कि मैं, अलितेत, कितना बहुश्रुत व्यक्ति हूं। अपनी चंचल आंखें मिचकाकर उसने कहा:

"आदमी की भाषा कुत्ते नहीं समझ सकते और न हमारे लोग ही समझ सकते कि पौंड क्या होता है। लेकिन मैं जानता हूं पौंड क्या है!"—यह कहकर अलितेत अपनी मज़बूत सफ़ेद बत्तीसी दिखाता हुआ विजय की हंसी हंस दिया।

"जी नहीं, अलितेत," बुड्ढे वाल ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, "तुम्हें हंसना नहीं चाहिए। आदमी की भाषा को कुत्ते जानते ज़रूर हैं। सिर्फ़ उससे वे बोलना नहीं चाहते। मैं ऐसा ही मानता हूं," बुड्ढे ने गंभीरता के साथ अपनी बात पूरी की।

अलितेत ने मुंह सिकोड़कर कहा:

"तुम क्या कह रहे हो, बुड्ढे? क्या अक़्ल को यारंग* ही में छोड़ आये?"

---

*चमड़े से बना हुआ तंबूनुमा घर।

एक क्षण चुप रहकर वाल ने आंख मारी और उपदेशक के स्वर में बोल उठा :

"देखो अलितेत, हर सिर समझदारी का सोता है। इन्सान और हैवान के यहां तक कि छोटे छोटे पंछी के भी समझ होती है। अगर हमारे लोग उस चार्ली लाल-नकुए को तुम्हारे ज़रिये नहीं, बल्कि सीधे खुद ही वालरस-दांत बेचते तो वे भी जान जाते कि पौंड क्या होता है।"

"तुम उसे लाल-नकुआ क्यों कहते हो? तुम जानते नहीं कि उसको यह पसंद नहीं?"

"लाल लोमड़ी को तुम सफ़ेद नहीं कह सकते; वह जो है सो है," बुड्ढे ने कहा। फिर वह सावधानी से और धीरे धीरे स्त्रियों की ओर चल दिया।

अलितेत ने उसकी ओर तेज़ नज़र दौड़ायी, थूका और शिकारियों के साथ हो लिया। वे वालरसों के सिरों को बरफ़-गाड़ी पर लाद चुके थे और खुद ही एक क़तार बनाये उसमें जुतकर उसे अलितेत के यारंग की ओर खींचते जा रहे थे।

भूखे लोगों की प्रार्थनाओं की राह न देखते हुए अलितेत ने चिल्लाकर कहा :

"हर आदमी मांस का एक एक टुकड़ा अपने यारंग में ले जाये! हरेक के लिए खाना-पीना ज़रूरी है। और यह साफ़ है कि डोंगी वाले शिकारी गोश्त नहीं ला सकेंगे! फिर मैं ही लोगों को खिला दूं!" फिर बुड्ढे वाल की ओर मुड़कर वह गरज उठा: "और इधर कहते हो, कि लोग उस मेरिकन को खुद ही अपना माल बेच दें। क्या लोगों को मुझसे मदद नहीं मिलती? ज़रा सोचो, अगर वे मेरिकन से खुद ही लेन-देन करेंगे तो वह उन्हें ज़रूर धोखा देगा। लेकिन धोखा वह मुझे नहीं दे सकता।"

"हां, मेरिकन तुम्हारा पुराना दोस्त जो ठहरा," बुड्ढे ने जवाब दिया।

वालरस के लोथड़ों को कंधों पर लादकर लोग खुशी खुशी अपने अपने यारंग की ओर चले गये। हर कोई प्रसन्न था। और इसमें कोई आश्चर्य नहीं था! पहली लूट का माल जो उन्हें मिल गया था! और शिकार का मौसम अभी अभी शुरू हुआ था।

डोंगियां किनारे की ओर आ रही थीं।

"ठहरो!" अलितेत यकायक चिल्ला उठा। "अब गोश्त का ख़्याल न करो—पहले इधर आओ और डोंगियों को किनारे लगाने में मदद दो।"

आज्ञा मानकर लोगों ने लोथड़ों को नीचे रख दिया और अलितेत की ओर दौड़े। वह उस 'भूमि का स्वामी' जो था—बस्ती का मालिक था, और लोग निरपवाद उसकी आज्ञा का पालन करने के आदी बन गये थे। अलितेत की शक्ति और प्रतिष्ठा का बोलबाला समूचे तट-प्रदेश में और टुंड्रा की तलहटियों तक में था जहां चाउचू क़बीले के ख़ानाबदोश बारहसिंगा-पालक रहते थे।

पुराने टाट के पाल वाली डोंगियां तट के समीप आ पहुंची थीं। एक डोंगी अपने पार्श्व के ऊपर तक पानी में डूबी हुई थी। सील के चमड़े की छः हवा भरी थैलियां पानी पर किसी काल्पनिक प्राणी के पंजों की तरह छपछपाती हुई, डोंगी को साधे हुए थीं। रोवेंदार खाल के कपड़े पहने हुए शिकारी पानी भरी डोंगी में सीने तक डूबे बैठे थे। अपने शरीरों में गरमाहट बनाये रखने के लिए और रस्सी फेंकने के पहले डोंगी को किनारे की ओर जाने से रोकने के लिए वे बराबर डांड़ चलाने में मग्न थे। रस्सी को पकड़ने की तैयारी में चार लड़के तट पर खड़े थे।

बुड्ढे वाल के बेटे वामचो ने तीन बार रस्सी फेंकी, लेकिन वह किनारे तक पहुंच न पायी। भीगा हुआ वामचो डोंगी में घुटनों

तक पानी में खड़ा रहा। चमड़ की डोंगी के नरम तल के नीचे सागर गलगला रहा था। बुड्ढे वाल ने बूट उतारना शुरू किया। उसी क्षण वामचो कूदकर डोंगी के पार्श्व पर चढ़ा और उसने रस्सी फेंक दी।

बुड्ढे ने ज़रा-सी प्रतीक्षा की और फिर से चिल्ला उठा:

"तो-ओ-होक !"

डोंगी किनारे लग गयी। शिकारी डोंगी से बाहर कूद पड़े। उनके कपड़ों से पानी चू रहा था। डोंगी के तल के एक छेद में से सारा पानी बाहर बह निकला और चमड़े की चिपटी हुई थैलियां उसकी बग़लों में लटकती रह गयीं।

"वालरस का चमड़ा पुराना हो गया है," बुड्ढे वाल ने आह भरते हुए कहा। "इन गरमियों में उसे बदल देना चाहिए था, लेकिन चमड़ा मिला ही नहीं।"

जल्द ही सभी डोंगियां किनारे लग गयीं। वे बिल्कुल खाली थीं। सब मिलकर सिर्फ़ एक सील ले आयी थीं। डोंगी वाले शिकारियों के लिए शिकार के मौसम का अशुभ आरंभ हुआ था।

"अलितेत न होता तो हमें ताज़ा गोश्त न मिलता," तूमातूगे ने कहा।

दूसरा अध्याय

नारगिनाउत अपने पति के तोरबाज़ों के भीगे हुए तस्मे खोलने में लग गयी। यह काफ़ी मोटी औरत थी और उसका सारा चेहरा गोदा हुआ था। अलितेत पीठ के बल लेटा हुआ चुपचाप अपनी बीबी को निहार रहा था।

नारगिनाउत ने उसके बूट, रोवेंदार मोज़े और सील की खाल का बना ऊपरी चुस्त पतलून उतार लिया और सुखाने के लिए उन्हें छत की धरन के पीछे खोंस दिया।

अधनंगा अलितेत, जो कि बारहसिंगे के बछिये की खाल का पतला-सा और अंदर से रोवेंदार जांघिया मात्र पहने था, बारहसिंगे की रोवेंदार खाल पर बैठा था। उसका चौड़ा सीना, गठीली गरदन और मांसल भुजाएं उसके असामान्य शरीर-बल की साक्षी थीं। वस्तुतः सारे तट-प्रदेश में एक भी ऐसा आदमी न था जो कुश्ती में अलितेत को मात कर सके। अलितेत कुश्ती का शौक़ीन था और अकसर लोगों को अपनी चुनौती स्वीकार करने के लिए मजबूर करता था। तट-प्रदेश में ऐसे लोग मौजूद थे जिनकी हड्डियां उसने तोड़ डाली थीं और इस समय अपने पोलोग* में बैठे हुए भी वह अपनी बलिष्ठ भुजाएं ठोंक रहा था, मानो आगामी कुश्ती की तैयारी कर रहा हो।

अलितेत का रोवेंदार खालों वाला पोलोग काफ़ी बड़ा था। तीन बड़ी बड़ी ढिबरियों से काफ़ी रोशनी और गरमाहट मिल रही थी। ढिबरियों के ऊपर देगचियां और वालरस के ताज़े मांस से भरा एक बरतन टंगा हुआ था। बल्लों से तरह तरह के टोटके लटक रहे थे–समुद्री जंतु, मछलियां और छोटी छोटी मनुष्याकृतियां। एक टोटका काफ़ी समय बीतने के कारण इतना काला पड़ गया था कि यह पहचानना मुश्किल था कि वह क्या है–कुत्ता, भेड़िया, लोमड़ी या रीछ?

ये टोटके बुराइयों और आपत्तियों से यारंग की रक्षा करते थे।

सामने वाली दीवाल के पास लकड़ी के बक्स पर निकल की अमरीकी बनावट वाली एक अलारम घड़ी चमक रही थी। वह जो

---

*बारहसिंगों की खालों से विभक्त किया हुआ यारंग का एक हिस्सा जिसका क्षेत्रफल साधारणतया ६×१२ मीटर होता है और उंचाई एक आदमी जितनी। यह चुकची परिवार के लिए बैठक का काम देता है।

समय बताती थी उससे पता चलता था कि वह भी एक टोटके का ही काम दे रही थी – उस अमरीकन के साथ अच्छे व्यापारिक संबंध विकसित कर रही थी।

ढिबरियों के आगे बारहसिंगों की खालों के ढेर पर बुड्ढे ओझा कोराउगे की ढीली-पिलपिली तथा नंगधड़ंग मूरत विराजमान थी। यह अलितेत का बाप था। राखी रंग की लंबी-चौड़ी दाढ़ी उसके धंसे हुए, सिकुड़नदार वक्ष पर फैली हुई थी। उसके अस्थिपंजर घुटनों पर बारहसिंगा-बछिये की पतली सी खाल इस तरह पड़ी थी, मानो दो काठियों पर तनी हो। ओझा कोराउगे एक ढोलक की मरम्मत कर रहा था। उसके किनारे पर वह वालरस की सूखी चमड़ी चढ़ा रहा था।

"कल शाम को बड़ी देर तक मैं ढोलक बजाता रहा। मेरे हाथ थक गये और ढोलक टूट गयी। लेकिन मैंने भूत-पिशाचों का क्रोध ज़रूर भगा दिया," कोराउगे ने कंपित स्वर में कहा। "यही कारण है कि तुम लोगों को इतने वालरस मिल सके।"

"पिताजी, आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं। वालरसों को लुभाकर आपने मेरी नाव के पास ला दिया," अलितेत ने हामी भरी।

इस स्वीकारोक्ति से खुश होकर कोराउगे मन ही मन ज़रा सा मुस्कराया, व्हेल-हड्डी का एक खुरदरा टुकड़ा उठाया और उससे अपनी पीठ खुजलाता रहा। इस समय उसके मुंह से सुखानुभूति प्रकट हो रही थी। फिर उसने व्हेल-हड्डी को अपने नाती की ओर बढ़ाते हुए कहा:

"चल रे, गोई-गोई, तू ज़रा मेरी पीठ खुजलाता जा, जब तक मैं अलितेत की बात सुन लूं।"

बच्चा बड़ी खुशी के साथ इस काम में जुट गया।

जिस तरह बरफ़ पर वालरस मुड़ा हुआ पड़ा रहता है उसी तरह अपने हाथों को सिरहाने रखकर रोवेंदार खाल पर पड़े पड़े

ग्रलितेत ने ग्रपने शिकार की कहानी विस्तारपूर्वक कह सुनायी। कहानी ख़त्म होते ही कोराउगे ने कहा :

"देखो, तुम जानते ही हो कि मेरे पास एक बड़ी ताक़त है। इस ग्रात्मिक बल के सहारे मैं समुंदर के जंतुग्रों को ग्रपने क़ाबू में रख सकता हूं।"

"पिताजी, मैं शिकारियों को ग्रापकी इस ताक़त के बारे में ज़रूर बता दूंगा। उन्हें भी मालूम हो जाये!"

नारगिनाउत ने वालरस के मांस से भरा लकड़ी का एक बड़ा सा कटोरा फ़र्श पर रख दिया। गोश्त से भाफ उठी ग्रौर उसकी सोंध से वहां के लोगों के मुंह में पानी भर ग्राया। सारा परिवार कटोरे के इर्दगिर्द जमा हो गया। नारगिनाउत ने बड़ी चतुराई से वह कड़ा मांस ग्रौर गत साल की बची हुई व्हेल की चरबी काट दी। कटोरे पर झुककर उसने चरबी के पतले, सख़्त टुकड़े बना दिये। ग्रलितेत ने छुरी के नीचे से उन्हें उठा लिया ग्रौर बिना चबाये ही निगल लिया।

जबतब नारगिनाउत भी एकाध टुकड़ा सफ़ाई के साथ ग्रपने मुंह में डाल लेती ग्रौर फिर छुरी के साथ उसका हस्तकौशल जारी रहता।

पड़ोसी तूमातूगे रेंगकर यारंग में चला ग्राया। ग्रपना परका उतारकर उसने तह कर लिया ग्रौर नीचे रखकर उसपर बैठ गया। ग्रामंत्रण की प्रतीक्षा किये बिना ही उसने भोजन पर धावा बोल दिया।

व्हेल की चरबी के जलपान के बाद हर कोई बड़े लालच के साथ वालरस के मांस पर टूट पड़ा। यह पहले शिकार का ताज़ा ग्रौर सोंधा मांस जो था। कड़े मांस में ग्रपने दांतों को गड़ाकर ये भोजन-भट्ट होंठों के पास तेज़ छुरी से उसके टुकड़े काट रहे थे ग्रौर

उन्हें निगलते जा रहे थे। उस समय यारंग में आवाज़ सुनाई पड़ रही थी चपर-चपर खाने की और घरवाली के चाकू से लकड़ी के कटोरे पर होने वाली खटखटाहट की।

भोजन के उपरांत सभी ने अपनी चिकनी अंगुलियां चाट लीं और सूखी घास से मुंह पोंछ लिया।

"अब हमें चाय दो," अलितेत ने अपनी बीबी से कहा। "चीनी वाली चाय। तूमातूगे को डटकर चाय पीने दो। उसने वालरसों पर जमकर गोली चलायी है। ग्यारह में से नौ वालरसों का ख़ात्मा उसी ने किया है।"

तूमातूगे मुस्कराया, पसीने से तर अपने चेहरे पर हाथ फेरा और कोराउगे की ओर मुड़कर अपनी कहानी शुरू कर दी:

"समुंदर में हम दूर तक चले गये। सारे दिन, बिना आराम किये हम खेते रहे—क्योंकि हवा का कोई ठिकाना न था। वालरस वहां काफ़ी थे।"

"अपनी ढोलक की धमधमाहट से मैं ही उन्हें वहां खींच लाया था," ओझा ने बात काटते हुए कहा।

"हां कोराउगे, आपका कहना सही है। वालरसों का झुंड का झुंड वहां था। डोंगी वाले शिकारी इस जगह तक पहुंच न पाये। सिर्फ़ एक वालरस उन्हें अचानक दिखाई दिया। जब उन्होंने इस वालरस को मारकर उसका मांस डोंगी पर लाद दिया तो भारी बोझ के कारण डोंगी का तल फट गया। उस वक़्त हम उनके पास से होकर गुज़र रहे थे लेकिन उनकी मदद के लिए हम रुके नहीं। हमने देखा कि वे अपने शिकार को जल्दी जल्दी फिर से समुंदर में फेंकने में लगे हुए थे।"

"अच्छा हुआ तुमने मदद नहीं दी। अरे, भूत-पिशाचों का क्रोध व्हेल-नाव की ओर ही मुड़ जाता। भूत-पिशाच सर्वशक्तिमान

होते हैं, और साधारण मनुष्य उनके आगे वैसा ही कमज़ोर है जैसा कि भेड़िये के आगे टुंड्रा का चूहा। बस, तुमने वही किया जो करना चाहिए," ओझा ने उपदेशक के स्वर में कहा।

"अब की बार मेरा निशाना बड़ा अचूक रहा," तूमातूगे जोश के साथ कहता गया। "उधर वालरस का सिर दिखाई दिया और इधर मैंने जो गोली चलाई वह सीधे उसके सिर में जा घुसी।"

"आख़िर वह बंदूक़ किसकी थी?" अलितेत ने रोककर कहा। "क्या मुझी से न तुमने वह बंदूक़ ली थी? अरे, समूचे किनारे पर इसकी टक्कर की बंदूक़ है भी? यह विंचेस्टर है भाई, विंचेस्टर – सब से अच्छी। चार्ली ने ही मुझसे कहा था। इसके लिए मैंने चार्ली को आठ सफ़ेद लोमड़ियां, तीन लाल लोमड़ी वाली खालें और बारहसिंगे के बच्चियों की बीस खालें दे डाली थीं।"

"अलितेत, बारहसिंगों के बच्चियों की खालें सिर्फ़ दस ही तो थीं। मैंने अपने हाथों से बरफ़-गाड़ी पर लादी थीं," सकुचाते हुए तूमातूगे ने टोका।

"जी नहीं, बीस," अलितेत ने कर्कश स्वर में कहा।

"मुझे गिनती ठीक न आती होगी, अलितेत। आख़िर मैं व्यापारी थोड़े ही हूं। मैं जानूं भी कैसे?" तूमातूगे हकलाते हुए बोला।

"बारहसिंगों के बच्चियों की बीस खालें मैंने ऐसे ही दे डालीं। चार्ली ने मुझसे कहा कि इस बंदूक़ का नाम है 'जंगली' और यह निशाना कभी नहीं चूकती।"

इस समय तक तांबे की वह बड़ी देगची ख़ाली हो चुकी थी। ओझा कोराउगे ने शिकारियों की कहानियां ग़ौर से सुनीं और कहा:

"ओह, मैं बड़ा ओझा हूं। अपने बिरादरी वालों की अच्छी सेवा करता हूं। भूत-पिशाचों के साथ मेरी दोस्ती है। सारी बस्ती

मेरे संरक्षण में है। मैं ग्रादमियों की दवा करता हूं, बारहसिंगों को चंगा करता हूं ग्रौर बस्ती से भूत-पिशाचों को दूर भगाता हूं। एक को छोड़कर सभी लोग इसे जानते हैं—ग्रकेला वाल जानना नहीं चाहता। ग्राख़िर बेकार बुड्ढा जो ठहरा। लेकिन वालरसों को लुभाकर किनारे की ग्रोर लाते समय मैं वाल का भी ख़्याल रखता हूं। ग्रलितेत उसके यारंग को भी मांस का एक टुकड़ा भेज देता है।"

"सच है, कोराउगे, यह सच है! जाड़ों के लिए हर यारंग में तीन वालरसों की ज़रूरत होती है। लेकिन ग्रपनी टूटी-फूटी डोंगी के सहारे हर कोई तीन वालरस थोड़े ही पकड़ सकता है? यह नामुमकिन है। ग्रलितेत हर एक की मदद करता है," तूमातूगे ने कृतज्ञतापूर्वक कहा।

"कल जब मैंने ग्रपनी ढोलक बजायी तो पिशाचों ने मेरे कानों में कह दिया: 'वालरस ज़रूर मिलेंगे।' यह बात मुझे उतनी ही साफ़ सुनाई दी जितनी कि रात में कुत्तों की गुर्राहट सुनाई देती है। फिर मैंने ग्रलितेत से कहा: व्हेल-नाव तैयार करो, ग्रादमियों को तैयार करो। इस तरह तुम लोग ग्रागे बढ़े। ग्रौर तुमने एक दिन में ग्यारह वालरसों का शिकार किया।"

घुटनों पर सिर टेके बैठा हुग्रा तूमातूगे मुंह बाये, कोराउगे की ग्रोर ग्रादरपूर्ण दृष्टि से देख रहा था। ग्रोझा की ग्रद्भुत शक्तियों में उसे ग्राज जितना दृढ़ विश्वास पहले कभी न हुग्रा था।

नारगिनाउत बाहर चली गयी। वह वालरस की खालों को साफ़ करने में जुट गयी। उनपर चरबी की एक मोटी परत जमी थी जिसे फ़ौरन हटाना ज़रूरी था। बड़े बड़े जानवरों की ये खालें थीं ग्रौर ग्रलितेत निःसंशय उन्हें चाउचू ख़ानाबदोशों के हाथ बेचना चाहता था।

अपने अनेकानेक घरेलू कामों के कारण नारगिनाउत पिस-सी गयी थी। कभी कभी उसे अचरज लगता: "आखिर ये लोग इतने वालरसों को क्यों मार डालते हैं? हमें इतने गोश्त की तो ज़रूरत है नहीं।" अलितेत की यह बात भी उसकी समझ में न आती कि "यारंग में जितनी ज़्यादा खालें होंगी आदमी को उतनी ही ज़्यादा ख़ुशी होगी।"

नारगिनाउत के हाथ में दर्द होता रहता और इससे पहले कि उन्हें ज़रा सा आराम मिले, वह बड़ी बड़ी ख़ालों को साफ़ करने में फिर से जुट जाती। इधर दूसरे दिन अलितेत और वालरस ला देता।

"काम करो, भाई, काम करो!" अलितेत उससे कहा करता। "दूसरे यारंगों की औरतों को चीनी वाली चाय थोड़े ही मिलती है? लेकिन तुम्हें ज़रूर मिलती है, क्योंकि तुम मेरे यारंग में रहती हो। मैं, अलितेत, बिल्कुल उस मेरिकन जैसा ही हूं। चार्ली ने ही मुझसे कहा था।"

तीसरा अध्याय

जाड़ों के दिन। चौबीस चौबीस घंटों की रातें। चांद अभी निकला ही न था। चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा था। वर्ष की इस अवधि में सूर्य के दर्शन असंभव थे और लोग सोचते थे कि वह कहीं धरती के नीचे, महासागर के नीचे चला गया है और जल्दी नहीं लौटेगा।

बरफ़ीला तूफ़ान उठा। यारंगों से चरचराहट की आवाज़ आने लगी और वे थरथराने लगे। आहत पशु की तरह चीख-चिल्लाकर तूफ़ान ने ऊधम मचा दिया।

बदन को दोहराकर और थूथनियों को पेट के नीचे छिपाकर कुत्ते झपकी ले रहे थे और उग्र पंचमहाभूतों के प्रति बिल्कुल बेपर्वाह से नज़र आते थे।

बुड्ढे वाल के यारंग में चरबी का संग्रह खत्म हो चुका था। ढिबरियों में सूखी काई की बत्तियां धीरे धीरे जल रही थीं और धुआं उगल रही थीं। पोलोग में अंधेरा और सर्दी छा गयी थी। यारंग के निवासी बेढंगी पुरानी खालें ओढ़कर एक दूसरे से सटकर बैठे थे और जमे हुए कच्चे सील-मांस के बचे-खुचे टुकड़े चपर-चपर खा रहे थे।

यहां भी एक कोने में प्यारा कुत्ता चेगित पड़ा था। वह पूंछ हिलाता हुआ, अधमुंदी आंखों से उन लोगों की ओर ताक रहा था जो गोश्त चबाते जा रहे थे।

बुड्ढे वाल ने उसकी ओर एक छोटा सा टुकड़ा फेंक दिया। चेगित एकदम उछलकर खड़ा हुआ और मारे भूख के उसपर झपट पड़ा। उसने अपनी आंखें पूरी तरह से खोल दीं और दूसरे टुकड़े की आशा में बुड्ढे की ओर ताकता रहा।

वामचो एक हड्डी को कुतर रहा था और उसने कनखियों से चेगित की ओर देखा। भूखे कुत्ते पर तरस खाकर उसने हड्डी को हाथ में ज़रा सा घुमाया और कुछ सोच लेने के बाद उसे चेगित की ओर फेंक दिया।

कुत्ते ने हवा में उछलकर हड्डी पकड़ ली और उसे मुंह में दबाकर एक कोने में जा बैठा। अब वहां से हड्डी चगलाने की आवाज़ आने लगी।

वामचो की बुढ़िया मां इलिनेउत ने कठौता हटा दिया और अपनी चिलम सुलगायी। अपने झुर्रीदार हाथ में लकड़ी की बड़ी सी चिलम पकड़े वह अपनी मंद आंखों से लौ की ओर निर्विकार देख

रही थी। जब वह इतना धूम्रपान कर चुकी कि ग्राखिर उसपर नशा चढ़ गया तो उसने चिलम ग्रपने बेटे की ग्रोर बढ़ा दी जो टांग फैलाये खाल पर पड़ा हुग्रा था। वामचो उठ बैठा ग्रौर उसने तंबाकू का ग्राख़िरी कण ख़त्म हो जाने तक कश लगाये।

बुढ़िया इलिनेउत ने ख़ामोशी तोड़ी:

"बिना चरबी के दिन गुज़ारना बड़ा मुश्किल है। वामचो, ग्रब ग्रलितेत के पास चले जाग्रो। वह हर किसी को देता है। तूफ़ान देर तक रहेगा ग्रौर शिकार के लिए तूफ़ान में तुम जा नहीं सकते।"

बुड्ढे वाल ने ग्रपना गला साफ़ किया, ग्रौर धीरे से, या यों कहिये कि हिचकिचाते हुए, चिलम साफ़ करने लगा। फिर चुपचाप उसे भरा ग्रौर बेटे की ग्रोर बिना देखे हुए भर्रायी ग्रावाज़ में कहा:

"ग्रौरत परेशानी की जड़ है। जाग्रो, वामचो। उसे वह सफ़ेद लोमड़ी दे डालो। लोमड़ी की खाल देखते ही वह फूला नहीं समाता। इस छोटे से जानवर की झबरी खाल उसके नथुनों में गुदगुदी पैदा कर देती है। हो सकता है कि हम ऐसी लोमड़ी ग्रौर पकड़ लें।"

ग्राह भरते हुए बुड्ढे ने ग्रागे कहा:

"ग्रसल में लोमड़ी की खालें हमें बंदूक़ ख़रीदने के लिए जमा करनी चाहिए। बिना ग्रच्छी बंदूक़ के शिकारी ग्रादमी ही नहीं। लेकिन करें क्या? कमज़ोर ग्रादमी के लिए बंदूक़ भी किस काम की? बग़ैर रोशनी ग्रौर गरमाहट के ग्रादमी की वही हालत है जो बिना हवा के सील की।"

"हड्डियों का गूदा सूख रहा है ग्रौर खाने के लिए कुछ है नहीं," इलिनेउत ने कहा।

बुड्ढे वाल ने चिलम का एक ज़ोरदार कश लगाया ग्रौर धुएं का बादल सा उड़ा दिया ग्रौर फिर एक बार गला साफ़ करके वह बोला:

"कई जाड़ों से मैं ख़ामोश रहा। इतने दिन मैं मुंह में टांका सा लगाये बैठा रहा। लेकिन अब मेरी ज़बान बोलने के लिए तरस रही है। अब वह विवेक की बात नहीं सुनती।"

"कहिये पिताजी, अपने बेटे को बता दीजिये," तोरबाज़ पहनते हुए वामचो बोला।

वाल चुपचाप बैठा मन में निश्चय कर रहा था। आख़िर उसने अपना सिर झुकाया और बिना किसी की ओर देखते हुए दबी आवाज़ में कहने लगा:

"बहुत पुरानी बात है। उस वक़्त मेरी आंखों को सचमुच बड़ा क्लेश हुआ था। उन्होंने क्या देखा कि अलितेत दूसरे शिकारियों के जालों में से सफ़ेद लोमड़ियां उठा रहा है। यह बुरा था—बहुत ही बुरा! हमारे लोगों की यह रीत नहीं है। मेरी आंखों को कैसा सदमा पहुंचा! मेरे गले में तेज़ फटकार के शब्द उछलते रहे लेकिन मैं... मैं उस वक़्त कुछ बोला नहीं। कुछ भी बोलने से चुप बैठना आसान था।" बुड्ढे की आवाज़ इस वक़्त तक फुसफुसाहट में बदल गयी थी। "मैं एक टीले के पीछे छिप गया ताकि अलितेत मुझे देख न पाये। अपनी आंखों से वह दृश्य देखकर मुझे बड़ी लज्जा आयी। कुछ ही समय बाद ख़ुद कोराउगे ने भी बस्ती के सभी शिकारियों को धोखा दिया। बलिदान के लिए उसके पास लायी गयीं लाल और सफ़ेद लोमड़ियों की खालें अलितेत के भंडार में पायी गयीं। अलितेत की व्हेल-नाव की क़ीमत के रूप में जब उसने ये खालें दे दीं तो मैंने फ़ौरन अपनी और दूसरे शिकारियों की सफ़ेद लोमड़ियों वाली खालों को पहचान लिया। एक लोमड़ी की नन्हीं सी काली नाक इस तरह कटी हुई थी जिस तरह सिर्फ़ मैं ही काट सकता हूं। बस, वह मेरी ही लोमड़ी की खाल थी। चार्ली लाल-नकुए के गोदाम में पड़ी अनगिनत खालों में से भी मैं उसे ठीक ठीक पहचान लेता। व्हेल-नाव

की क़ीमत चुकायी गयी, हमारी लोमड़ियों की खालों से। अब यही व्हेल-नाव अलितेत की मददगार बनी हुई है और फिर हमें उसी को अपनी खालें देनी पड़ेंगी। यही ख़बर मुझे सुनानी थी," बुड्ढे ने कहा। यह सब कहते समय उसका सिर कांप रहा था। "लेकिन वामचो, कोई चारा नहीं। जाओ अलितेत के यहां और उससे मांग लो वालरस की चरबी और मांस—जो वह अपने कुत्तों को खिलाता है।"

वामचो ने झटके से अपने तोरबाज़ उतार लिये और तीखे स्वर में बोल उठा:

"नहीं पिताजी, मैं उसके पास नहीं जाऊंगा। मेरे क़दम वहां जाने से इनकार कर रहे हैं। बेहतर यह होगा कि मैं शिकारी पोशाक पहन लूं और तूफ़ान में, बरफ़ की चट्टानों के बीच सीलों का इंतज़ार करता रहूं।"

वामचो की काली काली आंखें चमक उठीं।

"वामचो," बुड्ढे ने कोमल स्वर में कहा, "ऐसे तूफ़ान में कभी सील नहीं मिलते। क्या तुम भूल गये? तुम्हारा जवान ख़ून सर्दी में भी खौल उठता है। लेकिन देखो, इलिनेउत ठिठुरी जा रही है। जाओ, वामचो! मैंने अलितेत के बारे में जो कुछ कहा उसे भूल जाओ। बुरी बातों को याद न करो। और ओझा कोराउगे का ख़्याल रखो। तुम्हें अभी लंबी ज़िंदगी गुज़ारनी है। वैसे ही वे लोग हमारा भला नहीं चाहते और बार बार उनके गुस्से को उकसाना ठीक न होगा।"

वामचो चुपचाप अपने तोरबाज़ फिर से पहनने लगा।

बुड्ढे ने कुछ धुआं निगलकर आगे कहा:

"और तांगों* की बंदूक़ों से डरकर शिकार दूर भाग गया है।

---

*गोरे लोग।

सीलों के अड्डे ख़ाली पड़ते जा रहे हैं। अब दिन-ब-दिन किनारे के पास आने वाले शिकार की तादाद घट रही है। पहले वालरस किनारे पर आराम से सोया करते थे। हम उनकी पीठों पर से चले जाते और फिर भी उन्हें हमारी आहट न मिल पाती। हम सिर्फ़ बुड्ढे नरों को मार देते थे, और अब देखो, बिना सोचे-विचारे शिकार किया जा रहा है। गरमियों में अलितेत ने कितना गोश्त समुंदर में फेंक दिया! चार्ली लाल-नकुआ चाहता है सिर्फ़ वालरसों के दांत। लेकिन दांत खाने की चीज़ थोड़े ही हैं।" बुड्ढे ने चिलम का कश लगाया। "अपनी जवानी में वालरसों को बरछी फेंककर मारने में मैं माहिर था—ठीक उनके कलेजे में बरछी घुसाता था!" यह कहते हुए वाल ने अपनी चिलम को बरछी फेंकने के पैंतरे में घुमाया।

गहरी झुर्रियों वाले उसके चेहरे पर एक क्षणिक स्मित-रेखा दौड़ गयी। गरमियों में अलितेत सागर से साठ से भी अधिक वालरसों को घर लाया था। और फिर सागर में कितनी ही मुर्दा वालरस फेंक दिये गये थे!

तूफ़ान उन्मत्त हो उठा था। सीलों के शिकार के लिए बाहर जाने का सवाल ही नहीं था। उन दिनों कई शिकारियों को अलितेत से मुलाक़ात करनी पड़ी थी। हरेक को अलितेत ने मांस का एक एक टुकड़ा और कुछ चरबी दे दी। अलितेत की राय थी कि आदमी को भूख की वजह से नहीं मरने देना चाहिए। इन्सानों की मदद की ही जानी चाहिए। आख़िर बिना उनके वह कर ही क्या सकता था?

वामचो भी उसके पास से गोश्त और चरबी ले आया।

चरबी पाकर ढिबरी की काई चौड़ी लपट में जलने लगी और सर्द पोलोग उससे रोशन हो उठा। यारंग में जीवन लौट आया। गरम प्रकाश वाला घर कितना सुखदायी होता है। इलिनेउत का चेहरा खिल उठा और वह अपने काम में लग गयी। शीघ्र ही पानी

उबलने लगा। बुढ़िया ने हरेक के लिए गरम गरम चाय दी। लेकिन वामचो उदास दृष्टि से उस ढिबरी की ओर देख रहा था जिसमें से उष्णता निकल रही थी।

"तुम्हारी आंखों में उदासी क्यों, वामचो? देखो, अब हमारे पास आग है," इलिनेउत ने कहा।

"अलितेत ने मुझसे मेरे चेगित की मांग की। उसके शब्दों से मेरा कलेजा झुलस उठा। मैंने कहा—नहीं। क्या मैं भी शिकारी नहीं हूं? वह गुस्सा हो गया। और पिताजी, मैंने कुछ और भी ख़बर सुनी है," बड़े भावावेश में वामचो ने कहा। "पिताजी, आप को याद है? मैंने सफ़ेद लोमड़ियों के लिए 'तीन-पहाड़ियों' के पास जाल बिछा दिये थे। यह बहुत ही अच्छी जगह है। मैंने चारा भी काफ़ी रख दिया था। लेकिन वहां मैं एक भी लोमड़ी नहीं पकड़ पाया। चारा अछूता ही पड़ा हुआ था। उससे बदबू आ रही थी। आख़िर टुंड्रा में यह बदबू कहां से आ पहुंची? मैं समझ न सका। लेकिन अभी अभी जब नारगिनाउत मुझे चरबी और मांस दे रही थी, उसने एक बोतल गिरा दी। बोतल फूट गयी और उसमें से बदबूदार पानी निकलकर फैल गया। देखिये पिताजी, ज़रा सूंघ लीजिये। उसके कुछ छींटे अभी तक मेरे हाथों पर हैं।"

वामचो ने अपना हाथ पिता की नाक के पास धर लिया और बुड्ढे ने नफ़रत से मुंह सिकोड़कर फ़ौरन अपना सिर पीछे हटा लिया।

"यह है तांग लोगों के दीये की चरबी*। चार्ली लाल-नकुआ अपने लोहे के दीयों में यही डालता है। कहीं अलितेत ने हमारे चारे पर यही तो नहीं छिड़क दिया?" बुड्ढे ने अचरज के साथ पूछा। "अगर ऐसा हो, तो वह बड़ा ही दुष्ट आदमी है।"

---

* मिट्टी का तेल।

"हां, यही वह बदबू है। इस ख़तरनाक बदबू को कोई भुला नहीं सकता," वामचो ने जवाब दिया।

बुड्ढे ने एक लंबी आह भरी।

मर्दों की इस बातचीत का इलिनेउत पर कुछ भी असर न पड़ा। वह बुढ़िया अपने ही कामों में व्यस्त थी। उसने लकड़ी का कूड़े-कर्कट से भरा टब उठाकर बाहर ले जाना चाहा। लेकिन वह बाहरी किवाड़ खोल ही रही थी कि हवा के ज़ोरदार झोंके ने उसके हाथों से टब को छीनकर उड़ा दिया और वह यारंग के पास से लुढ़कता हुआ दूर चला गया। बुढ़िया उसके पीछे दौड़ी और अंधेरे में ग़ायब हो गयी।

इलिनेउत यारंग में वापस नहीं आयी। हवा गरज उठी और उसने छत को फाड़ डाला। ऐसा लग रहा था कि वह बरफ़ की सारी परत को ज़मीन से उखाड़कर घुमाती हुई आसमान में फेंक देगी और गरजती-चिल्लाती हुई सागर की ओर उड़ाती रहेगी। खूंटियों में कसकर बंधी हुई डोंगी अपने स्थान से हट गयी थी।

चौथा अध्याय

पेट भर नश्ता करके अलितेत बारहसिंगे की रोवेंदार खालों के बिछौने पर लेटा हुआ था। उसका बेटा गोई-गोई पिता की नंगधड़ंग तोंद पर पैर फैलाकर बैठा था। बच्चा ख़ुशी में हंस रहा था और जबतब अपनी मां की ओर नज़र दौड़ाता था। नारगिनाउत 'लिपटन' चाय का तेज़ और ख़ुशबूदार काढ़ा उंडेल रही थी। पोलोग में दम घुटा-सा जा रहा था। तीन ढिबरियों की तेज़ रोशनी में वहां के लोगों के नंगे बदन वालरसों की चिकनी खाल की तरह चमक रहे थे।

श्रोझा कोराउगे बैठे बैठे ऊंघ रहा था। वह चाय की श्राशा में अपने को जगाये रखने का प्रयत्न कर रहा था। बीच बीच में उसकी तंद्रा यकायक टूटती लेकिन दूसरे ही क्षण वह फिर से झपकियां लेने लगता।

"चार्ली तेज़ दौड़ता है... बहुत ही तेज़... चार्ली कुत्तों का सरग़ना है," अपनी बरफ़-गाड़ी के कुत्ते के बारे में अलितेत अपने बेटे से कह रहा था।

इस उम्दा दिमाग़ शिकारी कुत्ते को अलितेत बहुत ही प्यार करता था और अपने मेरिकन मित्र के प्रति प्रामाणिक आदर की भावना से ही उसने इस कुत्ते का नाम मि० थामसन के नाम पर रखा था।

"और किसी के भी पास ऐसा कुत्ता नहीं। बस, अकेले मेरे पास ही है।"

अलितेत ने अपनी तोंद को ज़रा सा फुलाया और कोहनियों के बल ऊपर उठा। गोई-गोई नीचे की ओर खालों पर लुढ़क पड़ा और हंसता हुआ फिर से भालू के बच्चे की तरह अपने बाप पर झपट पड़ा।

इसी समय तूमातूगे की पत्नी का सिर पोलोग में झांकता हुआ दिखाई दिया।

"अरी, तुम आ गयीं?" नारगिनाउत ने उसका स्वागत किया।

"जी हां," उस स्त्री ने उत्तर दिया। "हमारे यहां की सारी चरबी ख़त्म हो गयी है। तूमातूगे बीमार पड़ा है और यारंग में सर्दी भर गयी है।"

"पिताजी, आपको बीमारी भगाने वाले पिशाचों को मनाना चाहिए। हमें तूमातूगे की मदद करनी चाहिए; क्योंकि वह सब से अच्छा शिकारी है," अलितेत ने कहा, लेकिन उसका मांत्रिक पिता गहरी नींद में मग्न था।

"नारगिनाउत, दे दो उसे एक टुकड़ा। उसे रोशनी भी तो मिलनी चाहिए ताकि वह तोरबाज़ों और स्लिपरों की सिलाई कर सके। अगली अमावस के बाद मैं बारहसिंगा-पालक खानाबदोशों और मेरिकन के पास जाऊंगा," बैठक की खाल समेत, गरम चाय की ओर सरकते हुए अलितेत ने कहा। "बस, तुम सिर्फ़ अच्छे स्लिपर बनाओ। अरी, खुद मेरिकन उन्हें पहनेगा।"

स्त्री ने ज़ोरों से गरदन हिलाकर जैसे मंजूरी दी और फिर नारगिनाउत के पीछे पीछे वहां से चल दी।

ओझा कोराउगे जाग उठा और पीढ़े के पास चला आया।

"कितने लोगों को मैं खिलाता हूं!" अलितेत ने कहा।

"हां, बहुतों को," कोराउगे ने रूखे स्वर में हमी भरी। उसने एक मृग-चर्म से अपनी आंखें मलीं और चाय की फ़रमाइश की। "अलितेत, लोगों की मदद करने में तुम हद से ज़्यादा उदार हो। तुम्हें अपना भंडार संभालकर रखना चाहिए। आजकल सारे किनारे पर गोश्त की तंगी है। अरे, भंडार में बड़ी ताक़त होती है।"

अचानक हवा के ज़ोरदार झोंके ने यारंग को कंपा दिया। हर कोई घबड़ाकर देखने लगा।

"बहुत ही बड़ा और ताक़तवर तूफ़ान है। उसे रोकने के लिए मुझे पिशाचों को मनाना पड़ेगा," अपनी ढोलक की ओर देखते हुए ओझा ने कहा। "आदमियों को शिकार के लिए बाहर जाना चाहिए। सुस्ती की वजह से वे लालची बन गये हैं। वे तुम्हारा सारा भंडार चटकर जायेंगे।"

नारगिनाउत अंदर आयी।

"हर समय उन्हें थोड़ा थोड़ा दिया करो," अलितेत ने आदेश दिया। "मांगने के लिए वे अधिक बार हमारे द्वार पर आयें यही मैं मानता हूं। चार्ली ने भी मुझसे यही कहा। और वामचो को एक

भी टुकड़ा ज़्यादा न देना। उसका दिमाग़ ज़रा ठिकाने आ जाये। अब अगर वह ख़ुद ही अपना कुत्ता मुझे देना चाहे तो भी मैं नहीं लूंगा। पागल कहीं का! एक अच्छा कुत्ता रखकर आख़िर करेगा भी क्या? उसके यहां के दोगले कुत्तों की जमात में वह योंही सड़ रहा है!"

"अलितेत, तुम्हारे पास तो तैंतालीस कुत्ते हैं, फिर वामचो का कुत्ता क्यों चाहते हो? उसके पास थोड़े से ही तो हैं!" नारगिनाउत ने कहा और अपनी इस धृष्टता पर सहम-सी गयी।

"अरे, मैं यह क्या सुन रहा हूं?!" ओझा फुफकार उठा। "क्या तुम कुत्ता-गाड़ी हांकने वाली बन गयी हो जो कुत्तों के बारे में बोल रही हो? और आदमियों के कामों में दख़ल देना तुम्हारी ज़बान ने कब से सीखा?"

"कुत्तों के लिए काफ़ी खाने की ज़रूरत पड़ती है," नारगिनाउत बुदबुदायी।

"खाने का बंदोबस्त तुम्हारे हाथ में थोड़े ही है। और ऐसे भी कितना ही गोश्त बाहर चला ही जाता है। या कहो कि तुम मेरे कुत्तों को खिलाने से ऊब गयी हो? ऐं?" अलितेत गुर्राया। "हर औरत को यह देखकर डाह होता है कि तुम्हारे पास काफ़ी काम है। कहिये पिताजी, सच कह रहा हूं न?"

"तुम कोराउगे के बेटे हो। हमेशा ठीक बोलते हो।"

इस प्रशंसा से ख़ुश होकर अलितेत मुस्कराया। उसने अपनी भुजा ठोंकी और बोल उठा:

"मैं एक और बीवी क्यों न ब्याह लाऊं?"

"जो एक औरत को नहीं खिला सकता वह थोड़े ही दूसरा ब्याह सकता है। तुम तो कई बीवियों और उनके बच्चों को खिला-पिला सकते हो। कमज़ोर थोड़े ही हो। अरे, चार कुत्ता-दलों को

तुम खिला रहे हो।" अपना हड़ीला हाथ हिलाते हुए ओझा ने घमंड के साथ कहा।

अलितेत ने पत्नी की ओर विजय की दृष्टि से देखा।

"सुना नारगिनाउत? साफ़ साफ़ समझी कि नहीं?"

"आपकी मर्ज़ी," नारगिनाउत ने लाचारी से कहा।

"ढलती उम्र में तुम ज़रा फहड़ बन गयी हो। घर का कारबार ठीक से संभाल नहीं पातीं।"

अलितेत अपने बाप के साथ देर तक बातें करता रहा कि अपनी धन-दौलत को दिन-दूना रात चौगुना कैसे बढ़ाया जाये। बारहसिंगों का एक रेवड़ ख़रीदने और ख़ानाबदोशों और मेरिकनों के साथ अपने लेन-देन की भी चर्चा उसने की।

सांझ को हर कोई सो जाने की तैयारी में था कि ढोलक की धमधमाहट शुरू हुई। ओझा ने कहना शुरू किया:

"मेरे लोग कई दिन से यारंग के बाहर नहीं गये...
"मेरे लोगों को सीलों के शिकार के लिए जाना चाहिए...
"लोगों की मदद करते करते अलितेत थक गया है...
"ऐ हवा, चली जाओ!..
"ख़ुद कोराउगे यह चाहता है..."

"गित, गित! कैवा, कैवा!" ओझा को प्रोत्साहन देते हुए अलितेत एकदम बोल उठा।

कोराउगे आवेश में ढोलक पीटता रहा, उन्माद में चीख़ता-चिल्लाता रहा, पिशाचों से अनुनय-विनय करता रहा।

उत्तरी हवा का ज़ोर कम हो गया। वह तेज़ी के साथ पहाड़ियों की ओर, चुकोत्स्क पर्वतमाला की गहराइयों में चली गयी लेकिन बरफ़ीली चट्टानों की कड़कन सागर पर अभी भी सुनाई दे रही थी।

अपने दमघोट पोलोगों में से शिकारी रेंगकर बाहर आये और वाल के यारंग के इर्दगिर्द इकट्ठा हुए।

"टब लेकर वह बाहर चली गयी और... वापस न आयी," अपने हाथों को फैलाकर बुड्ढा कह रहा था। "रात भर हमने तलाश की।"

दूसरे दिन सबेरे ढलवां चट्टान के बिलकुल किनारे के पास हिमखंडों के बीच बेचारी बुढ़िया की लाश मिली। घुटनों में सिर छिपाये वह एक हिमखंड के सहारे बैठी हुई थी। वामचो ने उसके कंधे का स्पर्श किया और जमकर बरफ़ बनी वह लाश लुढ़ककर गिर पड़ी।

नज़दीक ही, कोई दस एक क़दमों की दूरी पर टब का किनारा बरफ़ में से झांक रहा था।

पांचवां अध्याय

अग्नि के समान रक्तवर्ण चंद्रबिंब पर्वत-पृष्ठ के पीछे से निकलकर शीघ्र गति से नभोमंडल में चढ़ता गया। बीच बीच में वह अभ्राच्छादित होता और तब तारे ज़ोरों से जगमगा उठते।

गहरी निस्तब्धता छायी हुई थी। केवल टुंड्रा प्रदेश से बारहसिंगों के रेवड़ों के गुज़रने की आवाज़ यदा-कदा आती थी। वे तेज़ चल रहे थे और उनके खुरों की पड़पड़ाहट में चरवाहों की चिल्लाहट डूब जाती थी। ये रेवड़ पश्चिम की ओर रिलकलिआउत टुंड्रा में चले गये और फिर एक बार सारे संसार में गहन-गंभीर शांति छा गयी।

चांद और ऊपर चढ़ा। उसके चमकदार प्रकाश के कारण सीलों का शिकार करना, लोमड़ियों को फंसाना और आसपास वाली बस्तियों के लोगों का एक-दूसरे से मिलना-जुलना संभव हुआ। एनमकाई बस्ती के यारंग अद्भुत चांदनी में धुंधले से दिखाई दे रहे थे। बस्ती

की सीमा पर अलितेत का यारंग था जो सब से बड़ा था। इस यारंग के बाहर जवान शिकारियों की भीड़ लगी हुई थी। खतरनाक पाले के बावजूद वे सब नंगे सिर थे और हिमकणों से ढंके हुए अनेक बाल चांदी की तरह चमक रहे थे। उनके सांवले-से चेहरे लाल पड़ गये थे। ये सब अलितेत को विदा देने आये थे। पोलोग के पीछे से उसकी गड़गड़ाती आवाज़ सुनाई दी।

"तूमातू-उ-उगे!"

"वू-उ-उ-उई!" तूमातूगे चिल्लाया और अपनी बीमार होते हुए भी पुकार का जवाब देने के लिए बड़ी फुर्ती के साथ आगे बढ़ा।

यदि अलितेत तूमातूगे को हुक्म देता कि तुम पहाड़ से कूद पड़ो तो तूमातूगे बेहिचक कूद पड़ता।

"देखो, चार्ली को आगे जोतो और कपेर को धुरे में!"

"ऐ-हेई!" तूमातूगे ने झट से जवाब दिया और मचान पर रखी बरफ़-गाड़ी की ओर चल दिया।

जवान शिकारी उसकी मदद के लिए दौड़े। यह बड़ी ही अच्छी बरफ़-गाड़ी थी जो माहिर कारीगरों ने कोलिमा बर्च की लकड़ी से बनायी थी। उसका रंग गहरा हरा था और उसमें एक भी कील या पेंच का उपयोग न किया गया था। उसका हर हिस्सा मज़बूत चमड़े के तस्मों से बंधा था। इसी लिए यह गाड़ी कुत्तों की पहुंच के बाहर, एक मचान पर रखी हुई थी ताकि वे तस्मों को कहीं चबा न जायें। अलितेत के मकान में हर चीज़ क़ायदे से रखी हुई थी। अलितेत सुव्यवस्था पसंद करता था।

यारंग के दरवाज़े पर बरफ़-गाड़ी तैयार खड़ी थी। तूमातूगे ने वालरस के चमड़े का एक लंबा पट्टा खोल दिया। यह था गाड़ी का जोत, जिसमें दो दो हाथ के अंतर पर फंदे बने थे। इन फंदों में कुत्तों की जोड़ियां जोती गयी थीं। तूमातूगे को अपने पीछे खींचते हुए

चार्ली गाड़ी की ग्रोर दौड़ा। मोटे ताज़े भेड़िये जैसा यह भीमकाय भूरा कुत्ता जुत जाने के लिए उत्सुक था। तूमातूगे ने कुत्ते को उसके कमरबंद के सहारे पकड़ रखा था। उसकी तेज़ रफ़्तार के साथ रहने के लिए वह इतना ही कर सकता था।

जोत के फैलाये हुए पट्टों के सिरे तक चार्ली दौड़ता गया ग्रौर फिर ग्रपने ग्राप रुककर वहां पुट्ठों के बल बैठ गया। उसकी लंबी लाल लाल जीभ लपलपा रही थी ग्रौर ग्रांखें उत्तेजना में चमक रही थीं।

दूसरे लड़कों ने बरफ़-गाड़ी के बाक़ी कुत्तों को पकड़कर वहां ला खड़ा किया। ये कुत्ते स्वस्थ तथा पुष्ट थे ग्रौर गाड़ी में जुतकर दौड़ने के लिए उत्सुक। चार्ली बरफ़ में पीठ के बल लेट गया ग्रौर हवा में टांगें झटकता हुग्रा इधर-उधर लोटने लगा। बाक़ी कुत्तों ने भी उसका साथ देना शुरू किया।

तूमातूगे पोलोग की ग्रोर दौड़ा।

"ग्रलितेत!" उसने ग्रावाज़ दी। "कुत्ते बरफ़ में लुढ़क-पुढ़क रहे हैं। मतलब यह कि बरफ़ीला तूफ़ान उठने वाला है।"

"कुछ परवाह नहीं," ग्रलितेत गुर्राया।

उसने चाय का ग्राख़िरी मग ख़ाली किया। जैसे ही वह ग्रागे ग्राया, कुत्ते दौड़ने की तैयारी में उछलकर खड़े हो गये। चार्ली गुर्रा उठा।

ग्रलितेत ने जवानों को सलाम-दुग्रा का जवाब दिया, बारीकी से कुत्तों के साज़ की जांच की ग्रौर ज़रा नाख़ुश होते हुए तीन कुत्तों के पट्टों को ठीक-ठाक कर दिया।

"पेट का पट्टा!" चिल्लाकर उसने ग्रपनी बीबी से कहा।

नारगिनाउत दौड़ी हुई यारंग में गयी ग्रौर बारहसिंगे का एक छोटा सा चमड़ा ले ग्रायी जिसके सिरों में बंद लगे थे।

"चार्ली के बग़ली हिस्सों में रोवों की पतली परत है और इससे वहां ठंड लग जाने का डर है। मुझे रास्ते में उनको ढांकना होगा," अलितेत बोला।

कुत्ते उसे घूर रहे थे।

अलितेत ने बरफ़-गाड़ी को पलट दिया जिससे बरफ़ पर सरकने वाली उसकी हालें ऊपर की ओर हो गयीं।

"अरे, ये तो बिलकुल खुरदरी हो गयी हैं। उन्हें बरफ़ाने की ज़रूरत है!"

तूमातूगे के चेहरे का रंग उड़ गया और उसने अपने को अपराधी जैसा अनुभव किया। "बरफ़-गाड़ी की हालों को बरफ़ाना मैं कैसे भूल गया?" उसके मन में विचार आया। वह फ़ौरन यारंग में घुसा और दूसरे ही क्षण पानी की एक देगची लिये बाहर आ गया। जल्दी से रीछ की खाल का एक टुकड़ा पानी में भिगोकर उसने हालों को रगड़ दिया। बरफ़-गाड़ी की हालों पर बरफ़ की एक पतली सी परत चढ़ गयी।

अलितेत ने जांच करते हुए कहा:

"यह तो बहुत ही मोटी परत है। उभड़े हिस्सों पर दौड़ते दौड़ते टूट जायेगी।"

तूमातूगे ने अपना छुरा निकाला और जल्दी से बरफ़ की परत हटा दी। अब बरफ़-गाड़ी की हालें खुल पड़ीं।

अलितेत ने रीछ की खाल का टुकड़ा लेकर, औंधी बरफ़-गाड़ी की परिक्रमा की और खाल के टुकड़े को हालों पर फेरता गया।

"यह काम ऐसे किया जाता है!"

देगची का पानी तूमातूगे ने एक बोतल में उंडेल दिया और बोतल अलितेत को थमा दी।

बोतल अपने परके के नीचे दबाये अलितेत गाड़ी पर चढ़ बैठा। कुत्ते कांप उठे।

"ऐ है!" अलितेत चिल्लाया और कुत्तों का दल बरफ़-गाड़ी खींचता हुआ पहाड़ी के नीचे सरपट दौड़ने लगा।

अलितेत के सरपट दौड़ने वाले कुत्ता-दल को वहां के जवान ईर्ष्या की दृष्टि से देखते रहे।

और सचमुच नज़ारा देखने लायक़ था! कानों को काटने वाले पाले में खड़े रहकर भी निहारने योग्य था।

कोलिमा के कुत्ता-दल-चालकों से अलितेत ने ये कुत्ते ख़रीदे थे। हर कुत्ते के लिए आठ या आठ से अधिक सफ़ेद लोमड़ियों की खालें दी थीं। सारे तट-प्रदेश में इसकी टक्कर का और कोई कुत्ता-दल नहीं था। ऐसे कुत्ते पालना अलितेत के सिवा और किसी के लिए संभव भी न था। खानाबदोशों के साथ उसका लेन-देन था और हर साल वह उन्हें वालरसों की खालें, चमड़े के तस्मे और जूते ला देता था। चरवाहों के लिए ये चीज़ें बहुत ही ज़रूरी थीं। मि० थामसन के व्यापार-केंद्र से वह इन लोगों के लिए तरह तरह का माल ला देता और हर साल लोमड़ियों की खालों के बड़े भारी ज़ख़ीरे टुंड्रा के बाहर भेज देता।

जब किसी शिकारी के पास अच्छा सा पालतू कुत्ता होता तो उसका एक न एक दिन अलितेत के पास चला आना निश्चित था। कुत्ता अच्छा हो और उसे न मिले यह असंभव था। वह अपनी इच्छा पूरी करके ही रहता। अलितेत मोटे-ताज़े और लंबे डग भरने वाले कुत्तों का शौक़ीन था। कुत्तों का एक जैसा डील-डौल होना ज़रूरी था ताकि वे एक-दूसरे के पीछे ठीक तरह से दौड़ सकें। ऐसे कुत्तों के सहारे अलितेत किसी भी तूफ़ान का मुक़ाबला कर सकता था।

थूथनियां ऊपर उठाये हुए कुत्तों को जंगली शिकार की बास आयी और वे लगे हवा से बातें करने। अलितेत खुश था। चार्ली के पास लेन-देन के दौरे पर जाते समय वह हमेशा ही ख़ुशदिल रहता मानो पर्व मनाने जा रहा हो।

छठा अध्याय

पहाड़ी के नीचे एक ढलवां चट्टान के आगे लोरेन की बस्ती थी जहां बिखरे हुए यारंग थे। कुछ यारंग बड़े, गुंबददार, कैनवास की छत वाले थे तो कुछ बहुत ही छोटे और वालरस की खाल की छत वाले। इस बिखरी हुई बस्ती के किनारे सूई की शकल वाले यारंग थे जिनमें बोरियों, वालरस की पुरानी खालों और सील के चमड़े के टुकड़ों के थेगले लगे हुए थे। यहां ऐसे शिकारी रहते थे जिन्होंने काफ़ी खाने-पीने के कारण पैदा होने वाली सुस्ती और सुखद तंद्रा का अनुभव कभी नहीं किया था।

इस स्थान में अच्छी रोवेंदार खालों की कमी थी। वालरसों के हर शिकार के बाद शिकारियों को रोवेंदार खालें डोंगी के मालिक को देनी पड़ती थीं। मांस सहित कुछ खालें पेट-पूजा में चली जाती थीं। जाड़ों में अगर पेट में वालरस का मांस न हो तो कितने ही कपड़े पहनकर भी शरीर में गरमाहट नहीं आ सकती थी।

चट्टान उतरती हुई सागर-तट तक चली गयी थी। यह किनारा कंकड़ों और बरफ़ से ढंका था। यहां, सागर-तट के समीप और यारंगों से दूर तक इमारत थी जो कि देश के इस हिस्से में बिलकुल असामान्य सी लगती थी। उसकी छत और दीवारें लोहे की पनारीदार चादरों की बनी थीं। इस लोहेदार मकान का मालिक था चार्लस थामसन।

चार्ली, जैसा कि मि० थामसन के इच्छानुसार वहां के निवासी उसे कहा करते थे, इस प्रदेश में लगातार बीस बरस से भी अधिक समय से रह रहा था। दैव की विचित्र गति उसे इस सुदूर तथा अपरिचित तट पर लायी थी। जवानी में वह अपनी बीवी की हत्या करके अपनी मातृभूमि नार्वे से भाग गया था और क़ानून के पंजे से

बचने के लिए उसने अमरीका की शरण ली थी। देश-विदेश घूमते हुए आखिर वह अलास्का की ओर चला गया। अमरीका में उसने अपना नाम बदलकर चार्लस थामसन रख लिया और अमरीकी नागरिकता भी प्राप्त कर ली।

अलास्का में अन्य कइयों की तरह सोने की प्यास ने उसे भी दीवाना बना दिया था। लेकिन वह जहां कहीं जाता उसके मन में बराबर यह डर बना रहता कि कहीं भेद खुल न जाये। अमरीका में अपराधियों के प्रत्यर्पण का क़ानून अमल में था ही।

सफ़ेद आदमी के क़ानून से बचने के लिए भाग खड़े हुए चार्लस थामसन ने बेरिंग जल-डमरूमध्य को लांघकर चुकोत्स्क के अपरिचित पठार-प्रदेश में प्रवेश किया। अफ़वाहों के अनुसार इस हिस्से में सोना अलास्का से कुछ कम नहीं था।

पहली बार जब चार्लस थामसन ने चुकोत्स्क के किनारे पर क़दम रखा तब उसकी सारी दौलत थी एक कुदाल और कुछ जेबी औज़ार। यही सोने की खोज में निकले हुए हर व्यक्ति की साधन-सामग्री होती है। चार्लस थामसन अच्छी तरह जानता था कि सोना उसे किसी भी क़ानून का मुक़ाबला करने के क़ाबिल बनायेगा।

लेकिन ठंडे और निर्जन टुंड्रा प्रदेशों में अकेले ही सोना खोद निकालना कोई आसान काम न था। इस अकेले स्वर्ण-शोधक की ज़िंदगी की बाज़ी सी लगी हुई थी। क़िस्मत की लहर उसे भविष्य में करोड़पति भी बना सकती थी या इक्के-दुक्के जानवर की तरह भूखों भी मार सकती थी।

फिर भी लोरेन में कुछ ही दिन रहने के बाद उसने एक ऐसी महत्वपूर्ण खोज की जिससे उसकी ज़िंदगी का ढर्रा बदल गया। उसने देखा कि क़ीमती रोवेंदार खालों के रूप में सोना समुद्री डाकुओं के हाथों में बहता चला जाता है और उन्हें व्यवहारतः कुछ भी परिश्रम

नहीं करना पड़ता। इस सम्माननीय व्यापार के उज्ज्वल भविष्य के बारे में उसे पूरा विश्वास था।

समुद्री डाकुओं ने सुझाव दिया कि वह उनका आढ़तिया बने। बिना किसी लिखा-पढ़ी के, सिर्फ़ ज़बानी समझौते के आधार पर उसे काफ़ी माल मिलने लगा। कुछ ही समय में मि० थामसन ने एक चुकची लड़की के साथ ब्याह कर लिया और लोरेन में व्यापारी बनकर रहने लगा।

अगली गरमियों में समुद्री डाकुओं का जहाज़ इस ओर नहीं आया। अफ़वाह यह थी कि एक चट्टान से टकराकर वह डूब गया और उसके साथ वे सज्जन भी समुद्र के गर्भ में समा गये जिनके साथ मि० थामसन ने ज़बानी समझौता किया था।

भाग्य की इस कृपा के बाद मि० थामसन ने वाशिंग्टन के एक बैंक में निजी खाता खोला। रोवेंदार खालों के व्यापार में प्राप्त धन में से एक काफ़ी मोटी रक़म उसने पहली किस्त के रूप में जमा कर दी। यह किस्त उसकी ज़िंदगी में एक अत्यंत रोमांचकारी याद बनकर रहने वाली थी।

कई साल बीत गये और जिस कुदाल के साथ मि० थामसन चुकोत्स्क आया था वह अब उसके भंडार में एक ताक़ पर भाग्य-यंत्र के रूप में विराजमान थी। वह मानता था कि यही भाग्य-यंत्र उसे इस समृद्ध प्रदेश में ले आया था।

चार्लस थामसन अब एक मालदार असामी बन गया था। अब समुद्री डाकुओं के साथ वह व्यापार न करता बल्कि उसी के शब्दों में "एक सचमुच सम्माननीय व्यापारिक" प्रतिष्ठान से संबद्ध था।

हर गरमी में अमरीका से एक जहाज़ उसके लिए माल ले आता था। माल ढोकर तट पर लाने के लिए शिकारी लोग कई कई दिन लगातार दिन-रात काम करते रहते। माल के पिटारे और गट्ठर

देर तक किनारे पर अरक्षित पड़े रहते लेकिन ऐसा कभी न हुआ कि चाय का एक भी पुड़ा, शक्कर की एक भी डली या तंबाकू की एक भी पत्ती ग़ायब हुई हो। इस तट पर बड़े ही ईमानदार लोग रहते थे। घोर दरिद्रता तथा अनगिनत आवश्यकताओं के बावजूद किसी के मन में यह विचार न आया कि चार्ली के यहां से किसी चीज़ को चुरा लिया जाये। जहाज़ के चले जाने के बाद माल को गोदाम में ले जाया जाता लेकिन इसलिए नहीं कि उसके चोरी होने का डर हो बल्कि इसलिए कि हवा-पानी और बरफ़ से उसका बचाव हो सके।

हर ग्रीष्म में जहाज़ का कर्णधार थामसन को बैंक के हिसाब का एक पुर्ज़ा थमा देता जिसमें यह लिखा होता कि गत वर्ष के व्यापार के हिसाब में से कोई दस पंद्रह हज़ार डालर उसके खाते में जमा कर दिये गये हैं। जाड़ों की लंबी रातों में जब कि बाहर बरफ़ीले तूफ़ान की गुर्राहट जारी रहती, मि० थामसन अपने मकान में बैठकर बड़ी ख़ुशी से अपने हिसाब पर नज़र दौड़ाता रहता। जी भर कर देख लेने के बाद वह अपने काग़ज़ात एक मज़बूत बक्स में बंद करके ताला जड़ देता। बैंक में उसकी इतनी रक़म जमा हो गयी थी कि केवल उसके व्याज से ही उसकी बाक़ी ज़िंदगी आराम से कट सकती। मि० थामसन इस देश से विदा लेने की सोच रहा था लेकिन और दस एक हज़ार डालर इकट्ठा करने की इच्छा साल-ब-साल उसको यहीं रोके हुए थी।

मि० थामसन के मन में यह विचार भी आता कि "आख़िर इस देश को छोड़ूं भी क्यों? यहां मैं सभ्यता का प्रतिनिधि हूं और किसी उपनिवेश के गवर्नर के से अधिकार मुझे यहां प्राप्त हैं। अमरीका वापस जाऊं? या नार्वे लौट चलूं? आख़िर क्यों? वहां के ऐरों-ग़ैरों की भारी बाढ़ में डूब जाने के लिए? नहीं! और एक साल यहीं रहूंगा।"

मि० थामसन के लौह-सदन के पास एक दर्जन से भी अधिक कुत्ता-गाड़ियां खड़ी थीं। लंबे सफ़र के बाद कुत्ते विश्राम के लिए ज़मीन पर टेढ़े-मेढ़े, टांगें फैलाये पड़े हुए थे। शिकारी अपनी बर्फ़-गाड़ियों के पास इकट्ठा होकर एक दूसरे से ताज़ी ख़बरें कह-सुन रहे थे। इस समय सब की दिलचस्पी का विषय था आये नामक युवक जो यानराकेनोत का निवासी था। सील के चमड़े वाले उसके थैले में एक दुर्लभ जानवर—रुपहली लोमड़ी—की खाल पड़ी थी। आये ख़ुश था और इससे सभी को आश्चर्य हो रहा था क्योंकि हर कोई जानता था कि इस तरह का शिकार फंसाना शिकारी के लिए अपशकुन है। लेकिन उन्होंने सोचा कि आये की उमर इस बात को जानने लायक़ थोड़े ही है!

लेकिन आये सभी सगुन जानता था। उसने जानबूझकर ही इस बात का संकेत नहीं दिया कि उसके थैले में एक और रुपहली लोमड़ी पड़ी है। मान्यता यह थी कि ऐसी दो लोमड़ियों को एकसाथ पकड़ना शुभ शकुन है और यही कारण था कि आये के चेहरे पर दुःख का कोई चिन्ह नहीं था।

इसके अलावा वस्तु-विनिमय के व्यवहार में अपने को बिल्कुल गंवार, दीन-दुनिया और उसके तौर-तरीक़ों के बारे में एकदम अनुभवहीन दिखाना कभी कभी लाभदायक होता है। यह देखने में मज़ा आता है कि किस तरह लोग आप पर तरस खाते हैं।

शिकारी उस दिन अच्छे सौदों की उम्मीद में थे। आज के व्यापार का आरंभ आये करनेवाला था। वे सोच रहे थे कि एक दुर्लभ जानवर की खाल देखकर चार्ली इतना ख़ुश होगा कि उसकी लाल नाक फरफराने लगेगी।

आये के चेहरे पर उसकी उम्र के हिसाब से अधिक अभिमान की झलक दिखाई देती थी। लंबा क़द, काली काली आंखें और मसें

भीजी हुई। चार्ली लाल-नकुए के पास रुपहली लोमड़ी हर कोई थोड़े ही ला सकता था! उस दिन का सौदा शुरू होने के पहले जब चार्ली ने सब शिकारियों को अपने लौह-सदन के बरामदे में चाय पर बुलाया तब आये सब से महत्वपूर्ण स्थान पर विराजमान हुआ।

यह आतिथ्यशील और ख़ुशदिल अमरीकन हरेक को सोडा क्रेकर के साथ तेज़ चाय का प्याला देने में कभी चूकता न था। वह ऐसे शिकारियों को भी चाय पिलाता जो केवल इस कुतूहल से चार्ली के व्यापार-केन्द्र पर आते कि चलें देखें किस तरह दूसरे लोग सौदा पटाते हैं। मि० थामसन व्यापार का रहस्य अच्छी तरह जानता था और शिकारी और बहेलिए सैंकड़ों मील पर से चलकर उसके लौह-सदन में चाय पीने और उसके भंडार को देखने आते थे।

सातवां अध्याय

मि० थामसन का गोदाम बनावट की दृष्टि से प्राचीन ढंग का था। दीवारें पनारीदार चादरों की बनी थीं और अलमारियां बनी थीं खुरदरे तख़्तों की। दो पीपों पर रखे हुए ऐसे ही तख़्ते कौंटर का काम देते थे।

मि० थामसन डालरों को फ़िज़ूल ख़र्च करना नहीं चाहता था। आख़िर आज नहीं तो फिर किसी दिन उसे ये सब चीज़ें वहीं जो छोड़नी थीं।

अलमारियां तरह तरह के माल से लदी हुई थीं: तंबाकू, लाल सूती कपड़ा, मणियां, कारतूस, कंघियां, अंगुश्ताने, सूइयां इत्यादि। दीवार पर विंचेस्टर बंदूक़ों के तीन नमूने टंगे थे। विभिन्न मोहरियों वाली ये बंदूक़ें थीं – २५×२०, ३०×३० और ४४। स्थानीय शिकारी सिर्फ़ इन्हीं नमूनों की बंदूक़ें इस्तेमाल करते थे।

खुद मि० थामसन कौंटर के पीछे बैठा था। उसकी उम्र लगभग ५५ साल की थी और वह बड़ा ही मोटा-ताज़ा था। चौकोर जबड़ा, थुलथुले गाल और आंखों के नीचे चमड़ी की लटकती सी परतें। उसके फीके, सफ़ाचट चेहरे पर बड़ी, फूली हुई लाल लाल नाक बहुत ही उठावदार दिखती थी। उसकी मुखाकृति पर सौजन्य तथा सरल स्वभाव की झलक नज़र आती थी। उसका डील-डौल काफ़ी रोबदार था। वह रोवेंदार चमड़े की पतलून, जाकेट और धारीदार मोटी ऊनी कमीज़ पहने था और इन कपड़ों के कारण वह और मोटा दिखाई देता था।

कौंटर के पास खड़ी शिकारियों की भीड़ पर एक सौजन्यपूर्ण नज़र दौड़ाते हुए मि० थामसन ने कहा:

"अच्छा, तो सौदा शुरू हो जाये। आज का दिन बड़ा अच्छा साबित होगा!"

शिकारियों ने आये को आगे किया। मि० थामसन की मन:स्थिति उनके लिए बहुत ही उत्सुकतापूर्ण बात थी। चार्ली लाल-नकुआ आज सौदा किस तरह करेगा? अपनी चीज़ें वह उदारतापूर्वक बेचेगा या नहीं? इसके बारे में कुछ भी कहना मुश्किल था।

आये ने बिल्कुल स्थिरचित्तता तथा गंभीरता के साथ अपने पास की रुपहली लोमड़ी की खाल आगे बढ़ायी।

जैसी आशा की जाती थी, मि० थामसन झट से खड़ा हुआ और उस खाल पर लगभग झपट ही पड़ा। शिकारियों के चेहरों पर खुश मुस्कराहट दौड़ गयी।

सींग के फ्रेम वाली अपनी ऐनक में से मि० थामसन ने उस खाल को बारीकी से जांच लिया। खाल को उसने पूरा फैला दिया और उसपर एक फूंक मारी। खाल की पूंछ से कानों तक एक हल्की रुपहली लहर दौड़ गयी। मि० थामसन जब उस रेशमी रोवेंदार खाल

पर ज़ोरों से फुफकारता गया तो उसके चेहरे पर आश्चर्य का स्पष्ट भाव झलक उठा। उसकी आंखें चमक उठीं। लोमड़ी की यह खाल सचमुच अव्वल दर्जे की थी।

शिकारी लोग दबी सांस के साथ देखते रहे। उन्हें मालूम था कि आये को पहले जाने देने में क्या लाभ है। आये, जो कि अपने को एक बड़ा शिकारी समझता था, बड़ी शान और लापरवाही के साथ देख रहा था। आये के लिए भी तो यह महान दिवस था! उसके जीवन में यह पहला ही अवसर था जब उसने रुपहली लोमड़ी फंसायी थी।

सारे शिकारी कुतूहल के कारण बहुत ही आतुर हो उठे थे। उनमें से कइयों को तो आज तक ऐसी लोमड़ी पकड़ने का मौक़ा नहीं मिला था। यह रुपहली लोमड़ी उन सब के लिए एक अभिमान की वस्तु थी।

देखें चार्ली लाल-नकुआ उसके लिए क्या देगा?

मि० थामसन ने बनावटी बेपर्वाही के साथ उस खाल को अन्य खालों के ढेर पर फेंक दिया।

"हां, यह लोमड़ी ज़रूर अच्छी है," उसने कहा और अपने को विचारमग्न दिखाते हुए, धीरे धीरे मेज़ पर मीनाकाम वाली एक केतली, खाल साफ़ करने की एक छुरी, तंबाकू के एक दर्जन बंडल, चाय के पांच पुड़े और चार गज़ लाल सूती कपड़ा रख दिया। शिकारी एक दूसरे को कौंटर के इर्दगिर्द कोहनियाते-ढकेलते रहे ताकि इस संपत्ति को ठीक तरह से देख सकें। एक आये था जो बिल्कुल लापरवाह नजर आ रहा था।

चार्ली को अचरज हुआ। उसन सोचा: "शायद इसे संतोष नहीं हुआ! आखिर इस जंगली को चाहिए भी क्या?" चार्ली ने कुछ और मणियां, एक रेती, कुछ सूइयां, अंगुश्ताने और एक कंघी आगे बढ़ायी।

"एक जानवर के लिए दस चीज़ें और उनमें से आधी लोहे की बनीं!" अपनी उदारता पर विस्मित होकर चार्ली ने कहा।

"वाह कितनी चीज़ें!" सभी ओर से शिकारियों की आश्चर्य भरी ध्वनियां गूंज उठीं। "वाह, कितनी चीज़ें!"

सचमुच यह खाल बड़ी ख़ूबसूरत थी लेकिन किसी ने भी यह न सोचा था कि उसके बदले में चार्ली इस तरह ढेरों चीज़ें देने को तैयार होगा। वे पूरी तरह जानते थे कि जब चार्ली नाख़ुश रहता है तब शिकारियों की आवश्यकताओं का ख़्याल नहीं करता। ऐसे अवसर पर शिकारी चालाकी का सहारा लेते और इस बात को छिपाकर कि अपनी थैलियों में और खालें पड़ी हैं, चार्ली को धोखा दे देते। यह सोचते हुए कि सौदे के लिए फिर किसी समय आयेंगे, वे सौ-एक मील वापस चले जाते।

मि० थामसन इन सब चालाकियों से परिचित था। और इनकी कोई परवाह न करता था। सभी खालें चाहे आज बटोर लो चाहे कुछ दिन बाद, इससे फ़र्क़ ही क्या पड़ता है? महत्व की बात यह थी कि माल-जहाज़ के आने से पहले ये खालें जमा हो जायें।

चार्ली आज बड़ा ख़ुश था और इसलिए सभी शिकारियों ने अपने पास की सारी चीज़ों को बेचने का निश्चय किया था। हर कोई अपनी बारी के इंतज़ार में कौंटर के पास खड़ा था।

आये उन दस चीज़ों के सामने चुपचाप खड़ा था और उन्हें अपनी थैली में डाल देने के बजाय आराम से अपनी चिलम में तंबाकू और लकड़ी की भूसी का मिश्रण भर रहा था। फिर उसने चिलम सुलगायी और सिर उठाकर कहा:

"चार्ली, मुझे इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं जो तुमने यहां बिछा दी हैं।"

शिकारियों पर बिजली-सी गिर पड़ी।

"क्या कहा? तुम्हें इन चीज़ों की ज़रूरत नहीं? देखा, यहां मैं क्या क्या दे रहा हूं? तुम उधर जो भूसी पी रहे हो उसके बदले सच्ची अमरीकी तंबाकू..."

"मुझे चाहिए बंदूक़।"

"धत तेरे की। बंदूक़ के लिए एक खाल थोड़े ही काफ़ी है। अगर तुम सचमुच बन्दूक़ चाहते हो तो सफ़ेद लोमड़ी की कम से कम एक खाल और चाहिए," मि० थामसन गुस्सा हो गया था।

"तुम्हारे लिए मैं दूसरी बार सफ़ेद लोमड़ी ला दूंगा।"

"नहीं, यह नहीं चलेगा! मेरे पास अब कुछ ही विंचेस्टर बची हुई हैं और वे सब अलितेत को बेची गयी हैं। वह उन्हें पहाड़ों में बारहसिंगा-पालक ख़ानाबदोशों के लिए ले जा रहा है।"

"खेद की बात है," आये ने शांति के साथ कहा। "अच्छा, मुझे मेरी लोमड़ी लौटा दो।"

इस अनपेक्षित मांग पर मि० थामसन दंग रह गया। आख़िर उसने अपनी रोवेंदार टोपी हटा ली जिससे ललौहें बालों के बीच गंजी चकतियों वाला उसका सिर खुल पड़ा। लाल रूमाल से उसने अपना माथा पोंछा, ऐनक उतारकर उसे भी पोंछा और कुछ नरम आवाज़ में बोला:

"क्या तुमने कभी ऐसा शिकारी देखा है? सौदा करने का यह तरीक़ा इसने कहां से सीख लिया? व्यापार का यह ढंग तुम्हें कोई पढ़ा तो नहीं रहा है?"

"जी हां।"

"कौन?" मि० थामसन ने झट पूछा।

आये चुप रहा। वह व्याकुलता से अपने पैरों को इधर-उधर कर रहा था।

"कहो, तुम बोलते क्यों नहीं?"

"चार्ली," आये ने कहना शुरू किया। "तुम हमारे बूढ़े कामेनवात को तो जानते ही हो। उसकी बेटी तीग्रेना के साथ मेरी मंगनी हो गयी है। इसलिए मैं हमेशा इस बूढ़े के साथ सलाह-मशविरा करता हूं। उसी ने मुझे वह जगह बतायी थी जहां रुपहली लोमड़ी मिलती है। मैं वहां गया और लगातार छः दिन अपने फंदों पर चौकी देता रहा। छः दिन मैं बरफ़ में रहा। और जब में बाहर गया हुआ था तो एक रूसी ने हमारी बस्ती में एक रात बितायी। उसका नाम था पार्टीज़ान।"

मि० थामसन ने पैनी नज़र से देखा। रूसी क्रांति के बारे में उसने समाचारपत्रों में पढ़ा था और यह भी सुना था कि कामचात्का में श्वेत-रक्षक शासकों में शीघ्र परिवर्तन होते रहे हैं – आज वहां कोल्चाक की सत्ता है तो कल काप्पेल की – और सोवियत पार्टीज़ानों* ने कामचात्का के पहाड़ों में अपना काम शुरू कर दिया है। इस बात कि चुकोत्स्क के किनारे पर भी पार्टीज़ान आ धमका है उसे एक धक्का-सा लगा।

"यह पार्टीज़ान (आये इसको उस रूसी व्यक्ति का नाम ही समझ बैठा था) रात भर हमारे बूढ़े बाबा के साथ बातें करता रहा। तीग्रेना ने भी ये बातें सुन लीं। उसने मुझसे कहा कि उस रूसी ने ज़िंदगी के नये क़ानून के बारे में, व्यापार के नये नियम के बारे में बातचीत की। हां, यही उसने कहा। और जब मैं यहां आने के लिए बरफ़-गाड़ी में बैठा तो वह दौड़ी आयी और बोली: 'देखो आये, चार्ली के साथ तुम उसी ढंग से सौदा करो जैसा पार्टीजान ने कहा था! लोमड़ी की खाल के बदले तुम जो चाहो, ख़ुद ही चुन लो। बंदूक़ ही मांग लो न।' यह बात हुई, चार्ली..."

---

* गुरिल्ला।

"हाः! हाः! हाः! औरतें कब से आदमियों को सिखाने लगीं कि व्यापार किस तरह किया जाये? लानत है इस बात पर! ज़रा इस शिकारी को तो देखो!"

"तीग्रेना ख़ुद अच्छी शिकारी है। वह आदमी की तरह ही बंदूक़ चलाना जानती है और उसका निशाना अचूक होता है," आये ने अभिमानपूर्वक जवाब दिया।

"बहुत अच्छा," मि० थामसन उपहासपूर्वक गुर्राया। "ले जाओ अपनी लोमड़ी वापस। देख लेना, वह तुम्हारे यारंग ही में सड़ती रहेगी और तुम्हें कुछ भी न मिलेगा।"

और जैसे ही उस खाल को उठाने के लिए चार्ली नीचे को झुका, कि आये ने भी ज़रा मुस्कराहट के साथ कहा:

"भला, सड़ेगी क्यों? मैं उसे पीट के पास ले जाऊंगा।"

"क्या कहा, पीट ब्रुख़ानोव के पास?"

अभी भी खाल हाथ ही में पकड़े हुए मि० थामसन ने ग़ुस्से में कहा:

"यह तो पूरा पागल हो गया है, इसकी अक़्ल पर परदा पड़ गया है! अरे अंध खोपड़ी, तुम यह भी नहीं जानते कि पीट यहां से पांच सौ मील दूर रहता है?"

"कोई बात नहीं; भले ही मुझे बीस दिन लग जायें वहां पहुंचने में।"

"अच्छा, मैं तुम्हें दे देता हूं बंदूक़, सिर्फ़ तुम्हारे कंगाल कुत्तों पर तरस खाकर।"

और यह कहकर मि० थामसन ने दीवार पर से २५×२० मोहरी वाली एक नयी विंचेस्टर उतारी और आये की ओर बढ़ा दी।

"इस बंदूक़ में कुछ दम नहीं है," आये ने डटकर कहा। सील से बड़ा कोई जानवर यह नहीं मार सकती। चार्ली, तुम तो जानते

ही हो कि वालरस के शिकार के लिए किस तरह की बंदूकें इस्तेमाल होती हैं! मुझे ३०×३० मोहरी वाली बंदूक़ चाहिए।"

"सच्चे शिकारी को इस तरह भिखमंगा नहीं बनना चाहिए!" मि० थामसन गुर्राया, लेकिन इस डर से कि यह लड़का अपनी लोमड़ी को कहीं उस रूसी व्यापारी के पास न ले जाये, उसने आये को मनपसंद बंदूक़ दे डाली।

संतुष्ट शिकारी ने बंदूक़ अपनी थैली के पास रख दी और थैली में से रुपहली लोमड़ी की एक खाल और निकाल ली जो पहली से ज़्यादा ख़ूबसूरत थी।

"काकोमेई!"* शिकारी आश्चर्य के साथ चिल्ला उठे।

एक लड़का, जिसकी आंखें अचरज से चौड़ी हो गयी थीं, एकदम बोल उठा:

"अरे यह तो किसी को पागल बना देगी!"

"ओहो! अब मुझे पता चला कि तुम एक अच्छे शिकारी बन गये हो। मुझे तो लगता है कि भूत-पिशाच तुम्हारे दोस्त बन गये हैं जो तुम्हें ऐसे जानवरों को फंसाने देते हैं।"

"हां, बात सही है। मैं हमेशा पिशाचों को ख़ुश रखने की कोशिश करता हूं," आये ने उत्तर दिया।

मि० थामसन ने लोमड़ी की इस खाल को बारीकी से देखा और बीस साल में पहली बार उसने पूछा:

"बोलो, इसके लिए तुम क्या चाहते हो?"

शिकारी अवाक् रह गये। वे अपने कानों पर विश्वास नहीं कर सके। चार्ली लाल-नकुए ने आये से पूछा कि तुम्हें क्या चाहिए! हो सकता है कि इसका नतीजा बहुत अच्छा हो, हो सकता है बहुत बुरा हो उनके लिए यह बताना मुश्किल था।

---

*आश्चर्य सूचक उद्गार।

"हममें से दो जनों के पास बंदूक़ें नहीं हैं," आये ने कहा। "हमारे पास अच्छी बंदूक़ें कभी नहीं रहीं। मुझे एक बंदूक़ और देना। एक बंदूक़ तीग्रेना के लिए।"

"बेवक़ूफ़, कुतिया की औलाद! पागल तो नहीं हो गये? अभी पहली बंदूक़ की भी पूरी क़ीमत चुकती नहीं हुई और तुम दूसरी मांगने लगे! क्या तुम पिशाचों के ग़ुस्से का शिकार बनना चाहते हो?"

शिकारियों ने भौंहें चढ़ाकर आये की ओर देखा। उन्हें ऐसा लगा कि वह जानबूझकर चार्ली का मिज़ाज बिगाड़ने पर तुला हुआ है। और इधर चार्ली के साथ उनका सौदा शुरू भी नहीं हुआ था।

इसी वक़्त एक लड़का दौड़ता-चिल्लाता वहां पहुंच गया: "अलितेत! अलितेत!"

दरवाज़ा खुल गया और अलितेत गोदाम में आ पहुंचा। वह बारहसिंगों के बछियों की खालों का एक नया चमकदार परका पहने था।

"आओ, अलितेत!" उसे देखकर ख़ुशी में मि० थामसन चिल्लाया।

शिकारियों ने फ़ौरन पीछे हटकर अलितेत के लिए रास्ता बना दिया। अलितेत लंबे डग भरते हुए उनके पीछे से कौंटर के पास पहुंचा और मि० थामसन की ओर हाथ बढ़ा दिया। आये को वहां देखकर उसने नफ़रत भरी आवाज़ में पूछा:

"अरे, तुम क्या कर रहे हो यहां? शायद शिकारियों का लेन-देन देखने आये हो?"

"अजी नहीं, वह ख़ुद ही बड़ा शिकारी है!" चार्ली ने कहा। "देखो, यह रुपहली लोमड़ी मैंने उसी से ख़रीदी है। लेकिन सिर्फ़ यही नहीं, एक और भी ऐसी लोमड़ी यहां है!"

अलितेत की आंखें डाह से भर उठीं।

"भला, किसी को पता कैसे नहीं चला कि तुमने ये लोमड़ियां फंसायी हैं?" उसने संदेह के स्वर में पूछा।

"अब उन सब को पता लग गया है," आये ने रोब के साथ झट से जवाब दिया। "तुम भी उन्हें देख सकते हो।"

"इन्हें तुमने कहां फंसाया?"

"टुंड्रा में।"

"टुंड्रा तो समुंदर जैसा ही फैला हुआ है।"

आये कुछ बोला नहीं। उसे वामचो की बात याद हो आयी कि किस तरह अलितेत ने उसके शिकार के चारे पर मिट्टी का तेल उंडेल दिया था। अलितेत के साथ शिकार के बारे में बातचीत करना उसे एकदम नापसंद था।

"अरे, तुम चुप क्यों? लगता है तुमने इन्हें किसी दूसरे शिकारी के फंदे में से उठा लिया है?" अलितेत ने व्यंग्य के साथ कहा।

आये का चेहरा तमतमा उठा। यह अपमान उसके लिए असह्य था। और शिकारी क्या सोचेंगे? आये के मन में आया कि बस, यहीं और इसी क्षण अलितेत की चालबाज़ी का भंडाफोड़ कर दूं लेकिन वामचो ने उससे कहा था कि वह इसके बारे में एक शब्द भी न कहे। बड़ी मुश्किल से अपने को क़ाबू में रखते हुए आये ने कहा:

"सुनो अलितेत, मैंने इन लोमड़ियों को तीन-पहाड़ियों से आगे फंसाया। तुम्हें तो वह जगह मालूम ही है। वामचो ने भी वहां अपना फंदा-चारा बिछाया था। लेकिन मैंने अपने चारे पर तांग वाली बत्ती की चरबी उंडेल दी थी। हां, यह सच है कि इस चरबी की बदबू से सफ़ेद लोमड़ी भाग जाती है, लेकिन लगता है कि रुपहली लोमड़ी इस गंध को पसंद करती है। मुझे यह मालूम नहीं था।"

आये ने उसे उपहास की नज़र से देखा और उसके जवाब का इंतज़ार करता रहा। लेकिन अलितेत झट से मि० थामसन की ओर मुड़ा और बुदबुदाया :

"बेवक़ूफ़ी की बातों में समय बिताना बरफ़ को खाने जैसा है– इससे प्यास कभी न बुझेगी। देखो चार्ली, सफ़र के बाद चाय तो होनी ही चाहिए।"

"ज़रूर!" मि० थामसन चिल्लाया। "चलो कुछ देर हम दूकान बंद रखें। मैं भी कुछ खा-पी लूं।"

मि० थामसन ने लोमड़ी की उस खाल पर लालचभरी आख़िरी नज़र दौड़ायी और फिर उसे खालों के एक ढेर पर फेंक दिया।

"सौदा कुछ देर रुक सकता है। इस समय सभी यहां से हट जायें। माल तुम्हें बाद में मिलेगा," उसने आये से कहा।

"फिर लोमड़ी भी तुम बाद ही में क्यों न लो?" आये ने डटकर पूछा।

"गॉड डॅम!" मि० थामसन आग बबूला हो उठा। "सचमुच इस जवान की खोपड़ी में और सील की खोपड़ी में कोई फ़र्क़ नहीं! इसे डर लगता है कि अपनी लोमड़ी की क़ीमत कहीं चुकती न हुई तो? याद रखना, चार्ली अब तक किसी का देनदार नहीं रहा। उल्टे, तुममें से हर एक ने मुझसे क़र्ज़ लिया है।"

"सच है, चार्ली, सच है।" शिकारियों ने एक साथ घोषणा की। "हम सब तुम्हारे कर्ज़दार हैं।"

गॉड डॅम का अर्थ शिकारी समझ न पाये लेकिन उन्हें इतना भर मालूम था कि आगामी सौदे की दृष्टि से यह अपशकुन है।

चार्ली नीचे को झुका, लोमड़ी की वह खाल उठायी और आये के मुंह पर फेंक दी। आये के लिए किसी को भी खेद नहीं हुआ। हर किसी ने माना कि वह इसी के लायक़ था।

"ले लो, उसे वापस ले लो, आये रुक सकता है," शिकारियों में से एक चिल्लाया।

आये घबड़ा-सा गया एक हाथ में खाल को कसकर पकड़े हुए था और दूसरे हाथ से चुपचाप पसीने से तर माथा पोंछ रहा था। उसे इस बात पर शर्म आयी कि अपने बरताव के कारण बिरादरी वालों में नाख़ुशी पैदा हुई है।

अलितेत ने उसके हाथ से खाल छीन ली और कौंटर के पीछे फेंक दी।

"मेरकिचकिन!" उसने एक चुकची गाली ज़ोरों से बक दी।

"अच्छा," आये ने हारते हुए कहा। "रहने दो उसे अपने पास।"

"तुम्हारी मर्ज़ी," मि० थामसन ने कुछ शांत होकर कहा। "आप मुझे अच्छी तरह जानते हैं। मैंने हमेशा आप लोगों की मदद करने की कोशिश की है।"

गोदाम से शीघ्र ही सब लोग चले गये।

आठवां अध्याय

विविध प्रकार के माल से लदी हुई अपनी बरफ़-गाड़ी लेकर अलितेत घर लौट आया। अपने सौदे पर वह बहुत ही ख़ुश था और उसने चार्ली को आश्वासन दिया था कि वह बारहसिंगा-पालक ख़ानाबदोशों से काफ़ी बड़ी मात्रा में रोवेंदार खालें इकट्ठा करेगा। ये लोग दूर पहाड़ियों में रहते थे और नीचे तट-प्रदेश में कभी न आते थे। लेकिन पहाड़ियों के लंबे सफ़र पर रवाना होने से पहले अलितेत ने दूसरी बीबी ब्याह लाने का निश्चय किया। इस समय वह उस लड़की के साथ ब्याह करना चाहता था जिसकी बचपन से ही आये

के साथ सगाई हो चुकी थी। अलितेत इस बात को जानता था। लेकिन चार्ली के भंडार में हुई घटना के बाद आये के प्रति उसके मन में शत्रुता की भावना भड़क उठी थी और इसी से उस लड़की को आये से छीन लेने का उसका निश्चय दृढ़तर हो गया था।

दूसरे ही दिन वह यानराकेनोत के लिए रवाना हुआ। उसकी बरफ़-गाड़ी में जवान बारहसिंगे की रोवेंदार खाल पड़ी थी जो कि चुकची जमात में विवाह-प्रस्ताव की निशानी मानी जाती है। बुड्ढा कामेनवात इस सुझाव को स्वीकार करने से इन्कार न करता। वह बड़ी ख़ुशी से तीग्रेना को अलितेत के साथ ब्याह देता और यदि ऐसा न भी होता तो अलितेत इस लड़की को ज़बरदस्ती उठा ले जाता।

हवा शांत तथा सुखद थी और चांद चमचमाती हुई चांदी बरसा रहा था। अलितेत की बरफ़-गाड़ी सरपट दौड़ रही थी। लगभग आधी राह चल चुकने के बाद गाड़ी ने इर्गोनेई पठार के प्रदेश में प्रवेश किया। अलितेत ने कुत्तों को रोक लिया और सागर पर फैले हुए बर्फ़ीले मैदानों पर नज़र दौड़ायी। इन मैदानों के उस पार खुले सागर की काली पट्टी दिखाई दे रही थी और उसपर काला आसमान लटका हुआ था।

दूसरी ओर तारों से आलोकित आकाश के नीचे ऊंचे ऊंचे पहाड़ खड़े थे। जबतब उल्कापात हो रहा था। अलितेत ने बरफ़ में गहराई तक टेकन-डंडा गाड़कर बरफ़-गाड़ी रोक दी और अपनी चिलम और तंबाकू निकाल ली। फिर वह चिलम पीता हुआ बरफ़-गाड़ी पर बैठा और कुछ देर बाद धीरे से उठकर सब से आगे वाले कुत्ते के पास चला गया।

चार्ली ने अपनी दुम हिलायी और पिछले पैरों पर खड़ा होकर इस इंतज़ार में रहा कि मालिक उसे चुमकारे-पुचकारे। जब अलितेत नज़दीक आया तो चार्ली ने आगे की ओर कूदकर अपने मज़बूत

अगले पंजों को अलितेत के सीने पर टिका दिया और उसके गाल पर ज़बान फेरता हुआ उसके गरम रोवेंदार कपड़ों की तहों में अपना सिर घिसता रहा। अलितेत ने कुत्ते की थूथनी अपने हाथों से ऊपर उठायी और उसकी नाक पर नाक रगड़ते हुए कहा:

"ज़ोर से दौड़ो चार्ली। यानराकेनोत में तीग्रेना हमारी राह देख रही है। कामेनवात की, उस बुड्ढे भिखमंगे की यह लड़की सब लड़कियों से तंदुरुस्त और ख़ूबसूरत है। जब तीग्रेना मेरे यारंग में आ जायेगी तब मैं उसे बताये रखूंगा कि वह तुम्हें वालरस के गोश्त के चुने हुए निवाले खिलाये।"

उसने चार्ली का सिर थपथपाया और फिर दूसरे कुत्ते की ओर क़दम बढ़ाया।

"और भेड़िया-रीढ़, तुम अपना क़दम पीछे क्यों हटा रहे हो? तुम्हारे पंजे में कहीं चोट तो नहीं आयी? ज़रा देखूं तो!"

चमकदार आंखों वाला वह मोटा-ताज़ा काला कुत्ता बग़ल के बल लेट गया और अपना पंजा ऊपर उठा दिया। उसकी एड़ी से खून निकल रहा था।

अलितेत ने उसके जख़्मी पैर में रोवेंदार खाल की एक पट्टी बांध दी और फिर कपेर के पास चला गया।

यह भीमाकार बुड्ढा शिकारी कुत्ता बरफ़-गाड़ी के जोत के छोर के पास बैठा था। मालिक को अपने पास आते देख उसने कुछ खास खुशी नहीं दिखलायी बल्कि आंखों में धूर्तता भरे हुए दुम हिलाता रहा। अलितेत भी इस कुत्ते को न चाहता था और जाने कब से चाहता था कि इससे पिंड छूट जाये। समूचे कुत्ता-दल में कपेर एक रुकावट-सा था। वह दूसरे कुत्तों के साथ ठीक नहीं दौड़ता था। उस दिन भी उसने कई बार अलितेत को क्रोधित कर दिया था। इस नीच कुत्ते को सबक़ सिखाने की ज़रूरत थी।

अलितेत ने यकायक उसकी थूथनी पर एक लात जमा दी। कुत्ता उछलकर खड़ा हो गया और दुम दबाकर कनखियों से मालिक की ओर देखने लगा। अलितेत ने उसकी थूथनी पकड़ ली। कपेर पीछे हट गया लेकिन उसकी पकड़ से अपने को छुड़ा नहीं सका।

"क्यों, डर गये क्या? अब जल्द ही कामेनवात तुम्हारा मालिक बनेगा। मेरे उस बुड्ढे ससुर के साथ तुम ज़िंदगी भर सुस्ताते रहोगे।"

अलितेत ने कुत्ते की थूथनी एक हाथ में पकड़ी और दूसरे हाथ से उसे थपथपाया। यह अपरिचित प्यार पाकर कुत्ता थरथराता रहा। अलितेत डंडे के लिए आगे बढ़ा। कपेर एक ओर कूदा लेकिन साज़ ने उसे कसकर पकड़ रखा था। अलितेत ने डंडा उखाड़ लिया। कुत्ता दुबककर उसके पैरों के पास सिकुड़ रहा था। वह कराहता जा रहा था। अपनी आंखें उसने बंद कर ली थीं। अलितेत ने कसकर डंडा उसके सिर पर जड़ दिया। फिर क्रोध के आवेग में वह उसकी बग़लों और पीठ में घूंसों की बौछार करता गया। कपेर भूंकता-रिरियाता बरफ़ में लोटने लगा।

यकायक कपेर के साथ वाला कुत्ता गुर्रा उठा और अलितेत की टांग में अपने दांत घुसेड़कर उसकी पतलून का एक टुकड़ा फाड़ डाला। अलितेत पीछे की ओर कूदा, अपनी विंचेस्टर उठायी और फ़ौरन उस कुत्ते पर गोली चला दी।

आकाश में जगमगाहट दिखाई दी। आकाशगंगा के कारण गगन-मंडल में प्रकाश-पथ का निर्माण हुआ।

"मैं सूर्यदेव का आदमी हूं। सारे किनारे के लोग मुझे जानते हैं। चाउचू भी मुझे जानते हैं। मेरिकन चार्ली का मैं जिगरी दोस्त हूं।"

आलोकित आकाश को निहारते हुए अलितेत मन ही मन अपनी प्रशंसा करता रहा।

उसकी ग्रावाज़ सुनकर कुत्तों ने कान खड़े किये ग्रौर उसे रवाना होने का संकेत समझकर ग्रागे की ग्रोर उछल पड़े लेकिन बरफ़-गाड़ी को कसकर पकड़ रखने वाले डंडे ने उन्हें रोक लिया। कुत्तों ने मुड़कर पीछे देखा। ग्रलितेत ने डंडे को बरफ़ में ग्रौर गहरा गाड़ दिया ग्रौर ग्रपनी विचारधारा ग्रागे चलायी:

"मैं कह सकता हूं कि स्वर्ग के लोग, ऊपर वाली दुनिया के लोग तक मुझे जानते हैं। देखो उत्तरी नक्षत्र मंडल चमक रहा है। ग्रौर वहां है उत्तर ध्रुव नक्षत्र। ग्रौर पहाड़ों से नीचे उतरने वाले वे तारे... वहां शुक्र जगमगाता है। ग्रौर हवा को चलाने वाले वे दैत्य कहां हैं?"

ग्राकाश में उत्तर ध्रुव नक्षत्र तक लंबे चमकदार धुरे उसी तरह तने हुए दिखाई दिये जिस तरह वालरस के चमड़े के तस्मे एक यारंग से दूसरे यारंग तक कसे होते हैं। ये धुरे एक क्षण शुक्र तक फैल जाते थे तो दूसरे ही क्षण बारहसिंगों के चौंके हुए दल की तरह सभी दिशाग्रों में बिखर जाते थे। ग्राकाश ऐसे रंगों के जमघट से सजीव हो उठा जो धरती पर कभी नहीं दिखाई देते। तिलमिल प्रकाश की ज्योतिर्मय रेखाएं शीघ्र गति से समूचे ग्राकाश में फैल गयीं ग्रौर उनकी जगमगाती हुई धारियों के तानों-बानों ने नभोमंडल में इस छोर से उस छोर तक चंदवा-सा तान दिया। उत्तरी ध्रुव-प्रभा की इस जगमगाहट में चांद बुढ़िया बीवी की तरह फीका पड़ गया ग्रौर ईर्ष्यालु बन गया।

रोमांचित ग्रौर चकित ग्रलितेत ने ग्राकाश की ग्रोर ताकते हुए सोचा: "ऊपरी दुनिया के लोग कोई बड़ा त्योहार मना रहे हैं। इसी लिए उन्होंने इतने दीपक एक साथ जलाये हैं।"

किन्तु ये स्वर्गीय ज्योतियां शीघ्र ही बुझ गयीं। वे यकायक नष्ट हो गयीं ग्रौर फिर चमकदार तारों के प्रभा-मंडल में चंद्रमा का साम्राज्य लौट ग्राया।

अलितेत ने अपनी चिलम भरी और बरफ़-गाड़ी के किनारे पर एक मोटी अमरीकी दियासलाई घिसकर उसे सुलगा दिया।

अलितेत की बरफ़-गाड़ी हिमाच्छादित सागर पर दौड़ने लगी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। आकाश से उल्कापात हो रहा था। अलितेत को ऐसा लगा कि ऊपरी दुनिया के बाशिंदे पुरानी, बेकार ढिबरियों को अपने यारंगों से बाहर फेंक रहे हैं।

बरफ़ की चट्टानों में से यह बरफ़-गाड़ी किसी घबड़ाये हुए पंछी की तरह दौड़ रही थी। कभी एक क्षण के लिए किसी चट्टान के बाज़ू पर सवार हो जाती तो दूसरे ही क्षण दूसरी चट्टान के तल में कूद पड़ती। अलितेत गाड़ी से नीचे कूदकर उसके साथ साथ दौड़ने लगा और बरफ़ के टीलों पर से गुज़रने में उसकी सहायता करते हुए उसे अपेक्षित दिशा में चलाता गया। एक क्षण बरफ़-गाड़ी अपनी नाक उठाकर अधर में लटकती सी दिखाई देती तो दूसरे क्षण धमाके के साथ नीचे कूद पड़ती। इस चढ़ा-उतरी में गाड़ी चरचराती रही लेकिन टूटी नहीं। अलितेत की बरफ़-गाड़ी चमड़े के मज़बूत तस्मों से कसकर बंधी हुई थी। सारे तट-प्रदेश में इस तरह की गाड़ी और किसी के पास न थी, और न अलितेत के जमात वालों में से कोई अन्य व्यक्ति उसकी तरह बरफ़-गाड़ी चला ही सकता था।

बरफ़ीली चट्टानों का प्रदेश समाप्त हो गया और अलितेत की बरफ़-गाड़ी ने यानराकेनोत बस्ती में प्रवेश किया। इस वक़्त गाड़ी में जुते हुए कुत्ते ज़ोरों से भूंक उठे। बस्ती के कुत्तों ने जवाब में मेहमानों का अभिवादन किया। गाड़ी बुड्ढे कामेनवात के यारंग के पास खड़ी हो गयी। अर्धनग्न लोगों ने आगंतुक को देखने के लिए यारंगों में से अपने नंगे सिर बाहर निकाले।

जल्दी जल्दी कपड़े पहने हुए लोगों की एक भीड़ अब अलितेत की गाड़ी के इर्दगिर्द जमा हो गयी। आये भी इस भीड़ में था। एक

भयंकर अपशकुन की आशंका से उसका कलेजा कांप उठा। अलितेत की गाड़ी पर जवान बारहसिंगे की खाल का विवाहोपहार पड़ा हुआ था। "कामेनवात के यारंग के पास अलितेत क्यों रुका? क्या वह जानता नहीं कि तीग्रेना मेरी मंगेतर है? सारे किनारे के लोग यह बात जानते हैं।"

आये का दिल टूट गया और वह चुपचाप अपने यारंग में लौट गया।

एक टीले से दूसरे टीले तक उड़ते जाने वाले टुंड्रा के पंछी की तरह यह ख़बर एक यारंग से दूसरे यारंग तक फैल गयी।

नवां अध्याय

दिन भर शिकार से थकी हुई तीग्रेना बारहसिंगों की खालों की बनी खटिया पर गहरी नींद सो रही थी। सफ़ेद खालों पर लटकती हुई उसकी काली लंबी बेनियां रंगविरोध के कारण और भी काली दिखाई दे रही थीं। नींद में तीग्रेना मुस्करा रही थी।

पास ही उसकी बूढ़ी मां बैठी उसके जवान चेहरे को निहार रही थी। वह अपनी बिटिया को जगाना नहीं चाहती थी। तीग्रेना ने अपनी आंखें खोलीं और मां को पास देखकर उसके चेहरे पर मृदु, नीरव, मुस्कान दौड़ गयी। उस समय उसके मोती जैसे दांत चमक उठे। उसकी काली काली आंखें जगमगा उठीं।

"मां, मैंने एक सपना देखा," तीग्रेना ने कहा। "बड़ा अच्छा था यह सपना। मैंने देखा कि आये और मैं अपने यारंग में रह रहे हैं। पोलोग में बच्चों की एक भीड़ है। आये ने मुझसे कहा: तीग्रेना, हमें अपना यारंग और बड़ा करना चाहिए, हमें पहाड़ियों में जाकर बारहसिंगा-पालकों से खालें इकट्ठी करनी चाहिए।"

तीग्रेना उठ बैठी और खिलखिलाकर हंस पड़ी। इसी समय बाहर की ओर कुछ शोरोगुल हुआ। तीग्रेना ने हंसी रोककर पूछा:

"हमारे यारंग के बाहर यह कैसा शोरोगुल है?"

"तीग्रेना, हमारे यारंग के आगे अलितेत ठहरा हुआ है। लोग कहते हैं कि उसकी बरफ़-गाड़ी पर मंगनी वाली जवान बारहसिंगे की खाल पड़ी है। हमारे लिए यह बड़ी ख़ुशी की बात है।"

तीग्रेना घबड़ा उठी।

"लेकिन आये का क्या होगा? वह तो बचपन से मेरा मंगेतर रहा है। वह दिन दूर नहीं जब हम साथ रहने लगेंगे। क्या किनारे के बाशिंदे इस बात को भूल गये? वह बुड्ढा अलितेत यहां क्यों खाल ले आया? वह बड़ा ही कपटी और लोभी है! वह धोखेबाज़ है! दूसरी रुपहली लोमड़ी देकर आये मेरे लिए बंदूक़ ख़रीदना चाहता था लेकिन अलितेत ने ही चार्ली लाल-नकुए से कहा कि वह आये को और बंदूक़ न दे। अलितेत के गंदे पोलोग में मैं नहीं रहना चाहती। आये बारहसिंगे की उस खाल को यहां से ले जाये और उसमें पत्थर बांधकर समुंदर में फेंक दे!" तीग्रेना ने तीखे शब्दों में कहा।

"मेरी बिटिया, ऐसी बातें तुम्हारे मुंह से मैंने कभी नहीं सुनीं। ये बातें हमें दुर्भाग्य की खाई में ढकेल देंगी," गहरी सांस लेकर मां ने झिड़का।

तीग्रेना चुपचाप उठ खड़ी हुई और यारंग के एक कोने की ओर चल दी। विचार में डूबी हुई वह मां की ओर पीठ किये खड़ी थी। शिकार के कारण ठोस बना उसका लचीला और हृष्ट-पुष्ट शरीर मानो केवल मांसपेशियों का बना हुआ था।

उसका बाप कामेनवात बुड्ढा हो गया था और इसी कारण तीग्रेना को और आदमियों के साथ शिकार के लिए जाना पड़ता था।

लेकिन आदमियों के कठिन काम से अब उसे प्यार हो चला था। शिकार में कामयाब होने पर वह बड़ी ख़ुशी और शान के साथ घर लौट आती और उसकी आनंदभरी हंसी से सारी बस्ती गूंज उठती। वह बड़ी उत्सुकता से उस क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी जब आये और वह अपनी आराम की ज़िंदगी बसर करना शुरू करेंगे। लेकिन अब व्याकुलता से और दुर्भाग्य का ख़्याल आते ही उसकी जान-सी सूख गयी। उसकी आंखों के सामने धुंध-सा छा गया। मां की बातों को वह सुन ही न पा रही थी।

"तीग्रेना, तुम सुनती हो न? हमें चाय बनानी चाहिए," मां ने फिर से कहा। "वह बड़ी केतली ले लो।"

तीग्रेना चौंककर ढिबरी के पास चली गयी और चुपचाप लौ तेज़ करने लगी। मेहमान के लिए बढ़िया खालें बिछाती हुई अपनी मां की ओर उसने कनखियों से देखा।

कामेनवात बाहर अलितेत के कुत्तों की ख़ातिरतवाज़ा में मटक रहा था। जबतब वह आये के यारंग की ओर व्याकुलता से देख लेता। कामेनवात अपने बेटे की तरह आये को प्यार करता था और जानता था कि इस समय आये के हृदय की हालत वही होगी जो भेड़िये के मुक़ाबले बारहसिंगे की होती है। लेकिन आख़िर किया क्या जाये? अलितेत की मांग को कौन ठुकराये? अलितेत मालदार था और महान ओझा कोराउगे का बेटा था। उसकी मांग नामंज़ूर करना नामुमकिन था!

वालरस के जमे हुए मांस के टुकड़े करने के प्रयत्न में बेचारा बुड्ढा फूहड़पन से कुल्हाड़ी चला रहा था। यारंग के सहारे अलितेत बड़ी शान से खड़ा था और देख रहा था कि अपने कुत्तों को किस तरह खिलाया जा रहा है। अपने कुत्तों को खिलाने जैसा महत्वपूर्ण काम ऐसे बुड्ढे के भरोसे थोड़े ही छोड़ा जा सकता है जिसके पास उमदा कुत्ता-दल कभी रहा ही न हो।

आये अपने यारंग के बाहर खड़ा था और अपनी उत्तेजना को छिपाने के प्रयत्न में सख़्त बरफ़ पर पैर पटक रहा था। बुड्ढे पर उसे बड़ी दया आयी। जमकर पत्थर बने मांस को काटने में वह हमेशा कामेनवात और तीग्रेना की सहायता करता था।

"अब मैं इसकी मदद नहीं करूंगा," आये ने सोचा। "जैसे भी हो, अलितेत तो तीग्रेना को ले ही जायेगा... नहीं, लेकिन मुझे बुड्ढे की मदद करनी ही चाहिए। कितना मुश्किल काम है उसके लिए।"

मन में यह विचार आते ही वह कामेनवात की ओर दौड़ा और चुपचाप उससे कुल्हाड़ी मांगी।

कामेनवात पीठ सीधी करके खड़ा हुआ और आये से नज़र मिलाने की भी उसकी हिम्मत न हुई। उसके हाथ से कुल्हाड़ी गिर पड़ी। आये ने कुल्हाड़ी उठाकर मांस के टुकड़े करना शुरू किया।

कामेनवात ने दुःख-भरी दृष्टि से आये को देखा और फिर अपने यारंग की ओर इशारा करते हुए धीरे से कहा:

"मैं अंदर जाऊंगा..."

आये ने झटपट मांस के टुकड़े काटकर एक तसले में भर दिये। अलितेत ने उससे कहा:

"देखो, उधर जो खड़ा है वह है चार्ली। उसका ख़्याल रखो और उसे चरबीदार मांस का टुकड़ा दे दो। हां, उसे दो टुकड़े दे दो।"

आये ने तसला उठाया। कुत्ते उछलकर खड़े हुए और थूथनियां ऊपर उठाये आगे बढ़ने के लिए आपस में शोरगुल करने लगे। मांस देखकर उनकी आंखें चमक उठीं।

"चार्ली!" अलितेत चिल्लाया।

आये ने मांस का एक टुकड़ा फेंका जो चार्ली ने उछलकर अपने मुंह में गप से पकड़ लिया।

"उतिलहेन!" अलितेत ने दूसरे कुत्ते को पुकारा।

लेकिन उतिलहेन का हिस्सा कपेर नामक कुत्ते ने बीच ही में ले लिया। अलितेत ने उस कुत्ते की गर्दन पकड़ी और उसके जबड़े से मांस का टुकड़ा निकालकर उतिलहेन के आगे फेंक दिया।

इस तरह एक एक कुत्ते को पुकारते हुए अलितेत ने सब को क़ायदे से खिलाया, और बीच-बीच में आये की ओर उपहास भरी नज़र दौड़ाता रहा।

तटवर्ती लोगों की विशेष घटनाहीन जिंदगी में हर छोटी-मोटी बात को स्मरण रखा जाता है और वहां का हर व्यक्ति जानता है कि कौन कहां मरा, किसके यहां बच्चा पैदा हुआ और कौन किसे ब्याहने वाला है। अलितेत भी जानता था कि तीग्रेना का ब्याह आये के साथ होने वाला है। उसके जन्म के दिन, जाड़ों के बरफ़ीले तूफ़ान के बीच, नवजात शिशु को जब बरफ़ से रगड़ा गया था उसी क्षण से सारी बस्ती को मालूम हो गया था कि तीग्रेना आये की पत्नी बनेगी। दोनों साथ साथ बढ़े, साथ साथ खेले और बाद में साथ साथ शिकार भी करने लगे। दोनों को एक-दूसरे से प्यार हुआ और दोनों बड़ी उत्सुकता से पति-पत्नी बनने के स्वप्न देखते रहे।

अलितेत को भी यह मालूम था।

"लेकिन टुंड्रा में जब लोमड़ी को मांस का टुकड़ा मिलता है तब क्या भेड़िया उसे छीन नहीं लेता? असल में छीनने की भी कोई ज़रूरत नहीं क्योंकि जैसे ही भेड़िया पहुंचेगा, लोमड़ी भाग जायेगी," आये की ओर देखते हुए अलितेत सोच रहा था।

विवाह-प्रस्ताव वाली खाल लेकर वह यारंग में चला गया। पोलोग के किवाड़ के पास पहुंचने पर वह ज़रा-सा रुका और खांसकर अपने आगमन की सूचना दी।

"ओहो, अलितेत, तुम आ गये?" वृद्ध कामेनवात ने धीमी आवाज़ में पूछा।

"जी हां, मैं ही हूं," अलितेत ने जवाब दिया और जवान बारहसिंगे की खाल आगे बढ़ा दी।

वृद्ध ने इस भेंट को स्वीकार किया।

अलितेत ने झुककर झट से पोलोग में प्रवेश किया। उसका चेहरा आत्म-संतोष से खिल उठा। तीग्रेना उसकी ओर पीठ किये खड़ी थी और कंघी-चोटी कर रही थी। पोलोग में प्रकाश फैला हुआ था। कामेनवात खालों के एक ढेर पर बैठा था। उसके हाथ में अलितेत का दिया हुआ विवाहोपहार था।

"कितनी सुंदर है यह खाल," कारुणिक हंसी हंसते और अपनी पत्नी की ओर खाल बढ़ाते हुए उसने कहा।

बुढ़िया ने खाल को बड़ी हिफ़ाज़त से तह किया और एक अच्छी-ख़ासी जगह में लटका दिया। तीग्रेना की क़िस्मत पर मानो मुहर लग गयी।

लड़की ने चुपचाप पोलोग के बीच एक छोटी सी मेज़ रखी और उदासी के साथ अलितेत की ओर न देखते हुए, चाय डालना शुरू किया।

"तीग्रेना, तुम ख़ुश क्यों नहीं दिखाई देतीं?" उसकी मां ने पूछा। "देखो, कैसे बड़े मेहमान ने हमारे पोलोग को आज पावन किया है।"

तीग्रेना ने आंख तक न उठायी। मानो उसने मां का सवाल सुना ही नहीं। ज़िंदगी में यह पहला प्रसंग था जब उसने मां के प्रश्न का कोई उत्तर न दिया।

अलितेत ने तीग्रेना की ओर देखकर कहा:

"कोई बात नहीं। सुख बरफ़ का फाहा है। हवा बहती है और वह ऊपर उठता है। बस, सिर्फ़ अनुकूल हवा की राह देखनी चाहिए।"

अलितेत ने कपड़े उतारे और वह मेज़ के पास चला गया। चाय की चुसकियां लेते हुए वह पिछली गर्मियों में किये गये वालरसों के ज़ोरदार शिकार के बारे में और अपनी राह को रोशन करने वाली आसमानी आतश के बारे में बोलता। अपने इस भाषण के दौरान उसने एक बार भी तीग्रेना की ओर नहीं देखा।

अलितेत जब अपने कुत्तों को देखने के लिए बाहर गया तो कामेनवात भी रेंगकर उसके पीछे पीछे पोलोग से बाहर हो लिया।

"मेरी बिटिया!" बूढ़ी मां ने कहा। "अब तुम सच्ची औरत बनोगी। तुम्हारे बच्चों को भूखों नहीं रहना पड़ेगा। अलितेत के पास हमेशा काफ़ी गोश्त होता है। लेकिन लानत है तुमपर अगर तुम्हारे संतान न हुई। तब तुम सच्ची औरत नहीं बन सकोगी।"

दूसरे दिन बड़े सवेरे अलितेत अपनी युवती पत्नी तीग्रेना को लेकर एनमकाई बस्ती के लिए रवाना हुआ। कामेनवात के लिए उसने तीन कुत्ते वहीं छोड़ दिये।

दसवां अध्याय

तीग्रेना बहुत ही बदल गयी थी। पिंजड़े में बंद लोमड़ी की तरह वह उदास और मूक बन गयी थी। यानराकेनोत में अपने घर पर सदा हंसमुख रहने वाली बातूनी तीग्रेना अब अलितेत के यारंग में गूंगी होकर रह गयी थी।

उसने सील की एक खाल उठायी, उसमें से जूते का एक तल्ला काटा और लापरवाही से उसके किनारों को मोड़ना शुरू किया। यकायक उसके हाथों से खाल नीचे गिर पड़ी।

तोरबाज़ों की सिलाई का काम तीग्रेना बचपन से करती आयी थी। घर पर इस काम में वह दिलचस्पी लेती और तोरबाज़ों के

ऊपरी हिस्सों पर रंगीन रोवों के सहारे ख़ूबसूरत कढ़ाई करती। पूरे लंबे जाड़ों में वह दो-तीन जोड़ों से अधिक तोरबाज़ न बना पाती थी – अपने बाप के लिए, अपने मंगेतर के लिए और ख़ुद अपने लिए। तोरबाज़ के हर जोड़े के बनने पर उसे कैसी ख़ुशी होती थी। हर यारंग में तीग्रेना के कौशल की चर्चा थी।

इधर अलितेत के यहां उसे बारहसिंगा-पालकों के लिए सीधे-सादे तोरबाज़ बनाने पड़ते। अबतक वह बीस जोड़े बना चुकी थी और फिर भी काम का कोई अंत न था। काम के बोझ से वह बहुत ही परेशान थी।

अलितेत लगातार उससे जानवर की तरह काम लेता और तोरबाज़ों के काफ़ी जोड़े तैयार होते ही उन्हें अन्य सामानों के साथ टुंड्रा में बारहसिंगा-पालकों के पास ले जाता।

नारगिनाउत अपने पोलोग से बाहर आयी और तीग्रेना के पास बैठ गयी। उसने माता की सी मृदुता के साथ तीग्रेना से कहना शुरू किया :

"बिटिया मेरी, तुम अभी तक काम कर रही हो? अलितेत इतना लालची है कि रोज़ाना दो जोड़े बनाओ तो भी उसे संतोष न होगा। टुंड्रा काफ़ी लंबा-चौड़ा है और वहां काफ़ी लोग रहते हैं।"

"नारगिनाउत, बताओ न मुझे, इन ख़ानाबदोशों के लिए जूते बनाने का काम अलितेत ने अपने ऊपर क्यों लिया है?" तीग्रेना ने पूछा।

"वहां उनके पास सीलों की खाल नहीं होती और रेवड़ वालों को हमेशा इधर-उधर दौड़ना पड़ता है – इसी लिए उन्हें काफ़ी जूतों की ज़रूरत होती है।"

"हम भी तो ख़ानाबदोशों के लिए जूते बनाते थे लेकिन वे लोग हमारे भाईबंद थे। क्या अलितेत के इतने भाईबंद हैं?"

"अजी नहीं। वह तो तोरबाज़ देकर सफ़ेद लोमड़ियों की खालें लेता है। हमारी बस्ती की सभी औरतें उसके लिए जूते बनाती हैं; फिर भी उसके लिए माल काफ़ी नहीं होता।"

सिलाई का काम एक ओर रखकर तीग्रेना नारगिनाउत की मृदु बातें सुनती रही। इस अधेड़ औरत को शुरू में उसने बहुत ही घृणास्पद समझ रखा था लेकिन वही उसके साथ सौजन्यपूर्ण बातचीत कर रही थी।

"नारगिनाउत, तुमने भी तो काफ़ी काम किया होगा? तुम्हारे इन हाथों को देखकर ही पता चलता है। कितनी खरोंचें हैं उनपर!"

"मेरी बात दूसरी थी। शुरू शुरू में हम दूसरे लोगों की तरह ही रहते थे। मेरे तीन बच्चे हुए और मैं काफ़ी ख़ुश थी। लेकिन बाद में मुझे सब कुछ खोना पड़ा। अलितेत एक ख़तरनाक बीमारी का शिकार हो गया। कोराउगे ने कहा कि सब से बड़े लड़के की बलि चढ़ाकर इस बीमारी को हटाया जा सकेगा। अलितेत ने बच्चे का गला घोंट दिया और ख़ुद चंगा हो गया। एक बच्ची की मौत भी इसी तरह हुई। और अब मैं बिल्कुल दिलजली बन गयी हूं। तीग्रेना, अब मेरे दिल नहीं रहा।" फिर दबी सी आवाज़ में उसने आगे कहा: "मेरा दिल टुकड़े टुकड़े हो गया!"

दोनों औरतें देर तक मौन रहीं।

"और जब उस मेरिकन के साथ अलितेत की दोस्ती हो गयी," नारगिनाउत ने आगे कहना शुरू किया, "तब तो वह पूरी तरह से बिगड़ गया। उसे बेचैनी ने घेर लिया। आज कल वह शायद ही कभी घर पर रहता है। उसके पैर में पर से लग गये हैं। हमेशा उसकी दौड़-धूप चलती है नये कुत्ते हथियाने के लिए। आज एक कुत्ता-गाड़ी पर सवार है तो कल दूसरी पर। उसने ज़रूरत से

ज़्यादा परेशानियां मोल ले ली हैं। और बीबियों की ज़रूरत भी उसे बच्चे पैदा करने के लिए नहीं है।"

बेचारी नारगिनाउत की बातें सुनकर तीग्रेना उद्विग्न हो उठी।

"नारगिनाउत," उसने ग़मगीन आवाज़ में कहा, "जन्म से ही मैं आये की मंगेतर थी। आये की याद आते ही मुझे कितना दर्द होता है। मैं यहां नहीं आना चाहती थी। मुझपर ग़ुस्सा न होना।"

"मैं जानती हूं। यहां तुम्हारे साथ रहने से मुझे ज़रा अच्छा लगता है। तुम्हारे कारण मेरी ज़िंदगी कुछ आसान होगी।"

वह रुक गयी। तीग्रेना के हाथ से उसने सिलाई का काम ले लिया और कहा :

"जाओ तीग्रेना, ज़रा घूम आओ। तुम्हारा काम मैं करूंगी। अरी, बुड्ढा कोराउगे भी कभी कभी रेंगकर यारंग के बाहर जाता है। तुम वामचो के पास चली जाओ। जवानों के लिए वहां काफ़ी हंसी-ख़ुशी का मसाला है। लेकिन ध्यान रखना कहीं कोराउगे तुम्हें देख न ले। उसकी वामचो से पटती नहीं।"

"नारगिनाउत, मैं शिकार के लिए जाना चाहती हूं। मैं चाहती हूं बर्फ़ीले मैदान और खुली जगहें। उसी ज़िंदगी को मैं प्यार करती हूं और उसी की आदी भी हूं।"

"अच्छा, जब अलितेत घर आयेगा तो मैं उससे कह दूंगी। उसे बड़ी ख़ुशी होगी। एक अर्से से उसने ख़ुद शिकार के लिए जाना छोड़ दिया है और बराबर उसको यह इच्छा रहती है कि उसे ज़्यादा खालें मिलती रहें। अब तूमातूगे तीसरा पोलोग बना रहा है। अलितेत ने तीसरी बहू ब्याह लाने की ठानी है," नारगिनाउत ने कहा और तीग्रेना की अचरजभरी नज़र देखकर वह आगे बढ़ी : "फ़िक्र न करो तीग्रेना, हमारे लिए काम और आसान होगा। तुम तो देखती ही हो, अलितेत ने कितना काम ढूंढ निकाला है।"

बाहर हवा सांय सांय कर रही थी। अलितेत को घर वापस आने की कोई जल्दी न थी। वह हमेशा अपने अनगिनत अभियानों में लगा रहता और कई रातें अपने नेवतुमों (पत्नी-मित्रों) के साथ गुज़ार देता। तट वासी शिकारियों में अपनी पत्नियों के अस्थायी अदल-बदल की प्रथा थी। कई चुकची परिवारों के मुखिया के मुंह से सुनाई पड़ता कि "यह मेरा बेटा है और वह मेरे वैवाहिक मित्र का"। दो परिवारों के बीच की इस विवाह-मैत्री के कारण वे परस्पर-सहायता के लिए हमेशा तैयार रहते। किसी आदमी की मृत्यु के बाद उसका विवाह-मित्र उसके परिवार की देख-भाल करता। इस प्रकार के विनिमय-विवाह की पद्धति में पुरुषों को नेवतुम कहा जाता था।

लेकिन इस पुरानी प्रथा से अलितेत जितना लाभ और कोई नहीं उठा रहा था। लगभग हर बस्ती में अलितेत के ऐसे 'मित्र' थे।

ग्यारहवां अध्याय

एनमकाई बस्ती के जीवन का ढर्रा हमेशा की तरह था। बरफ़ीले तूफ़ान के खत्म होते ही शिकारी हिमाच्छादित सागर की ओर चल दिये। सील के चमड़े की खोलों में रखी हुई शिकारी बंदूक़ों को कंधों पर लटकाये वे हिम-क्षेत्रों में जाकर हवा और समुद्री प्रवाहों के कारण बरफ़ की चट्टानों के बीच बनी झीलों को ढूंढ़ने लगे।

शिकार के लिए रवाना होने से पहले बस्ती के वृद्ध लोग आकाशस्थ प्रतिबिंबों को देखकर इन जलमार्गों के आकार तथा स्थान के बारे में भविष्यवाणियां कर देते। हिमाच्छादित तट सहित बड़ी बड़ी झीलों के समान दिखाई देने वाले विशाल खंड शिकार के अनुकूल न थे क्योंकि वहां मारे गये सीलों को किनारे खींच लाना बड़ा कठिन था।

सफ़ेद लबादे पहने हुए शिकारी विशाल हिम-खंडों की बग़ल में बैठकर चिलम पीते और पैनी नज़र से सील का इंतज़ार करते। सील शायद ही नज़र आता। लेकिन जब कभी उसका मूंछदार सिर क्षण भर के लिए भी पानी के ऊपर दिखाई देता तो इधर से फ़ौरन विंचेस्टर बंदूक़ की तेज़ आवाज़ निकलती। सील अपने सुफ़नों को फड़फड़ाता हुआ मिनट भर के लिए पानी में ग़ायब हो जाता और फिर धीरे धीरे सतह पर तैर आता। इस समय पानी उसके ख़ून से लाल हो जाता।

सीलों के शिकार के बारे में तीग्रेना एनमकाई बस्ती के किसी भी पुरुष से कम न थी।

अलितेत के यारंग की उदास ज़िंदगी के बाद तीग्रेना को हिम-क्षेत्रों में सीलों का शिकार करना एक मनपसंद खेल सा लगता था।

लगातार तीन दिन शिकारियों को हिम-क्षेत्रों से ख़ाली हाथ लौटना पड़ा। चौथे दिन किनारे पर ज़ोरदार हवा चली। शिकारियों ने जल्दी जल्दी अपने स्थान छोड़े। सभी पुरुष घर वापस आये। तीग्रेना भी उनके साथ थी। केवल वामचो का पता नहीं चला। उसकी ग़ैरहाज़िरी से चिंता पैदा हुई।

"किनारे पर एक बहुत ही चालाक पिशाच ने अपना जाल बिछाया है। वह बड़ी भारी बलि चाहता है," कोराउगे ने घोषित किया।

तीग्रेना विचारमग्न हो गयी।

"अलितेत धनी बारहसिंगा-पालक एचावतो से मिलने टुंड्रा गया है। उसका वापस आना पक्का है। लेकिन वामचो... वह अच्छे शिकार मैदान ढूंढ़ने के लिए चार कुत्तों की बरफ़-गाड़ी पर सवार होकर हिम-क्षेत्रों में दूर तक चला गया। काश, वामचो टुंड्रा गया होता और अच्छे शिकार-मैदानों की खोज में गया होता अलितेत!"

तीग्रेना ने महसूस किया कि बुड्ढे ओझा की पैनी नज़र अपने ऊपर गड़ी हुई है। तीग्रेना को अचरज हुआ कि कैसे उस बुड्ढे ने उसके दुष्ट विचारों को ताड़ लिया। यकायक भयंकर भय की भावना ने उसे घेर लिया। वह उठकर बाहर चल दी।

वह वामचो को अपने विचारों से हटा न पायी। भले आदमी को संकट में देखकर दुःख होता है। अपने अंतस्तल में वह वामचो का चित्र बना लेती – उसे वह कहीं बरफ़ के बीच बैठ तेज़ हवा से बचने की कोशिश करता हुआ दिखाई देता।

"मैं जाऊं कहां?" तीग्रेना ने मन ही मन पूछा।

झंझा के झोंके चलने लगे और अंधकारमय बरफ़ीले तूफ़ान में यारंग छिप से गये। समुद्र से सरकते हुए बरफ़ के तूदों की आवाज़ आती रही।

"मैं वाल के पास चली जाऊंगी," आख़िर तीग्रेना ने तय किया।

वाल के यारंग में आठ शिकारी उस वृद्ध के चारों ओर वृत्ताकार बैठे थे। वहां दमघोट सन्नाटा छाया हुआ था। ढिबरी से धुआं निकल रहा था लेकिन इसपर किसी का ध्यान न गया। हर किसी ने साफ़ साफ़ जान लिया था कि बरफ़ का तूदा वामचो को समुद्र में बहा ले गया है। तीग्रेना ने एक छोटी सी लकड़ी से ढिबरी की काई ऊपर-नीचे कर दी। वामचो के बारे में कुछ पूछने में उसे डर लग रहा था और इसी लिए वह चुपचाप बैठी थी।

वाल सिर झुकाये बैठा था। वह चिलम तक नहीं पी रहा था। उसके झुर्रीदार चेहरे पर से मोटे मोटे आंसू लुढ़क रहे थे। आंसुओं से तर अपने हाथ की ओर देखते हुए वह धीरे से बोला:

"आज तक मैंने इनको... इन आंसुओं को कभी न देखा था। लेकिन मैं बुड्ढा हो गया हूं। अब मैं इन्हें रोक नहीं पाता।"

"वामचो के दूसरे कपड़े कहां हैं ?" तीग्रेना ने दबी ग्रावाज़ में पूछा।

"वहां... गलियारे में," बूढ़े ने जवाब दिया।

शिकारी वामचो के कपड़ों का फालतू सेट ले ग्राये ग्रौर इनके सहारे वामचो की प्रतिमा बनाने लगे। उन्होंने जल्दी जल्दी परका, पतलून ग्रौर बूटों में चिथड़े ग्रौर घर की दूसरी सटरपटर चीज़ें ठूंस ठूंसकर भर दीं। शीघ्र ही वामचो के कपड़ों ने ग्रादमी का ग्राकार धारण किया। वृद्ध वाल की इनीगिनी घरेलू चीज़ों में से दो छोटी छोटी खालों को छोड़कर बाक़ी सब चीज़ें वामचो के पुतले में चली गयीं।

"शायद ग्राप लोगों ने पुतले को ठीक से नहीं भरा," वृद्ध ने कहा। "लो, इन खालों को भी उसमें ठूंस दो। ग्रब मेरे लिए इनकी कोई ज़रूरत नहीं। ग्रब मैं सोऊंगा ही नहीं।"

वे पुतले को सावधानी के साथ छोटे से गलियारे में ले गये।

बारहवां ग्रध्याय

ग्रपने यारंग की ग्रोर वापस ग्राते समय तीग्रेना को रास्ते में ढोलक की ज़ोरदार धमधमाहट सुनाई दी।

वह रुक गयी लेकिन हवा ने उसके पैर उखाड़ से दिये। वह झपटकर गलियारे में घुस गयी ग्रौर धड़कते हुए दिल से ग्रोझा कोराउगे की चिल्लाहट ग्रौर उसकी ढोलक की धमधमाहट सुनती खड़ी रही।

लहराती हुई ग्रावाज़ों से पूरा यारंग भरा हुग्रा सा लग रहा था। ये ग्रावाज़ें जीव धारियों की तरह एक दीवार से दूसरी दीवार तक ग्रौर फ़र्श से छत तक झपट रही थीं। तीग्रेना के ग्रागे कोराउगे के मुस्कराहट से ग्रछूते चेहरे का चित्र खड़ा हो गया।

अंधेरे में जाने क्या उसके पैर में रगड़ता रहा। मारे डर के वह कांप उठी। उसने पोलोग में घुसना चाहा लेकिन डर ने उसके पैरों में कील सी जड़ दी। उसके पैर मन-मन भर के हो गये। यकायक तीग्रेना को कराह की परिचित हल्की सी आवाज़ सुनाई दी और जब उसे पता लगा कि केवल एक बुड्ढा कुत्ता उसके पैरों के पास आ लेटा है तब कहीं उसकी जान में जान आयी। वह नीचे बैठ गयी और कुत्ते की गरम थूथनी अपनी छाती पर दबाने और उसके सिर को हल्के से थपथपाने लगी।

यारंग में से ओझा जी का भयंकर मंत्रपाठ सुनाई दे रहा था:

"रुको रुको, ऐ हवा, रुको!
बीत गये हैं कितने ही दिन
अलितेत जबसे चला गया।
सुनो पिशाचो, बदलो मौसम
उसे बना दो तुम बढ़िया!
वामचो की बलि ले लो..."

सांस रोककर तीग्रेना ने ओझा के शब्द सुने और तब कुत्ते को छाती से चिपकाकर उससे धीमी आवाज़ में कहा:

"यह भी अच्छा है कि तुम कुत्ते हो। कुत्ता होना सचमुच बहुत अच्छा है। मैं अंदर जाकर फिर उस बुड्ढे की नज़र का सामना नहीं करना चाहती। मैं चाहती हूं कि यहीं अंधेरे में तुम्हारे साथ सो जाऊं और किसी को भी न देखूं।"

ढोलक की धमधमाहट जारी थी।

अंदर वाले कमरे से फिर ओझा की रटन सुनाई दी। उसके कंठ से मेंढ़क की तरह टर्र टर्र शब्द निकल रहे थे:

"उसका यारंग दुर्भाग्य की जड़ है... इलिनेउत ठिठुरकर चल बसी। वामचो... पिशाच..."

ढोलक की धमधमाहट में शब्द विलीन हो गये।

यकायक यारंग में सन्नाटा छा गया। केवल बुड्ढे के हांफने की कर्कश ग्रावाज़ सन्नाटे को चीर रही थी। उन्माद में ढोलक को पीट पीटकर ग्रौर चिल्ला चिल्लाकर वह थक गया था ग्रौर ग्रब बर्छी से ग्राहत वालरस की तरह हांफ रहा था।

बदन को दोहराकर बैठने के कारण तीग्रेना के ग्रंग सुन्न ग्रौर ठंढे पड़ गये थे। वह सावधानी के साथ उठ खड़ी हुई ग्रौर रेंगती हुई सी पोलोग में चली गयी। फूंक से उसने ढिबरियां बुझा दीं ग्रौर जल्दी जल्दी कपड़े उतारने लगी। इतने में कोराउगे की कर्कश ग्रावाज़ उसे सुनाई दी:

"ऐसी हवा में जानवर तक ग्रपनी मांदों को छोड़कर कहीं नहीं जाते। क्या तुम्हारे लिए यह मुनासिब है कि ग्रपने शौहर की ग़ैरहाज़िरी में जैसे चाहो घूमती रहो?"

वामचो के नाम का उल्लेख न करते हुए तीग्रेना ने कहा:

"कोराउगे, बरफ़ के तूदे पर एक ग्रादमी समुद्र की ग्रोर बह गया है। सारी बस्ती दुःख में डूबी हुई है... हर कोई यह जानने के लिए उत्सुक है कि वह ग्रादमी ज़िंदा है या नहीं। ग्रौर इसी लिए उसका एक पुतला बनाया गया है। सुनिये, ग्रापको हवा की ग्रावाज़ सुनाई देती है?"

"मैं सब कुछ सुनता हूं, सब कुछ जानता हूं। दूसरे के यहां के नहीं, ग्रपने यहां के दुःख की सोचो। जाने क्या क्या होगा। ग्रलितेत..." ग्रोझा ने इस डर से ग्रपना वाक्य ग्रधूरा ही छोड़ दिया कि कहीं उसके बेटे का पता भूत-पिशाचों को न मालूम हो जाये।

"कौन जाने, कोराउगे? पता नहीं ये ख़तरनाक पिशाच क्या क्या करने पर तुले हुए हैं! क्या ग्राप यह नहीं कहने जा रहे थे कि ग्रलितेत कहीं भटक गया होगा या किसी चट्टान पर से गिर गया होगा?"

"ज़बान संभालो, औरत, और चुपचाप सो जाओ!" कोराउगे फुफकार उठा। "तुम्हारी ज़बान सचमुच औरत की ज़बान है जो बिल्कुल बेमतलब बकझक करती है।"

तीग्रेना हृदय से चाहती थी कि अलितेत चट्टान पर से गिर जाये। हां, ऐसी कई दुर्घटनाएं हो चुकी थीं और अच्छे आदमियों को भी उनका शिकार होना पड़ा था।

वह रात बड़ी व्याकुलतापूर्ण रही। हवा बड़ी तेज़ रफ़्तार के साथ फूं फूं करती हुई यारंगों के पीछे से सागर की ओर बह रही थी। शिकारी फिर से बुड्ढे वाल के यारंग में इकट्ठे हुए थे। बरफ़ीले तूफ़ान के ख़तरनाक झपट्टों के कारण यारंग थरथरा उठता था। गलियारे की छाजन की खुली जगहों में से हवा अंदर घुस आयी और पुतला हिलने लगा। दो शिकारी लगातार उसपर चौकी देते हुए खड़े थे और बार बार चिल्लाकर बुड्ढे को सुना रहे थे: "वह हिल रहा है!"

वाल पोलोग में बैठा था और जब जब ये शब्द उसके कानों तक पहुंचते थे उसका चिंताग्रस्त और दुःखी चेहरा आनंदभरी मुस्कराहट से चमक उठता था।

लोग अच्छी तरह जानते थे कि पुतले के हिलने का मतलब यह है कि वामचो अभी तक ज़िंदा है।

दोपहर के समय शिकारी फिर से दौड़ते हुए यह समाचार ले आये कि आसमान साफ़ हो रहा है। उन्होंने बुड्ढे को ढाढ़स दिलाना शुरू किया:

"जल्द ही हवा का रुख़ बदल जायेगा और वह उसे किनारे की ओर ले आयेगी।"

"वाल, आसमान साफ़ हो रहा है। हवा का ज़ोर कम हो रहा है। उसके लिए यह बहुत ही अच्छा है..."

"हम कोराउगे से मिन्नत करें कि वह उसके लिए हवा का रुख़ बदल दे।"

किसी भी शिकारी ने वामचो के नाम का उल्लेख नहीं किया। इसे ख़तरनाक पिशाचों से छिपाकर जो रखना था।

बुड्ढा ध्यानपूर्वक शिकारियों की बातें सुन रहा था और दुःख तथा विचारमग्न दृष्टि से उनकी ओर ताक रहा था।

"मेरे लिए चिलम भरो। चिलम पीने के लिए मेरा जी तरस रहा है," उसने धीरे से कहा।

इसी समय तीग्रेना ने यारंग में प्रवेश किया।

"वाल, आसमान साफ़ हो रहा है। तूफ़ान अब ख़त्म हो जायेगा और वह घर लौट आयेगा। मैं अच्छी तरह जानती हूं... वह उछलने-कूदने में बड़ा उस्ताद है..."

तीग्रेना ढिबरी के पास बैठ गयी और उसमें नयी चरबी भरने लगी जो वह साथ ले आयी थी।

"नारगिनाउत ने मुझसे कहा था कि कुछ चरबी मैं यहां ले आऊं। वह बड़ी समझदार औरत है।"

तेरहवां अध्याय

उस दिन शाम को जब वामचो अन्य शिकारियों के साथ शिकार मैदान से खाली हाथ लौटा तब बूढ़े वाल ने कहा था:

"इस समय सील बहुत दूर होते हैं। समुंदर के दूर वाले खुले हिस्सों में वे रहते हैं।"

वामचो चुप बैठा रहा था – बिल्कुल अप्रभावित सा। उसका बाप एक बड़ा शिकारी था और जानता था कि वह क्या कह रहा

है। लेकिन किनारे से बहुत ही दूर, अस्थिर हिम-क्षेत्रों में चले जाने का साहस किसे था?

सारे तट-प्रदेश को भूख ने घेर रखा था। सभी यारंगों में बातचीत का एक ही विषय था—सीलों का शिकार। लोमड़ियों को फंसाने के काम में अब शायद ही किसी को दिलचस्पी रह गयी थी। यह काम अच्छा तभी रहता है जब आदमी के पास खाने-पीने का अच्छा इंतज़ाम हो। आख़िर रोवेंदार खालों की ज़रूरत थी तरह तरह का व्यापारी-माल लेने के लिए। इस माल के बिना भी ज़िंदा रहना संभव था लेकिन बिना खाने के ज़िंदा रहना मुमकिन न था। वामचो ने अब मांस के लिए अलितेत के आगे हाथ न फैलाने का निश्चय किया था। उसके पिता ने अभी जिन दूरस्थ खुले जलाशयों का उल्लेख किया था वहां जाकर अपनी क़िस्मत आज़माने का निश्चय उसने किया था।

दूसरे दिन तड़के उठकर वामचो ने अपनी हल्की सी बरफ़-गाड़ी में चार कुत्ते जोत दिये और हिम-क्षेत्रों की ओर चल दिया।

अभी तक अंधेरा फैला हुआ था। पहाड़ी की बग़ल में स्थित यारंग शीघ्र ही आंखों से ओझल हो गये। सख़्त बरफ़ीले मैदान पर वामचो देर तक अपनी गाड़ी दौड़ाता रहा। इसी बीच चांद निकल आया और बरफ़ीले मैदानों पर एक हल्की सी लाली छा गयी। कुत्ते अधिक उत्साह के साथ दौड़ते रहे। इसी समय वामचो को दूर से खुले पानी का हिस्सा दिखाई दिया।

"बस, यही सीलों की बस्ती है!" उसने सोचा और शिकार के स्फूर्तिदायक विचार से उसका रोम रोम पुलकित हो उठा।

"चेगित! पोत-पोत!" आगे वाले कुत्ते को संकेत करके वह चिल्लाया।

चेगित ने जान लिया कि मालिक क्या चाहता है और वह दाहिनी ओर मुड़ गया।

बरफ़-गाड़ी एक विशाल हिम-शैल के पास से दौड़ती गयी। वामचो ने फ़ौरन गाड़ी रोकी, एक बरफ़ीली चट्टान पर चढ़ गया और इर्दगिर्द नज़र दौड़ाने लगा। दूर, खुले हुए सागर का एक हिस्सा चमकता हुआ दिखाई दिया। उस प्रभात-वेला में वातावरण बिल्कुल शांत था। सागर पर से हल्का सा कुहरा ऊपर उठा। वामचो चट्टान पर से नीचे कूद पड़ा, बरफ़-गाड़ी पर सवार हुआ और कुत्तों को ललकारकर उसने गाड़ी खुले पानी की दिशा में तेज़ी के साथ दौड़ायी।

"हां, यही ठीक होगा," उसने मन ही मन सोचा। "मैं इस टीले के पीछे छिपकर बैठूंगा। यहां से मुझे सील अच्छी तरह दिखाई देंगे।"

उसने कुछ दूरी पर गाड़ी एक ओर खड़ी कर दी और खुद फिर से चट्टान के पास आ पहुंचा। सभी ज़रूरी तैयारियां करने के बाद उसने अपनी चिलम सुलगायी। लेकिन अभी वह तंबाकू का डिब्बा अपनी जेब में रख ही रहा था कि एक सील दिखाई दिया। स्वप्न की तरह वह वामचो की आंखों के सामने तैर गया और वामचो का हृदय मारे ख़ुशी के नाच उठा। उसने अपनी बंदूक़ तानी लेकिन ठीक निशाना साधने से पहले ही सील यकायक अदृश्य हो गया। वामचो पानी की सतह पर उठी चक्राकार लहरियों को देर तक बारीकी से निहारता रहा लेकिन शीघ्र ही वे भी विलीन हो गयीं।

"सील यहां हैं जरूर!" वामचो ने सोचा। उसके चेहरे पर मधुर मुसकान खिल उठी। बंदूक़ को घुटनों पर तैयार रखकर उसने फिर अपनी चिलम सुलगायी।

कुछ दूरी पर एक और सील दिखाई दिया लेकिन दूसरे ही क्षण वह ओझल हो गया।

"इसका मतलब? सील को तंबाकू की गंध तो नहीं मिल रही है? शायद कुत्तों को मिल रही हो! हाज़िरी? मैं मानता हूं, ज़रूर यही बात है। किनारे से हवा जो चल रही है," वामचो ख़ुद अपने ही साथ तर्क कर रहा था।

कुत्तों के पास जाकर उसने उन्हें कुछ और दूर, उस हिम-शैल के पीछे खड़ा कर दिया। फिर अपनी जगह लौटकर वह पानी के काले हिस्से को बारीकी से निहारता रहा। यह हिस्सा विस्तृत होता हुआ दिखाई दिया।

बरफ़ के किनारे से एक सील बड़े ठाठ के साथ गुज़रता हुआ नज़र आया। वह सीधे शिकारी की ओर बढ़ रहा था। उसकी बड़ी बड़ी और काली आंखें कुतूहल के साथ उसे ताक रही थीं। उसके विरल गलमुच्छे पानी की सतह पर खड़े दिखाई दिये।

वामचो ने गोली चलायी और वह जिज्ञासु सील वहीं ढेर हो गया। वामचो उछल पड़ा। उसकी आंखें उत्तेजना से जगमगा उठीं।

"आख़िर मिल ही गया!" ख़ुशी से वह चिल्लाया।

वामचो ने सील को अपनी ओर खींचने का औज़ार निकाला। यह एक कांटेदार लाठी थी जिसके एक छोर में चमड़े की लंबी रस्सी बंधी थी। उसने लाठी को हवा में घुमाकर झटके के साथ सील की ओर फेंका लेकिन रस्सी कम पड़ गयी। वामचो ने देखा कि शिकार हाथ से छूटा जा रहा है। ठीक इसी समय उसने यह भी देखा कि किनारे की हवा ने फिर से ज़ोर पकड़ा है। हिम-क्षेत्र के किनारे से वह पीछे की ओर चला गया और बरफ़ की एक चट्टान पर चढ़कर ज़मीन की ओर देखने लगा।

"उधर ज़ोरदार हवा चल रही है और आकाश धुंधला होता जा रहा है," उसने सोचा। उसने फ़ौरन वापस जाने का निर्णय किया। लेकिन मारे हुए शिकार को वहीं छोड़ जाना उसको खल रहा था।



सागर शांत था। उसपर हल्की सी तरंगें उठ रही थीं जिससे पानी अधिक गहरा दिखाई दे रहा था। चांदनी से कुछ आलोकित उस काले पानी के पुंज में सील का मृत शरीर तैर रहा था और उसपर से अपनी नज़र हटाना वामचो को असंभव लग रहा था।

वामचो ने रस्सी की गेंडुली फिर से उठा ली, उसके छोर में अपनी पेटी बांधी और फिर एक बार सील की ओर लाठी फेंकने की कोशिश की। लेकिन इस समय भी लाठी सील तक पहुंच न पायी। फिर भी अब की बार वह इतनी नज़दीक जा गिरी कि उसके आघात से पैदा हुई लहरियों के कारण मुर्दा सील ऊपर-नीचे हिलने लगा।

वामचो को बचपन के कुछ खेल याद आये। पानी पर तैरने वाली लाठियों को प्राप्त करने के लिए वह लाठी के पास पत्थर फेंका करता था जिनके आघात से पैदा हुई लहरें लाठी को ढकेलती हुई किनारे लगा देती थीं। इसके लिए इतना भर ज़रूरी था कि पानी में तैरने वाली चीज़ के इस ओर ठीक से पत्थर फेंका जाये।

इसी तरह सील को अपनी ओर लाने की आशा में वामचो अपनी लाठी को बार बार पानी में फेंकता रहा। वह अधिकाधिक सील के समीप पड़ने लगी और वामचो बड़ी उत्सुकता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा करता रहा जब लाठी सील के कुछ उस पार गिर जाये। तब कितनी ख़ुशी से वह सील के शरीर में कांटे घुसेड़ देगा और शिकार को अपनी ओर खींच लायेगा!

यकायक वामचो ने देखा कि उसके पैरों तले से बरफ़ खिसकती जा रही है। वह झपटकर अपने कुत्तों की ओर दौड़ा। हिम-शैल के आगे ही बरफ़ फटने लगी। वामचो ने देखा कि वह मुख्य हिम-क्षेत्र से धीरे धीरे दूर जा रहा है। फटन अब इतनी चौड़ी हो गयी थी कि इस ओर से कूदकर हिम-क्षेत्र के दूसरे हिस्से पर पहुंचना वामचो

के लिए भी मुश्किल था। छलांग मारने के लिए योग्य स्थान ढूंढ़ता हुआ वह इधर से उधर और उधर से इधर दौड़ता रहा लेकिन उसकी यह दौड़-धूप बेकार रही।

"ओह, मेरे कुत्ते – वे बेचारे दूसरी ओर रह गये!"

वामचो उन्मत्त सा होकर सोचने लगा।

वह हिम-क्षेत्र के उस किनारे के सामने चला गया जहां उसने कुत्तों के दल को छोड़ रखा था। वहां खड़े रहकर उसने ज़ोरों से सीटी बजायी जिससे हिम-खंडों के बीच कई प्रतिध्वनियां सुनाई पड़ीं।

"चेगित! चेगित! चेगित!" वामचो पुकारता गया।

कुत्ता-दल हिम-खंडों के पीछे से एकदम बाहर आया और ज़ोरों के साथ अपने मालिक की ओर दौड़ा। हल्की बरफ़-गाड़ी पलट गयी और कुत्तों के पीछे घसिटती चली गयी। हिम-क्षेत्र के किनारे पहुंचते ही कुत्ते ठिठक गये।

सामने गहरा, काला और चौड़ा जल-प्रवाह था जो उन्हें अपने मालिक से अलग रखे हुए था।

"आओ चेगित, आओ!" तोरबाज़ों को थपथपाते हुए वामचो ने आग्रह के साथ कहा।

चेगित ने पानी की ओर देखा, गुर्राया और दल के और कुत्तों को अपने पीछे घसीटता और बरफ़ को सूंघता हुआ हिम-क्षेत्र के किनारे किनारे दौड़ता रहा।

"बस, अब मैं अकेला रह गया। ओह! तनहाई कितनी बुरी होती है – बहुत ही बुरी!" वामचो के मन में विचार आया। "कुत्तों का साथ में रहना कितना अच्छा है, सचमुच बहुत ही अच्छा!" उसने फिर से चेगित को पुकारना शुरू किया।

कुत्तों का अगुआ दूसरे कुत्तों को अपने पीछे घसीटता हुआ फिर एक बार किनारे की ओर दौड़ा, उसने आगे की ओर देखा और एक दर्दभरी चीख़ उसके मुंह से निकल गयी।

"नहीं, वे पानी में नहीं जायेंगे। लेकिन फिर वे भी भटकते ही रहेंगे। वे अकेले घर नहीं जायेंगे। बिना मेरे कभी न जायेंगे। और हम बहते चले जायेंगे बरफ़ के दो अलग अलग तूदों पर।"

इस समय वामचो सोच रहा था केवल अपने कुत्तों के बारे में और ऐसा लगता था कि अपने मालिक के चेहरे पर आंखें गड़ाये हुए ये कुत्ते उसके विचारों को साफ़ साफ़ समझ रहे हैं।

"अगर मैं अकेला ही रह गया तो चार दिन ज़िंदा रहकर इंतज़ार करूंगा और फिर ख़ुद अपने ऊपर गोली चला लूंगा।"

तीव्र निराशा में वामचो ने फिर चेगित को पुकारना शुरू किया।

वह चतुर जीव पानी की ओर दौड़ पड़ा। हिम-क्षेत्र के किनारे के पास अपनी थूथनी झुकाकर उसने एक लाचार सी नज़र दौड़ायी और फिर वापस चल दिया।

वामचो की इस दूसरी पुकार को सुनकर चेगित आख़िर ज़ोर लगाकर जल-प्रवाह को फांदने के लिए उछल पड़ा लेकिन बाक़ी कुत्तों ने उसका साथ न दिया, उल्टे वे उसी को पीछे खींचते रहे। नतीजा यह हुआ कि चेगित हिम-क्षेत्र के किनारे से लटकता ही रह गया।

वामचो ने झट से तस्मे की गेंडुली अपनी पेटी से हटा ली और अपनी लाठी बड़ी दक्षता से बरफ़-गाड़ी पर फेंक दी। लाठी के कांटे गाड़ी में घुस गये और वामचो ने गाड़ी और कुत्ता-दल दोनों को पानी में खींचना शुरू किया।

बात ख़ुशी की थी। अब वह अकेला न था। वामचो ने जल्दी से कुत्तों को गाड़ी से छुड़वा लिया और वे फ़ौरन बरफ़ में लोटने लगे। उनके मोटे खुरखुरे रोवें हिम-कणों से ढंक गये थे। वामचो ने चाकू की मूंठ से खरोंचकर चेगित के बदन पर से हिम-कणों को हटा

दिया। दूसरे कुत्तों ने अपने दांतों के सहारे अपने बदन से बरफ़ की परत उतार दी।

हवा ज़ोर पकड़ रही थी। चांद हिम-खंडों के पीछे डूब गया। रात ने अपना जाल बिछा दिया।

चौदहवां अध्याय

वामचो ने बरफ़-गाड़ी अपनी बग़ल में दबाकर उठायी और धीरे धीरे विशाल हिम-खंड की ओर चल दिया। कुत्तों ने उसका अनुसरण किया। यहां हवा से उनका बचाव हो सकता था।

"देखा चेगित? हवा बिगड़ती जा रही है और हमें अपने लिए ठहरने की जगह बनाना ज़रूरी है," अगुआ कुत्ते को संकेत करते हुए वामचो ने व्यग्र स्वर में कहा।

वामचो ने योग्य स्थान ढूंढ़ निकालने की दृष्टि से एक व्यवहार-कुशल व्यक्ति की तरह हिम-खंड की परिक्रमा आरंभ की। फिर अपने चाकू से उसने बरफ़ को काटना-खोदना शुरू किया। लगातार सख़्त मेहनत करते हुए उसने बरफ़ में एक गहरा सा गड्ढा बनाया और तभी सांस ली जब वहां अपने और अपने कुत्तों के लिए एक छोटी सी काम-चलाऊ पनाहगाह बना ली। फिर उसने बरफ़-गाड़ी को घसीटकर उस बरफ़ीली झोंपड़ी के अंदर कर दिया और कुत्तों के साथ ख़ुद भी अंदर घुस गया। वे एक-दूसरे से बिलकुल सटे रहे ताकि एक दूसरे को गरमाहट मिल सके।

वामचो को प्यास लगी थी लेकिन बरफ़ से आदमी की प्यास थोड़े ही बुझती है। उसे उस क्षण का स्मरण हो आया जब वह छुरी से अपनी मूंछें उतारने जा रहा था और जब उसके बाप ने उसे रोककर कहा था:

"अरे, तुम अपनी मूंछें क्यों उतार रहे हो? शिकारी को अपनी मूंछों को उसी तरह संभालकर रखना चाहिए जिस तरह वह अच्छे कुत्ते को संभालता है। कभी कभी ऐसा होता है कि शिकारी को काफ़ी देर तक कहीं पानी नहीं मिल सकता और तब उसकी मूंछें उसके लिए पानी बना लेती हैं। ताज़े पानी के ओस जैसे कन मूंछों में चिपक जाते हैं।"

बरफ़-गाड़ी पर लेटे लेटे वामचो अपने पिता के उपदेश को याद करता रहा और वृद्ध पिता का सौजन्यपूर्ण चेहरा उसे अपने सामने दिखाई दिया।

मध्यरात्रि का समय था। हिम-खंडों के बीच हवा की गर्जनाएं जारी थीं। कुत्तों के गरम शरीरों से सटकर वामचो सो गया। लेकिन वह देर तक सो न पाया। व्याकुलतापूर्ण विचारों ने उसकी नींद भगा दी।

"आखिर यह हुआ कैसे? हां, हवा ने बरफ़ के तूदे पर दबाव डाला होगा और तूदे ने पाल का काम दिया होगा। किनारे से दूर वाली बरफ़ पहले ही खिसकने लगी थी।"

दोपहर के समय, जब कि ज़रा सी रोशनी दिखाई दी और खिसकते हुए बादलों के पीछे से चांद बाहर निकलने की कोशिश करता हुआ दिखाई दिया, वामचो अपनी झोंपड़ी से बाहर आया। हाथ में बंदूक़ और साथ में कुत्तों को लिये वह बरफ़ के तूदे के किनारे पहुंच गया। अपने कुत्तों से फिर कभी अलग न होने का निश्चय उसने किया था। एक हिम-खंड की आड़ में वह छिपकर बैठा और खुले पानी के हिस्से को बारीकी से देखता रहा। सभी सगुन बता रहे थे कि वहां सीलों के आने की कोई उम्मीद नहीं है।

"आदमी के पास जब खाने को कुछ भी न हो तब ज्यादा देर खुली, ठंढी हवा में बैठना ठीक नहीं," वामचो ने मन ही मन

कहा और धीरे धीरे उठ खड़ा हुआ। "और भूखा आदमी जितना कम चले उतना अच्छा।"

जैसे ही वे अपनी मांद के पास पहुंचे कुत्ते एकदम आगे को दौड़े।

"मुझे शिकार के लिए बाहर नहीं जाना चाहिए था," वामचो ने सोचा। "यारंग में जब किसी की मौत हो जाती है तब आदमी को तीस दिन तक शिकार नहीं करना चाहिए। और मेरी मां इलिनेउत की ठिठुर ठिठुरकर मौत हुए, सिर्फ़ छब्बीस दिन ही तो हुए हैं। मैंने क़ानून तोड़ा है और ख़तरनाक पिशाचों ने मुझे अपने जाल में फंसा लिया है।"

दो दिन बीत गये। पहली रात को बरफ़ ठोस हो गयी जिससे दरार सध गयी। सीलों का कहीं ठिकाना न था और वामचो और उसके कुत्तों के पेट में चूहे कूदने लगे थे।

"चेगित, अब तो हमें एक कुत्ते को ही काटकर खाना होगा," वामचो ने कहा। "हम कुछ इंतज़ार ज़रूर करेंगे लेकिन भूखा आदमी किसी भी क्षण ठिठुरकर ढेर हो सकता है।"

वह मिल्यूतालिगन नामक कुत्ते को गर्दन पकड़कर बाहर एक ओर ले गया। छुरा उसके हृदय में इतना अचानक और इतनी तेज़ी के साथ घुस गया कि बेचारे को चूं तक करने का समय न मिला।

कुत्ते का गरम ख़ून पीकर वामचो ने अपनी प्यास बुझायी और उसका गरम गरम मांस भर पेट खा लिया। झोंपड़ी में वापस आकर उसने कुत्तों को भी मांस खिलाया। उस रात वह गहरी नींद सोया।

प्रभात-वेला में हल्की सी चंद्र-किरणों ने उसे जगा दिया। मांद के प्रवेश को द्वार की तरह रोक रखने वाले हिम-खंड की दरार में से यह किरणें छन छनकर अंदर आ रही थीं। वामचो उछलकर खड़ा हुआ, लात मारकर 'दरवाज़ा' खोल दिया और बाहर चला

गया। पास ही एक नयी फटन पैदा हुई थी। सागर शांत था, हवा का ज़ोर कम हो गया था और हल्के से झकोरे के कारण हिम-खंड झूम-सा रहा था।

यकायक वामचो को एक सील बिलकुल नज़दीक से तैरकर जाता हुआ दिखाई दिया। झट से उसने अपनी बंदूक़ उठा ली। गोली निशाने पर बैठी।

"अब हमें भरपूर खाना मिलेगा!" खुशी के साथ वामचो चिल्लाया।

हर कुछ क्षणों के बाद सील दिखाई देते रहे और थोड़े से समय में वामचो ने उनमें से पांच को मार डाला और उनके शरीरों को वह अपने वाले हिम-खंड तक खींच लाया।

"देखो, चेगित अब हमारे पास कितनी बड़ी रसद है! और हम थे कि हमने बेचारे मिल्यूतालिगन को मौत के घाट उतार दिया। कुछ देर और रुकते!"

वामचो ने सीलों को इकट्ठा बांध लिया और घसीटकर अपनी मांद में ले गया। अच्छे खाने की आशा में कुत्ते होंठों पर ज़बान फेरते रहे और सील के ख़ून से सराबोर बरफ़ के टुकड़े जल्दी जल्दी निगलने लगे।

"कितना मांस और कितनी चरबी!" सीलों को साफ़ करते हुए वामचो ने सोचा। "और जब आदमी के पास मांस और चरबी का काफ़ी भंडार होता है तब उसका हिया गाने लगता है।"

वामचो ने ख़ुशी में अलाव जलाने का निश्चय किया। सीलों की हड्डियां लेकर उसने ऊपर से मांस हटा लिया, उनके छोटे छोटे टुकड़े बनाये और कुत्ते के रोवों को सील की चरबी में डुबोकर कुशलता से उन हड्डियों पर लपेट दिया। उसने आग जलायी और शीघ्र ही अलाव धधकने लगा।

"चेगित, कहो कितने दिन से हम हंस न पाये थे? देखो, हंसी अब हमारे पास लौट आयी है। हंसी हमेशा भोजन के साथ ही आती है। सील के मांस और गरम पानी से भरा हुआ पेट ही आदमी की ख़ुशी का कारण है। और जब खाने के लिए सिर्फ़ हवा ही हो तब ख़ुशी आये भी कहां से?"

तंबाकू के खाली डिब्बे ने प्याले का काम दिया और वामचो ने बड़ा रस लेते हुए वह गरम पानी पी लिया जो उसने बरफ़ पिघलाकर बनाया था।

"चेगित, हो सकता है कि सफ़ेद भालू भी हमें मिल जायें। ओहो! तब हमें वही आराम मिलेगा जो यारंग में मिल सकता है!"

पंद्रहवां अध्याय

एचावतो के पास अनगिनत रेवड़ हैं। उसकी संपत्ति अमाप है। जहां से उसके बारहसिंगों के रेवड़ चले जायेंगे वहां तीन गरमियां बीतने पर भी काई नये सिरे से उग न सकेगी। उसके बारहसिंगे दस रेवड़ों में बंटे हुए हैं। हर रेवड़ में बीस बीसी, फिर बीस बीसी और फिर बीस बीसी बारहसिंगे हैं—यानी हरेक रेवड़ में कुल १२०० जानवर हैं। बुड्ढे एचावतो के बारहसिंगों को एक रेवड़ में रखना असंभव है। काई के अभाव में भूखों मरेंगे और भाग जायेंगे।

हरेक रेवड़ में दस तंबू थे जिनमें पशु-पालक चरवाहे अपने परिवारों के साथ रहते थे। एक सौ से भी ज़्यादा लोग एचावतो के आश्रय में जीवनयापन कर रहे थे।

एचावतो हर चरवाहे को इजाज़त देता था कि वह ख़ुद अपने भी कुछ बारहसिंगे रेवड़ में रखे। इससे चरवाहे को स्वामित्व-भावना

का अनुभव होता था और वह ख़ुद अपने और अपने मालिक के जानवरों की निगरानी में ख़ूब दौड़ता रहता था।

तीन दिन पहले से अलितेत एचावतो के रेवड़ों की खोज में टुंड्रा का चक्कर लगा रहा था। अपने तेज़-क़दम कुत्तों की बरफ़-गाड़ी पर वह पहाड़ियों, घाटियों और असीम मैदानों में मारा मारा फिरा लेकिन तब भी उसकी कोशिशें कामयाब नहीं हुई। जबतक आदमी



के पास जंगली जानवरों की शरीर-गंध को सूंघने की शक्ति न हो तबतक वह इन रेवड़ों के समीप कभी नहीं आ सकता।

टुंड्रा पर हवा बह चली। यह इतनी ज़ोरदार थी कि उसके मुक़ाबले कुत्ते बड़ी मुश्किल से चल सकते थे। अलितेत ने कुत्तों को रोक दिया और हाथ-पैरों के सहारे सरकता हुआ पशुओं के पद-चिन्ह ढूंढ़ने लगा। ढूंढ़ते ढूंढ़ते उसे बारहसिंगों के कुछ लेंड नज़र आये जिन्हें उठाकर वह बारीकी से देखने लगा। इनसे उसे पता लग जाता कि रेवड़ वहां से कितने दिन पहले गुज़र गया है। अलितेत ने बरफ़-गाड़ी के डंडे से बरफ़ को खोदा और वहां की काई, घास और जल-बेंत की पत्तियों को ऐसे देखा जैसे उनकी जांच कर रहा हो। ये चीज़ें उसे बता देतीं कि रेवड़ किस दिशा में गया है।

ज़ोरदार हवा के बावजूद कुत्ता-गाड़ी फिर से सरपट दौड़ने लगी। फ़ौरन अगुआ कुत्ते को गंध-ज्ञान से मालूम हुआ कि नज़दीक ही लोगों की बस्ती है। वह झट से बायीं ओर मुड़ा और हवा से बातें करने लगा। अंधेरे में एक अस्पष्ट मनुष्याकृति दिखाई दी। अलितेत ने झटके से रास खींच ली।

"कौन है उधर?" उसने आवाज़ दी।

उस व्यक्ति ने अलितेत की आवाज़ पहचान ली, नज़दीक आया और अलितेत का नाम लेकर उसने अभिवादन किया:

"अलितेत?"

"हां, मैं अलितेत हूं। और तुम?"

"मैं हूं रेंतो, एचावतो के पड़ाव का एक चरवाहा। आज की रात ख़राब है। यह है भेड़ियों का रात। बहुत ही ख़राब। मैं सो नहीं सकता। रेवड़ की निगरानी करना उन लोगों को बड़ा मुश्किल लग रहा होगा, इसी लिए मैं उनकी मदद करने जा रहा हूं। उस रेवड़ में मेरे अपने भी आठ बारहसिंगे हैं।"

"रेवड़ यहां से बहुत दूर तो नहीं है?"

"जी नहीं, बिल्कुल नज़दीक। आदमी दौड़कर दो दम में वहां पहुंच सकता है।"

"और यारंग कहां हैं?"

"यहीं, बिलकुल नज़दीक। आइये मैं आपको दिखा दूं।"

कहकर वह चरवाहा कुत्तों के आगे दौड़ने लगा।

"तुम भी कमाल के दौड़ाक हो," पड़ाव में प्रवेश करते हुए अलितेत ने कहा।

"जी हां, मैं अच्छा दौड़ लेता हूं," प्रशंसा से ख़ुश होकर रेंतो ने कहा।

"क्या एचावतो इसी पड़ाव में ठहरा है?"

"जी नहीं, वह दूसरे पड़ाव में है। ग्राज रातभर ग्राप यहीं ठहर जाइयेगा। बरफ़ीला तूफ़ान शायद कल ख़त्म हो जायेगा। फिर हम यहां की गरमाहट को छोड़कर क्यों जायें?"

"क्या दूसरा रेवड़ बहुत दूर है?"

"जी नहीं, नज़दीक ही तो है। ग्रादमी शायद दस दम में वहां पहुंच सकता है। लेकिन ग्राज की रात यहीं गुज़ारें।"

"जी नहीं। तुम ग्रागे दौड़ते जाग्रो ग्रौर मैं पीछे पीछे ग्राऊंगा।"

"ऐ है!" ग्रपना ग्राग्रह छोड़कर रेंतो ने कहा ग्रौर ग्रपनी लाठी कंधे पर रखकर सर्द, तूफ़ानी ग्रंधेरे में दौड़ने लगा।

शीघ्र ही रेंतो ग्रांखों से ग्रोझल हो गया ग्रौर ग्रगुग्रा कुत्ता चार्ली उसके पद-चिन्हों पर दौड़ता रहा।

जबतब रेंतो रुक जाता ग्रौर ग्रावाज़ देता:

"ऐ है!" जिसका मतलब था "मैं यहां हूं!"

ग्रौर फिर वह घने ग्रंधेरे में ग्रदृश्य हो जाता। ग्राख़िर वह दौड़ता हुग्रा पड़ाव में दाख़िल हुग्रा ग्रौर ग्रपनी लाठी पर झुका हुग्रा ग्रलितेत के इंतज़ार में खड़ा रहा। ग्रलितेत के ग्राते ही मुस्कराकर उसने कहा:

"ये रहे यारंग। ग्रब मैं दौड़कर फिर रेवड़ की ग्रोर जाऊंगा।"

"ज़रा ठहरो! देखो इस बढ़िया तंबाकू में से कुछ ले जाग्रो पीने के लिए!"

रेंतो फूला न समाया।

"एचावतो के ग्रादमियों ने क्या बहुत सी लोमड़ियां फंसायी हैं?"

"जी हां, काफ़ी बहुत!"

"ग्रच्छा, ग्रब तुम चले जाग्रो!"

रेंतो दौड़ता हुग्रा वापस चला गया।

अलितेत के आगमन का समाचार सुनने भर की देर थी कि सारे पड़ाव में काफ़ी धूम मची। रात समाप्त हुई सी लगी और लोगों ने सोचा कि अभी जगकर यारंग से बाहर चले जाना चाहिए।

वृद्ध एचावतो की भी नींद खुली थी और लोमड़ी के रोवों का कंबल ओढ़े, बारहसिंगों की रोवेंदार खालों के गद्दे पर वह लेटा हुआ था। उसने अपनी चार बीवियों को अपने पास बुलाया और अपनी लंबी, पतली दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए उन्हें हिदायतें देता गया:

"ऐपिंगा, तुम बाहर जाओ और अलितेत को मांस दे दो। देखो, जो ख़राब से ख़राब मांस हो वही उसको देना। समुंदर के किनारे रहने वाले ये लोग चूहाखोर होते हैं। हिरन के मांस का ज़ायक़ा उन्हें क्या मालूम! उन्हें मालूम है सिर्फ़ अपने दांतों को मचमचाना और सभी सटरपटर चीज़ों को अपने पेट के गड्ढे में ठूंसना।"

"एचावतो, मतलब यह कि तुम कुत्तों के लिए मांस की बात कर रहे हो?"

"हां, हां। ये लोग भी वही खाते हैं जो इनके कुत्ते खाते हैं। लेकिन देखो, मांस उसको बहुत कम न देना—हम उसका मिज़ाज नहीं बिगाड़ना चाहते। और कीमा, तुम पिलिग्राक के पास चली जाओ और उससे कह दो कि वह दौड़ता हुआ रेवड़ में चला जाये और उस बछड़े को ले आये जिसके ऊपर वाले होंठ पर सफ़ेद धारी है।"

"लेकिन एचावतो, इस वक़्त कैसा बरफ़ीला तूफ़ान चल रहा है। क्या पिलिग्राक रेवड़ में से उस बछड़े को ढूंढ़ सकेगा?"

"मूरख औरत, तुम वही करो जो तुमसे कह दिया है। मैं तुमसे और कुछ करने को थोड़े ही कह रहा हूं? वह ज़रूर उसे ढूंढ़ निकालेगा। सुनो केइपा, तुम एक और ढिबरी जलाओ। हां, दो जलाओ। एचावतो ऐसा दलिद्दर थोड़े ही है कि अंधेरे ही में मेहमान

से मिले—और ख़ास कर जब मेहमान एक व्यापारी हो! और वीया, तुम्हारे लिए भी कुछ काम है। जाओ, हिरनी की खाल वाला मेरा वह शानदार पतलून ले आओ और मुझे पहना दो, वरना मुझे नंगधड़ंग देख मेहमान सोचेगा कि मैं दलिद्दर हूं।"

अलितेत ने यारंग में प्रवेश किया।

"आओ अलितेत, तुम आ गये?" बनावटी उपेक्षा भाव से एचावतो ने कहा।

"हां," मेहमान ने बेफ़िक्री से जवाब दिया और अपने ठंढे पड़े हाथों को मलता हुआ धम्म से खालों की बैठक पर बैठ गया।

"तो यह समाचार तुम्हारे कानों तक पहुंच गया कि हमें माल की ज़रूरत है? हां, हमें ज़्यादा चीज़ें नहीं चाहिए।"

"हां, समाचार मैंने सुन लिया। और मैं कुछ ही चीज़ें ले आया हूं। बस, कुछ छुरे, रेतियां, बारहसिंगों के लिए घंटियां, सूइयां, बंदूक़ें और तंबाकू। बिलकुल इनीगिनी चीज़ें।"

तरह तरह का माल देखकर स्त्रियों ने मारे ख़ुशी के अपने हाथ ऊपर उठा दिये। अपनी औरतों के इस बर्ताव से एचावतो नाराज़ हो गया। उसने उनकी ओर कठोर दृष्टि से देखा और फ़ौरन उनके चेहरे से आश्चर्य ग़ायब हो गया। वह अकेला चुपचाप अलितेत की बातें सुनता रहा, बीच बीच में धीरे से गर्दन हिलाकर संतोष प्रकट करता रहा और फिर चिल्ला उठा:

"केइपा! अरी, क्या मेहमान को सूखे गले से बोलते रहना चाहिए? चाय कहां है?"

सांवली और लोमड़ी की तरह चपल युवती केइपा ने झट से चाय डाल दी।

अलितेत गलियारे की ओर गया जहां उसने अपना थैला रख दिया था। आज रात को उसे ख़ूब पीना था—इतना पीना था कि

बस, चक्कर न आये। अंधेरे में वह तब तक टटोलता रहा जब तक उसे वह मक्खन न मिल गया जो चार्ली ने ख़ास ऐसे मौक़े के लिए उसे दे दिया था। अलितेत ने मक्खन निगल लिया। अब शराब की आग सिर्फ़ उसके बदन ही में जलन पैदा करेगी, उसका सिर सलामत रहेगा। आख़िर अलितेत यहां तक सिर्फ़ गुलछर्रे उड़ाने थोड़े ही आया था!

वह यारंग में लौट आया और बड़े दानी की शान दिखाते हुए एक मुट्ठी ख़स्ता बिस्कुट उसने उस छोटी सी मेज़ पर रख दिये।

चाय और बिस्कुट – ओह यह तो देवताओं का भोजन हो गया! औरतों के मुख से हल्की सी आनंद ध्वनियां निकल गयीं।

"औरतें तो जनम ही से पेटू होती हैं," एचावतो ने अपनी राय ज़ाहिर की। "ये पागल जीव बिस्कुटों के साथ ख़ुशी ख़ुशी अपनी ज़बानें तक चटकर जायेंगे।"

"बिस्कुट तो सफ़ेद आदमियों का खाना है," अलितेत ने कहा।

"रद्दी खाना। मैं उसको छुऊंगा तक नहीं," ज़रा सा रुककर एचावतो ने फिर से कारोबार की बात छेड़ी। "मेरे आदमियों ने कुछ लाल लोमड़ियां भी फंसायी हैं," उसने मीठे शब्दों में कहा।

"जी हां, और सफ़ेद लोमड़ियां और रुपहली लोमड़ियां भी," उस बड़बड़िया पंछी केइपा ने बीच ही में चहचह की।

"चुप रहो!" एचावतो गुर्राया।

भगवान ही जानता है कि अगर इस औरत को रोका न जाये तो वह आगे क्या क्या बकती जायेगी।

"तुम लोग वहां उल्लू की तरह ताकती हुई क्यों बैठी हो?" अपनी बीवियों से उसने कहा। "तुम ऐसा तो नहीं चाहतीं कि हमारे मेहमान सिर्फ़ पानी ही से अपनी भूख-प्यास बुझा लें? या तुम भूल गयीं कि मुसाफ़िर को कुछ ठोस खाना भी खिलाना चाहिए? आख़िर

तुम्हें हो क्या गया है? क्या तुम मानती हो कि एचावतो के पास काफ़ी खाना नहीं है? जाओ, मेरे यारंग में जो सब से बढ़िया खाना हो वही परोस दो।"

अपने मालिक के हुक्म को बजा लाती हुई वे औरतें चूहे की सी तेज़ी के साथ वहां से हट गयीं।

सचमुच ऐसे लब्ध-प्रतिष्ठ अतिथि को संतुष्ट करने में वे कोई बात उठा न रखतीं। आख़िर टुंड्रा में ऐसे अतिथि हर रोज़ थोड़े ही पधारते हैं!

केइपा ने अपने मज़बूत और तेज़ दांतों से बारहसिंगे का मांस पीस लिया, उसे लकड़ी के एक कटोरे में भर दिया, उसमें बारहसिंगे का भेजा मिला दिया और इस भूरे से मिश्रण से छोटी छोटी टिकियां बनायीं। फिर उन्हें ठंढी करने के लिए बाहर ले गयी।

दूसरी बीवियां पत्थर के हथौड़े से कच्चे, जमे हुए मांस को तोड़ रही थीं, हिरन के पाके हुए मांस के टुकड़े काट रही थीं, बारहसिंगों की ज़बानों को बर्तन से निकालकर सजा रही थीं और हरी पत्तियों, खाने लायक़ घास तथा कंदमूलों में सील की चरबी मिलाकर सलाद बना रही थीं। कैसा विविधतापूर्ण और स्वादिष्ट भोजन उन्होंने बनाया था! घर में जब भंडार भरा हुआ रहता है तब चार औरतों को स्वादिष्ट चीज़ें बनाते देर नहीं लगती!

एचावतो ने कहा:

"सख़्त मांस से पेट फूलता है। मेरा भोजन है सिर्फ़ बारहसिंगों की ज़बानें, हल्की सी चरबी और नन्हें नन्हें बछड़ों का गोश्त। मैंने एक अच्छा सा बछड़ा मंगवाया है।"

कुछ देर रुककर बुड्ढे ने धीमी लेकिन अधीर आवाज़ में पूछा:

"तुम्हारे पास कुछ शराब ज़रूर होगी?"

"हां, हां, अलितेत के पास वह हमेशा ही रहती है।"

भावी प्रसन्नता से गदगद होकर एचावतो ने अपने होंठ मचकाये।

अलितेत ने सोचा कि अपने मन की बात कहने के लिए यही अच्छा मौक़ा है। वह बोला:

"देखो एचावतो, मेरे पास एक भी बारहसिंगा नहीं है। मतलब यह कि ज़िंदा बारहसिंगा नहीं है। मेरे पास अपना रेवड़ नहीं है। हम किनारे के बाशिंदे बहुत ही ग़रीब होते हैं। समुंदर में शिकार मिले तभी हमारा गुज़र-बसर हो सकता है। अगर वहां शिकार न हो तो हमारे लिए खाना हराम हो जाता है। लेकिन बारहसिंगों के लिए समुंदर पर नहीं जाना पड़ता। इसलिए मैं चाहता हूं कि मेरा अपना भी एकाध रेवड़ हो।"

बुड्ढे के चेहरे पर सतर्कता झलक उठी और वह छलपूर्ण शब्दों में कहने लगा:

"इधर हम टुंड्रा के बाशिंदे भी ग़रीब ही हैं। आज बारहसिंगों को भेड़िये चटकर जाते हैं तो कल चरागाहों पर बरफ़ फैल जाती है, और परसों सारे रेवड़ को बीमारी घेर लेती है। तुम्हारे किनारे पर ऐसी कोई परेशानी नहीं होती। सीलों-लरसों को भेड़िये नहीं खाते। लेकिन हमारे यहां इन परेशानियों की कोई हद नहीं।"

एचावतो ने मौन ही मौन इशारा करके अपनी बीवियों को खाना परोसने के लिए कहा। उन्होंने बिलकुल देर न लगाते हुए तरह तरह की खाने की चीज़ों से भरे कटोरे ला दिये। हर कटोरे को मेहमान की ओर बढ़ाने से पहले ख़ुद एचावतो ने हर चीज़ चखकर देखी। अलितेत ने बारहसिंगे की एक बड़ी सी ज़बान उठा ली, जल्दी जल्दी उसे काटा और लालची की तरह बड़े बड़े टुकड़े चट करता गया। वह नाज़ुक मांस उसके मुंह में गल सा गया। केइपा ने भेजे की टिकियों वाला कटोरा मेहमान की ओर बढ़ाया। तीज-त्योहार के दिन बनने वाली यह प्रेरेम नामक ख़ास चीज़ इतनी ज़ायक़ेदार थी कि उसे खाते खाते अपनी ही ज़बान निगल जाने का डर रहता था।

अलितेत ने शराब की एक बोतल मेज़ पर रख दी। एचावतो ने बड़े प्यार से उस बोतल को अपने थरथराते हुए हाथों से सहलाया।

"यह जलता पानी बड़ा अच्छा है। कड़े से कड़े पाले में भी यह जमता नहीं," दो मगों में शराब उंडेलकर अलितेत ने कहा।

औरतें बिस्कुटों पर झपट पड़ीं और उन्हें मज़े मज़े चबाने लगीं।

अलितेत ने एचावतो के मग से अपना मग झनझनाया। उस जलते पानी को पीते हुए एचावतो हांफता रहा लेकिन उसने खाद्य पदार्थों को छुआ तक नहीं। उसने सोचा कि शराब की ख़ुमारी में कहीं खलल न आ जाये।

"तुमने मग क्यों टकराये? तुम मेरे विवाह-मित्र तो नहीं बनना चाहते? ऐहे! देखो, मेरे कितनी बीवियां हैं!"

बातों के इस मज़ेदार सिलसिले से अलितेत का सिर झूम उठा। वह एक लम्बे अर्से से चाहता था कि एचावतो के साथ अपने व्यापारिक संबंध वैवाहिक भागीदारी के ज़रिये दृढ़तर हो जायें। फिर भी उसने इस विषय में उपेक्षा भाव का अभिनय किया और द्रावड़ी प्राणायाम सा करने लगा।

"मेरा एक दोस्त है, मेरिकन। जब हम उसके साथ यह जलता पानी पीते हैं तब मग से मग टकराते हैं। तुम्हें भी इस जलते पानी के साथ सही तरीक़े से पेश आने की आदत डालनी चाहिए–क्योंकि यह तैयार होता है गोरों के मुल्क में!.. हां, तुमने विवाह-मैत्री के बारे में जो कुछ कहा उससे मुझे बड़ी ख़ुशी हुई। एचावतो, इस वक़्त मेरे दो बीवियां हैं। जल्द ही मैं तीसरी ब्याह लाऊंगा। और सचमुच मैं सोचता हूं कि क्यों न हम विवाह-मैत्री क़ायम करके नेवतुम बन जायें?"

उन्होंने एक एक मग और चढ़ाया और फिर चिलमों का आदान-प्रदान किया।

औरतों में उत्तेजनापूर्ण बातचीत शुरू हुई। बात उनके सामने ही पक्की हो चुकी थी। अब सिर्फ़ यह देखना बाक़ी था कि अलितेत किसको चुनता है।

अलितेत ने स्वामी के स्वर में चिल्लाकर उन औरतों से कहा:

"मेरा सामान अंदर ले आओ।"

औरतों ने फ़ौरन बरफ़-गाड़ी पर से माल उतार दिया और उसे यारंग में ले आयीं। एचावतो नशे में धुत्त हो चुका था। वह तंबाकू की पत्तियों और चाय के पुड़ों के बीच रेंगता और ज़मीन पर फैली हुई हर चीज़ पर बड़े लालच से उंगलियां फेरता रहा।

"एचावतो, यह सब तुम्हारे लिए है। मैं इसे बिना गिनती किये तुम्हें दिये देता हूं। अब तुम मेरे विवाह-मित्र, नेवतुम जो बन गये हो!"

"होक! होक!" बुड्ढे ने हामी भरी। "सफ़ेद, नीली और रुपहली सभी लोमड़ियों की खालें मैं तुम्हें बेहिचक दे दूंगा। और यह सारा माल अब मेरा हो चुका।"

अलितेत ने अपने थैले में से एक नयी कोरी विंचेस्टर बंदूक़ निकाली, फिर दूसरी, तीसरी–कुल दस बंदूक़ें हुईं! बंदूक़ों का वहां ढेर लग गया।

"होक!" एचावतो ख़ुशी में चीत्कार करता गया। "होक! गर्रर! मैं तुम्हें हर बंदूक़ के पीछे अपने रेवड़ में से बीस बीस बारहसिंगे और दूंगा। मालकिनो, जाओ, जल्दी से बारहसिंगे का एक कान ले आओ। अलितेत खुद ही दिखा दे कि उसके बारहसिंगों पर कैसा निशान लगाया जाये।"

बारहसिंगे का एक पूरा सिर लेकर केइपा लड़खड़ाती हुई यारंग में चली आयी। अलितेत ने झट से बारहसिंगे के कान के सिरे पर दो छेद बना दिये।

"देखो, दोस्त, यह है मेरा निशान!" उसने चिल्लाकर कहा और फिर थैले में से दूसरी बोतल निकाली।

"आओ औरतो, अपनी प्यालियां इधर लाओ!"

"अरे, उन्हें देकर क्यों बेकार उसे ख़त्म कर रहे हो?" एचावतो बोल उठा। "लाओ, मैं आगे के लिए उसे संभाल रखूं।"

"मेरे दोस्त, तुम्हारे लिए मेरे पास और काफ़ी है!"

"होक! होक! गर्र्रं! बहुत अच्छा। फिर पी लो, औरतो, तुम भी पी लो!" नशे में धुत्त बुड्ढा रोवेंदार खालों पर हाथ पैरों के बल रेंगता हुआ चिल्ला उठा। जब नशे ने उसपर पूरा क़ाबू कर लिया तब वह गठरी सा बनकर एक कोने में ढह गया।

इधर शराब ने औरतों का सिर भी चकरा दिया। वे गाने लगीं। उनके अर्धनग्न, कांसे जैसे शरीर हाथों को मटकाते-नचाते और सिर को हिलाते हुए अपने ही संगीत के ताल पर झूमने लगे।

सोलहवां अध्याय

बरफ़ के तूदे किनारे की ओर बहते गये। हवा का रुख़ बदल गया था और अब वह समुद्र की ओर से किनारे की ओर बह रही थी। वामचो अब नहीं सो सकता था। सारी रात वह अपने छोटे टापू पर इधर उधर घूमता रहा। कुत्ते भी उसके पीछे पीछे चलते रहे। बहते हुए बरफ़ के तूदों पर वामचो नज़र गड़ाये हुए था। रात भर हवा ज़ोरों से बहती रही और सबेरे तो उसने आंधी का रूप धारण किया जिससे भारी दबाव के साथ बरफ़ किनारे की ओर बहने लगी।

"चेगित! चेगित! अरे देखो! वहां ज़मीन दिखाई दे रही है, किनारा नज़र आ रहा है!"

कुतों को गाड़ी खींचने में मदद देता हुआ वह उसके साथ दौड़ रहा था।

बरफ़ सघन होने लगी। बड़ी बड़ी चट्टानें भयंकर गड़गड़ाहट के साथ एक दूसरी से टकराकर उभड़ने लगीं। आदमी और कुत्ते धड़धड़ाने वाली बरफ़ और ख़तरनाक सागर के इस डरावने गोरख-धंधे से बचने के लिए दूर किनारे की ओर हड़बड़ाते हुए दौड़ने लगे।

मध्याह्न के समय वामचो ने बलुए तट पर क़दम रखा। वहां के परिचित दृश्य को देखते ही उसने राहत की सांस ली। आनंद से उसकी आंखें चमक उठीं।

अभी भी अपने बाल बाल छूट जाने में उसे कुछ संदेह सा हो रहा था। उसने वहां की बरफ़ खोदनी शुरू की। वह अपने को विश्वास दिलाना चाहता था कि बरफ़ की परत के नीचे ज़मीन है। अपने हाथ से मिट्टी का स्पर्श करने के लिए वह तरस रहा था।

ज़रा आगे बढ़ने पर उसे प्रकातागेन अंतरीप के परिचित प्राकृतिक दृश्य दिखाई दिये। वहां पहाड़ी की तलहटी में मनुष्यों की बस्ती थी। यहां से अच्छी कुत्ता-गाड़ी पर एक ही दिन में एनमकाई पहुंचा जा सकता था।

"देखो चेगित, अब हम घर आ गये!" खुशी से झूमते हुए वामचो ने कहा। "उधर है हमारी बस्ती, उस पहाड़ी के पीछे। अब हम आराम से चिलम का ज़ोरदार कश लगा सकते हैं।"

वामचो ने लकड़ी के लट्ठे पर बैठकर अपनी चिलम सुलगायी।

हालांकि उसके पास बहुत कम दियासलाइयां बची थीं फिर भी वह उनके साथ खेल करने लगा। डिब्बी पर घिसकर जलती सलाइयों को वह इधर उधर उड़ाने लगा। उड़ती लपटों को निहारने में वामचो बच्चे का सा मज़ा ले रहा था।

"मुझे एक सलाई बचाकर रखनी चाहिए," वामचो ने सोचा और उठकर अगली मंज़िल के लिए रवाना हुआ।

अपनी बरफ़-गाड़ी को वह बराबर दौड़ाता रहा। कुत्ते सम गति से दौड़ते रहे और यकायक हवा से बातें करने लगे। वामचो ख़ुशी से पुलकित हो उठा।

"यह ज़रूर एनमकाई है," उसने सोचा।

बरफ़ के एक विशाल टीले पर चढ़ते ही कुत्तों और बरफ़-गाड़ी की यह तेज़ उड़ान अचानक रुक गयी। बरफ़ के इस टीले के अन्दर यारंग लगभग छत तक छिपा हुआ था।

वामचो ने संकरे से गलियारे में प्रवेश किया।

"कौन है जी?" तीग्रेना का परिचित स्वर सुनाई दिया।

"मैं हूं," वामचो ने उत्तर दिया।

बुड्ढा वाल अपने बेटे को देखने की जल्दी में ठोकर खाकर गिर पड़ा और पोलोग की लटकती हुई खालों में उसी तरह उलझ गया जिस तरह जाल में मछली।

बुड्ढे का झुर्रीदार चेहरा मुस्कराहट से खिल उठा।

"वामचो, सचमुच तुम आ गये?" उसने पूछा।

वामचो रेंगकर पोलोग में चला गया और चुपचाप अपने पिता के आगे बैठ गया।

बुड्ढे ने ही पहले मौन भंग किया।

"देखो, तीग्रेना ढिबरी की देखभाल कर रही है और कुछ चरबी भी ले आयी है..."

तीग्रेना एक शब्द तक न बोली और एकटक वामचो की ओर देखती रही। उसके हाथ में ढिबरी की काई ऊपर-नीचे करने वाली एक छोटी सी छड़ी थी। वामचो ने कहा:

"देखो तीग्रेना, ढिबरी से कैसा धुआं निकल रहा है। उसे ठीक करना चाहिए।"

प्रसन्न-मुख तीग्रेना वामचो की बात पर अमल करने के लिए दौड़ पड़ी।

सत्रहवां अध्याय

वामचो के पुनरागमन पर एनमकाई बस्ती के लोगों को वैसी ही खुशी हुई जैसी उन्हें हर नये शिशु के जन्म पर होती थी।

जब तीग्रेना घर लौटी तो ओझा कोराउगे ने कहा :

"पिशाच केले पर चेगित की बलि चढ़ानी चाहिए।"

जब वाल ने यह सुना तो आह खींचकर हल्की आवाज़ में बोला :

"वामचो, हमारे कुत्ते चेगित की बलि चढ़ानी चाहिए।"

"पिताजी, मुझे उस कुत्ते पर तरस आता है," वामचो ने दुःखी होकर कहा। "मेरी जान बचाने में उसने मदद दी थी। मैं उसका खून नहीं करूंगा।"

"मेरे बेटे, मैं यह क्या सुन रहा हूं? तुम्हारे शब्द मेरे दिल पर चोट कर रहे हैं। अगर कोराउगे इन्हें सुन ले तो खतरनाक पिशाच हमेशा के लिए हमारे यारंग में डेरा डाले रहेंगे। और तुम्हें तो अभी काफ़ी लम्बी ज़िंदगी बितानी है।"

वामचो बाहर चला गया। कुत्तों के पास से जाते समय उसने मुंह फेर लिया ताकि चेगित की नज़र से नज़र न मिल जाये। "कुत्ता भी आदमी की तरह सब कुछ समझ लेता है।"

वामचो यारंग से दूर जाकर हिमाच्छादित सागर की ओर देखता रहा।

"मुझे सीधे चेगित के पास जाकर उसे अपने साथ लेना चाहिए था। आखिर इस बात को टाले भी क्यों? क्यों मैं यहां आया, और क्यों मैंने उसको टाला?.."

वामचो ने अपना छुरा निकाला और उसकी धार पर अपना हाथ फेर लिया। वह इतना तेज़ था कि उससे हजामत तक बनायी जा सकती थी।

बाहर कड़ा पाला पड़ा था लेकिन वामचो को गरम लग रहा था। उसने सिर को एक झटका दिया। फ़ौरन उसका टोप सिर से हटकर ठुड्डी के पट्टे के सहारे पीठ पर लटकने लगा। वह भारी हृदय से कुत्तों की ओर चला गया।

चेगित अपनी थूथनी को पेट के नीचे छिपाये और शरीर को गेंद सा बनाये लेटा हुआ था। वामचो के समीप आते ही उसने फ़ौरन अपना सिर उठाया, फिर झट से उठ खड़ा हुआ और जंभाई लेते तथा अपनी झब्बेदार पूंछ हिलाते हुए अंगड़ाई लेने लगा।

वामचो उसे साथ लेकर बाहर गया और चुपचाप चलता रहा। बस्ती की सीमा पर पहुंचने के बाद वह एक चौरस बरफ़ीली चट्टान पर बैठ गया। चेगित उसके पैरों के पास फैल गया। वामचो ने झटके के साथ कुत्ते का सिर पकड़ा, उसे अपने घुटनों के बीच दबाया और उसके हृदय पर छुरा तान लिया। लेकिन वामचो का धैर्य जवाब दे गया। वह कुत्ते को मार न सका। उस चमकदार छुरे को उसने घूरकर देखा और फिर झट से दूर फेंक दिया।

चेगित बरफ़ में पीठ के बल लेट गया और अपने चारों पंजों को हवा में नचाता रहा।

वामचो का चेहरा स्याह और सख़्त पड़ गया। "मैं बिलकुल भेड़िया हूं! नहीं, मैं भेड़िया नहीं हूं, क्योंकि यह सब कुछ मैं मजबूरी से कोराउगे के हुक्म से कर रहा हूं। इसमें शक नहीं कि वह चेगित को इसलिए मरवाना चाहता है कि मैंने उसे अलितेत के हवाले नहीं कर दिया। कट्टम मेरकिचकिन* !" उसने एक गाली दे डाली। "लेकिन नहीं, मैं भेड़िये से भी बदतर हूं। बारहसिंगा कभी भेड़ियों का दोस्त नहीं बन सकता, पर चेगित मेरा दोस्त है!.."

---

* चुकची गाली।

वामचो उठ खड़ा हुआ।

"चलो चेगित, हम वहां चलें! उस छोटे से टीले के पीछे।"

वामचो बीमार की तरह चल रहा था। बरफ़ में उसके पैर ठोकरें खा रहे थे।

उसने अपने पीछे पीछे आने वाले चेगित पर चोरी चोरी एक नज़र दौड़ायी और उसे ऐसा लगा कि चेगित उसका मक़सद ताड़ गया है।

"ऐ!" तीव्र वेदना के स्वर में वामचो चिल्लाया। उसको ऐसा महसूस हुआ कि उसका दिल टूटा जा रहा है।

चेगित ने सिर उठाकर प्यार भरी नज़र से अपने मालिक की ओर देखा।

वामचो को यकायक ऐसा लगा कि वह इस नज़र को सह न सकेगा। वह एक ओर हट गया और कुछ देर पत्थर की तरह खड़ा रहा। फिर वह घूम गया, चेगित की थूथनी पकड़ ली और पलक झपते न झपते उसका छुरा मूंठ तक उस कुत्ते के शरीर में घुस गया।

वामचो ने छुरे को बाहर निकालना चाहा लेकिन उसके हाथों को लकवा सा मार गया, मानो देर तक भारी डांड़ चलाने का काम करता रहा हो। एक बड़ा आंसू उसके गाल पर से लुढ़ककर उसकी ठोड़ी पर जम गया।

वामचो ने मरे हुए कुत्ते का सिर अपने दोनों हाथों में उठा लिया और उसपर अपना मुंह दबाया। कुत्ते के जमे हुए खून में अपनी उंगली डुबोकर वामचो ने अपने ललाट पर उससे एक रेखा खींच ली।

"पिशाचों को संतोष हो!" उसने सोचा।

वामचो ने कुत्ते का पिछला पंजा पकड़ लिया और रोवेंदार पीठ के बल उसे ज़मीन पर से घसीटता गया, जैसा परंपरा के अनुसार आवश्यक था।

यकायक वह रुक गया।

"मैं उसे इस तरह नहीं घसीटूंगा। मैं जैसा चाहूं उसे ले जाऊंगा। भाड़ में जाये रस्म-रिवाज।"

चेगित के शरीर को उसने अपनी पीठ पर रख लिया और आगे वाले पंजों के सहारे पकड़कर उसे यारंग में ले गया। ऐसा लग रहा था कि वह कुत्ता पीछे से उसका आलिंगन कर रहा है। चेगित का सिर दाहिने-बायें झूम रहा था।

इस तरह चलते चलते रास्ते में आख़िर उसकी भेंट हुई भी किससे? ओझा कोराउगे से! वामचो चुपचाप उसके पीछे से चला गया।

"बेशरम कहीं का! हमेशा अपने ही तरीक़े से काम करना चाहता है! आख़िर कुत्ते को पीठ पर क्यों लादे जा रहा है?!" ओझा ने ग़ुस्से में सोचा।

वामचो ने चेगित के शरीर को यारंग के बाहर पूरब की ओर सिर किये रखा जहां से सूरज निकलता है।

अठारहवां अध्याय

बरफ़ की चट्टानों के बीच बंदूक़ की गोलियों की आवाज़ गूंज उठी। हर गोली की आवाज़ शिकारियों को अधिकाधिक ख़ुश कर रही थी। जितनी गोलियां ज़्यादा छूटेंगी उतना ही ज़्यादा मांस मिलेगा।

हिम-क्षेत्रों के बीच वाले सभी जलाशयों के किनारे एनमकाई बस्ती के शिकारी बैठे हुए थे।

सिर में गोली लगकर मरे हुए दो सील वामचो के पास पड़े थे। वे ख़ून से लथपथ थे। दिन के शिकार से ख़ुश होकर वामचो एक हिमखंड पर बैठा हुआ अपनी चिलम खटखटा रहा था। वह चिलम

पीना चाहता था लेकिन जब तंबाकू का डिब्बा निकालकर देखा तो वह ख़ाली था। कुछ देर चिलम को अपने दांतों के बीच दबाये रखने के बाद उसने बड़े खेद के साथ उसे अपने परके के नीचे रख दिया।

अपने पड़ोसी से तंबाकू मांगने के लिए वामचो टूटे हुए शिलाखंड पर चढ़ गया। उसे पानी के किनारे बैठी हुई तीग्रेना दिखाई दी। उसके पास तीन सीलों की लाशें पड़ी हुई थीं।

"काकोमेई, तीग्रेना!" वामचो ख़ुशी से चिल्लाया। "तीन सील! ओहो, तुम तो वाक़ई बड़ी शिकारी हो!"

"चौथा निशाना मैं चूक गयी," कुछ शरमाते हुए तीग्रेना ने कहा।

जमकर सख़्त बने एक सील पर वामचो बैठ गया।

"हां, यह रही तंबाकू," तीग्रेना ने मुस्कराते हुए कहा और बारहसिंगे की खाल वाली एक बटुइया उसे पकड़ा दी। दोनों ने चिलमें सुलगायीं।

"वामचो, आज का दिन बड़ा अच्छा है।"

"हां, वाक़ई अच्छा है। लेकिन अब तो घर लौटने का समय हो गया। मैं एक और सील मारना चाहता था, पर देखता हूं कि तुम्हारे शिकार को घर ले जाने में मुझे मदद करनी होगी।"

"वामचो, कितने अच्छे हो तुम! मैं तुम्हारी बीवी बनना पसंद करूंगी।"

वामचो व्यग्र हो उठा और बातचीत का रुख़ बदलने की गरज़ से कहने लगा:

"कोराउगे ने कहा था कि सील मुझसे नफ़रत करते हैं, उनकी आंखें मेरी आंखों से मिलना नहीं चाहतीं! लेकिन दो सीलों ने मेरी ओर देख ही लिया और अब वे मेरी बंदूक़ के पास पड़े हुए हैं।"

"कोराउगे बड़ा दुष्ट है," तीग्रेना ने तिरस्कारपूर्वक कहा। "वह कभी सच नहीं बोलता। झूठे आदमी की बात सुनना गरम पानी पीने के बराबर है। अरे, सीलों की तो बात ही क्या, मैं भी तुम्हारी ओर देखना चाहती हूं," मुस्कराते हुए उसने आगे कहा।

ज़रा रुककर तीग्रेना ने धीरे से कहा:

"कोराउगे बराबर कहता रहा कि पिशाचों को वाल का यारंग पसन्द नहीं है। इसी से इलिनेउत ठिठुर ठिठुरकर मर गयी और वामचो समुंदर की ओर घसिटता गया। उसने यह भी कहा कि वाल को हमारी बस्ती से विदा होना चाहिए।"

"और मैं कहां घसिटता गया?" वामचो ने ख़ुशी से चिल्लाकर कहा। "लेकिन मुझे दुःख होता है अपने कुत्ते के लिए। मैं अक्सर चेगित को सपनों में देखता हूं। वह अपनी दुम हिलाता है, पैरों को आगे पीछे करता है और आंखों ही आंखों में मेरे साथ बातें करता है। चेगित को बचाने के लिए मेरी एक आंख फूट जाती तो भी मुझे बुरा न लगता। एक आंख के होते हुए भी आदमी शिकार ज़रूर कर सकता है।"

चिलम पीने के बाद दोनों घर जाने के लिए उठ खड़े हुए।

वे सीलों को बरफ़ पर से घसीटते ले गये। वामचो तीन सीलों को खींच रहा था और तीग्रेना दो को। देर तक दोनों चुपचाप चलते रहे। वामचो का सिर हिम-कणों तथा वाष्प से आवृत था।

जब यारंग दिखाई देने लगे तो दोनों शिकारी कुछ विश्राम के लिए सीलों पर बैठ गये।

"वामचो, वे देखो यारंग," तीग्रेना ने कहा। "मेरे पैर मुझे वहीं ले जाने से इन्कार कर रहे हैं।"

"क्यों री, अलितेत बुरा आदमी है?"

तीग्रेना ने सिर हिलाकर मौन ही मौन उत्तर दिया।

"मेरे पिताजी ने कहा था कि अलितेत बड़ा चालबाज़ और लालची है। वह दूसरे शिकारियों के फंदों में से लोमड़ियों की चोरी करता है। और मेरा मन गवाही दे रहा है कि वह दुष्ट है। जब कभी मैं उसे देखता हूं, उससे दूर हटने की कोशिश करता हूं।"

"तुम्हारा मन और मेरा मन एक सा है; ठीक उसी तरह जिस तरह दो सील एक दूसरे के समान होते हैं। पहले मैं कभी न जानती थी कि झूठे लोग कैसे होते हैं और अब देखो, मैं ख़ुद ही झूठी बनती जा रही हूं। वामचो, मेरा एक सील तुम ले लो और मैं कह दूंगी कि मैंने दो ही का शिकार किया।"

"अगर औरतें मेरे लिए सील मारने लगीं तो मैं कैसा शिकारी रहा? नहीं, मैं तुम्हारा सील नहीं ले सकता। अलावा इसके, कोराउगे ज़रूर झूठ का पता लगा लेगा और यह तुम्हारे लिए बुरा होगा।"

"कुछ परवाह नहीं। शायद किसी दिन मेरा सिर फिर जायेगा और मैं कोराउगे का गला घोंट दूंगी। और वामचो, तुम गोली चलाकर अलितेत का काम तमाम कर दो। तुम फंदों के पास उसके घात में बैठे रहो। एक रुपहली लोमड़ी पकड़कर अपने फंदे में रख दो। अलितेत ज़रूर उसे चुराने आयेगा। फिर क्या, चला दो गोली।"

वामचो का चेहरा फीका पड़ गया। इससे पहले उसने ऐसे शब्द कभी न सुने थे।

"तीग्रेना, मैं तुमसे डरता हूं।"

"डरो मत, वामचो। हमारी बातें किसी को भी नहीं सुनाई देंगी। इस समय किनारे से हवा बह रही है। हम सिर्फ़ बरफ़ीले मैदानों में जाकर बातचीत करेंगे। हमारे विचार किसी को मालूम नहीं होने चाहिए। वाल रहमदिल आदमी है, लेकिन उसे भी मत बताना। वह उस ओझा से डर जायेगा।"

"मैं किसी से नहीं कहूंगा। बात मेरे पास ही रहेगी।"

"अलितेत चोर है। जो कुछ भी हाथ आये, वह हड़प लेता। जिस तरह वह दूसरे शिकारियों के फंदों में से लोमड़ियां उठा ले जाता है उसी तरह मुझे भी उठा ले आया। उसने आये को अकेला छोड़ दिया। नारगिनाउत ने मुझे बता दिया कि अपने गंदे बदन से एक बीमारी को हटाने के लिए उसने अपने बेटे-बेटी तक को मरवा डाला। उसके यारंग में मैं सच्ची औरत कभी न बन सकूंगी।"

तीग्रेना चुप रही और फिर आह भरकर बोली:

"वामचो, मैं अक्सर सोचा करती हूं कि सिर्फ़ आदमी ही क्यों नेवतुम चुनें? औरतें भी ऐसा क्यों न करें?"

"क्योंकि क़ानून ही ऐसा है।"

"हां, क़ानून ऐसा है," आह भरकर तीग्रेना ने कहा। फिर कुछ रुककर वह बोली: "मैं चाहती हूं कि मेरे बच्चे का बाप सच्चा आदमी हो। जवान, ताक़तवर, फुरतीला और रहमदिल।"

वामचो ने चुपचाप अपनी चिलम का एक कश लगाया।

"मैं तुम्हें अपना नेवतुम चुन लूंगी," तीग्रेना ने कहा।

वामचो ने व्यग्रता में मुंह फेर लिया और धुएं का एक बादल सा छोड़ दिया। तीग्रेना हंस उठी।

"वामचो तुम ऐसे क्यों हो?—बिलकुल सील की तरह डरपोक?"

"शायद इसलिए कि मैं ग़रीब हूं।"

कुछ देर दोनों स्तब्ध रहे। फिर तीग्रेना ने कोमल स्वर में कहा:

"वामचो, मैं सच्ची औरत बनना चाहती हूं, मां बनना चाहती हूं! और चाहती हूं कि तुम मेरे बच्चे के बाप बनो।"

तीग्रेना जो घर लौटी तो उसे अलितेत की आवाज़ सुनाई दी। वह ज़ोर ज़ोर से किसी से बात कर रहा था।

"शायद कोई रेमकीलेन * आया है," तीग्रेना ने अपने आप से कहा।

अतिथि का आगमन तीग्रेना के लिए बचपन से ही आनन्द का अवसर रहा करता था पर इस समय वह बिलकुल लापरवाह थी। यहां तक कि वह पोलोग में जाना भी नहीं चाहती थी।

विशाल हिम-क्षेत्रों से घर वापस आते समय वह कितनी प्रसन्न और उत्साही थी। शिकार की सफलता से वह बड़ी ख़ुशी में थी। लेकिन घर पहुंचते ही उसका उत्साह और आनन्द यकायक समाप्त हो गया। वह चिलम पीना चाहती थी लेकिन उसकी तंबाकू की बटुइया थी वामचो के पास। छोटे से गलियारे में से वह चुपचाप बाहर खिसक गयी और वाल के यारंग की ओर दौड़ी।

वहां उसने देखा कि लगभग सारी बस्ती के शिकारी इकट्ठे हुए हैं। वे चाय पी रहे थे जबकि बुड्ढा वाल खालों की खटिया पर आराम से बैठे बैठे कहानियां सुना रहा था। यहां जीवन कैसा अच्छा था! तीग्रेना बैठ गयी और चिलम पीने लगी।

शिकारी चाय पी चुके। उन्होंने वाल से प्रार्थना की कि वह दूसरी कहानी सुनाये।

"अच्छा, मेरे लिए चिलम तो भरो!" बुड्ढे ने कहा।

सभी शिकारियों ने एक साथ अपनी चिलमें उसकी ओर बढ़ायीं।

"अरे, इतनी चिलमें लेकर क्या करूं?" वाल ने मुस्कराते हुए कहा। "बस, एक काफ़ी है।"

अपनी चिलम से धीरे धीरे धुआं उड़ाते हुए उसने कहना शुरू किया:

"अब मैं जीवन के आरंभ और जनम के बारे में एक कहानी सुनाऊंगा... एक समय था जब सारा संसार अंधेरे में था। रात के

---

* मेहमान।

किनारे पर, जहां सूरज निकलता है, संसार का सिरजनहार बैठा हुआ सोच रहा था कि प्रकाश कैसे पैदा किया जाये? बहुत सोच-विचार के बाद उसने एक कौआ पैदा किया और उससे कहा:

"'जाओ, और ऊषा को अन्दर लाने के लिए अपनी चोंच से एक सूराख़ बना लो।'

"कौआ पूरब की ओर उड़ गया और वहां अपनी चोंच से सूराख़ बनाने लगा। फिर वह निर्माता के पास लौट आया और बोला: 'मैं सूराख़ नहीं बना सकता।'

"निर्माता क्रोधित हुआ। कौए को पकड़कर उसने दूर फेंक दिया।

"'तुम किसी काम के नहीं, तुम्हें काम से प्यार नहीं है। हट जाओ यहां से। मैं तुम्हें नहीं खिलाऊंगा। अपना खाना तुम ख़ुद ही ढूंढ़ लो!'

"फिर विधाता ने एक छोटी सी चिड़िया बनायी। चिड़िया पूरब को उड़ गयी और अपनी नन्ही सी चोंच से छेद बनाने लगी। वह इतनी देर अपनी चोंच को पटकती रही कि आख़िर उसकी चोंच फट गयी। लेकिन उसने एक छोटा सा छेद बना ही लिया। फिर वह लौट आयी विधाता के पास।

"'कहो, क्या किया तुमने?'

"'मैंने एक छोटा सा छेद बना लिया।'

"'तो फिर जाओ और बड़ा छेद बनाओ।'

"नन्हीं सी चिड़िया फिर उड़ गयी और फिर से चोंच पटकने लगी। उसकी चोंच पूरी तरह छिन्न-भिन्न हो गयी, शरीर सूख गया और पर झड़ गये। लेकिन वह बड़ा सूराख़ बनाकर ही रही। उसमें से ऊषा ने प्रवेश किया और दुनिया रोशन हो उठी। नन्हीं चिड़िया पैदल ही विधाता के पास लौट आयी क्योंकि अब वह उड़ नहीं सकती थी। रास्ते में बेचारी को कुछ खाना भी नहीं मिला। उसका शरीर

ग्रौर भी सूख गया, हड्डियां बहुत ही पतली हो गयीं ग्रौर नन्हीं सी चिड़िया ग्रौर नन्हीं दिखाई देने लगी। लेकिन विधाता के पास लौटकर ही उसने सांस ली।

"'सिरजनहार, मैंने सूराख़ बना लिया। ग्रब दुनिया में रोशनी हो गयी,' चिड़िया ने कहा।

"'वाह! वाह!' विधाता ने बहुत ख़ुश होकर कहा।

"उसने चिड़िया के नये पर लगाये, बची-खुची चोंच तेज़ बनायी ग्रौर एक टीले के नीचे उसे एक घोंसला देकर कहा:

"'जियो ग्रौर वंशवृद्धि करो!'"

तीग्रेना ने वामचो की ग्रोर देखा। वह भी उसकी ग्रोर देखकर मुस्कराया।

"इसके बाद विधाता ने धरती पर से सीलों की हड्डियां इकट्ठा कीं ग्रौर कहा: 'तुम ग्रादमी बन जाग्रो!'" वाल ने कहानी ग्रागे बढ़ायी। "फिर विधाता ने एक सफ़ेद मुर्ग़ पैदा किया ग्रौर उसे दुनिया में यह देखने के लिए भेज दिया कि लोग किस तरह जीवन बिता रहे हैं। मुर्ग़ कुछ देर नीचे की ग्रोर उड़ता गया ग्रौर फिर वापस ग्राकर विधाता से बोला:

"'ग्रोह! दुनिया बहुत ही दूर है, बड़ी बुरी बात है। मैं वहां नहीं पहुंच सका।'

"विधाता ने उसकी पूंछ पकड़कर उसे सरई के जंगल में फेंक दिया।

"'तुम टुंड्रा में रहो। मैं तुम्हें खाना नहीं दूंगा। ग्रपना खाना ग्राप ही ढूंढ़ लो।'

"ग्रब दुनिया का हाल जानने के लिए किसको भेजें?

"सोच विचारकर विधाता ने उल्लू पैदा किया।

"उल्लू वहां से चल दिया ग्रौर दुनिया में पहुंच गया। उसकी

ग्रांखें काफ़ी बड़ी थीं जिनसे वह दूर दूर की चीज़ें देख सकता था। उसे चार इन्सान दिखाई दिये। दो पुरुष और दो स्त्रियां। वे धरती पर खड़े थे और नीचे बैठने से डर रहे थे। उल्लू वापस नहीं आया।

"'मैं कैसे संसार का समाचार पाऊं?' विधाता ने सोचा।

"फिर उसने लोमड़ी बनायी और उससे कहा :

"'जाओ!'

"लोमड़ी रवाना तो हुई लेकिन वह धरती तक नहीं गयी। बीच ही से लौट आयी और विधाता से झूठमूठ कह दिया :

"'उधर न धरती है और न इन्सान ही! ऊंह, इन्सान! वहां कुछ भी नहीं, सब ख़ाली ही ख़ाली है।'

"विधाता ने उसे पकड़कर एक ओर फेंक दिया।

"'तुम किसी काम की नहीं। झूठी कहीं की! मैं जानता हूं कि वहां इन्सान हैं। जाओ, तुम भी टुंड्रा में चली जाओ और मुझे अपना काला मुंह कभी न दिखाओ। अगर तुम फिर मेरे सामने आयी तो मैं तुम्हारी खाल उधेड़ दूंगा!'

"विधाता ने कई जानवरों को धरती की ओर भेजा। इनमें सफ़ेद लोमड़ी और भेड़िया भी था।

"'निकम्मे कहीं के! अरे, तुममें से कोई भी संसार का समाचार नहीं ला सका।'

"आख़िर विधाता स्वयं ही संसार की सैर करने निकला। उसे एक आदमी मिला, उसने आदमी के कंधे पर हाथ रखकर उसे नीचे बिठाया। फिर उसने एक औरत को उस आदमी के पास बिठाया।

"फिर इन लोगों ने बच्चे पैदा करना शुरू किया और आगे चलकर वहां एक जनजाति बन गयी।

"सरपत से विधाता ने बारहसिंगे, वालरस और सील उत्पन्न किये और कहा :

"'यह है तुम्हारा भोजन। इन्हें मारो और ज़िन्दगी बिताओ।'"
वाल ने गला साफ़ कर लिया और कहा:
"यह है ज़िन्दगी की कहानी!"

उन्नीसवां अध्याय

तीग्रेना जब कभी बुड्ढे वाल के यारंग से वापस जाती, तो उसके मन में दुःखपूर्ण विचारों का जमघट लग जाता।

वहां एकत्र लोग सच्चे तथा सहृदय आदमी थे, तीग्रेना को वहां अपनत्व का अनुभव होता था और वह कुछ देर के लिए अलितेत के यारंग के तिरस्कारपूर्ण तथा कष्टमय जीवन को भूल जाती थी। कभी कभी भद्दे विचार भी उसे सताने लगते। कई बार उसने आत्महत्या करने की सोची। आये बहुत दूर था और निश्चय ही ब्याह कर चुका था क्योंकि पहाड़ियों में भी तो लड़कियां थीं ही। अब अकेला वामचो ही था जिससे वह हिम-क्षेत्रों में मिला करती और वह उसके उदास विचारों को दूर करने में मदद देता।

अब की बार भी जब वह वापस अपने यारंग जाने लगी तो फिर उसपर उदासी छा गयी। भारी हृदय से उसने पोलोग में प्रवेश किया और देखा कि बुड्ढा बारहसिंगा-पालक एचावतो वहां बैठा है। वाल के यारंग में इकट्ठा हुए लोगों ने उसकी चर्चा की ही थी।

"ओहो, तीग्रेना! तुम आ गयीं?" बुड्ढे ने पिचकी हुई आवाज़ में अभिवादन किया।

"हां, मैं आ गयीं," तीग्रेना ने उपेक्षा भाव से कह दिया और अपने रोवेंदार कपड़े उतारने लगी।

फिर वह ढिबरी के पास बैठ गयी और चाय के बड़े बड़े घूंट गटकने लगी।

बुड्ढा एचावतो, जो अलितेत का नया विवाह-मित्र बन गया था, अपने नेवतुम और ओझा कोराउगे के साथ बातचीत करता हुआ बैठा था। अलितेत यहां भी, धनी बारहसिंगा-पालक के साथ मैत्री पर मुहर लगाने के लिए जलता पानी पीता जा रहा था।

व्यापारिक सफलता के कारण अभिमान से फूला हुआ अलितेत इस समय बड़ा ख़ुश था। उस दमघोट यारंग के निवासी अन्य पुरुषों की तरह वह भी खालों की बैठक पर लगभग नंगधड़ंग बैठा था। हां, उसके घुटनों पर बारहसिंगे की एक छोटी सी खाल पड़ी हुई थी।

तीनों आदमी नशे में धुत्त थे और बारहसिंगों, रोवेंदार खालों और समुद्री जीवों के चमड़ों के बारे में बातचीत कर रहे थे।

"अलितेत, तुम्हारा रेवड़ साल-ब-साल बढ़ता जायेगा। जब बछड़े पैदा होने का मौसम आयेगा तब तुम्हारा रेवड़ दुगुना हो जायेगा," एचावतो ने कहा।

"अगली गर्मियों में मैं वालरस के चमड़े के काफ़ी तस्मे काट लूंगा, लख़्ताकों* और सीलों की खालों का बड़ा ज़ख़ीरा इकट्ठा कर लूंगा और फिर ढेरों बारहसिंगे ख़रीदूंगा," अलितेत ने अपने चिरवांछित स्वप्नों को शब्दों में प्रकट किया।

"बिलकुल सही है, अलितेत! बारहसिंगा-पालक ख़ानाबदोशों के लिए ये चीज़ें बहुत ज़रूरी हैं। तुम्हें लख़्ताक की हर खाल के लिए दो दो और वालरस चमड़े के तस्मे की हर गेंडुली के लिए एक एक बारहसिंगा मिलेगा।"

"अपने दोस्त चार्ली के व्यापारी यारंग में से ज्यादा चाय और काफ़ी लोहे की चीज़ें ले लूंगा और इन सब का उपयोग करूंगा और बारहसिंगे ख़रीदने के लिए। चार्ली ने मुझसे कहा था कि बारहसिंगे

---

*बड़ा सील।

महंगे नहीं होते, यहीं वे पैदा होते हैं और पाले-पोसे जाते हैं और चुकोत्स्क में तो उनकी तादाद काफ़ी बड़ी है, जबकि लोहे की चीज़ें, चाय और तंबाकू यहां नहीं पैदा होतीं। लोहे की हर चीज़ की यहां काफ़ी क़ीमत है। लोहे के एक बर्तन की क़ीमत है एक बारहसिंगा और हर छुरे और चाय की ईंट के बदले में भी एक एक बारहसिंगा मिलता है। लोहे की सूइयां भी यहां नहीं बनतीं और उनकी क़ीमत भी काफ़ी है। हमारी औरतें अब हड्डी की सूइयों का उपयोग करना भूल गयी हैं। सचमुच एचावतो, इन दिनों लोहे की चीज़ों के बिना आदमी का जीना दूभर है। तांग लोगों की चीज़ें लाकर मैं ख़ानाबदोशों की मदद करूंगा और तुम मुझे मदद दो मेरा रेवड़ बढ़ाने में।"

"अलितेत, तुम मेरे दोस्त हो। मैं हमेशा ही बारहसिंगा-पालकों से कहता आया हूं कि अलितेत हम पहाड़ी लोगों की बड़ी सेवा कर रहा है। तुम ख़ुद पहाड़ियों में चले आते हो और साथ में माल ले आते हो। पहाड़ी लोगों की ज़िन्दगी तुम सचमुच आसान बना रहे हो," एचावतो ने चापलूसी करते हुए कहा।

अब तक मौन बैठा हुआ ओझा कोराउगे यकायक बोल उठा:

"मेरे पिताजी के पास बारहसिंगों के बड़े बड़े रेवड़ थे। लेकिन कुछ पिशाचों को प्रसन्न रखना वह भूल गये और पिशाचों ने रेवड़ों में एक रोग फैला दिया जिससे बारहसिंगों का सफ़ाया हो गया। उसके बाद हम तट की ओर चले गये और वहां चूहाख़ोरों के साथ रहने लगे। उन दिनों मैं एक छोटा सा लड़का था।"

"कोराउगे सच कह रहा है," एचावतो बोला।

"जी हां, यह एक बड़ी सच्चाई है। मेरे पिताजी कई रेवड़ों के मालिक थे लेकिन बाद में वह एक दरिद्र आदमी, जल जंतुओं के शिकारी भर रह गये और यहीं, इसी किनारे उन्होंने आख़िरी सांस ली। अब मैंने फिर उन पिशाचों से दोस्ती कर ली और वे मेरा कहना

मानते हैं। अलितेत, मैं मरने से पहले तुम्हें बड़े रेवड़ का मालिक बनाने में मदद दूंगा। और जब मैं वहां के लिए प्रस्थान करूंगा," कोराउगे ने आकाश की ओर संकेत करते हुए कहा, "तब तुम्हारे दादा से कह दूंगा कि आपके रेवड़ हमें फिर मिल गये।"

एचावतो के मुरझाये हुए चेहरे पर पसीने की बूंदें झलक आयीं। उसकी लम्बी दाढ़ी नम हो गयी। अपने माथे का पसीना पोंछते हुए उसने चापलूसी के स्वर में कहा:

"अलितेत, मेरे आदमी तुम्हारे रेवड़ की अच्छी देखभाल कर रहे हैं। तुम्हारा एक भी बारहसिंगा रेवड़ से ग़ायब नहीं होगा और न ही किसी भेड़िये का शिकार होगा।"

"एचावतो," नशे में मतवाला होकर अलितेत बोला, बीवी के ज़रिये तुम मेरे सब से प्यारे दोस्त हो। मेरी पहली बीवी अब बुड्ढे सील जैसी हो गयी है। उसके बदन में अब चरबी जैसे रही ही नहीं और उसकी चमड़ी लटकने सी लगी है... लेकिन मेरी दूसरी बीवी..."

होठों ही होठों में हंसकर अलितेत ने कहा:

"उसकी जैसी औरत तुमने कभी देखी भी न होगी।"

तीग्रेना ने चौंककर ऊपर देखा और उनकी बातचीत अधिक ध्यानपूर्वक सुनने लगी। उसका शरीर कुछ कांप उठा।

उसने कनखियों में से एचावतो की ओर देखा और यकायक उसके दिल ने चाहा कि फ़ौरन यारंग छोड़कर भाग जाये।

और जब अलितेत ने कहा कि उस रात को एचावतो उसकी जगह लेगा तब तीग्रेना का चेहरा फीका पड़ गया और उसने क्रोध में फुसफुसाकर कहा:

"मैं नहीं मानूंगी!"

इस अनपेक्षित उद्गार से अलितेत की घिग्घी सी बंध गयी।

उसके यारंग में अभी तक किसी ने जमात का रिवाज नहीं तोड़ा था। एचावतो कुत्सापूर्वक हंसा। अलितेत का क्रोध तो इस हद तक पहुंच गया कि वह बिना कुछ सोचे-विचारे झटपट कपड़े पहनकर फ़ौरन यारंग के बाहर गया।

बुड्ढे और चालाक भेड़िये की तरह रेंगकर एचावतो तीग्रेना के पास पहुंचा।

"जवान जानवर हमेशा ही डरता और गुर्राता है। लेकिन जब उसे आदत पड़ती है तब हमारे ही हाथ से खाने लगता है।"

एचावतो और आगे सरक गया और उसने अपना अस्थि-पंजर हाथ तीग्रेना के कंधे पर रख दिया।

तीग्रेना ने ज़ोरों के साथ उसे दूर ढकेल दिया और बुड्ढा खालों के ढेर पर से लुढ़कता-पुढ़कता एक कोने में जा गिरा।

इसी क्षण अलितेत अन्दर आ पहुंचा। तिरस्कार से दांत पीसते हुए एचावतो बुदबुदाया :

"अरे! यह पिल्ली तो काटती है! जिस तरह रेवड़ की जवान अनसाधी हिरनी अपने को बंधन में फंसने नहीं देती उसी तरह वह कर रही है।"

अलितेत चुपचाप तीग्रेना के पास चला और उसे एक लात जमा दी। तीग्रेना की आंखें घृणा से धधक उठीं। फंदे में फंसे जानवर की तरह उसने दांत भींचे और आंखों से आग उगलती हुई एक कोने में सरक गयी।

बीसवां अध्याय

उस रात को तीग्रेना की पलक से पलक न लगी। वह लेटी लेटी अपने बचपन के बारे में और उन खेलों के बारे में सोचती रही जो वह यानराकेनोत में खेला करती थी। उसे अपने पिता की और

बेचारे मंगेतर आये की याद आयी। वामचो का भी स्मरण उसे हुआ। हिरन की खाल में मुंह छिपाकर वह सिसकती रही। उसके यौवन काल में ये पहले ही आंसू थे।

नशे में धुत्त आदमी बेखबर सोये हुए थे। पोलोग में काफ़ी गरमी थी और दम घुटा सा जा रहा था। बिना ढिबरी जलाये तीग्रेना ने अपने तोरबाज़ और रोवेंदार कपड़े अंधेरे ही में ढूंढ़ लिये और चुपचाप गलियारे में खिसक गयी।

ठंढी हवा ने उसे उत्साह प्रदान किया और वह जल्दी जल्दी सफ़री कपड़े पहनने लगी।

यकायक उसे याद आया कि वह अपना छुरा अंदर ही छोड़ आयी है। उसे लाने के लिए वह फिर से रेंगकर अंदर गयी।

तीग्रेना ने भाग जाने का, यानराकेनोत में अपने पिता के पास लौट जाने का निश्चय किया था। पहाड़ियों के नीचे वह तेज़ दौड़ती गयी और इधर उधर बिल्कुल न देखती, हवा से बातें करती हुई दौड़ती ही रही। गरमी से हांफती हुई वह पास वाली एक पहाड़ी तक पहुंचकर रुक गयी। रात का आख़िरी प्रहर था। चांद आसमान के छप्पर से लुढ़ककर नीचे बरफ़ीली चट्टानों पर गिरा हुआ सा दिखाई दे रहा था। काले काले डरावने बादल आसमान में रेंगते जा रहे थे। चांद को नारंगी रंग के एक वलय ने घेर लिया। बरफ़ीले तूफ़ान के आगमन की यह पूर्वसूचना थी।

वृषभ राशि का चंद्र था और 'सुन्न थन'* का चंद्र आ रहा था। तीग्रेना ने इर्दगिर्द देखकर सोचा: "अब ज़ोरदार बरफ़ीला तूफ़ान आयेगा... लेकिन मैं वापस नहीं जाऊंगी, कभी न जाऊंगी!.." तीग्रेना ने फिर दौड़ना शुरू किया। बीच बीच में वह विश्राम के लिए

---

*चुकचियों के अनुसार एक राशि का नाम।

रुक जाती। अब तक उसने काफ़ी रास्ता तय कर लिया था। तीग्रेना जहां तक पहुंची थी वहां से दिन के प्रकाश में भी वह पहाड़ी दिखाई न देती जिसपर एनमकाई बस्ती बसी हुई थी। लेकिन बड़े अचम्भे की बात थी कि उसके पैरों को ज़रा भी थकान नहीं मालूम हो रही थी। उसका हृदय ज़ोरों से धड़क रहा था। लेकिन इस तेज़ धड़कन का कारण था उसका आनंद, न कि दौड़ने का श्रम। समुद्र के किनारे किनारे वह देर तक दौड़ती रही लेकिन अनजाने उसने धीरे धीरे टुंड्रा में प्रवेश किया। यकायक तीग्रेना के ध्यान में आया कि परिचित भूमि-चिन्ह अदृश्य हो गये हैं। वह रास्ता भूल गयी थी और उसे मालूम नहीं हो रहा था कि किनारे से कितनी दूर वह भटक गयी है। झट से सागर की दिशा में मुड़कर वह फिर से दौड़ने लगी। सरपत के झुरमुट में से एक ख़रगोश तीर सा बाहर आया। उसके अनपेक्षित दर्शन से तीग्रेना चौंक उठी। लेकिन ख़रगोश सीधे उसके मार्ग में आ खड़ा हुआ, उसने तीग्रेना की ओर देखा और फिर बिजली की तरह भाग गया।

"ठहरो नन्हे ख़रगोश, ज़रा मेरे लिए ठहरो!" तीग्रेना ज़ोर से चिल्लायी। "चलो, हम दोनों साथ साथ दौड़ें।"

तीग्रेना चिल्लायी थी अपने भय को भगाने के लिए। निर्जन बरफ़ीले मैदान में उसकी अपनी आवाज़ ने उसे धीरज बंधाया।

ख़रगोश ग़ायब हो चुका था। अपरिचित बरफ़ीले मैदान में अपने को अकेली पाकर तीग्रेना के हृदय में घबड़ाहट सी होने लगी।

तीग्रेना ने एक पहाड़ी की ढाल पर चढ़कर आसपास के प्रदेश पर नज़र दौड़ायी। दूर दूर तक पहाड़ों की अनंत पंक्तियां उसे दिखाई दीं। तीग्रेना ने बड़ी उत्सुकता के साथ उन अस्पष्ट पर्वतमालाओं का निरीक्षण किया और यकायक ख़ुशी से चिल्ला उठी:

"अरे, यह तो 'वालरस सिर' पहाड़ है! मेरे बचपन की बात है। मेरे पिता कामेनवात बारहसिंगा-पालकों से मिलने जाते समय मुझे साथ ले गये थे और उस समय उन्होंने मुझे इस पहाड़ के बारे में कहानियां सुनायी थीं।"

देखे गये दृश्य से उत्साहित होकर तीग्रेना बड़े विश्वास के साथ पहाड़ी की पथरीली ढाल पर से सागर की ओर दौड़ी। यकायक उसे स्मरण हो आया कि अपनी चिलम और तंबाकू साथ में लेना वह भूल ही गयी थी। यह विस्मरण बरफ़ीले तूफ़ान से भी बुरा था। इस बीच बरफ़ीला तूफ़ान हहराने लगा था। झंझा के ज़ोरदार झोंके ज़मीन से सटकर चल रहे थे। आसमान स्याह हो गया था और तारे छिपे गये थे।

"बरफ़ीले तूफ़ान में चलना ठीक नहीं," बुड्ढे शिकारियों द्वारा सुनायी गयीं कहानियों को याद करके तीग्रेना ने सोचा। "भला इसी में है कि बैठकर तूफ़ान के ख़त्म होने की राह देखी जाये। तूफ़ान उसके लिए ख़तरनाक नहीं होता जो उससे डरता नहीं।"

तीग्रेना को एक ऐसी जगह दिखाई दी जहां वह तूफ़ान से बचकर बैठ सकती थी। अपनी मांदनुमा पनाहगाह में वह बैठ ही रही थी कि प्रचंड वायु ने बरफ़ के टुकड़ों का एक बगूला खड़ा कर दिया। तूफ़ान उसके चारों ओर गरज-तरज रहा था।

तीग्रेना अपनी मांद में अधिक गहरे घुस गयी। आस्तीनें उसने कलाइयों पर बांध लीं और सिर परके में छिपा लिया। उसके बदन में गरमाहट की एक लहर दौड़ गयी। घुटनों से ठुड्डी लगाये वह सो गयी।

तूफ़ान जल्द ही ख़त्म हो गया। दो दिन बाद आसमान साफ़ हुआ, तारे चमक उठें और तीग्रेना अपनी मांद से रेंगकर बाहर आ गयी। अब भूख और प्यास की पीड़ा ने उसे बुरी तरह घेर लिया। भूख के कारण उसे अपनी परेशानियां और ज़्यादा महसूस होने लगीं।

तीग्रेना ने लोमड़ियों के उन फंदों को ढूंढ़ने का निश्चय किया जिनमें चारे के बतौर वालरस का मांस रखा होता है। वह जानती थी कि शिकारी कहां ऐसे फंदे लगाते हैं। फिर भी, उसकी खोजबीन असफल रही। आख़िर उसे एक छोटे से टीले के नीचे ज़ंग खाया हुआ एक पुराना फंदा नज़र आया लेकिन उसमें मांस का एक भी टुकड़ा न था। लंबी ढूंढ़-तलाश के बाद उसे दूर से एक सफ़ेद लोमड़ी दिखाई दी जो एक ही जगह पर चक्कर काट रही थी। इस लोमड़ी का एक पंजा फंदे में अटक गया था और वह उसे छुड़ाने की कोशिश कर रही थी। उसके पास ही सील का मांस पड़ा हुआ था। घबड़ायी हुई लोमड़ी ने मांस को छुआ तक न था। वह देर तक चक्कर काटती रही होगी क्योंकि फंदे में फंसी हुई उसकी टांग टूट गयी थी और टांग का जख्मी हिस्सा सिर्फ़ चमड़ी के सहारे अपनी जगह पर टिका था।

तीग्रेना ने लोमड़ी का गला घोंट दिया, फंदा फिर से लगाया और मरी हुई लोमड़ी उसके पास रख दी। चारे के बतौर रखा हुआ मांस जमकर इतना सख्त हुआ था कि तीग्रेना अपने छुरे से उसको काट भी न पायी। बड़ी मुश्किल से उसने मांस के कुछ टुकड़े छीले और उन्हें जल्दी जल्दी गटक गयी।

लोमड़ी के गरम गरम ख़ून से अपनी प्यास बुझाने में उसे ज़रूर मज़ा आता लेकिन वह लोमड़ी की खाल ख़राब न करना चाहती थी।

इक्कीसवां अध्याय

यानराकेनोत में वह असाधारण दिन था। सारे यारंगों में कामेनवात की पत्नी की चर्चा चल रही थी। वह इस संसार से विदा होने का निर्णय कर चुकी थी और परलोक यात्रा की तैयारी में लगी हुई थी।

लंबे अरसे से वह बीमार थी। उसके हाथ और पैर सूज गये थे। उसके चेहरे पर गहरी उदासीनता फैली हुई थी। दुष्ट पिशाच ने कामेनवात के यारंग को घेर रखा था और वहां की ज़िंदगी बड़ी मुश्किल हो गयी थी।

दुष्ट पिशाचों से डरकर पड़ोसी इस यारंग से नफ़रत करते थे। अकेला आये कभी कभी मांस का एकाध टुकड़ा और थोड़ी सी चरबी गलियारे में छोड़ देता था। ख़ुद कामेनवात यारंग के बाहर यह सोचकर क़दम तक न रखता कि कहीं उसकी वजह से जमात वालों पर कोई मुसीबत न आ जाये।

अपने कारण सगे-संबंधियों को होने वाले दुःख और पीड़ा को उस बुढ़िया ने जान लिया।

"मैं लोगों को ज़िंदगी का भार बनकर क्यों रहूं?" उसने विचार किया। "और ख़ासकर तब, जब मनुष्य अपनी इच्छा से इज़्ज़त की मौत मर सकता हो!"

बस्ती के सभी लोग इसी दृष्टिकोण से बुढ़िया के निर्णय को देखते थे। हरेक का विचार था कि स्वेच्छा से परलोकगमन करना बुढ़िया के लिए सब से अच्छा होगा। लेकिन फिर भी हर व्यक्ति अपने जीवन का स्वामी होता है। और इसी लिए हर कोई तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक कि बुढ़िया ख़ुद ही मृत्यु की मांग न करे।

एक दिन सबेरे ढिबरी जलाते समय कामेनवात को बुढ़िया की आवाज़ सुनायी दी:

"कामेनवात, मुझे जाना चाहिए। अब समय हो गया। अब मैं देर नहीं कर सकती। कल ही मैंने अपने मन में यह फ़ैसला किया था और आज उसे ज़ाहिर कर रही हूं।"

"कुछ दिन और रहो? हो सकता है कि दुष्ट पिशाच हमारे यारंग को छोड़ ही जायें। और मुझे अकेला छोड़कर तुम्हें नहीं जाना होगा," कामेनवात ने उत्सुकता से कहा।

"जी नहीं," बुढ़िया ने झट से जवाब दिया। "कल ही मैंने खूब सोच लिया है। कल रात मैं बिल्कुल सोयी नहीं और अपना फ़ैसला ज़ाहिर करने की तैयारी में रही। मैं फिर एक बार कहती हूं कि परलोक जाने का मेरा समय हो गया।"

कामेनवात ने तीग्रेना को बुला भेजने का निश्चय किया। बुढ़िया की परलोक यात्रा को सुगम बनाने के लिए अलितेत का उपस्थित रहना भी आवश्यक था।

आगामी घटना के बारे में वे चर्चा कर ही रहे थे कि गलियारे में खांसकर किसी ने अपने आगमन की सूचना दी।

"कौन, आये? तुम आ गये?"

"आये नहीं, मैं हूं तीग्रेना।"

"अरे, मेरे कान यह क्या सुन रहे हैं? मुझे सताने के लिए यह दुष्ट पिशाच तो नहीं आ गया?" कामेनवात ने फुसफुसाकर बुढ़िया से पूछा। "तुमने भी वह आवाज़ सुनी होगी?"

"हां, मैंने सुनी। ज़रूर तीग्रेना के हिरदय ने ही मेरे 'महा प्रयाण' के बारे में उसे बताया होगा।"

कामेनवात ने जल्दी जल्दी पोलोग की लटकती खाल उठायी, गलियारे में झुककर देखा और चिल्लाया:

"तीग्रेना!"

"जी हां, मैं ही हूं," उसने श्रान्त स्वर में कहा।

तीग्रेना रेंगकर पोलोग में गयी और अपनी मां के विरूप चेहरे को देखकर ठिठक गयी। मां की बीमारी का समाचार उसने सुना था लेकिन उसने यह नहीं सोचा था कि हालत इतनी ख़राब हुई होगी।

यारंग में सन्नाटा छा गया। वहां का हर व्यक्ति अपनी अपनी तरह से दुःखी था। और किसी को भी शांति भंग करने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

आख़िर मां ही बोल उठी:

"तीग्रेना, तुम आ गयीं? बड़ा अच्छा किया तुमने। आज का दिन हमारे लिए 'महान दिवस' है। अलितेत के लिए वह नयी खाल बिछा दो।"

तीग्रेना ने चुपचाप सिर हिलाया।

"अलितेत यहां नहीं है और न ही उसकी ज़रूरत भी है। वह एनमकाई में है... मैं उसके घर से भाग आयी हूं..."

कामेनवात ने आंखें फाड़कर तीग्रेना की ओर देखा और घबड़ाकर चिल्ला उठा:

"आह! मैं यह क्या सुन रहा हूं? कहीं पिशाच केले ने तो मेरे कानों में डेरा नहीं डाला?"

कामेनवात की आवाज़ डूब सी गयी और क्षीण स्वर में वह बोलता गया:

"तीग्रेना, अरी अब क्या होगा? हमारी जमात में आज तक किसी ने भी ऐसा नहीं किया। कहीं दुष्ट पिशाचों ने तो तुम्हें इस तरह भागने का रास्ता नहीं दिखाया? सुनो, तुम्हें फ़ौरन वापस जाना चाहिए।"

"नहीं, पिताजी, मैं हरगिज़ न जाऊंगी। आख़िर चूहे के भी हृदय होता है और उसकी भी सबर की हद होती है," तीग्रेना ने झट से जवाब दिया।

"कितना बदनसीब हूं मैं! अरे, सारी मुसीबतें आख़िर एक ही आदमी के हिस्से में क्यों पड़ीं!"

अपनी बेटी के बर्ताव पर बीमार बुढ़िया ने कुछ टीका-टिप्पणी नहीं की क्योंकि बिगड़ी बनाने के लिए वह इस दुनिया में थोड़े ही रहने वाली थी। वह अब चिंता से परे हो चुकी थी। उसके दिमाग़ में अब एक ही बात थी वह 'फ़ैसला' जो वह सबेरे प्रकट कर चुकी थी।

"चलो, जल्दी करो! समय हो गया। जल्दी करो। कहीं मुझे देर न हो जाये!" बहुत ही उत्तेजित होते हुए बुढ़िया बड़बड़ायी।

जल्दी जल्दी 'आख़िरी चाय' की तैयारी की गयी। वालरस की चमड़ी का तस्मा निकाला गया। इस संस्कार के लिए आवश्यक वस्तुओं में से एक ही वस्तु घर में नहीं मिल रही थी। यह थी बारहसिंगे का गर्भ जिसे बुढ़िया के गले में बांधना ज़रूरी था। और सब से महत्वपूर्ण बात यह थी कि एक संबंधी इस संस्कार के अवसर पर अनुपस्थित था।

तीग्रेना ने ढिबरी के ऊपर देग़ची लटका दी और बाहर चली गयी।

यारंग के प्रवेश-मार्ग में वह खड़ी रही। लोग कामेनवात के यारंग के आसपास घूम रहे थे लेकिन अंदर कोई नहीं जा रहा था। वे दूर ही से तीग्रेना का अभिवादन कर रहे थे।

आये ने तीग्रेना को देखा।

"ओहो, काकोमेई तीग्रेना!" उसने उत्तेजित होकर कहा और उसकी ओर दौड़ा।

"आये, आज हमारे यारंग में मौत का दिन है और हमारे कुनबे का एक ऐसा आदमी ग़ैरहाज़िर है जिसकी आवाज़ मेरी मां को आख़िरी बार सुननी चाहिए। तुम ही अकेले ऐसे आदमी हो जिसके लिए अभी तक यहां जगह है," अपने हृदय की ओर संकेत करते हुए उसन कहा।

"तो तीग्रेना, वह मेरी आवाज़ सुन ले," आये ने झट से कहा।

"इसके अलावा मां के गले में बांधने के लिए हमारे पास बारहसिंगे का गर्भ भी नहीं है।"

"मेरे पास दो हैं," आये ने कहा। "मैं दौड़ता हुआ जाऊंगा और एक ले आऊंगा।"

"ठहरो, आये! हमारे यारंग में लोग बड़े दुःखी हैं।"

आये असमंजस में पड़ा और बोला:

"अरे, जब कोई आदमी परलोक के लिए रवाना होता है तब आनंद मनाने के बजाय दुख करना लोगों ने कब से सीखा?"

"मेरा मतलब कामेनवात के दुख से है," तीग्रेना ने कहा।

आये व्यग्रता से उसकी ओर देखता रहा।

"मेरा दिमाग़ शायद ख़ाली हो गया है। कुछ भी मेरी समझ में नहीं आ रहा है।"

"कल रात को... मैं अलितेत के घर से भाग आयी," तीग्रेना फुसफुसायी।

सारी यानराकेनोत बस्ती यह समाचार सुनकर सुन्न रह गयी।

हर यारंग में और हर पोलोग में हर किसी के होंठों पर तीग्रेना का नाम था। उसके बर्ताव को लोग अपशकुन मान रहे थे। तीग्रेना के पलायन ने कामेनवात की पत्नी के ऐच्छिक मरण जैसी महत्वपूर्ण घटना को भी नगण्य सा बना दिया था।

जब सारी तैयारियां हो चुकीं तो 'आख़िरी चाय' पेश की गयी। यारंग में इस समय चार व्यक्ति थे—बुढ़िया, कामेनवात, तीग्रेना और आये। चारों जने अर्ध वृत्त बनाकर बैठ गये और भावाकुल तीग्रेना ने चाय उंडेली। असल में यह चाय नहीं थी बल्कि दूर टुंड्रा से लायी गयी एक वनस्पति थी जिसे स्थानीय निवासी गोरे व्यापारियों के आने से पहले उबालकर पिया करते थे। यह पेय बिना शक्कर के पिया जाता था। विदाई का दिन उसी तरह होना चाहिए था जैसा वह चुकोत्स्क के किनारे किसी गोरे व्यक्ति के आने से पहले हुआ करता था।

बुढ़िया ने नये रोवेंदार कपड़े और मृगचर्म के नये तोरबाज़ पहन रखे थे। ये कपड़े बहुत पहले ही बनाये जा चुके थे। जो लोग 'पीछे रहनेवाले' थे वे साधारण कपड़े पहने हुए थे—तीग्रेना ने एक कटिवस्त्र पहन रखा था और कामेनवात और आये ने हल्की खाल के पतलून।

पूरे मौन के साथ चाय पी गयी। यकायक बुढ़िया ने चाय पीना अधूरा ही छोड़कर अपना मग तीग्रेना की ओर बढ़ाया और कहा:

"बस, काफ़ी हुआ। तीग्रेना मेरा मग तुम्हीं ले लो। तुम्हें अभी कई दिन तक चाय पीनी है।"

चाय का सामान फ़ौरन हटा दिया गया और लोग बुढ़िया को कमरे के बीचों बीच ले गये।

बुढ़िया के चेहरे पर पूर्ण उदासीनता तथा परित्याग के भाव दिखाई पड़ रहे थे। ऐसा लग रहा था कि इस दुनिया के कलहों और चिंताओं का बोझ सदा के लिए पीछे छोड़कर वह अपनी यात्रा के लिए प्रस्थान कर चुकी है। निर्विकार दृष्टि से उसने अपने प्रियजनों की ओर देखा। इसके बाद किसी ने उसकी आवाज़ नहीं सुनी। बुढ़िया चुपचाप बारहसिंगे की खाल पर लेट गयी और उसने आंखें मूंद लीं।

अपनी सिसकियां दबाते हुए तीग्रेना ने हिरन के गर्भ की खाल मां की गर्दन में बांध दी। कामेनवात ने तस्मे का फंदा उस खाल पर रख दिया। आये बुढ़िया के घुटनों पर बैठ गया और उसके हाथ अपने हाथों में पकड़कर फ़र्श पर जड़ से दिये। फंदा कसकर खींच लिया गया।

बाहर से कुत्तों की लंबी दर्दभरी चिल्लाहट सुनाई दी।

बुढ़िया का शव पहाड़ियों में ले जाया गया और पत्थरों पर रखा गया। कामेनवात ने शव के कपड़े जगह जगह पर फाड़ दिये

ताकि जंगली पशु-पंछी आसानी से उसे खा सकें। तीग्रेना ने शव के पास चाय का एक प्याला और तश्तरी, एक सूई और बारहसिंगे की स्नायु का बना कुछ धागा रख दिया।

ताक़तवर कुत्तों से खींची जाने वाली एक बरफ़-गाड़ी ज़ोरों से दौड़ती हुई पहाड़ी की चोटी पर से दिखाई दी। यह अलितेत था जो तीग्रेना का पीछा करता हुआ आ रहा था।

बाईसवां अध्याय

चुकोत्स्क प्रायद्वीप, जो कि संस्कृति-केंद्रों से बहुत दूर था, सदियों तक सभ्यता से अपरिचित रहा था। वहां का जन-जीवन अलिखित नियमों से शासित था। जन्म से लेकर मृत्यु तक अंधविश्वास बराबर आदमी का साथ देते थे। फिर भी वीरता तथा सहनशीलता की दृष्टि से इन लोगों का चरित्र उत्कृष्ट था।

यहां सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में एक साधारण रूसी कज़्ज़ाक, सेम्योन देझनेव, नये आविष्कारों की इच्छा से आया था। वीतुस बेरिंग से बहुत ही पहले देझनेव ने अपनी दुर्बल डोंगियों में एशियाई महाद्वीप के उत्तर-पूर्वीय सिरे—चुकोत्स्क अंतरीप—की परिक्रमा की।

इसके सौ एक बरस बाद रूसी कज़्ज़ाक शोध-यात्रियों के प्रयासों के फलस्वरूप ये अ-वश्य चुकोत्स्क जन-जातियां अनिच्छा से रूसी ज़ार के प्रति निष्ठावान बनी थीं।

इन लोगों को न बंदूक़ जैसे बारूद वाले हथियार और न तलवार जैसे फ़ौलादी शस्त्र ही जीत सके। इन्हें जीता था रूसी तंबाकू, लोहे के छुरों, कुल्हाड़ियों, मिश्री, शराबों और अन्य रूसी वस्तुओं ने जो याकूत्स्क से रूसी व्यापारी जहाज़ों पर लादकर भेजते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में व्लादिवोस्तोक से अगिन-बोटों का नियमित यातायात आरंभ हुआ और अनादीर प्रदेश का पहला रूसी गवर्नर डॉ० ग्रिनेवीत्स्की इस भूमि में आ पहुंचा।

यहां के लोगों से परिचित होने के बाद उसने अपने वरिष्ठ अधिकारियों को प्रार्थना-पत्र भेजा कि उसे गवर्नर के बजाय डॉक्टर कहलाने की अनुज्ञा दी जाये क्योंकि चुकची लोग उसके मतानुसार स्वतंत्र प्रवृत्ति वाले थे और अभी तक शासनाधिकार की कल्पना के अभ्यस्त न थे।

इससे कुछ पहले, सन् १८६७ में, रूसियों द्वारा आविष्कृत और अन्वेषित अलास्का प्रदेश ज़ार की सरकार ने अमरीका को बेच दिया था।

उस समय से अमरीकी व्हेलमार नित्य चुकोत्स्क के किनारों की सैर करने लगे और उन्होंने बेरिंग जल-डमरूमध्य के दोनों ओर व्यापार शुरू कर दिया।

"व्हेल ले जाओ लेकिन वालरस हमारे लिए छोड़ दो। हमारे लिए भी कुछ शिकार ज़रूरी है," चुकचियों ने व्हेलमारों से कहा। "आख़िर वालरसों की लाशों को आप समुद्र ही में तो फेंक देते हैं। आपको दिलचस्पी है सिर्फ़ उनके दांतों में। अच्छा हो कि हमीं आपको ये दांत दे दें।"

व्हेलमारों के पीछे पीछे आ पहुंचे समुद्री डाकुओं के जहाज़। ये लोग क़ीमती रोवेंदार खालें मिट्टी के मोल ख़रीद लेते थे।

रोवेंदार खालों के लालच में रूसी और विदेशी पूंजी के प्रतिनिधियों ने चुकोत्स्क के समृद्ध किनारे पर डेरा डाल दिया। रूसी व्यापारियों के अलावा डेन, नार्वेजियन, अमरीकन और अंग्रेज़ व्यापारियों ने भी इस स्थान को अपना घर बना लिया। इन नवागंतुकों का एकमात्र उद्देश्य था आसानी से धन की प्राप्ति।

इन समृद्ध किनारों पर आ बसे हुए मि० थामसन का भी यही उद्देश्य था। १९१७ से लेकर गत कुछ बरसों से चार्लस थामसन रूसी क्रांति के बारे में अमरीकी समाचारपत्रों के संवाद अत्यंत उत्सुकता से पढ़ा करता था। लेकिन इन घटनाओं की सच्ची आत्मा को मि० थामसन ग्रहण नहीं कर पाया।

महान अक्तूबर क्रांति रूस में प्राचीन शासन को जड़-मूल से उखाड़ फेंक रही थी और उसकी हल्की सी प्रतिध्वनियां ही इन दूरस्थ किनारों तक पहुंच पायी थीं।

रुपहली लोमड़ियों की बिक्री के समय आये के व्यवहार ने और किनारे पर एक रूसी पार्टीज़ान के आगमन ने इस अमरीकन को सचेत कर दिया।

सन् १९२३ की बसंत ऋतु ने चुकोत्स्क तट पर असाधारण सौंदर्य बिखेर दिया। वायुमंडल स्वच्छ तथा विमल रहा और वहां की अमित शांति को केवल दूर से सुनाई देने वाली सागर की हल्की सी गड़गड़ाहट छेड़ती रही।

टुंड्रा के केंद्रीय प्रदेश में फुसफुसी और जमी हुई बरफ़ पिघलने लगी थी, यत्र-तत्र भूमि के टुकड़े दृष्टिगोचर होने लगे थे और उत्तर-ध्रुवीय गौरैयां वापस अपने घर आने लगी थीं। अभी तक हिमाच्छादित टुंड्रा प्रदेश में वे भक्ष्य की खोज में चक्कर काट रही थीं, सूर्य की उष्ण किरणों से सुस्नात हो रही थीं और उनकी आनंदभरी चहचहाहट उस विशाल निर्जन प्रदेश में जीवन की तान छेड़ रही थी।

ऐसा लगता था कि उत्तर-ध्रुवीय ग्रीष्म के ये संदेश-वाहक समय से कुछ पहले ही आ प्रकट हुए थे। फिर भी सरपत के झुरमुटों में, नदी-घाटियों में और बारहसिंगों के मार्गों पर उन्हें अपना भक्ष्य प्राप्त हो रहा था। उन्होंने शीघ्रता से घोंसले बना लिये ताकि जल्दी जल्दी अपने अंडों को सेकर, मय बच्चों के, आगे कूच कर सकें।

शिशिर-काल समाप्त होने तक लंबी निद्रा में मग्न धानीमूष भी जाग उठे थे। ये चपल नन्हे नन्हे जीव अपने बिलों से बाहर आकर धूप में इधर उधर कुदक-फुदक रहे थे, बड़ी सावधानी से एक बिल से दूसरे बिल तक दौड़ रहे थे और भय की ज़रा सी भी अशंका होते ही सरराते हुए ज़मीन में समा जाते थे।

जगमगाता वायुमंडल तरह तरह का क्रीड़ा-कौतुक दिखा रहा था जिससे विभिन्न छोटी-मोटी वस्तुएं अत्यधिक विशालकाय लगती थीं और दूर से देखने वाले अनुभवहीन व्यक्ति की आंखों को ये धानीमूष दौड़ने वाली मनुष्याकृतियां सी लग सकते थे।

अभी तक चिकनी सफ़ेद बरफ़ का चमकदार कालीन चारों तरफ़ फैला हुआ था। सबेरे और रात में भी सूरज आकाश में जगमगाता था। अपनी अमरीकी अलार्म घड़ी की कर्कश घंटी बजते ही मि० थामसन ने बिछौने में करवट बदली और तकिये के नीचे अपना सिर छिपा लिया। घड़ी ने फिर घंटी बजायी और फिर मि० थामसन तकियों के नीचे घुस गया। घड़ी ने छ: बार अपने मालिक को जगाने की कोशिश की।

ओह, यह अलार्म घड़ी एक विचित्र चीज़ थी, सचमुच बड़ी विचित्र!

पूरी तरह से नींद खुलने तक मि० थामसन इस घड़ी के साथ आंख-मिचौनी सी खेलता रहा।

जब वह उठा तो सुबह के दस बज चुके थे। १६०१ में इस भूमि पर पैर रखने के दिन से लेकर आज तक मि० थामसन बराबर इसी समय उठता था।

वह बिस्तर में उठ बैठा। उसके पैर रीछ की एक खाल पर टिके रहे। उसने इर्दगिर्द नज़र दौड़ायी। कमरे में घुप्प अंधेरा था; सिर्फ़ एक पतली सी किरण खिड़की के काफ़ी मोटे परदे के छोटे से

छिद्र में से छन छनकर अंदर आ रही थी। अंधेरे में ऐसा लगता था कि एकमात्र खिड़की के ऊपर वाले हिस्से से सामने वाली दीवार के पास रखी हुई झूलन-कुर्सी तक एक सुनहरा तार तना हुआ हो।

इस जगमगाते तार को देखकर मि० थामसन यकायक खीझ उठा। "बड़े बुद्धू हैं ये जानवर! बीस साल की तालीम के बाद भी ये पत्थर के पत्थर ही रहे हैं! इतने समय में नाचीज़ सील को भी सारे काम सिखाये जा सकते थे," वह गुर्राया और बिछौने से बिना उठे ही यकायक चिल्लाया :

"मे! "

एक अधेड़ औरत ने कमरे में प्रवेश किया। पति के तौर-तरीक़ों से परिचित रूलतिना धानीमूष जैसी मृदु-चपल गति से उस अंधेरे में घिसकती हुई परदा खोलने के लिए खिड़की की ओर गयी लेकिन पति ने उसे रोककर कहा :

"ठहरो! क्या तुम्हें वह सूराख़ दिखाई देता है जिसमें से सूरज की किरण मेरे कमरे में आती है?"

"जी हां, मैं देख रही हूं।"

"यह है तुम्हारी लापरवाही! मैं चाहता हूं कि किसी भी वजह से मेरी नींद में खलल न पड़े। घर का काम तुम ठीक तरह से नहीं कर रही हो," मि० थामसन ने शिकायत की।

रूलतिना ने अपने गोरे पति के निंदा-वचन चुपचाप सुन लिये। वह समझ न पायी कि आख़िर चार्ली चाहता क्या है। क्या वह देख नहीं सकता कि सच्चे आदमी किस तरह बरफ़ में, सूरज की सहस्र सहस्र किरणों के नीचे कुत्ता-गाड़ियों पर सोते हैं!

"अब तुम परदा खोल सकती हो," मि० थामसन ने कहा।

आंखों को चौंधियाने वाला सूर्य-प्रकाश छोटी सी खिड़की के ज़रिये उस नाटी छत वाले छोटे से कमरे में उमड़ पड़ा जिससे

वहां एक खटिया, एक मेज़, पुस्तकों की एक अस्थायी अलमारी और बेंत की दो कुर्सियां दिखाई दीं। एक कोने में औंधे रखे हुए बक्स पर एक चमकदार ग्रामोफ़ोन था जिसका सिंगा बहुत बड़ा था। यह ग्रामोफ़ोन सिर्फ़ रविवार को बजाया जाता था।

किताबों की अलमारी के सब से ऊपर वाले ख़ाने में जैक लंदन की पुस्तकें और वेड्स्ले की मरणोत्तर प्रकाशित रचनाएं थीं। बीच और नीचे वाले ख़ाने अमरीकी पत्र-पत्रिकाओं से अटे पड़े थे। ये सब पत्र-पत्रिकाएं एक बरस पुरानी थीं। गत साल की गरमियों में स्थानीय लोगों के लिए माल लेकर आये हुए जहाज़ से ही वे आयी थीं। यह था मि० थामसन का मानसिक खाद्य। पत्र-पत्रिकाएं तिथि-क्रम के अनुसार सुव्यवस्थित रखी हुई थीं और मि० थामसन इन्हें उस क्रम से पढ़ता था मानो उसी दिन की डाक से प्राप्त हुई हों। वर्ष दूसरा था किन्तु पत्र-पत्रिकाओं की तिथियां चालू तिथियों से मेल खाती थीं। यदि मि० थामसन चाहता तो आगे की बातों को जान लेने का हर मौक़ा उसके लिए मौजूद था लेकिन सतर्क और हिसाबी आदतों वाला आदमी होने के कारण वह दुनिया के वाक़यातों में पेशगी दिलचस्पी लेना पसंद न करता था। दूसरे शब्दों में, मि० थामसन सभ्य संसार से ठीक एक साल पीछे था।

पैकिंग केसों की तख़्तियों से और ख़ुद अपने श्रम के सहारे बनायी गयी छोटी सी कुटिया के स्थान पर वह आसानी से एक वास्तविक घर बनवा सकता था। उसके द्वारा यह इच्छा प्रकट होने भर की देर थी – जिस व्यापारी प्रतिष्ठान के साथ उसका लेनदेन चलता था वह अगले ही जहाज़ से उसे एक घर भेज सकता था।

लेकिन वह ऐसा करे भी क्यों? अपनी सारी ज़िंदगी वह यहां थोड़े ही बिताने जा रहा था! बिना ख़र्च के बनाया गया उसका

छोटा कमरा अपनी तरह से काफ़ी अच्छा था। आख़िर क़ीमती डालरों को फ़िज़ूल उड़ाने में फ़ायदा भी क्या था?

अपनी कुर्सी में झूलते हुए मि० थामसन ने सुबह का धूम्रपान ख़त्म किया, फिर विचारमग्न मुद्रा में उठ खड़ा हुआ और अपने हाथ के बने कैलेंडर की ओर चला गया। कल की तारीख़–१६ मई, १६२३–पर उसने निशान लगाया। पाइप अपनी चारख़ानों की क़मीज़ के जेब में रखकर वह किताबों की अलमारी के पास गया और १७ मई, १६२२ का एक समाचारपत्र वहां से उठाया।

पास वाले छोटे कमरे में से, जहां उसका परिवार रहता था, उसकी बीवी नाश्ते का सामान लिए फिर से अंदर आयी। मेज़ पर कॉफ़ी पॉट, सूअर के मांस की एक तश्तरी, तेल के दीये पर सेंकी हुई कुछ सफ़ेद पावरोटी और शक्कर रखकर वह चुपचाप वापस चली गयी।

'ताज़ा' अख़बार हाथ में लिये मि० थामसन मेज़ के पास बैठ गया। ठीक एक बरस पहले दुनिया में क्या हुआ था इसके समाचार उसे अब पढ़ने थे।

हां, यह सच था कि वह जिन समाचारों को पढ़ने जा रहा था वे माल-जहाज़ के जहाज़ियों के लिए एक बरस पहले ताज़े थे। लेकिन मि० थामसन ने जहाज़ियों को आज्ञा दे रखी थी कि वे उसे ताज़े समाचार न दिया करें। मि० थामसन के जीवन-प्रवाह को क्रमबद्ध और शांत रीति से बहना था; उसमें उछल-कूद के लिए कोई स्थान न था।

मि० थामसन अपने आगे अख़बार पकड़े 'कोरोना' कॉफ़ी का तीसरा मग चढ़ा रहा था कि यकायक उसने मग को मेज़ पर पटक सा दिया, अख़बार हाथ से छोड़ दिया और सींग की फ्रेम वाली अपनी ऐनक उतार ली। अपनी क़मीज़ के कोने से उसने ऐनक साफ़ की और फिर जल्दी जल्दी नाक पर रख ली।

मेज़ पर तनकर झुके हुए उसने अख़बार फिर से पढ़ लिया। उसके चेहरे का रंग धीरे धीरे उड़ता गया। फ़ौरन उसने अख़बार दूर हटा दिया, अपनी बैठक से कूद पड़ा और ख़ाली पाइप हाथ में हिलाते हुए कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

"तो हम मर गये! आख़िर यह कुछ ख़बर है! ऊंह, कोई ख़बर!"

अपनी पाइप में 'प्रिंस अल्बर्ट' तंबाकू भरते हुए मि० थामसन बड़े जोश में कमरे में घूमता रहा।

पाइप का ज़ोरदार कश लगाते हुए वह फिर मेज़ की ओर लपका और फिर वह समाचार पढ़ा जिसने उसकी अविचल चित्त-शांति भंग कर दी थी। संक्षेप में समाचार यह था कि सोवियत सरकार ने नॉर्थ-कंपनी को कामचात्का, चुकोत्स्क प्रायद्वीप और अनादीर प्रदेश की आबादी में व्यापार करने के विशेषाधिकार प्रदान किये हैं और रूसी भाषा जानने वाले तथा रडर मोटर चला सकने वाले लोगों से नौकरी के लिए अर्ज़ियां मांगी हैं।

गत बाईस बरस की अवधि में किसी भी समाचार ने—रूसी क्रान्ति तक के समाचार ने—मि० थामसन को इतना उत्तेजित नहीं किया था जितना कि एक बरस पुराने इस समाचार ने।

"नॉर्थ कंपनी! अरे, ऐसा शार्क मैदान में उतर आये तो साधारण व्यापारी के लिए कुत्ते जितना भी मौक़ा नहीं मिलेगा!"

और मानो अपने ही को चेतावनी देते हुए उसने कहा:

"ध्यान रखना चाहिए कि इसी नॉर्थ कंपनी ने कैसी निर्दयता के साथ हडसन उपसागर के बड़े बड़े और अत्यंत उद्यमी लोगों को चूसा था और बरबाद कर दिया था!"

इस असाधारण मानसिक परिश्रम ने मि० थामसन को श्रांत कर दिया। उसने अखबार उठा लिया और अपना थुलथुला शरीर झूलन-कुर्सी के अधीन कर दिया।

वह क्लेशदायक समाचार उसने फिर एक बार पढ़ा और तब अखबार दूर फेंककर अपना विरल, सुर्ख और शिकनदार बालों वाला सिर उस पुरानी झूलन-कुर्सी की पीठ पर टेक दिया।

अब वह अपनी जगह पर डटे रहने का निश्चय कर चुका था। इस प्रदेश को वह किसी और के अधीन करने को तैयार न था।

"ओह, यहां की बागडोर मेरे ही हाथ में रहेगी। देखूं कैसे नहीं रहती?"

फिर भी, नॉर्थ कंपनी की चढ़ाई के विचार ने उसे भयभीत ज़रूर कर दिया। इस कंपनी की चालबाज़ियां वह अच्छी तरह जानता था। बात स्पष्ट थी कि यह शक्तिशाली प्रतिष्ठान अपने निजी नौका-दल के सहारे बाज़ार पर क़ाबू पा लेने में देर नहीं लगायेगा। शुरू शुरू में ये लोग नुक़सान उठाकर काम करेंगे और समय आते ही फावड़ों से धन बटोरेंगे।

"मे!" मि० थामसन चिल्लाया।

और जब इस पुकार के उत्तर में उसकी बीवी डरती हुई कमरे में आयी तो वह गरज उठा:

"व्हिस्की!"

रूलतिना ने फ़ौरन हुक्म की तामील तो की लेकिन उसे आश्चर्य ज़रूर हुआ। उसने मि० थामसन को आज तक कभी सवेरे कॉफ़ी के बाद व्हिस्की पीते नहीं देखा था। बीस बरस के वैवाहिक जीवन में उसे एक भी ऐसा अवसर स्मरण नहीं आया। उस सुबह अपने पति के इस आचरण से वह चौंक उठी। उसने समझ लिया कि चार्ली आपे से बाहर हो रहा है।

मि० थामसन ने आखिर कड़ुआ घूंट निगल लिया। यकायक कोई विचार उसके दिमाग़ में उठ खड़ा हुआ और वह अपना मत्था पटपटाने लगा।

"उस नार्थ कंपनी की ऐसी-तैसी! आख़िर मेरे पास अलितेत भी तो है! और जब तक वह मेरे साथ है, यहां पर मेरी ही हुकूमत है—यहां का क़ानून मैं हूं और मैं हूं यहां की राजनीति! अलितेत के ज़रिये मैं पेशगी रक़में दे दूंगा और सारी रोवेंदार खालें मौसम से पहले ही ख़रीद रखूंगा। हा-हा-हा! नॉर्थ कंपनी को मैं इस तरह मात कर दूंगा। हां, अगर उसे दिलचस्पी हो तो वह बत्तक़ों के अंडे ज़रूर ख़रीदे—ख़रीदने के लिए और बचेगा ही क्या? मैं मानता हूं कि इसमें उन्हें कुछ ख़ास दिलचस्पी नहीं होगी!"

मि० थामसन ने अपने आगे एक कल्पना-चित्र खड़ा कर लिया कि कंपनी का बड़ा जहाज़ माल से ठसाठस लदा हुआ आ तो पहुंचेगा लेकिन कंपनी के लोग एक भी रोवेंदार खाल नहीं ख़रीद सकेंगे। क्योंकि सारी खालें अलितेत पेशगी ही ख़रीद लेगा। इस दांव में नुक़सान उठाना पड़ा तो भी मि० थामसन को कोई परवाह नहीं। वॉशिंग्टन बैंक इस समय उसके हिसाब में ज़्यादा जमा न दिखाये तो भी कोई परवाह नहीं। वे प्रतिस्पर्द्धा की बात करते हैं, तो करें!

तेईसवां अध्याय

मि० थामसन का परिवार उसके कमरे के पास वाले ठंडे गलियारे में बनाये गये खालों के पोलोग में अलग से रहता था। परिवार में उसकी चुकची पत्नी और छः बच्चे थे। ये सब चुकची तरीक़े से रहते थे। अपने पोलोग को गरमाने और रोशन करने के लिए वे काई वाली ढिबरी का उपयोग करते थे और सोने के लिए बारहसिंगों की खालों का। भोजन उनका था वालरस और सील का सस्ता मांस। मि० थामसन की थैली पर परिवार की उपजीविका का विशेष भार नहीं पड़ता था। याराक नामक एक लड़के को मि०

थामसन ने गोद लिया था और अब यह लड़का आवश्यकतानुसार हर काम में उसकी मदद करता था। वह मि० थामसन के परिवार ही में रहता था।

सब से बड़ी लड़की मेरी उन्नीस बरस की हो चुकी थी। मि० थामसन ने हिसाब लगाया था कि बहुत समय पहले से ही कपड़ों की सिलाई के ज़रिये वह अपनी जीविका के बारे में स्वावलंबी हो चुकी है। इतना ही नहीं बल्कि कुछ ज़्यादा भी कमाती रही है। मेरी की जीवन-प्रणाली लोरेन की अन्य लड़कियों से तनिक भी भिन्न न थी। उसकी रुचियां एक सी थीं, विचार वैसे ही थे और भाषा भी वह सिर्फ़ चुकची ही बोलती थी। फिर भी युरोपीय नाक-नक़्शे, बड़ी बड़ी और काली काली आंखों और लंबी बरौनियों के कारण वह बहुत ही सुंदर लगती थी। अपने अन्य बच्चों की अपेक्षा इस लड़की पर मि० थामसन अधिक ध्यान देता था। वह मृग-शावकों की उत्कृष्ट रोवेंदार खालों के ख़ूबसूरत कपड़े उसके लिए बनवा लेता। पिता के कमरे में अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक बार आने-जाने का विशेष अधिकार मेरी को प्राप्त था। इतना ही नहीं, मि० थामसन को अपनी इस बेटी पर कुछ गर्व भी था।

मां ने कई बार मेरी के सामने उसके विवाह का प्रश्न उठाया था। यह ऐसा विषय था जिसपर वे गुपचुप ही चर्चा कर सकती थीं क्योंकि मि० थामसन इस विषय में किसी की एक न सुनता और अपने गोरे पति का रुख़ रूलतिना समझ न पाती।

क्या इस गोरे आदमी की समझ में नहीं आ रहा था कि जवान लड़की के लिए पति की आवश्यकता है जो उसकी संतानों का पिता बन सके। क्या हर लड़की का यही जीवन-स्वप्न नहीं है कि वह माता बन जाये? क्या लड़कियों का जन्म इसी लिए नहीं हुआ है? आख़िर गोरा पिता और गोरा पति इस बात को क्यों नहीं समझ पाता?

लेकिन इस विषय पर मि० थामसन के अपने अलग विचार थे। उसके मन में क्षण भर के लिए भी यह विचार नहीं आया कि संभवतः उसकी बेटी उसे स्थानीय जाति के दामाद का ससुर बनायेगी।

छः बच्चों में से मेरी और छोटा बेन निःसंशय मि० थामसन की संतान थी। बाक़ी बच्चे पैदा हुए थे उसके विवाह-मित्रों के कारण और उनमें से एक का भी नाक-नक़्शा श्वेत जाति के व्यक्ति के चेहरे से तनिक भी मिलता-जुलता न था। मि० थामसन जान गया था कि मेरी का ब्याह कराना होगा। लेकिन उसका पति कौन हो? सारे तट-प्रदेश में उसके लायक़ एक भी आदमी नहीं था। हां, अगर वहां से गुज़रने वाले जहाज़ों के मल्लाहों में से ही कोई जवान उसे वरण करने को तैयार हो जाये तो बात दूसरी थी। लेकिन कौन अपनी भाषा न जानने वाली बहू ब्याहकर अमरीका ले जाये? अलावा इसके, मेरी को मालूम न था कि सभ्य समाज में किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए।

मि० थामसन ने निश्चय किया था जहाज़ियों में से ऐसे संभाव्य उमीदवार की खोज में रहेगा जो उसके व्यापार-व्यवहार को स्वीकार करने की शर्त पर मेरी के साथ ब्याह करने के लिए तैयार हो जाये। मेरी को किसी बुड्ढे की बहू बना देने में भी वह बिल्कुल न हिचकता बशर्ते कि वह बुड्ढा गोरा हो।

व्हेलमार और समुद्री डाकुओं के जहाज़ जब किनारे लगते तब उनके कुछ छिछोरे छैले जहाज़ी स्थानीय लड़कियों के साथ रहते और जब उनके जहाज़ वापस जाने लगते तब इन लड़कियों को छोड़कर कूच कर जाते। मि० थामसन को याद था कि कैसे एक जहाज़ के मल्लाहों ने जाड़ों में चुकची लड़कियों के साथ ब्याह कर लिया था और जहाज़रानी के मौसम के शुरू होते ही कैसे वे अपनी बीवियों

को वहीं छोड़कर चले गये थे। इन लड़कियों ने ऊंची चट्टान से कूदकर आत्महत्या कर ली थी।

मेरी नहीं चाहती थी कि उसका पति श्वेत हो। उसको ज्ञात सर्वोत्तम श्वेत व्यक्ति – उसका बाप – भी श्वेत जाति के प्रति उसके मन में अच्छी भावना नहीं पैदा कर सका था। यह था उसकी मां के प्रभाव का फल।

लोरेन और दूसरे पड़ावों में रहने वाली मेरी की सहेलियां इस समय तक सच्ची नारियां बन चुकी थीं और उनके अपने बच्चे भी थे। मेरी अब तक इस सुख से अपरिचित थी। और उसका भविष्यत् भी अब तक अस्पष्ट था। मेरी चिड़चिड़ी, बदमिज़ाज और बाप के प्रति बे-अदब बन गयी।

उसकी मां ने मन में सोचा कि "याराक एक अच्छा तगड़ा शिकारी है। मेरी उससे ब्याह करे तो कितना अच्छा होगा! लेकिन वह गोरा नहीं है।"

चार्ली के घर में बीस साल की शिक्षा ने रूलतिना को घुन्नी और आज्ञाकारी बना दिया था और अपने पति के साथ इस विषय पर चर्चा छेड़ने की अपेक्षा चुप बैठना ही वह अधिक अच्छा समझती थी। वह हमेशा राह देखती कि चार्ली पहले बोले।

लेकिन चार्ली तो अपनी गुफा में बैठा रहता और कोई भी न जान सकता कि उसके दिमाग़ में कैसे विचार उठ रहे हैं। चार्ली मिलनसार न था। स्थानीय लोगों के साथ उसकी बातचीत केवल लेन-देन तक ही सीमित थी। घर पर वह सिर्फ़ अपने काग़ज़ात से बातचीत करता था। रूलतिना किवाड़ की दरार में से चोरी चोरी देखती कि वह अपने काग़ज़-पत्रों को एक एक करके उलटता और उन्हें देख देखकर मुस्कराता है, मानो आदमी से भी ये काग़ज़-पत्र कहीं अधिक अच्छे हों।

रूलतिना के मन में इन काग़ज़-पत्रों के प्रति तीव्र घृणा उत्पन्न हुई थी। कमरे को साफ़ करते समय वह क्रोध के साथ उन्हें झाड़न से झटक भी दिया करती।

अपने पति को किसी जवान चुकची औरत पर डोरे डालते हुए देखना भी वह पसंद कर लेती क्योंकि उस समय चार्ली में कुछ भी तो मानवता के भाव दिखाई देते। जीवन की चिनगारी से उसकी आंखें चमक उठतीं और उसके मौन होंठ मुस्कराहट में विलग हो जाते जिससे उसके चमकदार लोह-दंतों की पंक्तियां दृष्टिगोचर हो जातीं। वह उस औरत को अपने कमरे में बुला लेता और फिर दरवाज़े में ताला लगा देता। उससे विदा होते वक़्त औरत के हाथ में लब्बे चूस का पैकेट दिखाई देता। चार्ली बड़ा दयालु था। कभी कभी वह उस औरत को कारतूसों का पूरा का पूरा पैकेट थमा देता। यह उसके पति के लिए उपहार होता।

चुकोत्स्क बस्ती में श्वेत-मुख शिशु पैदा हो चुके थे। वहां के अन्य शिशुओं से वे बहुत ही भिन्न दिखाई देते किन्तु उनके माता-पिता और बस्ती के सभी लोग उनसे बड़ा प्यार-दुलार करते। हर शिशु के जन्म के साथ वहां के लोग आनंदोत्सव मनाते और यह सोचने में बिलकुल सिर न खपाते कि वह है किसका। और इसमें रखा भी क्या है अगर वह बच्चा बड़ा बनकर शिकारी और सच्चा आदमी बनने जा रहा हो?

चौबीसवां अध्याय

तट-प्रदेश में महामारी का प्रकोप हुआ था। लोग कहते थे कि किसी अति दुष्ट पिशाच ने कामेनेई बस्ती में अड्डा जमा लिया है। एक-दूसरे की आंखों के सामने लोग ढेर हो रहे थे। उनके पैरों में चलने

की बिलकुल ताक़त न होती और वे उष्णता रहित यारंगों में ठिठुर ठिठुरकर मर जाते।

यारंग का हर बाशिंदा मर चुका था। बच गया था सिर्फ़ एक नन्हा सा लड़का, याराक। बेचारा घबड़ाकर दौड़ता हुआ पड़ोसी के यारंग में चला गया। लेकिन यहां भी लोग पत्थर की तरह सख़्त और ठंढे पड़े थे। लड़का बराबर पुकारता गया पर किसी से कोई जवाब न मिला। भय ने उसे घेर लिया। वह एक यारंग से दूसरे यारंग तक दौड़ता रहा, लेकिन सभी जगह लोग मौन थे।

मंज़िल कहां है, कहां रुकता है यह न जानते हुए याराक समुद्र के किनारे किनारे घूमता-भटकता रहा। सील का जमा हुआ मांस चपर चपर खाता और गिरता-लुढ़कता वह आगे चलता रहा। आख़िरकार कुछ शिकारी उसे उठाकर अपने पड़ाव में ले गये। लेकिन जब बच्चे ने अपनी रामकहानी सुनायी तो वे घबड़ा गये। दुष्ट पिशाच को वह अपने साथ जो ले आया था। शिकारियों ने उसे कुछ खाने को दिया और कहा "यहां से फ़ौरन चले जाओ।" जहां कहीं वह गया, लोगों ने उससे यही अनुरोध किया।

मि० थामसन दुष्ट पिशाचों से नहीं डरता था। वह याराक को अपने घर ले गया। बच्चा चार्ली के परिवार में बड़ा हुआ। वह कुत्तों की देखभाल और घरेलू कामकाज करने लगा। आगे चलकर वह शिकार करने और जानवरों को फंसाने के लिए भी जाने लगा। अपने इस दत्तक पुत्र पर मि० थामसन ख़ुश था।

लेकिन एक दिन मि० थामसन ने मेरी को याराक पर डोरे डालते हुए पकड़ा। यह उसे पसंद न था। मि० थामसन ने कहा:

"याराक, मैंने तुम्हारी जान बचायी है! अब तुम सच्चे और ताक़तवर आदमी बन गये हो। मैंने तुम्हें सफ़ेद आदमियों की मदद करने के लिए व्हेलमार जहाज़ों पर भेजा था। तुम अब कुशलता से

काम करना सीख गये हो। आज से तुम चुकचियों में, अपने लोगों में रहने जाओ। मैं रिंतेऊ से कहे देता हूं कि वह तुम्हें अपने यारंग में रख ले। जब काम के लिए ज़रूरत पड़ेगी तो मैं तुम्हें बुला लूंगा।"

याराक को इसकी उम्मीद न थी। उसने अच्छी तरह काम किया था और सख्त मेहनत की थी।

वह व्याकुल होकर चार्ली की ओर ताकता रहा और हकलाता हुआ बोला:

"चार्ली, म-म-मुझे अलग यारंग बनाने दीजिये। उसमें म-म-मेरी के साथ रहने दीजिये। मैं मेरी के साथ ब-ब-ब्याह..."

"ऐं, क्या कहा?!" मि० थामसन गरज उठा। "पागल हो तुम। बेवक़ूफ़, क्या कहा तुमने? अरे, तुमने कभी सुना है कि सफ़ेद आदमी की लड़की ने तुम जैसे जंगली के साथ ब्याह किया हो? उल्लू के पट्ठे! यह कभी न होगा! चलो, अपना बोरिया-बंधना समेट लो और फ़ौरन निकल जाओ! चले जाओ मेरे घर से। और ध्यान रखना, फिर कभी मेरे घर के पास न फटकना। यह है सफ़ेद आदमी का क़ानून।"

याराक ने अपनी बारहसिंगों की खालें उठा लीं और रिंतेऊ के यारंग में चला गया।

"कहां के सफ़ेद आदमी का यह क़ानून है?" याराक सोचता गया। "तीन गरमियों में चार्ली ने मुझे सफ़ेद आदमियों के साथ व्हेलों का शिकार करने भेजा था। मैं उनकी ज़बान बोलना भी सीख गया लेकिन मैंने उनके मुंह से कभी ऐसे क़ानून की बात नहीं सुनी। उल्टे जहाज़ के रसोइये ने खुद मुझसे कहा कि 'तुम चार्ली की बेटी से शादी कर लो। बड़ी अच्छी लड़की है!' शायद हर सफ़ेद आदमी अपना अलग क़ानून बना लेता है। कैसे अजीब लोग हैं!"

याराक देर तक रिंतेऊ के यारंग के गलियारे में खड़ा रहा। अंदर जाने में वह हिचक रहा था। घर से बाहर निकाला जाना

आदमी के लिए बड़ा अपमानजनक था। लोग उसे देखकर हंस देते। देर तक आगा-पीछा करते रहने के बाद वह खांस उठा कि उसके आने का पता लग जाये। उसके मन में विचार आया—क्या ही अच्छा होता अगर मैं अपने गले पर छुरी फेर लेता। विह्वल होकर याराक कराह उठा।

रिंतेऊ का सिर पोलोग के बाहर निकला।

"आओ, याराक, अंदर आओ!" मेज़बान ने हृदय से उसका स्वागत करते हुए कहा।

"रिंतेऊ, चार्ली ने मुझे निकाल बाहर कर दिया! उसने मुझे तुम्हारे यहां रहने के लिए भेजा है।"

"अच्छा, खुशी से रहो। यहां काफ़ी जगह है। हम साथ साथ व्यापारी लोगों की आवभगत करेंगे। बड़ा मज़ा है यहां। तुम जानते ही हो कि मेरा यारंग सारे किनारे की ख़बरों का ख़ज़ाना है।"

बुड्ढा रिंतेऊ माल-असबाब, बर्तन-भांडों, गर्ज़ यह कि अपनी सारी स्थावर-जंगम संपत्ति सहित, मि० थामसन का गुलाम था। वह लगभग बीस बरस चार्ली का आश्रित रहा था। रिंतेऊ की बीवी अक्सर चार्ली से मिलने जाया करती थी। उसके यहां से वह कई उपहार ले आयी थी। और खुद रिंतेऊ को चार्ली ने तोहफ़े में बंदूक़ दी थी। वाह! कितना ख़ुश था रिंतेऊ! ऐसे उपहार हर किसी को थोड़े ही मिलते थे!

रिंतेऊ चार्ली की कृपालुता का प्रशंसक था और सदैव उसे स्मरण रखता था।

चार्ली के साथ व्यापार-सौदा करने के लिए शिकारी और बहेलिये अक्सर उन जगहों तक से आते थे जहां सौदागर ब्रुख़ानोव का व्यापारी यारंग था। ये लोग हमेशा रिंतेऊ के यहां रहते थे। व्यापारियों के कुत्तों के लिए मांस का संग्रह रिंतेऊ गरमियों में कर लेता था।

वह अपना सारा समय शिकार करने में बिता देता था। चार्ली भी गरमियों में ज़्यादा मांस ख़रीदकर रिंतेऊ के मांस-भंडार में रख दिया करता था। जाड़ों में कुत्तों के लिए काफ़ी मांस की ज़रूरत होती थी। मतलब यह कि रिंतेऊ चार्ली के लिए जीता था और काम करता था।

उसका परिवार बहुत बड़ा था लेकिन एक बेटी को छोड़कर सब कोई मर चुके थे। यही लड़की अब घर का कारोबार संभालती थी।

अतः, जब याराक अपना ओढ़ना-बिछौना लेकर उसके यहां आया तो रिंतेऊ फूला न समाया। और इसमें आश्चर्य भी क्या था? क्या याराक मज़बूत और तगड़ा नौजवान नहीं था? सचमुच याराक को दामाद बना लेने में रिंतेऊ को बड़ी ख़ुशी होती।

रिंतेऊ ने उसकी ख़ूब ख़ातिर की और उसे ख़ुश करने की कोशिश की।

"अरे याराक, तुम दुखी क्यों हो?"

"रिंतेऊ, अपना भला चाहो तो ज़रा चुप बैठो।"

"ओह!" रिंतेऊ ने आश्चर्यचकित होकर कहा। "ठीक है। मैं चुप रहूंगा।"

पच्चीसवां अध्याय

नॉर्थ कंपनी विरोधी संग्राम की योजनाओं में मि० थामसन इतना मग्न था कि कॉफ़ी पीने के बाद अपने घर से समुद्र-तट तक चार फेरे लगाने का नित्यकर्म तक भूल गया। मध्याह्न का समय हो चुका था फिर भी मि० थामसन अपने कमरे से बाहर नहीं आया।

अपने पति के विलक्षण बर्ताव से परेशान होकर रूलतिना कमरे में आयी और धीरे से बोली :

"चार्ली, सौदे के लिए काफ़ी लोग बाहर खड़े हैं।"

मि० थामसन एकटक खिड़की के बाहर देखता रहा। अपनी गर्दन बिना घुमाये ही उसने हुक्म दिया:

"उनके लिए यारंग में चाय का बंदोबस्त करो। उन्हें कुछ बिस्कुट भी दे देना। लेकिन ध्यान रखना, बिस्कुट ज़्यादा मत देना। बस, उन्हें ललचाने भर के लिए काफ़ी हों। शिकार को फंदे में फंसाने के लिए ज़्यादा मांस की ज़रूरत नहीं।"

मि० थामसन कपड़े पहनकर बाहर चला गया।

परिवार के कमरे से होकर जाते समय खाल के परदे के नीचे से मर्दाना तोरबाज़ों का एक जोड़ा बाहर की ओर बढ़ा हुआ उसे दिखाई दिया। मि० थामसन ज़रा नज़दीक गया, तोरबाज़ों को एक ठोकर लगायी और गरजकर पूछा:

"किसके पैर हैं ये?"

परदा सरक गया और याराक का मुस्कराता हुआ चेहरा वहां दिखाई दिया।

मि० थामसन आगबबूला हो उठा।

"बेशरम, कुतिया के बच्चे! क्यों बे मैंने तुम्हें चेतावनी नहीं दी थी कि मेरे घर से दूर रहना?"

मि० थामसन ने बुरी तरह आंखें तरेरकर देखा। उसकी लाल नाक नीली पड़ गयी और मुंह से झाग निकलने लगा।

याराक कुछ झुका खड़ा था। उसने सिर ऊपर उठाकर साश्चर्य पूछा:

"लेकिन चार्ली, मैं क्यों दूर रहूं?"

आपे से बाहर होकर मि० थामसन ने याराक की टांग पकड़ी और उसे फ़र्श पर से घसीटता हुआ बाहर के दरवाज़े तक ले गया। अपने लौह-दांत पीसकर वह गरज उठा:

"हट जा यहां से!"

याराक धीरे धीरे उठ खड़ा हुआ, ऐंठकर मुस्कराया और अन्याय की गहरी भावना से व्यथित होकर वहां से चल दिया।

मेरी का सिर रोवेंदार परदे से बाहर निकला। ग़ुस्से से पागल भेड़िये की तरह उसकी आंखें लाल हो उठी थीं। अपने बाप की नज़र से नज़र भिड़ते ही उसने एक ज़ोरदार झटके के साथ परदा गिरा दिया।

भारी आह भरते हुए मि० थामसन वापस अपने कमरे में आया और चित्तक्षोभ से व्याकुल होकर अपनी झूलन-कुर्सी में धम्म से गिर गया। अपना पाइप उसने भर लिया और उद्वेग ही में उसके कश लगाता रहा।

"ज़रूर ज़रा सी ज़्यादती हुई। ख़ासकर इन दिनों लोगों को नाराज़ करना ठीक नहीं!"

तुनुकमिज़ाजी के लिए अपने आपको कोसते हुए मि० थामसन ने किसी तरह अपनी भूल सुधारने का निश्चय किया।

उसने मेरी को पुकारा, लेकिन कोई जवाब न मिला।

"बेन!" चार्ली चिल्लाया।

एक छोटा सा बालक दौड़ता हुआ कमरे में आया। उसने क़ीमती रोवेंदार कपड़े पहन रखे थे और उसका परका सफ़ेद लोमड़ी की खाल से सुशोभित था। बाल उसके काले थे और नाक-नक़्शा अच्छा था। वह पिता की बात की प्रतीक्षा करता हुआ दरवाज़े के पास खड़ा रहा।

"आओ बेटे, इधर आओ!" चार्ली ने प्यार से कहा।

बेन पिता की ओर बढ़ा और उसकी झूलन-कुर्सी के पास खड़ा रहा। अपने हाथ से उसे घेरते हुए मि० थामसन ने पूछा:

"क्यों बेटा, मेरी कहीं बाहर तो नहीं गयी?"

"नहीं, वह पोलोग में बैठी है।"

"फिर यहां क्यों नहीं आयी? अभी मैंने उसे बुलाया था।"

"वह नहीं आना चाहती।"

बस, बात यहीं रुक गयी। मि० थामसन विचारमग्न हो गया। अब तक किसी ने भी उसका हुक्म नहीं तोड़ा था। उसने एक आह भरी। शायद वही सही थी?

"बेन," उसने कहा, "बेटा, वह अल्बम ज़रा मुझे दे दो।"

मि० थामसन एक एक फ़ोटो देखता गया और अपने बचपन के एक फ़ोटो पर आ रुका जो नार्वे में लिया गया था। वह एकटक उसे देखता रहा।

"देखो बेन, यह कौन है जानते हो? अरे, तुम्हीं तो हो!"

बच्चे ने फ़ोटो देखी और फिर शीशे में अपनी शकल देखकर मुस्करा दिया।

"बेन, तुम अमरीका जाना चाहते हो? बस, हमेशा वहीं रहने के लिए?"

"जी नहीं!" बेन ने अपने सिर को एक झटका देते हुए अंतिम निर्णय के स्वर में उत्तर दिया।

छब्बीसवां अध्याय

चार्ली के गोदाम के पास शिकारी और बहेलिये भीड़ लगाये खड़े थे और उत्सुकता से लेन-देन आरंभ होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। बहुत देर तक वे प्रतीक्षा करते रहे लेकिन चार्ली बाहर नहीं आया। वह कहीं बीमार तो नहीं हो गया था?

याराक सौदागरों को निरुत्साह नहीं करना चाहता था और इसी लिए उसने अपने जीवन में हुए उलट-फेर के बारे में उनसे कुछ भी नहीं कहा। उसने रिंतेऊ को सख़्त ताक़ीद कर रखी थी कि वह चार्ली के घर से निकाल बाहर कर दिये जाने के बारे में किसी से

एक शब्द भी न कहे। यह उसे बड़ा लज्जास्पद लग रहा था कि उसके अपमान की बात लोग सुनें। पहले वह सफ़ेद आदमी के क़ानून की जड़ तक पहुंचना चाहता था।

चार्ली द्वारा हुई अपनी बेइज़्ज़ती को लोगों की आंखों से छिपाने की दृष्टि से याराक ने जबरन इस बात का प्रयत्न किया कि बाहर से वह खुश दिखाई दे। शिकारियों और बहेलियों की भीड़ में जाकर वह उनसे मिला और बातचीत करता रहा।

वामचो ने एक सफ़ेद रीछ के साथ हुए अपने मुक़ाबले का क़िस्सा बताया और कहा कि किस तरह बड़ी मुश्किल से वह उसकी खाल ला सका था। शिकारी लोग समाचारों का आदान-प्रदान और कुत्तों का अदल-बदल करते रहे।

पास ही नौजवानों की एक टोली ने बरफ़ पर कुश्ती के मुक़ाबले शुरू किये। कमर तक खुले उनके शरीरों में गरमाहट आयी और ठंढी हवा में उनमें से भाफ निकलने लगी।

एक तगड़ा पहलवान भीड़ में से आगे बढ़ा, अपना परका दूर फेंक दिया और चुनौती देने के पैंतरे में अपने हाथ रगड़ता हुआ लोगों के सामने से बड़ी अकड़ के साथ घूमता रहा। दो बार उसने भीड़ के आगे चक्कर लगाया लेकिन उसके साथ लड़ने के लिए कोई भी तैयार न था।

तब यह लड़का उपहास के स्वर में गरज उठा:

"ऊंह! क्या यहां एक भी जवांमर्द ज़िंदा नहीं? ज़रा देखो तो सही—सारी भीड़ में एक भी ताक़तवर आदमी नहीं! अरे, यह देखकर लड़कियां क्या कहेंगी?"

"इस शेखीख़ोर को सबक़ सिखाने के लिए मेरी दिमाग़ी हालत इस वक़्त काफ़ी अच्छी है!" याराक ने सोचा।

उसने अपना परका उतारकर फेंक दिया, अखाड़े में कूद पड़ा और ज़रा सा हंसकर गरज उठा:

"मैं हूं तैयार!"

"अरे, ज़रा सफ़ेद आदमी की वह सूती क़मीज़ तो हटा लो। शायद उससे तुम्हें तकलीफ़ होगी।"

याराक ने क़मीज़ उतार ली और धीरे धीरे अपने प्रतिद्वंद्वी की तरफ़ बढ़ा।

"ओहो, लड़कियां भी इकट्ठा हो गयीं!" भीड़ में से किसी ने कहा। "ओह, लड़कियां! इनकी वजह से या तो ख़ुशी होगी या शरमाना पड़ेगा। मेरा ख़्याल है कि यह कुश्ती देखने लायक़ होगी।"

लोगों की भीड़ पहलवानों को घेरकर खड़ी रही। रोवेंदार कपड़े पहने हुए बालक भीड़ में से घुसकर आगे बढ़ने लगे।

दोनों प्रतिद्वंद्वी एक दूसरे की बांहों में उलझे हुए, लेकिन कोई परिश्रम न करते हुए, देर तक अखाड़े की परिक्रमा करते रहे। दोनों एक दूसरे के लचीले शरीरों की ताक़त आज़मा रहे थे। यकायक याराक ने अपना हाथ ऊपर उठाया और प्रतिद्वंद्वी की गर्दन पर हथेली से एक ज़ोरदार तमाचा जड़ दिया। पानी पर डांड़ की सी आवाज़ अखाड़े में गूंज उठी। इसी क्षण प्रतिद्वंद्वी ने घुटने के नीचे याराक की टांग पकड़ी और देखते देखते दोनों शरीर धम्म से नीचे आ गिर गये। पलक झपते न झपते दोनों फिर उछलकर खड़े हुए और एक दूसरे के मुक़ाबले आ गये।

इधर कुश्ती चरम सीमा पर पहुंची ही थी कि उधर से एकदम चार्ली की आवाज़ सुनाई दी:

"ओहो!"

इस आवाज़ के साथ ही दोनों पहलवान बरफ़ में गिर पड़े और दर्शकों में हंसी के फव्वारे छूट गये।

"जीतने वाले को तंबाकू का एक पूरा डिब्बा इनाम!" चार्ली ने चिल्लाकर कहा। याराक को उसने पहचाना ही न था।

कुश्तीबाज़ फिर उलझ गये। उनकी आंखों में ख़ून उतर आया। यकायक याराक ने अपने प्रतिद्वंद्वी के पैर उखाड़कर उसे धरती पर पटक दिया और चारों ख़ाने चित कर दिया। भीड़ में ज़ोरदार हर्ष-ध्वनि गूंज उठी।

याराक अपने हारे हुए प्रतिद्वंद्वी की छाती पर सवार हुआ। तब कहीं मि० थामसन को पता चला कि जीतने वाला कौन था।

"ठीक है! तंबाकू बेकार नहीं गयी। आख़िर मेरे ही आदमी को मिली न!" अपनी खीझ छिपाने की कोशिश करते हुए उसने कहा।

सब लोग गोदाम की ओर चले गये। मि० थामसन ने बढ़िया ख़ुशबूदार तंबाकू का दो पौंड वाला एक बक्स निकालकर गंभीरतापूर्वक विजेता को थमा दिया।

याराक ने पुरस्कार स्वीकार किया और चार्ली की ओर कुछ भेद भरी दृष्टि से देखा। इस सफ़ेद आदमी के दिल की थाह लेना बड़ा कठिन था। अभी कुछ ही समय पहले चार्ली ने उसे मुर्दा कुत्ते की भांति टांग पकड़कर अपने घर से घसीट बाहर कर दिया था और अब उसी चार्ली ने उसे तंबाकू का एक पूरा बक्स दे दिया था।

"सौदा करेंगे बाद में," चार्ली ने ख़ुश होकर कहा। "पहले हम चाय पी लें।"

चार्ली की प्रसन्नता शिकारियों पर अपने आप प्रकट हो गयी। उन्होंने देखा कि उस दिन चार्ली की ख़ुशी का ठिकाना ही न था।

शिकारी पहले ही रिंतेऊ के यारंग में चाय पी चुके थे, लेकिन ख़ुद चार्ली के घर पर चाय पीने से कौन इनकार करता? कोई भी नहीं! गले तक पानी भरा हुआ होने पर भी नहीं।

"मेरी, लोगों को ख़ूब चाय पिलाओ!" मि० थामसन ने फरमाया।

चार्ली की इस प्रसन्नता से मेरी को और उसकी मां को भी बड़ी ख़ुशी हुई। चाय का सामान सजाने में उन्होंने ज़रा भी देर न लगायी। तेज़ चाय का एक बड़ा सा देग़ वे बाहर उठा लायीं।

शिकारी अर्ध-वृत्त बनाकर बैठ गये और ख़स्ते बिस्कुट चबाते और गरम चाय की चुस्कियां लेते हुए, अपने मेज़बान की तारीफ़ करते गये।

"चार्ली बड़ा भलामानुस है!"

"हां भई, सचमुच बहुत ही भला!"

बिस्कुट का एक बक्स पलक झपते स्वाहा हो गया और चार्ली ने दूसरा बक्स लाने की आज्ञा दी।

"सुनो जी, कुछ काव-काव* और ले आना! सुनो, ढेर से ले आना!" चार्ली चिल्लाया।

रूलतिना और मेरी ने ख़ुशी से मेहमानों की ख़ातिर की। हां, अपने घर में मेहमानों को भरपेट खिलाने-पिलाने में किसे ख़ुशी नहीं होती?

रूलतिना को अब पक्का विश्वास हो गया कि उसका गोरा पति रात भर दुष्ट पिशाचों को मनाता रहा था। उन्हीं की बदौलत तो उसके दिल में इतना उलट-फेर हो गया था। अपनी वास्तविक मन:स्थिति में वह हर बिस्कुट और शक्कर के हर फालतू टुकड़े के लिए उसे डांट पिलाता। इस बात को वह ख़ूब जानती थी।

"तुम्हारा पेट तो कूड़ा ठूंसने के ही लायक़ है। उसके लिए बढ़िया बिस्कुट बिलकुल बेकार हैं," चार्ली हमेशा अपनी बीवी से कहा करता। ख़ूब सिर खपाकर भी उसे पता न चला कि अब चार्ली पर कौनसा जादू फिर गया था।

---

* ख़स्ते बिस्कुट।

मनपसंद चाय के बाद लेन-देन शुरू हुआ। सौदे का श्रीगणेश वामचो ने किया। उसने मि० थामसन से कहा:

"चार्ली, मेरी बरफ़-गाड़ी पर एक सफ़ेद रीछ की खाल पड़ी हुई है। बहुत बड़ी खाल है यह। अंदर ले आऊं उसे?"

"नहीं, कोई ज़रूरत नहीं। हम बाहर ही देख लेंगे। यहां जगह कम है और रोशनी भी काफ़ी नहीं है।"

सारे शिकारी सड़क पर इकट्ठा हो गये। उस बड़ी भारी खाल को बरफ़-गाड़ी पर से उतारने में लोगों ने उत्सुकतापूर्वक वामचो की सहायता की। सब ने एकमत से घोषित किया कि खाल बहुत ही बढ़िया है।

मि० थामसन ने अपना चश्मा पोंछ लिया, धीरे से अपने घुटने टक लिये और फिर जानवर की तरह हाथ-पैरों के बल उस मोटी रोवेंदार खाल पर सरकता गया। कई जगह उसने रोवें पकड़कर खींचे लेकिन वे अपनी जगह से न हिले। खाल में ज़रा सा भी दोष न था। रोवें सब जगह बराबर थे और बरफ़ की तरह सफ़ेद। मि० थामसन ने खाल नापकर देखी तो पूंछ से कानों तक उसकी लंबाई चौदह फ़ुट थी। खाल को लपेट रखने का हुक्म देकर वह गोदाम की ओर चला गया।

इसी क्षण पहाड़ी की ओर से एक कुत्ता-गाड़ी दौड़ती हुई दिखाई दी। वह काफ़ी तेज़ी के साथ नीचे की ओर आ रही थी। शिकारियों ने फ़ौरन पहचान लिया कि यह अलितेत की गाड़ी है। मि० थामसन रुक गया। वामचो की लायी हुई खाल ज़रूर अच्छी थी लेकिन मि० थामसन को इससे भी ज्यादा दिलचस्पी थी अलितेत के आने में।

अलितेत की बरफ़-गाड़ी के कुत्ते ज़ोरों से भूंकते हुए और बड़ी तेज़ी के साथ चार्ली के घर की ओर दौड़े। और वहां पर खड़ी दूसरी एक बरफ़-गाड़ी के कुत्तों से टकरा गये। दूर की एक बस्ती के किसी

शिकारी ने अपना यह कुत्ता-दल वहां रखा था। फ़ौरन वहां लड़ाकू कुत्तों की भिड़ंत शुरू हो गयी। ज़ोरों से भूंकना शुरू हुआ, तेज़ दांत चमक उठे और बालों के गुच्छे हवा में लहराने लगे। एक सेकंड भी नहीं हुआ था कि अलितेत के शिकारी कुत्तों ने दूसरे दल के एक कुत्ते को फाड़कर चिथड़े चिथड़े कर डाला।

फिर आठ एक जवानों ने अलितेत के कुत्तों को उनके साज़ के सहारे पकड़ लिया और तब कहीं उन पागल जानवरों को वहां से हटाया जा सका।

पहले वाले कुत्ता-दल के मालिक ने अलितेत के पास जाकर पूछा:

"अलितेत, तुमने अपने कुत्ते मेरे कुत्तों पर क्यों छोड़ दिये?"

"तुमने उन्हें मेरे रास्ते में क्यों खड़ा कर दिया था? अब अगली बार देखना!" अलितेत ने अक्खड़पन से जवाब दिया।

"हां, ज़रूर देखूंगा," शिकारी बोला।

भीड़ में मि० थामसन को देखते ही अलितेत ने उस शिकारी की ओर से मुंह मोड़ लिया और अपने हाथ में बरफ़-गाड़ी का टेकन-डंडा पकड़े लंबे डग भरता हुआ मि० थामसन के पास गया। मृगचर्म के दस्ताने उतारकर उसने मि० थामसन से हाथ मिलाया।

"अलितेत, ज़रा घर ही में चलो न," मि० थामसन ने कहा। "मुझे तुमसे कुछ ख़ास बातें करनी हैं।"

अपनी बरफ़-गाड़ी की ओर देखकर अलितेत चिल्ला उठा: "तीग्रेना!"

"अरे, औरत का ख्याल अभी छोड़ दो," चार्ली ने कहा। "क्या तुम्हें मालूम नहीं कि जब आदमी काम-धंधे की बातें करते हैं तब औरत को नज़र से दूर रखना चाहिए?"

"लेकिन चार्ली, यह मेरी दूसरी बीवी है—वही जिसमें तुम्हें ख़ास दिलचस्पी थी। इसी लिए तो मैं उसे साथ ले आया।"

"नहीं, इस वक़्त नहीं!" निषेधसूचक हावभाव करते हुए मि० थामसन ने चिड़चिड़ाकर कहा।

"चार्ली, मैं चाहता हूं कि उसे आये से मिलने का मौक़ा न मिले," अलितेत ने हल्की आवाज़ में कहा। "वह उसका पहले का मंगेतर है। मैंने सुना है कि वह भी पहाड़ों से यहां आया है। तुम ख़ुद जानते हो कि किस तरह औरतें अक़्ल की खुक्खल होती हैं। वह बेलगाम कुतिया की तरह भाग जायेंगी—फिर तुम जाओ और उन्हें ढूंढ़ो!"

"तुम ज़रा भी फ़िक्र न करो। मेरे साथ आये का सौदा अभी तक पूरा नहीं हुआ है।"

तीग्रेना इन दोनों के पास आ गयी और चुपचाप चार्ली की ओर देखती रही। उसके बारे में उसने लोगों से सुन रखा था।

चार्ली अंग्रेज़ी में बोल उठा:

"ऑल राइट, वेरी वेरी गुड वूमन!"

कहकर चार्ली ने उसकी पीठ थपथपायी।

चार्ली की बड़बड़ का मतलब तीग्रेना समझ न पायी। यह बड़बड़ सुनकर उसे गुर्राने वाले वालरस की याद आयी। अपने ख़ूबसूरत परके की आस्तीन में मुंह छिपाकर वह मुस्कराती रही।

"हमारी औरतों को सफ़ेद आदमी पसंद आते हैं," अलितेत ने ख़ुशी के साथ कहा।

मि० थामसन ने तीग्रेना को अपनी बांह में पकड़ा और ज़ोरों से हंसते हुए अपनी ओर खींच लिया।

"तीग्रेना, तुम ज़रा इधर उधर घूम आओ!" मि० थामसन ने कहा और अलितेत की पेटी पकड़कर उसे अंदर ले गया।

कमरे में प्रवेश करते ही मि० थामसन ने जल्दी जल्दी दरवाज़ा बंद कर लिया और अपनी जाकेट उतारकर फेंक दी।

"अलितेत, बड़ा अहम काम है। ज़रा उस कुर्सी पर बैठो। कहो, कुछ पीना-वीना चाहते हो?"

"वाह! नेकी और पूछ पूछ! अरे कई दिन से उसके दर्शन नहीं हुए हैं। अब तो उसकी गंध तक याद नहीं रही।"

प्यालियों में व्हिस्की के गिरने की सुखद गलगलाहट सुनाई दी। दोनों उसे गटकने लगे। अलितेत ने अपना पेट थपथपाते हुए कहा:

"वाह भई, बहुत बढ़िया! कुछ और उंड़ेलो!"

"नहीं साहब!" मि० थामसन ने कहा। जब रात होगी तो हम कुछ और पियेंगे लेकिन इस वक़्त हमें ख़ास बातों पर बातचीत करनी है। क्या तुम नहीं जानते कि जब दिल में कारोबार की बात हो तो आदमी का दिमाग़ बिल्कुल साफ़ रहना चाहिए? मैं तुम्हें एक ख़ास ख़बर सुनाना चाहता हूं।"

अलितेत ने शराब की प्याली के अंदर अपनी उंगलियां फेरीं और उनमें लगी शराब की बूंदें चाट लीं।

कमरे में गरमी और घुटन महसूस हो रही थी। अलितेत ने अपनी पेटी खोल दी और परका उतार लिया। मि० थामसन ने पसीने से तर उसके बदन को नफ़रत की निगाह से देखा। वह चारख़ाने की एक क़मीज़ ले आया और बोला:

"अलितेत, इसे पहन लो! बिना क़मीज़ पहने बैठे रहना ठीक नहीं।"

अलितेत को यह बात बड़ी हास्यास्पद लगी। लेकिन उसने क़मीज़ पहन ली और परेशान होकर शरीर को ऐंठता-मरोड़ता रहा। कपड़े की क़मीज़ ने उसकी हरकतों पर रोक लगायी और उसके शरीर को गुदगुदाती रही। मृग-शावक की मुलायम रेशमी खाल से बनायी गयी क़मीज़ के साथ इस क़मीज़ की बराबरी कहीं हो भी सकती थी? फिर भी उसे पहन रखना ज़रूरी था, क्योंकि यहां मालिक था चार्ली। उसका अपना अलग क़ानून था।

अलितेत के चेहरे को बारीकी से देखते हुए मि० थामसन ने सहसा पूछा :

"अलितेत, कहो तुम्हें अच्छा ख़ासा व्यापारी किसने बनाया?"

अलितेत ने इस प्रश्न पर ज़रा सा सोच-विचार किया और फिर मुख़्तसर में और कुछ अस्थिरता के साथ बोल उठा :

"तुमने।"

"देखो, घबड़ाओ नहीं। मैं तुम्हें धोखा नहीं दूंगा। मैं तुम्हें धनी बनाना चाहता हूं। मैं तुम्हारा पुराना दोस्त हूं। हूं न?"

कुछ राहत पाकर अलितेत ने शिष्टता के साथ उत्तर दिया :

"हां, चार्ली! तुमने सही कहा। और अब हम दोनों की दोस्ती मामूली थोड़े ही रही है? अब हम विवाह-मित्र बन गये हैं। इसी लिए तो मैं तीग्रेना को यहां ले आया।"

"फिर भी अलितेत, सब से अहम बात यह है कि हम व्यापारी मित्र हैं, रोवेंदार खालों की ख़रीद-फ़रोख़्त में हम जिगरी दोस्त हैं। देखो, तुम्हारी बरफ़-गाड़ी पर पड़ी हुई सफ़ेद लोमड़ियों की वे दो सौ बीस खालें मैं तुमसे नहीं ख़रीदूंगा। उन्हें तुम वापस घर ले जाओ।"

अलितेत चौंक पड़ा। छोटे गड्ढों में उसकी नेवले जैसी आंखें तेज़ हो उठीं।

"न, न, घबड़ाओ नहीं," मि० थामसन ने मुस्कराते हुए कहा। "मैं चाहता हूं कि इन गरमियों में जब व्यापारी जहाज़ इधर आयेगा तब उसके गोरे कप्तान के साथ तुम ख़ुद ही सौदा कर लेना। इस व्यापार से तुम्हें काफ़ी चीज़ें मिल सकेंगी।"

"क्या कह रहा है चार्ली?" अलितेत सोचने लगा। "कैसी अजीब बातें कर रहा है वह!" अलितेत परेशान हुआ। वह फुसफुसाता हुआ हकलाया :

"चार्ली, बरफ़-गाड़ी पर पड़ी हुई खालों में से एक की भी क़ीमत नहीं चुकायी गयी। टुंड्रा के कई शिकारियों और बहेलियों के पास मैं गया लेकिन उनमें से किसी को कुछ भी नहीं दे सका। न तंबाकू की एकाध पत्ती, न एकाध छुरी और न अंगुश्ताना ही। वे क़ीमत की अदायगी के इंतज़ार में हैं। इन खालों के बदले में मैं तुमसे कई चीज़ें ख़रीदना चाहता हूं।"

"मैं जानता हूं। लेकिन तुम सभी खालें वापस ले जाओ, और तुम्हारे लिए ज़रूरी सभी चीज़ें मैं तुम्हें उधार दे दूंगा। तुम ये चीज़ें शिकारियों के पास ले जाओ और उन्हें भी उधार दे दो। बस, सब ठीक होगा। चीज़ों के बदले वे अगले साल रोवेंदार खालें दे देंगे।"

"हां, जरूर वे दे देंगे। मैं ख़ुद ही उनके पास से सारी खालें ले लूंगा।"

"बस, ठीक है। अगले साल उनके पास जो खालें होंगी उन्हें हम अभी पेशगी ख़रीद लेंगे। समझे अलितेत?"

"अलितेत सब कुछ जानता है। सारी खालें मेरे पास आ जायेंगी।"

"लेकिन मैं जो कहूं उसे तुम्हें ग़ौर से सुनना चाहिए और उसपर अमल करना चाहिए। तुम ख़ुद देखते हो कि मैं तुम्हारे लिए भरसक कोशिश करता हूं। मैं तुम्हें सिखाऊंगा कि किस तरह अमरीकी जहाज़ियों के साथ व्यापार करना चाहिए और किस तरह टुंड्रा के और सागर-तट के शिकारियों और बहेलियों के साथ लेन-देन करना चाहिए। अरे भई, यह ऐसी बात है जो मैंने पहले तुमसे कभी नहीं कही थी। गरमियों में जब व्यापारी जहाज़ यहां आयेगा तो मैं कप्तान से कह दूंगा कि तुम्हारे पास काफ़ी रोवेंदार खालें हैं और तब वह ज़रूर तुमसे मिलने आयेगा। अब हम साथ साथ व्यापार करेंगे – व्यापारी भाइयों की तरह।"

अलितेत मुग्ध होकर उसी तरह टकटकी लगाये सुनता रहा जिस तरह मांस के टुकड़े की आशा में बैठा हुआ कुत्ता।

"कैसा अच्छा हुआ कि मैं तीग्रेना को ले आया!" अलितेत ने सोचा। "चार्ली ने आज कैसी दरियादिली दिखायी है। सचमुच चार्ली बड़ा ही उदार है।"

"अच्छा अलितेत, समझ गये तुम्हें क्या करना है?"

"बेशक! अलितेत सब कुछ जानता है। तुमने अभी तक अलितेत को पहचाना नहीं!" अलितेत ने बड़ी शान के साथ कहा।

"अच्छा! अब हम चाहें जितनी पी सकते हैं और औरतों के साथ मज़े में वक़्त गुज़ार सकते हैं।"

सत्ताईसवां अध्याय

तीग्रेना बरफ़-गाड़ी के पास लौट गयी। चार्ली लाल-नकुए के घर और गोदाम की ओर कौतूहल से देखते हुए उसने सोचा: "जाने अलितेत मुझे यहां क्यों ले आया?"

आंखों पर शीशे के टुकड़े पहने हुए उस मोटे सफ़ेद आदमी की याद आते ही उसके चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गयी। "जब बोलता था तो कैसी अजीब गुर्राहट की आवाज़ सुनाई देती थी!"

बुड्ढा रिंतेऊ बरफ़-गाड़ी के पास आ पहुंचा।

"भली औरत," तीग्रेना को संकेत करते हुए उसने पूछा, "तुम यहां क्यों बैठी हो? मेरे यारंग में क्यों नहीं चलतीं? रिंतेऊ के यारंग में हमेशा मेहमानों के लिए चाय और कुत्तों के लिए मांस तैयार रहता है। मेहमानों के लिए चार्ली कुछ शक्कर भी दे देता है।"

तीग्रेना बुड्ढे की बात से प्रभावित हुई। उसके चेहरे पर सुजनता थी और शब्दों में कोमलता।

इसी समय तीग्रेना को वामचो दिखाई दिया। वह रीछ की खाल ठीक-ठाक कर रहा था। तीग्रेना का चेहरा खिल उठा। उसने रिंतेऊ से कहा :

"तुम बरफ़-गाड़ी उधर नीचे ले जाओ। मैं बाद में आऊंगी।"

फिर वह दौड़ी हुई वामचो के पास गयी।

"तुम रीछ के साथ क्या कर रहे हो, वामचो?"

"मैं उसको बेचना चाहता था लेकिन तुमने और अलितेत ने टांग जो अड़ा दी। मैं सौदा पूरा नहीं कर पाया। अब मुझे रीछ की खाल वापस ले जानी पड़ेगी। अलितेत ने आकर चार्ली का मिज़ाज बिगाड़ दिया।"

"वामचो, वह सारे रास्ते कुत्तों को ख़ूब तेज़ दौड़ाता रहा— बिल्कुल उस आदमी की तरह जो बरफ़ीले मैदानों से अपनी बरफ़-गाड़ी सरपट किनारे की ओर दौड़ाता है। और जैसे ही उसने इस मेरिकन को देखा कि वह अपना सब कुछ छोड़ बैठा। अपने कुत्तों को भी उसने छोड़ दिया। उसने पहले कभी ऐसा नहीं किया था। वह उन्हें कभी किसी को नहीं सौंपता था।"

"कहो तीग्रेना, तुमने चार्ली को देखा? कहते हैं कि वह बीवी के ज़रिये अलितेत का दोस्त है।"

तीग्रेना को उस मोटे बेडौल तांग की सूरत याद आयी और वह मौन हो गयी।

"तीग्रेना, ये बड़े भद्दे लोग हैं! दोनों के दोनों बिल्कुल भेड़िये हैं। कट्टम मेरकिचकिन!" वामचो ने एक ज़ोरदार गाली दी।

तीग्रेना मुस्करायी और व्यंगपूर्ण स्वर में बोली :

"ओहो वामचो, तुम तो बहादुर बन रहे हो!"

वामचो का चेहरा सुर्ख़ीमायल हो गया। उसने विषय बदल दिया।

"तुम्हारे लिए एक ख़ास ख़बर है। आये यहां अपने मालिक यातख़िरगिन की ओर से लोमड़ियों की खालें बेचने आया है।"

तीग्रेना के कान खड़े हो गये।

"वह तुम्हें याद कर रहा था। यातख़िरगिन के बारहसिंगों के रेवड़ों में वह एक चरवाहा बन गया है। अब किनारा उसने छोड़ ही दिया है। कहता है कि किनारे पर उसे तनहाई महसूस होती है और वहां रहने में बड़ी शरम लगती है। उसने अपनी बंदूक़ तक यातख़िरगिन को दे डाली।"

"आये शायद बीवी पाने के लिए उमीदवारी कर रहा है? यातख़िरगिन के कई लड़कियां हैं," तीग्रेना ने कहा।

"मुझे मालूम नहीं," वामचो ने जवाब दिया।

"आये है कहां?"

"रिंतेऊ के यारंग में। वह ख़बर सुना रहा है। सारा दिन वह बाहर नहीं आया। तीग्रेना, तुम नहीं जाना चाहतीं रिंतेऊ के यारंग में? उसका यारंग सारी ख़बरों का ख़ज़ाना है। जिसके पास कोई नयी ख़बर है उसकी सब जगह ख़ातिर होती है।"

"वामचो, मेरी समझ में नहीं आता कि कहां जाऊं। मैं बिल्कुल भटक गयी हूं।"

रिंतेऊ के यारंग में बड़ा उत्साहपूर्ण वातावरण था। सिर के नीचे हाथ बांधे आये खालों की एक खटिया पर लेटा था और इर्दगिर्द बैठे लोगों को कोई कहानी सुना रहा था। श्रोता उसकी बातों में काफ़ी दिलचस्पी ले रहे थे।

"... जब मैं यातख़िरगिन के पास आया तो उसने मुझसे पूछा: 'क्या तुमने किनारा सदा के लिए छोड़ दिया? बताओ तो, क्यों छोड़ दिया? क्या वहां की ज़िंदगी बुरी है?'

"'जी हां,' मैंने कहा, 'सचमुच बुरी है। एकदम भद्दी। अलितेत ने मेरी बहू मुझसे छीन ली। मेरे हाथ काम नहीं करना चाहते।'

"'ग्रहा!' यातख़िरगिन ने कहा। 'मेरे यहां हाथों की कोई ज़रूरत नहीं। मेरे रेवड़ों की देखभाल के लिए ज़रूरत है पैरों की। अगर तुम ठीक तरह दौड़ो और रेवड़ों की अच्छी निगरानी करो तो तुम्हें खाने को अच्छा मिलेगा। तुम्हारे लिए हम कोई लड़की भी खोज लेंगे।'

"इसी समय औरतें बढ़िया उबला हुआ मांस ले आयीं।

"'लो कुछ खा लो,' यातख़िरगिन ने कहा।

"मैंने खाना शुरू किया।

"'ओहो!' उसने कहा। 'अरे, तुम तो गज़ब के पेटू हो। मैं मानता हूं कि तुम अच्छे चरवाहे बनोगे। अगर ऐसा न हुआ तो मैं तुम्हें फ़ौरन निकाल बाहर करूंगा!'

"फिर मैं रेवड़ में चला गया। काम वहां है सिर्फ़ बारहसिंगों की रखवाली करने का! बस, यह कोशिश करो कि वे दिन-भर चरते रहें और लेटने न पायें बल्कि बराबर काई कुतरते रहें ताकि मोटे हो जायें। ओह, कितना कठिन काम! जब बरफ़ीला तूफ़ान उठता है तो आपको सोने का मौक़ा नहीं मिलता। भेड़ियों से बारहसिंगों का बचाव जो करना होता है। खुद आप ही को भेड़िये की तरह भागना भी पड़ता है। और जब मौसम अच्छा होता है तो आपको लगे रहना पड़ता है लोमड़ियों के लिए फंदे लगाने में।

"फिर एक दिन ख़ुद यातख़िरगिन ख़ूबसूरत बारहसिंगों की बरफ़-गाड़ी पर मेरे रेवड़ का मुआयना करने आया।

"'आये,' उसने कहा, 'मैं देखता हूं कि जिस तरह तुम गज़ब के पेटू हो उसी तरह कमाल के चरवाहे भी हो। तुमने बारहसिंगों के रेवड़ को सुरक्षित रखा है। तुम्हारे फंदों में फंसी हुई लोमड़ियां भी अच्छी हैं। चलो, उन्हें बेच डालें। वाह वाह! आज तक मैंने कभी ऐसी लोमड़ियां नहीं देखीं। उन्हें सीधे चार्ली लाल-

नकुए के पास ले जाना चाहिए ग्रौर उनके बदले में चीज़ें ख़रीदनी चाहिए क्योंकि ग्रलितेत तो उन्हें मामूली खालें ही कहेगा—बोलेगा : एक पूंछ, दो पूंछ, तीन पूंछ... पौ फटने तक किसी बारहसिंगे के पेट तले ज़रा झपकी लो ग्रौर फिर सीधे व्यापारी-यारंग को चले जाग्रो। मेरे गरम जूते पहन लो। वे बड़े मज़बूत हैं। तुम्हारा रास्ता लंबा है। फिर इधर वापस ग्राग्रो ग्रौर मेरे रेवड़ों की रखवाली करते रहो। तीन बरस के ग्रंदर ही मैं तुम्हें एक ग्रच्छी लड़की दूंगा।'

"लेकिन मुझे उसकी कोई लड़की-वड़की नहीं चाहिए," ग्राये ग्रागे बोलता गया। "मेरा दिल किनारे के लिए तरस रहा था। मेरी ग्रांखें किनारे के बाशिंदों को देखने की प्यासी थीं। मैं उनकी बातें सुनने को ग्रातुर था। यहां जिधर देखो उधर लोग ही लोग ग्रौर वहां सिर्फ़ बारहसिंगों के रेवड़। ख़ैर, मैं ग्रागे बढ़ता गया। दो दिन चलते रहने के बाद मैंने 'ख़रगोश-राह' घाटी के पास एक ग्रलाव जलता हुग्रा देखा। उसके पास ही एक तंबू ग्रौर एक कुत्ता-दल नज़र ग्राया। मैं वहां दौड़ता हुग्रा गया ग्रौर जानते हो वहां किससे मुलाक़ात हुई? एक रूसी से! वह बड़ी दूर से ग्राया था ग्रौर तीन महीने से इधर घूम रहा था। वह जा रहा था चुकोत्स्क पठार की ग्रोर। ग्रपने को सरदार कहता था। लेकिन मैंने सोचा कि बिना दाढ़ी के कोई सरदार कैसे हो सकता है! उसने मुझसे पूछा :

"'चुकोत्स्क पठार यहां से बहुत दूर तो नहीं?'

"'जी नहीं,' मैंने कहा, 'नज़दीक ही तो है। कुत्ता-गाड़ी में सिर्फ़ एक दिन का सफ़र है।'

"'बस, सिर्फ़ एक दिन का? तब मेरे कुत्ते कुछ ग्रौर ग्राराम कर सकते हैं। बैठो भई,' उसने कहा, 'बोलो चाय पियोगे?'

"उसके पास सब कुछ था—शक्कर, बिस्कुट ग्रौर टीन के डिब्बे में मांस, ग्रौर तंबाकू भी। हो सकता है वह सचमुच ही

सरदार था। हम रात-भर बातें करते रहे। उसने हर बात के बारे में मुझसे सवाल पूछे। बोलते बोलते मेरा तो भाई गला सूख गया। लेकिन वह था कि सवाल पूछता ही गया। फिर ख़ुद बोलने लगा। उसने ऐसी ऐसी बातें बतायीं कि मैं घबड़ा उठा। उसने कहा कि उधर रूसियों के महाद्वीप पर लड़ाई हुई थी। ग्राप लोगों को याद होगा कि हमने भी उसके बारे में कुछ ग्रफवाहें सुनी थीं। धनी ग़रीबों से लड़ रहे थे। ग्राख़िर सब धनी लोगों को निकाल बाहर कर दिया गया ग्रौर मेरे-ग्रापके जैसे लोग सरदार बन गये ग्रौर ग्रपने क़ानून ख़ुद बनाने लगे। उसने चार्ली ग्रौर ग्रलितेत की भी बात की। उसने कहा कि उस मेरिकन को किनारे से भगा दिया जायेगा—ग्रौर ग्रलितेत को भी।

"'हम तुम्हें व्यापार का काम देंगे,' उसने कहा।"

ग्राये हंस उठा।

"वह सरदार नहीं है—ग्रभी बहुत ही छोटा है वह। कहता है कि जल्द ही चुकोत्स्क पठार पर भी नया क़ानून लागू होगा ग्रौर फिर उसका ग्रमल सारे किनारे पर ग्रौर समूचे टुंड्रा में होगा। पता नहीं, उसे मालूम था या नहीं कि वह क्या बोल रहा था..."

यारंग में निःस्तब्धता छा गयी। इस यारंग में लोगों ने इतनी कौशल-कुतूहल-भरी कहानी पहले कभी न सुनी थी। क़िस्सा-गो की कला में ग्राये कहां से इतना माहिर हो गया था? 'ख़रगोश-राह' घाटी में कहीं पिशाचों से तो उसकी मुलाक़ात नहीं हुई? कौन कहे कि ग्रकेले सफ़र करते समय ग्रादमी का किससे वास्ता पड़ेगा?

"फिर उस रूसी का क्या हुग्रा जी?" किसी ने पूछा।

"उसने मुझे भी ग्रपनी बरफ़-गाड़ी पर बिठा लिया ग्रौर चुकोत्स्क पठार की ग्रोर गाड़ी दौड़ा दी। मैंने उससे कहा कि ग्राप इस राह से नहीं जा सकेंगे क्योंकि ग्रागे पहाड़ों की कतार खड़ी है।

हां, उधर एक घाटीनुमा संकरी राह है, लेकिन उसे खोज निकालना नामुमकिन है। 'ओह, मैं ज़रूर यहां से आगे बढ़ूंगा,' उसने कहा। बड़ा बहादुर आदमी है! उसकी जेब में एक काग़ज़ था जिसपर सभी नदियों का और किनारे का नक़्शा बना हुआ था। 'अच्छा, जैसा आप चाहें,' मैंने कहा। वह देर तक मेरे हाथ से हाथ मिलाये रहा और फिर बोला:

"'अच्छा, आये! हम जल्द ही फिर मिलेंगे। तुम और मैं यहां नया क़ानून बनायेंगे। यहां की ज़िंदगी बदलेंगे...' अदना-सा आदमी और ज़िंदगी बदल डालने की बात! ज़िंदगी तो दूर ही रही, एक यारंग को बदल डालना भी आसान नहीं है। उस आदमी की कुछ थाह ही नहीं लग पाती।"

"अरे वह आदमी नहीं था, कोई पिशाच था," एक बुड्ढे शिकारी ने दृढ़ विश्वास के स्वर में कहा।

याराक ने आये के पास सरककर पूछा:

"वह कहीं सफ़ेद आदमियों का क़ानून तो नहीं ले आया था?"

"मुझे नहीं मालूम," आये ने कुछ टालटूल के स्वर में जवाब दिया।

"अरे, इन तांगों का कभी विश्वास न करना। अमरीकी व्हेलमार जहाज़ों पर उनमें से कइयों को मैंने देखा है। परले सिरे के झूठे और धोखेबाज़ होते हैं वे। उसके मन की थाह लेना नामुमकिन है। और कहो, नाम क्या था इस रूसी का?"

"अन्द्रेई," आये बोला। "उसकी आंखों से शराफ़त टपकती है, लगता है सच्ची बात कह रही हैं।"

वामचो पोलोग में सरक गया और उसके पीछे पीछे तीग्रेना भी। तीग्रेना ने अपना ख़ूबसूरत परका अपने कंधों पर से खिसका दिया और किवाड़ के पास बैठ गयी।

"काकोमेई, तीग्रेना!" एक घुटने के बल ऊपर उठकर ग्राये ने ख़ुशी से ग्रभिवादन किया। "क्या तुम भी सौदागर बन गयीं? तुमने भी व्यापारी-यारंगों की सैर करनी शुरू कर दी?"

तीग्रेना कुछ न बोली। उसने ग्राये की ग्रोर देखा।

"ग्राये, तुम कहानी कहते चलो!" सभी ग्रोर से लोग चीख़ने चिल्लाने लगे।

"तुम्हारी कहानियां दिलचस्प होती हैं।"

"टुंड्रा में ग्रच्छी परी-कथाएं सीख गये हो तुम।"

"उस दढ़मुंडे के बारे में कुछ ग्रौर बताग्रो न।"

वामचो ने ग्रपने पास वाले ग्रादमी की ग्रोर झुककर धीरे से पूछा :

"क्या सुना रहा था ग्राये?"

"बड़ी दिलचस्प ख़बर। बहुत ही दिलचस्प। ऐसी ख़बर मैंने ग्राज तक कभी नहीं सुनी।"

"ग्रागे कहो, ग्राये! चुप क्यों हो गये?" वामचो ने ग्राग्रहपूर्वक कहा।

लेकिन तीग्रेना के ग्रा जाने से जैसे ग्राये की बोलती बंद हो गयी। वह तीग्रेना से पूछना चाहता था कि कैसे उसकी ज़िंदगी कट रही है, वह क्या सोचती है, इत्यादि। लेकिन इन सब के सामने उससे बात करने में वह शरमा रहा था। वे जानते थे कि ग्रलितेत ने उससे तीग्रेना को छीन लिया था। वे शायद उसकी खिल्ली उड़ाने लगते। काश, तीग्रेना इन लोगों के साथ यहां न ग्राती। ग्राये ने चुपचाप ग्रपनी चिलम जलायी। वह ग्रादमी ही क्या जिसपर लोग तरस खायें! फिर भी वह उस ग्रोर सरक गया जहां तीग्रेना बैठी थी।

इसी समय पोलोग में एक स्त्री का सिर घुस ग्राया।

"तीग्रेना," उसने कहा, "ग्रलितेत ने तुम्हें बुलाया है।"

वहां के लोगों की विचित्र नज़रों से बचने के लिए बाहर जाने का यह मौक़ा पाकर तीग्रेना को बेहद खुशी हुई। उसने अपना रोवेंदार परका ओढ़ा और चुपचाप रेंगकर बाहर चली गयी।

"अरे आये, तुमने अपनी बीवी को क्यों जाने दिया?" एक जवान शिकारी ने व्यंगपूर्वक पूछा।

याराक ने उसे क्रुद्ध दृष्टि से देखा। उसे लगा कि यह ताना उसी पर कसा गया है।

"किसी की बीवी को कोई उसकी नाक के नीचे से भगा ले जाये तो यारों की बन आती है," मज़ाक़ जारी रहा।

याराक ने दांत पीसकर उस दिल्लगीबाज़ के मुंह पर एक तमाचा जड़ दिया।

शरम का मारा वह आदमी मुट्ठी में नाक पकड़े, एक कोने में जा बैठा। यारंग में सन्नाटा छा गया। आये ने अपना परका कंधों पर रख लिया और रेंगकर यारंग से बाहर चला गया।

आये के दिल का दर्द समझकर उसके प्रति सब से ज़्यादा सहानुभूति पैदा हुई याराक के मन में। अपना अलग घर बसाने में दोनों असफल रहे थे। और जिस शिकारी के बीवी न हो उसे मर्द कौन कहेगा? बिना औरत के आदमी का लोग मज़ाक़ उड़ाते ही हैं।

याराक जल्दी जल्दी आये के पीछे हो लिया जो कि समुद्र-तट की ओर जा रहा था। वह उसके पास पहुंच गया और फिर दोनों चुपचाप बरफ़ीली चट्टानों तक चले गये।

सूरज पहाड़ों के पीछे डूब गया। शांत संध्या का समय था। कुछ ही दूरी पर मि० थामसन का घर स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसकी छोटी सी खिड़की में से रोशनी दिखाई दी जो तुरंत ही परदे के पीछे ग़ायब हो गयी।



"मेरकिचकिन !" याराक ने हल्की ग्रावाज़ में एक गाली दी। "चार्ली हमेशा ही ऐसा करता है जब उसके कमरे में ग्रौरत हो।"

ग्राये जमी हुई बरफ़ को ठुकराता हुग्रा खड़ा था। जबतब वह उस सफ़ेद ग्रादमी के मकान पर नज़र दौड़ा लेता।

"ग्राये, तुम्हारी ज़िंदगी बेकार है," याराक ने सहानुभूति के स्वर में कहा। "वही हालत मेरी भी है। मैं मेरी के साथ ब्याह करना चाहता था लेकिन चार्ली ने मुझे घर से निकाल दिया। वह मुझपर बरस पड़ा। फिर मुझे टांग पकड़कर घसीटा। मुझे बड़ी ही शरम ग्रायी। लेकिन मैं करता क्या? मैं दुबला जो ठहरा। कुछ नहीं कर पाया। हर सफ़ेद ग्रादमी का ग्रपना ग्रलग क़ानून होता है।"

"चार्ली ने तो खैर तुम्हें टांग पकड़कर खींचा लेकिन ग्रलितेत ने तो मेरे दिल पर चोट की है। मेरे दिल को वह उसी तरह खींच रहा है। जिस तरह मरे हुए बारहसिंगे के कलेजे को खींचकर बाहर निकाला जाता है। ग्रोह! बड़ा दर्द होता है! मैं खुद ग्रपने ऊपर गोली चलाना चाहता था... लेकिन ग्रब... उस रूसी ने मुझसे कई बातें कही हैं... मैं हर समय सोचता ही रहता हूं। लगता है कि सोचते सोचते मैं पागल हो जाऊंगा। उसने जो बातें कहीं उनमें से ग्राधी भी मेरी समझ में नहीं ग्रायीं। एक रात में इतनी ज्यादा बातें हुईं। याराक, जानते हो उसने मुझसे क्या कहा? उसने कहा कि ग्रलितेत ग्रब इतना मालदार नहीं रह पायेगा। नया क़ानून उसे एक मामूली ग्रादमी बनाकर छोड़ेगा।"

"ग्ररे यार, वह झूठा है। ग्राये, सभी सफ़ेद ग्रादमी एक ही थैले के चट्टे-बट्टे हैं। उनकी ज़बानें उनके मुंह में उसी तरह फड़फड़ाती हैं जिस तरह हवा में चिथड़ा। ग्रमरीकी व्हेलमार जहाज़ों पर मेरा कई सफ़ेद ग्रादमियों से पाला पड़ चुका है।"

"लेकिन उस रूसी की आंखों में मुझे भलमनसाहत नज़र आयी। उनमें अच्छाई की झलक थी और सच्चाई की भी। वह उस मेरिकन को भी किनारे से भगा देगा।"

याराक ने व्यंगपूर्वक हंसकर कहा:

"चार्ली को कौन भगा सकता है भई? उसके पास काफ़ी माल है और वह ताक़तवर आदमी है। रूसियों के साथ वह जलता पानी पियेगा और हंसेगा। उनके यहां एक ही क़ानून है। मैं जानता हूं, रूसी व्यापारी पीट ब्रुख़ानोव जब चार्ली के यहां आया था तभी मैंने देख लिया था।"

"नहीं याराक, यह आदमी दूसरी क़िस्म का है। वह है जवान लेकिन बातचीत करता है बुज़ुर्ग की तरह। कहता है कि वह बहुत से नये क़ानून साथ लाया है। इनमें से एक ब्याह का क़ानून भी है। सचमुच उसी ने यह सब कहा था।"

एक बरफ़ीली चट्टान के पीछे से वामचो आगे आया।

"क्यों जी, ये शिकारी बिना बंदूक़ के बरफ़ीले मैदानों में क्यों आये?" उसने मुस्कराकर पूछा।

दोनों जवान हंस उठे।

"आज का दिन बहुत बुरा रहा," वामचो ने आगे कहा। "मैं सफ़ेद रीछ की एक बढ़िया खाल ले आया लेकिन उसे बेच न सका। चार्ली लाल-नकुआ चला गया। सब कुछ छोड़कर सारा दिन अलितेत के साथ रहा। जब अलितेत यहां होता है तब लेन-देन का मामला बिगड़ जाता है। और अब की बार तो वह चार्ली के लिए तीग्रेना को लाया है। अभी उसे वहां बुला ले गये।"

"आह! वामचो आगे मत बोलो! मैं गुस्से से पागल हो जाऊंगा।"

"गुस्सा तो हर आदमी के दिल में होता है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है आये, कि तुम्हारा गुस्सा दिल की गहराइयों में छिप गया है।"

"आह!" आये कराह उठा और अपने हाथ को अपने ही दांतों से इस तरह काट लिया कि उससे ख़ून निकल आया।

"मैं जानता हूं, अब चार्ली क्या करेगा," याराक ने कहा। "वह तीग्रेना को ज़बरदस्ती जलता पानी पिला देगा। उसका गला जल जायेगा और वह बिल्कुल कमज़ोर मत वाली और बच्चे की तरह लाचार बन जायेगी। औरतों के साथ चार्ली हमेशा ऐसा ही करता है।"

आये की नस नस में अपमान तथा तीव्र संताप की एक लहर सी दौड़ गयी। वह तीर की तरह चार्ली के घर की ओर दौड़ पड़ा। कमरे का किवाड़ अंदर से बंद था।

"अरे, किससे डरकर तुमने किवाड़ बंद किये हैं? —सफ़ेद रीछ से?" किवाड़ को झंझोड़कर आये गरज उठा।

तीग्रेना की नशे में डूबी हुई आवाज़ उसे सुनाई दी। वह गा रही थी।

क्रोध से उन्मत्त होकर आये ने धक्का देकर किवाड़ खोला और चार्ली के कमरे में झपट पड़ा।

"क्यों बे बेशरम, कुतिया के बच्चे!" चार्ली दहाड़ उठा। "मेरे घर में इस तरह घुसते तुम्हें शरम नहीं आती? मैंने तुम्हें बुलाया था क्या? हट जाओ यहां से! हट जाओ, नहीं तो गर्दन मरोड़ दूंगा!"

आये चार्ली पर झपट पड़ा और उसका गला पकड़ लिया। यह हमला इतना अचानक और ज़ोरदार था कि चार्ली अपने को संभाल भी न पाया और अपनी झूलन-कुर्सी पर धड़ाम से गिर पड़ा। आये ने उसकी गर्दन और भी मज़बूती से पकड़ ली। लड़ते हुए इन आदमियों के बोझ से कुर्सी पीछे की ओर लुढ़क पड़ी और दोनों ज़मीन पर टेढ़े-मेढ़े गिर पड़े। ग्रामोफ़ोन भी पलट गया और उसका

बड़ा भारी सिंगा झनझनाकर नीचे आ गिरा। चार्ली का चेहरा बैंगनी हो गया।

इसी वक़्त नशे में धुत्त अलितेत लड़खड़ाती चाल से कमरे में आ पहुंचा। वह आये पर झपटा और उसे पकड़कर दूर ले गया। आये ने ज़ोर लगाकर अपने को छुड़ाया। फिर कूदकर मेज़ पर खड़ा हो गया और लैंप ठुकराकर ज़मीन पर गिरा दिया। कमरे में घुप्प अंधेरा छा गया जिससे फ़ायदा उठाकर आये घर से नौ दो ग्यारह हो गया।

अपना हिरन के चमड़े का पतलून पहनने की कोशिश में कुदकता-फुदकता हुआ अलितेत चीख़ उठा:

"मेरी बंदूक़ कहां है? जल्दी करो, उस हरामी छोकरे को मैं अभी मौत के घाट उतार दूंगा!"

लेकिन आये पहाड़ी तक जा पहुंचा था और बस्ती अब क़रीब ही थी।

अट्ठाईसवां अध्याय

सूरज चमक रहा था। हवा स्वच्छ तथा पारदर्शी थी। बरफ़ की चमकदार शुभ्रता और सूरज के प्रज्वलित प्रकाश के कारण आंखें चौंधिया जाती थीं। अपनी ज़बानों को लपलपाते हुए कुत्तों का दल नरम बरफ़ में लड़खड़ाता हुआ बरफ़-गाड़ी को खींचने की कोशिश कर रहा था। गाड़ी के साथ ही साथ अन्द्रेई जुकोव एक एक क़दम आगे बढ़ रहा था। हर क़दम पर उसके पैर बरफ़ में धंस जाते थे। चारों ओर हिमाच्छादित पहाड़ियों और घाटियों का विस्तीर्ण प्रदेश फैला हुआ था। कहीं भी प्राणि-जीवन की कोई निशानी न थी...

पेत्रोग्राद विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग का विद्यार्थी अन्द्रेई जुकोव १६२२ की शरद में कामचात्का स्थित पेत्रोपावलोव्स्क में जा

पहुंचा था। इधर उसने गुबेर्निया (प्रदेश) क्रांति समिति द्वारा रखा गया बरफ़ीले मार्ग से उत्तरध्रुव-तट की सैर करने का प्रस्ताव फ़ौरन स्वीकार कर लिया था। अतः वह जाड़ों में चुकोत्स्क की प्राचीन रूसी भूमि का निरीक्षण करने के दौरे पर रवाना हुआ था।

विश्वविद्यालय के एक पुराने प्रोफ़ेसर ने, जिसने अपने निर्वासिन दंड के कुछ बरस इस प्रदेश में बिताये थे, जुकोव को अपना सारा चुकची शब्द-संग्रह दे दिया था। इससे अन्द्रेई को बड़ी सहायता मिली। कुत्तों की बरफ़-गाड़ी पर तीन महीने की यात्रा में कई स्थानीय निवासियों के साथ अन्द्रेई की मुलाक़ात हुई। इनके जीवन के बारे में कुछ जानकारी उसने पुस्तकों और नृवंशशास्त्रीय ग्रंथों से प्राप्त की थी।

अब वसंत का आगमन हुआ था और उसकी लंबी यात्रा भी शीघ्र ही समाप्त होने को थी। कामचात्का और कोर्याक देश बहुत ही पीछे छूट चुके थे और वह चुकोत्स्क टुंड्रा में आ पहुंचा था।

अन्द्रेई ने अपने कुत्तों को रोक लिया। "कहां होगी वह संकरी पहाड़ी राह जिसके बारे में उस बारहसिंगों वाले रेवड़ के चरवाहे ने बात की थी?" पर्वतपृष्ठों की अनंत पंक्ति पर एक निगाह डालते हुए अन्द्रेई ने सोचा।

बरफ़ में रास्ते के कोई निशान नज़र नहीं आ रहे थे। न कोई पद-चिह्न दिखाई दे रहे थे और न घास का तिनका ही। यदि अन्द्रेई को एकाध बारहसिंगा या ख़रगोश भी दिखाई देता तो उसे कितनी ख़ुशी होती। कुत्तों की ख़ुराक भी अब उसके पास काफ़ी न थी। पेट-भर खाना न मिलने के कारण बेचारे जानवरों को भी तकलीफ़ होने लगी थी।

"हां नज़दीक का रास्ता ढूंढ़ने की कल्पना मुझे छोड़ देनी पड़ेगी। कोई और चाहे तो उस राह चला जाये।"

अन्द्रेई गाड़ी पर बैठा और उसे किनारे की ओर मोड़ दिया। कुत्ते भी मानो अपने मालिक की इच्छा को ताड़कर अधिक उत्साह से दौड़ने लगे। पहाड़ी प्रदेश में अलौकिक शांति फैली हुई थी।

यकायक अन्द्रेई की आंखों में दर्द होने लगा। यह दर्द इतना तेज़ था कि उसने अपनी आंखें हाथ से ढंक लीं। बड़ी देर के बाद उसने आंखों पर से हाथ हटाया। फ़ौरन उसे मालूम हुआ कि वह कुछ भी देख नहीं पा रहा है। मानो उसकी आंखों पर काला परदा गिर गया हो।

अन्द्रेई ने कुत्तों को रोक लिया। उसने अपनी आंखें मलीं और यह जानकर उसे बड़ा धक्का लगा कि वह अंधा हो गया था। बरफ़-गाड़ी पर लेटे लेटे वह उस शांति की थाह लेता रहा जो चारों ओर से उसे घेरे हुए थी। घबड़ाहट का मुक़ाबला करने की कोशिश वह कर ही रहा था।

आख़िर उसने कुत्तों की अंत:प्रेरणा विश्वास करने का निश्चय किया। बरफ़-गाड़ी पर बैठकर उसने अगुआ कुत्ते को पुकारकर कहा:

"वेर्नी, चलो, ज़ोर से आगे बढ़ो!"

कुत्ते फ़ौरन दौड़ने लगे। देर तक समगति से दौड़ने के बाद कुत्ते यकायक धीरे धीरे चलने लगे।

"अरे, यह क्या?" अन्द्रेई ने सोचा और टेकन-डंडे के सहारे उसने गाड़ी रोक दी। उसे ऐसा लगा कि कुत्तों को कुछ मार्ग-चिह्न मिल गया हो।

उसने बरफ़ में कुछ टटोलकर देखा तो वहां से गुज़री हुई एक बरफ़-गाड़ी की लीक दिखाई दी। अन्द्रेई ने राहत की सांस ली। इस लीक का मतलब था कि कहीं नज़दीक ही आदमियों की बस्ती है।

कुत्ते फिर हवा से बातें करने लगे। लेकिन हवा अब अन्द्रेई के मुख की दिशा में नहीं बह रही थी।

"हवा का रुख़ बदल गया है," अन्द्रेई ने सोचा।

हवा की दिशा निश्चित रूप से समझने के लिए उसने अपना टोप उतार लिया। इसी क्षण उसने किसी को अपना नाम लेकर पुकारते हुए सुना:

"अन्द्रेई!"

"मुझपर किसी ने जादू तो नहीं कर दिया?" अन्द्रेई ने सोचा। "इस निर्जन बरफ़ीले जंगल में मेरा नाम लेकर पुकारने वाला आख़िर होगा कौन?"

बरफ़-गाड़ी रोककर वह अपना सिर इधर उधर घुमाता हुआ ग़ौर से सुनने लगा।

पुकार फिर सुनाई दी और तब अन्द्रेई ने ऊंचे स्वर में जवाब दिया:

"हो ऽ होऽऽऽ!"

एक आदमी चुपचाप दौड़ता हुआ बरफ़-गाड़ी के पास पहुंचा और सांस लेने के लिए मुंह खोलकर बोला:

"अन्द्रेई, सचमुच तुम्हीं हो?"

अन्द्रेई चौंक उठा। आवाज़ सुनते ही एकदम घूमकर उसने तड़ से पूछा:

"तुम कौन हो?"

"मैं आये हूं। अन्द्रेई, तुम मुझे भूल गये?"

"आये!" बड़ी खुशी में अन्द्रेई चिल्लाया और आवाज़ की दिशा में दौड़ पड़ा।

आये को उसने अपनी बाहों में कस लिया मानो डर रहा हो कि यह सपना कहीं टूट न जाये। वह बोल उठा:

"मेरी आंखें ख़राब हो गयी हैं। मैं देख नहीं पाता।"

"धूप जब बहुत ही तेज़ होती है तब अक्सर ऐसा होता है। ऐसे मौक़े पर बारहसिंगे की खाल या कुछ दूसरी चीज़ आंखों पर

रखनी चाहिए। बस, कुछ न कुछ काली चीज़ हो। ख़ैर, यह तकलीफ़ जल्द ही दूर हो जायेगी। कल तुम ठीक हो जाओगे।"

"आये, मेरी काली थैली में से एक टुकड़ा काट लो।"

आये ने थैली को हाथ में लेकर ऊपर नीचे देख लिया और आह भरकर कहने लगा:

"ऐसी अच्छी थैली को काटते हुए बड़ा दुख होता है।"

"कोई बात नहीं, आये! चलो, काट लो एक टुकड़ा!"

आये ने एक पट्टी काट ली और अन्द्रेई की आंखों पर बांध दी।

"अच्छा, मेरे दोस्त," अन्द्रेई ने कहा, "मैं मानता हूं कि आज की रात हम यहीं काटें—कहो, तुम्हारा क्या विचार है? तुम्हें कहीं जाने की जल्दी तो नहीं?"

"नहीं," आये ने उत्तर दिया।

"तो फिर तंबू गाड़ दो। हम चाय पियेंगे और कुछ खायेंगे भी। आये, यह कौनसी राह है जिसपर मैं इतनी देर से अपनी बरफ़-गाड़ी दौड़ाता आ रहा हूं?"

"तुम्हारी ही तो राह है यह," आये ने जवाब दिया, "मैंने पहले ही देख लिया है। तुम गोलाई में घूम रहे थे। शायद और भी भटक जाते। कुत्ते तब तक नहीं मुड़ेंगे जब तक आदमी उन्हें मजबूर न करे।"

शीघ्र ही दोनों बड़े आराम से तंबू में जा बैठे।

"अन्द्रेई, देग़ची में बरफ़ पिघल गयी है। तुम्हारी आंखों की पट्टी गीली करनी चाहिए। तब उसका असर अधिक होगा।"

"ठीक है आये, कर लो! तुम जानते हो कब क्या करना चाहिए।"

आये ने पट्टी पानी में डुबोकर निचोड़ी और फिर से अन्द्रेई की आंखों पर बांध दी।

"अन्द्रेई, कहो क्या सचमुच तुम सरदार हो ?"

जुकोव मुस्कराया।

"हां, लेकिन मैं बड़ा सरदार नहीं हूं। बड़ा सरदार गरमियों में आयेगा जब जहाज़ इस ओर आयेगा। उसी ने मुझे आगे भेजा है।"

"आह!" आये ने कहा। फिर कुछ रुककर बोला: "ओह, अन्द्रेई, मेरे लिए यह बहुत बुरा होगा। मैं बड़ी मुसीबत में हूं। वे ज़रूर मुझे ख़रगोश की तरह गोली से मार देंगे।"

"कौन तुमपर गोली चलायेगा ?"

पहाड़ियां निस्तब्धता में निमग्न थीं। रात का हल्का सा पाला तंबू में घुस आया। सोने का समय हो चुका था लेकिन आये के हृदय पर जैसे एक बोझ था। उसने यह बोझ जैसे अन्द्रेई के सामने उतार दिया। चार्ली लाल-नकुए के व्यापारी यारंग की घटना उसने कह सुनायी और यह भी बता दिया कि क्यों अलितेत उसपर गोली चलाना चाहता था। तीग्रेना के बारे में और अन्य कई चीज़ों के विषय में भी उसने बातें कीं।

बाहर की ओर कुत्ते आराम से सो रहे थे। सूरज कुछ देर के लिए ओझल हो गया लेकिन फिर जैसे लाल रंग से रंगा हुआ लौट आया।

"आये, तुम ज़रा भी फ़िक्र न करो! डरने का कोई कारण नहीं। क्या मजाल है कोई तुम्हें छुए भी। मैं कहे देता हूं। कुछ ही समय में तुम ख़ुद ही देख लोगे। अच्छा, अब कुछ देर सो लें और फिर साथ साथ किनारे की ओर चल दें।"

फिर भी आये सोया नहीं। वह चरवाहा था और चरवाहे लगातार दो तीन दिन बिना सोये रहने के आदी थे। आये तंबू के इर्दगिर्द घूमा। फिर उसने ध्यानपूर्वक बरफ़-गाड़ी की जांच की और

जो तस्मे ढीले पड़ गये थे उन्हें ठीक से कस लिया। फिर नीचे बैठकर बरफ़-गाड़ी की लकड़ी से बनी बैठक की ओर देर तक एकटक देखता रहा। वह विचारों में डूबा हुआ था। आख़िर उसने अपना छुरा निकाला और बैठक के तख़्ते से लकड़ी की एक पतली पट्टी काट निकाली। फिर उसकी दो गोल टिकियां सी बनायीं, अपने छुरे की नोक से उनमें छोटे छोटे छेद किये, और एक पतले तस्मे से उन्हें एक में बांधकर अपनी नाक पर रख लिया।

अपनी दस्तकारी का नतीजा देखकर उसने ख़ुशी की सांस ली।

अन्द्रेई की पुकार सुनकर आये तंबू की ओर दौड़ा।

"आये, अब मैं तुम्हें देख सकता हूं। यह भी अच्छा हुआ!"

"और तुम्हारे लिए मैंने एक चश्मा भी बना लिया है। इधर पहाड़ियों में जिसकी आंखें कमज़ोर होती हैं वह हमेशा ऐसा चश्मा पहनता है," अन्द्रेई की नाक पर चश्मा रखते हुए आये ने कहा।

अन्द्रेई खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"लेकिन मेरे दोस्त, यह तो बताओ कि लकड़ी में से दिखाई कैसे देगा?"

"देखो न, उन गोल टुकड़ों में छोटे छोटे छेद बने हैं। इनमें से तुम्हें सब कुछ दिखाई देगा। बिना चश्मे के तुम्हें इधर उधर नहीं जाना चाहिए। देखो, बाहर फिर अंगार बरसने लगे हैं।"

अन्द्रेई ने लकड़ी का चश्मा पहना और बाहर चला गया।

"अरे, यह तो बड़ा अजीब है। लकड़ी का चश्मा—और इतना अच्छा! आये, सचमुच तुम बड़े होशियार हो। क्या ख़ूब! चलो, कुत्तों को जगाओ! हम आगे बढ़ेंगे।"

"किनारे पर अपना मुंह दिखाना मेरे लिए बुरा होगा, बहुत ही बुरा होगा!" आये ने दुखी होकर कहा।

उनतीसवां अध्याय

आये बरफ़-गाड़ी पर अन्द्रेई के पास बैठ गया। वह परेशान लग रहा था और चुपचाप उसे रास्ता दिखा रहा था। तट-प्रदेश के निवासियों के साथ होने वाली अपनी आगामी मुलाक़ात के विचारों में वह डूबा हुआ था।

आख़िर कुछ दूरी पर उसे लोरेन की बस्ती दिखाई दी।

"कहो अन्द्रेई, क्या तुम व्यापारी यारंग में जाओगे? उस सफ़ेद आदमी के पास? चार्ली के पास? तब तो शायद मेरा यहीं ठहरना ठीक होगा?"

"मैं उसके पास क्यों जाऊंगा? तुम और मैं किसी शिकारी के यारंग में चले जायेंगे।"

"तुम शायद चार्ली से डर रहे हो?"

अन्द्रेई खिलखिलाकर हंस पड़ा। हंसी की आवाज़ ने आये का डर दूर कर दिया और उस जवान रूसी सरदार की ताक़त में उसे यकायक दृढ़ विश्वास होने लगा।

आये के हृदय में गर्व की एक नयी भावना की अनुभूति हो रही थी। उसने अन्द्रेई के हाथ से लगाम ले ली और बरफ़-गाड़ी रिंतेऊ के यारंग की ओर दौड़ा दी। फ़ौरन गाड़ी के इर्दगिर्द एक भीड़ इकट्ठी हो गयी।

"देखो! आये अपने साथ एक सफ़ेद आदमी को ले आया है!"

"अरे, यह वही रूसी सरदार है," आये अपने मित्र वामचो के कानों में फुसफुसाया।

फिर वह अन्द्रेई के पास वापस गया। वह बरफ़-गाड़ी पर उसके इन्तज़ार में बैठा हुआ था।

उसी हल्की आवाज़ में आये ने कहा :

"अन्द्रेई, यह है वामचो जिसके बारे में मैंने तुमसे बात की थी। 'तीन-पहाड़ियों' के पास इसी के लगाये फंदे में रखे गये मांस पर अलितेत ने बत्ती की चरबी उंडेली थी।"

"आओ वामचो! नमस्ते!" अन्द्रेई ने प्यार से कहा और उस लड़के के हाथ से इस तरह हाथ मिलाया मानो वह पुराना मित्र हो।

वामचो इस तरह हड़बड़ा गया कि कुछ बोल ही न सका। उसके जीवन में यह पहला मौक़ा था जब किसी सफ़ेद आदमी ने उससे हाथ मिलाया था।

"आप घर में चलियेगा।—मैं आपके कुत्तों को खोल दूंगा," आख़िर होश संभालकर उसने कहा।

रिंतेऊ के यारंग में अभी तक शिकारियों तथा बहेलियों की भीड़ लगी हुई थी। चार्ली लाल-नकुए के साथ लेन-देन का मौक़ा पाने के इंतज़ार में ये लोग वहीं बैठे थे। कल ही आये जिस रूसी सरदार के बारे में बोल रहा था उसका अचानक प्रकट होना उन्हें दिवा-स्वप्न सा लगा। नवागंतुक की ओर वे कुतूहल से देखने लगे।

यह रूसी व्यक्ति एक लंबा और तगड़ा आदमी था, लेकिन था एकदम जवान और उसे देखने से ऐसा नहीं लगता था कि वह कोई सरदार हो।

आये ने बारहसिंगे की एक नयी खाल निकाली और बड़े आदर से अन्द्रेई के लिए बिछा दी। अन्द्रेई कोहनी पर माथा टेके खाल पर लेट गया और अपनी पाइप में तंबाकू भरने लगा।

"कोई जाकर चार्ली को यहां बुला लाये," उसने कहा।

शिकारियों ने चकित होकर एक दूसरे की ओर देखा।

यह रूसी ज़रूर पागल है! चार्ली इस पहाड़ी पर कभी नहीं आया जहां हमारे यारंग बने हैं। अरे किसी ने ऐसी बात सुनी

भी? चार्ली कभी नहीं मानेगा और न कोई उसे मजबूर ही कर सकेगा!

"जाओ, उससे कह दो कि रूसी सरदार उससे बात करना चाहता है। उसे फ़ौरन यहां आना चाहिए," अन्द्रेई ने कुछ सख़्ती से कहा।

ओहो, तब तो यह सचमुच सरदार होगा जो इस तरह बोलता है! लेकिन इस संदेश को लेकर चार्ली के पास जाने की हिम्मत कौन कर सकता था? अगर वामचो चला जाये तो? लेकिन नहीं, यही ज़्यादा वाजिब होगा कि यारंग का मालिक रिंतेऊ ख़ुद ही यह अद्भुत संदेश सुना आये। वह सब से बुज़ुर्ग भी तो था।

यह समाचार इतना ज़ोरदार था कि रिंतेऊ बुड्ढा होते हुए भी चार्ली के घर तक बराबर दौड़ता गया। ज़रा सा दम लेने के लिए भी नहीं रुका।

इधर सारे शिकारी कुतूहलपूर्वक और आश्चर्यचकित होकर प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें आगे क्या होता है। और इसमें कुछ अचरज न था! एक सेकंड में इतनी घटनाएं! शीघ्र ही उन्हें दो सफ़ेद आदमियों की भेंट का दृश्य देखना था। और यह रूसी था कि खुद चार्ली से मिलने भी नहीं गया। यह ऐसी बात थी जो पहले किसी ने सुनी तक न थी! ज़रूर कुछ अजीब घटना होने वाली थी। सब से अधिक विस्मय की बात आये के साथ इस रूसी की दोस्ती थी। शायद उसे मालूम न था कि आये केवल एक चरवाहा था और उसने चार्ली का लगभग गला घोंट दिया था।

आगामी घटनाओं में सब से ज़्यादा दिलचस्पी थी याराक़ को। वह अपने को गोरे आदमियों का विशेषज्ञ मानता था।

यह समझकर कि चार्ली शीघ्र ही आयेगा, आये सुरक्षा की दृष्टि से, सरककर अन्द्रेई के समीप बैठा।

रिंतेऊ से उक्त समाचार सुनकर मि० थामसन को ख़ुद रिंतेऊ से कम आश्चर्य न हुआ। सारी बस्ती में बड़ी खलबली मच गयी। पिछली रात ज़्यादा व्हिस्की पीने के कारण मि० थामसन का सिर बहुत भारी था। उसके गले में पट्टियां बंधी थीं। फिर भी वह एक क्षण का भी विलंब न करते हुए चल दिया।

परिश्रम से हांफते हुए वह पहाड़ी पर चढ़ गया और जब यारंग में घुसा तब उसका दम उखड़ सा गया था। यारंग में इकट्ठा हुई मंडली पर उसने नज़र दौड़ायी और जब उसने रूसी को देखा तो नम्रतापूर्वक चुकची भाषा में अभिवादन किया।

"कृपया बैठ जाइये," अन्द्रेई ने अंग्रेज़ी में जवाब दिया।

"ओहो, आप अंग्रेज़ी बोलते हैं! क्या मैं समझ सकता हूं कि किसके साथ बोलने का सम्मान मुझे प्राप्त हुआ है?"

"मेरा नाम है जुकोव। और आप मि० थामसन हैं न?"

"जी हां, चार्लस थामसन। मि० जुकोव, दुनिया के इस हिस्से में आप जैसे सभ्य सज्जन से मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। मुझे आश्चर्य है कि आप सीधे मेरे घर तशरीफ़ क्यों न ले आये? यह जगह, जहां हम इस वक़्त बैठे हैं, मैंने उन शिकारियों और बहेलियों के लिए रखी है जो मेरे पास लेन-देन के लिए आते हैं। यहां हवा उतनी अच्छी नहीं और बड़ी घुटन मालूम होती है।"

"मि० थामसन, आश्चर्य की कोई बात नहीं। वस्तुतः मैं अपना कर्तव्य मानकर आपके घर के बजाय यहीं आ गया।"

"मि० जुकोव, यह बात बड़ी शिष्ट तो नहीं लगती।"

"मि० थामसन, मैं मानता हूं कि शिष्टता के लिहाज़ से यही वाजिब है कि एक विदेशी होने के नाते पहले आप ही नव रूस के अधिकृत प्रतिनिधि से मिलने आ जायें?"

एक सच्चे और जिंदादिल अमरीकन के साथ अन्द्रेई जुकोव पहली ही बार बातचीत कर रहा था। चार्ली के घर में आये ने जो अनुभव किया था उससे जुकोव के मन में विदेश से आये हुए इस अनचाहे अतिथि के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न हुई थी। वह मि० थामसन के साथ साफ़ साफ और तीखी बातें कर रहा था और जानबूझ कर कठोर वाणी का प्रयोग कर रहा था जिसमें अधिकार की गूंज थी।

"क्या आप बोल्शेविक हैं ?" मि० थामसन ने ऐसे स्वर में पूछा जिसमें आश्चर्य और कुछ भय का पुट था।

"हां, मैं बोल्शेविक हूं।"

अमरीकी समाचारपत्रों से प्राप्त की गयी जानकारी के अनुसार मि० थामसन मानता था कि बोल्शेविक एक ऐसा भयंकर आदमी होता है जिसके मुंह में छुरा होता है। इस सुनहरे बालों वाले और नीली आंखों वाले नौजवान ने, जो देखने में नार्वेजिअन सा लगता था और अंग्रेज़ी इससे अच्छी तरह बोलता था, उसके सारे विचार छिन्न-भिन्न कर दिये।

"क्या आप सच्चे बोल्शेविक हैं ?"

"हां, ज़रूर। मि० थामसन, मैं कामचात्का प्रादेशिक क्रांति समिति का प्रतिनिधि हूं और मैंने आपको यहां कारोबारी बातें करने के लिए बुलाया है।"

"ज़रूर मि० जुकोव, कहिये क्या बात है। मैं हर तरह आपकी ख़िदमत में हाज़िर हूं।"

"मि० थामसन, मेरे ख़याल में आप जानते हैं कि जहाज़रानी मौसम के शुरू होते ही नॉर्थ कंपनी के प्रतिनिधि यहां आयेंगे।"

"हां, मैंने समाचारपत्रों में पढ़ लिया है।"

"नॉर्थ कंपनी यहां का व्यापार अपने हाथ में ले रही है और मि० थामसन, आपको यहां की अपनी दूकान बढ़ानी होगी।"

"ग्रौर फिर स्टीवनसन, क्लार्क ग्रौर ग्रोलसन का क्या होगा?" मि० थामसन ने झट से पूछा।

"उन्हें भी वही करना पड़ेगा।"

"ग्रौर मि० ब्रुख़ानोव ग्रौर मि० करावायेव को भी?"

"हां, ग्राप सब लोगों को। नॉर्थ कंपनी तट-प्रदेश में रोवेंदार खालों के लिए छः विशाल केंद्र खोलने जा रही है। सोवियत सरकार ने कंपनी को इस प्रदेश में व्यापार करने का एकाधिकार दिया है। मि० थामसन, ग्रापको ग्रपना बोरिया-बंधन समेटकर किनारे से कूच करना होगा।"

याराक ने हंस की तरह ग्रपनी गर्दन उचका ली ताकि एक भी शब्द सुनने से रह न जाये। ग्रपने कानों पर विश्वास करना उसे कठिन लग रहा था। सभी सोचते थे कि चार्ली किनारे से उसी तरह चिपका रहेगा जिस तरह चट्टानों से गोह। हवा का कैसा भी झोंका उसे वहां से हटा नहीं सकता। याराक ने ग्रभी जो कुछ सुना उससे वह दंग रह गया।

स्पष्ट था कि यह दढ़मुंडा रूसी सचमुच का सरदार था। चार्ली को इस तरह डांट पिलाने वाला सरदार कितना ताक़तवर होगा!

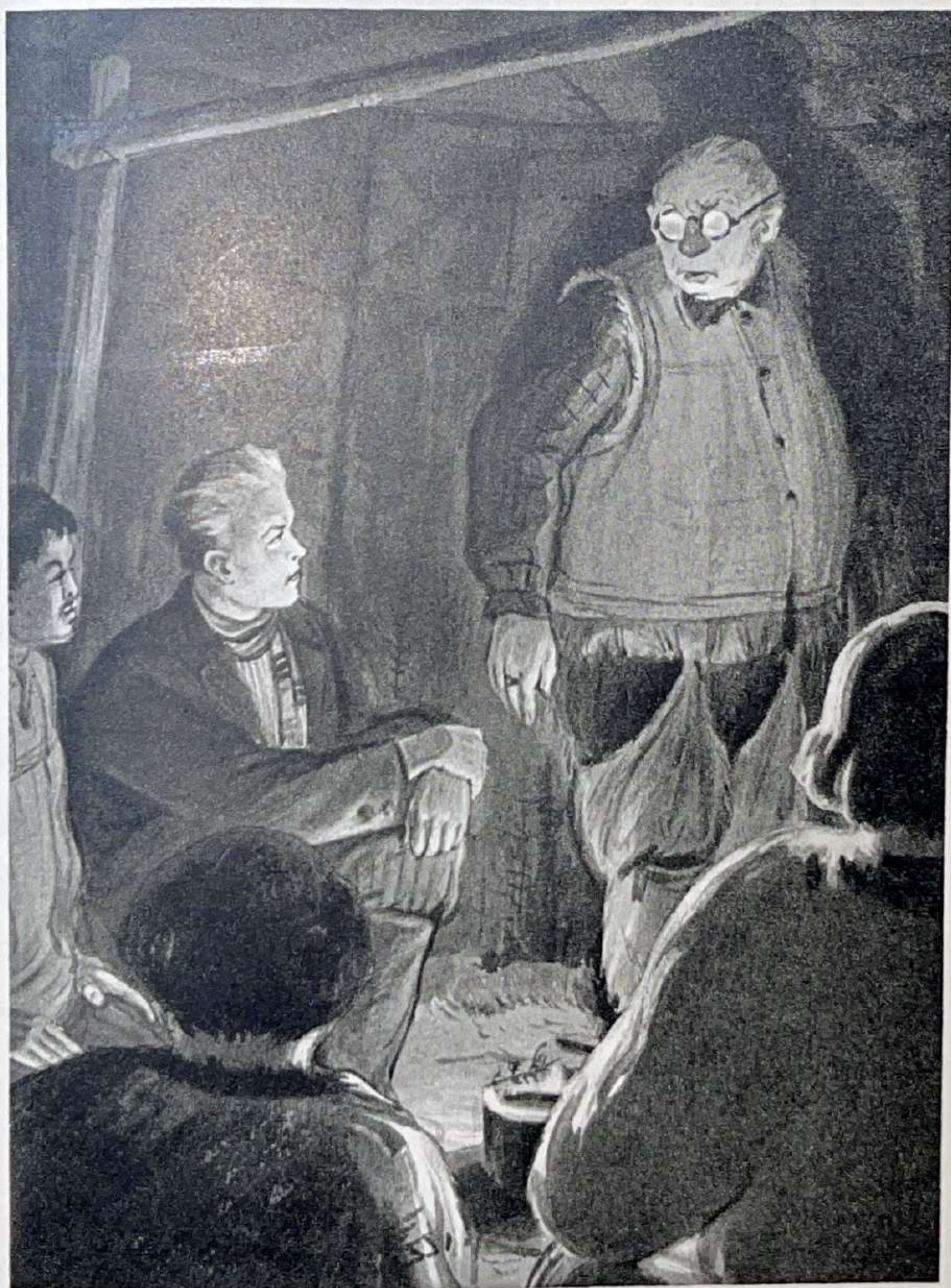
"ग्रौर एक बात, मि० थामसन," ग्रन्द्रेई ने ग्रागे कहा। "ग्रापके निजी जीवन से भी इसका कुछ संबंध है।"

"कहिये मि० जुकोव, क्या बात है?"

"मि० थामसन, मैंने सुना है कि ग्रापने वह बर्ताव किया है जो ग्रापकी उम्र वाले सज्जन के लिए ग्रत्यंत ग्रशोभनीय है ग्रौर जो सभ्य संसार के नीति-नियमों से बिलकुल मेल नहीं खाता।"

मि० थामसन ने लंबी सांस खींची।

"मैं उस ग्रप्रिय घटना की बात कर रहा हूं जिसमें यह जवान भी कल ग्रापके घर में उलझ गया था।" ग्रपने कंधे पर ग्रन्द्रेई के



हाथ का स्पर्श होते ही आये चौंक उठा। "मि० थामसन, शायद आप भी स्वीकार करेंगे कि यह बेअदबी से भी बदतर बात थी?"

मि० थामसन का चेहरा तमतमा उठा और उसका रंग उड़ गया। वह कुछ बोला नहीं।

"और तिस पर भी आप अपने को कहते हैं सभ्य आदमी–सुसंस्कृत संसार के प्रतिनिधि!" अन्द्रेई ने व्यंग्यपूर्वक कहा।

मि० थामसन ने सिर लटका लिया। बीस बरस में शायद यह पहला मौक़ा था जब वह अपने बर्ताव के बारे में कुछ सोचने लगा। सब से अधिक दुःख इस बात का था कि ये सारी बातें शिकारियों की उपस्थिति में और ख़ासकर याराक की उपस्थिति में हो रही थीं जो उनका मतलब समझने लायक़ अंग्रेज़ी जानता था। अपना सिर बिना ऊपर उठाये उसने धीरे से चुकची में कहा:

"याराक तुम बाहर चले जाओ!"

याराक अनिच्छा से उठ खड़ा हुआ।

"नहीं, याराक, तुम यहीं ठहरो," अन्द्रेई ने कहा। "मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।"

मि० थामसन स्थिर और मौन बैठा रहा। उसे इतना दीन आज तक किसी ने न देखा था।

"समझे मि० थामसन? मैं मानता हूं कि मैंने सब कुछ साफ़ साफ़ बता दिया है।"

"हां।"

"बस, इतना ही मैं कहना चाहता था। नमस्ते।"

"नमस्ते," विचारमग्न स्थिति में, डगमग चाल से बाहर की ओर जाते हुए मि० थामसन गुर्राया।

"बदमाश कहीं का!" मि० थामसन के बाहर जाने के बाद अन्द्रेई चुकची में बुदबुदाया।

नभोमंडल के चरम बिंदु को लांघकर सूर्य अस्ताचल की ओर जाने लगा था। बाहर की ओर शिकारियों की उत्तेजित भीड़ इकट्ठी हुई थी और वे इस समाचार की चर्चा करते नहीं अघा रहे थे। "वाह जी वाह, क्या ख़ूब समाचार था!" वापस घर जाते समय तट-प्रदेश के बाशिंदों को सुनाने के लिए कैसी उमदा ख़बर थी! इस तरह का समाचार लाने वाले अतिथि का स्वागत किनारे के हर यारंग में होगा।

याराक भीड़ के बीचोबीच खड़ा था और बड़े उत्साह से लेकिन कुछ नमक मिर्च लगाकर बता रहा था कि दो सफ़ेद आदमियों में क्या बातचीत हुई। फिर भी घटना का सारांश सभी की समझ में आ चुका था।

सूरज डूबने को था लेकिन आदमी अभी भी इधर उधर खड़े खड़े बातें करते जा रहे थे। रात के पाले ने नम बरफ़ को सख़्त बना दिया। अलितेत जल्दी जल्दी विदा लेकर रवाना हो चुका था। अब उसकी बरफ़-गाड़ी पहाड़ी के पीछे ग़ायब हो चुकी थी। सचमुच, गपशप के लिए कैसा गरमागरम मसाला मिल गया था!

अन्द्रेई को सील के जिगर का ताज़ा मांस खिलाया गया। आये, वामचो और याराक वहीं बैठे रहे।

जुकोव के इर्दगिर्द सकुचाते हुए बैठकर वे भी खाना खाने में जुट गये।

"अन्द्रेई, अब वामचो उस रीछ वाली खाल का क्या करे?" साहस करके आये ने पूछा।

"उसे चार्ली के हाथ बेच दे। अगली गरमियों तक वह व्यापार कर सकता है।"

"और मेरा क्या होगा? मैंने जो लोमड़ियों की खालें ला दीं उनके बदले में चार्ली ने मुझे पूरा माल अभी तक नहीं दिया।

ग्रौर वे खालें भी मेरी नहीं हैं। मेरा मालिक यातख़िरगिन मुझे डांट पिलायेगा।"

"चार्ली के पास जाग्रो ग्रौर ग्रपना माल ले लो। ग्राये, क्या ग्रब भी तुम चार्ली से डरते हो?"

"जी नहीं, ग्रब क्यों डरने लगा? ग्रलितेत भी चला गया है। ग्रब वहां डरने लायक़ कुछ नहीं," ग्राये ने बड़ी ख़ुशी में कहा।

खाना ख़त्म होने पर ग्रन्द्रेई ने चाय पी ग्रौर बाहर चला गया। नये मित्र भी उसके पीछे पीछे हो लिये।

पलक झपने की देर थी कि उन्होंने ग्रन्द्रेई के लिए कुत्ता-गाड़ी जोतकर तैयार कर ली। काम में सब से ग्रधिक मग्न था ग्राये। याराक ग्रभी भी इस नये सफ़ेद ग्रादमी को कुछ शंका की दृष्टि से देख रहा था।

ग्रन्द्रेई ने ग्रपना लकड़ी वाला चश्मा निकालकर नाक पर रख लिया। यह देखते ही याराक ने ग्रपने परके में से एक ग्रसली काला चश्मा निकालकर चुपचाप ग्रन्द्रेई की ग्रोर बढ़ाया।

"ग्रोह बढ़िया! क्या क़ीमत है इसकी?"

"कुछ नहीं," याराक ने उत्तर दिया।

ग्रन्द्रेई ने पांच रूबल निकालकर याराक के हाथ में थमा दिये।

"यह किस लिए?"

"तुम ग्रपने लिए नया चश्मा ख़रीदो।"

"लेकिन चार्ली काग़ज़ के बदले में कुछ नहीं बेचता। वह सिर्फ़ रोएंदार खालें लेता है।"

"तुम उससे कह दो कि मैंने तुम्हारे हाथ एक चश्मा बेचने के लिए कहा है। यह रूसी नोट है ग्रौर चार्ली को यह लेना ही चाहिए।"

कुत्ते जोत के नीचे खड़े खड़े अपने शरीर को ऐंठ-मरोड़ रहे थे। वे दौड़ने के लिए उत्सुक थे। अन्द्रेई ने अपने शिकारी मित्रों से विदा ली।

"अच्छा मेरे मित्रो, नमस्ते! जल्द ही हम फिर मिलेंगे।"

कामचादेल कुत्ता-दल सरपट दौड़ने लगा।

"सुना तुमने बड़े सरदार ने क्या कहा था?" दौड़ती हुई बरफ़-गाड़ी की ओर देखते हुए वामचो चिल्लाया। "उसने कहा था 'मित्रो'!"



दूसरा भाग



पहला अध्याय

कप्तान हैरी ब्राउन दांतों के बीच ओरेगान पाइप दबाये अपने जहाज़ 'ध्रुव-रीछ' के पतवार-चक्र के पास खड़ा था। 'ध्रुव-रीछ' इस समय अलास्का के किनारे के पास से बड़े आराम से जा रहा था।

कप्तान एक नाटा-मोटा और भारी-भरकम सा आदमी था। और उम्र उसकी चालीस बरस की थी। वह पीले मोमजामे की बरसाती पहने था जिससे उसका चेहरा अधिक यौवनपूर्ण लगता था। हैरी ब्राउन के भारी और मज़बूत हाथ नीले जीन की जेबों में छिपे हुए थे। उसके जीन में जगह जगह लाल धागे से सिली हुई कई जेबें थीं जो तरह तरह की चीज़ों से भरी रहने के कारण फूली हुई थीं। जिधर देखो उधर जेब ही जेब नज़र आती थी–सीने पर और पैरों पर, घुटनों पर और कप्तान की चौड़ी जांघों पर भी। देखने वाले को लगता कि यह पोशाक हैरी ब्राउन के लिए एक गोदाम का सा काम देती है। पीतल के बटनों पर रेल्वे इंजन का शानदार चिन्ह था जो जहाज़ी कपड़ों के लिए असाधारण था।

हैरी ब्राउन सागर-यात्रा में एक व्यवहार-कुशल आदमी था। वैसे तो उसके पास न भारी जहाज़ों के प्रमुख मल्लाह की योग्यता का प्रमाण-पत्र था और न तटवर्ती सेवा की योग्यता का ही। लेकिन

इससे उसके अच्छे मल्लाह होने के रास्ते में कोई रुकावट न आती थी। वह समुद्र को जानता था और प्यार करता था और उसने अपने 'ध्रुव-रीछ' पर बड़ी ख़ुशी और सक्षमता से उत्तर-ध्रुव-सागर के उस पार तक संकटपूर्ण यात्राएं की थीं। सीधे-सादे नाम के रहते हुए भी उसका जहाज़ हर तरह से समुद्री डाकुओं का जहाज़ मात्र था।

इस जहाज के जहाज़ियों में कप्तान के अलावा और आदमी थे—पतवार-चालक मि० हार्लो जो एक तगड़ा और पुराना घाघ था, और जहाज के इंजीनियर और रसोइये की दोहरी ड्यूटी बजाने वाला जिम जो एक सीधा-सादा ख़ुशदिल बदमाश था। ये दोनों भी कप्तान की तरह बरसाती तथा नीले जीन डाटे थे और बड़े गर्व के साथ मानते थे कि यह उस लोकतंत्र की निश्चित निशानी है जो उनके १२० टन वाले नन्हे से जहाज़ पर पाया जाता था।

तीनों जने पतवार-चक्र के पास खड़े घने कुहरे के भारी परदे में से तेज़ नज़र दौड़ा रहे थे। कप्तान के हाथ की हरकतों का बंदा जहाज़, रात के चोर की तरह अलास्का के किनारे के पास जल-डमरूमध्य के बीच से खिसककर आगे बढ़ा।

दुनिया में बड़ी अजीब बातें हो रही थीं। कप्तान ब्राउन कई बार उजले-सुहावने दिन में नोमे नगर के अति समीप से जहाज़ ले गया था। इस नगर में चुंगी अफ़सर मि० केरी बरसों से रह रहा था।

हर साल जब जहाज़रानी का मौसम खुल जाता तो ये दोनों पुराने दोस्तों की तरह एक दूसरे से मिला करते थे।

"नमस्ते मि० ब्राउन!"

"नमस्ते मि० केरी!"

शिष्टाचार का आदान-प्रदान समाप्त होने पर मि० ब्राउन अपना जहाज़ टापुओं की ओर बढ़ा लेता और फिर शांत चित्त से सीधे

चुकोत्स्क प्रायद्वीप के विकट किन्तु वैभवशाली तट की ओर मोड़ लेता। बरसों से यही परिपाटी चली आ रही थी।

"लेकिन हाल ही में स्थिति कुछ बदल गयी है। उत्तरध्रुव-प्रदेश की ये अच्छी परंपराएं हवा हो चुकी हैं, धुआं बनकर आसमान में उड़ गयी हैं," कप्तान ब्राउन कहा करता था।

पता नहीं क्या हुआ, यकायक डाकू-जहाज़ों को रोकने और पीछे हटाने का विचार मि० केरी के सिर पर सवार हुआ। फिर भी यह उसका अपना ख़्याल रहा। इससे हैरी ब्राउन को कोई परेशानी नहीं हुई। यहां के जल-डमरूमध्य से और इस खुले बंदरगाह रूपी जलदस्यु-स्वर्ग से वह इतना परिचित था कि चुंगी अफ़सर की नज़र से बचकर घने से घने कुहरे में आंखों पर पट्टी बांधकर भी अपना 'ध्रुव-रीछ' अभीष्ट स्थान को ले जाता था।

कुहरा ठीक समय समाप्त हो गया। अलास्का अब पीछे छूट गया था। उत्तरध्रुव-प्रदेश के जगमगाते हुए सूर्य की स्वर्णिम आभा चारों ओर फैली हुई थी और तैरते हुए विरल हिम-खंड कोमल निर्मल कान्ति से दमक रहे थे। जहाज़ बरफ़ के तूदों के बीच से उसी तरह गुज़र रहा था जिस तरह कुत्तों की बरफ़-गाड़ी बरफ़ीली चट्टानों के बीच से आगे बढ़ती है। जहाज़ी इस वक़्त बड़े ख़ुश थे। आख़िर वह उत्तरध्रुव-प्रदेश में आ पहुंचे थे जहां के खुले विस्तारों में सांस लेना उन घुटनदार राज्यों की अपेक्षा कई गुना आसान था।

रूसी लोग यहां से बहुत दूर, अपनी क्रांति में लगे हुए थे और यह ज़रूरी था कि तट-प्रदेश में रहने वाले शिकारियों और बहेलियों को तंबाकू सप्लाई करने का काम कोई अपने हाथ में ले ले। इन प्रदेशों में सफ़ेद लोमड़ियों की काफ़ी मोटी रोवेंदार खालें प्राप्त हो सकती थीं।

'ध्रुव-रीछ' के जहाज़ियों को इस सागर में बड़ा अच्छा लग रहा था। शुद्ध, पुष्टिकारक हवा और लाभदायक व्यवसाय की प्राप्ति के कारण भूख बढ़ना और स्वास्थ्य सुधरना बिल्कुल स्वाभाविक था।

रसोइये जिम ने निशाना साधा और बरफ़ के तूदे पर आराम से झपकी ले रहे एक वालरस का काम तमाम कर दिया। फिर चतुरता से वह उस तूदे पर कूदा, जल्दी से वालरस का पेट चीरा और उसमें से बड़ा भारी जिगर निकाल लिया। इसके बाद जिम ने एक हथौड़े से उस वालरस के सिर में से दांत उखाड़ लिये। वे शिकार के अच्छे स्मृति-चिन्ह थे। फिर जहाज़ आगे बढ़ा। बरफ़ से मुक्त पानी में प्रवेश करते ही उसकी रफ़्तार तेज़ हो गयी।

शीघ्र ही 'ध्रुव-रीछ' ने एक लंबे बलुए किनारे के पास लंगर डाला। इस किनारे पर तीन चुकची यारंग थे। फ़ौरन किनारे के पास खाल से बनी एक डोंगी आ खड़ी हुई जिसमें उक्त बस्ती की सारी जनता बैठी थी। इनमें बुड्ढे आदमी और नन्हे-मुन्ने बच्चे भी शामिल थे। अमरीकी जहाज़ पर जब लेन-देन चलता हो तब कौन किनारे पर रह सकता था?

डोंगी में आये हुए सभी लोग जल्दी जल्दी जहाज़ पर चढ़ गये और बड़े कुतूहल से अमरीकियों और डेक पर लदे हुए माल की तरफ़ देखते रहे।

मि० ब्राउन का तैरता भंडार शिकारियों के लिए एक बड़ा आकर्षक स्थान था। हर कोई जानता था कि यहां अच्छे खाने और शराब से उसकी ख़ातिर होगी। शराब के गले से उतरने के बाद आदमी ख़ुश और रहमदिल बनता है और तब लेन-देन एक मज़ेदार काम बन जाता है।

मि० ब्राउन कंजूस नहीं था। उसने हुक्म दिया कि मेहमानों को चाय पिलायी जाये और हरेक को दो दो सोडा-क्रेकर बिस्कुट भी दिये जायें। शिकारियों ने डेक ही पर बड़ी ख़ुशी से चाय पी।

मि० ब्राउन ने परोपकारियों की भांति मुस्कराते हुए पूछा :

"क्यों जी, किनारे पर सफ़ेद लोमड़ियों की बहुत सी खालें हैं न?"

"जी हां, बहुत ही! सफ़ेद रीछों की भी बहुत सी खालें हैं। इसके अलावा लाल लोमड़ियों, नेवलों, धानीमूषों और भेड़ियों की भी!" एक बुड्ढे शिकारी ने उत्तर दिया।

"अब तक इस ओर कोई जहाज़ नहीं आया। इन गरमियों में आप लोगों का जहाज़ ही पहला जहाज़ है," दूसरे ने कहा।

"क्या चार्ली लाल-नकुए ने इन जाड़ों में बहुत सी खालें ख़रीदी हैं?"

"जी हां, बहुत सी!" चाय का मज़ा लेते लेते एक अधेड़ उम्र वाले शिकारी ने सहज भाव से कहा। "मैंने अपनी सफ़ेद लोमड़ियों की सभी खालें उसी को बेच डालीं। आपके लिए सिर्फ़ तीन खालें बची हुई हैं। ये हैं–इस थैली में।"

"तुम्हारी इस खोपड़ी में कोई दम नहीं। क्या तुम नहीं जानते कि चार्ली लाल-नकुआ धोखेबाज़ है? फिर भी तुम सारी खालें उसी के पास ले दौड़े। ये खालें तुमने मेरे लिए क्यों नहीं रखीं? क्या पारसाल गरमियों में तुमने मुझसे कोई ऐसा ख़राब सौदा किया था? अरे, तुमने मुझसे कई चीज़ें पायी थीं। क्या चार्ली मुझसे ज़्यादा अच्छा व्यापार करता है? ऊंह। तुम्हारा तो सिर ही फिर गया है– उसमें दिमाग़ है पंछियों का सा," कप्तान ब्राउन ने अपनी एक गांठ-दार उंगली से उस आदमी के नंगे सिर को ठकठकाते हुए उसकी भर्त्सना की।

शिकारी कुछ शर्म के साथ खीसें निकालता और पैरों को इधर-उधर हिलाता हुआ उठ खड़ा हुआ और बोला :

"पिछले जाड़ों में मुझे बंदूक़ ख़रीदनी थी और कारतूस भी मेरे पास नहीं थे। तंबाकू ख़त्म हो चुकी थी और चाय भी..."

"तुम्हारी थैली में जो सफ़ेद लोमड़ियों की खालें हैं वे अच्छी हैं ?" कप्तान ब्राउन बीच ही में बोल उठा। "हो सकता है कि उनका रंग ठीक न हो—और शायद चार्ली लाल-नकुए ने उनको नापसंद किया हो!"

"जी नहीं, वे सचमुच अच्छी सफ़ेद खालें हैं"

"अच्छा, चलो मेरे साथ।"

कप्तान ब्राउन जहाज़ के पीछे वाले हिस्से में बनाये गये छोटे से तहखाने में उतर गया जो पहले ही खोल दिया गया था। वहां पर कई ख़ाली बक्से पड़े थे। उनमें से एक पर आसन जमाकर उसने कूट अभिनय के साथ अपने सीने पर की जेब में से लब्बे-चूस की दो टिकियां निकालीं जो ख़ूबसूरत काग़ज़ों में लिपटी हुई थीं। एक टिकिया उसने झटके के साथ शिकारी की ओर फेंकी। शिकारी ने उसे अपने मुंह ही में लोक लिया। काग़ज़ उतारकर दूसरी टिकिया कप्तान ब्राउन ने झट से अपने मुंह में डाल दी। उसके सुनहरे दांत चमक उठे। फिर उसने पतलून की पीछे वाली जेब में से व्हिस्की की बोतल निकाली और शिकारी पर एक धूर्त सी नज़र डाली।

शिकारी का चेहरा खिल उठा।

"मैं मानता था कि तुम मेरे दोस्त हो," कहते हुए कप्तान ने कुप्पी हवा में फेंकी और जैसे ही वह नीचे आयी कि हाथ में पकड़ ली। "लेकिन अब पता चला कि चार्ली लाल-नकुआ तुम्हारा दोस्त है," कुप्पी को जानबूझकर जेब में रखते हुए उसने वाक्य पूरा किया।

"मेरे यारंग में रीछ की एक खाल है।"

"क्या कहा, रीछ की खाल? ठीक! अब तुमने ठीक बात की। अगर ऐसा हो तो मैं अभी भी तुम्हें अपना दोस्त मानूंगा।"

कप्तान ने अपनी घुटना-जेब में से एक खुलने और बंद होने वाला प्याला निकाला और उसमें कुछ व्हिस्की उंडेल दी।

"लो चढ़ाओ!"

उसने निशानेबाज़ की आश्चर्यपूर्ण चपलता के साथ चूइंगगम को एक ओर थूक दिया और कुप्पी में से कई घूंट व्हिस्की पी गया।

शिकारी ने उल्लास में भरकर प्याला अपने थरथराते हाथों में पकड़ा और उसके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान दौड़ गयी। फिर उसने दो अंगुलियों के सहारे चूइंगगम को अपने मुंह से निकाल लिया और प्याले की सारी व्हिस्की एक ही घूंट में गटक ली।

"वाह वाऽह! क्या ख़ूऽऽब!" उसने बेसुरी तान सुनायी।

कप्तान ब्राउन ने शराब का प्याला फिर से भर दिया लेकिन जलपान के लिए कुछ भी नहीं दिया। और सच बात तो यह है कि शिकारी ख़ुद ही कुछ भी खाने से इनकार कर देता क्योंकि कुछ खाकर जलते पानी का मज़ा कौन बिगाड़ता!

"अरे, तुम्हें मेरे जैसा कप्तान दूसरा नहीं मिलेगा," ब्राउन ने कहा।

"बहुत अच्छा कप्तान, बढ़िया कप्तान!" पियक्कड़ की तर्ज़ में शिकारी बुदबुदाया और फिर तहख़ाने में से चिल्ला उठा:

"चोवका! दौड़ो, मेरे यारंग में जाकर वह रीछ की खाल ले आओ, जल्दी करो!"

लेन-देन जल्द ही ख़त्म हो गया। कप्तान ब्राउन डेक पर चढ़ आया और उसने जहाज़ का इंजन चलाने का हुक्म दिया।

"देखो कप्तान, हमें कुछ देर रुकना होगा," हार्लो ने फूहड़पन से खीस काढ़कर कहा। "जिम इंजन-रूम में एक छोकरी के साथ रंगरेलियां कर रहा है।"

"बेवक़ूफ़ कहीं का!" कप्तान गुर्राया। "यह क्या इश्क करने का वक़्त है? हमें अब रवाना होना चाहिए!"

'ध्रुव-रीछ' उत्तर की ग्रोर रवाना हुग्रा। जहाज़ जब किनारे के पास से होता हुग्रा तेज़ रफ़्तार के साथ जा रहा था तब सागर बिल्कुल शांत था। ग्रचानक चलायी गयी बंदूक़ की ग्रावाज़ से चौंककर पंछियों का एक बादल सा चट्टान पर से चीख़ता-चिल्लाता ग्रासमान में उड़ा। ये पंछी तूफ़ान में बरफ़ के टुकड़ों की तरह ग्रासमान में चक्कर काटने लगे। सागर बरफ़ से मुक्त था। हर बात से ग्रच्छी लाभदायक यात्रा के पूर्वसंकेत मिल रहे थे। कप्तान ब्राउन पतवार-चक्र के पास खड़ा खड़ा समुद्र का निरीक्षण कर रहा था।

"कहो कप्तान, शुरुग्रात कैसी रही?"

"ठीक है, हार्लो, ठीक है। उस शख़्स को ग्रब ग्यारह डॉलर बावन सेंट क़ीमत का ग्रमरीकी माल मिल गया है। लोमड़ियों की खालों की क़ीमत होगी हर खाल के लिए ढाई डॉलर। रीछ की खाल के बारे में ख़ास कहने लायक़ कुछ भी नहीं, लेकिन मैं मानता हूं कि जितनी क़ीमत हमने उसके लिए दी है उससे कुछ ज़्यादा रक़म पर हम उसे बेच सकेंगे!"

इन लोगों के हार्दिक हंसी-कहकहों से निर्जन तट गूंज उठा।

मि० ब्राउन, मि० हार्लो ग्रौर रसोइया जिम ग्रपनी जवानी में ग्रमरीका का कई बार चक्कर लगा चुके थे। वहां उन्होंने तरह तरह के पेशों में ग्रपनी क़िस्मत ग्राज़मायी ग्रौर देश के सभी हिस्सों का दौरा किया। जिस तरह वे ग्रलास्का ग्रौर चुकोत्स्क तट को जानते थे उसी तरह मेक्सिको ग्रौर कॅलिफ़ोर्निया से भी वे परिचित थे।

पांच साल पहले इन्होंने एक छोटी सी प्राइवेट कंपनी क़ायम की, एक जहाज़ ख़रीदा लिया ग्रौर कहा: "चलो, पुराने दोस्त, हमें वहां ले चलो जहां सफ़ेद रीछ रहते हैं!" खुले मौकों ग्रौर बग़ैर-चुंगी व्यापार के देश में ग्रपनी क़िस्मत ग्राज़माने के लिए उन्होंने चुकोत्स्क का किनारा चुन लिया।

हर शिशिर में कप्तान ब्राउन वार्षिक अभियान निश्चित कर लेता और उसकी सिद्धता के लिए सीटल और सेन-फ्रांसिस्को के कबाड़ियों की दूकानें छानकर कई टूटी-फूटी पुरानी चीज़ें मिट्टी के मोल ख़रीद लेता। चुकोत्स्क के किनारे पर इन चीज़ों की भी काफ़ी क़ीमत थी और उन्हें देखकर स्थानीय निवासियों की आंखें चमक उठती थीं।

"अच्छा हार्लो, लोरेन में ठहरने का क्या हुआ? अरे, हमसे इस साल की ख़बर सुनकर वह पुराना मुर्गाबी थामसन तो पागल हो जायेगा। वह हमेशा एक साल पुरानी ख़बरें पसंद करता है लेकिन लानत है हमपर अगर यह ख़बर हमने उसके गले के नीचे न उतार दी। यह कड़ुआ घूंट उसे निगलना ही पड़ेगा, भले ही वह चाहे या न चाहे।"

"कप्तान, मैं तो कहता हूं कि वैंकूवर से नॉर्थ कंपनी के भारी जहाज़ 'बीचाइमो' के रवाना होने की ख़बर सुनकर उसे मिरगी का दौरा पड़ जायेगा!"

"यह सुनकर वह अपना काला चश्मा निगल जाये तो भी कोई आश्चर्य नहीं होगा!"

दोनों अमरीकी ठट्ठा मारकर हंस पड़े।

थामसन के गोदाम की पनारीदार चादर वाली छत कुछ दूरी पर धुंधली धुंधली चमक रही थी।

'ध्रुव-रीछ' ने लंगर डाला ही था कि एक चुकची डोंगी किनारे से रवाना होकर तेज़ रफ़्तार और बड़े ज़ोर-शोर के साथ जहाज़ की ओर आयी। डोंगी में शिकारियों के साथ चार्लस थामसन भी बैठा था।

"नमस्ते कप्तान!" छोटी सी सीढ़ियों पर बड़ी मुश्किल से चढ़ते हुए वह चिल्लाया।

मि० हार्लो जल्दी जल्दी जहाज़ के किनारे की ओर दौड़ा और अपना लंबा हाथ नीचे करके उसने मोटे-ताज़े मि० थामसन को पकड़कर डेक पर खींच लिया। वे सीधे उस छोटी सी केबिन के पास गये जहां कप्तान उनके स्वागतार्थ खड़ा था।

मि० थामसन एक आराम-कुर्सी में लुढ़क गया। कप्तान ब्राउन उसके दाहिने बैठा और हार्लो उसके बायें।

जिम ने शिष्टाचार के साथ गरमागरम कॉफ़ी के प्याले और एक मेवादान लाकर मेज़ पर रख दिया।

"लीजिये, मि० थामसन! यहां तो संतरे पैदा नहीं होते। हां, क्षण भर के लिए यही समझ लीजिये कि आप वापस सभ्य संसार में पहुंच गये हैं—ज़रा इनका मज़ा लीजिये," कप्तान बोला।

"धन्यवाद, लेकिन इन संतरों की अपेक्षा मैं 'प्रिन्स अल्बर्ट' तंबाकू से भरी पाइप ज़्यादा पसंद करूंगा।"

मि० हार्लो ने फ़ौरन तंबाकू का डिब्बा उसकी ओर बढ़ा दिया। डिब्बे पर फांकदार कोट पहने हुए, साफ़ छोटी सी दाढ़ी वाले एक रोबदार सज्जन का चित्र था।

मि० थामसन ने ख़ुशबूदार धुएं का कश खींचा और फिर एकदम पूछा:

"कहो कप्तान, अमरीका की क्या ख़बर है?"

"ओहो! ताज़ी ख़बरों में आप कब से दिलचस्पी लेने लगे?" कप्तान ने हंसते हुए कहा। "क्या अगले साल के अख़बार में आपको वे नहीं मिल सकतीं?"

"तब तक शायद मैं मर जाऊंगा, समझे कप्तान? और मुझे पता नहीं चलेगा कि दुनिया में क्या हो रहा है। तुम जानते ही हो कि आजकल का ज़माना बड़ा अजीब है। इन दिनों वक़्त पर ख़बर पाना ज़रूरी है।"

"मि० थामसन, आप ही ऐसा कहते हैं तो सुनिये। बहुत सी ख़बरें हैं जो मैं आपको सुना दूं। ख़बरों की गाड़ी की गाड़ी भरी पड़ी है!"

"एक गाड़ी से क्या होगा कप्तान!" मि० हार्लो बीच ही में बोल उठा। "अजी पूरा जहाज़ भरा है—'बीचाइमो' जहाज़!"

"मि० थामसन, मुख्तसर में कहना हो तो आप और मैं यानी हम दोनों एक महान अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक भंवर में फंस गये हैं। देश-विदेशों में राजनीतिक चालें चलती हैं और इधर जेबें ख़ाली होती हैं हमारी! सचमुच, मि० थामसन, हमारा भारी नुकसान होता है। मि० थामसन, आप एक दुनियांदार आदमी हैं और मैं आप ही से पूछता हूं कि इन सारी बातों के क्या मानी हैं?"

कप्तान ब्राउन कुछ देर चुपचाप अपनी पाइप के कश लगाता रहा फिर बोला:

"अब दुनिया के इस दईमारे कोने को ही लीजिये और कहिये कि कौन इसे अपने गले मढ़ना चाहेगा? अरे, कौन ऐसा बड़ा बेपारी है जो व्हेल की चरबी का झमेला मोल लेगा? लेकिन हैं, मि० थामसन, ऐसे लोग भी हैं, और काफ़ी बड़े हैं ये लोग जिनका लोभी पंजा इस किनारे को भी हड़प लेने की तैयारी में है। हम जैसी छोटी छोटी मछलियों पर ये बड़े बड़े शार्क ज़रा भी दया न दिखायेंगे और पूरी की पूरी गटक जायेंगे।" कप्तान ब्राउन ने अपना मुंह इस तरह बाया कि अत्यंत स्थिर-चित्त व्यक्ति भी घबड़ा उठे। "और मि० थामसन, सब से बुरी बात यह कि हमारे हाथ-पैर जकड़े हुए हैं—ये लोग हमें कुत्ते जितना भी मौक़ा नहीं देंगे।"

"कौन लोग?" मि० थामसन ने शांति से पूछा।

"बोल्शेविक, मि० थामसन, बोल्शेविक! क्रांतियों को आप जानते ही हैं। साफ़ कहना हो तो इस वक़्त हम बोल्शेविक सागर

में बातचीत कर रहे हैं। कहिये, मि० थामसन कैसा लगता है यह विचार आपको? मैं कहता हूं कि ये बोल्शेविक बड़े तेज़ हैं। लेकिन इसमें कोई परेशानी की बात नहीं। परेशानी यह है कि उन्होंने कामचात्का और चुकोत्स्क किनारे पर व्यापार करने के पूरे अधिकार नॉर्थ कंपनी को दे डाले हैं। मि० थामसन, इसे कहते हैं विशेषाधिकार। और मैं दावे के साथ कहता हूं कि एक महीने के अंदर अंदर वैंकूवर स्टीमरों के भोंपों की आवाज़ इन खामोश किनारों पर सुनाई देगी। ये जहाज़ यहां उसी तरह चिल्ला उठेंगे जिस तरह जंगलों में सियार! आग लग जाये उन जहाज़ों में! आप जानते हैं, मि० थामसन, कि नॉर्थ कंपनी के जहाज़ 'बीचाइमो' पर इस वक़्त सेन-फ़्रांसिस्को में माल लादा जा रहा है?"

इस घूंट को मि० थामसन के गले उतारने के लिए कप्तान ब्राउन कुछ देर के लिए रुका और कनखियों से मि० थामसन की ओर देखने लगा।

"मि० थामसन, जानते हैं यह जहाज़ कितना भारी है? दस हज़ार टन! मेरे नन्हे से बेचारे 'ध्रुव-रीछ' की तरह एक सौ बीस टन नहीं!"

मि० थामसन की सांस ऊपर-नीचे होने लगी। यह किसने सोचा था कि इस प्रदेश में नॉर्थ कंपनी को सचमुच इतनी दिलचस्पी होगी? यह कंपनी कोई ऐरी-गैरी तो है नहीं! इसके बेड़े में एक सौ चालीस जहाज़ हैं! आख़िर वह बोल्शेविक जुकोव सच कह रहा था।

कप्तान ने आगे कहा:

"जानते हैं मि० थामसन, नॉर्थ कंपनी हडसन उपसागर स्थित केंद्रों की तरह सब जगह अपने व्यापार-केंद्र स्थापित करेगी और उनमें सचमुच अव्वल दर्जे का माल रखेगी। मि० थामसन, आप इसका मतलब जानते हैं? इसका मतलब है कि आपको यहां से कूच

करना होगा। और अब जाने के लिए मंगलग्रह को छोड़कर दूसरी कोई जगह नहीं बची," कप्तान ने निराशा के लहजे में कहा। "अमरीकी अख़बारों से मालूम होता है कि यहां व्यापार का एकाधिकार नॉर्थ कंपनी के पास होगा और रोवेंदार खालें और उनके बदले में दी जाने वाली चीज़ों की क़ीमतें नियंत्रित रहेंगी। रूसी सरकार ने यही शर्त लगायी है। यह भी मुमकिन है कि बोल्शेविक लोग नॉर्थ कम्पनी का निरीक्षण करना चाहेंगे। तब आप देख लेंगे क्या होगा। क्या आप समझते हैं कि आज तक हमारी रोटी में मक्खन चुपड़ने वाले ये जंगली लोग अब ऐसे ही अपना माल हमारे पास ले आयेंगे? अगर हम उनसे खालें ख़रीदना चाहें तो हमें नुकसान उठाकर लेन-देन करना पड़ेगा। कोई डर नहीं। कौनसी राह अपनानी चाहिए यह जानने जितनी अक़्ल उनके पास ज़रूर है और अंतःप्रेरणा भी—मि० थामसन आप इसे निश्चित मान लीजियेगा।"

मि० थामसन ने अपना चश्मा उतारा और उसे बिना ज़रूरत के ऐसे ही पोंछने लगा। उसके चेहरे की झुर्रियों में पसीने की बूंदें चमकने लगीं। कप्तान ब्राउन सोच रहा था कि उन खालों को कैसे हथियाया जाये जो इस बूढ़े खूसट के पास हैं।

"मि० थामसन, और एक बात। देखिये आपकी फ़र्म का एजंट अब शायद ही यहां आ सकेगा। केरी के चुंगी घर से चकमा देकर आगे बढ़ने का साहस वह नहीं करेगा।"

"बिल्कुल ठीक," मि० हार्लो ने हामी भरी। उसने भांप लिया था कि कप्तान क्या कहना चाहता है।

"और तब मि० थामसन," कप्तान ने आगे कहना शुरू किया। "आप इन खालों को सैंतते ही रहेंगे और वे सड़ जायेंगी। हां, हमारी बात अलग है। हम ख़तरा मोल लेने के लिए तैयार रहते हैं। अगर छूट निकले तो ठीक ही है। लेकिन आपका आदमी

ओलाफ़ एक प्रतिष्ठित व्यापार-गृह का प्रतिनिधि है। अलावा इसके पंद्रह सौ टन वाला उसका जहाज़ इतना बड़ा है कि चुंगीचोरी करके वह आगे नहीं बढ़ सकेगा। समझे मि० थामसन?"

कप्तान उठ खड़ा हुआ, एक खिड़की से थूका और छोटे से 'सलून' में चहलक़दमी करने लगा।

"तो आख़िर मेरी रोवेंदार खालों का क्या होगा?" मि० थामसन ने उद्विग्न होकर कहा।

"इसे आप ही अच्छी तरह जानते हैं। और अब बताइये – क्योंकि आप इस किनारे के पुराने जानकार हैं–कि अपने लेन-देन को जल्दी जल्दी पूरा कर लेने की दृष्टि से हम अपना जहाज़ कहां रोकें? मुझे कुछ आश्चर्य नहीं होगा यदि कोई सोवियत गनबोट मेरा सुराग़ पाकर मुझे किसी ऐसे बंदरगाह की ओर खदेड़ दे जहां जाने की मैं कभी सोचता तक नहीं। अब मैंने इन सोवियत लोगों की बातों पर गंभीरतापूर्वक विचार करना शुरू कर दिया है!"

मि० थामसन ने फिर अपना चश्मा पोंछा और किसी तरह कप्तान की पकड़ में न आते हुए जवाब दिया:

"देखो, तुम एनमकाई में रुककर देख लो। कहते हैं कि अलितेत के पास इस मौसम में बेचने के लिए कुछ खालें हैं।"

मि० थामसन भारी हृदय से अपनी डोंगी पर चला गया।

"नमस्ते कप्तान! आशा करता हूं कि अलितेत के साथ तुम्हारा अच्छा लेन-देन होगा। मैं मानता हूं कि यह हम दोनों के हित की बात होगी।"

"अच्छा मि० थामसन!"

'ध्रुव-रीछ' का हृदय-स्पंदन आरंभ हुआ। जहाज़ के पाल खोले गये और हवा के अनुकूल होते ही वह उत्तर की ओर रवाना हो गया।

"कहो, हार्लो, मि० थामसन की इस वक़्त क्या हालत हुई होगी?"

"कप्तान, मुझे तो ऐसा लगता है कि जल्द ही किसी रात को उसका दिल फट जायेगा।"

जलदस्यु ठट्ठा मारकर हंस पड़े। मि० हार्लो ने अपनी पीछे वाली जेब में से व्हिस्की की बोतल निकाली और उसके कई घूंट पी गया।

"अगर उसका दिल सचमुच फटने वाला है—और यह ज़रूर होगा—तो, कप्तान, तुम्हारे लिए बड़ा अच्छा होगा। हमारी वापसी यात्रा के समय तुम्हें मेरी के साथ गठबंधन का मौक़ा मिलेगा। उस आदमी ने एक ही शिशिर में जितनी खालें ख़रीदी हैं उतनी तुम कभी नहीं ख़रीद सकोगे।"

कप्तान ने ज़बान चटकायी और अर्ध-गंभीर स्वर में कहा:

"हार्लो, कल्पना तो बुरी नहीं! ऐसी वारिस के होते हुए बैंक को भी हिचकिचाहट का मौक़ा नहीं मिलेगा। मैं कहता हूं कि यह कल्पना मेरी उस कल्पना से भी अच्छी है जो मि० थामसन के साथ बातचीत करते समय मेरे दिमाग़ में थी।"

मि० हार्लो होठों ही होठों में मुस्कराया और जैसे उसे उकसाते हुए बोला:

"कहते हैं कि उसके हिसाब में दो लाख की पूंजी जमा है। इतनी रक़म अमरीका में ज़िंदगी काटने के लिए काफ़ी है।"

दूसरा अध्याय

उन गरमियों में एनमकाई बस्ती की काया पलट गयी। अलितेत के यारंग से कुछ ही दूर एक नया मकान बन गया था जो तांग लोगों के मकान जैसा था। यह मकान अलितेत का था और

गोदाम का काम दे रहा था। ज़मीन में गाड़े हुए खंभों के बीच हल्का अमरीकी टाट तानकर उसकी दीवारें बनायी गयी थीं जिनमें से काफ़ी रोशनी अंदर आ सकती थी और इसलिए खिड़कियों की कोई आवश्यकता न थी। इस मकान की छत मि० थामसन के गोदाम की तरह पनारीदार और कलईदार चद्दरों की बनी थी। बादलों में से चमकने वाली सूरज की मंद किरणें भी उसे गरमा सकती थीं। अंदर काफ़ी ख़ुश्की थी। दूर से यह गोदाम एक विशाल वैभवशाली निवासस्थान सा दिखाई देता था।

और इस मकान में वैभव था भी। वालरस खाल की लंबी लंबी रस्सियों की पांच कतारें अंदर टंगी थीं और उनपर से सफ़ेद, लाल और रुपहली लोमड़ियों और ध्रुवप्रदेशीय भेड़ियों की खालें दो दो या चार चार गुच्छों में लटक रही थीं—वहां कुल लगभग एक हज़ार खालें थीं। एक कोने में सफ़ेद रीछों की खालों का ढेर था और दूसरा कोना वालरस के दांतों और व्हेल की हड्डियों से अटा पड़ा था।

अलितेत ने हर खाल को पूंछ पकड़कर हिलाया और बारीकी से उसकी जांच की। इससे पहले कभी भी अलितेत के पास इतनी रोवेंदार खालें नहीं थीं। सच्चा व्यापारी बनने में चार्ली ने उसकी मदद की थी। अपने बड़े भारी व्यापार के विचार से अलितेत की आंखें चमक उठीं।

अलितेत की अनुभवी आंखों को फ़ौरन पता चल जाता था कि गोदाम में क्या कमी है या खालों के रखरखाव में क्या ख़ामी है—या तो सफ़ेद लोमड़ियों की खालें ठीक रोशनी में नहीं टंगी थीं या लाल लोमड़ियों की खालें ठीक तरह से बनायी नहीं गयी थीं या रीछ की खालों को जांचना ज़रूरी था। उसकी रोबदार आवाज़ गोदाम में गूंज उठती और तूमातूगे दौड़ता हुआ आकर उसकी आज्ञा का पालन करने लगता।

उसने फ़ौरन खालें टंगी हुई रस्सी से नीचे उतारीं और रई का आटा मलकर अनावश्यक चरबी और मांस हटा दिया। उसने एक क्षण के लिए भी यह न सोचा कि इस आटे की रोटी भी बन सकती है।

अपने व्यापारी यारंग के कारण उस बस्ती के शिकारियों और बहेलियों के बीच अलितेत की प्रतिष्ठा में चार चांद लग गये। केवल वामचो और बुड्ढा वाल अलितेत के इस नये वैभव को नफ़रत की निगाह से देखते थे।

एक युवती ने गोदाम में प्रवेश किया। यह थी अलितेत की तीसरी बीवी अत्तेनेउत, जो उसकी पहली बीवी की बहन थी। अलितेत उसे हाल ही में अपने घर लाया था और मुआवज़े के रूप में उसने उसके पति काइनो को एक मरियल कुत्ता तक न दिया था।

"तूमातूगे, तुम अत्तेनेउत को सिखा दो कि खालों को किस तरह टिकाऊ बनाया जाता है। उसे यह सीखने का मौक़ा कभी मिला ही नहीं। उसका पति काइनो एक फटेहाल शिकारी है। पता नहीं इसके हाथ में कभी रोवेंदार खाल आयी भी थी या नहीं।"

कुछ और छोटे मोटे हुक्म देकर अलितेत बड़ी अकड़ के साथ गोदाम के बाहर चला गया और एक टीले पर स्थित निरीक्षण-स्तंभ पर जा खड़ा हुआ। इस स्थान से अलितेत वालरसों के झुंडों को देखता और सागर पर नज़र रखता। एक मीनार के आधार का काम देने वाला खंभा बहता हुआ आकर किनारे लग गया था और यह स्पष्ट था कि किसी दिन वह एक पुराने युद्ध-पोत का मस्तूल रहा होगा। उसकी जड़ में कॅथरिन द्वितीया के काल के एक अमीर की आकृति खुदी हुई थी जिसका बालों का टोप विशाल तथा कलापूर्ण था। अब यह मस्तूल किनारे पर ज़मीन में गड़ा खड़ा था और अमीर का सिर घास में से झांकता हुआ दिखाई दे रहा था। मस्तूल में लकड़ी की खपचियां कीलों के सहारे ठोंकी गयी थीं जो सीढ़ियों का

काम दे रही थीं। ये सीढ़ियां एक मचान तक चली गयी थीं। यह मचान किसी जहाज़ के मस्तूल-सिर की तरह दिखाई देती थी।

अलितेत मचान पर चढ़ गया। उसने आंखों पर दूरबीन लगाकर देखा और एकदम चिल्ला उठा:

"जहाज़! जहाज़!"

लोग दौड़े हुए यारंगों के बाहर आये। लोगों की दौड़-धूप देखकर कुत्तों ने ज़ोरों से भूंकना शुरू किया। लोग एकटक हिममुक्त सागर को निहारने लगे।

अलितेत जल्दी जल्दी नीचे उतर आया, दूरबीन को तूमातूगे के हाथों में रखा और बोला:

"ऊपर जाओ और देखो कैसा जहाज़ है!"

तूमातूगे जल्दी जल्दी खंभे पर चढ़ गया। बाक़ी सभी लोगों को उसपर बड़ा रश्क हुआ। अलितेत तूमातूगे को छोड़कर और किसी को इस निरीक्षण-स्तंभ का उपयोग नहीं करने देता था।

"यह स्कूनर जहाज़ है! ब्राउन आ रहा है!" तूमातूगे चिल्लाया। अलितेत ने नीचे से चिल्लाकर पूछा:

"स्कूनर है कि स्टीमर?"

"स्कूनर है, अलितेत,—पालों वाला स्कूनर।"

"तुम ठीक ठीक जानते हो?"

"अलितेत, ज़रूर वह स्कूनर ही है। मैंने ठीक से देखा है। ब्राउन का जहाज़ मैं पहचानता हूं। उसके स्कूनर में दो मस्तूल होते हैं।"

"याद रखना, जब वह स्कूनर यहां रुकेगा तो तुममें से किसी को भी उसके पास नहीं जाना चाहिए," अलितेत ने शिकारियों को चेतावनी दी। "मेरिकनों को अगर हमारी ज़रूरत हो तो वे ख़ुद ही किनारे पर चले आयें। उनके पास छोटी नाव तो है ही।"

अलितेत अपने यारंग में गया, अपनी रोवेंदार खाल वाली क़मीज़ उतारी और चौख़ाने की अमरीकी क़मीज़ पहन ली।

"तीग्रेना, तुम भी रोवेंदार खाल के कपड़े उतारकर सूती कपड़े पहन लो। अभी कुछ ही देर में मेरिकन यहां आयेंगे। जल्दी जल्दी बारहसिंगे का झोल बना लो। और, उसमें नमक डालना मत भूलना। मैंने तुम्हें सिखाया ही है कि नमक कैसे डाला जाता है। तांग लोगों को बिना नमक का खाना पसंद नहीं आता। तांग लोगों वाले कटोरे, लोहे के पंजे और छुरियां ठीक से सजाकर रखना –बस, सब कुछ चार्ली की तरह होना चाहिए। मांस को बिना पानी के सिर्फ़ सफ़ेद तांग चरबी में पका लो। तांग लोग जब खाना शुरू करेंगे तब मांस अपने हाथ से मत उठाओ–लोहे के पंजों से काम लो।"

तीग्रेना अमरीकी खाना तैयार करने में जुट गयी। "इस खाने पर मेरा वक़्त बरबाद कराने वाले इन कुत्तों के लिए मैं रद्दी मांस ही बना लूंगी," आह भरते हुए तीग्रेना ने कहा।

अलितेत की हर बीवी के लिए अपना अपना काम मुकर्रर था। एक बीवी कुत्तों की देखभाल करती थी, दूसरी घर का कारोबार संभालती थी और तीसरी की नियुक्ति ख़ास मौक़ों के लिए थी। अभी हाल ही में अलितेत ने तीग्रेना को अमरीकी ढंग का खाना बनाना सिखाया था।

उसने राई, काली मिर्च, प्याज़ और दूसरे मसाले ख़रीद रखे थे। चार्ली की मेज़ पर देखी गयी तश्तरियों, छुरियों और चमच-कांटों जैसी वस्तुओं ने अलितेत की गृहस्थी में भी प्रवेश किया था।

यह सच था कि अलितेत के परिवार का कोई भी व्यक्ति, और विशेषकर खुद अलितेत, तांग पद्धति के खाने का मज़ा नहीं लेना चाहता था। लेकिन उसके यहां कभी कभी एकाध तांग का आगमन होता था और इसलिए अलितेत दिखाना चाहता था कि

वह भी एक सच्चा मेरिकन है। ऐसे मौक़ों पर तीग्रेना रोवेंदार खाल के कपड़े उतारकर सूती कपड़े बड़े ठाठ से पहन लेती थी क्योंकि यह अलितेत को अच्छा लगता था। ये विदेशी तरीक़े उसके लिए और उसके परिवार के अन्य सदस्यों के लिए अपरिचित थे फिर भी वह उन्हें अपनाने का आग्रह करता था।

विविध और विचित्र खाद्यपदार्थों से भरा एक बक्स लेकर अलितेत अंदर आया। इनमें नमक, प्याज़, कुकुरमुत्ते, टमाटर की चटनी, सूखे आलू, काली मिर्च इत्यादि चीज़ें शामिल थीं।

"ज़रा सोचो इन सब चीज़ों के मेल से कैसा गोश्त बनेगा," तीग्रेना ने मूड में आकर सोचा। "कुत्ते तक उसे न छुयेंगे। इन छोटी छोटी पुड़ियों के कचरे से बारहसिंगे का अच्छा गोश्त क्यों बिगाड़ा जाये?"

तीग्रेना ने कुछ चिढ़कर एक प्याज़ उठा लिया और उसे ख़ाली ज़मीन पर काटने लगी। यकायक उसकी आंखों में तीव्र वेदना होने लगी और आंसू उमड़ आये। बड़ी नफ़रत से उसने प्याज़ दूर फेंक दिया और अपनी आंखें मलने लगी।

"पता नहीं यह ख़तरनाक चीज़ डालकर गोश्त बिगाड़ने में क्या अक़्लमंदी है। और इस नमक में भी क्या रखा है जो खाने वाले की ज़बान और मुंह को जलाता है और कै करने को जी चाहता है?"

तीग्रेना ने काली मिर्च का एक डिब्बा खोला। इस काली बुकनी को चखकर देखने के इरादे से उसने अपनी ज़बान पर कुछ बुकनी रखी। दूसरे ही क्षण वह चीख़ती-चिल्लाती यारंग के बाहर दौड़ी, ज़मीन पर औंधे मुंह गिर पड़ी और जल्दी जल्दी बरफ़ चाटने लगी।

अलितेत वहां आ पहुंचा।

"तुम क्यों मादा भेड़िये की तरह चिल्ला रही हो?" उसने लापरवाही से पूछा।

"मैंने तांगों का कुछ खाना चखकर देखा था," तीग्रेना ने दर्दभरी आवाज़ में कहा। "लगता है कि कुछ ही देर में मर जाऊंगी।"

"बेवक़ूफ़ औरत, तुम इस खाने की आदी नहीं हो। तांग यह खाना खायेंगे और खाकर ज़िंदा रहेंगे। तुम्हें भी धीरे धीरे आदत पड़ जायेगी। चलो, स्कूनर कुछ ही देर में आ पहुंचेगा। जल्दी जल्दी मेरिकन खाना तैयार करो।"

तीग्रेना का चेहरा लाल हो उठा और उसे ऐसा महसूस हुआ कि किसी ने उसके मुंह में आग लगा दी हो। वह उठ खड़ी हुई और वापस यारंग में चली गयी।

एक बरतन में मांस पक रहा था। कैसी सोंधी सुगंध आ रही थी! यह था सच्चा खाना। लेकिन उसे तो वह मेरिकन तरीक़े से बनाना था। उसका स्वाद बिगाड़ना था।

तीग्रेना ने एक मुट्ठी-भर नमक बरतन में झोंक दिया। कुछ सोचकर उसने दूसरी मुट्ठी डाली और फिर तीसरी। विचारमग्न मुद्रा से उसने बक्स में झांककर देखा। तांग मेहमानों के खाने में और किस पुड़िया की चीज़ डाली जाये? एक मिनट तक सोचकर उसने सारे बक्स ही को बरतन में ख़ाली कर दिया। फिर उसने ज़रा सा चखकर देखा, थू थू किया और कहा:

"ऊंह! तांगों को यही ऊटपटांग खाना पसंद आता है!"

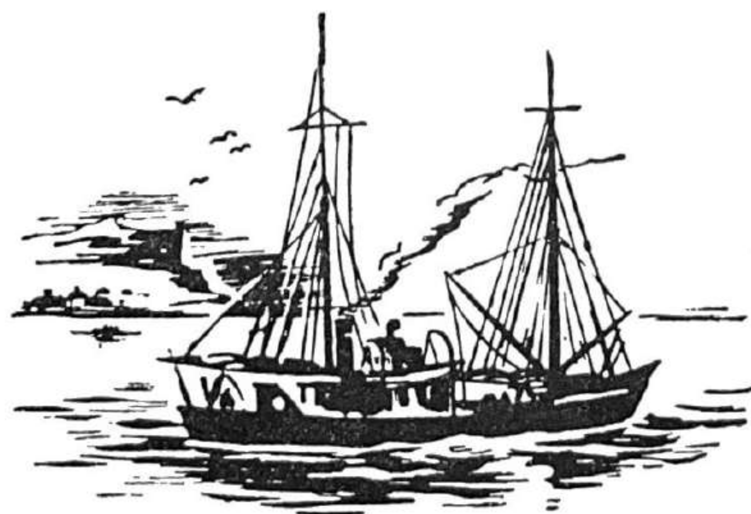
तीसरा अध्याय

'ध्रुव रीछ' पूरी रफ़्तार के साथ एनमकाई बस्ती के पास आ पहुंचा। उसने थिरकते हुए एक चक्कर खाया और फिर स्थिर होने लगा।

"लंगर डालने के लिए तैयार रहो!" कप्तान ब्राउन ने हुक्म दिया और फ़ौरन ख़ुद ही उसे बजा लाया। पतवार-चालक हार्लो ने पालों को गिराकर समेट लिया। लहरों पर स्कूनर घूम उठा।

अमेरिकन अपने जहाज़ के डेक पर आ खड़े हुए। एनमकाई बस्ती के लोग तट पर जमा हो गये। वे बड़े उत्सुक लग रहे थे। अलितेत ने किसी कारणवश उन्हें स्कूनर पर जाने की मनाही कर दी थी। कोई भी न जानता था कि उसने ऐसा क्यों किया। ऐसा लग रहा था कि अलितेत तांग बनता जा रहा है। उसका बर्ताव दिन-ब-दिन अधिकाधिक भ्रमकारी तथा दुर्बोध होता जा रहा था।

"क्यों ये लोग किनारे ही पर भीड़ लगाये हैं? उन्हें शायद इधर आने की कोई जल्दी नहीं। जिम, ज़रा भोंपू तो बजाना," कुछ उद्विग्न होकर कप्तान ब्राउन गुर्राया।



जिम ने झट से मूंठ पकड़कर उसे जोरों से घुमाना शुरू किया। जहाज़ के भोंपू से कर्ण-कर्कश आवाज़ निकलने लगी। ऐसा लगा कि तट पर खड़े दर्शक ख़ुशी से झूम उठे हैं। उन्होंने पानी में कंकड़ फेंकना तक बंद कर दिया। लेकिन भोंपू का प्रभाव इससे अधिक न हुआ।

कुछ भ्रांतचित्त होकर कप्तान ब्राउन ने अपनी दूरबीन से तट की ओर देखा।

"कहो कप्तान, यहां तक आने के लिए उनके पास कुछ है भी?"

"कैसे पागल हो, हार्लो! अरे देखते नहीं कि उनके पास डोंगियां हैं और व्हेल-नाव भी? ज़रा तट पर नज़र दौड़ाओ!" कप्तान ने झट से जवाब दिया। इस वक़्त उसका मिज़ाज बिगड़ता जा रहा था।

"इन जंगलियों ने शायद वालरस का मांस डटकर खाया है और इससे इतने सुस्त बन गये हैं कि नाव को ढकेलना तक उनके लिए मुश्किल हो गया है," हार्लो ने कहा। उसका मूड भी कप्तान जैसा ही हो रहा था।

"जिम, अपनी नाव को नीचे उतारने की तैयारी करो!"

"जी हां, जी हां, सरकार!"

स्कूनर को लंगर के सहारे झूमता हुआ रखकर तीनों जहाज़ी नाव में उतरे और किनारे की ओर रवाना हो गये।

अलितेत अपने गोदाम की दीवार की एक दरार में से इन अमरीकनों को देख रहा था। अब वह बाहर आ गया और उनके स्वागत के लिए तैयार रहा। अपनी अमरीकन क़मीज़ और छज्जे के कारण सारी भीड़ में उसकी कुछ निराली ही शान थी।

"हेल्लो, अलितेत!" कप्तान ब्राउन अपनी नाव में से चिल्लाया।

जैसे ही नाव किनारे लगी कि लोगों ने उसे पकड़कर उसमें बैठे हुए लोगों समेत तट पर खींच लिया।

"अरे तुम स्कूनर पर क्यों नहीं आये? क्या तुम इतने ग़रीब बन गये हो कि मेरे माल के बदले में देने के लिए तुम्हारे पास कुछ भी नहीं बचा? या शायद मेरे माल की तुम्हें कोई ज़रूरत ही नहीं?" अलितेत का अभिवादन करते हुए कप्तान ने कहा।

"मूरख शिकारी के लिए भी माल की ज़रूरत होती है। मैं भी माल ख़रीदना चाहता हूं। और मेरे पास लोमड़ी की खालें हैं। मेरा गोदाम देखा है आप लोगों ने?"

"वाह, बड़ा अच्छा गोदाम है! लेकिन कहो, तुम हमारे स्कूनर के डेक पर क्यों नहीं आये?"

"हमारी डोंगियों में तांतें लगी हुई हैं और किसी हलके-फुलके काम के लिए व्हेल-नाव का उपयोग करना वाजिब नहीं। इसके अलावा आपकी नाव हमेशा तैयार रहती है—मुझे मालूम था कि आपके जहाज़ पर एक छोटी सी नाव है।"

अमरीकी जहाज़ी बस्ती की ओर चल दिये। तट पर खड़े लोगों की भीड़ भी उनके पीछे पीछे हो ली। लेकिन अलितेत ने इशारा करके उन्हें मना कर दिया।

"ओहो, कैसा बड़ा गोदाम है!" कप्तान ने कहा। "अब मैं देखता हूं कि तुम सचमुच बड़े व्यापारी बनते जा रहे हो!"

अलितेत ने खीसें निकाल दीं और गोदाम की ओर इशारा करते हुए बड़े घमंड के साथ बोला:

"यहां सफ़ेद लोमड़ियों की काफ़ी खालें हैं। सब की सब बरफ़ की तरह सफ़ेद। सब की सफ़ाई-कमाई अच्छी तरह की गयी है। अगर आप लोग काफ़ी माल ले आये हों तो हमारा लेन-देन बड़ा अच्छा होगा। और अगर आपके पास माल कम हो तो हम अगले स्कूनर के इंतज़ार में रहेंगे।"

अलितेत की बात कप्तान ब्राउन ने जैसे सुनी ही नहीं। वह जल्दी जल्दी गोदाम में गया। वहां उसने जो कुछ देखा उससे दंग रह गया। उस चुंगीचोर की आंखें चमक उठीं।

"देखा भाइयो, यहां कुछ सौदा हो सकता है!" अपने भागीदारों से उसने अंग्रेज़ी में कहा।

आंखों से टपकने वाले आश्चर्य को छिपाते हुए कप्तान गोदाम में लटकती हुई खालों की क़तारें देखता गया। यदा-कदा एकाध खाल

की पूंछ पकड़कर उसे व्यवहार कुशल आदमी की तरह हिलाते-डुलाते हुए वह अलितेत की ओर मुड़कर पूछने लगता:

"एक भी खाल ख़राब नहीं?"

"जी नहीं!" बनावटी मुस्कराहट के साथ अपना सिर हिलाते हुए अलितेत बोला। फिर तूमातूगे की ओर घूमकर उसने तीखे स्वर में हुक्म दिया: "जाओ, यारंग में जाकर लोमड़ी की एक ख़राब खाल ले आओ। जल्दी करो!"

तूमातूगे बिजली की तरह दौड़ा और एक काली सी खाल लिये उसी रफ़्तार से वापस चला आया। इस खाल के रोवें छोटे छोटे थे और उसके बाज़ुओं का रंग उड़ गया था। तूमातूगे ने यह खाल अलितेत को थमायी।

"देखिये मि० ब्राउन, यह है ख़राब खाल! आप व्यापारी हैं—आपको मालूम होना चाहिए कि ख़राब खाल क्या होती है। इस तरह की खालें मैं अपने गोदाम में कभी नहीं रखता। यह सब मैं अपने यारंग में भेज देता हूं जहां मेरी बीवियां उनसे दस्ताने बनाती हैं। यहां सफ़ेद लोमड़ियों की जो खालें दिखाई दे रही हैं वे सब अव्वल दर्जे की हैं। बहुत ही बढ़िया!" अलितेत ने लंबी-चौड़ी प्रशंसा की।

"अच्छा, अलितेत, तुम्हें मुझसे कई अच्छी चीज़ें मिलेंगी। बहुत सी चीज़ें हैं मेरे पास!" गोदाम से बाहर जाते जाते कप्तान ब्राउन ने कहा। यह कहते समय वह ऐसा लापरवाह सा बन गया मानो सफ़ेद लोमड़ियों की खालों में उसे कुछ दिलचस्पी ही न हो।

"अच्छा अलितेत, अब स्कूनर पर चले आओ और मेरे मेहमान बनो। स्कूनर पर तुम मेरा माल भी देख लो!"

"मैं उसे यहां किनारे देखना चाहता हूं। मुझे अब समुंदर ज़रा भी पसंद नहीं। मैंने अपनी व्हेल-नाव में वालरसों का शिकार करना तक छोड़ दिया है। लेकिन पहले हम लोग मेरे यारंग में

चलकर खाना खा लें। अपने मेरिकन मेहमान की मैं ख़ातिरदारी करना चाहता हूं। मैंने अपनी बीवी से बारहसिंगे का बढ़िया गोश्त पकाने को कहा है—और वह भी मेरिकन तरीक़े से। मेरिकन मेहमान की मैं अच्छी ख़ातिर-तवाज़ा करना चाहता हूं। स्कूनर पर मैं नहीं आऊंगा," अलितेत ने निश्चय के स्वर में कहा।

"जिम, जल्दी वापस स्कूनर पर जाओ और शराब ले आओ। देखो, काफ़ी ले आना। चलो जल्दी करो!" कप्तान ने हुक्म दिया।

"सुनो, कप्तान, सिर्फ़ मैं आपका सारा माल लेना चाहता हूं। उसमें से कोई भी चीज़ किसी दूसरे शिकारी के हाथ नहीं जानी चाहिए। यहां वामचो नाम का एक शिकारी है। उसके पास सफ़ेद लोमड़ियों की तीन खालें हैं। वह उन्हें बेचकर कुछ ख़रीदना चाहेगा। अगर आपने उसके साथ लेन-देन किया तो मैं अपने गोदाम के दरवाज़े बंद कर दूंगा।"

"ओह, मैं समझ गया। उसके पास की तीन खालों से मुझे क्या करना है? भले ही और कोई स्कूनर आकर इस तरह एक एक बार में तीन तीन खालों का व्यापार करे। मैं तो थोक व्यापार करना चाहता हूं।"

जिम ने इन लोगों को देर तक इंतज़ार में नहीं रखा। अमरीकी मेहमान शोरगुल करते हुए अलितेत के यारंग में घुस गये और बारहसिंगों की नयी रोवेंदार खालों पर आसन जमाकर बैठ गये।

तीग्रेना मेज़बान बनी हुई थी और जब इन अमरीकियों ने उससे हाथ मिलाकर अजीब सी भाषा में कुछ कहा तब वह ज़रा गड़बड़ा सी गयी। अपनी सारी ज़िंदगी में उसने इस तरह किसी से हाथ न मिलाया था। और तुर्रा यह कि लोगों की नज़र बचाकर जिम ने उसे चिकोटी भी काटी थी।

शीघ्र ही रकाबियां, चम्मच-कांटे और मसालेदार शोरबे से भरा हुआ तसला एक छोटी सी मेज़ पर रख दिया गया।

"ओहो! बिल्कुल अमेरिकन रेस्तरां जैसा लग रहा है यहां!" अपने साथियों की ओर देखकर आंख मारते और मेज़ की ओर सरकते हुए कप्तान ने कहा।

अमरीकी मेहमान अध झुकी अवस्था में मेज़ के पास बैठ गये। अलितेत भी पलथी मारकर बैठ गया।

"जिम, मुझे लगता है कि उस छोकरी पर तुम लट्टू हो गये हो–कैसे उसे आंखों में भर रहे हो!" कप्तान ने कहा।

"कप्तान, मैं देख रहा हूं कि आप भी डोरे डालते जा रहे हैं," जिम ने तपाक से प्रत्युत्तर दिया।

तीनों खिलखिलाकर हंस पड़े।

"यहां शायद मैं ही अकेला आदमी हूं जिसकी निगाह अपने कारोबार पर है," झट से व्हिस्की की एक बोतल निकालते हुए मि० हार्लो ने कहा।

"अरे, प्याले लाओ!" अलितेत ने हुक्म दिया।

एनामेल के बड़े बड़े मग मेज़ पर रखने के लिए तीग्रेना झुक गयी। जिम ने उसकी पीठ पर अपना हाथ रखा।

"जिम शैतान!" कप्तान चिल्लाया। "काश तुम तूफ़ान में पाल से ऐसे ही चिपके रहते जैसे इस छोकरी से चिपक रहे हो!"

"जिम, बड़े फक्कड़ भिखमंगे हो तुम," मि० हार्लो ने शांत स्वर में कहा। "तुम व्यापार-व्यवहार भूल रहे हो। याद रखो कि हमारी फ़र्म के बारह शेयरों के तुम मालिक हो।"

कप्तान ब्राउन ने एक मग लबालब भरकर अलितेत के आगे रख दिया।

"मुझे व्हिस्की नहीं चाहिए," अलितेत ने कंधे सिकोड़कर कहा। "चार्ली ने कहा था कि सच्चा व्यापारी सौदा ख़त्म होने पर ही

व्हिस्की पीता है। सौदा पूरा होने से पहले वही शिकारी पीते हैं जिनके पास दो-तीन खालें होती हैं और वे ऐसा करते हैं अपने को खुशदिल बनाने के लिए। लेकिन मैं तो ऐसे ही खुशदिल हूं।"

"चार्ली ने तुमसे झूठ कहा है। मैं भी तो सच्चा व्यापारी हूं। कहो ठीक है न? और देखो, फिर भी मैं पहले पीने जा रहा हूं। असल में बात यह है कि सच्चा व्यापारी सौदा शुरू होने से पहले ही पी लेता है। मैं चार्ली से अधिक जानता हूं।" यह कहकर कप्तान ने अपना मग गटक लिया।

मि० हार्लो ने व्हिस्की को अलितेत की ओर सरकाते हुए और उनके मग से अपना मग टकराते हुए चापलूसी के स्वर में कहा:

"अलितेत मेरे साथ पीना चाहता है!"

लेकिन अलितेत ने अपनी तिरछी आंखें सिकोड़ीं, पीछे की ओर सरका और सिर हिलाते हुए कहने लगा:

"नहीं, नहीं, नहीं!"

अमरीकनों ने साश्चर्य एक दूसरे की ओर देखा।

"लगता है कि उस चालाक चूहे थामसन ने धन का जादू फेरना शुरू किया है। तभी तो यह उजड्ड इस हद तक आ पहुंचा है," कप्तान गुर्राया।

"जी हां सरकार—मुझे भी ऐसा ही लगता है," हार्लो ने कहा। "लेकिन कप्तान, घबड़ाने की कोई जरूरत नहीं। आखिर कितनी देर इसकी चल सकेगी! मैं तो अभी देख रहा हूं कि इसके मुंह में पानी भर आया है।"

जिम ने शोरबे का एक चम्मच मुंह में डाला ही था कि एकदम मुंह बाकर उसे ज़ोरों से नीचे पटक दिया।

"मर गये कप्तान साहब, मर गये! अरे यह तो खून है खून! यह शोरबा है कि आग?"

"देखो जिम, हमें मेज़बान का अपमान नहीं करना चाहिए। क्या तुमने गोदाम में लटकती हुई खालें नहीं देखीं? अरे, उन खालों के लिए मैं तो जिंदा चूहे तक खा जाऊंगा," हार्लो ने कहा।

"अगर तुमने उस रकाबी को चाटकर साफ़ नहीं किया तो मैं तुम्हें हफ़्ता भर की सज़ा दूंगा," कप्तान ने सख़्त आवाज़ में कहा।

"अच्छा कप्तान! हम उम्मीद करें कि इस तेज़ दावत के बाद भी ज़िंदा रहा जा सकता है। अगर मेरा कुछ भला-बुरा हुआ तो इस बेचारे जिम की लाश पोर्टलैंड में उसकी मां के पास भेज देना," रसोइये ने कहा और नाउम्मेदी से बेक़ाबू होकर शोरबे पर टूट पड़ा।

तीग्रेना पोलोग के एक कोने में बैठी सिलाई कर रही थी। वह सील जितनी ही जिज्ञासु थी और चोरी चोरी इन अमरीकियों की हालत का मुआयना कर रही थी।

लग रहा था कि यह भयंकर खाना वे बड़े जोश के साथ खा रहे हैं। तीग्रेना का जी करता था कि ख़ूब हंस ले, लेकिन हंसने के लिए कोई कारण न था—खाना हंसी-मज़ाक़ की बात थोड़े ही है!

अमरीकियों ने सारा शोरबा खा लिया। फिर तीग्रेना ने भुना हुआ मांस परोसा। उसमें भी शोरबे ही की तरह ज़ोरदार नमक-मसाला पड़ा हुआ था।

"हां भई, इसे कहते हैं असली खाना! अमेरिकन तरीक़े से बनाया हुआ!" कप्तान ने प्रोत्साहन के स्वर में कहा।

जिम हंसी न रोक सका और उसका गला जैसे घुट गया।

"अच्छा अलितेत, उस बढ़िया खाने के बाद व्हिस्की का दौर तो होना ही चाहिए—ठीक है न?"

लेकिन इस बार भी मेहमान अकेले ही पी गये।

तीग्रेना अमरीकियों को इस तरह घूर रही थी मानो उसपर जादू फिर गया हो। लेकिन उसको सब से अधिक आश्चर्य हुआ ख़ुद

अलितेत पर। क्या वह तांग था जो इस घृणित अमरीकी खाने को पेटू की तरह गटकता गया?

यह खाना केवल अतिथियों के लिए ही नहीं बल्कि ख़ुद अलितेत के लिए एक अग्नि-परीक्षा था। आख़िर यह अग्नि-परीक्षा समाप्त हुई और वे बाहर चले गये। वहां उन्होंने खुलकर ताज़ी हवा में सांस ली।

जंगली बत्तख़ों के बड़े बड़े झुंड ज़ोरों से किकियाते और पंख फड़फड़ाते हुए उड़ते जा रहे थे। समुद्र के किनारे किनारे उनका अखंड प्रवाह सा बहता जा रहा था, मानो उत्तर की ओर उनका यह देशांतर कभी समाप्त ही नहीं होगा।

बस्ती के पास ही, उड़ती हुई बत्तख़ों के मार्ग को चीरता हुआ एक छोटा सा अंतरीप समुद्र में धंसा था। यहां अलितेत ने दो लंबे लंबे खंभों के बीच एक लंबा-चौड़ा जाल तान रखा था। पूरी रफ़्तार से उड़ने वाले पंछी इस जाल से आ टकराते, उनके सिर जाल-रंध्रों में फंस जाते और वे पंख फड़फड़ाते हुए छुटकारा पाने के लिए तड़पते रहते। पीछे से आने वाले झुंड इस ख़तरे को देखकर आसमान में और ऊपर से उड़ने लगते और उनकी उड़ान निर्बाध रूप से जारी रहती।

'ध्रुव-रीछ' किनारे से कुछ दूर लंगर डाले झूम रहा था। अमरीकियों ने माल का मुआयना करने के लिए फिर एक बार अलितेत को जहाज़ पर बुलाया लेकिन उसने साफ़ इनकार कर दिया और कहा:

"जी नहीं, मैं नहीं आऊंगा। व्यापार की चीज़ें सब एक सी तो होती हैं। वे लोमड़ी की खालें थोड़े ही हैं कि कुछ अच्छी हों और कुछ ख़राब! आपका माल देखने की कोई ज़रूरत नहीं। सौदा हम यहीं, किनारे पर ही कर लें।"

अलितेत की हठधर्मी से तंग आकर अमरीकी जहाज़ी गोदाम में चले गये। कप्तान ब्राउन अपनी उत्तेजना को दबाता हुआ चुपचाप उन खालों की क़तारें देखता गया जो वहां लटक रही थीं। कुछ देर पहले खाये हुए भयंकर खाने के असर से परेशान होकर वह खालों की ओर घूरता रहा। उसकी सूरत उस समय ऐसी दिखाई दी मानो कोई हिंस्र प्राणी चारा लगे कांटे की ओर अपना जबड़ा फैलाकर देख रहा हो। ये खालें जैसे उसी की बन गयी थीं, लेकिन उस तिरछी आंखों वाले शैतान को क़ाबू में करना ज़रूरी था। कोई सोच न सकता था कि अगले क्षण वह क्या कर डालेगा। इस शैतान की ऐसी तैसी! क्या अभी तक किसी ने एक जंगली को व्हिस्की पीने से इनकार करते हुए सुना है? लेकिन फिर भी अब के से मौक़े को जो अपने हाथों से छूटने देगा वह परले सिरे का मूरख और गंवार ही होगा। वह किसी भी क़ीमत पर ये खालें लेकर ही रहेगा, वरना कप्तान ब्राउन कहलाने में उसे शर्म आयेगी। खालों को पाने के लिए ख़ून करने की नौबत आ जाये तो भी वह शायद हिचकिचायेगा नहीं। फिर अगर वह समुंदरी डाकू के हथकंडों को अपना ले तो उसमें आश्चर्य क्या?

"अच्छा! तो हम यहीं, किनारे पर सौदा करेंगे – तुम्हारे गोदाम में," बनावटी ख़ुशी से उसने कहा और पैर फैलाये और हाथों से घुटनों को घेरे वह रीछ की खालों के एक ढेर पर बैठ गया।

"बोलो अलितेत, तुम कौन-कौनसी चीज़ें चाहते हो?"

अलितेत का भूरा चेहरा खिल उठा। उसने झट से दो खालें नीचे उतार लीं और उन्हें कप्तान की नाक के आगे हिलाकर कोमल स्वर में कहा:

"इनके बदले में मैं चाहता हूं तंबाकू। सिर्फ़ तंबाकू!"

"यह भी कोई सौदा है? हम पहले इन सब खालों की क़ीमतें ग्रांक लें ग्रौर बाद में सारा माल तुम्हें एक मुश्त दे देंगे। तुम मूरख शिकारी नहीं बल्कि सच्चे व्यापारी हो।"

"लेकिन मैं मूरख हूं। हम सभी मूरख हैं। एक मुश्त व्यापार करना मैं नहीं जानता। ये खालें मैंने एक एक करके ख़रीदी हैं, एक मुश्त नहीं। हम धीरे धीरे ही सौदा करेंगे।"

"ग्रलितेत, तुम कहीं पागल तो नहीं हो गये? ग्रगर हम एक एक खाल का सौदा करें तो मुझे यहां पूरा हफ़्ता लग जायेगा। फिर बरफ़ बहती ग्रायेगी ग्रौर मेरे स्कूनर को किनारे ढकेल देगी।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा। मैं जानता हूं कि बरफ़ के ग्राने में ग्रभी काफ़ी देर है। बरफ़ के बारे में ग्राप मुझसे पूछ लें। मैं सब कुछ जानता हूं। ज़रा ठहरिये, मैं बाहर जाकर ग्रासमान देख लूं ठीक से बतला दूंगा।"

"कोई ज़रूरत नहीं," कप्तान ने गुस्से में कहा।

"बहुत ग्रच्छा – कोई ज़रूरत नहीं! ठीक है, इन दो खालों के बदले में मुझे तंबाकू दे दो। बस, सिर्फ़ तंबाकू।"

"क्या तुम भूल गये कि सौदा कैसे करना चाहिए? दो खालों के बदले में तुम एक ही चीज़ जो मांग रहे हो! ग्रमरीका में इस तरह का लेन-देन नहीं होता।"

"मुझे काफ़ी तंबाकू की ज़रूरत है। बहुत से तंबाकू की! टुंड्रा के किसी भी बाशिंदे के पास इस वक़्त तंबाकू नहीं है। हर कोई धुग्रां उड़ाना चाहता है लेकिन चिलम में भरने के लिए कुछ है ही नहीं। तो कहिये, क्या विचार है ग्रापका?" ग्रलितेत ने साग्रह पूछा। "बाद में मैं फिर विचार करूंगा। हो सकता है कि ग्रौर दो खालों के बदले में मैं ग्रौर तंबाकू ले लूं। मुझे सोचना ज़रूरी है। टुंड्रा के लोगों को क्या करना धरना है – वे तो कह बैठते हैं कि

'हमें तंबाकू दो'। लेकिन सब कुछ सोचना किसे पड़ता है? अलितेत को।"

"हार्लो, जिम के साथ स्कूनर पर जाओ और 'केंटुकी' तंबाकू की कुछ पत्ती ले आओ। 'ब्लेकनेवी' प्लग तंबाकू की कुछ पेटियां ले आओ और खाने की तंबाकू की भी एक पेटी," कप्तान ने हुक्म दिया।

"तूमातूगे, तुम जाओ उनके साथ—उनकी मदद करो। अब तुम मेरी व्हेल-नाव ले सकते हो—क्योंकि उनकी नाव बहुत ही छोटी है," अलितेत ने कहा।

कप्तान चुपचाप गोदाम में चहलक़दमी करता रहा। अलितेत उसके साथ साथ कुदकता-फुदकता रहा।

"हम अच्छा-ख़ासा सौदा करेंगे, बड़ा ज़ोरदार सौदा," वह बड़बड़ाया। "व्यापार करना बड़ा मज़ेदार काम है, किसी बड़े त्योहार जैसा है। मैं तीग्रेना से कहूंगा कि वह आज रात को और कल भी अमरीकी खाना बनाये। अच्छे आदमी को अच्छा खाना खिलाने में मैं कभी नहीं हिचकता।"

हाल ही के खाने की याद से कप्तान को हिचकी आ गयी। शब्द उसके गले ही में अटक गये। अपने गुस्से को क़ाबू में करने और सौदा पूरा करने के लिए ऊपर से प्रसन्न रहने के अलावा और वह कर भी क्या सकता था?

'केंटुकी' की पत्ता-तंबाकू की एक बोरी गोदाम में लायी गयी।

"लो यह रही तंबाकू की बोरी," अलितेत के कंधे पर से लटकने वाली खालें लेने के लिए हाथ बढ़ाते हुए कप्तान ने कहा।

अलितेत ने खालें दे दीं। फिर और एक जोड़ी खालें निकालीं और उन्हें ज़रा सा झटककर कहा:

"इनके बदले में कुछ और तंबाकू दीजिये।"

क्रोध से कप्तान की भौंहों पर बल पड़े और वह गुर्रा उठा :

"अरे तुम तो व्यापार करना बिल्कुल ही भूल गये! मैंने सिर्फ़ शुरुआत के बतौर तुम्हें दो खालों के बदले में तंबाकू की एक पूरी बोरी दे दी और अब तुम ज़्यादा तंबाकू मांग रहे हो! तुम जानते हो कि इस गठरी में पूरे एक सौ बारह अंग्रेज़ी पौंड तंबाकू है? क्या तुम समझते हो कि अमेरिकन किनारे पर 'केंटुकी' की पत्ता-तंबाकू ऐसे ही मिल जाता है? उसके लिए डॉलर देने पड़ते हैं डॉलर! तंबाकू हासिल करना तुम्हारे यारंगों के पास घूमने वाली दो-चार लोमड़ियों को पकड़ने जितना आसान नहीं है।"

अलितेत बंटे ध्यान से सुनता रहा क्योंकि वह मगन था अपने विचारों में और हिसाब में–"मुझे और कितनी तंबाकू की ज़रूरत है?"

कुछ देर बाद उसने कहा :

"अलितेत जानता है कि आपके देश के किनारे पर तंबाकू उसी तरह उगती है जिस तरह हमारे यहां की नदी-घाटियों में घास... बहुत ही तंबाकू पैदा होती है वहां। चार्ली ने मुझे बताया है... लीजिये यह एक जोड़ी और लीजिये और तंबाकू की दूसरी बोरी दीजिये।"

दूसरी बोरी लायी गयी। सिर्फ़ चार खालों का सौदा पूरा हुआ। कप्तान ने निराश होकर गोदाम की सब खालों पर निगाह दौड़ायी। लगभग एक हज़ार खालें वहां लटक रही थीं–शायद ज़्यादा भी हों। कप्तान सोच रहा था कि इस बर्बर के साथ पूरा सौदा करने के लिए कितनी देर ठहरना पड़ेगा? यह स्पष्ट था कि इस तरह का लेन-देन करना हो तो जहाज़ पर का सारा माल भी काफ़ी न होगा।

अलितेत ने तंबाकू की बोरियां एक पर एक रख दीं और ख़ुद उनपर बैठ गया। तंबाकू! यह थी तंबाकू! उसकी तेज़-तीखी गंध से

अलितेत के नथुनों में गुदगुदी पैदा होने लगी। बोरी का एक कोना उसने खोल दिया और उसमें से एक पत्ती निकाल ली। अपनी चिलम में ताज़ी तंबाकू भरकर उसने संतोष की सांस ली, खीसें निकालीं और चिलम सुलगा ली। कुछ देर बाद उसने दो खालें और निकालकर कहा:

"इनके बदले में मुझे चाहिए प्लग तंबाकू! फिर मैं कुछ और विचार करूंगा। हो सकता है कि मैं कुछ पत्ता-तंबाकू और ले लूं।"

क्रोध में पागल कप्तान ने ख़रीदी हुई खालें अलितेत के पैरों के पास पटक दीं और अपने आदमियों को अपना माल वापस जहाज़ पर ले जाने का हुक्म दिया।

जिम ने अलितेत को तंबाकू की बोरियों पर से ढकेल दिया और मि० हार्लो की सहायता से बोरियां बाहर खींचने लगा। अलितेत के चेहरे की मुस्कराहट उड़ गयी और उसकी त्योरियां चढ़ गयीं। गुस्से से चिल्लाकर उसने तूमातूगे से कहा:

"अरे बेवक़ूफ़! तुम उधर ऐसे हाथ लटकाये क्यों खड़े हो? हाथ टूट तो नहीं गये? ज़रा इन सफ़ेद आदमियों की मदद करो न। उनका माल किनारे पहुंचा आओ! अरे, मैं ख़ुद भी इन मेरिकनों की मदद करूंगा!" कहकर उसने एक पिटारे में हाथ लगाया।

बर्बर धूर्तता की इस बूंद से कप्तान के क्रोध का प्याला भर गया।

"कोई ज़रूरत नहीं तुम्हारी मदद की! छुओ मत इन चीज़ों को!" वह गरज उठा और उसने एक साथ दो पिटारे उठा लिये।

"ऐ है! ऐ है! कप्तान साहब ख़ुद काम कर रहे हैं! कैसी शर्म की बात है! ख़ैर, कोई दूसरा स्कूनर मेरे पास आयेगा। उत्तर की ओर तो आपका सौदा बिल्कुल न पटेगा और सारा माल वापस अमरीका ले जाना पड़ेगा।"

अलितेत कप्तान के पास से चलता हुआ उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करता जा रहा था।

"उत्तर के शिकारियों के पास खालें नहीं हैं। उनके पास जो कुछ खालें थीं वे अब मेरे गोदाम में टंगी हैं। फिर भी कोई हर्ज नहीं। आप ख़ुद उनके पास जाकर देख लीजिये। हो सकता है कि उन्होंने आपके लिए ग्रीष्मकालीन लोमड़ियों की कुछ हल्की खालें जुटा ली हों।"

इस उपहास से कप्तान का क्रोध सीमा पार कर गया और बड़े जोश में अलितेत की ओर घूमकर उसने उससे ज़बान संभालने को कहा। अलितेत गोदाम में वापस चला गया।

किनारे पर वामचो और बुड्ढा वाल खड़े थे। अलितेत को चिढ़ाने के लिए कप्तान ने कहा:

"वामचो, सुना है कि तुम्हारे पास सफ़ेद लोमड़ियों की तीन खालें हैं। क्या तंबाकू के ये दो पिटारे लेकर तुम हमें वह खालें दोगे?"

वामचो ने आश्चर्यचकित होकर कप्तान की ओर देखा। बुड्ढे वाल ने मुस्कराते हुए पूछा:

"इतना माल क्यों दे रहे हैं? वामचो व्यापारी थोड़े ही है। अपनी सारी ज़िंदगी में भी हम दो पिटारे तंबाकू नहीं पी सकेंगे।"

जिम ने नाव में माल भर दिया और अमरीकी वहां से रवाना हुए। इतने में अलितेत उनकी ओर दौड़ता हुआ आता दिखाई दिया। वह चिल्ला रहा था: "ठहरिये, ठहरिये!"

विजय की आशा में अमरीकी जल्दी जल्दी वापस किनारे की ओर आये। अलितेत हांफता हुआ पहुंचा और अपनी क़मीज़ के नीचे से नेवले की एक खाल निकालकर कप्तान से बोला:

"यह लीजिये। मैंने आपकी बोरी में से एक पत्ती ले ली थी।"

कप्तान ब्राउन एक शब्द भी न बोला और फिर से किनारे से चल दिया।

'ध्रुव-रीछ' ने घूमकर उत्तरी अंतरीप की राह ली।

अलितेत अपने निरीक्षण-स्तंभ पर चढ़ गया और स्कूनर के आंखों से ओझल होने तक उधर ताकता रहा।

चौथा अध्याय

मध्यरात्रि के सूर्य की कोर शीतल सागर में डूबी हुई थी। सूर्यास्त की रक्तिमा से सारा क्षितिज चमक रहा था। एनमकाई बस्ती के बाशिंदे गहरी नींद में डूबे हुए थे। सिर्फ़ बच्चे समुद्र-तट पर उछलते-कूदते धूम मचा रहे थे और सागर में कंकड़ फेंक रहे थे जब कि बुड्ढे यारंगों के इर्दगिर्द भटक रहे थे। जब अच्छे शिकारियों का दिन समाप्त होता था तो इनका आरंभ होता था। उत्तरध्रुव-प्रदेश के रात्रिकालीन सूर्य का उत्तेजक प्रभाव बच्चों पर पड़ रहा था। वे समुद्री गोभी चूसते-चबाते समुद्र-तट का चक्कर लगा रहे थे और बत्तख़ों के अंडे इकट्ठे करने के लिए टुंड्रा की झीलों की ओर दौड़ रहे थे। जवान शिकारियों में से अकेला तूमातूगे अभी तक नहीं सोया था। अलितेत ने उसे दूरबीन देकर निरीक्षण-स्तम्भ पर बैठने का और यदि कोई नया जहाज़ आ जाये तो उसका ख़्याल रखने का हुक्म दिया था।

अलितेत को नींद नहीं आ रही थी और वह खालों के बिस्तर पर करवटें बदलता रहा था। "ब्राउन इतना गुस्सा हुआ यह अच्छा नहीं हुआ। हो सकता है, वह लोगों से कह दे कि अलितेत अच्छा आदमी नहीं है और फिर कोई भी कप्तान एनमकाई के पास न फटके।"

किनारे किनारे चलने वाले 'ध्रुव-रीछ' के जहाज़ी भी उतने ही परेशान थे।

"कप्तान, कहो क्या विचार है? – क्या फिर से अलितेत के यहां जाना हमारे लिए ठीक होगा?"

"ठीक हो या न हो, हमारे लिए कोई और चारा है ही नहीं; समझे हार्लो? इसके सिवा और हो भी क्या सकता है? क्या अपनी आंखों के सामने हम स्टीफ़ेनसन को अपने 'युकोन' जहाज़ पर यहां घुसते देख लें? अरे उसकी नाक शिकारी कुत्ते की तरह तेज़ है। जानते हो न, वह पुराने समुंदरी डाकुओं की औलाद है। असली ऐंग्लो-सैक्सन ख़ून उसकी नसों में बहता है। उसके पुरखों ने सभी सागरों और महासागरों का चक्कर काटा था और इस दईमार तट को छोड़कर दुनिया का ऐसा कोई कोना नहीं बचा था जहां इनके हाथ न पहुंचे होंगे। अब स्टीफ़ेनसन को यह प्रदेश भी मिल गया है। इधर कुछ वर्षों से वह इस किनारे के आस-पास दख़लंदाज़ी कर रहा है। यह नामुमकिन है कि अलितेत का गोदाम उसकी नज़र से बच जाये। गोली मारो उसे! मतलब यह कि वह तिरछी आंखों वाला शैतान सच कह रहा था। मैं तो मानता हूं कि इस कुतिया के पिल्ले ने सारे तट-प्रदेश से खालें इकट्ठी कर ली हैं। चार्ली की अपेक्षा इसके साथ व्यवहार करना ज़्यादा मुश्किल है। ख़ुदा का शुक्र है कि इस ओर हमारा यह आख़िरी दौरा है! यह हालत है, हार्लो, समझे?"

"हां, कप्तान, ठीक कहते है। लेकिन उसकी अजीब शर्तों के मुताबिक़ भी हमारा सौदा उतना बुरा नहीं होगा," हार्लो ने कहा।

"यह सही है, लेकिन मैंने जो अंदाज लगाया था उससे कम ही होगा। कुछ भी हो, ऐसी वैसी खालों के लिए सारे किनारे पर मारे मारे फिरना कोई अक़्लमंदी नहीं। इसके लिए हमारे पास समय नहीं है। देर करना जोखिम उठाना है।"

कप्तान ब्राउन बोलने की नली पर झुककर चिल्ला उठा:

"जिम, पूरी रफ़्तार से आगे बढ़ो!"

मध्यरात्रि के समय तूमातूगे की ग्रावाज़ से ग्रलितेत जाग उठा :

"ग्रलितेत! एक स्कूनर ग्रा रहा है!"

ग्रलितेत जवान की सी फुरती के साथ उठ बैठा ग्रौर जल्दी जल्दी कपड़े पहनकर निरीक्षण-स्तम्भ की ग्रोर दौड़ा।

"ब्राउन वापस ग्रा रहा है!" सागर की दिशा में संकेत करते हुए तूमातूगे चिल्लाया।

बड़े रोब से हाथ हिलाकर ग्रलितेत ने तूमातूगे को नीचे उतरने का हुक्म दिया ग्रौर ख़ुद स्तम्भ पर चढ़ गया। ग्रागे का दृश्य देखकर वह ख़ुशी से इतना पागल हो उठा कि मचान से लुढ़कते लुढ़कते बचा। मीनार से जल्दी जल्दी नीचे उतरते समय वह खीसें निकाले हंस रहा था।

"मैं सो रहा हूं," उसने कहा। "देखो, किसी को मेरी नींद में बाधा न डालने देना। हां, ग्रगर वह मेरिकन ही किनारे पर उतरकर मेरे यारंग में चला ग्राये ग्रौर मुझे जगाये तो जगा देना!"

ग्रलितेत ने ग्रपने सब कपड़े उतार दिये ग्रौर शीघ्र ही सारा यारंग उसके खर्राटों से गूंज उठा।

'ध्रुव-रीछ' ने पुराने स्थान पर लंगर डाला ग्रौर वे ग्रमरीकी – जो ग्रब घमंडी व्यापारी का ग्रभिनय नहीं खेल रहे थे – शीघ्र ही ग्रपनी नाव के सहारे किनारे पर ग्रा पहुंचे।

"ग्रलितेत कहां है?" कप्तान ब्राउन ने पूछा।

"सो रहा है। उसने कहा है कि उसकी नींद में कोई भी खलल न डाले। लेकिन ग्राप चाहें तो उसे जगा सकते हैं," तूमातूगे ने जवाब दिया।

"ठीक है," कप्तान ने रुखाई के साथ कहा। ग्रमरीकी जहाज़ी ग्रलितेत के यारंग में चले गये।

"ग्रो हो! कौन, ब्राउन!" ग्रांखें मलते हुए ग्रलितेत बोला। "ब्राउन फिर ग्रा गया? वाह, वाह! मुझे मेरिकन ग्रादमी बहुत पसंद हैं।"

"अलितेत, तुम्हारा कहना सही था। मैं याकान अंतरीप गया लेकिन वहां के बहेलियों के पास एक भी खाल न थी। लेन-देन के लिए उनके यहां कुछ था ही नहीं।"

"मैं जानता हूं; और मैंने आप लोगों से कह भी दिया था। मैं मेरिकन लोगों से मिलना-जुलना खूब पसंद करता हूं," अलितेत ने कहा और तीग्रेना की ओर घूमकर हुक्म दिया:

"चलो, जल्दी करो; मेरिकन सूप बनाओ! देखो, बिल्कुल कल जैसा हो। तब तक हम ज़रा गोदाम में हो आयें।"

"कप्तान, ख़ुदा के वास्ते मुझे यहीं रहने दो। मैं खाना तैयार करने में इस देवी की मदद करूंगा नहीं तो वह हमें फिर एक बार वही शैतानी खाना खाने को मजबूर करेगी!" जिम ने प्रार्थना की।

"अच्छा अलितेत, मेरा जिम खाना तैयार करने में तुम्हारी बीवी की मदद करेगा। हमारे लिए वही तो खाना पकाता है।"

"ऐ है! ऐ है! यह बड़ा अच्छा होगा। जिम तीग्रेना को सिखा दे कि खाना किस तरह तैयार किया जाता है। मैं तो भई थक गया यह ज़नाना काम समझाते समझाते!"

जिम और तीग्रेना यारंग में अकेले रह गये। जिम ने रसोइये की एक टोपी अपनी जेब में से निकाली और उसे अपने सिर पर रखकर ऐसे मज़ेदार पैंतरे में खड़ा रहा कि तीग्रेना खिलखिलाकर हंस पड़ी। फिर जिम ने टोपी उतारकर तीग्रेना के सिर पर रख दी और यकायक तीग्रेना को पकड़कर ज़ोरों से अपनी छाती से चिपका लिया।

तीग्रेना क्रोध से कांप उठी। आग-बबूला होकर उसने अपने को छुड़ाया और ज़मीन पर पड़ा हुआ मांस का एक लोथड़ा उठाकर पूरी ताक़त से जिम के मुंह पर दे मारा।

"अरे, अरे!" आश्चर्यचकित जिम ने चेहरे पर से मांस को

पोंछते हुए कहा। "यह पुलटिस कुछ बुरी नहीं! देखो कप्तान, इस वक़्त हमारा दौरा कोई ख़ास ख़ुशनसीब न रहा।"

"तुम सभी तांग पागल कुत्तों जैसे हो!" तीग्रेना ने क्रोध के साथ कहा। "उस लाल-नकुए चार्ली ने भी एक बार मेरा मिज़ाज बिगाड़ दिया था। उस वक़्त ग्राये ने उसकी ग्रच्छी खबर ली थी ग्रौर ग्रब मैं भी लड़ना सीख गयी हूं।"

तीग्रेना ने एक तेज़ छुरा उठा लिया।

तीग्रेना का एक भी शब्द न समझते हुए लेकिन यह जानकर कि वह ग़ुस्से में है, जिम निराशा के साथ हंसता हुग्रा खालों के एक ढेर पर बैठ गया। तीग्रेना ने चुपचाप बारहसिंगे का मांस उसकी ग्रोर सरकाया ग्रौर छुरा भी उसके ग्रागे फेंक दिया। जिम ने छुरा उठा लिया ग्रौर इशारों इशारों में कहने लगा कि वह काफ़ी बड़ा नहीं है। फिर उसने ग्रपना जैक-छुरा निकाला, मांस का एक टुकड़ा काटा ग्रौर ऐसे उसे पीटता रहा कि तीग्रेना फिर से खिलखिलाकर हंस उठी। उसे ऐसा लगा कि यह ग्रमरीकी नौजवान कुछ जादू कर रहा है। ग्रोझा कोराउगे उसी तरह ग्रपनी ढोलक पीटता था।

"ग्राग्रो, मैं तुम्हें सिखाता हूं कि बोटियां कैसे बनायी जाती हैं। देखो इस तरह मांस का क़ीमा बनाना चाहिए," जिम ने इशारों के सहारे बता दिया।

तीग्रेना ने वैसा ही किया जैसा जिम ने बताया था लेकिन वह बराबर हंसती रही। वह समझ न पायी कि बारहसिंगे के मांस को इतना ठोंकने-पीटने की क्या ज़रूरत है?

जिम ने तीग्रेना की ग्रोर देखा ग्रौर पहली ही बार उसके मन में विचार ग्राया कि "हम कितने गंदे हैं! ग्राख़िर ये लोग भी तो इन्सान ही हैं जिनमें मानवीय भाव तथा इच्छाएं हैं।"

ग्रौर बात विचित्र थी लेकिन जिम को ग्रपने ही ऊपर लज्जा ग्रायी।

पांचवां अध्याय

अलितेत के साथ लेन-देन कई दिन तक चलता रहा। तीसरे दिन के अंत में सारा गोदाम तरह तरह के माल से ठसाठस भरा हुआ था। शिकारियों ने और यहां तक कि औरतों ने भी माल को खींच लाने में फुरती से हाथ बंटाया। हर किसी ने जी भर ताज़ी तंबाकू का धुआं उड़ाया।

अलितेत सारे माल पर रेंगता रहा। उसने हर बक्स और गट्ठर को ख़ूब सावधानी से देखा। वह मन में सोचता गया: "अब मुझे और क्या चाहिए? ब्राउन के रवाना होने से पहले मुझे सब कुछ सोचना चाहिए। कहीं कुछ भूल न जाऊं। अरे, सोचते सोचते तो मेरा सिर ही फट जायेगा।"

वह लाल या सफ़ेद लोमड़ी की एक जोड़ा खालें नीचे उतार लेता और उनके बदले में ज़्यादा तंबाकू, कारतूस, व्हिस्की, लाल कपड़ा, गुरिया-गुटके, छुरे, सूइयां, जाल-पिंजड़े, विंचेस्टर और शिकारियों की ज़रूरत की कई अन्य चीज़ें मांग लेता।

"समझे कप्तान, मैं मानता हूं कि यह काना शैतान अब हमारी ही खाल उतारना चाहता है! मैं कहे देता हूं, वह ज़रूर ऐसा करेगा," गोदाम लाये जाने वाले गट्ठरों के भार के नीचे झुके हुए जिम ने कहा।

"फ़िक्र न करो, जिम। बात इतनी बुरी नहीं। वह ऐसा सख़्त सौदा थोड़े ही कर रहा है। उसका मिज़ाज तो दूसरों जैसा ही है। लेकिन है वह बेहद ख़ुश और अधिकाधिक सीधा बनता जा रहा है," कप्तान ने धीरज बंधाया।

सफ़ेद, लाल और रुपहली लोमड़ियों की खालों का भंडार कप्तान

के टाट के थैलों में चला जा रहा था। लेकिन साथ साथ स्कूनर का माल-घर भी ख़ाली होता जा रहा था। अलितेत का चेहरा संतोष से खिल उठा था। वह माल के गट्ठर सहला रहा था, विंचेस्टरों को प्यार से थपथपा रहा था और माल की टाल पर टाल लगाता जा रहा था। एनमकाई में ऐसा पर्व-दिन इससे पहले कभी न आया था!

पांचवें दिन के अंत में जिम ने कहा:

"कप्तान, अब जहाज़ पर कुछ नहीं बचा। बचे हैं सिर्फ़ हमारे साथी – दो चूहे! उन्हें अब ऊधम मचाने के लिए काफ़ी जगह मिल गयी है!"

कप्तान ब्राउन ने लोमड़ियों की बाक़ी खालों, रीछों की चमड़ियों के ढेरों, वालरस-दांतों तथा व्हेल-हड्डियों पर एक ललचायी नज़र दौड़ायी और कहा:

"अलितेत, अब जहाज़ पर कुछ भी नहीं बचा। सब का सब मैंने बेच दिया।" अलितेत को पीठ थपथपाते हुए उसने पूछा: "बोलो अलितेत, तुम ख़ुश हो?"

"जी हां, बहुत ख़ुश!"

"अगले साल भी तुम मेरे साथ इसी तरह व्यापार करोगे?"

"ज़रूर। मैं सिर्फ़ आप ही से लेन-देन करना चाहता हूं!"

"कप्तान, यहां हम जो चीज़ें छोड़े जा रहे हैं उन्हें देखकर मेरा सिर फटा जा रहा है।"

"जिम, तुम ज़रा मुंह बंद रखो। अब मेरी अपनी कुछ योजना है।"

"और मैं अब आपकी ख़ातिर करना चाहता हूं। चलिये, खाना तैयार है। जिम के साथ काम करना तीग्रेना कितना सीख गयी है! चलें, मेरे यारंग में चले चलें!"

"अच्छा, चलें!" कप्तान ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। "अलितेत, तुम्हारी बात सही है। सौदा पूरा होने के बाद व्हिस्की पीने में मज़ा आता है।"

"जी हां, अब हम पी सकते हैं! मेरा दिल तो कभी से उस जलते पानी के लिए तरस रहा है।"

अलितेत और अमेरिकन जहाज़ी एक छोटी सी मेज़ के इर्दगिर्द बैठ गये। व्हिस्की के मग सब ने उठा लिये और गटक लिये। हार्लो ने मग फिर से भर दिये। हंसी-मज़ाक़ के फव्वारे छूटते रहे।

"क्यों रे जिम, लगता है कि मकान-मालकिन के साथ तुम्हारा समय अच्छी तरह कट रहा है!" कप्तान ने कहा।

"जब हम खालें बेचकर फ़ायदे का बंटवारा करेंगे तब जिम के हिसाब में से यह बात काटी जायेगी," हार्लो बोल उठा।

"ओह! सज्जनो!" जिम ने दुःखी होकर कहा। "कभी कभी लोग कितना ग़लत समझते हैं!"

इधर व्हिस्की ने अलितेत के सिर पर पूरा क़ाबू पा लिया था। वह भर्रायी आवाज़ में बड़बड़ाने लगा:

"अलितेत का कहना ठीक है... अलितेत सब कुछ जानता है। क्या अलितेत ने नहीं कहा था कि ये बरफ़ के दिन नहीं हैं और जहाज़ को कोई रुकावट न होगी... हम और व्यापार कर सकेंगे और फिर भी बरफ़ के दिन पास न फटकेंगे!"

"हां अलितेत, यह सही है, बिल्कुल सही। तुम्हें यह अच्छी तरह मालूम है," कप्तान ने उसी स्वर में कहा। "हम और भी देर तक व्यापार करते रहेंगे! अलितेत, जानते हो मैं तुमसे क्या कहना चाहता हूं? तुम्हारे गोदाम में ये जो लोमड़ियों और रीछों की खालें, वालरसों के दांत और व्हेलों की हड्डियां पड़ी हैं उन सब को जहाज़ पर लदवाना चाहिए। अगर कहीं तूफ़ान उठे तो ख़ाली जहाज़ में

मुसाफ़िरी करना ख़तरनाक होगा। जहाज़ उलट जायेगा और हम सब के सब डूब मरेंगे – और फिर मैं अगले साल माल लेकर यहां न आ सकूंगा।".

अलितेत चौकन्ना हो उठा।

"अगर तुम चाहो तो गोदाम में बची खालों-वालों के लिए मैं तुम्हें एक इक़रार लिख देता हूं और अगले साल इस काग़ज़ के अनुसार हम अलग से सौदा कर लेंगे। व्यापारी हमेशा ही ऐसा करते हैं," कप्तान ने गंभीरतापूर्वक कहा।

अलितेत सोच-विचार में पड़ गया। उसे स्मरण आया कि चार्ली भी काग़ज़ी व्यापार करता है और काग़ज़ों में ऐसा विश्वास करता है मानो वह असली माल हों। वह एकदम उछल पड़ा और जल्दी से बोला:

"ठहरिये, पहले जाकर देख लूं कि कितनी खालें बची हैं।"

"कप्तान, तुम बड़े अक़्लमंद हो!" हार्लो ने कहा।

"ज़रा ठहरो, चुप बैठो; यह पंछी कहीं घबड़ा न जाये।"

अलितेत के लौट आने तक अमरीकी जहाज़ी चुपचाप बैठे रहे।

"दो सौ तीस खालें! लिखो कप्तान, काग़ज़ लिखो!" अलितेत ने दौड़ते हुए आकर कहा।

कप्तान ब्राउन ने जेब में से एक नोट-बुक निकाली और बहुत कुछ सोच-विचार तथा गंभीरता के साथ फ़ाउंटन-पेन का ढकना खोलने लगा।

अलितेत ने कप्तान को काग़ज़ पर "काम करते हुए" देखा। फिर भी कप्तान पर उसकी जांच की नज़र का कोई असर न पड़ा। वह लिखता गया:

"काने शैतान, तुम्हें विदाई का सलाम! इन पांच दिनों तुम मुझे अपनी गर्दन में घुसे हुए छुरे की तरह मालूम हुए। भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा वह उस्ताद जिसने तुम्हें

व्यापार का यह तरीक़ा सिखाया। कोई फ़िक्र नहीं–बची हुई खालों से मैं चंगा हो जाऊंगा। अरे बछिया के ताऊ, रीछ की खालें भी मेरे लिए दवा का काम करेंगी। अमेरिका में उनके लिए काफ़ी ख़रीदार मिलेंगे। फिर से अलविदा और इस वक़्त सदा के लिए।

तुम्हारा तेकी काला गोबरैला।"

"देखो अलितेत, यह रहा सौदे का काग़ज़!" कप्तान ब्राउन ने गंभीरता से कहा।

अलितेत ने सावधानी से काग़ज़ की तह लगायी और अपनी अमरीकी क़मीज़ की जेब में रख दिया।

शीघ्र ही 'ध्रुव-रीछ' बड़ी ख़ुशी से अलास्का की ओर रवाना हुआ। कप्तान ब्राउन केबिन से बाहर आया और पतवार-पहिये के पास चला गया जहां हार्लो चौकी दे रहा था। कप्तान ने अपनी नोट-बुक में से एक पन्ना निकाल लिया जिसपर कई आंकड़े लिखे थे। खिलखिलाकर हंसते हुए उसने कहा :

"शैतान कहीं का, उसने अच्छी तरह हमारी खाल उतारी है। आज तक की ज़िंदगी में मुझपर ऐसी कभी न बीती थी। ये सफ़ेद लोमड़ी वाली खालें हमें प्रति खाल छः डॉलर से भी कुछ अधिक के हिसाब से मिली हैं।"

जिम इंजन के कमरे से सिर बाहर निकालकर देखने लगा।

"लेकिन कप्तान, यह अफ़सोस की बात है कि अगले साल इधर हमारा आना नहीं होगा। मुझे फिर इस किनारे के दर्शन करने में बड़ी ख़ुशी होगी।"

"मतलब यह कि अलितेत की बीवी के दर्शन?"

"हो सकता है! लेकिन हार्लो अगर तुम उसके बारे में कोई बुरी बात सोचोगे तो ग़लती करोगे। बात छोटी सी है, लेकिन वह

इस तरह पेश आयी जिससे मैं मानने लगा कि हम बिल्कुल गये-बीते, दो कौड़ी के आदमी हैं।"

"क्या कहा?" कप्तान गुर्रा उठा।

छठा अध्याय

अमरीकियों के साथ अपने पुत्र ने जो अच्छा-खासा व्यापार कर लिया था उसके उपलक्ष्य में ओझा कोराउगे लगातार दो रात अपनी ढोलक पीटता रहा। अलितेत ने बिल्कुल बेक़ाबू होकर दो दिन और दो रात डटकर शराब चढ़ायी। अमरीकियों के साथ हुए लंबे और कठिन व्यापार के कारण उसके मस्तिष्क पर भारी बोझ पड़ा था और वह बिल्कुल श्रांत-क्लांत हो गया था। फिर भी इस विचार से उसे काफ़ी संतोष हुआ था कि एनमकाई में अब चार्ली लाल-नकुए के जैसा एक सचमुच बड़ा-भारी व्यापारी यारंग बन गया है और इस यारंग का मालिक है खुद अलितेत।

दो दिन पहले पांच नौजवान बारहसिंगा-पालक खानाबदोशों को खुशखबरी देने के लिए पहाड़ियों में दौड़ते हुए गये थे—अलितेत ने उन्हें भारी लेन-देन के लिए आमंत्रित किया था। शुभ समाचार लाने के लिए उत्सुक ये संदेश-वाहक बराबर दौड़ते रहे। पुराने मित्रों के रूप में इन संदेश-वाहकों का अभिवादन होता था और उन्हें बारहसिंगे के मांस के चुने हुए टुकड़े मिल जाते थे। हो सकता था कि बारहसिंगा-पालक उन्हें अपनी खुशी में उदारतापूर्वक बारहसिंगों की खालें ही भेंट में दे देते जिनसे वे जाड़ों के लिए कपड़े बना सकते।

चौथे दिन के अंत में पहाड़ियों से लोग आने लगे। उनके हाथों में लाठियां थीं और पीठों पर सील के चमड़े की वॉटरप्रूफ़ खुर्जियां।

लेकिन इन खुर्जियों में रोवेंदार खालें न थीं क्योंकि अलितेत वसंत ऋतु में ही उनके पास से लोमड़ियों की सभी खालें खरीद चुका था।

एनमकाई में कई ऐसे शिकारी और बहेलिये भी आये जिन्होंने अभी तक अलितेत को कोई खाल न दी थी। लेकिन उन्हें काफ़ी माल की ज़रूरत थी और वे आशा करते थे कि अलितेत उनकी मांगें ठुकरायेगा नहीं।

एनमकाई में इससे पहले इतनी भीड़ और चहलपहल कभी नहीं देखी गयी थी। खुली हवा में चाय का एक बड़ा देग़ उबल रहा था और लोग जितनी चाहते थे चाय पी रहे थे—और वह भी शक्कर पड़ी हुई चाय! शिकारी लोग हाल ही के बियाई के मौसम पर बहस कर रहे थे और अपनी अपनी बस्ती के समाचार सुनाते जा रहे थे। वहां बराबर बातचीत चलती रहती थी जिसका कोई अंत न था।

मध्याह्न के समय व्यापार आरंभ हुआ। अलितेत ने अपना भंडार खोला और उसके संकरे किवाड़ में से काफ़ी भीड़ अंदर चली आयी। अलितेत ने हर एक से अपनी ज़रूरत की चीज़ लेने के लिए कहा। हर आदमी को खुद ही हिसाब लगाना था कि वह कितना और कौनसा सामान ले जा सकेगा। किसी चीज़ का कोई वज़न-माप नहीं हुआ और न किसी चीज़ की जांच-पड़ताल। लेकिन हर किसी ने वही चीज़ें लीं जो उसके लिए ज़रूरी थीं—अनावश्यक चीज़ एक भी न ली। उठायी गयी हर चीज़ को सावधानी से स्मरण रखना ज़रूरी था ताकि अगर अलितेत दो बरस बाद भी पूछ बैठता कि फ़लां आदमी ने क्या क्या चीज़ें ले ली थीं तो उसे सूई-दियासलाई तक सब चीज़ों का हिसाब समझा दिया जाता।

चीज़ों के चुनाव की आज़ादी में सिर्फ़ एक पाबंदी थी। हर आदमी के लिए अलितेत के भंडार से कम से कम पांच फंदे ले जाना ज़रूरी था।

एक ओर प्लग तंबाकू का एक बक्स रखा था। कोई भी आदमी वहां जाकर अपनी चिलम भर सकता था और इसके लिए कोई क़ीमत नहीं पड़ती थी।

भंडार में इकट्ठा सभी लोग चिलम पी रहे थे। खुले किवाड़ में से स्टीमर की चिमनी की तरह धुएं के बादल से उड़ रहे थे। जिन्हें चबाने वाली तंबाकू की ज़रूरत थी उनके लिए दूसरा बक्स रखा था। पहाड़ियों में इस आज़ादी से तंबाकू पीना या चबाना संभव न था—वहां बचा बचाकर तंबाकू का उपयोग करना पड़ता था। लेकिन इस समय सभी अलितेत के यारंग में पर्व का सा अनुभव कर रहे थे।

अभी तक जिन्होंने एक भी लोमड़ी नहीं फंसायी थी वे आदमी भी अपने लिए चीज़ें चुन रहे थे। आज तक लोमड़ी नहीं फंसायी इससे क्या हुआ—आगे किसी दिन तो पकड़ेंगे ही! और अलितेत ने उनसे कहा :

"आओ, जो चाहो ले जाओ! ख़ुद ही चुन लो! लेकिन फंदे लेना न भूलना। अगर तुम अगले साल कोई लोमड़ी न फंसा सके तो फिर बाद में दे देना—जब फंसा सको।"

इस ज़ोरदार व्यापार को देखकर अलितेत का मनमयूर नाच उठा। लेकिन इससे भी अधिक आनंद तब होगा जब वह जाड़ों में अपनी बरफ़-गाड़ी पर बैठकर सारी बस्तियों का चक्कर लगायेगा और सफ़ेद, लाल और रुपहली लोमड़ियों की सभी उपलब्ध खालें इकट्ठा करेगा। वह उनकी ओर देखेगा तक नहीं, सिर्फ़ कह देगा : "चलो, मेरी गाड़ी पर उन्हें फेंक दो!" और ज़रूर बहुत सी खालें मिलने की आशा थी! टुंड्रा में फंदों की संख्या अब दुगुनी जो हो रही थी।

अलितेत ने तूमातूगे से कहा :

"हमारी बस्ती में काफ़ी मेहमान आये हुए हैं। हर यारंग में उनके लिए गोश्त की दावत का इंतज़ाम करो। वे पांच पांच या

दस दस की टुकड़ी बनाकर एक एक यारंग में चले जायें। उनके लिए गोश्त ले लो मेरे गड्ढों में से।"

"ऐ है!" तूमातूगे चिल्लाया और इस आनंदवार्ता को आगे बढ़ाने के लिए इस तरह दौड़ा मानो पैरों में पर लगे हों।

सातवां अध्याय

१६२३ में उत्तरध्रुव-प्रदेश की गरमियां जहाज़रानी के लिए विशेष अनुकूल थीं। सारे किनारे पर कहीं बरफ़ न थी। इस ऋतु में वहां आने वाली दक्षिणी हवाओं ने बरफ़ के भारी तूदों को उत्तर की ओर बहा दिया था।

कोलिमा तट की ओर जाने वाला स्टीमर 'सोवियत' बेरिंग जल-डमरूमध्य में प्रवेश कर रहा था। कई बरस हुए कोलिमा तट-प्रदेश को महाद्वीप से माल नहीं मिल रहा था और उत्तरी हिस्से के बाशिंदों को सफ़ेद गारदों की टोलियों ने परेशान कर रखा था।

'सोवियत' जहाज़ पर विशेष सेवा-दल के प्रधान तोल्स्तूख़िन और कामचात्का क्रांति-समिति द्वारा चुकोत्स्क प्रदेश के लिए नियुक्त प्रतिनिधि लोस यात्रा कर रहे थे।

"देखो लोस, यह है तुम्हारा इलाक़ा–उसे ठीक तरह देख लो," तोल्स्तूखिन ने कहा। "तुम आज किनारे पर चले जाओ। जल-डमरूमध्य में प्रवेश करते ही करते हमें तुम्हारा निवास-स्थान दिखाई देगा।"

"मतलब यह कि अपने मंगलवासी मित्रों से मैं शीघ्र ही मिल सकूंगा?"

"कैसे मंगलवासी?"

"क्यों, अन्य ग्रहों की तरह वे यहां नहीं रहते?"

"हां, ठीक कहते हो। यहां तुम्हारे सामने एक विशाल प्रदेश फैला हुआ है — लगभग दो हज़ार किलोमीटर। आगे बढ़ो और उसपर शासन करो। लेकिन प्यारे दोस्त, तुम्हें अब अपनी बख़्तरबंद ट्रेन भुलानी होगी। यहां कुत्ता-गाड़ी के अलावा और कुछ नहीं मिलता।"

"ऊंह! बदल के लिए कुत्ता-गाड़ी ही सही!" लोस ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया।

कमिश्नर लोस दोहरे बदन का आदमी था। हरकतों और बातचीत में सुस्त लेकिन निर्णय और कार्रवाई में चुस्त। गृहयुद्ध की अवधि में वह एक बख़्तरबंद ट्रेन का कमांडर रहा था और कामचात्का आने पर उसकी नियुक्ति चुकोत्स्क प्रदेश में की गयी थी। इस प्रदेश के बारे में उसे अस्पष्ट सी कल्पना थी और अब 'सोवियत' के डेक पर खड़ा होकर वह अपने सामने फैले हुए निर्जन प्रस्तरमय प्रदेश को ग़ौर से देख रहा था।

बेरिंग जल-डमरूमध्य एक विशाल तथा शांत जलाशय के समान दिखाई दे रहा था और उसके समतल पृष्ठ पर स्थानीय शिकारियों की डोंगियां सरपट दौड़ रही थीं। चट्टानों के गोरखधंधे में उनकी झोंपड़ियां सटी हुई थीं और सागर पर झुके हुए शिलाखंडों के बीच घोंसलों जैसी नज़र आती थीं।

आवास की दृष्टि से यह स्थान बड़ा असुविधाजनक और ऊटपटांग मालूम होता था। लेकिन समुद्री शिकारियों और बहेलियों को यहां की आदत पड़ी थी और उन्हें इस स्थान से प्रेम था। हर चट्टान का ज़र्रा ज़र्रा, हर पहाड़ी का कोना-किनारा बचपन की स्मृतियों के कारण उन्हें प्रिय था। खालों के चिकने बूट पहनकर वे ढालों पर पहाड़ी बकरियों की चपलता के साथ आते-जाते थे। इन चट्टानों से ख़ाली समतल मैदानों में चलना उन्हें बड़ा नीरस मालूम होता।

जल-डमरूमध्य में हमेशा वालरस के शिकार के अच्छे मौक़े रहते थे। उत्तरध्रुव सागर की ओर जाते समय उनके झुंड यहां से इस तरह गुज़रते मानो किसी बड़े आंगन के फाटक में से गुज़र रहे हों। और जहां वालरस होते हैं वहां ज़िंदगी रहती है। यह प्रदेश दुनिया का एक छोर था। यहां से जल-डमरूमध्य के उस पार देखते समय उत्तर-पूर्वी दिशा में अलास्का की पर्वतमाला की अस्पष्ट रूप-रेखा दिखाई देती थी।

कोहरा समाप्त हो गया और सूरज चमकने लगा। वर्ष की इस अवधि में वह डूबता ही न था। चुकचियों के यारंग किनारे पर भूरे धब्बों की तरह चुपचाप खड़े थे और लग रहा था कि पत्थर पर भूरी वनस्पति उगी हो।

"अफ़सोस कि यहां आने से पहले मैंने इस मुल्क के बारे में कोई जानकारी नहीं प्राप्त की," लोस ने कहा। "मुझे मालूम है उसका सिर्फ़ अनुमानित रक़बा, जो मैंने कप्तान के नक़्शे से आंका है। और यह कोई सूबा कहलाता था – ऊंह! अरे, यह तो है चार लाख वर्ग किलोमीटर रक़बे का एक मुल्क!"

"प्यारे दोस्त, कहो इस प्रदेश के बारे में कौन तुम्हें जानकारी दे सकता था? अभी तक हमारे पास ऐसा कोई सोवियत व्यक्ति नहीं जिसने इसके बारे में कुछ अध्ययन किया हो," तोल्स्तूख़िन ने कहा।

"पिछले साल के जाड़ों में मैंने पेत्रोपावलोव्स्क से एक नौजवान को कुत्तों की बरफ़-गाड़ी पर यहां भेजा था," लोस ने कहा। "विद्यार्थी था वह। बड़ा ही होशियार। भौगोलिक शिक्षा-विभाग में उसने अध्ययन किया था। वह कई भाषाएं बोल लेता है। एक पुराने प्रोफ़ेसर से उसने चुकची भाषा भी सीख ली थी। उस लंबी यात्रा पर उसे विदा करते समय मुझे बहुत बुरा लगा। पता नहीं उसकी वह यात्रा सफल हुई कि नहीं?"

"हां लोस, इस लंबे-चौड़े प्रदेश में एक मील का भी हिस्सा ऐसा नहीं जहां से रेडियो-संदेश भेजा जा सके। इस किनारे पर पैर रखने वाले आदमी के बारे में सचमुच कहा जा सकता है वह विरल वायुमंडल में विलीन हो गया।"

कुछ दूरी पर दो टापू दिखाई दिये जो बड़ी बड़ी चट्टानों के ढेर से लग रहे थे।

"कप्तान कहता है कि इनमें से एक हमारा है और वह छोटा वाला अमरीकियों का है," उस दूरी पर ग़ौर से नज़र दौड़ाते हुए लोस ने कहा।

"तोल्स्तूख़िन, ज़रा अपनी दूरबीन तो मुझे देना!" उसने कहा और पूरा निरीक्षण कर लेने के बाद बोला:

"देखो, वहां दो मस्तूलों वाला एक जहाज़ नज़र आ रहा है। इधर हम यह पहला ही जहाज़ देख रहे हैं।"

"ज़रा ठहरो, ज़रा ठहरो लोस। यह शायद अमरीकी स्टीमर 'बीचाइमो' है जो चुकोत्स्क किनारे के नये व्यापार केंद्रों के लिए माल ले जा रहा है। तुम्हें याद नहीं क्रांति-समिति के कार्यालय में इसका उल्लेख हुआ था? आओ, ज़रा इसे देखें।"

कुछ देर बाद तोल्स्तूख़िन ने कहा:

"कोई छोटा सा स्कूनर है यह!"

वे उस जहाज़ को सावधानी से देखते रहे। पहले वह सीधे उनकी दिशा में आ रहा था लेकिन यकायक उसका रुख़ बदल गया और वह टापुओं के पास जाने लगा।

तोल्स्तूख़िन और लोस जहाज़ की पुलिया पर कप्तान के पास खड़े रहे।

"कप्तान, यह कैसा जहाज़ है?" कप्तान की ओर दूरबीन बढ़ाते हुए लोस ने पूछा।

"मैंने देखा है। मेरी दूरबीन तुम्हारी दूरबीन से कहीं अधिक तेज़ है। यह है डाकू-जहाज़ 'ध्रुव-रीछ'। बड़ा बदनाम है। लेकिन मुझे यह समझाने की कोशिश न करना कि मैं उसका पीछा करूं क्योंकि वह ऐसे समुद्री हिस्से में है जिसपर किसी का अधिकार नहीं। आज वह अलास्का पहुंच जायेगा।"

आंखों से ओझल होते हुए उस जहाज़ को वे देखते रहे और धूम्रपान करने लगे।

"अच्छा, साथी लोस, हम शीघ्र ही विदा होंगे। मैं यदि बरफ़ के कारण कहीं अटक न गया तो वापसी यात्रा के दौरान फिर इधर आऊंगा," कप्तान ने कहा।

जल्द ही 'सोवियत' जहाज़ लंगर डालकर एक देशी बस्ती के आगे खड़ा हो गया। स्टीमर ने भोंपा बजाया। एक डोंगी तेज़ी से जहाज़ के पास आ पहुंची।

"लोस, ओ लोस! अरे इधर आओ! तुम्हारे कुछ मंगलवासी इधर आ रहे हैं," तोल्स्तूखिन ने कहा।

लोस जहाज़ के दाहिने किनारे की ओर दौड़ा। डोंगी में स्थानीय निवासियों के बीच बैठे हुए जुकोव को उसने फ़ौरन पहचान लिया। उसका चेहरा आनंद भरी मुस्कान से खिल उठा और वह पूरे ज़ोरों से चिल्ला उठा :

"अन्द्रेई! तुम ज़िंदा हो! वाह वाह! अरे जल्दी यहां आओ, तुम्हें अपनी बाहों में भर लूं।"

"अभी एक मिनट में आता हूं, निकीता सेर्गेयेविच!" जुकोव ने जवाब दिया और जल्दी जल्दी सीढ़ियां चढ़ने लगा।

लोस ने अन्द्रेई का ऐसा दृढ़ालिंगन कर लिया कि उसका दम घुट सा गया। अपनी पक्की पकड़ को खोलकर लोस पीछे हट गया और अपनी बांहें फैलाकर बोला :

"सचमुच, तुमसे मिलकर मुझे बेहद ख़ुशी हुई। ऐसा लगता है कि वापस अपने घर आया हूं!"

"निकीता सेर्गेयेविच, मैं न जाने कब से तुम्हारी राह देख रहा हूं। अरे, मैं तुमसे मिलने के लिए तरस रहा था।"

"और कहो, तुम्हारे साथ जो लोग आये हैं वे अच्छे हैं?"

"हां, निकीता सेर्गेयेविच, वे सभी मेरे मित्र हैं। यहां मेरे कई मित्र बन गये हैं। सचमुच बड़े विलक्षण लोग हैं ये!"

"वाह, बहुत अच्छा! चलो दोस्त, हम भी उनसे परिचय करें।"

आठवां अध्याय

वैसे जाड़ों का मौसम अभी शुरू नहीं हुआ था लेकिन सारा जल-डमरूमध्य बरफ़ से भर गया था। उत्तरध्रुव-प्रदेश में गरमियों का मौसम इतनी जल्दी ख़त्म हुआ कि उसका किसी को पता ही न चला।

बरफ़ तेज़ी से पड़ने लगी और उत्तरी हवा चलने लगी। फिर उठा बरफ़ का तूफ़ान। लोगों के निवास स्थान बरफ़ के बड़े बड़े ढेरों में ढंक गये।

स्थानीय निवासियों के यारंगों के बीच क्रांति-समिति के कमिश्नर की एक नयी कुटिया दिखाई देने लगी। यह चौकोर आकार की थी जिससे उसपर उतरती छतों वाले यारंगों की अपेक्षा बहुत ही भारी हिम-वर्षा हुई थी। कुछ ही देर में वह पूरी तरह से बरफ़ में ढंक गयी और उसकी चिमनी से निकलने वाला धुआं बरफ़ के नीचे से आता हुआ दिखाई देने लगा।

"अच्छा हुआ कि बरफ़ की वर्षा हुई," जुकोव ने कहा। "इस बात को देखते हुए कि हम अपनी जगह को ठीक से गरम नहीं रख सकते, बरफ़ के पड़ते ही कुछ गरमाहट अनुभव होती है।"

'सोवियत' जहाज़ को कोलिमा पहुंचने की जल्दी थी जिससे क्रांति-समिति के लिए ज़रूरी सारा माल वह उतार नहीं पाया। कप्तान ने वापसी यात्रा के समय बाक़ी माल पहुंचा देने का आश्वासन दिया था लेकिन बहुत दिनों से स्टीमर आया न था और यह जानने का कोई साधन भी न था कि उसका क्या हुआ। शायद वह आगे चला गया हो या शायद बरफ़ की वजह से कहीं अटक गया हो।

चुकोत्स्क क्रांति-समिति की इमारत का रक़बा पंद्रह वर्ग मीटर था। इस कुटिया का पिछला हिस्सा आवास का काम दे रहा था। यहां एक छोटी सी मेज़ से बंटी हुई जगह में दो खाटें थीं–एक लोस की और दूसरी जुकोव की। कुटिया के इस हिस्से को एक महीन परदे द्वारा बाक़ी कुटिया से अलग रखा गया था। कार्यालय का विभाग कुछ अधिक प्रभावशाली था। यहां लिखने की दो मेज़ें, बेंतनुमा लकड़ी की दो कुर्सियां और एक घरेलू बेंच थी।

किवाड़ के पास दीवार से सटकर एक मुहरबंद आलमारी खड़ी थी। उसमें एक छेद था जिसके ऊपर पत्र के पते का एक नमूना लिखा हुआ था जिससे पता लगता था कि यह लेटर-बक्स है। इस बक्स पर सुंदर लिखावट में यह पता लिखा था :

पेत्रोपावलोव्स्क-ऑन-कामचात्का
गुबेर्निया क्रांति-समिति।
चुकोत्स्क प्रदेश के लिए
कामचात्का गुबेर्निया क्रांति-समिति का प्रतिनिधि
अंक १२३

यह विशाल लेटर-बक्स जहाज़रानी मौसम शुरू होने के बाद स्टीमर के आने पर ही खोला जाता था।

क्रांति-समिति के कार्यालय में सर्दी महसूस होती थी। कोयले का उपयोग केवल खाना पकाने के लिए किया जाता था। लोस अपने कार्यालय में मेज़ पर झुका बैठा था। उसने बारहसिंगे की खाल की जाकेट और रोवेंदार खाल का ढीला सा पतलून पहन रखा था, और सिर पर था पुराना लाल सेना वाला कपड़े का टोप जो उसके सिर में कसकर लिपटा था। लंबी-चौड़ी सुनहरी दाढ़ी से उसका सीना ढंका हुआ था।

लोस सिर झुकाये इस तरह विचार में डूबा बैठा था मानो किसी कठिन समस्या का समाधान ढूंढ़ रहा हो। जब-तब वह अपना सिर उठा लेता और तब मोटी मोटी भौंहों के नीचे से उसकी नीली नीली आंखें चमक उठतीं।

जुकोव स्थानीय बाशिंदों के बारे में बातचीत करता हुआ छोटे से कमरे में चहलक़दमी कर रहा था। उसने भी काफ़ी गरम कपड़े पहन रखे थे। उसके रोवेंदार तोरबाज़ों के तस्मे उसकी पेटी में खुंसे थे और उसने लोमड़ी की खाल की गरम टोपी पहन रखी थी जिसकी लंबी कनपटियां उसके सीने तक लटक रही थीं। इस पोशाक में वह और भी लंबा नज़र आता था।

"अन्द्रेई, तुम जो बात मुझे बता रहे हो वह बड़ी ही दिलचस्प है," बाहर की ओर गुर्राने वाले तूफ़ान की आवाज़ सुनते हुए लोस ने कहा।

किसी समय लोस एक अच्छा इंजन-ड्राइवर रह चुका था लेकिन जब से वह अपनी बख़्तरबंद ट्रेन से अलग हुआ, इंजन देखने का मौक़ा उसे फिर नहीं मिला। एक बार व्लादिवोस्तोक रेल्वे स्टेशन से होकर जाते हुए लोस रेल-मार्ग के पास रुक गया था और प्रशांत महासागर तटवर्ती विभिन्न स्थानों से आने वाली सोवियत इंजनों की सीटियों की अस्पष्ट आवाज़ देर तक सुनता रहा था।

श्रौर श्रब उत्तरध्रुव सागर के तट पर वह सुन रहा था बरफ़ीले तूफ़ान की गुर्राहट श्रौर बरफ़ के तूदों की गड़गड़ाहट।

"श्रन्द्रेई, यहां श्राते समय क्रांति-समिति ने तुम्हें क्या क्या हिदायतें दी थीं?"

"निकीता सेर्गेयेविच, सब से महत्वपूर्ण बात थी इस प्रदेश से श्रौर यहां के लोगों से परिचय प्राप्त करना। क्रांति-समिति के श्रध्यक्ष वोल्नी ने मुझसे यही कहा था – फ़िलहाल लोगों से परिचय प्राप्त करो श्रौर सभी व्यापारियों के नाम नोट कर लो।"

"तो क्या बरफ़-गाड़ी के रास्ते द्वारा पेत्रोपावलोव्स्क से संपर्क रखा जा सकता है?"

जुकोव मुस्कराया।

"ज़रूर। मैं उसी मार्ग से श्राया। लेकिन व्यावहारिक दृष्टि से यह उपयुक्त नहीं है। मुझे यहां पहुंचने में चार महीने लग गये।"

लोस ने श्रपनी दाढ़ी ज़रा सी चबायी श्रौर फिर कहा:

"तो श्राख़िर हम यहां रहें भी कैसे? क्या एक स्टीमर के बाद दूसरे स्टीमर का इंतज़ार करते रहें? हमें तो बेतार का यंत्र मिलना चाहिए... श्रच्छा श्रन्द्रेई, श्रागे कहो।"

जुकोव फिर कमरे में टहलने लगा श्रौर कहता गया:

"प्रशासन की दृष्टि से इस प्रदेश की स्थापना क्रान्ति से कुछ ही समय पहले हुई। ज़ार के सूबेदार ने १६१५ में यहां ग्राम पंचायतों की स्थापना करने का प्रयत्न किया किन्तु वह श्रसफल रहा। उसे ज़्यादा दिलचस्पी थी सरकारी गोदामों की रोवेंदार खालों में, श्रौर वह पीता था मछली की तरह। कज़्ज़ाकों की हालत श्रपने सरदार से किसी तरह भिन्न नहीं थी। १६१६ में पागलपन से मर जाने से पहले सूबेदार च्यादेंको ने हुक्म दे रखा था कि उसे बिघना उपसागर के श्रागे वाले टीले पर दफ़न किया जाये ताकि वहां से गुज़रने वाले जहाज़ों को वह देख सके।"

"वह निश्चय ही मेरा देशभाई, कोई चतुर उक्रइनी होगा," लोस ने मुस्कराते हुए कहा।

"यह प्रदेश कुछ मुट्ठी भर टुटपुंजियों द्वारा अलिखित क़ानूनों के अनुसार शासित था। अलास्का के कुछ साहसी आदमी भी यहां मौजूद हैं।"

"उन्हें हम निकाल बाहर कर देंगे!" लोस ने निश्चयपूर्वक कहा।

"ये कई जातियों के लोग हैं," जुकोव आगे कहता गया। "नार्वेजियन, डेन, अमेरिकन, लाटवियाई, ओसेतिन, रूसी, इंगूशी, उक्रइनी इत्यादि। एक जर्मन और एक आस्ट्रियन बाप्टिस्ट भी यहां है। यह बाप्टिस्ट भूतपूर्व युद्धबंदी है। इनमें से कई लोगों ने चुकची और एस्किमो स्त्रियों से विवाह कर लिये हैं और यहीं अपना घर-बार बसा लिया है। स्थानीय निवासियों के साथ विवाह-संबंध स्थापित करने से वे अपना व्यापार अधिक अच्छी तरह चला सकते हैं। स्थानीय कुलक इन व्यापारियों और बारहसिंगा-पालकों की बड़ी खानाबदोश जमात के बीच मध्यस्थों का काम करते हैं। वे एकदम अलग रहते हैं और सिर्फ़ अलास्का से आने वाले स्कूनरों के साथ उनका लेन-देन चलता है..."

"कोई हर्ज नहीं। अन्द्रेई, हम इस कूड़े को झाड़ू मारकर बाहर कर देंगे। मैं देखता हूं कि तुमने यहां की हालतें ठीक से जान ली हैं।"

"मैं जब पेत्रोग्राद में था तभी मैंने तान-बोगोराज़ की किताबों से इस प्रदेश की जानकारी प्राप्त की थी।"

लोस ने अंगीठी में कुछ कोयले डाले और अंगारों को ऊपर-नीचे करने लगा।

"निकीता सेर्गेयेविच, यहां मुझपर खास असर पड़ा यहां वालों के संतान-प्रेम का। बड़े-बूढ़े लोग बच्चों के साथ इस तरह बोलते हैं

मानो वे उनके समवयस्क हों। यहां तक कि वे कभी उनसे सलाह-मशविरा भी करते हैं। बच्चों के साथ मेरी अच्छी पटती है। इसी कारण मैं कई शिकारियों और बूढ़ों को अपना दोस्त बना सका।"

उस शाम लोस ने कुछ लिखा-पढ़ी की। जब लिखना ख़त्म हुआ तो काग़ज़ को तह करके उसने जुकोव के हाथ में थमाया।

"यह अगली डाक के लिए है – इसमें मैंने संचार-साधनों के बारे में लिखा है। तुम अपने लिए इसकी एक नक़ल रख लो। वार्षिक रिपोर्ट तैयार करते समय हमें कुछ नक़लों की ज़रूरत पड़ेगी।"

जुकोव ने जाने वाले पत्र को देख लिया, एक लिफ़ाफ़े में बंद कर दिया और लिफ़ाफ़ा लेटर-बक्स में डाल दिया।

लड़के-लड़कियों की एक टोली दौड़ती हुई बेहिचक क्रांति-समिति के मकान में चली आयी।

"बैठो यहां, बैठो!" बेंच सरकाते हुए लोस चिल्लाया।

"निकीता सेर्गेयेविच, ये हैं मेरे छात्र। इनमें से कुछ ने थोड़ा सा पढ़ना सीख लिया है। हो सकता है ये कामसोमोल के सदस्य* बन जायेंगे। ठीक है न?"

"हां, हां, क्यों नहीं?"

वहां से होकर दौड़ने वाली बरफ़-गाड़ी के कुत्तों का भूंकना सुनकर बच्चे बाहर की ओर दौड़े।

"तुमने अभी अभी कहा कि ये कामसोमोल के सदस्य बन जायेंगे। लेकिन अन्द्रेई, हम यहां न पार्टी संगठित कर सकते हैं और न कामसोमोल का दल ही। यहां कम्यूनिस्ट पार्टी का सदस्य हूं अकेला मैं और कामसोमोल के सदस्य हो अकेले तुम। यह प्रदेश काफ़ी बड़ा है – युरोप से भी बड़ा। लेकिन अच्छी तरह सुन लो, हम इन्हीं

---

* युवक कम्यूनिस्ट लीग के सदस्य।

लोगों में से कम्यूनिस्ट पार्टी और कामसोमोल के सदस्य तैयार करेंगे। फिर भी यह बहुत बुरा है कि हमारे पास आने-जाने का कोई साधन नहीं। हमारी जांच-पड़ताल की रिपोर्टें अगली गर्मियों तक लेटर-बक्स में ही पड़ी रहेंगी और फिर जवाब के लिए हमें अगले साल तक रुकना पड़ेगा। मेरे दोस्त, यही परेशानी है! और बात की जाती है सब कुछ झटपट करने की। यह काम बख़्तरबंद ट्रेन चलाने जितना आसान नहीं है!" उदासी भरी मुस्कराहट के साथ क्रांति-समिति के कमिश्नर ने कहा और रोवेंदार परका पहनकर वह बाहर चला गया।

लोस को भी बच्चों की संगत प्रिय थी। बच्चों ने भी इस भारी-भरकम दढ़ियल आदमी से दोस्ती करने में देर नहीं लगायी। वे सब उसके इर्दगिर्द इकट्ठा होते और चिल्लाते रहते:

"रूस्की लोस, रूस्की लोस!"

वह किसी नन्हे से बालक को अपने बलिष्ठ हाथों से उठा लेता और अधर में उछाल देता या अपने सिर पर पकड़े रहता जबकि स्त्रियां अपने यारंग के किवाड़ों में से यह अजीब तमाशा देखतीं और अपने परकों की चौड़ी आस्तीनों की आड़ में मुस्कराती रहतीं।

लोस वैसे तो विनोदी और कुछ मंद-प्रकृति का दिखाई देता लेकिन वस्तुतः वह एक दृढ़-निश्चयी, शीघ्र-निर्णयी तथा अदम्य उत्साही व्यक्ति था।

गृहयुद्ध के समय बख़्तरबंद ट्रेन के इस साहसी सेनापति का नाम सुनकर क्रूर और कपटी शत्रु का कलेजा कांप उठता था। जापानी हस्तक्षेपकों ने भी उसके तेज़-तूफ़ानी और ख़तरनाक हमले का मज़ा चखा था। उसे कई मुश्किल और खौफ़नाक हालतों का मुक़ाबला करना पड़ा था, लेकिन हर समय उसके सिर पर सेहरा रहा।

लेकिन यहां की असाधारण स्थिति में उसे ऐसा लगा कि उसके हाथ-पैर बंधे हुए हैं।

भाषा का अज्ञान भी लोस को खटकता रहा। इस अड़चन से वह बहुत ही परेशान रहता क्योंकि भाषा न मालूम होने से वह स्थानीय लोगों के साथ खुले दिल से बातचीत न कर सकता, सोवियत सरकार के बारे में उनसे कुछ कह न सकता। वह बता न पाता कि सोवियत सरकार क्या करना चाहती है और इस प्रदेश में जीवन को सुसंगठित करने का श्रेष्ठ मार्ग कौनसा है।

"अन्द्रेई, अरे भई तुम्हारे बिना मैं घर से बाहर भी नहीं जा सकता," वह जुकोव से कह देता। "चलें, हम इन लोगों से कुछ बातचीत करें।"

लोग सुबह के समय किसी बड़े यारंग में इकट्ठा होते और बातचीत करते रहते। जुकोव दुभाषिये का काम करता।

इस बातचीत से जो कुछ खबर समझ में आती वह दूसरे दिन सारे तट-प्रदेश मैं फैल जाती। स्थानीय 'तोरबाज़ तार' के ज़रिये वह एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव तक और एक शिकारी से दूसरे शिकारी तक पहुंच जाती।

तट-प्रदेश के दूर से दूर स्थान में रहने वाले लोग भी इस रूसी सरदार को जानते थे हालांकि उन्होंने उसे एक बार भी नहीं देखा था।

लोस मेहनत-मशक़्क़त से चुकची भाषा सीखता रहा। वह सारा दिन और कभी कभी सारी रात चुकची के अध्ययन में लगा रहता। उसके शब्द-संग्रह की नोट-बुक में अब इतने शब्द दर्ज हो चुके थे कि किसी भी शब्द को ढूंढ़ना एक लंबी खोज-बीन का काम हो गया था। अब लोस ने शब्दों तथा वाक्यांशों को अपने विशेष वर्गीकरण के अनुसार फिर से व्यवस्थित किया। इस काम के लिए उसने सारी नोट-बुक फिर से लिखी। अब उसके पास दो नोट-बुकें बन गयीं। एक नोट-बुक में उसने वर्णानुक्रम से शब्द लिखे और दूसरी में विशेष

शीर्षकों के नीचे बातचीत के वाक्यों का संग्रह किया। जैसे : "सामान्य बातचीत", "व्यापारिक बातचीत", "कुत्तों के बारे में बातचीत" और अन्य विभिन्न अवसरों के लिए प्रचलित वाक्य-संग्रह।

सबेरे लोस सब से पहले जाग उठता और अपने मित्र तथा सेक्रेटरी को पुकारकर कहता :

"उठो अन्द्रेई, समय हो गया! सोते सोते तुम्हें स्कर्वी हो जायेगी!"

फिर अपने रोवेंदार बिस्तर-थैलों में पड़े पड़े और केवल अपने सिर बाहर निकाले वे टोपियां पहन लेते और अपना दिनक्रम आरंभ कर देते।

"अच्छा अन्द्रेई, मेरे पाठ तुम जांच लो।"

और लोस नये सीखे हुए चुकची शब्दों तथा वाक्यांशों का पोथा खोल देता : क्ल्याउल याने आदमी, नेउस्केत याने औरत, हैमिचिलेन याने धनी आदमी, विलेत्कुर्केन क्ल्याउल याने व्यापारी, इत्यादि।

"कहो अन्द्रेई, कैसी चल रही है मेरी पढ़ाई?"

"बहुत अच्छी। निकीता सेर्गेयेविच, सचमुच मेरी उम्मीद से भी ज़्यादा अच्छी।"

"प्यारे दोस्त, ज़रा सब्र से काम लो! कुछ ही दिन बाद मैं चुकची में भाषण दूंगा। बताओ, 'चले जाओ' को चुकची में क्या कहते हैं?"

"कांतो।"

"तो फिर कांतो! कांतो और बरफ़-गाड़ियां तैयार करो! आज हम किनारे जा रहे हैं—बस्ती समितियों और जनजाति सोवियतों के चुनावों के लिए। तब तक मैं कुछ टिकियां बना लूं। रोटी का स्वाद तो हम कुछ दिनों में भूल ही जायेंगे।"

"सुना है कि थामसन तेल के लैंप पर रोटियां सेंकता है। मैं भी ऐसा करके देखना चाहता हूं लेकिन समय ही नहीं मिलता," जुकोव ने कहा।

लोस ने कपड़े पहन लिये और अंगीठी में आग सुलगायी।

"कांतो, जल्दी करो!" उसने मुस्कराते हुए दोहराया। "अब यह शब्द मुझे अच्छी तरह याद रहेगा।"

नौवां अध्याय

मि० थामसन की झूलन-कुर्सी में मि० साइमन्स आराम से झूलता हुआ खुशबूदार 'कैप्स्टन' सिगरेट का धुआं उड़ा रहा था। मि० साइमन्स नॉर्थ कंपनी का स्थानीय प्रतिनिधि था और रोवेंदार खालों का व्यापार-केन्द्र उसके मातहत था। वह खालों का विशेषज्ञ, विक्रेता, गोदाम-कर्मचारी तथा क्लर्क सभी कुछ था और मानता था कि इन सब फ़र्ज़ों को पूरा करने के लिए एक आदमी भी ज़रूरत से ज़्यादा है। उसके पास काफ़ी ख़ाली समय रहता था और उसे हमेशा परेशानी होती थी कि इस समय को कैसे बिताये? उम्र उसकी तीस की थी। इकहरा बदन, सुनहरे बाल, कठोर घमंडी चेहरा और धुंधली सी आंखें। यहां की हर चीज़ से वह नफ़रत करता था और अक्सर पछताता रहता था कि क्यों ऊंची तनख़ाह के फेर में पड़कर इस 'बर्बर' देश में आ पहुंचा। उसे शिकारियों से नफ़रत थी और घृणा थी उनके कपड़ों और मुस्कराते हुए चेहरों से। इस बात की उसे ख़ुशी थी कि ये लोग उसके व्यापार-केंद्र के पास नहीं फटकते। हां, उसे इस बात का ज़रा सा भी संदेह न हुआ कि यह सब मि० थामसन और अलितेत की करतूत का नतीजा है।

मि० साइमन्स को यह एक आदत पड़ गयी थी कि वह किसी स्थान में प्रवेश करने से पहले दरवाज़े की मुट्ठी पर अपना रूमाल लपेट देता था।

सर्दी ज़ोरों की पड़ रही थी और मि० साइमन्स इतना ऊब गया था कि वहां की ज़िंदगी से मौत अच्छी समझने लगा था। मि०

साइमन्स को किनारे पर उतारकर 'बीचाइमो' जहाज़ को गये तीन महीने हो चुके थे। जल्दी में जोड़े जाने वाले एक मकान, गोदाम और व्यापार-केंद्र के लिए ज़रूरी माल भी इसी जहाज़ में लाया गया था।

यदि चार्लस थामसन की संगत न होती तो मि० साइमन्स के लिए तनहाई एक मुसीबत बन जाती। आख़िर मि० थामसन ही तो उस प्रदेश में एकमेव सभ्य व्यक्ति था। सौभाग्य से मि० थामसन एक साल और वहां रहने जा रहा था। जाड़ों की लंबी शामों में गपशप के लिए कोई साथी तो मिल गया।

हर दिन सबेरे नींद खुलने पर मि० साइमन्स आराम से कपड़े पहनकर मि० थामसन की कुटिया में चला जाता। बरफ़ीला तूफ़ान भी उसे रोक न पाता। नॉर्थ कंपनी के व्यापार-केंद्र से मि० थामसन के निवास-स्थान तक एक रस्सा बंधा था और अंधेरे में जाते समय मि० साइमन्स उसका सहारा लेता था।

वह मि० थामसन के साथ ही खाना खाता। सवेरे दोनों कॉफ़ी पीते और डिब्बे में बंद फल खाते। फिर मि० साइमन्स मि० थामसन की किस्सा-कहानियां सुनता या दोनों पेशन्स का खेल खेलते। रविवार के दिन ग्रामोफ़ोन का कार्यक्रम रहता और इस तरह वे दोनों एक ही दिये की रोशनी में उत्तरी प्रदेश के लंबे घंटे बिता देते। मि० थामसन से विदा लेते समय मि० साइमन्स व्यंग्यपूर्वक मुस्कराता हुआ कह देता :

"अलविदा थामसन–भई, तुम तो जानते ही हो कि समय ही संपत्ति है!"

एक रोज़ शाम को खाना खाने के समय मि० साइमन्स व्हिस्की की एक बोतल ले आया और दोनों देर तक पुराने दोस्तों की तरह बातचीत में मशग़ूल ही थे कि चार्ली ने पुकारकर कहा :

"मेरी, कुछ और कॉफ़ी ले आओ!"

मेरी को ग्राश्चर्य हुग्रा क्योंकि कॉफ़ी लाने का काम हमेशा उसकी मां करती थी। उसने जल्दी जल्दी ड्रेस पहनी ग्रौर कमरे में चली ग्रायी।

"ग्रपने लिए भी एक कप ले ग्राग्रो ग्रौर हमारे साथ यहीं बैठकर पियो। ग्राज रविवार है न," मेरी के पिता ने कहा।

चार्ली ने ग्रपनी बेटी को ग्रपने साथ कॉफ़ी पीने के लिए इससे पहले कभी न बुलाया था। मेरी पसोपेश में पड़ गयी। ग्रपने पिता की बात वह समझ न पायी।

"ग्राग्रो, बैठो," उसका हाथ पकड़कर पिता ने कहा।

"थामसन, बड़ी ग्रच्छी है तुम्हारी बिटिया," साइमन्स ने कुछ रुखाई के साथ कहा। "ग्रंग्रेज़ी ज़रूर बोल लेती होगी?"

"ग्रजी नहीं," थामसन ने उदासीनता के साथ कहा।

ग्रामोफ़ोन बज रहा था। मि० साइमन्स मेरी को घूरता रहा। उसने जल्दी जल्दी कॉफ़ी पी ग्रौर एकदम दरवाज़े की ग्रोर दौड़ी।

"ग्रोह, मेरी! जाग्रो नहीं—क्या मेरे साथ नाचोगी नहीं?"

लेकिन मेरी ग़ायब हो चुकी थी।

"साइमन्स, ग्ररे वह नाचना-वाचना नहीं जानती।"

"तो उसे सिखाना चाहिए। लड़की के लिए नाच जानना ज़रूरी है। मैं उसे सिखा दूंगा..."

दोनों ने ग्रपनी पाइपें सुलगायीं ग्रौर चुपचाप कश लगाते रहे।

"ग्रच्छा साइमन्स, तो मैं क्या कह रहा था?—हां, मेरी समझ में नहीं ग्राता कि ग्राख़िर नॉर्थ कंपनी को यहां के व्यापार का एकाधिकार क्यों दिया गया? एकाधिकार से प्रतियोगिता को ग्रवसर नहीं मिलता ग्रौर बिना प्रतियोगिता के व्यापार का कोई ग्रस्तित्व नहीं।"

"हां थामसन, इस विषय में मैं तुमसे सहमत हूं। लेकिन तुम एक बात भूल रहे हो—हमारा व्यवहार रूसी व्यापार मंत्रालय के

साथ चल रहा है। सोवियत रूस में इस समय हर चीज़ में एकाधिकार की स्थापना हुई है। निजी उद्यम का कोई अस्तित्व ही नहीं रहा।" मि० साइमन्स खड़ा हुआ और उसने निराश भाव से अपने हाथ फैला दिये। "इस संबंध में हम कुछ नहीं कर सकते। यहां के मालिक हम नहीं हैं।"

"लेकिन यह बताओ कि रूस में व्यापारी लोगों का क्या होगा?"

मि० साइमन्स ने जिस तरह अपने कंधे सिकोड़े उससे साफ़ ज़ाहिर था कि इस बारे में उसकी जानकारी नहीं के बराबर है।

उस शाम उनकी बातचीत बड़े मित्रतापूर्ण वातावरण में होती रही।

"तो थामसन भविष्यत् के लिए तुमने क्या योजना बनायी है?"

"मैं शायद अगली गरमियों में अमरीका वापस जाऊंगा।"

"हां, ठीक ही है। असल में मेरी समझ में नहीं आता कि अपनी ज़िंदगी का सब से क़ीमती हिस्सा तुमने यहां कैसे बिताया? यहां ऐसी कौनसी सुविधा है? एक मांदनुमा कमरा और गुसलख़ाने का कोई ठिकाना नहीं। यहां न मोटर है और न फूल ही! मैं कल्पना तक नहीं कर सकता। हां, मेरी बात दूसरी है... मेरी बीवी मर गयी और मेरे कोई संतान नहीं–यही कारण है कि मैं इधर आकृष्ट हुआ था। हां, यह सही है कि इस काम में तनख़ाह काफ़ी अच्छी मिलती है। लेकिन मैं यहां एक साल से ज़्यादा नहीं रह सकता। भगवान गवाह है। और तुमने तो ज़िंदगी का आधा हिस्सा यहां गुज़ार दिया! मि० थामसन, सचमुच यह कमाल की बात है!"

"अजी कुछ नहीं, आदत पड़ जाती है। साइमन्स, तुम्हारी बीवी का देहांत हुए कितने दिन हुए?"

"दो साल। अब दुनिया में मैं अकेला हूं। मेरा इरादा है कि इस काम में कुछ कमा लूं और फिर कनाडा वापस जाकर कुछ काम-

धाम करूं। और थामसन, अगर इसमें कोई व्यापारिक गोपनीयता न हो तो बताओ कि ज़रूरत के दिनों के लिए तुमने क्या तैयारी कर रखी है?"

"देखो साइमन्स, मेरे व्यापार-धंधे के दिन तो अब लद चुके।" मि० थामसन यह कहकर कुछ देर मौन रहा और फिर बोला: "साफ़ साफ़ कहना हो, तो मैं तुमसे बड़ा खुश हुआ हूं। साइमन्स, तुम्हारे साथ ने इस साल मेरा अच्छा फ़ायदा कर दिया। और तुम तो बड़े खुशदिल दोस्त हो। तुम्हें राज़ में लेने में मुझे कोई एतराज़ नहीं।"

मि० थामसन उठकर अपनी तिजोरी के पास गया। बीच ही में रुककर उसने कहा:

"बैंक के क्लर्कों को छोड़कर तुम्हीं पहले व्यक्ति हो जिसे मेरी दौलत का पता है।"

मि० थामसन ने तिजोरी खोली और कागज़-पत्रों का एक पुलिंदा निकालकर थरथराते हुए हाथों से मेज़ पर रख दिया और भावपूर्ण स्वर में कहने लगा:

"साइमन्स, मुझ जैसे एक बूढ़े ने तुमपर भरोसा किया है। मुझे आशा है तुम उसका दुरुपयोग न करोगे।"

मि० साइमन्स ने जल्दी जल्दी अपनी कुर्सी आगे सरका दी।

"देख लो। एक बैंक में जमा है एक लाख डालर—सूद को छोड़कर। दूसरे बैंक में भी इतना ही जमा है और तीसरे बैंक में हैं सैंतीस हज़ार। बस, इसके अलावा और कहीं एक छदाम भी नहीं।"

मि० साइमन्स मुंह फाड़कर देखता ही रह गया।

"तो कहो कि ढाई लाख की माया है तुम्हारे पास, है न?"

"नहीं साइमन्स," थामसन ने आह भरते हुए कहा। "इस रक़म तक पहुंचने के लिए मैंने काफ़ी मेहनत-मशक़्क़त की लेकिन यह हो न पाया।"

"यह भी क्या कहना हुआ? सिर्फ़ तेरह हज़ार कम हुए तो इससे क्या हुआ?"

"कुछ भी हो साइमन्स, एक भरी-पूरी रक़म देखकर दिल ख़ुश हो जाता है!"

मि० थामसन ने काग़ज़ात तिजोरी में रख दिये और कहा:

"कुछ और कॉफ़ी लोगे?"

"नहीं थामसन, धन्यवाद। अब देर हो रही है।"

उस रात को मि० साइमन्स आराम से सो नहीं पाया। मेरी के साथ ब्याह करने के रंगीन सपने देखने में ही उसकी रात कट गयी।

दसवां अध्याय

नया व्यापार-केंद्र थामसन के मकानों की तरह सागर-तट पर स्थित था। मि० साइमन्स का घर एक संकरे गलियारे से भंडार के साथ जुड़ा था। नॉर्थ कंपनी के प्रतिनिधि के लिए सारी व्यवस्था सुविधाजनक थी। हर चीज़ समीप ही उपलब्ध थी। भंडार में व्यापार का माल ठसाठस भरा था और मि० साइमन्स ने हर चीज़ क़रीने से रखी थी।

मि० साइमन्स चुकची भाषा नहीं जानता था और न उसकी इच्छा ही थी कि यह भाषा सीखे। हां, रूसी भाषा वह कुछ कुछ बोल लेता था। स्थानीय लोगों के साथ उसके लेन-देन में याराक दुभाषिये का काम करता था।

दिन का कारोबार ख़त्म होने पर मि० साइमन्स ने अपना भंडार बंद किया और मि० थामसन के घर चला गया। अच्छा-ख़ासा खाना खाने के बाद मि० थामसन क्षमा-याचना करके बाहर गलियारे में गया और अपनी बेटी से बोला:

"मेरी, आज तुम मि० साइमन्स के यहां जाओ और नाच की तालीम शुरू करो।"

"मैं नहीं जाऊंगी साइम के यहां। मुझे इस तालीम की कोई ज़रूरत नहीं। मुझे साइम से कहीं अच्छा नाचना आता है," उसने खट से जवाब दिया।

"अरी, तुम अमरीकी बाप की बिटिया हो! तुम्हें अमरीकी तरीक़े से नाचना चाहिए, जंगलियों के ढंग से नहीं!"

यह आदेश देकर मि० थामसन वापस अपने कमरे में आया।

इसी क्षण याराक ने अंदर आकर कहा:

"लंबी दाढ़ी वाला रूसी सरदार आ पहुंचा है। वह बाहर अपनी बरफ़-गाड़ी के पास खड़ा है।"

मि० साइमन्स जल्दी जल्दी बाहर गया।

व्यापार-केंद्र के पास ही दो बरफ़-गाड़ियां खड़ी थीं और उनके इर्दगिर्द शिकारियों की भीड़ लगी हुई थी।

"ओहो! गवर्नर लोस!" साइमन्स ने दूर ही से उसका अभिवादन किया और शीघ्रता से आगे बढ़कर उससे और जुकोव से हाथ मिलाया।

"ज़्द्रास्त्वुइते, ज़्द्रास्त्वुइते*, मि० साइमन्स! काफ़ी दिनों बाद मुलाक़ात हो रही है। पिछली गरमियों में हम मिले थे," लोस ने कहा।

"आइये, मेरे ग़रीबख़ाने में तशरीफ़ ले आइये। हां, अपने कुत्तों को बांध रखने का प्रबंध कर लीजियेगा क्योंकि यह मुझसे अच्छा आप ही कर सकेंगे।"

"कुत्तों की देखभाल मैं करूंगा," याराक ने कहा।

---

* नमस्ते, कहिये, कैसे हैं? (रूसी)

"देखो, उन्हें अच्छी तरह खिलाना," अन्द्रेई ने कहा।

"हां, उन्हें अच्छी तरह खिलाऊंगा।"

इस अमरीकी का लकड़ी का घर एक ठोस मकान सा नज़र आ रहा था हालांकि यह साफ़ दिखाई दे रहा था कि उसके टिकाऊपन पर ध्यान नहीं दिया गया है। कमरे साफ़-सुथरे, आरामदेह और हवादार थे। एकदम नये और सुखदायी फ़र्निचर से वे सुसज्जित थे। चारपाई के पास भूरे रीछ की एक खाल बिछी थी जबकि सफ़ेद रीछ की एक खाल आराम-कुर्सी की पीठ पर पड़ी थी। यह सफ़ेद खाल मि० थामसन की ओर से भेंट में प्राप्त हुई थी। लिखने की मेज़ पर जुकोव को अमरीकी पत्रिकाओं का एक ढेर दिखाई दिया और शीघ्र ही वह उन्हें पढ़ने में मशग़ूल हो गया।

लोस ने कमरे में चहलक़दमी करते हुए फ़र्श से छत तक उसका निरीक्षण किया। फिर दीवार थपथपाते हुए उसने व्यंग्यपूर्वक पूछा:

"काफ़ी गरम है न?"

"हां, मि० लोस, ख़ूब गरम है!"

"आप अमरीकी लोग बड़े चतुर होते हैं! ऐसा मकान खड़ा किया कि जो तीन ही साल टिक सके—एक दिन भी ज़्यादा या कम नहीं—यही तो आपके इक़रार की मियाद है न? इधर इक़रार ख़त्म हुआ, उधर मकान ढेर हो गया!"

"जी नहीं, मि० लोस, ऐसा नहीं होगा—यह अच्छा, ठोस मकान है। बीस साल तो यह मकान ज़रूर काम देगा!"

"बीस साल? अरे, मैं अपने कंधे से एक धक्का मार दूं तो दीवार ढेर हो जायेगी। कहिये देखना है? रूस में हम इस तरह के मकान नहीं बनाते।"

"मि० लोस, आप तो धक्का मारकर हाथी को भी गिरा देंगे! लेकिन मैं कहता हूं कि यह मकान सचमुच अच्छा है—दो इंच मोटे

इसके तख़्ते हैं, दीवारों में दफ़्ती लगी है और उनपर रंगीन काग़ज़ भी चिपकाये गये हैं..."

बातचीत करते करते मि० साइमन्स ने स्टोव जलाया, सुअर के मांस के टुकड़े काटे, मक्खन निकाला और छुरी-कांटों और तश्तरियों की खनखनाहट-झनझनाहट में खाने की मेज़ सजा दी। उसके हाथ बड़ी निपुणता से काम कर रहे थे।

"इक़रार की शर्तों के मुताबिक़ नॉर्थ कंपनी को कारोबारी मकानों के अलावा स्कूलों और अस्पतालों के मकान भी बनवाने थे," लोस ने मानो अपने आप से बोलते हुए कहा। "क्या वे भी दफ़्ती से ही बनाये जायेंगे?"

मि० साइमन्स हाथ में रक़ाबी लिये हुए बीच कमरे में रुक गया।

"लेकिन मि० लोस, आप तो जानते ही हैं कि 'बीचाइमो' जहाज़ व्यापार-केंद्र के मकानों और व्यापारी माल से लदा हुआ था। हां, यह सही है कि हमारी फ़र्म के पास जहाज़ों का काफ़ी बड़ा बेड़ा है और वह दूसरा स्टीमर भेज सकती थी लेकिन उत्तरध्रुव प्रदेशीय जहाज़रानी का हमारी फ़र्म का यह पहला ही तो अनुभव है। यह केवल परीक्षणात्मक यात्रा है। मि० लोस, नॉर्थ कंपनी एक सुप्रतिष्ठित फ़र्म है और मुझे विश्वास है कि इक़रार में उल्लिखित सभी मकान अगले साल किनारे पर खड़े नज़र आयेंगे... अच्छा, तशरीफ़ रखिये!" साइमन्स ने लोस का स्वागत सा करते हुए अपनी बात पूरी की।

खाना खाने और व्यापार-व्यवहार संबंधी कुछ बातचीत कर चुकने के बाद मि० साइमन्स क्रांति-समिति के इन कार्यकर्ताओं को भंडार में ले गया।

यहां लोस ने क़ायदे से पैक किये हुए कारतूस और विंचेस्टर बंदूक़ें देखीं, तरह तरह की ख़ुशबूदार तंबाकू सूंघी और बढ़िया

ज़नाना अंडरवेयर की सराहना की। प्लग तंबाकू चाकलेट की तरह टीन की पन्नियों और मोमी काग़ज़ में लिपटी हुई थी। धातु के बरतन-भांडों तथा लोहे की बनी चीज़ों और विविध सूती कपड़ों की भरमार से लोस चकित रह गया।

मि० साइमन्स ने दीवार पर टंगे हुए दो पर्चों की ओर लोस का ध्यान आकृष्ट किया।

"ये हैं हमारी क़ीमतों की सूचियां। इनमें से एक है रोवेंदार खालों की मूल्य-सूची और दूसरी व्यापारी माल की मूल्य-सूची।"

लोस दीवार के पास गया और ज़ोर से पढ़ने लगा:

"चाय की ईंट... अरे, लेकिन इसकी क़ीमत कहां लिखी है?" उसने पूछा।

"ओह, उस काग़ज़ का किनारा फट गया है," मि० साइमन्स ने कहा और झट से रूसी अक्षरों वाला एक छोटा सा टाइपराइटर निकालकर मेज़ पर रखा और क़ीमतों के ग़ायब आंकड़े फिर से टाइप कर दिये। यह मूल्य-सूची इस प्रकार थी:

चाय की ईंट – १ रूबल
विंचेस्टर – ८० रूबल
कारतूस २० – २ रूबल
आटा ४० पौंड – ७ रूबल

सूची काफ़ी लंबी थी। लोस देर तक उसे पढ़ता रहा।

"बहुत अच्छा! और यह शायद रोवेंदार खालों की मूल्य-सूची है?" उसने कहा।

सफ़ेद लोमड़ी, प्रथम श्रेणी – ४० रूबल
सफ़ेद लोमड़ी, द्वितीय श्रेणी – ३२ रूबल
नीली लोमड़ी, प्रथम श्रेणी – ८० रूबल
सील, प्रत्येक – १ रूबल

लोस ने सूची अंत तक पढ़ ली, फिर वह कौंटर के पास चला गया और चाय की ईंटों के एक बक्स पर बैठ गया। नॉर्थ कंपनी का प्रतिनिधि उसकी हर हरकत को बारीकी से देखता रहा।

"यह सब बहुत अच्छा है लेकिन है एकदम बेकार," लोस ने आह भरकर कहा। "यहां एक भी शिकारी पढ़ना-लिखना नहीं जानता। तो फिर ये क़ीमतें किस काम की?"

साइमन्स ने कंधे सिकोड़े और हाथ फैला दिये।

इस समय याराक भंडार में आया और उसके पीछे आये पांच शिकारी।

"अभी नहीं, अभी नहीं! जाओ, कुछ देर बाद आओ!" उन्हें दरवाज़े की ओर जाने का इशारा करते हुए मि० साइमन्स रूसी में बोला:

"कोई हर्ज नहीं मि० साइमन्स, उनसे हमें किसी तरह की तकलीफ़ नहीं हो रही है," जुकोव ने कहा।

"मि० साइमन्स, इन लोगों के लिए जरूरी है जीवित सूची, मरी हुई नहीं," लोस ने कहा।

"मतलब?"

"देखिये, हम चाय की ईंटों का यह बक्स ही ले लें – इसमें ८० ईंटें हैं और इसकी क़ीमत है ८० रूबल। अब इस बक्स पर प्रत्येक ४० रूबल वाली सफ़ेद लोमड़ियों की दो खालें रख दीजिये। या यह विंचेस्टर लीजिये – उसके नीचे भी दो सफ़ेद खालें रख दीजिये। बीस कारतूसों का एक बक्स रख दीजिये सील की दो खालों पर – सील की हर खाल की क़ीमत एक रूबल है और बीस कारतूसों की क़ीमत है दो रूबल। ऐसा करने पर निरक्षर शिकारी भी आसानी से समझ लेगा।"

"क्या कहूं मि० लोस, जाने क्यों ये शिकारी मेरे पास लोमड़ी की खालें लाते ही नहीं। देखिये न, मैं अब तक दो एक दर्जन से

ज़्यादा खालें नहीं पा सका। जैसा आपका सुझाव है वैसी मूल्य-सूची आख़िर बनायें भी किस चीज़ के सहारे?"

"इसके लिए काफ़ी खालें आपको मिलेंगी। चलें हम यहीं देख लें!"

लोस ने अपना परका फेंका और चाय के पिटारे खोलने लगा। कुछ ही देर में भंडार की एक दीवार ने शो-केस और मूल्य-सूची का रूप धारण कर लिया। जुकोव ने शिकारियों को समझा दिया कि उन्हें सफ़ेद लोमड़ी की एक खाल के एवज़ में चाय की चालीस ईंटें मिलेंगी। शिकारी दंग रह गये—अरे, ऐसा किसी ने आज तक सुना भी था!

"काकोमेई, काकोमेई!" वे आश्चर्यचकित होकर चिल्ला उठे।

शिकारी दौड़े दौड़े अपने यारंगों में चले गये, ज़मीन में गाड़ी हुई खालें निकालीं और उन्हें भंडार में ले आये। ये खालें अब तक इसलिए छिपी पड़ी थीं कि शिकारी सौदागर के अच्छे मूड का इंतज़ार कर रहे थे।

एक शिकारी ने लोस के हाथ में सफ़ेद लोमड़ी की दो खालें थमा दीं और पूछा:

"क्या इनके बदले में मुझे विंचेस्टर मिलेगी?"

"बेशक मिलेगी," जुकोव ने लोस के लिए जवाब दिया। "लेकिन व्यापार करने वाला आदमी लोस नहीं है। उसने सिर्फ़ हुक्म दिया है कि कारोबार इस ढंग से चलाया जाये। खालें आप लोग इन्हें दीजिये," साइमन्स की ओर संकेत करते हुए उसने कहा।

मि० साइमन्स ने खालें अपने हाथ में ले लीं, उनको जांचा और कहा:

"बढ़िया खालें हैं। कहिये, यह शिकारी क्या चाहता है?" शिकारी की मांग सुनने पर उसने ३० × ३० मोहरी की एक विंचेस्टर निकाली और उसे थमा दी।

शिकारी ने अविश्वास भाव से बंदूक़ ली, सब लोगों पर एक नज़र दौड़ायी और पूछा :

"इस बंदूक़ के लिए मुझपर कुछ बाक़ी तो नहीं? कहीं बाद में मुझे और खालें तो नहीं देनी पड़ेंगी?"

"नहीं, नहीं, बंदूक़ की पूरी क़ीमत चुकती हो गयी। वहां देखो, दीवार पर किस तरह क़ीमत दिखायी गयी है?" जुकोव ने फिर एक बार उन्हें नयी मूल्य-सूची समझायी।

अब भंडार में ज़ोरदार व्यापार होने लगा। शिकारी लोग अपने यारंगों से लोमड़ी की खालें लेकर दौड़े आते और इस नये ढंग से उन्हें बेच देते। बात की बात में इस नये तरीक़े का समाचार जंगल की आग की तरह किनारे की सभी बस्तियों में फैल गया।

"देखा आपने मि० साइमन्स? और आपने सोचा था कि शिकार का मौसम अभी शुरू नहीं हुआ। आप ज़रा ठहरिये, मैं एक बार किनारे का चक्कर लगाता हूं और फिर देखिये—आपके यहां खालों की बाढ़ सी आ जायेगी। बात यह है कि अभी तक इन लोगों के साथ सच्चाई का व्यवहार किसी ने किया ही नहीं, जैसा आप करना चाहते हैं," लोस ने कहा। उसके स्वर में व्यंग्य की झलक थी।

"मि० लोस, मैं आपका अत्यंत ऋणी हूं। यहां व्यापार के संगठन में मुझे आपसे बड़ी मदद मिलेगी।"

सारा दिन व्यापार-केंद्र के भंडार में बिताने के बाद क्रांति-समिति के कार्यकर्ता वापस मि० साइमन्स के कमरे में गये।

"आप चाहे जो कहें मि० लोस, लेकिन यह है व्यापार का जंगली तरीक़ा!" मि० साइमन्स ने कहा।

"यह सच है। लेकिन आप देखेंगे कि जब हम यहां स्कूल

खोलेंगे और इन लोगों को पढ़ना-लिखना सिखायेंगे तब यहां का कारोबार बिल्कुल दूसरे ढंग का होगा। हम यहां सिक्के भी जारी करेंगे और वस्तु-विनिमय प्रणाली समाप्त कर देंगे। लेकिन फ़िलहाल... हमें यहां की स्थिति के अनुसार ही काम करना होगा। हम बोल्शेविक व्यवहारी लोग होते हैं ... ओहो! अरे, यह क्या है – रूसी रेकार्ड?" लोस ने यकायक आश्चर्य से कहा।

"ये अमरीकी रेकार्ड हैं मि० लोस, लेकिन गाने हैं रूसी और उक्रइनी," मि० साइमन्स ने विनयपूर्वक कहा।

लोस देर तक अपनी मातृभाषा उक्रइनी गीतों का मज़ा लेता रहा। ये गीत सुनकर उसे घर की याद आयी और वह व्याकुल हो उठा।

लोस उठ खड़ा हुआ और कमरे में चहलक़दमी करने लगा। वह जुकोव के पास रुक गया जो एक अमरीकी पत्रिका के पन्नों पर नज़र दौड़ा रहा था। पत्रिका के एक पूरे पृष्ठ पर मोटर के एक टायर का भड़कीला चित्र था।

"मि० साइमन्स, यह पहिया कैसा है?" लोस ने पूछा। "वहां क्या लिखा है?"

"उन दो प्रेमियों की कहानी जो पूरा एक महीना कार पर डरावने जंगलों और झाड़ियों में और पथरीले नदी-तटों पर घूमते रहे और तिस पर भी टायरों के ख़राब होने का ज़रा सा भी निशान नहीं नज़र आया। वे पहले की तरह मज़बूत हो गये। इसलिए हमारे टायर ख़रीदिये!"

लोस ठट्ठा मारकर हंस पड़ा।

"अच्छा अन्द्रेई, ज़रा अगला पृष्ठ देखो," उसने ज़रा सा मुस्कराते हुए कहा।

अगले पृष्ठ पर ज़नाना लंबे मोज़ों का चित्र था।

"कहिये मि० साइमन्स, क्या इसके बारे में भी कुछ कहानी है?"

"हां, मि० लोस!"

"कैसे चित्र और कैसा काग़ज़! और यह सारा प्रचार किस लिए? केवल ज़नाना मोज़ों का एक जोड़ा बेचने के लिए!" लोस ने सोचा और इस समय उसे स्मरण आया उन सैनिक समाचारपत्रों का जिन्हें वे मोर्चे पर भूरे पैकिंग पेपर पर छपवाते थे।

मि० साइमन्स ने ग्रामोफ़ोन पर नया रेकार्ड लगाया। एक गायक की सुरीली आवाज़ जीवन की स्वर्ण-घटिकाओं की स्मृतियों का गीत अलाप रही थी। यहां उत्तर में, शोरगुल और भीड़-भड़क्के से दूर, इस गीत ने लोस तक के हृदय में भावुकता का तार छेड़ दिया। वह अपनी दाढ़ी को चबाता खड़ा रहा। उसकी नीली नीली आंखें अधमुंदी दिखाई पड़ रही थीं।

"कैसा बढ़िया गाना है! ग्रामोफ़ोन के बारे में जब हम सोचने लगते हैं सचमुच यह एक अजीब चीज़ लगती है। अच्छा, अब गाना-वाना काफ़ी हो चुका। अन्द्रेई, किसी को भेजकर मि० थामसन को बुलाओ," लोस ने कहा।

लोस ऊनी फ़ौजी वर्दी पहने और लाल सेना का कपड़े वाला टोप डाटे था जिसके अगले हिस्से पर पांच नोकों वाला एक तारा लगा था। इस टोप के कारण वह रूसी पौराणिक कथाओं के बलशाली नायक जैसा लग रहा था।

चार्लस थामसन अंदर आया। उसके चेहरे पर निराशा और घबड़ाहट फैली हुई थी। लोस से उसके डरने की वजह भी थी।

"गुड ईवनिंग!" उसने हल्की सी आवाज़ में कहा।

"दोब्री वेचर, दोब्री वेचर* मि० थामसन!" मि० साइमन्स

---

* शुभ संध्या। (रूसी)

ने अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा और उससे ओवरकोट उतारने की प्रार्थना की।

"मि० थामसन," लोस ने बोलना आरंभ किया, "मैं समझता हूं, मि० साइमन्स ने आपसे कह दिया है कि अब यहां का सारा व्यापार नॉर्थ कंपनी के ज़रिये होगा?"

"हां," जुकोव से लोस की बात का अनुवाद सुनते ही मि० थामसन ने जल्दी जल्दी जवाब दिया।

"लेकिन मैंने तो सुना है कि आप अभी तक स्थानीय बहेलियों से रोवेंदार खालें ख़रीदते हैं। क्या यह सच है?"

लोस की पैनी निगाह के आगे मि० थामसन कुछ देर चुप रहा।

"मि० जुकोव, मेहरबानी करके कमिश्नर से कह दीजिये कि मैंने वाक़ई हाल ही में सफ़ेद लोमड़ियों की तैंतालीस और लाल लोमड़ियों की तीन खालें प्राप्त की हैं लेकिन ये सब पुराने क़र्ज़ की बाक़ी चुकता करने के लिए थीं।"

"मि० थामसन, अगर मैंने फिर सुना कि आप अभी भी खालें ख़रीद रहे हैं, तो याद रखियेगा, आप पर भारी जुर्माना कर दूंगा," लोस ने कठोरतापूर्वक कहा।

थामसन को ऐसा लगा मानो उसके दिल पर से मन भर का बोझ उतर गया हो। उसने चुपचाप अपनी गर्दन हिलायी।

"और जो तैंतालीस खालें आपने ग़ैरक़ानूनी ढंग से ख़रीदी हैं उन्हें कृपया क्रांति-समिति के कार्यालय में पहुंचा दीजिये। अन्द्रेई, इन खालों के लिए उन्हें एक रसीद दे दो।"

चार्लस थामसन ने राहत की सांस ली। उसे ऐसा लगा कि बाल बाल बच गये।

ग्यारहवां अध्याय

बरफ़-गाड़ी हांकने वाले सबेरे ही आ पहुंचे। लोस ने मि० साइमन्स से उन्हें चाय पिलाने के लिए कहा और प्रवासी पोशाक पहनकर खुद बाहर चला गया।

पहाड़ों के पीछे से अग्नि-पुंज सा चांद निकला जिसके कारण उभड़े हुए टेढ़े-मेढ़े पर्वतपृष्ठ आकाश पर चिपकायी गयी चित्र-रेखाओं से दिखाई दिये। कुड़कीला पाला पड़ा था। चारों ओर गंभीर शांति फैली हुई थी जो भंग होती थी केवल वहां से गुज़रने वालों के गद्देदार पैरों के नीचे कुरकुराने वाली बरफ़ की आवाज़ से। यह ध्वनि दूर दूर तक गूंज उठती थी।

गहरी नीली हिम-शिलाओं के चंदवे के नीचे हिमाच्छादित सागर फैला हुआ था। इधर उधर तैरते हुए इक्के-दुक्के हिमपर्वत ख़ामोश पहरेदारों जैसे दिखाई दे रहे थे। सारा वायुमंडल मौन धारण किये था। ऐसा लग रहा था कि प्रकृति अपनी कठोरतम चित्तवृत्ति में उत्तर की अमित शांति की रक्षा कर रही है।

"कैसी शांति है!" सूक्ष्मतम ध्वनि सुनने के प्रयास में लोस ने कहा।

कहीं से एक कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। फिर दूसरे कुत्तों ने उसका साथ दिया और शीघ्र ही बस्ती के सारे कुत्तों ने उदासी भरा समूह-गान आरंभ कर दिया। उस मर्मभेदी आवाज़ से लोस कांप उठा। यकायक यह सामूहिक भों-भों भंग हुई और कुत्तों के नेता की पतली सी करुण ध्वनि कहीं दूर से सुनाई दी। और फिर एक बार चारों ओर से कुत्तों का वैसा ही स्वर ज़ोर पकड़ने लगा।

गाड़ीवान ज़ोरों से चिल्लाते हुए बरफ़-गाड़ियों की ओर दौड़ः

"तगम ! तगम ! "*

कुत्ते बरफ़ से ढके किनारे की ओर सरपट दौड़ने लगे। अन्द्रेई और उसका गाड़ीवान पहली गाड़ी पर थे और दूसरी पर लोस और उसका गाड़ीवान। वे रोवेंदार खालों में लिपटे बैठे थे। अपने कंटोप उन्होंने बहुत नीचे खींच रखे थे। सिर्फ़ आंखों के लिए कुछ हिस्सा खुला था। अपनी ज़िंदगी उन्होंने अपने गाड़ीवानों के सिपुर्द कर दी थी।

लोस दौड़ती हुई बरफ़-गाड़ी के नीचे कुरकुराने वाली बरफ़ की आवाज़ सुनता हुआ सोच रहा था: "जब तक इस भयानक भूमि को बदल नहीं डालूंगा तब तक यहां से नहीं टलूंगा। फिर नताशा यहां मेरे साथ रहेगी। निःस्वार्थ युवक अन्द्रेई की तरह वह भी उत्साहपूर्वक काम करेगी।"

पथरीले किनारे पर कुत्ते चुपचाप तेज़ दौड़ रहे थे। हिमकणों से आवृत बरफ़ की समतल सतह पर बरफ़-गाड़ी बेरोक फिसलती जा रही थी। इधर सूखी हवा चली। कसकर पहने हुए कंटोप में से लोस को एक हल्की, थरथराती सी आवाज़ सुनाई दी।

"सुनो लोस!" गाड़ीवान चिल्लाया। "चट्टानें गा रही हैं।"

झुकी हुई चट्टान की हर टांड़ और छोटी-मोटी दरार से वायु के आघातों की प्रतिक्रिया के रूप में एक हल्की सी ध्वनि उत्पन्न होती थी जो एक गंभीर बहु-स्वर गुनगुनाहट में डूब जाती थी। यह थी अनंत चट्टानों की ध्वनि।

हवा चट्टानों के पास से प्रस्तर-कणों का पुंज दौड़ा रही थी और ये प्रस्तर-कण गूंजती हुई ध्वनि के साथ बरफ़ पर फैल रहे थे। प्रस्तर-कणों का यह तूफ़ान चेहरे को काट सा रहा था और आंखों को अंधी कर रहा था। बरफ़-गाड़ी के मार्ग पर चट्टान के पार्श्व से

* आगे बढ़ो।

टूटे हुए शिलाखंडों के टुकड़े फैले थे—यह थी अखंड हवाओं और लहरों की करतूत।

"देखो लोस, यह एक नया अन्तरीप है!" बातूनी गाड़ीवान ने कहा। "यहां एक चट्टान गिरी थी। उसकी आवाज़ लोरेन तक में सुनी गयी थी। वह बरफ़ के बीच धंस गयी थी। नतीजा यह हुआ कि घबड़ायी हुई अनगिनत मछलियां ऊपर उछल आयीं। आदमी उन्हें बरफ़-गाड़ियों पर लाद लादकर ले गये।"

हज़ारों टन वज़न वाली उस चट्टान की ओर लोस अचरज से ताकता रहा। वह सौंदर्य की एक अनूठी छटा प्रस्तुत कर रही थी। ऐसा लगता था कि किसी ने एक विशाल प्रस्तर-पुंज तराशकर चमकाया किन्तु उन्हें क़ायदे से सरियाया न हो।

सागर-तटवर्ती पहाड़ी पगडंडी पर एक शिकारी का यारंग खड़ा था। वह एकाकी दिखाई पड़ रहा था और देखने वाले के दिल में दुख का भाव पैदा करता था।

"यहां वह अकेला क्यों रहता है?" लोस ने पूछा।

"उसे यही पसंद है," गाड़ीवान ने जवाब दिया।

यारंग के दिखाई देते ही कुत्ते बगटुट आगे बढ़े। उन्होंने सोचा कि अब यात्रा समाप्त होगी। गाड़ीवानों ने उस अकेले यारंग के मालिक के साथ कुछ बातचीत की और फिर आगे बढ़े।

कुत्ते आगे न जाना चाहते थे। अपने मालिकों की ओर उन्होंने गिड़गिड़ाहट भरी नज़र से ताका। बेमन से कुछ दस एक क़दम चलने के बाद, मानो अपने नेता के छल-कपट को जानते हुए वे यकायक एक साथ पीछे मुड़ गये और ज़ोर से यारंग की ओर दौड़ने लगे। गाड़ीवान ने डंडे को बरफ़ में गहरा गाड़ दिया और कुत्तों को रोक लिया। गाड़ीवान ने गरजकर जैसे हुक्म देते हुए कुत्तों को इच्छित दिशा में घुमा लिया। कुत्ते उसका हुक्म तोड़ सके। जब उन्होंने

यह जाना कि उस रात को उन्हें वहां ठहरने न दिया जायेगा तो बेचारे आज्ञा मानकर दौड़ने लगे।

"लोस," गाड़ीवान ने कहा, "यारंग में रहने वाले आदमी ने बताया कि आगे की समुद्री राह ख़तरनाक है। दक्षिणी हवा ने हाल ही में बरफ़ तोड़कर किनारे से हटा दी है और अब केवल चट्टानों के पास से जाती हुई एक संकरी पगडंडी सी बच गयी है। पहाड़ियों से होती हुई दूसरी पगडंडी की हालत ठीक नहीं है। उसपर भारी बरफ़ पड़ी है। कुत्ते उसमें सिर तक धंस जायेंगे और उन्हें पेट के बल रेंगना पड़ेगा। तो क्या हम किनारे के रास्ते से चलें? तुम्हें तो जल्दी है, है न? बोलो, तुम्हारी क्या राय है?"

"तुम अच्छी तरह जानते हो... तुम्हीं तय कर लो..." और लोस ने मन ही मन सोचा : "भला इसे मैं क्या सलाह दे सकता हूं?"

"हम किनारे के रास्ते से जा रहे हैं!" गाड़ीवान ने आगे बढ़ने वाले अपने साथी को चिल्लाकर सूचना दी।

रीछ की तरह अपने बोझिल रोवेंदार कपड़ों में लिपटा हुआ लोस बरफ़-गाड़ी पर उकड़ूं बैठा था। इधर उधर गर्दन हिलाना भी उसके लिए मुश्किल था।

"जी हां," लोस सोच रहा था, "गाड़ीवानों के कपड़े हमारे कपड़ों से अधिक आरामदेह और वज़न में हल्के हैं और शायद ज़्यादा गरम भी। मुझे भी उनके जैसा एक सूट बनवाना चाहिए।" गाड़ीवानों की पोशाक थी एक छोटा, हल्का परका जिसमें एक कसा हुआ रोवेंदार पतलून जुड़ा था। पैरों में उन्होंने पहन रखे थे छोटे, क़ायदे के तोरबाज़। वे आसानी से हिलडुल सकते थे। संकट के समय बरफ़-गाड़ी से कूद पड़ने में उन्हें एक क्षण की भी देर न लगती।

पथरीले सागर-तट को ढांकने वाली सख़्त बरफ़ पर गाड़ी उछलती-कूदती दौड़ रही थी। लोस विस्फारित नेत्रों से आगे देख रहा था और यद्यपि वह बरफ़-गाड़ी के किनारों का सहारा लेता या गाड़ीवान को पकड़ लेता था फिर भी वह अपने को हचकोलों से बचा नहीं पा रहा था। गाड़ीवान बड़ी फुरती के साथ उछाल रहे थे – गाड़ी से बरफ़ पर और फिर बरफ़ से गाड़ी पर। जो सुस्ती उनके स्वभाव का एक अंग बन गयी थी उससे यह चुस्ती मेल नहीं खा रही थी। जबतब गाड़ी को समय पर एक ओर हटाने में गाड़ीवान चूक जाता और वह बरफ़ीले गड्ढे में फिसल पड़ती और फिर झटके के साथ रुक जाती।

कुत्ते एक साथ इधर उधर देख लेते और मानो निषेध भरे नेत्रों से लोस से कहते: "हट जाओ गाड़ी पर से!"

लोस शरमिंदा होकर लड़खड़ाता हुआ बड़ी मुश्किल से गाड़ी से उतर जाता जबकि गाड़ीवान बरफ़ के तूदों से गाड़ी बाहर निकाल लेता।

आखिर बरफ़ के तूदों का गोरखधंधा ख़त्म हो गया और बरफ़ में दरारें दिखाई देने लगीं जो चट्टानों से निकलकर उनके मार्ग पर से होती हुई सागर की ओर जाती थीं।

काला और गंदला सागर बहुत ही समीप था। यह बात बड़ी ख़तरनाक थी। कुत्तों का एक एक जोड़ा कूदकर दरारों को लांघ जाता, लंबी बरफ़-गाड़ी जलमय दरारों पर से फिसलती जाती और उनपर एक लटकती पुलिया सी बन जाती।

चट्टान की चोटियों पर से दक्षिणी हवा बह रही थी लेकिन उधर नीचे की ओर वह गर्त्त में चक्कर खाती थी और उत्तर की ओर से उसके भयंकर झोंके चलते थे। ये भंवर सागर तक चले जाते और उसमें कंपन पैदा कर देते। ऊपर से जब बरफ़-गाड़ियां चली

जातीं तो कराहती सी बरफ़ के नीचे से लहर का प्रत्युत्तर सा मिलता सुनाई देता।

किंतु लोस शांत था। उसे अपने गाड़ीवान पर पूरा विश्वास था। वाक़ई उसे इस विषय में कुछ कहता ही नहीं था।

शीघ्र ही संकट स्थल पीछे छूट गये। कुत्ते तेज़ दौड़ते हुए एक विस्तृत क्षेत्र में आ पहुंचे और गाड़ीवानों ने गाड़ियां रोक लीं, अपनी चिलमें जला लीं और पार किये गये संकटों के बारे में हंसी-मज़ाक़ करते रहे।

"वाह, कैसा मज़ा है यहां! अन्द्रेई, इन विशाल खुले मैदानों को देखो तो!"

"हां, निकीता सेर्गेयेविच, मैं देखता हूं कि तुम्हें भी इस प्रदेश से प्यार हो रहा है। अरे, तुम्हारी बरफ़ से सफ़ेद दाढ़ी तक ने यहां की भूमि का रंग चढ़ा लिया है!" अन्द्रेई ने हंसकर कहा।

प्रभात का मंद प्रकाश मध्याह्न के समय भी दिखाई दिया।

"अन्द्रेई, उन्हें साथ साथ पहली बरफ़-गाड़ी पर जाने दो और हम दोनों उनके पीछे पीछे चलेंगे। मैं भी एक बार बरफ़-गाड़ी चलाकर देख लूं," लोस ने कहा।

गाड़ीवानों ने फ़ौरन यह सुझाव मान लिया—अपनी भूमि के सुदूर उत्तरी हिस्से में जिन रूसियों को वे ले जा रहे थे उनके बारे में बातचीत करने के लिए दोनों जने तरस रहे थे।

रास्ता अच्छा था। लोस को हैरानी हुई कि उसकी ओर से ज़रा भी दख़ल दिये बिना कुत्ते दौड़ते जा रहे थे। उसे टिटकारी तक देने की ज़रूरत न पड़ी।

"निकीता सेर्गेयेविच, हम क्यों न फ़ौरन क़बीला सोवियतों का संगठन आरंभ करें?"

"प्यारे दोस्त, इसलिए कि तुम इस अच्छी पुरानी कहावत पर ध्यान नहीं देते कि 'पहले देख लो और फिर कूद पड़ो'।"

"लेकिन निकीता सेर्गेयेविच, हमारा यह चुकोत्स्क प्रदेश इतना विशाल है कि उसे देख लेने में ही पांच साल बीत जायेंगे और फिर कूद पड़ने का मौक़ा ही नहीं मिलेगा।"

"नहीं, साथी जुकोव, तुम ग़लती कर रहे हो। कूदने का काम हम शुरू करेंगे लौटते समय, उससे पहले नहीं। देखो, मुख्य बात यह है कि हम उनके पास आ गये और उनसे परिचित हुए। अब उन्हें हमारे बारे में सोचने-विचारने और बातचीत करने का मौक़ा देना चाहिए। और जानते हो, वे ज़रूर कई बातों पर बोलना चाहते हैं। क्या तुम्हारा ख्याल है कि वह मूल्य-सूची सिर्फ़ मज़ाक़ थी? जी नहीं, वह भी एक क्रांतिकारी क़दम था। इस मूल्य-सूची के कारण धोखेबाज़ मकड़े थामसन को, चालबाज़ साइमन्स को, नीच अलितेत को और ऐसे ही कई अन्य लोगों को अच्छा-खासा तमाचा रसीद होगा। हमने शिकारियों को दिखा दिया कि उनके पास वाली रोवेंदार खालों की क्या क़ीमत होती है। सचाई को समझते उन्हें देर नहीं लगेगी। तुम बिल्कुल फ़िक्र न करो!"

कुत्ते ठीक से दौड़ते रहे। लोस को अब पूरा विश्वास हो चुका कि उन्हें उसके मार्गदर्शन की कोई आवश्यकता नहीं है। तब उसने उनकी ओर ध्यान देना छोड़ दिया।

"निकीता सेर्गेयेविच, तुमने याराक पर ध्यान दिया? बड़ा दिलचस्प लड़का है। आरंभ में वह मेरा उतना विश्वास नहीं करता था। आये से उसने कहा कि 'सभी गोरे लोग एक ही थैली के चट्टेबट्टे होते हैं।' लेकिन फिर वह एकदम बदल गया। उसने मुझे अपना धूप का चश्मा तक दे डाला। पिछले साल जाड़ों में उसके साथ मेरी काफ़ी लंबी बातचीत हुई थी। वह थामसन

के यहां मज़दूरी करता था। और थामसन की बेटी मेरी—जो एक सच्ची चुकची लड़की है—उसपर अपना दिल निछावर कर चुकी थी। जब थामसन को इस बात का पता चला तो उसने याराक को घर से बाहर निकाल दिया। मैंने याराक को सोवियत क़ानून की जानकारी करायी और एक दिन वह मेरी के साथ अपना ब्याह रजिस्टर कराने के लिए आ पहुंचा। नाज़ुक छरहरे बदन की ख़ूबसूरत लड़की है मेरी! सचमुच, तुम जानते हो . . ." अन्द्रेई के हाव-भाव से उसकी बात और भी स्पष्ट हो गयी।

"अच्छा," लोस ने बड़ी दिलचस्पी के साथ कहा।

"लेकिन तुम जानते हो कि मेरे पास न प्रमाण-पत्र का फ़ार्म है और न कोई मुहर ही। और विवाह रजिस्टर करने का तरीक़ा भी मैं नहीं जानता।"

"तो फिर क्या हुआ?"

"कुछ भी नहीं। रजिस्ट्रेशन कराये बिना ही दोनों वापस चले गये।"

लोस ने एक झटका देकर गाड़ी रोक ली, उससे कूद पड़ा और चिल्लाया:

"अन्द्रेई, तुम अक़्ल के मोटे हो! बड़े मोटे! अरे, ज़रूरत क्या थी फ़ार्म-वार्म की! उन फ़ार्मों को पाने में पांच साल लग जायेंगे! इधर सामाजिक रस्म-रिवाज की क्रांति सीधे तुम्हारी जेब में आ टपकी है और तुम होहल्ला मचा रहे हो फ़ार्मों के बारे में!" यह कहते समय ओसकणों से ढंकी लोस की दाढ़ी क्रोध के कारण फड़क रही थी।

"अच्छा भई, अब अधिक न कोसो। हम मामला संभाल लेंगे। वापसी पर हम सब कुछ ठीक करेंगे," अन्द्रेई ने कहा।

"उन्हें मेरे पास आने दो। देखो, मैं कैसे काम निकालता हूं। बस, दिमाग़ होना चाहिए, और क्या!"

आगे दौड़ने वाली बरफ़-गाड़ी आंखों से ओझल हो चुकी थी। लोस ने कुत्तों को टिटकारी दी और वे हवा से बातें करने लगे।

"और एनमकाई बस्ती के किसी दूसरे लड़के के बारे में तुम मुझसे कुछ कह रहे थे। क्या नाम है उसका?"

"वामचो।"

"हां, हां, वामचो। और यही वह बस्ती है जहां अलितेत रहता है, है न? वहां पहुंचने पर हम अलितेत के यहां ठहरेंगे। देखूं, कैसा तीसमार-ख़ां है यह अलितेत।"

"अब देखो, तुम ग़लती कर रहे हो!" अन्द्रेई ने कहा।

"क्यों?"

"हमें अलितेत का संग-साथ नहीं करना चाहिए। उल्टे उसे झिड़कना और वामचो की इज़्ज़त करना चाहिए। माना कि वामचो के पास छोटा और गंदा यारंग हैं, तो इससे क्या हुआ?"

"हां, तुमने ठीक कहा। मतलब यह कि हम दोनों बराबर के हैं!" लोस ने मुस्कराते हुए कहा और अपने मित्र को बग़ल में गुदगुदाने लगा।

हवा का रुख़ बदल गया। अब वह उत्तर की ओर से और ज़मीन से सटकर चलने लगी। रात हो गयी।

आगे की बरफ़-गाड़ी रुक गयी। एक गाड़ीवान ने रूसियों के पास आकर कहा:

"अन्द्रेई, आप वापस अपनी गाड़ी पर जाइये। क्योंकि ख़तरनाक बरफ़ीली आंधी उठने के आसार दिखाई दे रहे हैं। देखिये चांद ने सफ़ेद क़मीज़ पहन ली है। यह गाड़ी अब मुझी को चलानी चाहिए।"

लोस अपनी गाड़ी पर बैठा और विचारमग्न हो गया।

बरफ़ के तूदों के एक अलंघ्य पुंज ने उनका मार्ग रोक लिया और गाड़ीवानों ने कुत्तों को घुमाकर गाड़ी पहाड़ियों की ओर दौड़ायी।

बरफ़ीला तूफ़ान उठने लगा।

अनगिनत हिमकण हवा में चक्कर काटते रहे जिनसे एक मोटा कफ़न सा तैयार हो गया। आवर्तों भरे और गरजते हुए इस प्रचंड हिमसागर के कारण लोस को सामने कुछ भी दिखाई न दे रहा था – न आगे वाली गाड़ी और न अपनी गाड़ी के कुत्ते ही। "समझे लोस, ऐसा लगता है कि अब तुम पहली बार उत्तर का असली मज़ा चखोगे," अपना कनटोप चेहरे पर नीचे खींचते हुए उसने सोचा।

"ओह, आदमी को यहां होशियार रहना चाहिए। शायद मौत से भी मुक़ाबला हो जाये!" गाड़ीवान ने चिल्लाकर कहा। "संभलो, यहां काफ़ी बड़ी बड़ी चट्टानें हैं!"

बरफ़ीले तूफ़ान ने चट्टानों के किनारे पर लटकते हुए बरफ़ के तूदों के ढेर पर ढेर लगा दिये और यदि कोई इन ख़तरनाक टांड़ों पर असावधानी से बरफ़-गाड़ी चलाता तो वह मौत ही का कौर बन जाता। कभी कभी ऐसी वारदातें हो चुकी थीं कि आदमी और कुत्ते बरफ़ीले तूफ़ान में भटककर इन करारों से टकराकर मौत के मुंह में चले गये थे और खिसकती हुई हिम-शिलाओं के बीच दब गये थे।

गाड़ीवानों ने दोनों गाड़ियां एक-दूसरी से बांध दीं और अब वे एक क़तार में धीरे धीरे, संभल संभलकर आगे बढ़े। जबतब रुककर वे आपस में सलाह-मशविरा कर लेते थे।

घुप्प अंधेरे में कुत्ते टटोलते-लड़खड़ाते ठोकरें खा रहे थे। गाड़ीवानों ने उन्हें हवा में मोड़ दिया। उन्होंने सोचा कि उस ओर रास्ता होगा। एक गाड़ीवान आगे चल रहा था। उसके हाथ में रस्सी में बंधा हुआ डंडा था, जिसे वह बार बार फेंकता जा रहा

था। अगर रस्सी फिसलने लगती तो फ़ौरन चेतावनी की आवाज़ आती: "रुक जाओ!" इसका मतलब था कि यहां बरफ़ की चट्टान है। फिर दोनों गाड़ीवान गाड़ियों को पीछे छोड़कर रास्ते की खोज में चले गये।

गाड़ीवान देर तक न लौटे। कुत्तों पर हिमकणों की वर्षा हो रही थी। वे गेंडुली मारकर सो गये थे।

लोस बार बार अपनी घड़ी देखता रहा।

"आधा घंटा हो गया," उसने कहा।

"कुछ फ़िक्र न करो, वे लौट आयेंगे!" अन्द्रेई ने विश्वास के स्वर में कहा। असल में उसे भरोसा नहीं था कि क्या होगा।

"साइमन्स की दी हुई यह घड़ी बरफ़ीले तूफ़ान में बड़ी सुविधाजनक चीज़ है। डायल इसका चमकदार है—भेड़िये की आंख जैसा। और क़ीमत सिर्फ़ एक डॉलर। ग़रीबों की घड़ी है यह। हां, एक साल से ज़्यादा काम न देगी। ये अमरीकी बड़े चालाक होते हैं!" लोस ने कहा।

गाड़ीवानों के इंतज़ार में गाड़ी पर बैठे बैठे जैसे समय उनसे काटे न कट रहा था।

"उन्हें गये काफ़ी देर हो चुकी है," अन्द्रेई ने कुछ चिंता के स्वर में कहा।

"शायद वे भटक गये हैं।"

"हो सकता है!" अन्द्रेई ने गाड़ी पर खड़ा होकर आवाज़ दी: "ए-हे ऽऽऽ! ए-हे ऽ हे ऽऽऽ!"

लेकिन उसकी आवाज़ तूफ़ान ने दूर उड़ा दी।

"आओ निकीता सेर्गेयेविच, हम दोनों एक साथ आवाज़ दें!"

"अच्छा यह होगा कि हम हवा में बंदूक़ की एक गोली चला दें। यहां मेरे गाड़ीवान की विंचेस्टर बंदूक़ पड़ी हुई है।"

लोस ने वह टूटी-फूटी पुरानी बंदूक़ उठायी। बंदूक़ के हिस्से टूटकर अलग अलग न हो जायें इसलिए उसमें जगह जगह पर वालरस के चमड़े के तस्मे बंधे हुए थे। लोस गोली दागने की कोशिश कर रहा था लेकिन वह किसी तरह भी काम न दे रही थी।

"यह बंदूक़ शायद सौ साल पुरानी है। इसको चलाने के लिए उसका रहस्य जान लेना ज़रूरी है... देखो, तुम्हारी सलाह मानने का यह नतीजा है। ओह! मैं अपना पिस्तौल क्यों नहीं ले आया?"

"निकीता सेर्गेयेविच, जब कोई आदमी हाथ में पिस्तौल लिये घूमता है तो यहां के लोगों को अच्छा नहीं लगता। वे समझते हैं कि हां भई, यह बंदूक़ तो जानवरों के शिकार के लिए है, लेकिन भला यह छोटी बंदूक़ किस लिए? आदमियों को मार डालने के लिए ही तो?"

"पागल हो तुम! अब देखो, यहां वही पिस्तौल काम नहीं आता? ख़ैर, यह बताओ कि अगर वे हमसे भटक गये हों तो क्या करना चाहिए?"

"तूफ़ान ख़त्म होने तक यहीं बैठना चाहिए।"

"और यदि वह पांच दिन तक चलता रहे तो?"

"दस दिन तक भी क्यों न चले—इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता!"

इसी क्षण अंधेरे में यकायक आवाज़ सुनाई दी।

"मिल गया, रास्ता मिल गया! देखो, इस ओर है!"

गाड़ीवान बरफ़-गाड़ियों की ओर दौड़े।

"कौन गदहा कहता है कि यहां रास्ता है?" लोस ने चिल्लाकर पूछा। फिर भी उसकी ख़ुशी का ठिकाना न था।

गाड़ीवानों ने कुत्तों को बरफ़ के नीचे से खींच निकाला। कुत्तों ने अपने बदन झटकारे और फिर बरफ़-गाड़ियां एक ढालू राह पर सरपट दौड़ने लगीं।

"लोस!" गाड़ीवान ने ख़ुशी से चिल्लाकर कहा। "यह है 'व्हेल-जबड़ा' घाटी। और नीचे की ओर है एनमकाई बस्ती।"

बारहवां अध्याय

लोस किसी तरह वृद्ध वाल के छोटे से यारंग में रेंगकर चला गया। पोलोग में फैले हुए उसके शरीर की लंबाई पोलोग की लंबाई से बीस पड़ रही थी।

अतिथि के इस अचानक आगमन से युवती घरनी अलेक हड़बड़ा तो गयी लेकिन चाय बनाना नहीं भूली। कुदककर उसने लोस को लांघा और देग़ची में बरफ़ के टुकड़े भर दिये।

रूसी सरदार के बारे में सारे तट-प्रदेश में कई जनश्रुतियां फैली हुई थीं और यह विश्वास करना कठिन लग रहा था कि अब वह यहां, इसी यारंग में लेटा हुआ है। क्या कभी कोई सपने में भी सोच सकता था कि ऐसा गण्य-मान्य व्यक्ति ठहरने के और सभी स्थानों को छोड़कर वाल के यारंग को ही चुनेगा! बात बड़ी अजीब थी। क्योंकि आज तक किसी भी तांग ने इस यारंग में क़दम न रखा था। आखिर इस बात का मतलब क्या था? यह हंसी-मज़ाक़ तो था नहीं? या केवल बरफ़ीले तूफ़ान से बचने के लिए ही उसने इस यारंग का सहारा लिया था?

अलेक और बूढ़े वाल दोनों के मन में इन विचारों का द्वंद्व चलता रहा। पसोपेश में पड़ा हुआ वह कमरे में चहलक़दमी करता रहा। फिर रेंगकर बाहर छोटे से गलियारे में गया और एक खाल

लिये वापस चला आया। उसने खाल रोशनी में पकड़कर बारहसिंगे की एक पसली से झाड़ी और लोस की ओर मुड़कर बोला:

"ज़रा उठना, यह खाल आपके नीचे बिछा दूं। यह ज़्यादा मुलायम है।"

लेकिन बूढ़े की बात लोस समझ न पाया। अपने हस्तलिखित शब्दकोष में वह ढूंढ़ता रहा लेकिन दुर्भाग्य से उस प्रसंग के अनुकूल कोई शब्द उसे नहीं मिला। तब बूढ़े वाल ने इशारों से समझाना शुरू किया।

"ओ-हो! समझ गया, समझ गया!" लोस ने मुस्कराते हुए कहा और ज़रा एक करवट हो लिया।

वाल ने झट से खाल नीचे सरका दी।

अन्द्रेई अंदर आया और बेहिचक लोस के पास लेट गया।

अन्द्रेई के आ जाने के बाद भी बूढ़े वाल की उलझन कम न हुई। वह इधर उधर करता रहा और सोचता रहा कि मेहमानों के ज़्यादा आराम के लिए क्या किया जाये।

"बैठिये बूढ़े बाबा! कुछ बातचीत करें," लोस ने कहा।

अन्द्रेई ने दुभाषिये का काम शुरू किया।

लेकिन जब मन चक्कर में पड़ा हुआ हो तो कैसे कोई कुछ कह भी सकता है! कौन समझ सकता था कि दढ़ियल रूसी सरदार आख़िर बूढ़े वाल के यारंग में ही क्यों ठहरा? पास ही तो अलितेत का यारंग था—टुंड्रा जैसा विशाल और इतना सुप्रकाशित मानो सीधे सूरज के नीचे खड़ा हो। अलावा इसके, वहां सोने के लिए अच्छी खालों का अंबार लगा था और खाद्य-पदार्थों का समृद्ध भंडार। ये रूसी लोग वाल को कहीं ख़तरे में तो नहीं डालना चाहते?

चेहरे पर अपनी अस्थिर-चित्तता की ज़रा सी भी निशानी न दिखाते हुए बूढ़े ने कनखियों से रूसी मेहमानों को देखा और जब

लोस से आंखें चार हुईं तो उसने सोचा : "अरे, इसकी आंखें तो बारहसिंगे की तरह करुणाभरी हैं—ये भेड़िये की आंखों जैसी नहीं हैं।"

बूढ़े का डर कुछ हद तक कम हुआ और वह अपनी चिलम साफ़ करने लगा।

"बूढ़े बाबा ज़रा इस तंबाकू का मज़ा लीजिये!" 'प्रिन्स अल्बर्ट' तंबाकू का डिब्बा बढ़ाते हुए लोस ने कहा।

बूढ़े ने ज़रा सा मुस्कराते हुए कनखियों से पहले अलेक की ओर और फिर मेहमानों की ओर देखा और कुछ झिझकते हुए तंबाकू के डिब्बे के लिए हाथ बढ़ाया। अपनी चिलम सुलगाकर वह चिल्लाया:

"अलेक, देखा तुमने वाल आज कैसी तंबाकू पी रहा है? अरे हां! यह है मेरे बेटे वामचो की बहू," चिलम से अलेक की ओर संकेत करते हुए उसने कहा। "वामचो गया है पड़ोसियों के यहां। वह अभी लौट आयेगा।"

वाल कुछ देर रुका और फिर अन्द्रेई की ओर मुड़कर उसने दबी आवाज़ में पूछा :

"रूसी सरदार कहीं ग़लती से तो मेरे यारंग में नहीं आया? आप जानते ही हैं कि अलितेत का यारंग यहां से नज़दीक है, बिल्कुल नज़दीक।"

"हां, हम जानते हैं," अन्द्रेई ने उत्तर दिया। "लेकिन सरदार ने कहा कि 'हम उस यारंग में ठहरेंगे जहां अच्छे लोग रहते हैं। मैंने सुना है कि बूढ़ा वाल एक अच्छा आदमी है। बस उसी के यहां हम जायेंगे।' हां, सरदार ने ऐसा ही कहा।"

बूढ़े ने गर्दन हिलाकर हामी भरी। बात सही थी। बूढ़ा वाल खुद अपनी क़ीमत जानता था। वह लोस के पास सरक गया और कृतज्ञता से उसका हाथ पकड़कर हिलाने लगा।

"अलेक, हमारे मेहमान सर्दी में लंबा सफ़र करके आये हैं। चलो, पहले उन्हें गरमागरम चाय पिलाओ," उसने आनंद से गूंजती हुई आवाज़ में कहा।

अलेक ने छोटी सी मेज़ रख दी और प्याले निकाल लिय।

"अलेक, प्याले शायद तुम्हारे पास काफ़ी नहीं हैं। वैसे सभी यारंगों में प्यालों की कमी है। इसी लिए हम हमेशा अपने साथ अपने प्याले रखते हैं," मेज़ पर दो मग रखते हुए अन्द्रेई ने कहा।

इसी वक़्त वामचो यारंग में आ पहुंचा। पाले के कारण उसका चेहरा लाल पड़ गया था।

"ओहो! यह है हमारा पुराना दोस्त!" अपना हाथ बढ़ाते हुए अन्द्रेई चिल्लाया। "भई, कितने दिन बाद हम मिल रहे हैं? शायद मुझे तुम भूल भी गये होगे!"

"जी नहीं," वामचो ने रुखाई के साथ कहा।

मेहमानों को देखकर उसे उतना ही आश्चर्य हुआ जितना बूढ़े वाल को हुआ था। लेकिन अन्द्रेई के साथ हुई प्रथम भेंट की स्मृति से वह प्रसन्न हो उठा। उसके मन में यह विचार भी चमक उठा: "कहीं मज़ाक़ के लिए तो ये लोग मेरे यहां नहीं आये? गत समय भी वह चार्ली लाल-नकुए के यहां नहीं रहना चाहता था।"

"वामचो, अच्छे मेहमान हैं ये, बहुत ही अच्छे।" बेटे को परेशान देखकर बूढ़े ने उसे शीघ्र ही आश्वस्त कर दिया।

"कहो वामचो, शिकार का क्या हाल है?" लोस ने नोटबुक में देखकर पूछा।

इस अनपेक्षित सवाल से वामचो चौंक उठा। उसके चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गयी। लोस का चुकची उच्चारण बड़ा मनोरंजक था।

"यह है लोस... हमारा सरदार," अन्द्रेई ने स्पष्ट किया।

"कुछ शिकार तो चल रहा है। कुछ छोटे सील मिल जाते हैं कभी कभी," वामचो ने जवाब दिया।

"कितनी सफ़ेद लोमड़ियां पकड़ीं तुमने?"

"चार! अच्छी लोमड़ियां हैं! यदि मैं इन्हें उस नये अमरीकी के पास ले जाऊं तो मुझे इनके एवज़ में काफ़ी माल मिलेगा। कहते हैं कि वह अच्छा सौदा करता है।"

"अन्द्रेई, उससे पूछो कि उसने अभी तक ये खालें क्यों नहीं बेचीं?"

अन्द्रेई के पूछने पर वामचो ने सिर हिलाया।

"ये मेरी नहीं हैं," उसने कहना शुरू किया। "ये अलितेत के फंदों में पकड़ी गयी हैं। अलितेत ने ये फंदे मुझे मुफ़्त में दिये थे और मुझे उससे उधार माल लेना पड़ा था। मुझे अलितेत को तीन खालें देनी हैं।"

रूसी सरदार का चेहरा स्याह हो गया। बूढ़ा वाल व्याकुल हो उठा।

इसी क्षण खुद अलितेत ही यारंग में आ धमका।

"नमस्ते, रूस्की सरदार! आख़िर रूस्की सरदार इस छोटे से पोलोग में क्यों पड़े हैं? छोटा पोलोग ख़राब... बड़ा पोलोग अच्छा... मेरे यारंग में आपके लिए एक ख़ास कमरा है," बीच बीच में रूसी शब्द बिखेरते हुए अलितेत ने कहा।

बूढ़े वाल को अलितेत की बातें सुनकर बड़ा संताप हुआ। वह डरा कि रूसी मेहमान अब उसके यारंग से चले जायेंगे।

"मेरा यारंग अच्छा है, काफ़ी बड़ा है," अलितेत आगे कहता गया। "नमकीन रूस्की झोल। बारहसिंगे के बच्चे का गोश्त, काफ़ी ढेर। कितना ज़ायक़ेदार खाना!"

"नहीं, हम वाल के यहां ठहरे हैं और यहीं ठहरेंगे भी," अन्द्रेई ने निश्चयपूर्वक कहा।

"अरे, मेरे कान क्या सुन रहे हैं?" वाल ने सोचा। उसका मनमयूर नाच उठा। "इसका मतलब यह है कि ये रूसी लोग वाल को सचमुच अच्छा आदमी मानते हैं।" उसने वामचो की ओर देखा। वामचो को भी ऐसा लगा कि उसके मन पर से कोई भारी बोझ उतर गया हो।

लोस अलितेत की हर हरकत बारीकी से देखता रहा, उसका हर शब्द ग़ौर से सुनता रहा और बराबर उसकी थाह लेता रहा। अलितेत और उसकी करतूतों के बारे में वह काफ़ी सुन चुका था। अब उसकी पैनी आंखें देखकर और मीठी मीठी, चापलूसी भरी बातें सुनकर उसके क्रोध का पारा चढ़ने लगा था।

"क्या कहता है वह?" लोस ने पूछा।

अन्द्रेई ने अलितेत की बातों का अनुवाद करके सुनाया। लोस झट से उठ बैठा और कठोर स्वर में बोला:

"उससे कह दो कि रूसी सरदार ईमानदार लोगों के यहां रहना चाहता है, उन चोरों के यहां नहीं जो दूसरों के फंदों से लोमड़ियों को उठा ले जाते हैं!"

इसका अनुवाद सुनते ही बूढ़ा वाल एकदम दंग रह गया। "अरे, यह बात रूसी सरदार को कहां से मालूम हुई?"

"रूस्की सरदार ग़ुस्सावर सरदार है। हमारे लोग मीठी बात पसंद करते हैं। मेरिकन हमेशा मीठी बात करता है," अलितेत न उत्तर दिया।

"उस चुंगीचोर अमरीकी स्कूनर के साथ तुम्हारे सौदे के बारे में मैं कल तुमसे बात करूंगा। इस तरह का व्यापार भी चोरी ही है। समझे कि नहीं?"

अलितेत की आंखें व्याकुल होकर इधर उधर देखती रहीं।

वह कुछ कहने ही जा रहा था कि यकायक लोस कठोर स्वर में चिल्ला उठा:

"कांतो!"

इस शब्द ने जादू कर दिया। अलितेत फ़ौरन ग़ायब हो गया।

"चलो, एक शब्द का तो अच्छा उपयोग हुआ!" लोस ने मुस्कराकर कहा। "अन्द्रेई, यह शब्द मुझे ठीक याद है!"

वाल फुसफुसाया:

"अब अलितेत वाल के यारंग वालों की कोई मदद न करेगा। अपने फंदे भी वह उठा ले जायेगा।"

"कुछ परवाह नहीं! सोवियत सरकार आपकी मदद करेगी। मैं आपकी मदद करूंगा।"

"हमें अलितेत की मदद नहीं चाहिए!" वामचो ने क्रोधपूर्वक कहा।

"वामचो, ठीक कहा तुमने! मैं तुम्हें यहां की क़बीला सोवियत का मुखिया मुक़र्रर करता हूं और तुम्हीं इस बस्ती के सरदार भी बनोगे।"

उस रात को वाल के यारंग में वे देर तक क़बीला सोवियत, उसका अर्थ और उसके कार्यों के बारे में बातचीत करते रहे।

अलितेत अपने यारंग में खाना खाते हुए रूसी सरदार पर गालियों की बौछार कर रहा था। तीग्रेना बैठी हुई सुन रही थी और उसे मन ही मन ख़ुशी हो रही थी कि आख़िर कुछ तांग अलितेत को पसंद न करने वाले भी हैं। वह यह देखने को बड़ी उत्सुक थी कि ये कौन लोग हैं। अमरीकी खाना अछूता रह गया और अलितेत ने उसे कुत्तों के आगे फेंक दिया।

अलितेत जब अत्तेनेउत के पोलोग में गया तब तीग्रेना की उत्सुकता जैसे सीमा पार कर गयी। उत्तेजना के कारण उसे बुख़ार सा चढ़ गया। पोलोग से बाहर अपना सिर निकालकर लेटी हुई वह अंधेरे गलियारे में आंखें फाड़ फाड़कर देखती रही। उसके जलते चेहरे और नंगे कंधों को सर्द हवा से ठंडक मिल रही थी और वह उस हवा का मज़ा ले रही थी। आख़िर मन में निश्चय करके वह अपना परका पहिनकर बाहर चली गयी और वामचो के यारंग की ओर दौड़ पड़ी।

खाल के परदे के नीचे से तीग्रेना ने चुपचाप अपना सिर अंदर घुसेड़ दिया।

"आओ तीग्रेना, अंदर आओ," उसे देख खुश होकर बूढ़ा वाल चिल्लाया।

"जी नहीं, मुझे उल्टे पांव लौट जाना चाहिए—मैं सिर्फ़ एक नज़र देखने आयी थी," रूसी युवक तथा दढ़ियल सरदार पर निगाह डालते हुए उसने कहा।

वह उनकी बात सुनना चाहती थी, लेकिन उसके आते ही वे चुप हो गये थे।

"कोई हर्ज नहीं, कल अलेक से मैं सब कुछ सुन लूंगी," तीग्रेना ने सोचा और वहां से चल दी।

"यह थी अलितेत की बीवी। बड़ी भली औरत है," वाल ने कहा।

"अलितेत ज़बरदस्ती उसे ब्याह लाया। वह उसके घर से भाग भी गयी थी लेकिन वह फिर उसे खींच लाया," वामचो ने कहा।

"निकीता सेर्गेयेविच, हमें तीग्रेना को अपनी रक्षा में लेना चाहिए," जुकोव बोला।

"जरूर अन्द्रेई," लोस ने उत्तर दिया।

तेरहवां अध्याय

तट-प्रदेश के लंबे मुआयना-दौरे के समय क्रांति-समिति के ये कार्यकर्ता असली बिछौने का स्पर्श और बरफ़ के बजाय पानी से नहाने-धोने का आनंद भूल गये थे। उनके शरीर पानी के लिए तरस रहे थे।

लोस एक बालटी में बरफ़ भरकर ले आया और चूल्हे पर उसे पिघला लिया। फिर वह बच्चों के नहाने का एक टब खींच लाया जिसे वह एक व्यापार-केंद्र से ले आया था। यात्रा के समय अन्द्रेई को यह टब देखकर कुछ कौतूहल हुआ था और उसने एक बार पूछा भी था :

"क्यों भई, यह चीज़ क्यों घसीटे लिये जा रहे हो? हमारे कोई बच्चे तो हैं नहीं, फिर?"

"यह मेरा रहस्य है," लोस ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया था।

अब, टब को एक तिपाई के पास रखकर लोस ने कहा :

"हमारी आज की हालत में स्नान एक समस्या अवश्य है किंतु वह असंभव नहीं है। प्यारे दोस्त, बस, दिमाग़ होना चाहिए, दिमाग़! तुम्हें आश्चर्य हो रहा था कि मैं इस टब को पांच सौ किलोमीटर से क्यों घसीटता ले आ रहा था। मेरे भाई, यही टब हमें मोरी का काम देगा और हम नहा लेंगे इस तिपाई पर। दुर्भाग्य से यहां आसपास कोई बर्च का पेड़ भी नहीं, वरना मैं शरीर रगड़ने की झाड़ू बनाकर असली रूसी वाष्प-स्नान का मज़ा लेता।"

क्रांति-समिति की कुटिया में काफ़ी गरमाहट थी। लोस ने कपड़े उतारे और जांघें ठोंककर बोला :

"कल्पनाशक्ति को ज़रा और आगे बढ़ाया कि बस, हम सचमुच ग़ुसलख़ाने का मज़ा ले सकेंगे। यह देखो!"

उसने टब में कुछ पानी डाल दिया, उसमें खड़ा रहा और तिपाई के नीचे अपना सिर धोने लगा। संतुष्ट होकर वह वालरस की तरह कुछ गुर्राने लगा।

"ओह! कैसा मज़ा आ रहा है... आओ, कपड़े उतार दो! तुम्हारे लिए भी मैंने कुछ पानी गरम किया है, पूरी बालटी भर... अरे, यह तो रीछ के नहाने के लिए भी काफ़ी है।"

अन्द्रेई 'ग़ुसलख़ाने' में चला गया।

मध्यरात्रि का समय था किंतु श्वेत रात्रि की प्रकाशधारा छोटी सी खिड़की में से अविरत बहकर निद्रा को भगाये दे रही थी। स्नान से विश्रांत होकर दोनों अपने बिछौनों पर आराम से लेट गये। छोटी छोटी बातों से भी आदमी अपने को कितना सुखी बना सकता है! इस एक बालटी पानी की ही करामात देखिये न!

"निकीता सेर्गेयेविच, मैं कहना भूल गया। अलितेत से हमने जब उसके ग़ैरक़ानूनी व्यापार के बारे में बातें कीं तो उसके बाद तीग्रेना दरवाज़े तक मेरे पीछे आयी और बोली: 'अलितेत बुरा आदमी है।'"

"हां, मैंने उस लड़की को देखा था। मुझे वह बड़ी भली लगी। वामचो जब क्रांति-समिति के कार्यालय में आयेगा तो हम उसे समझायेंगे। हम तीग्रेना को बुला लेंगे और उससे बातचीत करेंगे। मिस्टर जुकोव, अब ज़रा 'कैप्स्टन' का मज़ा भी लिया जाये।"

"बहुत अच्छा मिस्टर लोस, बहुत अच्छा, बड़े लाट साहब!"

अमरीकियों की याद आते ही दोनों हंस पड़े और उन्होंने पाइपें सुलगा लीं।

"हम यहां अध्यापकों को बुला लेंगे और डाक्टरों को भी," भविष्यत् के सपने बुनते हुए लोस ने कहा। "व्यापार-केंद्रों में हम अपने ही लोग रखेंगे और तभी जाकर हमारा काम ठीक से शुरू होगा। अमरीकी व्यापार-केंद्र जब तक चलते हैं, चलते रहें; लेकिन इनकी दृष्टि

है केवल व्यापार पर। हम तो चाहते हैं कि व्यापार-केंद्र केवल तंबाकू देकर रोवेंदार खालें ख़रीदने वाली दूकानें न हों बल्कि वे सांस्कृतिक केंद्रों का भी काम करें और लोगों को शिक्षित करें। इन अमरीकी व्यापार-केंद्रों से छुट्टी पाकर हमें अपने व्यापार-केंद्र स्थापित करने चाहिए।"

"लेकिन नॉर्थ कंपनी के साथ तो तीन साल का इक़रार हुआ है!"

लोस तकिये के सहारे कुछ ऊपर उठा और गुर्राया :

"और फिर स्कूली मकानों और अस्पतालों का क्या हुआ? नॉर्थ कंपनी ने अब तक इसके बारे में कुछ किया है? बोलो!"

"लेकिन निकीता सेर्गेयेविच, इस मामले में हम कुछ कह नहीं सकते। क्योंकि कंपनी के साथ सारा व्यवहार चलता है नारकोमव्नेश्तोर्ग * द्वारा।"

"तो भी क्या हुआ? आख़िर हम लोग यहां किस लिए हैं? हम घास-फूस के पुतले थोड़े ही हैं। हां, मैं इन अमरीकियों को कल ही गठरी बांधकर नहीं भेज रहा हूं... लेकिन मैं इस बारे में सवाल ज़रूर उठा सकता हूं। ठीक है न? गुबेर्निया क्रांति-समिति के पास विवरण भेजने और वस्तुस्थिति स्पष्ट करने से मुझे कौन रोक सकता है?"

"हां, मैं भी ऐसा मानता हूं।"

"बस, फिर क्या? कल ही हम पहले पहल इस संबंध में अपना विवरण भेज देंगे।"

"और ग़ैरक़ानूनी व्यापार के बारे में हम क्या करने जा रहे हैं? 'तेकी काला गोबरैला' से अलितेत को मिली हुई ज़मानत के बारे में तुम जानते ही हो। यही चुंगीचोर लोग यहां की जनता का ख़ून चूसते हैं और उनसे रोवेंदार खालें हड़प ले जाते हैं।"

---

* विदेशी व्यापार के लिए जन कमिसरियट।

"हम तट-रक्षक नाकों का प्रबंध कर लेंगे। इस काम के लिए हम ख़ास आदमी मंगवायेंगे। कल 'डाक' के लिए यह भी एक काम रहेगा। बस, फ़िलहाल इतना काफ़ी है। चलो, अब कुछ सोना भी तो चाहिए!" कहकर लोस ने करवट ली।

क्रांति-समिति की कुटिया में काफ़ी रोशनी हो चुकी थी। सूरज ने डूबते डूबते एक बार फिर आसमान की सैर शुरू कर दी थी। अन्द्रेई को नींद नहीं आ रही थी। वह उठ खड़ा हुआ और खिड़की के पास आ गया। बाहर कोई भी व्यक्ति न था।

अन्द्रेई ने लोस को जगाया।

"मैं सोच रहा था कि यहां एक सांस्कृतिक केंद्र खोलना अच्छा होगा। जानते हो, विविध प्रकार की शैक्षणिक सेवा..."

लोस कोहनी के बल कुछ ऊपर उठा और अन्द्रेई की ओर ताकता हुआ खट से बोला:

"छोड़ो यार! तुम्हारी इस रात्रिकालीन कल्पना की उड़ान में दिलचस्पी है किसे? कहीं दुश्मन ने धावा तो नहीं बोल दिया था जो तुमने मेरी नींद उचाट दी! यह भी क्या कि कोई नहाये और उसके बाद ज़रा आराम से सो भी न पाये? पहले तो नींद हराम हुई उस रोशनी की वजह से और अब पीछे पड़े हो तुम! क्या तुम्हारी बातों के लिए कल सगुन नहीं? चलो, खिड़की पर कुछ कपड़ा-वपड़ा फैला दो और सो जाओ।"

लोस ने गुस्से में अपना कंबल सिर पर ओढ़ लिया।

"मैंने सोचा कि तुम्हें भी नींद नहीं आ रही थी," अन्द्रेई ने कहा और फिर खिड़की पर एक जाकेट फैला दी। लेकिन फिर भी रोशनी छनती ही रही। अन्द्रेई लेट गया और शीघ्र ही गहरी नींद सो गया।

"अब मैं नहीं सो सकता," सोये हुए अपने साथी की ओर देखकर लोस ने कहा। उसने अपना लंबा रोवेंदार बूट उठाया और निशाना साधकर अन्द्रेई पर एक चोट कर दी।

"अन्द्रेई! ए अन्द्र्यूशा! कहो, इतनी जल्दी तुम मुझसे क्या कहना चाहते थे?" वह चिल्लाया। उसकी आवाज़ में दबी हुई हंसी की छटा थी।

अन्द्रेई ने अपनी आंखें मलीं, जम्हाई ली, बिछौने में उठकर बैठे हुए लोस को ताका और ठट्ठा मारकर हंस पड़ा। फिर वह बिछौने से उठ खड़ा हुआ, अंगड़ाई ली और जम्हाई भी।

"निकीता सेर्गेयेविच, मैं तुमसे सांस्कृतिक केंद्र के बारे में बातें करना चाहता था। जानते हो इस केंद्र में क्या क्या होगा? एक अस्पताल, बोर्डिंग स्कूल, अच्छे कुत्तों की पैदाइश, परवरिश और दवादारू का बंदोबस्त, राजनीतिक-शैक्षणिक सेवा का प्रबंध और एक स्नानगृह भी। हमारे महाद्वीप में जिस तरह का होता है उसी तरह का यह स्नानगृह होगा—अभी हमारे बनाये तिपाई वाले ग़ुसलख़ाने जैसा नहीं। और इस केंद्र में नानबाई की दूकान तो होगी ही। यहां के लोगों को अभी तक रोटी का मज़ा मालूम नहीं और न यहां रोटी सेंकने का कोई प्रबंध ही है।"

गुबेर्निया क्रांति-समिति को यह सुझाव प्रस्तुत करना भी निश्चित हुआ। विशालोदर डाक-पेटी में और एक बड़ा भारी लिफ़ाफ़ा आ पड़ा।

चौदहवां अध्याय

हर रोज़ शिकारियों और बहेलियों के नये नये दल व्यापार-केंद्र में आते रहे। मि० साइमन्स सुबह से रात तक अपने भंडार में व्यस्त रहता। काम से वह थक जाता और मि० थामसन की सलाह पर कभी कभी लेन-देन बंद रखता।

"ठीक ही तो है। दो चार दिन इंतज़ार करते रहने में उन्हें कोई एतराज़ नहीं होगा। यहां वे बड़े मज़े में रहते हैं और घर लौटने की उन्हें कोई जल्दी नहीं होती," मि० थामसन ने कहा और साथ

साथ यह सोचा कि "ये लोग कितने सनकी हैं! पता नहीं इन्हें खालों का यह अंबार कहां से मिला? मैंने सोचा था कि अलितेत सब खालें इकट्ठी कर चुका है। सफ़ेद लोमड़ियों की पूरी एक सौ बीस खालें–और वह भी एक दिन में। मैं तो यह पहली बार सुनता रहा हूं।"

एक दिन सबेरे याराक ने मि० साइमन्स से कहा:

"आज मैं लेन-देन में आपकी मदद नहीं कर सकूंगा क्योंकि मेरे सिर में दर्द है और मुझे चक्कर सा आ रहा है। आज चार्ली ही आपका दुभाषिया बन जाये। हमारी भाषा वह अच्छी तरह जानता है।"

मि० थामसन ने ख़ुशी ख़ुशी मि० साइमन्स का सुझाव मंज़ूर कर लिया। लेकिन शीघ्र ही उसे व्यापार-केन्द्र में आने पर पश्चात्ताप हुआ। वहां ज़ोरों का व्यापार चल रहा था। शिकारी बड़े ख़ुश थे और उन्हें इतना माल मिल गया था कि उनकी बरफ़-गाड़ियों पर उसकी थूहियां लगी थीं।

"देखो चार्ली, यह नया मेरिकन हमसे किस तरह व्यापार करता है! वह हमेशा ख़ुशदिल रहता है। अब हमें अपनी खालें वापस नहीं ले जानी पड़तीं। तुमने ऐसा व्यापार कभी नहीं किया," एक नौजवान बहेलिये ने कहा।

"थामसन, क्या कह रहा है यह नौजवान?" मि० साइमन्स ने पूछा।

"कहता है कि उसे बहुत दूर जाना है," मि० थामसन बुदबुदाया। "देखो साइमन्स, तुम उसके प्रति बहुत ही उदारता दिखाते हो। अरे, तुम इससे बहुत कम क़ीमत दो तो भी वह इतना ही ख़ुश रहेगा।"

"नहीं थामसन, मैं ऐसा नहीं कर सकता–कम से कम जब तक लोस यहां डेरा डाले है। उसके पास हमारी मूल्य-सूची की एक नक़ल है और यदि उसे पता चलेगा कि हम शिकारियों को पूरी क़ीमत नहीं अदा करते तो वह हमारी फ़र्म पर बुरी तरह टूट पड़ेगा। अब

हमें ज़रा होशियारी से काम लेना चाहिए," मि० साइमन्स ने खीसें निकालते हुए कहा।

मि० थामसन घर चला गया। वह उद्विग्न था। उसने चुपचाप घर प्रवेश किया और अपने कमरे में पैर रखना ही चाहता था कि यकायक रुक गया और कान लगाकर सुनने गला। फिर, झटके के साथ उसने अपने परिवार के कमरे का रोवेंदार खाल वाला परदा खींच लिया। वहां थे सिर्फ़ मेरी और याराक।

चार्लस थामसन का चेहरा तमतमा उठा। गुस्से में पागल हो वह घूंसा तानकर याराक पर टूट पड़ा।

याराक ने अपने फ़ौलादी पंजों में उसकी पहुंचियां पकड़ लीं। इसी समय उसे मेरी के हाथ में शिकारी छुरा चमकता हुआ नज़र आया।

"मेरी, फेंक दो छुरा!" याराक चिल्लाया। "भाग जाओ यहां से!"

मेरी हिचकिचायी।

"जल्दी करो, भाग जाओ यहां से!" याराक फिर गुस्से में चिल्लाया और मेरी वहां से ग़ायब हो गयी।

"बदमाश, धोखेबाज़! यहां तुम क्यों आये?" चार्ली चिल्लाया।

चार्ली की पहुंचियों को कसकर दबाते हुए याराक ने सीधे उसकी आंख से आंख मिलाकर जवाब दिया :

"रूस्की सरदार ने कहा है कि मैं यहां आ सकता हूं... और यह भी कहा है कि मैं ब्याह कर सकता हूं। यह रूस्की क़ानून है..."

"चुप रह शैतान!" चार्लस थामसन गरज उठा और उसने यकायक याराक के हाथ में काट लिया।

याराक ने उसे ऐसे पटक दिया कि बेचारा लोटता-लुढ़कता दीवार से जा टकराया। फिर याराक गलियारे में चला गया, उसने मेरी का हाथ पकड़ा और उसे साथ लेकर भाग निकला।

चार्लस थामसन देर तक खालों पर पड़ा रहा और फिर रंगीन रूमाल से अपना चेहरा पोंछकर वहां से चला गया। आख़िर रूलतिना की ओर लपककर वह चिल्ला उठा :

"अरी डाइन, बच्चे कहां हैं? कुटनी कहीं की! कैसा व्यवहार किया तुमने उनके साथ? इन सारी गंदी बातों की जड़ तुम्हीं हो! ज़रा ठहरो और देखो कल मैं क्या करता हूं!"

रूलतिना चुप रही।

मि० थामसन झन्नफन्न अपने कमरे में चला गया और किवाड़ धड़ाके से बंद कर लिया।

"चार्ली कैसा चिड़चिड़ा है! बहुत ही चिड़चिड़ा!" रूलतिना ने सोचा और बच्चों को ढूंढ़ने चली गयी ताकि उन्हें बुलाकर सुला दे।

बस्ती में न मेरी का कोई सुराग़ मिल रहा था और न याराक ही का।

अपनी बेटी की खोज में रूलतिना ने सारी बस्ती छान मारी। हर यारंग में उसने पूछताछ की।

"वे इधर गये हैं," एक लड़के ने कह दिया। "इस समय तक वे उस पहाड़ी को लांघ चुके होंगे।"

"ठीक। जाने दो उन्हें," रूलतिना ने कहा।

रूलतिना घर लौट आयी। उसने चार्ली के कमरे में झांककर देखा। पूरी पोशाक पहने वह खाट पर लेटा था। रूलतिना ने अंदर जाकर उसे पुकारा लेकिन वह सोया था।

रूलतिना ने दीवार पर से बरफ़-गाड़ी के कुत्तों का साज़ उतारा और बाहर की ओर दौड़ी। बात की बात में उसने बरफ़-गाड़ी में बारह कुत्ते जोत लिये और पहाड़ी की ओर चल पड़ी। वह कुत्तों को टिटकारी देती और गाड़ी पर डंडा खटखटाती रही। वह चाहती थी कि कुत्ते अधिकाधिक तेज़ी से दौड़ते रहें।

शीघ्र ही रूलतिना को भगोड़ों का जोड़ा दिखाई दिया।

लेकिन याराक और मेरी यकायक मुड़कर राह से हट गये और बड़ी तेज़ी से पथरीली ढाल के नीचे दौड़ने लगे।

बुढ़िया रूलतिना बरफ़-गाड़ी पर खड़ी हुई और बड़ी मुश्किल से अपने को संभालती हुई ऊंची से ऊंची आवाज़ में पुकार उठी:

"या – रा – क! मैं रूलतिना हूं रू – ल – ति – ना!"

विशाल टुंड्रा में उसकी कमज़ोर आवाज़ डूब गयी। याराक और मेरी इतने तेज़ दौड़ रहे थे कि कुत्तों के लिए उनके पास पहुंचना मुश्किल हो रहा था। फिर रूलतिना ने कुत्तों को रास्ते से हटाकर उस पगडंडी की ओर दौड़ाया जिसपर याराक और मेरी दौड़ रहे थे। वह बराबर बरफ़-गाड़ी पर खड़ी याराक और मेरी को पुकारती रही।

याराक जानता था कि पहाड़ी की ढाल पर बरफ़-गाड़ी आसानी से नहीं दौड़ पायेगी क्योंकि वहां चट्टानों के टुकड़े और कंकड़-पत्थर बिखरे हुए थे। निकल भागने के लिए उनके पास काफ़ी समय था।

कुछ दम लेने के लिए वे रेंगकर एक गुफा में घुस गये।

"अगर चार्ली बरफ़-गाड़ी पर से उतरकर हमें ढूंढ़े तो तुम उसका पीछा करो और उसे पत्थर से मार डालो," मेरी ने कहा।

बरफ़-गाड़ी के कुत्ते पहाड़ी की तलेटी तक सरपट भागे और गाड़ी पत्थरों के बीच अटककर एकदम रुक गयी।

"अरी मेरी, सुनो, मैं रूलतिना हूं ... तुम डरो मत!" भागने वालों ने सुना।

"मेरी, चलो बाहर आओ!" याराक ने खुशी से कहा।

बुढ़िया गाड़ी पर झुकी बैठी थी। वह इतनी थकी-मांदी थी कि मुंह से शब्द निकलना तक दूभर हो गया था। मेरी ने फ़ौरन उसे अपनी बांहों में भर लिया।

भावावेश में रूलतिना ने कहा:

"यह बरफ़-गाड़ी लो और फ़ौरन टुंड्रा चले जाओ। वहां पहाड़ियों में मेरे भाई हैमेलकोत के यहां रहो।"

"रूलतिना, तुम भी हमारे साथ चलो न!" याराक ने भावुकता के साथ कहा।

"जी नहीं, मैं नहीं आ सकती, क्योंकि घर पर मेरे और बच्चे भी तो हैं। बेचारे मेरा इंतज़ार करते होंगे। मैं घर वापस जाऊंगी और कुछ बोलूंगी नहीं। इन पत्थरों की तरह चुप रहूंगी।"

"रूलतिना, हम उस दढ़ियल रूसी सरदार के पास जायेंगे। अन्द्रेई ने मुझसे कहा था कि वह हमें ब्याह का कोई काग़ज़ देना चाहता है," याराक ने कहा।

"ज़रूर जाओ उसके पास। शायद वह रूसी समझ जाये कि मेरी के लिए अब पति की ज़रूरत है," कहकर रूलतिना ने एक आह भरी।

याराक ने रूलतिना के हाथ से डंडा ले लिया और चिल्लाकर कुत्तों को बढ़ने का इशारा किया। याराक ही ने इन कुत्तों को पाला-पोसा था। गूंगे जानवरों ने भी अपने मालिक की आवाज़ पहचान ली और दुम हिलाकर दुलकी चलने लगे।

"तगम! तगम!" रूलतिना उनके पीछे चिल्लायी। दूर जाती हुई बरफ़-गाड़ी को वह देर तक देखती रही।

पंद्रहवां अध्याय

बड़े तड़के मि० थामसन की नींद खुली। उसकी ज़िंदगी में यह पहला अवसर था जब वह पूरी पोशाक पहने सो गया था।

बिना पर्दे वाली खिड़की में से प्रखर सूर्य-प्रकाश कमरे के अंदर प्रवेश कर रहा था। मि० थामसन ने आंखें मिचकाते हुए गहरी सांस

ली, गर्दन हिलायी और त्योरियां चढ़ायीं। अलार्म घड़ी पर उसकी निगाह पड़ी लेकिन वह पेटंट घड़ी बंद पड़ी थी। "जाने इस घर में क्या हो रहा है!" चार्लस थामसन ने सोचा।

वह कमरे में टहलने लगा और खिड़की में से झांककर देखता क्या है कि उसकी बरफ़-गाड़ी अपनी जगह से ग़ायब है। फ़ौरन उसे एक आशंका ने धर दबाया। एक रोवेंदार जाकेट अपने कंधों पर डालकर वह बाहर गया और सारे घर की परिक्रमा की लेकिन न कहीं बरफ़-गाड़ी का निशान था, न कुत्तों का ही। उत्तेजित और हांफता हुआ वह गलियारे में घुस गया और अपने परिवार-कक्ष के आगे खड़ा होकर कठोर स्वर में पूछने लगा:

"मेरी कहां है?"

कोई उत्तर न मिला।

झटके के साथ उसने अपने कमरे का किवाड़ खोला और देखा कि रूलतिना वहां मेज़ साफ़ कर रही है। "कुत्ते कहां गये?" वह चिल्लाया।

रूलतिना सिर झुकाये चुपचाप खड़ी अपने गोरे पति के इस हुक्म का इंतज़ार कर रही थी कि "चली जाओ मेरे यहां से!"

चार्लस थामसन ने उसे ग़ुस्से से धकेल दिया। उसके हाथ से प्याले-रकाबियां गिर पड़ीं और एक प्याला फूट गया।

ज़ोरों से हांफता हुआ चार्ली दौड़ा दौड़ा रिंतेऊ के यारंग में पहुंचा।

"जल्दी करो, मुझे कुछ कुत्ते दो।"

रिंतेऊ, जो इस समय केवल रोवेंदार पायताबे पहने और कंधों पर परका डाले था, मन ही मन तर्क करता रहा: "असल में मुझे कुत्ते नहीं देने चाहिए, लेकिन क्या करूं? देने ही पड़ेंगे।" फिर कुछ परेशानी न दिखाते हुए उसने कहा:

"चार्ली, कुत्ते तो इस वक़्त बस्ती में घूम रहे हैं।"

"बहस न करो, मूरख। जल्दी कुत्ते दो!"

"लेकिन चार्ली, बस्ती के कौनसे कुत्ते ग्रापके कुत्तों का मुक़ाबला कर सकेंगे? ग्रापके कुत्ते तो इतने ग्रच्छे हैं! उनकी बराबरी बस, ग्रलितेत के कुत्ते ही कर सकते हैं। ग्राप ज़रा रुक जायें तो ग्रच्छा होगा। हो सकता है, ग्रलितेत ही यहां पहुंच जाये।"

"बुड्ढे शैतान, कैसी बकवास कर रहे हो तुम! मुझे फ़ौरन जाना है—इसी क्षण। जल्दी करो, बरफ़-गाड़ी में फ़ौरन कुत्ते जोत दो।"

चार्ली थामसन ने उसके परके की लटकती ग्रास्तीन पकड़कर उसे ख़ूब झंझोड़ा ग्रौर रिंतेऊ ग्रलसाता हुग्रा ग्रपने यारंग में चला गया। कुत्तों के साज़ का एक गट्ठर लिये वह लौट ग्राया। इस साज़ोसामान को थामसन के ग्रागे रखकर उसने कहा:

"यह रहा साज़, लेकिन यह बेकार है! इसकी मरम्मत करना ज़रूरी है।"

"जो भी हो, दो!" मि० थामसन गुर्राया।

रिंतेऊ सीटी बजाता हुग्रा ग्रजीबोग़रीब कुत्तों को पुकारता गया। थोड़ी देर बाद जब वह वापस ग्राया तो कुत्तों का झुंड उसके पीछे पीछे ग्रा रहा था। कुछ खाने को मिलने की झूठी ग्राशा में कुत्ते बड़ी उत्सुकता से चले ग्रा रहे थे।

रिंतेऊ बड़ी ढिलाई के साथ कुत्तों पर साज़ रखने लगा। साथ साथ वह बुदबुदा रहा था:

"जाने इन गिलहरियों से उन शेरों का पीछा कराने में क्या होशियारी है? यह तो वैसा ही है जैसे कोई बूढ़ा किसी जंगली बारहसिंगे को पकड़ने का प्रयास करे।"

रिंतेऊ ने चालाकी से बरफ़-गाड़ी में सब से ग्रागे एक ऐसा कुत्ता जोत दिया जिसकी टांग ख़राब थी ग्रौर जो गाड़ीवान का हुक्म नहीं समझ सकता था।

चार्लस थामसन बरफ़-गाड़ी पर बैठ गया और चल दिया। उसे उम्मीद थी कि अगली बस्ती में वह भगोड़ों को पकड़ लेगा। लेकिन उसने इस बात पर ग़ौर नहीं किया कि ये कुत्ते मरियल हैं। वह चिल्ला चिल्लाकर उन्हें बढ़ावा देता रहा, डंडे से उन्हें कोंचता रहा लेकिन वे केवल करुण स्वर में कराह उठे और अपनी रफ़्तार ज़रा भी न बढ़ाते हुए मुड़ मुड़कर उसकी ओर देखते गये। आख़िर वे रुक गये और फिर किसी भी तरह आगे बढ़ने को तैयार न हुए।

चार्लस थामसन बरफ़-गाड़ी पर बैठा था। उसके चेहरे पर तीव्र निराशा फैली हुई थी।

"इस तरह पीछा करना बेकार है," उसने सोचा और कुत्तों को पीछे घुमा दिया। वे फ़ौरन पूंछ उठाकर और कान खड़े कर सरपट दौड़ने लगे।

निष्प्रभ क्रोध से थका हुआ थामसन व्यापार-केंद्र में चला गया।

मि० साइमन्स ने सहर्ष "गुड मॉर्निंग मि० थामसन" कहकर उसका स्वागत किया।

"भले ही गुड मॉर्निंग हो, लेकिन मेरे लिए नहीं," मि० थामसन ने रुखाई से कहा। "जाने इन जंगलियों पर कैसा भूत सवार हुआ है। साइमन्स, शायद तुम्हें मालूम हो? मैं तो कुछ सोच ही नहीं पाता! ज़रा इस रिंतेऊ को ही देख लो न। गत बीस साल से वह पूरी तरह मेरे भरोसे रहता आया है और बिल्कुल कुत्ते की तरह स्वामिनिष्ठ रहा। लेकिन अब वह भी बड़ा अजीब बर्ताव कर रहा है। उससे कुछ कुत्ते इकट्ठा करवाने के लिए भी मुझे कितनी माथापच्ची करनी पड़ी। आख़िर किसी तरह इस भिखमंगे ने कुछ कुत्ते इकट्ठा तो किये, लेकिन... तुम्हीं को देखना चाहिए था कि यह कैसी दोगली औलाद थी! ज़रा सोचो तो साइमन्स, अरे एक ही साल पहले मेरे मुंह से एक शब्द निकलने भर की देर थी कि बस्ती

का सब से बढ़िया कुत्ता-दल फ़ौरन हाज़िर कर दिया जाता था। मैं बिल्कुल समझ ही नहीं पाता कि ग्राजकल हो क्या रहा है," मि० थामसन ने बेबसी दिखाते हुए कहा।

"भई थामसन, ग्राख़िर हुग्रा भी क्या?"

याराक के साथ मेरी के भाग जाने का क़िस्सा सुनकर मि० साइमन्स ने सहानुभूति-सूचक सांस ली ग्रौर गर्दन हिलाकर खेद प्रदर्शित किया।

"थामसन, इसका कोई चारा नहीं। मेरी सलाह मानो ग्रौर गोली मारो इस बेकार मुल्क को! ग्राख़िर तुम यह तो चाहोगे नहीं कि तुम्हारी लाश यहां की चट्टानों के बीच पड़कर सड़ जाये ग्रौर जंगली जानवर दावतें मनायें। तुम्हीं ने कहा था न कि यहां लाश को इस तरह फेंक देने का रिवाज है? बोलो! ग्ररे भई, तुमने यहां काफ़ी माया जुटायी है। क्या तुम यह नहीं चाहते कि ज़िंदगी के बचेखुचे दिन इस धन के सहारे सभ्य संसार में बिताये जायें? गत बीस साल से तुमने ताज़े दूध का ज़ायक़ा नहीं लिया। क्या कहूं मि० थामसन, बड़ी मुश्किल में जान रही! देखो, तुम्हारी वह बेटी भी यहां के बाक़ी बाशिंदों जैसी ही जंगली है। थामसन, बुरा न मानो—मैं साफ़ साफ़ कह रहा हूं। सचमुच, तुम्हारी इस हालत पर मुझे बड़ा रंज होता है।"

"ठीक है यार। तुम सचमुच ग्रच्छे दोस्त हो। साइमन्स, ग्ररे तुम्हारे ग्राने से पहले यहां कौन था जो मुझसे इस तरह प्यार से बातचीत करता। कहो, साइमन्स, मैं तुम्हारे साथ कनाडा चलूं तो! ग्रब ग्रकेला ही तो रह गया हूं।"

"थामसन, मुझे सचमुच बड़ी ख़ुशी होगी। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी ज़िंदगी ग्रच्छी कटेगी। सच कहता हूं!"

कुछ देर दोनों शांत रहे। कनाडा में ग्रपने भावी जीवन के विचार में वे खो गये थे।

"हां थामसन, मैं कह रहा था कि तुम अपनी बेटी के बारे में परेशान हो न? अरे दोस्त, वह लड़की यहीं तो पैदा हुई। वह अमरीका और कनाडा से उतनी ही नफ़रत करेगी जितनी मैं इस बदक़िस्मत बरफ़ीले मुल्क से करता हूं। वह रोती-तरसती रहेगी यहां की जंगली चट्टानों के लिए, इन लोगों के गंदे यारंगों के लिए, वालरस के मांस के लिए और गुर्राने वाले तूफ़ानों के लिए। इनकी याद से वह सूखती जायेगी। देखो, याराक बिल्कुल उसके लायक़ पति है। मुझे विश्वास है कि उसके साथ तुम्हारी बेटी सुखी रहेगी ..."

"बेन को तो मैं साथ ही ले चलूंगा ... और देख लूं शायद मेरी को भी वापस ला सकूं। मैं समझता हूं कि कनाडा में भी वह ठीक ही रहेगी। समय के साथ साथ उसे आदत भी पड़ जायेगी। कहो साइमन्स, तुम्हारी क्या राय है?"

"हो सकता है, हो सकता है," मि० साइमन्स ने अधमने ढंग से कहा।

"लेकिन इन रोवेंदार खालों का क्या होगा? मेरे पास पूरी पंद्रह सौ खालों का अंबार लगा है और मेरा मन नहीं करता कि इन्हें बेचने के लिए पेत्रोपावलोव्स्क का चक्कर लगाऊं। लोस उन्हें तभी लेने को तैयार था लेकिन ख़ुशी की बात है कि उसके पास पैसा ही न था।"

"थामसन, कहो तो तुम्हें एक दोस्ताना सलाह दूं?"

"कहो साइमन्स, यह भी कोई पूछने की बात है?" मि० थामसन ने कहा और ध्यानपूर्वक सुनने लगा।

"असल में यह सलाह नहीं, बल्कि भूगोल का एक आसान सबक़ है। सुनो, नोमे-ऑन-अलास्का यहां से नज़दीक वाली चुकची बस्ती से ज़्यादा दूर नहीं है। यह हुई एक बात। दूसरी बात यह कि

बेरिंग का जल-डमरूमध्य बहुत लंबा चौड़ा नहीं है। समझे थामसन?"

मि० साइमन्स मुस्करा दिया। "अगर मुझे ज़रूरत पड़ती तो मैं एक सादी डोंगी में उसे पार कर देता। बस, डोंगी वालों को 'केंटुकी' तंबाकू का एक पैकेट दे दो और कुछ ही घंटों के अंदर अपने सामान-असबाब सहित अमरीका में हाज़िर हो जाओ। तुम मेरे लिए अलास्का में या सेन-फ़्रांसिस्को में रुक जाना। वहां से हम दोनों जहाज़ पर कनाडा के लिए रवाना होंगे।"

"और यहां के मेरे मकान का क्या होगा? मैं तो मकान और गोदाम बेच डालना चाहता था।"

"पर मेरे भाई, यह पुराना-धुराना मकान आख़िर लेगा कौन? अलावा इसके, अगर तुम ख़रीदार की खोज में फिरोगे तो लोगों को वहम होगा। लोस तो फ़ौरन जान जायेगा। अगर तुम्हारी जगह मैं होता तो मैं उससे इस भूमि में अपने बालबच्चों के साथ ज़िंदगी के आख़िरी दिन बिताने की इजाज़त मांग लेता। फिर, इधर किनारा साफ़ हुआ और उधर माल-असबाब जहाज़ पर लादकर मैं नौ दो ग्यारह!"

"साइमन्स, ठीक कहा तुमने। बस, यह है अमरीकी का सही व्यापारी दिमाग़!"

सोलहवां अध्याय

सुदीर्घ उत्तरी शीतकाल समाप्त हुआ था। बरफ़ के तूदे ढीले पड़कर गलने लगे थे। दिन-प्रति-दिन आकार में घटते हुए वे धरती में धंसते हुए से लगते थे। रात और दिन के बीच की सीमा प्रायः लुप्त सी हो गयी थी और लंबे धुपहले दिन शीघ्रता से बीतते जा रहे थे।

क्रांति-समिति के दो कार्यकर्ताओं के बीच यकायक एक विवाद उठ खड़ा हुआ। उनका एक दिन नष्ट हो गया था। किंतु यह हुआ

कैसे, इसे उनमें से कोई समझ न पाया। लोस कहता था कि आज २० अप्रैल है जबकि जुकोव के हिसाब से वह २१ अप्रैल थी।

दोनों काग़ज़ात से बीसों सबूत निकालकर बड़े जोश से अपनी अपनी तारीख़ का समर्थन कर रहे थे। उन्होंने सारी घटनाएं स्मरण कीं, अपनी हाल ही की लंबी यात्रा की विभिन्न अवस्थाओं को याद किया लेकिन सब बेकार रहा – तारीख़ के बारे में दोनों एकमत नहीं हो सके। और इस बात का निर्णय करने के लिए उस प्रदेश में कोई तीसरा सोवियत नागरिक था भी तो नहीं।

"निकीता सेर्गेयेविच, कुछ भी कहो, तुम जरूर ग़लती कर रहे हो! तुम देखोगे कि पहली मई का उत्सव तुम एक दिन पहले मनाओगे।"

"अच्छा, तो फिर हम दोनों पहले मेरी तारीख़ के अनुसार और बाद में तुम्हारी तारीख़ के अनुसार – इस तरह दो दिन पर्व मनायेंगे।"

जुकोव के छात्र क्रांति-समिति के कार्यालय में आये। उन्होंने अपने रोवेंदार बाहरी कपड़े उतारे। जो छींट की क़मीज़ें उन्होंने पहन रखी थीं वे खुद लोस ने उनके लिए बनवायी थीं। उन्होंने बैठकर अभ्यास आरंभ किया। बड़े ग़ौर से वे रूसी वर्णमाला के अक्षर लिख रहे थे और शब्दों तथा वाक्यांशों का उच्चारण कर रहे थे। सब से बड़ी कठिनाई उन्हें महसूस हो रही थी 'द' के उच्चारण में। इस अक्षर का उच्चारण वे 'त' करते थे और इससे वे 'दाल' को 'ताल' और 'दल' को 'तल' कहते थे।

बच्चे बड़े उत्साह से पढ़ते थे और लंबे लंबे सबक़ से भी नहीं ऊबते थे। सबक़ ख़त्म होते ही लोस हाथ में 'दमिनो' खेल का डिब्बा लिये परदे के पीछे से बाहर आया। उसने कहा:

"आओ बच्चो, अब खेल खेलोगे न?"

"जी हां लोस, ज़रूर खेलेंगे!" सब बच्चे एक साथ चिल्ला पड़े।

बड़ों की तरह ये बच्चे क्रांति-समिति के कमिश्नर को रूसी तरीक़े के मुताबिक़ उसके नाम तथा पितृवाचक नाम से न पुकारते थे। उनके लिए यह नाम बड़ा लंबा और समझ के बाहर का हो जाता। उनके यहां कुलनामों तथा पितृवाचक नामों की प्रथा न थी।

लोस बड़ी ख़ुशी से अपना आख़िरी पासा फेंकने वाला ही था कि एक छोटे बच्चे ने अपना पासा वहां सरका दिया और ख़ुशी से चिल्ला उठा:

"ठहरो लोस! दांव मैंने मार दिया है!"

"लोस हार गया, लोस हार गया!" तालियां पीटते हुए सब बच्चे चिल्ला उठे। लोस की त्योरियां चढ़ गयीं मानो सचमुच वह परेशान हो उठा हो।

यह जानकर कि लोस को एक और दांव खेलने के लिए तैयार कराना संभव नहीं, बच्चों ने झटपट अपने छोटे छोटे परके पहने और वहां से भाग खड़े हुए।

उनमें से एक बच्चे ने दरवाज़े के पास रुककर पीछे मुड़कर देखा और कहा:

"सुनो लोस, बाबा उमकातागेन आज रात मरने जा रहा है," यह कहते हुए बच्चे ने अपने गले पर अपनी उंगली फेर ली।

"ठहर जा, एक मिनट ठहर जा! क्या कहा तूने?"

"आज रात को बाबा उमकातागेन फांसी लगा लेगा। उसकी सब तैयारी हो चुकी है," लड़के ने शांत भाव से उत्तर दिया।

लोस ने बच्चे को मेज़ के पास एक जगह बैठा लिया और बिल्कुल धीरे से, लगभग फुसफुसाते हुए, पूछा:

"क्या कहा तूने, फांसी? किसलिए?.."

बच्चे ने कुछ डरते हुए चारों ओर देखा। वह मन ही मन सोच रहा था कि ऐसी बातों के बारे में कुछ कहूं या न कहूं।

"वह बहुत ही बीमार बुड्ढा है ... उसका एक पैर निकम्मा हो गया है। ओझा ने बुड्ढे को चंगा करने की कोशिश की लेकिन कुछ फ़ायदा न हुआ। उमकातागेन का बेटा एरमेन अपने सब कुत्ते खो बैठा। कुछ कुत्ते उसने भूत-पिशाचों पर बलि चढ़ा दिये और कुछ ओझा को दे डाले। अपने सारे कुत्ते वह दे बैठा लेकिन बीमारी बनी ही रही। ज़रूर इस बुड्ढे के पैर में दुष्ट पिशाच ने डेरा डाला होगा और इसी लिए उमकातागेन दूसरी दुनिया वालों के पास जा रहा है। वह आज रात ही को जायेगा। सभी लोग बड़े ख़ुश हैं। एरमेन भी बड़ा ख़ुश है।"

"तू दौड़ता हुआ सीधे एरमेन के पास चला जा और उससे कह दे कि 'लोस ने बूढ़े को फांसी लगाने की मनाही कर दी है'। समझे कि नहीं? इस तरह लोगों का गला नहीं घोटना चाहिए। चल, भाग जा। मैं भी फ़ौरन वहां आता हूं!" जल्दी जल्दी अपने तोरबाज़ पहनते हुए लोस ने बड़ी उत्तेजना के साथ कहा।

लड़का दौड़ता हुआ चला गया।

"निकीता सेर्गेयेविच, ज़रा रुक जाओ। रात होने में अभी काफ़ी समय बाक़ी है। हम ज़रा इस बात पर सोच-विचार कर लें," जुकोव ने कहा।

"सोच-विचार की कोई ज़रूरत नहीं! उस बूढ़े को मैं फांसी पर नहीं लटकने दूंगा!" लोस ने गरजकर कहा।

"देखो निकीता सेर्गेयेविच, इन बातों को कारोबारी कार्रवाइयों से नहीं रोका जा सकता। ऐसा करना बेकार होगा। तुम्हारे सामने वे सब कुछ मान लेंगे लेकिन जैसे ही तुम वहां से चल दोगे, वे बूढ़े को फांसी लगाये बिना रहेंगे नहीं। यह न भूलना कि बूढ़ा अपना

'वचन' दे चुका है। अपने वचन से मुकर जाने में इन लोगों की परंपरा के अनुसार आदमी की बड़ी बदनामी होती है।"

"आख़िर तुम्हारा कहना क्या है? उस बूढ़े का गला घोंट दिया जाये? जो कुछ कहना है साफ़ साफ़ कहो न!" बूट पहनते हुए लोस ने तपाक से कहा।

"निकीता सेर्गेयेविच, तुम जोश में हो और मेरी बात नहीं समझना चाहते। मैं नहीं मानता कि हम इन रस्म-रिवाजों की दीवारें एक ही साल में ढहा देंगे! मैं समझ नहीं पाता कि क्या किया जाये..."

"लेकिन मैं समझता हूं! आख़िर हम यहां आये किसलिए हैं? हम कौन हैं – सोवियत सरकार के प्रतिनिधि? या और कोई?" बूटों के साथ खींचातानी करते हुए लोस बरस पड़ा। "अरे, हम लेनिन के अनुयायी हैं, हैं न?"

"हां, ज़रूर। लेकिन लेनिन ही ने लिखा है न कि परंपरा और अंधविश्वास को नष्ट करना सब से कठिन बात है। इनका सामना करने के लिए दृढ़ विश्वास की महान शक्ति पर आधारित परिश्रमपूर्ण और प्रणालीबद्ध अभियान की आवश्यकता है..."

"बस करो भाई, बस करो! मैं तुम्हारा व्याख्यान नहीं सुनना चाहता!" हाथ झटकाते हुए लोस चिल्लाया और चुपचाप लेकिन बेचैनी से कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

इसी समय एरमेन दौड़ता हुआ क्रांति-समिति के कार्यालय में आ पहुंचा।

"लोस," उसने उत्तेजित होकर कहना शुरू किया, "बुड्ढे की फांसी होकर ही रहेगी। ख़ुद उसी ने इसके लिए कहा है। उसकी अंतिम इच्छा मैं नहीं ठुकरा सकता। अगर मैं ठुकराऊं तो हमपर क़हर टूट पड़ेगा..."

"क़हर-वहर कुछ न होगा। किसी ज़िंदा आदमी का गला घोट डालना भी कोई बात हुई? तुम्हारा बाप उमकातागेन तुम्हारा दुश्मन थोड़े ही है!" लोस ने कहा।

"जी नहीं, और मैं दुश्मन का भी गला घोटना नहीं चाहूंगा। उमकातागेन को मैं प्यार करता हूं और उसका मैं भला ही चाहता हूं – उसकी आख़िरी इच्छा पूरी करना चाहता हूं। हमारी बिरादरी के किसी भी आदमी ने अपना वचन वापस नहीं लिया है। और लोस, तुम कैसे हो कि मुझसे यह चाहते हो कि मैं अपने बाप को बदनाम होने दूं और लोग उसे नीच समझें!"

"ऊंह, कैसी समस्या है मेरे सामने!" लोस बुदबुदाया।

इसी समय अन्द्रेई बोल उठा :

"एरमेन, तुम जानते हो कि हम लोगों ने एक नया क़ानून बनाया है, जिससे इस तरह आदमी फांसी नहीं लगा सकता। अगर यह क़ानून न होता तो हम कुछ भी नहीं कहते।"

"बुड्ढे की फांसी होनी ही चाहिए। अगर यह न होगी तो बड़ा बुरा होगा," एरमेन अपनी बात पर ज़ोर देता रहा।

लोस खिड़की के पास अपनी दाढ़ी चबाता हुआ विचार कर रहा था। यकायक वह पीछे मुड़ा, एरमेन के पास गया और कठोर स्वर में बोला :

"उमकातागेन को फांसी देने की मैं मनाही करता हूं। अगर मैंने सुना कि उस बूढ़े को फांसी दी गयी तो सज़ा तुम्हें दी जायेगी। किसी जहाज़ के आते ही मैं तुम्हें चुकोत्स्क भूमि से दूर भेज दूंगा। और जब तुम पराये मुल्क में मरोगे तो तुम्हारे मरने से पहले तुम्हारा कोई सगा-संबंधी तुम्हारी आवाज़ नहीं सुन सकेगा..."

लोस की आवाज़ उत्तेजित और तेज़ हो गयी थी।

एरमेन ने रूसी सरदार की बात चुपचाप बड़े ग़ौर से सुनी और कहा :

"लोस, तुम्हीं पहले तांग हो जिसे मेरी बिरादरी वाले लोग सच्चा इन्सान कहते हैं। तुम्हारे आने के बाद जाड़े का एक ही मौसम बीता है लेकिन हमारे यहां का व्यापार एकदम बदल गया है। हमारे लोग अब शक्कर वाली चाय पीते हैं। जिनके पास कभी बंदूक़ें नहीं थीं उनके पास अब बंदूक़ें हैं। जिनके पास अपने फंदे नहीं थे, उनके पास अब फंदे हो गये हैं। हर जगह लोग कहते हैं: 'दाढ़ी वाला हमारी लोमड़ियों को प्यार करता है और उसकी वजह से उनके बदले में काफ़ी माल मिलता है।' लोग कहते हैं कि तुम एक अच्छे ओझा हो, उदार ओझा। तुम हमें अपनी ज़िंदगी बसर करने में मदद देते हो। हां, सारे किनारे के लोग यही कहते हैं। लेकिन इस समय तुम ऐसी बातें कह रहे हो जिन्हें मेरे कान समझ नहीं पाते। कहीं बुरे ओझाओं ने तुम्हें बिगाड़ तो नहीं दिया? तुम पहले जैसे नहीं रहे! तुम ऐसा क्यों कहते हो कि उमकातागेन की आख़िरी इच्छा पूरी न की जाये? बुड्ढा उमकातागेन एक भला आदमी है।"

एरमेन भी उत्तेजित हुआ था लेकिन वह धीरे धीरे बोल रहा था। उसके चेहरे पर पसीने की बूंदें झलक आयीं।

"एरमेन, आओ, हम दोनों इस बेंच पर पास पास बैठें," लोस ने शांत, नियंत्रित स्वर में कहा।

एरमेन कुछ चौंककर बैठ गया।

"जो मैं कहने जा रहा हूं उसे सुनो। ग़ौर से सुनो। उमकातागेन वैसे बहुत बूढ़ा नहीं है। मैं उसे जानता हूं। पिछली शरद ऋतु में वह व्हेलों के शिकार के मौसम में नाव चलाता था। कुछ दिन बाद यहां जहाज़ आयेगा और रूसी डाक्टर उमकातागेन की टांग चंगी कर देगा। मैं सच कह रहा हूं। व्यापारी लोगों से मैं नावों के

लिए इंजन लाने को कहूंगा जिससे ये नावें बिना डांड़ों के चल सकेंगी। वे स्कूनर की रफ़्तार से चलेंगी। मैं चाहता हूं कि उमकातागेन इस नयी ज़िंदगी को अपनी आंखों से देख ले। मैं तुम्हें सच बता रहा हूं! अभी अभी तुम्हीं ने कहा कि यहां की ज़िंदगी कुछ बदल भी गयी है। समझते हो मैं क्या कह रहा हूं?"

"जी हां, समझता हूं," एरमेन ने कहा।

"महाद्वीप पर एक सयाना आदमी है – उसका नाम है लेनिन," अन्द्रेई ने कहा, "उसी ने नयी ज़िंदगी की राह दिखायी। पुराना क़ानून, चार्ली लाल-नकुए का और अलितेत का क़ानून, उखाड़ फेंका गया है। अब नया क़ानून बना है जो लोगों को जीने में मदद देता है।"

"और यह नया क़ानून बूढ़े लोगों की फांसी की मनाही करता है," लोस आगे कहता गया। "इन लोगों का ख़याल रखना चाहिए, उनकी ठीक से देखभाल होनी चाहिए और उनकी ज़िंदगी आसान बनानी चाहिए। एरमेन, तुम घर जाओ और बूढ़े से कह दो कि लोस यह नहीं चाहता कि उमकातागेन मर जाये। कह दो कि मैं उससे दो बातें करना चाहता हूं..."

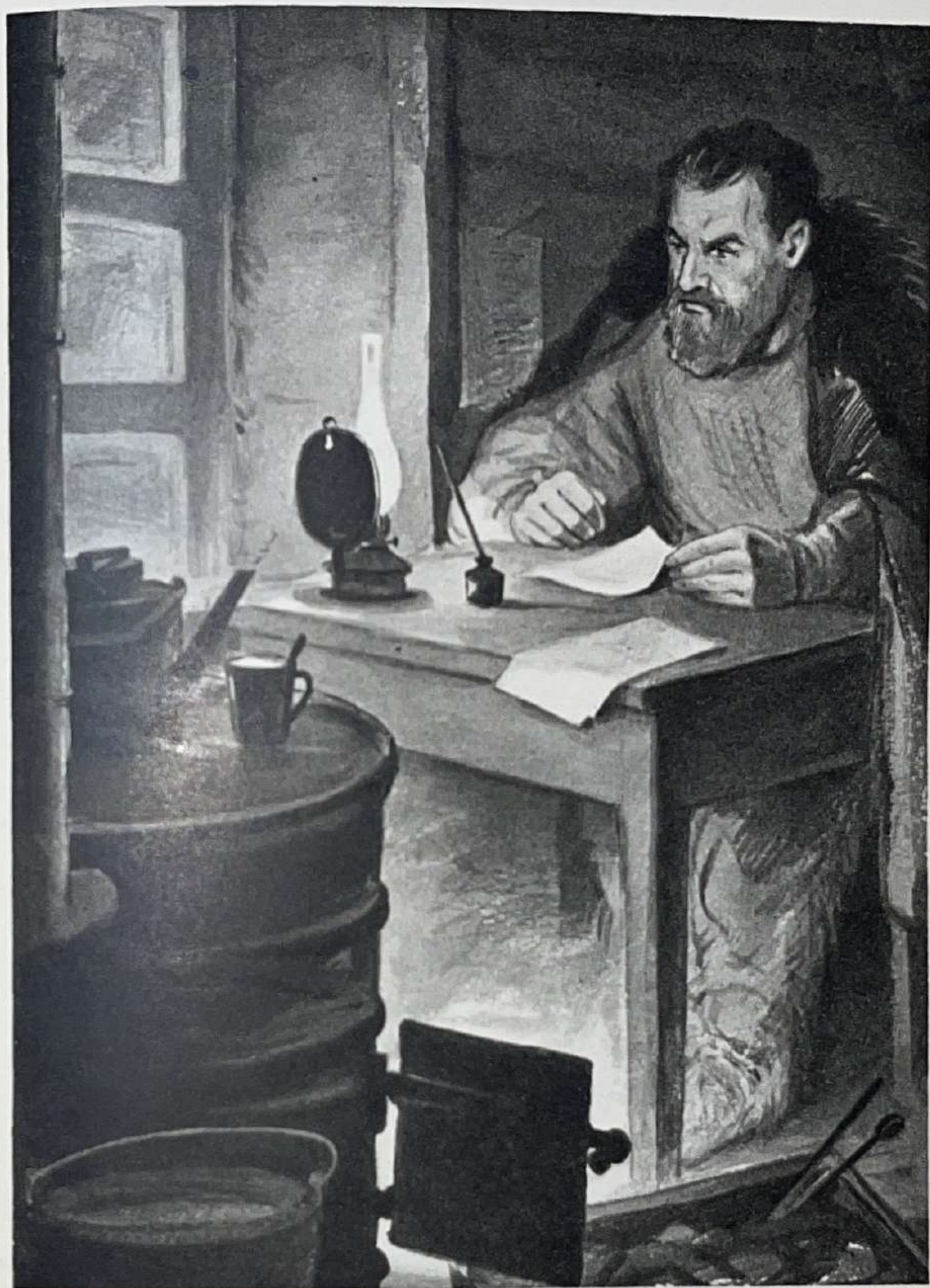
एरमेन ने गहरी सांस ली और कहा:

"मेरी कुछ समझ में ही नहीं आता।"

उसने अपनी टोपी उठायी और घर चला गया। लोस कमरे में चहलक़दमी करता रहा। जबतब वह खिड़की में से बाहर देखता गया।

"कहो अन्द्रेई, क्या तुम समझते हो कि हम उसे पूरा विश्वास दिला चुके हैं?"

"जी नहीं। क्या तुम्हारा खयाल है कि पुराने अवशेषों का समाप्त होना इतना आसान है? क्या तुम सोचते हो कि उन्हें एकदम समाजवादी समाज में बदल दिया जायेगा? नहीं, निकीता सेर्गेयेविच,



हमें अभी काफ़ी काम करना होगा और काफ़ी मुश्किल भी। यह कठिन काम काफ़ी सावधानी से करना होगा।"

"तुम नानी के आगे ननिहाल की बात करते हो!" लोस ने कहा। "लेकिन मैं तो बैल को सींगों से पकड़ना चाहता हूं।"

"वे ज़रूर उसे फांसी पर लटकायेंगे," उसने जुकोव को कहते हुए सुना।

"तो फिर कपड़े पहनो और सीधे उस यारंग की ओर चलो!" लोस ने यकायक निश्चयपूर्वक कहा। "और जब तक मेरे कहे मुताबिक़ न होगा तब तक यारंग से टलूंगा नहीं।"

यारंग के दरवाज़े पर एक लड़का रास्ता रोके खड़ा था। उसने फुसफुसाकर कहा:

"आप अंदर नहीं जा सकते। कल आइयेगा।"

लोस ने उसे एक ओर ढकेल दिया और ख़ुद झुककर पोलोग में घुस गया।

"रुक जाओ!" एरमेन को अपने पिता के गले में फांसी डालते देखकर वह चिल्लाया। "यह तुम क्या कर रहे हो?"

उसने एरमेन के हाथ से रस्सी छीन ली और पोलोग में बिछी हुई खालों पर अपने हाथ-पैरों के सहारे घिसकते हुए जाकर उस बूढ़े के गले से फंदा निकाल दिया।

"अन्द्रेई, देखो, तुम मुझसे अच्छा बोलते हो। तुम्हीं उनसे कह दो कि पिशाच न उस बूढ़े को दोष देगा, न एरमेन को और न किसी दूसरे को। चाहे तो वह पिशाच मुझसे बदला ले ले क्योंकि मैंने ही उस बूढ़े को फांसी पर लटकाने से रोका है।"

अन्द्रेई ने चुकची में अनुवाद करके लोस की बात समझायी और पोलोग में इकट्ठे लोग विस्मित होकर एक दूसरे की ओर घूर घूरकर देखने लगे। उनकी आंखों में घबड़ाहट नज़र आ रही थी।

डर खाकर कोने में बैठे हुए ओझा तक की घिग्घी बंध गयी। वह वहीं से नफ़रत की निगाह से रूसियों को ताक रहा था। किसी को मुंह खोलने की हिम्मत न हुई। इधर खालों पर फैलकर लेटा हुआ बूढ़ा यकायक उठ बैठा और दबी हुई आवाज़ में बोला :

"तुम लोग यहां क्यों आये? किसी ने तुम्हें बुलाया तो था नहीं? पागल आदमी, चले जाओ यहां से।"

लोस सद्भाव से मुस्कराया और अपनी जेब में से पाइप और तंबाकू निकाल ली।

"बूढ़े बाबा, लीजिये, एकाध कश लगाइये!" बूढ़े की ओर तंबाकू का बटुआ बढ़ाते हुए उसने कहा।

बूढ़े ने चुपचाप लोस की ओर से मुंह फेर लिया।

"आओ उमकातागेन, हम पाइप पियें! मैं अपनी पाइप तुम्हें भेंट में देता हूं।" यह कहकर लोस ने बूढ़े को पाइप थमा दी।

बूढ़े के चेहरे पर दुःखभरी मुस्कराहट दौड़ गयी।

"रूसी सरदार बिल्कुल बच्चा है," तंबाकू भरने के लिए पाइप आगे करते हुए बूढ़े ने कहा।

लोस ने पाइप में तंबाकू भर दी, अपने लिए एक सिगरेट बनायी और माचिस जलाकर बूढ़े के आगे धर दी। दोनों चुपचाप धुआं उड़ाने लगे।

"कहो, अब क्या होगा?" उमकातागेन ने ओझा से पूछा। भावुकता की लहर और पिशाच के डर के असर से वह धीरे धीरे रोने लगा। वह पाइप पी रहा था और उसके दुःखभरे चेहरे पर से धीरे धीरे आंसू लुढ़क रहे थे।

सारी घटना ही इतनी अपूर्व रही कि खुद ओझा भी अवाक् रह गया। आखिर अपने को संभालकर वह कोने में से फुसफुसाया :

"इस बुड्ढे का नाम फ़ौरन बदल देना चाहिए ताकि केले उसे पहचान न ले। उसकी राह हमें बंद कर देनी चाहिए।"

"तो मैं कौनसा नाम रख लूं?" जोश में विचार करते हुए उमकातागेन ने पूछा।

"बूढ़े बाबा, आप कोई रूसी नाम रख लें," अन्द्रेई ने कहा। "फिर केले आपका पीछा न करेगा।"

"हां रे हां, यह सही है! केले रूसी के पीछे कभी नहीं पड़ेगा," ओझा ने हामी भरी।

"फ़िर यह बताइये कि ज़िंदगी का नया क़ानून खोजने वाले उस रूसी का नाम क्या है?" लोस की ओर मुड़ते हुए एरमेन न पूछा।

"लेनिन! इल्यीच!"

"तो पिताजी को यही नाम दिया जाये।"

नया नाम पसंद करने में बिल्कुल देर न लगी। उसी क्षण बूढ़े का नाम इल्यीच रखा गया।

"कहो, ले लिया तुमने नया नाम?" ओझा ने पूछा।

"जी हां, मैंने ले लिया!" बूढ़े ने फ़ौरन जवाब दिया।

बूढ़े का नया नामकरण हो चुका था। अब उसकी परीक्षा की जा रही थी।

"उमकातागेन!" एरमेन ने पुकारा।

"उमकातागेन!" ओझा चिल्लाया।

बूढ़े ने कोई जवाब न दिया।

"इल्यीच!" एरमेन ने फिर पुकारा।

"वोय!" भूतपूर्व उमकातागेन ने बड़ी फ़ुर्ती से उत्तर दिया।

"उमकातागेन! इल्यीच! उमकातागेन! इल्यीच!" चारों ओर से लोग पुकार उठे।

ग्रौर जब जब 'उमकातागेन' नाम पुकारा गया, यारंग में गंभीर शांति फैली रही ग्रौर जब किसी के मुंह से 'इल्यीच' नाम निकला कि बूढ़े ने चौंककर फ़ौरन जवाब दिया।

"ग्रच्छा इल्यीच, ग्रब हम ग्रौर कश लगा लें," लोस ने ख़ुशी से कहा।

सत्रहवां ग्रध्याय

लोस सबेरे जल्दी जाग उठा। ग्रन्द्रेई उस समय कमरे में न था।

"वह शायद फिर शिकार खेलने चला गया। ठीक है, चैन की बंसी बजा ले," लोस ने सोचा। उसके मन में इस समय पितृ-प्रेम लहरा रहा था।

ऐसे दो व्यक्तियों की मित्रता क़ायम रहना बड़ा कठिन होता है जिन्हें काफ़ी लंबे ग्रर्से से एक दूसरे के साथ, एक छोटे से कमरे में रहना पड़ता हो, जो एक दूसरे की भली-बुरी बातों से परिचित हो चुके हों ग्रौर जिन्होंने ग्रनगिनत बार एक दूसरे की ज़िंदगी के क़िस्से सुन लिये हों। लेकिन लोस ग्रौर ग्रन्द्रेई सच्चे दोस्त थे।

लोस ने स्टोव जलाया, मांस का डिब्बा गरम करके नाश्ता किया ग्रौर चाय पीकर काम करने बैठा। लिखने की डेस्क के पास वह बैठा ही था कि उसके पैरों में तेज़ दर्द होने लगा। उसने ग़ौर से देखा तो वहां कुछ सूजन दिखाई दी।

"मेरे पैरों में कहीं स्कर्वी तो नहीं हुई?" उसने चुकची में सोचा।

ग्राइने के पास जाकर उसने मसूड़ों को भी देखा। वे भी कुछ सूज गये थे।

"धत्!" लोस ने कहा ग्रौर फिर काम में लग गया।

गत कुछ दिनों से वह गुबेर्निया क्रांति-समिति के लिए अपना प्रतिवेदन लिख रहा था और उन दिनों शायद ही खुली हवा में घूमने फिरने गया था। प्रतिवेदन काफ़ी बड़ा था।

"क्या कोई सोच भी सकता था कि मैं किसी दिन लेखक बन जाऊंगा!" लिखे हुए काग़ज़ों के ढेर पर एक नज़र दौड़ाते हुए लोस ने सोचा।

शाम हो गयी लेकिन जुकोव शिकार से नहीं लौटा।

"कहीं बरफ़ फटकर उसे तूदे पर बहाती हुई महासागर में न ले जाये।" इस विचार से लोस व्यग्र हो उठा और सागर को देखने के लिए बाहर चला गया।

सागर बिल्कुल शांत था। जहां तक नज़र पहुंच जाती थी, दूर तक फैले हुए हिमक्षेत्र ही दिखाई देते थे। सागर सुरक्षित था। बूढ़े कोमो को देखकर लोस उसके पास गया।

कोमो एक व्हेल के कंकाल पर बैठा हुआ पीतल की लंबी पाइप पी रहा था। यह काफ़ी बड़ा बूढ़ा आदमी था। अपनी सारी ज़िंदगी में वह कभी बीमार न पड़ा था और अब भी केवल बुढ़ापे के कारण वह अपने यारंग में बंधा सा पड़ा था।

"कहो कोमो, कैसे हो?" लोस ने पूछा।

"बहुत अच्छा! हमारे सभी शिकारी वहां गये हैं," पाइप से सागर की ओर संकेत करते हुए कोमो ने कहा। "अब की शिकार का अच्छा मौसम है। सीलों की कोई कमी नहीं! और, कभी कभी लख़्ताक भी काफ़ी मिल जाते हैं। तुम्हारा जवान भी वहां है।"

"क्या बरफ़ीले मैदान में इतनी दूर जाना ख़तरनाक नहीं?"

"नहीं, इस वक़्त कोई ख़तरा नहीं।" बूढ़े ने स्वच्छ आकाश की ओर देखा और फिर कहा: "अब पांच दिन तक हवा कोई तकलीफ़ न पहुंचायेगी।"

"तब तो ठीक है। अच्छा कोमो, मैं फिर अपने काम में लग जाऊं," लोस ने कहा। ऐसा लगा जैसे उसके सिर से कोई बोझ उतर गया हो।

"आखिर झोंपड़ी में बैठकर आदमी काम कैसे सकता है?" बूढ़े ने सोचा और फिर ग़ौर से कहा:

"आओ, फिर जाओ!"

लोस ने पहली मई के समारोह का एक कार्यक्रम बनाया।

"मैं अपना भाषण लिखूंगा, उसे ज़बानी याद करूंगा और बस, चुकची ही में दे मारूंगा," उसने निश्चय किया।

वह देर तक अपने भाषण के नोट लिखता रहा लेकिन उसे पूरा न कर सका।

"अब, ज़ारकालीन कामगारों की मई दिन की गुप्त बैठकें– क्या जानते हैं ये लोग उनके बारे में?" उसने सोचा। "और तानाशाही के खिलाफ़ छेड़ी गयी लड़ाई के बारे में भी? लड़ाई के नाम से इन्हें मालूम है सिर्फ़ कुश्ती लड़ना – बस एक पट्ठे की लड़ाई दूसरे पट्ठे के साथ। तानाशाही विरोधी संघर्ष की बात इन्हें कैसे समझायी जाये? बड़ी कठिन समस्या है!"

वह रात में देर तक लिखता रहा। एक के बाद एक उसके भाषण अग्नि की भेंट होते रहे और उन्हें जलकर खाक होते हुए देखकर वह यह भी सोचता रहा: "हां, ऐसे भी भाषण हो सकते हैं। देर तक लंबा धागा कातते रहो और आखिर सारी कोशिश जलकर ख़ाक हो जाती है।" तब अपनी दाढ़ी को झटका देकर वह फिर मेज़ पर बैठ गया।

सोने से पहले उसने बाहर जाकर फिर एक बार हिमक्षेत्रों पर नज़र दौड़ायी। सागर शांत था।

रात में दरवाज़े पर ज़ोरों की खटखट सुनकर लोस की नींद खुली। जल्दी जल्दी कपड़े पहनकर उसने ज़रा सा दरवाज़ा खोला और

झांककर देखा। उसे एक लंबा ग्रादमी ग्रौर एक ग्रौरत दिखाई दी। ग्रौरत का नाक-नक़्शा चुकची जैसा न था।

"रूसी सरदार, हमारी मदद करो। जल्दी मदद करो," ग्रादमी ने जोश के साथ कहा।

"तुम कहां से ग्राये? कौन हो तुम?"

"हम हैं याराक ग्रौर मेरी।"

"ग्रोहो, याराक!" उसे कमरे में खींचते हुए लोस चिल्लाया। "ग्राग्रो ग्रंदर, बैठो! हम चाय बनायेंगे। याराक, तुम प्राइमस स्टोव का उपयोग करना जानते हो?"

"जी, जानता हूं," याराक ने गर्व से कहा।

याराक ग्रौर लोस चाय बनाने में लग गये। मेरी चुपचाप लोस को देखती रही। दढ़ियल रूसी सरदार की बलिष्ठ भुजाएं देखकर जैसे वह गद्‌गद हो उठी।

तीनों चाय पीने के लिए ग्रभी बैठे ही थे कि कमरे में ग्रन्द्रेई घुस ग्राया।

"ग्ररे, यह क्या! ब्याह हो रहा है? कहो याराक, कैसे हो? ग्रौर मेरी तुम? देखो मैंने चार सील मारे हैं।" एक ही दम में उसने सारी बातें कह डालीं।

"काकोमेई!" याराक ने चकित होकर कहा ग्रौर फिर ग्रपना क़िस्सा शुरू कर दिया।

"मैं मेरी के साथ ब्याह करना चाहता हूं ग्रौर मेरी मेरे साथ," उसने ग्रंत में कह दिया।

लोस ने एक मोटी सी किताब निकाली।

"तो तुम दोनों ने ब्याह करने का निश्चय किया है न? बहुत ग्रच्छा! मैं ग्रभी तुम दोनों का ब्याह रजिस्टर किये देता हूं। कहो याराक तुम्हारी उम्र क्या है?"

"मुझे नहीं मालूम। हम कभी उम्र का हिसाब नहीं रखते। जब चार्ली ने मुझे अपने यहां रखा था उस समय मैं छोटा बच्चा था। मेरी मुझसे तीन साल छोटी थी।"

"और मेरी की उम्र क्या है?"

याराक के पीछे अपना मुंह छिपाते हुए मेरी ने जवाब दिया:

"चार्ली कहता है कि इन गरमियों में मैं इक्कीस साल की हूंगी।"

"मतलब यह कि याराक चौबीस साल का है। ठीक है। यही हम मान लें। वह दिखता भी है ऐसा ही।"

वह एक बड़ा सा काग़ज़ ले आया और उसपर मोटे मोटे तिरछे अक्षरों में लिखता गया:

प्रमाणपत्र

प्रमाणपत्र दिया जाता है कि नागरिक याराक तथा नागरिक मेरी थामसन का ब्याह चुकोत्स्क प्रदेश की कामचात्का क्रांति-समिति के स्थानीय कमिशनर के दफ़्तर में रजिस्टर किया गया।

कमिशनर लोस।
सेक्रेटरी जुकोव।

लोस ने प्रमाणपत्र पढ़ सुनाया। नवविवाहित दंपती उसे बड़े ग़ौर से सुनते रहे।

थामसन के नाम का उल्लेख होते ही याराक खीझ उठा, और पढ़ना खत्म होते ही कहने लगा:

"चार्ली का नाम इस काग़ज़ से हटा देना चाहिए। उसकी वहां क्या ज़रूरत?"

याराक ने देखा कि लोस ने मेज़ की दराज़ से एक छोटा सा लाल पत्थर निकाला और उसे माचिस से जलाया। पत्थर से गाढ़ा ख़ून सा टपकने लगा जिस तरह ज़ख्मी वालरस के बदन से टपकता है। लोस ने इस ख़ून की कुछ बूंदें प्रमाणपत्र पर गिरा दीं, फिर एक छोटी सी मुट्ठी पर लगाये गये लोहे के टुकड़े पर ज़रा सा थूककर वह टुकड़ा ख़ून के धब्बे पर पटक दिया और काग़ज़ को ज़ोरों से मेज़ पर पटक दिया।

याराक और मेरी ने सारी कार्रवाई में बड़ी दिलचस्पी दिखायी और अपने प्रदेश में इतना अच्छा क़ानून लाने वाले उस बड़े दढ़ियल आदमी की हर हरकत बड़े ध्यान से देखते रहे।

मुहर लगायी जाने के बाद लोस ने वह प्रमाणपत्र गंभीरता से याराक के हाथ में दे दिया।

"मैं तुम्हारा अभिनंदन करता हूं," उसने कहा और उनसे हाथ मिलाया। "याराक तुम बड़े अच्छे हो। तुम क्रांतिकारी हो! अन्द्रेई, ज़रा तर्जुमा करके उसे समझा दो!"

"मैं देखना चाहता हूं कि 'क्रांतिकारी' शब्द का तर्जुमा तुम कैसे करते हो। बात इतनी आसान नहीं," जुकोव ने जवाब दिया।

"कुछ फ़िक्र न करो अन्द्रेई, हम उसका तर्जुमा करा लेंगे। वे यह शब्द सीख लेंगे! ज़रूर सीख लेंगे।"

याराक ने ब्याह का कागज़ ले लिया, उसे सावधानी से तह किया और अपने सीने के पास छिपाकर रख दिया।

"अच्छा याराक, अब तुम कहां जा रहे हो?" लोस ने पूछा।

"पहाड़ियों में, बारहसिंगा-पालक के पास। रूलतिना ने अपने भाई हैमेलकोत के पास जाने को कहा है। फिर जब चार्ली मर जायेगा तब हम वापस किनारे की बस्ती में आ जायेंगे," याराक ने बड़ी ख़ुशी से अपनी बीवी की ओर आंख मारते हुए कहा।

अठारहवां अध्याय

याराक और मेरी के भाग जाने की ख़बर सारे किनारे पर जंगल की आग की तरह फैल गयी। हरेक की ज़बान पर उन्हीं की बात थी।

एनमकाई बस्ती में भी यह ख़बर जा पहुंची। तीग्रेना के दिल में इस समाचार से एक विचित्र हलचल सी पैदा हो गयी और साथ ही उसे प्रसन्नता भी हुई। लेकिन आसपास ऐसा कोई व्यक्ति न था जिसके साथ वह इस ख़बर के बारे में बातचीत करती। अपनी बहन के आने के बाद से नारगिनाउत ने तीग्रेना के साथ अपना मैत्री का व्यवहार छोड़ दिया था। तीग्रेना को अब अकेलापन अखरने लगा था। उसका एकमात्र आनंद था भावी बच्चे का विचार। अपने फूले हुए पेट पर हाथ फेरती हुई वह मन ही मन कहा करती: "वह यहां है, वह यहां है!" वह सच्ची स्त्री जो बनने जा रही थी!

अलितेत घर पर नहीं है यह जानते हुए भी उसने बूढ़े वाल के यारंग में जाने का निश्चय किया। अलेक से मिलकर तीग्रेना ने ख़ुशी से चिल्लाकर कहा:

"यहां मेरे पेट में है वह। मैं उसकी आवाज़ जो सुनती हूं।"

बूढ़ा वाल, अलेक और ख़ासकर वामचो तीनों तीग्रेना की ख़ुशी से ख़ुद भी गद्गद हो गये।

"अलेक, कहते हैं कि दढ़ियल सरदार ने मेरी को बताया है कि 'कोई भी व्यक्ति बिना ब्याहे रह नहीं सकता...' उसने उनके लिए आग और ख़ून से ब्याह का एक काग़ज़ तैयार किया—और ध्यान रखो कि वह पराया है—गोरा आदमी है..."

बूढ़े ने मुंह में से चिलम हटायी और कहने लगा:

"हां, वह जानता है। उसकी आंखें बारहसिंगे की आंखों जैसी हैं। अच्छे आदमियों को वाल फ़ौरन पहचान सकता है। मैं किसी

जानवर के चाल-चलन से उसका मन पहचान लेता हूं और आदमी को पहचानता हूं उसकी आंखों से। हमारे यहां कई तांग आये लेकिन किसी ने भी हमारे दिल की बात नहीं समझी। लेकिन यह दढ़ियल सब कुछ जानता है!"

बूढ़ा कुछ देर रुका, अपनी चिलम का एक कश लगाया और फिर बोला:

"लेकिन उसने ग़लती की; ज़रूर ग़लती की। उसे हमारे यारंग में नहीं ठहरना चाहिए था। मैंने पहले ही ताड़ लिया कि अलितेत अपने फंदे वापस ले जायेगा। अब हमें कहां से फंदे मिलेंगे? बिना फंदों वाला आदमी, बिना कुत्तों वाली बरफ़-गाड़ी के बराबर है।"

"वाल, अरे वह नया मेरिकन फंदे उधार देता है। दढ़ियल सरदार ने ही ऐसा करने को कहा है।"

"कौन यह ख़बर लाया?" वामचो ने पूछा।

"मुझे नहीं मालूम," तीग्रेना ने कहा। "लेकिन मैं जानती हूं कि उसने फंदे उधार देना शुरू कर दिया है। अलितेत भी अच्छी तरह जानता है। और इसी लिए तो वह ग़ुस्सा होकर गालियां बकने लगा था। अब वह चार्ली से मिलने गया है – शायद उससे शिकायत करेगा।"

"भले ही करे वह शिकायत। चार्ली लाल-नकुए की अब एक न चलेगी। पिल्ले की तरह ज़ंजीर में जकड़ गया है," वामचो ने कहा।

"मुझे लगता है कि अलितेत याराक के पास से कुत्ते लेने के लिए हैमेलकोत के यहां भी जायेगा। उसी ने तो चार्ली लाल-नकुए को कुत्तों का दल भेंट में दिया था। हो सकता है कि वह मेरी को भी ले आये!"

"लेकिन याराक के पास ब्याह का काग़ज़ है," वामचो बोला।

"सुना है कि काग़ज़ पर की मुहर रात में टूट गयी जब वे उसे सिरहाने रखकर सो गये थे। मुहर का एक छोटा सा लाल टुकड़ा

बचा है। याराक ने काग़ज़ लकड़ी के संदूक में रख दिया है और वह उसे हमेशा सीने से लगाये रखता है।"

"लेकिन मुहर के टूट जाने से अब वह बेकार हो गया होगा। आख़िर ब्याह के काग़ज़ से होता भी क्या है?" तीग्रेना ने पूछा।

बूढ़े वाल ने विचारपूर्ण मुद्रा से कहा:

"कहो, हर रेवड़ में चरवाहा क्यों होता है? साफ़ है कि बारहसिंगों को भेड़ियों से बचाने के लिए। हो सकता है कि चरवाहे की तरह ब्याह का काग़ज़ जवान जोड़े को बचाता हो। नये क़ानून के सभी रहस्य कौन जान सकता है?"

"हां, यह जानना मुश्किल तो है लेकिन है बड़ा दिलचस्प," तीग्रेना ने कहा।

"तीग्रेना, फ़िलहाल आये कहां है?" वामचो ने पूछा।

"मैंने सुना है कि वह रेवड़ों के साथ पहाड़ों के उस पार चला गया है। लोग कहते हैं कि गरमियों में वह अपने रेवड़ों को किनारे पर ले आयेगा। मैं समझती हूं कि उसने ब्याह कर लिया है।"

"देखो वामचो, तुम ज़रूर उस नये मेरिकन के पास जाओ और फंदों वाली ख़बर के बारे में पूछताछ कर लो। नहीं तो हम बिना फंदों के रह जायेंगे," बूढ़े ने कहा। उसने अपनी चिलम जलायी और कहने लगा: "इधर कुछ दिनों से किनारे पर काफ़ी ख़बरें उड़ रही हैं। लगता है कि कुछ न कुछ होकर रहेगा। मैंने सपने में देखा कि एक ख़रगोश ने एक भेड़िये को निगल लिया। एक छोटे से कमज़ोर ख़रगोश ने भेड़िये को खा लिया।"

लोरेन में आश्चर्यपूर्ण घटनाएं घट रही थीं।

मि० थामसन के मन में हर एक के प्रति और विशेषकर रूलतिना के प्रति तिरस्कार बढ़ने लगा था। वह किसी को भी अपने कमरे में नहीं आने देता और अपना खाना ख़ुद बना लेता था। सभी

के सो जाने के बाद वह घर से बाहर निकलता था। उसने मि० साइमन्स तक से मिलने जाना बंद कर दिया।

"साइमन्स चाहता है कि मैं मेरी को यहीं छोड़कर चला जाऊं," मि० थामसन ने सोचा। "वह चाहता है कि चार्लस थामसन अपने साथ सिर्फ़ बैंक का हिसाब-किताब लेकर कनाडा चला जाये और उसके वारिस यहीं रहें। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि उसके दिल में क्या है। गीदड़ कहीं का!"

और शीघ्र ही मि० थामसन और मि० साइमन्स का मिलना-जुलना बंद हो गया। इसका स्पष्ट कारण किसी की भी समझ में न आया।

शिकारियों ने चार्ली लाल-नकुए के पास ख़बरें ले जाना बंद कर दिया। उसे अब ज़रा सी भी खबर न थी कि मेरी और याराक कहां हैं। अपनी खिड़की में से मि० साइमन्स को रोवेंदार खालें सुखाते हुए देखकर वह पागल हो उठता और हाथों को पीछे की ओर बांधे, पिंजड़े में बंद शेर की तरह अपने कमरे में चहलक़दमी करता रहता। ज़िंदगी भर बड़ी सावधानी से डाली हुई आदतें काफ़ूर हो गयी थीं। कैलेंडर की तारीख़ें काटना उसने छोड़ दिया और पत्र-पत्रिकाएं पढ़ना भी। वह अब वक़्त बेवक़्त सोता और देर तक टकटकी बांधे सोचता रहता:

"काश अभी गरमियों के दिन होते... इसी वक़्त बरफ़ ख़तम हो जाती – अब मैं एक क्षण भी यहां नहीं रहना चाहता। लेकिन बच्चों का क्या होगा? उनकी क्या चिंता! उनकी नसों में नार्वेजियन ख़ून बहता है। उस जंगली ख़ून से मिला हुआ... नहीं, नहीं। बेन तो सच्चा युरोपियन है। वह वाक़ई मेरा बेटा है। मेरी भी... लेकिन बेर्ता? बस, नाम ही की बेर्ता है और कुछ नहीं। बेन अनपढ़ है! बारह साल का हो जाने पर भी लिखना-पढ़ना कुछ नहीं जानता!

क्या सभ्य संसार में ऐसी बात कभी संभव है—और वह भी धनी पिता के होते हुए? यहां वह गंदे देसी बच्चों के साथ यारंगों का चक्कर काटता है और भयंकर मांस खाता है—बड़े ज़ायक़े के साथ! आख़िर आज तक मैं क्या करता रहा?"

मि० थामसन खाट पर से उछल पड़ा और उदास होकर फिर से कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

खिड़की में से उसने देखा कि अलितेत अपनी बरफ़-गाड़ी के पास बच्चों से घिरा खड़ा है। मि० थामसन दौड़ता हुआ बाहर आया।

"अरे, कितनी देर से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूं," उसने अधीरता से कहा।

"मैं क़र्ज़ वसूल करता हुआ टुंड्रा में घूम रहा था," अलितेत ने जवाब दिया।

दोनों अंदर चले गये।

"अलितेत, अब बुरे दिन आये हैं!" आरामकुर्सी में बैठते हुए चार्ली ने कहा।

"हां, चार्ली, बहुत बुरे दिन। मेरे कान तो उस रूसी सरदार के बारे में कुछ भी नहीं सुनना चाहते। मेरी आंखें उसे देखने से इन्कार करती हैं। तुम्हारे यहां आते समय मैंने रास्ते में उसे टालने की कोशिश की लेकिन मुझे लोमड़ी की कुछ खालें देनी पड़ीं—कुछ जुर्माने-वुर्माने के तौर पर," रसीद दिखाते हुए अलितेत ने कहा।

"क्या? एक सौ खालें?" गालियों की वर्षा करते हुए मि० थामसन ने कहा। "लेकिन यह तो सरासर डकैती है! चोर कम से कम तब चोरी करता है जब मालिक घर पर न हो। लेकिन इसने तो ख़ुद तुम्हारे हाथों से खालें छीन लीं! मुझसे भी उसने तैंतालिस खालें मार लीं।"

"जब रूसी सरदार ने मेरी खालें अपने थैले में भरीं तब मेरा कलेजा उछलकर बाहर आने को होने लगा। आख़िर यह सरदार

हमारे किनारे पर आया किस लिए? उसके बग़ैर ही यहां अच्छा था–अभी अभी हमने ज़ोरदार व्यापार शुरू किया था!"

"और कुछ सुना तुमने?" मि० थामसन ने चिड़चिड़ाकर पूछा।

"हां, उसने कहा कि मुझे स्कूनर के साथ लेनदेन नहीं करना चाहिए। अगर मैं करूं तो वह मुझसे सब कुछ छीन लेगा–मेरे कुत्ते तक।"

"कहो, अब की बार तुमने कितनी खालें जमा कीं?"

"ओय्, बहुत सी। लेकिन मैंने उन्हें छिपाकर रखा है। मैं फिर ब्राउन की राह देखूंगा। उसने मेरे साथ अच्छा सौदा किया है। हमने लिखा-पढ़ी से भी कुछ व्यापार किया है।" अलितेत ने वही 'काला गोबरैला वाला काग़ज़' पेश कर दिया।

मि० थामसन ने चश्मा पोंछकर काग़ज़ पढ़ लिया।

"कहो क्या लिखा है? काग़ज़ कुछ ख़राब तो नहीं है न?" चार्ली की मुखमुद्रा देखते हुए अलितेत ने चौंककर पूछा।

"ज़रा ठहरो, ज़रा ठहरो। मुझे फिर एक बार पढ़ने दो। मैं ठीक से देख नहीं पा रहा हूं न," चार्ली ने जवाब दिया और मन ही मन सोचता रहा कि क्या कहा जाये।

"ठीक है अलितेत, यह काग़ज़ माल ही के जैसा है। मैं भी इस तरह का लेनदेन करता हूं। अरे, मैं तुमसे कहना भूल ही गया कि इन गरमियों में कप्तान ब्राउन इधर नहीं आयेगा। उसका स्कूनर ख़राब हो गया है और उसकी मरम्मत में काफ़ी देर लगेगी।"

"ऐय्येये!" सिर हिलाते हुए अलितेत ने कहा। "ख़ुद ब्राउन ही अपने स्कूनर के बारे में डर रहा था। तूफ़ान को देखते हुए वह काफ़ी हल्का था। काग़ज़ात के मुताबिक़ मैंने अपने पास के सभी वालरस-दांत और व्हेल की हड्डियां उसपर चढ़ा दी थीं। लेकिन फिर भी यह शायद काफ़ी न था। इस वक़्त मैं रोवेंदार खालें किसके

बेचूं? बहुत खालें हैं मेरे पास। नये मेरिकन को ये खालें मैं कभी न बेचूंगा। वह उस दढ़ियल रूसी से मिला हुआ है।"

"इन गरमियों में हमें अपनी खालें खुद ही अमरीका ले जानी होंगी। तुम्हारी व्हेल-नाव के सहारे यह आसानी से हो सकेगा।"

"हां, मेरी व्हेल-नाव एक अच्छी और मज़बूत नाव है।"

"तो फिर तुम मुझे अमरीका के किनारे ले चलो—मेरे पास भी पंद्रह सौ खालों का अंबार लगा है। जाड़ों में अमरीका में जब भाव चढ़ जाता है तब मैं तुम्हारी और अपनी खालें बेच दूंगा और फिर कप्तान ब्राउन के साथ वापस तुम्हारे पास आऊंगा। वह मेरा व्यापारी दोस्त है। हम अपना स्कूनर एनमकाई नहीं लायेंगे बल्कि ज़रा दूर दर्रे के पीछे खड़ा कर देंगे जिससे कोई उसे देख न पाये। समझे?"

"हां, ठीक है," अलितेत फुसफुसाया। "अच्छा हो अगर वामचो उसे न देखे। वह बिल्कुल बदल गया है और रूसियों से मिल गया है।"

"और अलितेत, ब्राउन की तरह मैं भी तुम्हें खालों के लिए काग़ज़ लिख दूंगा।"

"अच्छा चार्ली! बहुत अच्छा!"

"देखो अलितेत, रिन्तेऊ से बचे रहना क्योंकि उन लोगों ने उसे यहां का सरदार बनाया है। हः हः! सरदार! अगर मैं न होता तो उसे अपना कहने को कोई यारंग तक न मिलता। यह रूसी सरदार हमारे लोगों को बिगाड़ रहा है। अलितेत, मुझे डर लगता है कि शायद वह हमें खालें बाहर न ले जाने देगा।"

"तो हमें उसका ख़ातमा कर देना चाहिए!" अलितेत फुफकार उठा। "और उस नये मेरिकन के गोदाम में आग लगा देनी चाहिए। तब तुम और मैं दोनों फिर से अपना व्यापार शुरू कर सकेंगे। बस,

उसका ख़ातमा होना चाहिए। उसी ने तो तुम्हारी बेटी को भगा ले जाने में मदद दी थी। अब वे हैमेलकोत की बस्ती में टिके हुए हैं।"

"रूलतिना के भाई के यहां?"

"हां, हां!"

मि० थामसन ने अपनी पाइप जलायी और कमरे में टहलने लगा।

"चार्ली, अगर हम किसी तरह उस रूसी को पहाड़ी में ले जा सकें तो मैं वहां उसे मार डालूंगा," दरवाज़े की ओर सावधानी से देखते हुए अलितेत फुसफुसाया।

"अगर तुम चाहो तो मैं ऐसा बंदोबस्त कर दूंगा ताकि तुम पहाड़ियों में उससे मिल सको!"

"ऐ, मैं तो चाहता हूं, बहुत चाहता हूं! लेकिन तुम करोगे कैसे?"

"ठहरो, मैं अभी वापस आता हूं।"

मि० थामसन ने अपने दरवाज़े के बाहर कुछ कूड़ा-कचरा बखेर दिया और रूलतिना को पुकारने लगा।

"अरी कुटनी, तुमने मेरी को भगाकर हैमेलकोत के पास भेज दिया। तो क्या इसका मतलब यह है कि अपना आंगन भी मैं ही साफ़ करूं? चल, झाड़ू लगा," वह चिल्लाया।

दरवाज़े को जानबूझकर अधखुला रखकर वह कमरे में वापस चला गया।

रूलतिना ब्रुश और कचरा उठाने का फावड़ा लेकर दरवाज़े के पास आयी और उसने चार्ली को ज़ोरदार आवाज़ में यह कहते सुना:

"अलितेत, फ़ौरन हैमेलकोत के पास जाओ और मेरी को और मेरे कुत्तों को वापस ले आओ।"

दरवाज़े के पास जाकर उसने दरवाज़ा बंद कर लिया और अलितेत की ओर झुककर फुसफुसाते हुए कहा:

"देखो, उसने हमारी बात सुन ली है। अब इस ख़बर के फैलने में देर न लगेगी। रूसी सरदार के पास भी ज़रूर यह ख़बर पहुंच जायेगी। हो सकता है कि अब तुम्हें पहाड़ियों में उससे मिलने का मौक़ा मिल जाये।"

"ऐ, चार्ली, कितना बड़ा दिमाग़ है तुम्हारे पास! सचमुच मेरिकन दिमाग़!" अलितेत ने कहा। उसकी आंखें चमक उठीं।

उन्नीसवां अध्याय

प्रशांत प्रभात का समय था। न कोई चीख़-चिल्लाहट थी और न खड़खड़ाहट ही। टुंड्रा की शांति अविचल थी। घाटियों और पहाड़ी दर्रों पर से हवा बहती जा रही थी। जबतब उसकी धाराएं इंद्रियगोचर होती थीं और शांत वातावरण में बड़ी बड़ी नदियों के पानी की तरह मंथर गति से बहती थीं और दूर दूर तक फैले हुए टुंड्रा पर विशाल और गहरा नीला आकाश तना हुआ था जिसमें छोटी सी बदलियां तक न थीं।

एक चपल और फुरतीली सफ़ेद लोमड़ी अपनी मांद से बाहर निकली। शिशिर के मध्य में यह बिल्कुल बरफ़ की तरह सफ़ेद थी लेकिन बसंत की धूप में उसका रंग फीका पड़ गया था और उसकी खाल ने अब हल्का पीला रंग धारण कर लिया था। इस मादा लोमड़ी ने शीघ्रता तथा चिंता से चारों ओर देखा और फिर ओझल हो गयी।

शीघ्र ही लोमड़ी के आठ बच्चे मांद में से लोटते-लुढ़कते बाहर आये। ये बिल्कुल नन्हे-मुन्ने नासमझ जीव थे और मांद के मुंह के पास एक दूसरे से लिपट-चिपटकर खड़े थे। मां ने उन्हें अपनी थूथनी से अलग कर दिया और वह दुलकी चाल चलती हुई नाश्ते

की खोज में रवाना हो गयी। बच्चे घबड़ाये हुए किंतु बड़े कुतूहल से अपने इर्दगिर्द देखते रहे। आज ही पहली बार उन्होंने दुनिया देखी थी। गरम सूर्य-किरणों में उन्होंने अपने बदन सेंक लिये और इधर उधर कुलेलें करने लगे। यकायक बड़ी बड़ी आंखों वाले ध्रुवप्रदेशीय उल्लू की काली छाया उनके ऊपर मंडराने लगी और उन्हें पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई पड़ने लगी। लोमड़ी के बच्चे झट से मांद में घुस गये।

वहां वे थरथराते हुए और अधीरता से अपनी मां की प्रतीक्षा करते हुए बैठे रहे। वह प्रायः उनके लिए एकाध ज़िंदा चूहा, सफ़ेद तीतर या किसी भेड़िये के भोजन से बचे हुए बारहसिंगे के मांस का टुकड़ा या बहेलियों द्वारा शिकार के लिए रखे गये सील के मांस का टुकड़ा ले आती।

मां लोमड़ी एक चूहे को अपने बच्चों की ओर दौड़ाती हुई आ पहुंची। जोश में अपनी नन्ही काली थूथनियों को झटके देते और हवा में पंजे उठाते हुए वे अपने शिकार पर झपट पड़े और अपने तेज़ नन्हे पंजे उसमें गड़ा दिये। इस तरह लोमड़ी के बच्चों ने ज़िंदगी का दस्तूर सीख लिया। जब उनमें और तजरबा आयेगा तब वे भी लंबे-चौड़े टुंड्रा में हिम्मत के साथ अपना क़दम बढ़ायेंगे और बरफ़ में उनके पदचिन्हों की लंबी लंबी रेखाएं बन जायेंगी।

बूढ़ा वाल भी अंधियारी मांद जैसे अपने यारंग में से बाहर आया और सागर में से उठने वाले सूरज की ओर आंखें सिकोड़कर देखने लगा। अपनी पेटी उसने कस ली और सफ़ेद लोमड़ियों की मांदें खोजने के लिए धीरे धीरे टुंड्रा में चला गया। इन मांदों को बहुत पहले ही खोज लेना ज़रूरी था। इससे पता चल सकता था कि फंदे लगाने की जगहों में लोमड़ियों का आना जाना बढ़ाने की दृष्टि से आमिष कहां रखा जाये।

बूढ़ा लंगड़ाता-कुदकता चला जा रहा था। उसके आगे उसकी नीली परछाईं लहरा रही थी। वह सोच रहा था: "सिर्फ़ दो सफ़ेद लोमड़ियों के बदले में अब बंदूक़ मिलती है और एक खाल देकर इतनी चाय कि साल भर पीते रहो। फिर बहेलिये इस बात का ख़्याल कैसे न रखें कि अपना शिकार अच्छा हो?"

बूढ़ा वाल एक छोटी सी पहाड़ी पर चढ़ा और अपने हाथ ऊपर उठा दिये। उसकी बहुत ही लंबी और नाचती हुई सी परछाईं चमकदार बरफ़ पर से होती हुई सारे टुंड्रा में इतनी दूर तक फैल गयी कि उसने धरती का किनारा ही छू दिया।

अपनी भीमाकार परछाईं पर आश्चर्य करते हुए वह अपने हाथों को इधर उधर हिलाता रहा। इससे एक इतना विशाल कोण बन गया जिसकी एक दिन में परिक्रमा कर सकना किसी भी कुत्ता-दल के लिए संभव न था।

लोमड़ियों के संभाव्य अड्डों को ध्यान में रखते हुए वाल टुंड्रा में देर तक चलता रहा। शाम को उसे बड़ी थकावट महसूस हुई और धूप से गरम हुई एक चट्टान देखकर वह उसपर बैठ गया और कुछ ही देर में खर्राटे लेने लगा।

बूढ़ा सबेरे से बाहर गया था। उस दिन वह घर लौटा ही नहीं। दो दिन ऐसे ही बीत गये और तीसरे दिन वह मरा हुआ पाया गया। उसका एक कान कट गया था और फटे हुए गाल में से उसके दांत दिखाई दे रहे थे। उसके चेहरे पर भूरा रीछ अपने पंजों के भयंकर चिन्ह छोड़ गया था। रीछ की लाश के नीचे बूढ़ा अस्तव्यस्त पड़ा था। उसका एक हाथ लगभग कोहनी तक उस जंगली जानवर के जबड़े में घुसा हुआ था जब कि दूसरे हाथ की ढीली सी पकड़ में रीछ की रोवेंदार गर्दन थी। यह स्पष्ट था कि सोये हुए बूढ़े पर रीछ ने हमला किया था। लेकिन वाल ने अपनी जान क़ुर्बान करके टुंड्रा के राजा को जीत लिया था।

बूढ़े वाल की तरह मौत का शिकार होने की वारदात कोई आम बात न थी और इसी लिए यह दुःखद वार्ता हर यारंग में चर्चा का विषय बन गयी थी। सागर-विद्या का अच्छा जानकार और एक चतुर सलाहकार वाल भूरे रीछ के साथ प्राणघातक संघर्ष करते हुए सच्चे शिकारी की तरह काम आया था।

वामचो को पितृवियोग से बड़ा दुःख हुआ। पिता की अंत्येष्टि क्रिया के बाद वह अपने यारंग में बंद रहा। परंपरानुसार उसे तीस दिन तक शिकार करने की मनाही थी। ताज़े पानी की बरफ़ लाने के लिए अलेक सोते पर गयी थी और दुःखद विचारों में मग्न वामचो अकेला चिलम पीता हुआ पोलोग में बैठा था। तनहाई बुरी बला है और सूना यारंग जैसे काटने को होता है। यारंग में अगर बच्चे जल्दी पैदा हो जाते तो कितना अच्छा होता। आख़िर बिना शोरग़ुल के यारंग की शोभा ही क्या?

बाहर शिकारियों की भीड़ से घिरा हुआ तूमातूगे बड़े जोश में वे ताज़ी ख़बरें सुना रहा था जो उसने अभी-अभी ओझा कोराउगे से सुनी थीं।

"वामचो 'अध्यक्ष' बन गया है, समझे?" तूमातूगे कह रहा था। "लेकिन हमारे लोगों को ये दूसरे नाम क्यों दिये जा रहे हैं? कोराउगे का कहना है कि 'इसी से तो बूढ़ा वाल मर गया।' फिर मैं आप ही से पूछता हूं कि यह वामचो किस क़िस्म का सरदार है? अरे, उसके पास कुत्तों का एक पूरा दल भी तो नहीं। बारह की जगह सिर्फ़ सात कुत्ते हैं उसके पास! ऐसे सरदार-अध्यक्ष पर पिशाचों को बड़ा ग़ुस्सा आया और इसी से वह बदक़िस्मती का शिकार हो गया।"

तूमातूगे की बात सुनकर शिकारी कांप उठे। एक तूमातूगे था कि हर ख़बर सब से पहले उसी को मिलती थी! अलितेत के यारंग में उसका जितना आना जाना था उतना और किसी का न था।

"और वैसे हमारे किनारे पर सरदारों की ज़रूरत भी क्या?" तूमातूगे ने कहा। "इससे पहले कहां थे सरदार-वरदार? बिना सरदार के भी लोग पैदा होते और ज़िंदगी बसर करते आये हैं। उस दढ़ियल रूसी ने ही ये सरदार बनाये हैं—और कोई जानता नहीं कि किस लिए? मुझे ऐसा लगता है कि यह दढ़ियल किनारे पर अपने सरदारों-अध्यक्षों की जमात बसाना चाहता है! कोराउगे ने कहा कि रीछ को अध्यक्ष की गंध मिली और इसी से वह किनारे के इतने नज़दीक आ पहुंचा। पहले कभी ऐसा न हुआ था। भूरा रीछ रहता है पहाड़ियों में। यहां उसका क्या धरा है?"

"हां भई, ठीक तो लगता है," शिकारियों ने सोचा। "भला, जब वामचो अध्यक्ष न बना था तभी इस रीछ ने वाल को क्यों न मार डाला?"

बात सब के लिए बिल्कुल स्पष्ट हो गयी। लोगों ने दांतों तले उंगली दबायी कि कितनी आसानी से ओझा कोराउगे ने रहस्य का पर्दाफ़ाश कर दिया। वे ख़ुद कभी इसका अनुमान तक न कर पाते! हवा से उड़ाये जाने वाले पर के वेग से नया अशुभ शब्द 'अध्यक्ष' सारे किनारे पर फैल गया।

क़बीला सोवियत के अध्यक्ष वामचो के यारंग में भी समाचार पहुंच गया। यह ख़बर उसने उत्तेजित अलेक ही के मुंह से सुनी। टब में बरफ़ के टुकड़े डालते हुए अलेक ने कहना शुरू किया कि किस तरह कोराउगे ने रीछ वाली वारदात को एक दैवी कोप का स्वरूप दिया है। बोलते समय उसका बदन कांप रहा था। यहां तक कहा गया था कि अगर वामचो सरदार बना रहा तो अगली बारी अलेक ही की होगी।

वामचो ने एक छोटे से गंदे-चिकने संदूक में से एक काग़ज़ निकाला। काग़ज़ कहता था कि साथी वामचो एनमकाई क़बीला

सोवियत का अध्यक्ष है। वामचो उस काग़ज़ से 'बोल' नहीं सकता था लेकिन रूसी सरदार ने उसके लिए यह बातचीत पहले ही कर डाली थी। उस समय वामचो को यह सब बड़ा मनोरंजक लगा और उसके चेहरे पर मुस्कराहट भी दौड़ गयी। लेकिन अब देखिये, यह मनबहलाव उसे कितना महंगा पड़ा–रीछ ने उसके पिता ही को मार डाला।

विचारों में डूबा हुआ वामचो काग़ज़ को हाथों में उलटता पुलटता रहा।

अलेक उसके पास ही बैठी थी। कंधे की एक हरकत के साथ उसने अपना रोवेंदार लिबास हटाया। वामचो से सटकर बैठी और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहने लगी:

"वामचो, लोग कहते हैं कि तुम्हें फ़ौरन कोराउगे के पास जाना चाहिए... मैं जानती हूं कि तुम्हें उससे नफ़रत है। फिर भी तुम्हें जाना चाहिए... आख़िर लोग बेकार थोड़े ही कहते हैं। मेरे पेट में जो जीव बढ़ रहा है उसके लिए तुम्हें कोराउगे के पास जाना ही होगा। कोराउगे नहीं चाहता कि हमारे यारंग पर और मुसीबतें आ जायें।"

वामचो ने बीवी की ओर देखा। वामचो के चेहरे पर गहरे दुःख का भाव था। अलेक के उदर पर उसने अपना हाथ रखा और उसे थपथपाकर कहा:

"अपने पेट में बढ़ रहे जीव से तुम कह दो कि मैं फ़ौरन कोराउगे के पास जाऊंगा।"

वामचो ने कंधों पर एक परका डाला, काग़ज़ को तह करके अपनी छाती के पास छिपाया और बाहर चला गया।

चमकती हुई आंखों से अलेक उसकी ओर देखती रही।

सिर झुकाये और अपराधी बालक की सी मुखमुद्रा धारण किये वामचो रेंगकर ओझा के पोलोग में चला गया। कोराउगे वहां अकेला

बैठा अपने पंजा-नुमा नाखूनों से सिर खुजला रहा था और जूंओं का शिकार कर रहा था।

हमेशा की तरह सलाम-दुआ का इंतज़ार किये बिना ही वामचो ने ओझा की ओर देखकर कहा:

"कोराउगे, अब मैं भी जान गया कि मेरा बाप क्यों मरा। यह रहा मुझे अध्यक्ष बनाने वाला काग़ज़।"

"लाओ, मुझे दे दो। मैं उसे अच्छी तरह देख तो लूं!" कोराउगे टर्राया।

ओझा ने अपनी आंखें सिकोड़ीं और थरथराते हाथों से वह काग़ज़ अपने हड्डीले घुटनों पर फैला दिया।

"देखो, कैसे छूट भागने की कोशिश कर रहा है!" वह गुर्राया।

कोराउगे ने काग़ज़ अपने पंजे से पकड़ा और बारीकी से उसकी जांच शुरू कर दी।

इधर वामचो का दम सूखता जा रहा था।

"मेरे और नज़दीक आओ!" कोराउगे ने उसे इशारा किया। "खुद ही देख लो... इसपर पहाड़ियां दिखाई दे रही हैं न? और यह देखो! इधर एक ओर से रीछ का सिर झांक रहा है..."

वामचो ने देखा और उसकी घिग्घी बंध गयी। काग़ज़ पर नीचे की ओर जहां मुहर लगी हुई थी वहां उसे सचमुच एक रीछ का सिर और पहाड़ियों की रूपरेखा दिखाई दी।

"अध्यक्ष का ओहदा छोड़ दो! और सुनो, इस काग़ज़ को तांगों की आग में जला दो। तांग वाली तख्तियों की कुछ छीलन इकट्ठा करो, उसपर दीये की तांग वाली चरबी उंडेलो और लगा दो उसमें आग! ध्यान रखो कि उसका गंदा धुआं यारंगों पर न फैल जाये। बस्ती के सभी लोग जमा रहें और देखें कि पिशाचों की

ताक़त के ख़िलाफ़ बेकार ग़ुस्सा करते हुए वह किस तरह ऐंठता-मरोड़ता और फुफकारता है। अगर तुम ऐसा न करो तो अलेक जब कंद-मूल बटोरने जायेगी तब आकर 'वह' उसे मार डालेगा। लो, पकड़ो!" कहकर ओझा ने बड़ी नफ़रत के साथ वह काग़ज़ फेंक दिया।

काग़ज़ उठाकर वामचो चला गया। गलियारे में उसे तीग्रेना मिली। वह लज्जित होकर मुस्कराया और तीग्रेना के आगे सिर झुका लिया। अपने बड़े पेट को हाथों से संभालते हुए वह अपलक नेत्रों से उसकी ओर ताकती रही। किवाड़ की दिशा में हाथ हिलाकर उसने कहा :

"जाओ! वामचो, कैसे बेवक़ूफ़ सील हो तुम!"

शीघ्र ही सारी बिरादरी बस्ती की सीमा पर जमा हो गयी। छोटे से बरफ़ीले किनारे पर, जहां वामचो ने अपने लाड़ले कुत्ते चेगित के गले पर छुरी फरी थी उसन लकड़ी की छीलन का एक ढेर बनाया। लोग इस जगह को घेरकर खड़े रहे और सांस रोककर ओझा की हरकतें देखते गये। कोराउगे ने अपने लबादे में से मिट्टी के तेल की एक बोतल निकाली, छीलन के ढेर पर तेल छिड़का और बोल उठा :

"लगाओ दियासलाई!"

वामचो ने आग जलायी। आग इतनी जल्दी धधक उठी कि वह झट से पीछे हट आया।

"फेंको, उसे जल्दी आग में फेंक दो!" ओझा बोला।

वामचो ने काग़ज़ आग में फेंक दिया। एक क्षण में वह जल गया और उसका कोई नामोनिशान बाक़ी न रहा। आग शीघ्र ही शांत हो गयी।

"उस जगह पर बरफ़ का ढेर लगा दो ताकि हवा उसको समतल फैला दे और इस भद्दी जगह की कोई निशानी न बचे।

वामचो जब घर लौट रहा था तो सोचता जा रहा था: "बिल्कुल वही बास जो 'तीन-पहाड़ियों' वाले चारे में ग्रा रही थी। तांग वाली दीये की चरबी की बास को कोई भूल नहीं सकता... लेकिन यह कैसे हुग्रा कि सारी ग्रौरतें उस काग़ज़ की होली देखने इकट्ठा हुईं पर तीग्रेना नहीं ग्रायी? कुछ समझ में नहीं ग्राता! ग्रौर जब गलियारे में उससे भेंट हुई तब तीग्रेना इतने ग़ुस्से में क्यों थी? यह जानना मुश्किल है कि तीग्रेना क्या सोचती है।"

जिस समय बस्ती के सारे लोग होली को घेरकर खड़े थे उसी समय तीग्रेना को प्रथम प्रसव-पीड़ा ने घेरा था ग्रौर वह जल्दी जल्दी ग्रपने ख़ास पोलोग में चली गयी थी।

परंपरा के ग्रनुसार यह ग्रावश्यक था कि बच्चा पैदा होते समय स्त्री ग्रकेली ही हो; वहां पर ग्रौर कोई न रहे। उसे देखना तक मना था। दीया जलाने की भी इजाज़त न थी। हां, पिशाचों के छल-कपट की कोई सीमा थोड़े ही थी! जहां मनुष्य का जन्म होता है उस स्थान को बड़ी सावधानी से छिपाये रखना ग्रावश्यक था। लेकिन पिशाच भी कम चालाक नहीं होते। उन्होंने ज़ोरदार हवा पहले ही चला दी थी। यारंग की छत को ढंकने वाली वालरस की सूखी खालें ज़ोरों से खड़खड़ाने लगी थीं...

ग्रंधेरे पोलोग में बारहसिंगों की खालों से बनाये गये एक ख़ास कोच पर तीग्रेना लेटी थी। भयंकर वेदना से उसका शरीर ऐंठ रहा था लेकिन वह करती क्या? वह जानती थी कि ज़रा सा कराहना भी उसके लिए मना है। पिशाचों को पता नहीं लगना चाहिए था कि यहां बच्चा पैदा हो रहा है। वह माता बनना चाहती थी न? पैदा होने वाले बच्चे के बारे में विचार करती हुई वह ग्रपनी घोर यातनाग्रों को दबाने की कोशिश कर रही थी। वह सोच रही थी कि यह बच्चा ग्रागे चलकर सच्चा शिकारी बनेगा या सच्ची ग्रौरत।

अकथनीय आनंद और तीव्र पीड़ा का संघर्ष चल रहा था। एक क्षण वह आंसुओं के कुहरे में से मुस्करा देती तो दूसरे ही क्षण हवा की सांय सांय से घबड़ा उठती। बीच बीच में वह घबड़ाहट में यह सोचकर सांस रोक लेती कि कहीं उसके अस्तित्व का पता किसी को न लग जाये। हवा सनसना उठी। मतलब यह कि पिशाच कहीं नज़दीक ही था।

भयाकुल तथा चिंताग्रस्त तीग्रेना अनिश्चित सी व्यथा से छटपटाती वहीं पड़ी रही और राह देखती रही कि कब नवजात शिशु की पहली चीख़ सुनाई दे। उसने दूसरी औरतों से सुन रखा था कि प्रसूति कभी कभी बड़ी कठिन होती है और तब एक तख़्ते की मदद से बच्चे को खींचकर बाहर निकालना पड़ता है। लेकिन ऐसे मामलों में पिशाच को फ़ौरन पता चलता है कि बच्चा कहां पैदा हो रहा है और तब बच्चा मर जाता है।

नहीं, तीग्रेना ज़रा सी भी आवाज़ न निकलने देगी – भले ही प्रसूति में उसे तीन दिन भी क्यों न लग जायें। ज़रूरत पड़ने पर वह चुपचाप मर जाने को भी तैयार थी।

यकायक चीख़ पड़ने की भावना ने उसे विवश सा कर दिया। लेकिन उसने अपने दांत हाथ में इस तरह गड़ा दिये कि हाथ से ख़ून निकल आया। इस तरह उसने अपनी भयंकर यातना पर क़ाबू पाने की कोशिश की। जब जब उसे महसूस हुआ कि वह मूर्छित होने जा रही है तब तब वह अपने ही को दांतों से काटती गयी।

तीग्रेना का शरीर गरम हुआ। उसे प्यास लगी। उसके होंठ झुलस से गये। लेकिन अब वह नापाक थी और रोज़मर्रा के बर्तनों को छू न सकती थी। नये बर्तन बनाने के लिए उसे समय नहीं मिला था।

पोलोग के बाहर स्त्रियों की एक भीड़ लगी थी। उनके चेहरे चिंताग्रस्त थे और उनमें से हर कोई कान खड़े करके बच्चे की चीख़

या मदद के लिए तीग्रेना की पुकार की प्रतीक्षा में थी। हवा के गर्जन-तर्जन में गलितगात्र स्त्री की कमज़ोर आवाज़ का सुनाई देना बड़ा कठिन था। लेकिन इधर यातनाग्रस्त औरत के पोलोग में सन्नाटा छाया हुआ था।

आख़िर रात में तीग्रेना को नवजात शिशु का स्वर सुनाई दिया। अपनी बची-खुची ताक़त बटोरकर प्रसव संबंधी सारा काम उसी ने कर लिया। अपने सिर का एक बाल उखाड़कर उसने बच्चे की नाल बांधी, अपने दांतों से उसे काटा, उसपर बर्च वृक्ष की छाल की राख छिड़की और फिर खालों के कोच पर लेट गयी – श्रांत किंतु ख़ुशी से गद्गद।

नवजात शिशु रो पड़ा।

तीग्रेना बड़ी कोशिश करके उठी और बच्चे का चेहरा निहारते हुए फुसफुसाने लगी :

"चिल्लाओ, मेरे नन्हे, ज़ोर से चिल्लाओ! अपने बाप वामचो की तरह घुन्ने न बनो!"

बच्चे की आवाज़ सुनते ही बाहर खड़ी स्त्रियों ने ख़ुशी से एक दूसरी की ओर देखा। उनमें से एक तीग्रेना के पोलोग में घुस गयी। उसने ढिबरी जलायी और बच्चे को उठाकर बाहर ले आयी। शीघ्र ही बच्चे के बदन में बरफ़ मली गयी और फिर उसे अंदर लाया गया। वहां उसे अपनी मां के शरीर की उष्णता मिली।

"हमारी बस्ती में एक और शिकारी आ गया," उस औरत ने कहा।

इसी क्षण अलितेत अपनी बरफ़-गाड़ी दौड़ाता हुआ आ पहुंचा। कुशल मंगल पूछने वाले आदमियों को जवाब दिये बिना वह चुपचाप अपने यारंग में चला गया। गलियारे में उसने पैर रखा ही था कि उसे नवजात शिशु का रोना सुनाई दिया। अलितेत रुक गया और उसने पूछा :

"अरे, यह क्या?"

"अलितेत, बेटा पैदा हुआ है बेटा!" एक स्त्री ने उत्तर दिया।

अपना परका उतार फेंककर अलितेत जल्दी जल्दी तीग्रेना के पोलोग में गया। तीग्रेना सो गयी थी।

अलितेत ने झुककर बच्चे को देखा, मां के हाथों से उसे छीन सा लिया और उसकी आंखों में देखने लगा।

तीग्रेना चौंककर उठ बैठी और झट से बच्चे को अपने हाथों में लेकर छाती से लगा लिया।

"मैंने सोचा था कि इसकी आंखें उस मेरिकन की तरह ही हल्की नीली होंगी," निराश होकर अलितेत ने कहा।

बीसवां अध्याय

सारे किनारे पर एक बस्ती से दूसरी बस्ती तक तरह तरह की अफ़वाहें फैल गयीं, वैसे ही जैसे घना कुहरा एक यारंग से दूसरे यारंग तक रेंगता चला जाता है और धीरे धीरे सूरज को ढंक देता है।

दढ़ियल रूसी सरदार द्वारा दूरस्थ महाद्वीप से लाये गये जिंदगी के नये क़ानून ने जल्द ही बीमारी, मुसीबत और क़हर का रूप धारण कर लिया।

वामचो द्वारा सार्वजनिक होली में अपना काग़ज़ जलाया जाने के बाद लगभग सभी क़बीला सोवियतों के मुखिया दौड़े दौड़े क्रांति-समिति के दफ़्तर में पहुंचे। दफ़्तर के कमरे में उत्तेजित लोगों की एक भीड़ लग गयी।

उनके अचानक आगमन से लोस को आश्चर्य हुआ।

"कहो साथियो, क्या बात है?" कुछ उत्तेजित होकर उसने पूछा।

एक अधेड़ शिकारी भीड़ में से आगे बढ़ा, उसने अपनी टोपी उतारी और उससे अपना पसीने से तर चेहरा पोंछने लगा।

"सरदार! मेरे यारंग में रखा हुआ अपना यह काग़ज़ वापस ले लो। इसकी वजह से मेरे लिए नींद हराम हो गयी है। इसी की वजह से मेरी बीवी बहुत बीमार हुई है। सरदार-अध्यक्ष बने रहने में मुझे डर लगता है। हमारा ओझा आयाक ही अध्यक्ष बन जाये। उसके लिए ऐसा करना कोई पाप नहीं। अगर कुछ हो भी जाये तो वह पिशाचों को भगा देगा। वह बड़ा अच्छा अध्यक्ष होगा," मेज़ पर अपना काग़ज़ रखते हुए क़बीला सोवियत के अध्यक्ष ने कहा।

"ठीक है, लेकिन ये बाक़ी लोग यहां क्यों आये हैं?" लोस ने पूछा।

"हम भी अपने काग़ज़ ले आये हैं," चारों ओर से जवाब मिला।

"ठीक है। रख दो मेज़ पर! लेकिन याद रखना कि मैं किसी भी ओझा को अध्यक्ष नहीं बनाऊंगा। सभी ओझाओं से कह देना।"

एक के बाद एक सभी अध्यक्षों ने अपने अपने अधिकारपत्र मेज़ पर रख दिये। सिर्फ़ एक आदमी हरेक की ओर देखता हुआ चुपचाप खड़ा था। लग रहा था जैसे वह पसोपेश में पड़ा हो। यह था लोरेन क़बीला सोवियत का अध्यक्ष रिन्तेऊ।

"कहो रिन्तेऊ, तुम अपना काग़ज़ मेज़ पर क्यों नहीं रखते?"

"मैं अपना काग़ज़ घर ही पर छोड़ आया—चाय की एक खाली पेटी में," बूढ़े ने जवाब दिया।

"तुम उसे साथ क्यों नहीं ले आये?"

"मैं कुछ दूसरे काम से आया हूं।"

"अच्छा! यह बात!" लोस ने कहा। उसके चेहरे पर खुशी झलक रही थी।

उसने अपनी पाइप निकाल ली, आराम से उसे भरा और सुलगा लिया। इस समय वहां ख़ामोशी फैली हुई थी। लोस ने बूढ़े से कहा :

"रिन्तेऊ, तुम्हें ज़रा रुकना होगा जब तक मैं इन लोगों से बातें कर लूं।"

"हां, मैं ठहरता हूं," बूढ़े ने कहा।

गहरे भूरे परके पहने हुए अध्यक्ष एक दूसरे से सटकर जैसे भीड़ लगाये खड़े थे। हवा से काले पड़े उनके चेहरों में उनकी आंखें उत्तेजना से चमक रही थीं। उनमें से किसी को ढाढ़स नहीं हुआ कि अपनी चिलम जला ले।

"साथियो!" लोस ने कहना शुरू किया। "सुनो जो मैं कह रहा हूं। मैं जानता हूं कि तुम लोग यहां क्यों आये हो। हमें सारी ख़बर मिल चुकी है। क्या तुम समझते हो कि बूढ़े वाल की मौत से मुझे दुःख नहीं हुआ? सचमुच, मुझे बड़ा दुःख हुआ है। वह मेरा जिगरी दोस्त था। वह दरिया-दिल आदमी था। एक दिलदार बूढ़ा था। उसके पास था असली दिल।"

अध्यक्ष ग़ौर से सुनने लगे। लोस ने पाइप का एक कश लगाकर कहा :

"लेकिन मैं तुम सब से एक सवाल पूछना चाहता हूं। तुम्हारे यारंगों में इन परचों के आने से पहले क्या कोई मरा नहीं था?"

"वैसे तो किनारे पर हर साल कोई न कोई मरता ही है," भीड़ में से किसी ने कहा।

"क्या इससे पहले बरफ़ के तूदों पर बहकर किसी शिकारी की मौत नहीं हुई थी?"

"यह तो हर साल होता है।"

"क्या इससे पहले कभी रीछों ने आदमियों को नहीं मार डाला?"

सभी शिकारी चुप रहे।

फिर रिन्तेऊ लोगों को कोहनियाता हुआ भीड़ में से आगे बढ़ा और मेज़ के पास पहुंच गया।

"मैं कुछ कहना चाहता हूं," बूढ़े ने भाषण आरंभ किया। "मैं तुम सब से बूढ़ा हूं। तुम सब से पहले मैंने सूरज के दर्शन किये हैं। चार्ली जब ख़रीद-फ़रोख़्त करता था तब तुम लोग मेरे यारंग वाले मुसाफ़िरख़ाने में ठहरा करते थे। मेरे यारंग में जितनी ख़बरें पहुंचती थीं, किनारे के दूसरे किसी भी यारंग में नहीं आती थीं। वे सारी ख़बरें मुझे याद हैं। हर साल भूरा रीछ किसी न किसी चरवाहे का ख़ात्मा कर डालता है। कहो, पिछली गरमियों में चरवाहे के लड़के चांगा को किसने मार डाला? कोतख़िरगीन, तुम्हीं तो मेरे यारंग में वह ख़बर लाये थे। इन्हीं कानों से मैंने वह ख़बर सुनी थी," बूढ़े ने अपने ही कान उमेठकर कहा। "कैसे अंध-खोपड़ी हो तुम? बिल्कुल बुद्धू सील हो। तुम लोग इतने भुलक्कड़ कैसे हो गये? यह बहुत बुरा है। तुम्हें इस तरह भूलना नहीं चाहिए।" इतना कहकर बूढ़ा वापस अपनी जगह जा खड़ा हुआ।

लोस ने अपनी दाढ़ी थपथपायी और खड़ा होकर लोगों से कहने लगा:

"साथियो, मैं जानता हूं कि ख़राब लोग तुम्हें गुमराह कर रहे हैं। बड़े दुष्ट हैं ये लोग। ये लोग नहीं चाहते कि तुम अच्छा लेनदेन करो। शायद वे उसी पुराने ढर्रे पर व्यापार जारी रखना चाहते हैं—चार्ली लाल-नकुए की तरह और अलितेत की तरह। कहो, तुम क्या सोचते हो? लेकिन कुछ भी हो, मैं उन्हें व्यापार नहीं करने दूंगा।"

देर तक लोगों ने कुछ भी नहीं कहा। आख़िर कोतख़िरगीन मेज के पास गया और एक काग़ज़ उठाकर बोला:

"मैं अपना काग़ज़ वापस ले रहा हूं।"

"कोतख़िरगीन, एक मिनट ठहरो। शायद यह काग़ज़ तुम्हारा नहीं है! मैं ज़रा देख लूं!"

"और मैं अपना काग़ज़ ले रहा हूं... और मैं भी... और यह है मेरा!" दूसरे लोगों ने कहा।

लोस ने सभी प्रमाणपत्र छांट लिये और हरेक को उसका काग़ज़ लौटा दिया।

"लोके, अरे लोके कहां है? उसका काग़ज़ यहीं है।"

"लोके चला गया। वह काग़ज़ नहीं लेना चाहता," किसी ने कहा।

इसके बाद लोस ने अध्यक्षों के साथ देर तक बातचीत की। जब वे विदा हुए तब शाम हो चुकी थी।

जुकोव जब शिकार से लौटा तो लोस ने उसे सारा क़िस्सा कह सुनाया।

"निकीता सेर्गेयेविच, हम दोनों के लिए सारे किनारे का मामला संभालना बड़ा मुश्किल है," अन्द्रेई ने विचार करते हुए कहा।

"अन्द्रेई, हमारे लिए सब से ज़्यादा ज़रूरत है अध्यापकों की। हां, अध्यापकों के साथ साथ प्रशिक्षक भी यहां आने चाहिए और हमारे अपने व्यापार-केंद्र क़ायम होने चाहिए। इस मामले में अमरीकियों से कुछ भी सहायता नहीं मिल सकती। यहां के लोगों को सारी बातें समझा देनी चाहिए। हमें ओझों के प्रभाव के विरुद्ध भी संघर्ष करना है।"

"हां, निकीता सेर्गेयेविच, यह सही है लेकिन इतना ही काफ़ी नहीं। सिर्फ़ समझाकर कोई ख़ास फ़ायदा न होगा। मैं समझता हूं कि हमें ऐसे काम अधिक करने चाहिए जो शिकारियों के मन की अपेक्षा उनकी आंखों पर ज़्यादा असर डालें।"

"धत्! हमें दोनों तरह के काम करने चाहिए।"

"मुझे अपनी बात पूरी कहने तो दो... मान लो कि हम यहां एकाध दर्जन व्हेल-नावें लाकर लोगों में ठीक तरह से बांट दें।"

"लेकिन यह बात तो हमने पिछली गरमियों में ही लिख दी है। क्या रिन्तेऊ के कहे मुताबिक़ तुम भी भूलने लगे? हां, यह हो सकता है कि हमने इस बात को काफ़ी ज़ोर देकर नहीं लिखा। चलो, हम अपनी डाक की फ़ाइलों में देखें कि हमने क्या क्या लिखा था।"

उन्होंने 'व्हेल-नाव संबंधी' पत्र की प्रतिलिपि ढूंढ निकाली और लोस ध्यानपूर्वक उसे पढ़ने लगा।

"बेशक, यह बात तो नहीं! हमें तर्क इस प्रकार करना चाहिए था कि व्हेलों और सीलों का शिकार यंत्र-चलित व्हेल-नावों के सहारे ही सुसंगठित किया जा सकता है। ठीक है, डाक-पेटी में से ६३ नंबर का लिफ़ाफ़ा निकाल लो, और हम सारा मामला फिर से लिख देंगे।" लोस ने कुछ मुस्कराते हुए आगे कहा: "बस, यही हमारी डाक की एक सुविधा है। वर्ष के अंत में हमें यकायक याद आता है कि किसी रिपोर्ट में हमने गड़बड़ कर दी है। और उस रिपोर्ट को ढूंढ निकालकर हम फिर से लिख देते हैं।"

अन्द्रेई ने बहुत देर पहले डाक-पेटी में डाली गयी सारी डाक फ़र्श पर गिरा दी और रेंगता हुआ लिफ़ाफ़ों के पुलिंदे छांटने लगा। कुछ देर खोजते रहने के बाद उसे ६३ नंबर का लिफ़ाफ़ा मिल गया।

"सावधानी से खोलना ताकि नयी रिपोर्ट हम उसी लिफ़ाफ़े में बंद कर सकें।"

इसी समय बूढ़ा रिन्तेऊ बरामदे में दिखाई दिया।

"रिन्तेऊ, अरे तुम कहां ग़ायब हो गये थे? मैं तुम्हीं को ढूंढने जा रहा था। कहो, किस काम से आये थे तुम?" लोस ने पूछा।

"काम बुरा है। बहुत ही बुरा। रूलतिना मेरे पास बुरी ख़बर ले आयी थी। चार्ली ने अलितेत को हैमेलकोत के पास भेजा है और कहा है कि याराक के पास से मेरी को और अपने कुत्तों को वापस ले आये।"

लोस और अन्द्रेई ने एक दूसरे की ओर देखा।

"बुरी बात है," रिन्तेऊ ने आगे कहा, "मुझे तो डर लग रहा है कि रूलतिना कहीं पागल न हो जाये..."

"जी, सचमुच बुरी बात है," आह भरते हुए लोस ने कहा। "कहो रिन्तेऊ, क्या किया जाये अब? तुम्हारी क्या राय है?"

"मैं क्या जानूं?" बूढ़े ने टालमटोल करते हुए कहा। "तुम्हीं अच्छी तरह जानते हो।"

"हमें अलितेत का पीछा करना चाहिए," लोस बोला।

बूढ़े ने सिर हिलाकर समर्थन किया।

"निकीता सेर्गेयेविच, पहाड़ियों में बिना मार्गदर्शक के सफ़र नहीं किया जा सकता," अन्द्रेई ने कहा। "रास्ते से भटक जाने का डर जो रहता है।"

"रास्ता मैं अच्छी तरह जानता हूं," रिन्तेऊ ने कहा, "चार्ली मुझे खालें इकट्ठी करने के लिए पहाड़ियों में भेजा करता था। चलो, तुम्हें रास्ता मैं दिखाऊंगा।"

"ठीक है। चलो अन्द्रेई, हम चलकर अलितेत के रहे-सहे पर उखाड़ डालें। मैं उसे बता दूंगा कि कौन क्या है! रिन्तेऊ, यह कितने दिन का सफ़र है?"

"देखो, अभी आधी रात का सूरज निकला है। मैं समझता हूं कि चार दिन काफ़ी होंगे।"

"मतलब यह कि सफ़र काफ़ी लंबा है। लेकिन हमें जाना तो है ही। हां, सफ़र के दौरान हम यह भी देख सकेंगे कि पहाड़ियों में लोग किस तरह रहते हैं। तो फिर बात पक्की हुई!" लोस ने कहा। "चलो अन्द्रेई, दफ़्तर में ताला लगा दो।"

इक्कीसवां अध्याय

मई मास का सूरज अंगार बरस रहा था। हवा में काफ़ी गरमी आ चुकी थी फिर भी चारों ओर भुरभुरी बरफ़ फैली हुई थी। ज़ोरों से बहती हुई हवा के कारण जाड़ों तक में पहाड़ों की बग़लों में बरफ़ नहीं टिक पाती थी और सिर्फ़ यही हिस्से नंगे तथा काले नज़र आ रहे थे।

लोस एक घाटी में खड़ा दूर दूर तक फैले हुए पहाड़ों को देख रहा था।

"जाने इन पहाड़ों में क्या चीज़ है?" लोस सोच रहा था। "हो सकता है कि इनमें प्लेटिनम, सोना या लोहा हो – कौन जाने?" अन्द्रेई की ओर देखकर और कुतुबनुमे की ओर संकेत करते हुए उसने कहा:

"रिन्तेऊ कहता है कि पहाड़ियों में यह यंत्र कुछ काम नहीं देता – बल्कि बिल्कुल उल्टी दिशा सूचित करता है। जब मैंने उससे पूछा कि क्या सागर इस ओर है तो हंसकर उसने जवाब दिया: 'उस छोटी सी डिबिया की ओर देखने के बजाय सूरज की ओर देखो तो तुम्हें फ़ौरन पता चल जायेगा कि सागर किस ओर है।'"

"निकीता सेर्गेयेविच, इन पहाड़ों में ज़रूर कोई ऐसी चीज़ है जिसके कारण कुतुबनुमा काम नहीं दे पाता। काश, हमारे पास एक्स-रे का कोई औज़ार होता जिससे हम पहाड़ों का अंदरूनी हिस्सा देख पाते!"

कुत्ते बरफ़ पर पांव फैलाये और धूप का मज़ा लेते हुए सो गये थे। रात में जब सूरज ढल जाता और हल्के पाले के कारण रास्ता सख्त पड़ जाता तो यात्रा करना भी आसान हो जाता। रिन्तेऊ आग जलाकर पानी उबालने के लिए कुछ ईंधन इकट्ठा करने गया था।

ध्रुवप्रदेशीय उल्लू ज़ोरों से पर फड़फड़ाते हुए और सिर इधर उधर घुमाते हुए उड़ते जा रहे थे। ये लोमड़ियों की चढ़ाई के संदेशवाहक थे। उल्लुओं से चूहों का अस्तित्व सूचित होता है और चूहों के बाद लोमड़ियां आती हैं।

बारहसिंगों के रेवड़ समुद्र-तट के पास चले गये थे। वहां उन्हें गरमियों की हवा के झोंकों के कारण मक्खियों से छुटकारा मिल जाता था। गरमियों में किसी भी रेवड़ को पहाड़ियों में नहीं रखा जा सकता। तराई में चूहों की बहुतायत रहती है। टुंड्रा के सभी जंगली जानवरों के लिए यह अच्छा-ख़ासा शिकार है और वे इस शिकार को भरपेट खा लेते हैं। बारहसिंगे तक चूहों पर नज़र पड़ते ही अपने सिर को झटका देकर उनका पीछा करने लगते हैं। उस नन्हे से प्राणी को वे अपनी टापों से कुचलते हैं और फ़ौरन निगल जाते हैं। नदी घाटियों में सैंकड़ों ख़रगोश सरपत की छाल और पत्तियां कुतरते हुए दौड़ते हैं। पहाड़ी मेढ़े एक चट्टान से दूसरी चट्टान तक उछलते रहते हैं। यहां का सारा जीवन गतिमान है, यहां की हर चीज़ ख़ानाबदोश ज़िंदगी की सूचक है। यहां गतिहीन हैं केवल पहाड़ियां, मानो टुंड्रा के जीवन संबंधी विचारों में मग्न हों।

बूढ़ा रिन्तेऊ सरपत की कुछ टहनियां लिये वापस आया। इस 'जलावन' से चाय के लिए पानी उबालने के विचार से लोस सिहर उठा। लेकिन रिन्तेऊ ने शांत चित्त से उन टहनियों के छोटे छोटे टुकड़े बनाये, उन्हें तरीक़े से ज़मीन पर रखा और आग जला दी। एक-एक दो-दो टहनियां और डालते हुए बड़ी सावधानी से उसने ज्वाला जलती रखी।

"इसे कहते हैं चातुर्य!" लोस ने प्रशंसापूर्वक कहा। "अन्द्रेई, यह तदबीर तुम भी सीख लो, कहीं न कहीं काम आयेगी!"

"चाय पीकर हम सो जायेंगे," रिन्तेऊ ने कहा। "धुंध फैल रहा है और कुछ ही देर में यहां अंधेरा छा जायेगा। धुंध में मुझे

रास्ते का पता न चलेगा। अलितेत के लिए सभी हालतें एक सी हैं। वह धुंध में भी इस तरह सफ़र करता है मानो जगमगाती धूप में चल रहा हो।"

दो दिन की यात्रा के बाद इन लोगों को खानाबदोशों की झोंपड़ियों के ढांचे नज़र आये। कुत्तों ने सोचा कि यह कोई बस्ती है और वे उधर ही बढ़ गये। लेकिन वहां एक भी आदमी न दिखाई दिया। चारों ओर सब कुछ उजाड़ और सुनसान नज़र आ रहा था। सिर्फ़ तरीक़े से रखे हुए माल-असबाब के ढेरों से पता लगता था कि हाल ही में वहां बस्ती थी।

"यह क्या? बस्ती उजड़ गयी?" लोस ने पूछा।

"जी नहीं, उन लोगों ने अपना सामान यहां छोड़ दिया है। जाड़ों में वापस जाते समय वे यह सब बटोर लेंगे," रिन्तेऊ ने कहा।

"लेकिन इस वक़्त लोग कहां हैं?"

"वे खानाबदोश हैं और यहां से आगे चले गये हैं। उन्हें यहां से गये हुए ज्यादा वक़्त नहीं हुआ," बारहसिंगों के बरफ़-गाड़ियों के मार्ग-चिन्हों और बरफ़ में पड़े हुए बारहसिंगों के बालों के गुच्छों को बारीकी से देखते हुए रिन्तेऊ ने कहा।

बूढ़ा रिन्तेऊ प्रकृति के महान ग्रंथ के पृष्ठ पढ़ रहा था।

"आज ही दोपहर को वे यहां से रवाना हुए थे," उसने कहा।

"तुम क्यों ऐसा सोचते हो?"

"धूप के होते हुए भी बारहसिंगों के बाल अभी तक बरफ़ के नीचे धंस नहीं सके हैं। और यह है बारहसिंगों के दोपहर के पदचिन्ह। शाम को और सबेरे इनकी शकल दूसरी ही होती है। ज़रूर अलितेत यहीं से गुज़रा है।"

रिन्तेऊ अन्द्रेई का हाथ पकड़कर उसे एक ओर ले गया और लोस भी उनके पीछे चला गया।

"देखो यह है ख़ानाबदोशों की बरफ़-गाड़ी की लीक और यह है किनारे वाले आदमी की — अलितेत की बरफ़-गाड़ी की।"

"हो सकता है कि यह याराक की बरफ़-गाड़ी की लीक है।"

"जी नहीं," बूढ़े ने निश्चयपूर्वक कहा। "जब याराक गया था उन दिनों लोग लोहे की हाल वाली बरफ़-गाड़ी पर सफ़र नहीं करते थे। यह जो लीक हम देख रहे हैं वह लोहे वाली हाल की है। यह अलितेत की गाड़ी की ही है। देखो न, कितनी चिकनी है!"

फिर बूढ़ा याराक की बरफ़-गाड़ी के निशान ढूंढने गया और कुछ ही देर में उसकी आवाज़ सुनाई दी:

"यह देखो, मिल गयी याराक वाली गाड़ी की लीक!"

बिना लोहे की हाल वाली बरफ़-गाड़ी से बनी लीक कम चिकनी थी और उसकी सतह कुछ खोखलापन लिये खुरदरी थी।

"ओह, लानत है मुझपर! कितनी सीधी-सादी बात है!" लोस ने आश्चर्यपूर्वक कहा।

"रिन्तेऊ, ये ख़ानाबदोश काफ़ी दूर तो नहीं गये होंगे?"

"जी नहीं, एक दिन में वे ज़्यादा दूर नहीं जा सकते। अब हमें उनका रास्ता मिल गया है और हम जल्द ही उनके पास पहुंच सकते हैं। उन बरफ़-गाड़ियों पर काफ़ी सामान लदा है। लेकिन अपने कुत्तों को ठीक से क़ाबू में रखना होगा क्योंकि बारहसिंगों को देखते ही वे पागल हो जाते हैं। यह मेरा डंडा ले लो। मैं तो अपनी एड़ियों के सहारे ही गाड़ी रोक सकता हूं।"

बारहसिंगों की राह पर कुत्ते बगटूट दौड़ पड़े। लोस और अन्द्रेई आगे वाली बरफ़-गाड़ी में थे जबकि रिन्तेऊ उनका अनुसरण कर रहा था। कुत्ते यकायक ठिठक गये, उनकी थूथनियां ऊपर उठीं और नथुने हवा में फड़कने लगे लेकिन फिर से वे सरपट दौड़ने लगे।

पहाड़ियों की बग़ल में बारहसिंगे नज़र आये। बारहसिंगों का वह एक बहुत ही बड़ा रेवड़ था। कुत्ते पागलों की तरह दौड़ पड़े।

"पॉत-पॉत! पॉत-पॉत!" कुत्ता-दल को एक ओर घुमाने की कोशिश में लोस ज़ोर से चिल्लाया।

लोस और अन्द्रेई ने अपने डंडों के सहारे गाड़ी को रोकने की हरचंद कोशिश की लेकिन पागलों की तरह दौड़ने वाले कुत्ते उन्हें घसीटते ही गये। बरफ़ में गाड़ी की गहरी लीक खिंचती गयी। थरथराते हुए कुत्तों ने लपलपाती ज़बानों और चमकती आंखों के साथ बारहसिंगों के रेवड़ पर दृढ़तापूर्वक धावा बोल दिया।

"पॉत-पॉत! पॉत-पॉत!" बूढ़ा रिन्तेऊ चिल्ला उठा। गाड़ीवान के लिए यह बड़ी शर्म की बात है कि वह अपने कुत्तों को क़ाबू में न रख पाये और वे किसी बारहसिंगे को फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर डालें। ख़ानाबदोश बिरादरी उसपर हंसेगी और बेचारा मारे शर्म के मुंह दिखाने लायक़ न रहेगा।

बूढ़े रिन्तेऊ ने बरफ़-गाड़ी पर से अपना पैर बाहर कर दिया और उसे फैलाकर कुत्तों को रोकने की कोशिश में उसने अपनी एड़ियां बरफ़ में रोप दीं। लेकिन चिकनी बरफ़ पर से एड़ियां फिसल गयीं और वह गाड़ी न रोक सका।

एक चरवाहा बरफ़-गाड़ी को आते हुए देख रहा था। उसने फ़ौरन अपने हाथ हिलाये और रास्ते पर से दौड़ पड़ा। झट से उचककर वह आगे वाली गाड़ी पर सवार हुआ, आधार के लिए उसने अन्द्रेई के गले में अपना हाथ डाला, उसके हाथ से डंडा छीना और उसे बरफ़ में गाड़ दिया जिससे कुत्ता-दल रुक गया।

रिन्तेऊ की बरफ़-गाड़ी पीछे से घसिटती चली आयी। बूढ़ा अपनी गाड़ी को रोकने के लिए बरफ़ में एड़ियां गाड़ने की बेकार ही कोशिश कर रहा था। मारे शर्म के बेचारा पानी पानी हो गया।

घूमती-टकराती बरफ़-गाड़ी पर से कूदकर उसने उसे उलट दिया और खुद उसकी हालों पर गिर पड़ा। कुत्ते रुक गये और भौंकने-चिल्लाने लगे।

"आये! अरे, तुम यहां कैसे?" अन्द्रेई ने साश्चर्य कहा।

"यातखिरगिन के रेवड़ में से दो बारहसिंगे भटक गये हैं और उसने मुझे उनकी खोज में भेजा है। पांच दिन से मैं उन्हें ढूंढ़ रहा हूं! अब मैं हैमेलकोत के रेवड़ में यह देखने जा रहा हूं कि वे कहीं वहां तो नहीं हैं। यकायक मैंने तुम्हारे कुत्तों को बारहसिंगों की ओर झपटते हुए देखा – मैंने तुरंत पहचान लिया कि यह किसकी बरफ़-गाड़ियां हैं। मैंने सोचा कि ज़रूर ये गोरे लोग जा रहे हैं और वे बरफ़-गाड़ियों को रोक नहीं पा रहे हैं। फिर मैं मदद के लिए दौड़ पड़ा।"

अन्द्रेई के साथ आये पुराने दोस्त की तरह बातचीत कर रहा था। इसी समय दढ़ियल रूसी सरदार की ओर सख़्ती से घूर रहा था। उसके बारे में सारी रिपोर्ट पहाड़ी बस्तियों में पहुंच चुकी थी।

"कहो आये, पहाड़ियों में कुछ है नयी-पुरानी ख़बर?"

आये सखेद मुस्कुरा दिया।

"भला पहाड़ियों में क्या ख़बर होगी? यहां हमारे पास हैं सिर्फ़ बारहसिंगे। बस, बारहसिंगे पैदा होते हैं, बारहसिंगे मरते हैं, और क्या? सिवा बारहसिंगों के यहां कुछ है ही नहीं। हां, ख़बरें मिलती हैं किनारे पर। वहां की ज़िंदगी ख़ुशी की ज़िंदगी है लेकिन यहां हम भेड़ियों की तरह रहते हैं। सारा वक़्त दौड़-धूप करते हैं। मैं तो ख़ानाबदोशों से विदा लेने की सोच रहा हूं। ओह! किनारे के लिए मैं कितना तरसता हूं!"

"लेकिन आये, तुम क्यों इन लोगों को छोड़ जाना चाहते हो?"

"यहां मैं बड़ा ही दुखी हूं। दौड़-धूप से मैं ऊब गया हूं। मेरा मालिक यातखिरगिन कहता है कि मेरी टांगें मज़बूत हैं और इसलिए

वह मुझे हमेशा ही भटके हुए बारहसिंगों की खोज में भेजता है। गरज़ यह कि वह मुझे जाड़ों भर में दौड़ाता रहता है। फिर भी यहां से विदा होने में मुझे डर लगता है। मेरा मालिक नौजवान था तभी से सरदार बन गया। रूसियों ने उसके बाप को एक काग़ज़ भेज दिया। जब बाप मर गया तो यातख़िरगिन ने वह काग़ज़ ख़ुद रख लिया। हां, यह सही है कि काग़ज़ में जो कुछ लिखा है, वह जानता नहीं। उसके पास सरदार का छुरा भी है। मैंने वह देखा है। यह एक लंबा, पतला छुरा है जिसे कटारी कहते हैं। बारहसिंगों को वह इसी छुरे से काटता है। उसने यह काग़ज़ मुझे दिया और कहा कि अगर मैं कभी रूसियों से मिला तो उनसे पूछूं कि इसमें क्या लिखा है।"

आये ने अपने सीने के पास से चिथड़े में लपेटी हुई कोई चीज़ निकाली। उसने सावधानी से उसे खोला और काग़ज़ का एक रद्दी टुकड़ा अन्द्रेई को थमा दिया।

"अरे, यह तो ज़ार के प्रति स्वामिनिष्ठा की शपथ है!" अन्द्रेई ने कहा।

"ज़रा पढ़ो तो!" लोस ने कहा।

भद्दी लिखावट को बड़ी मुश्किल से समझते हुए जुकोव ने शपथ-पत्र पढ़ा जो इस प्रकार था:

> "मैं विश्व-निर्माता परमेश्वर को साक्षी रखकर गंभीरतापूर्वक शपथ लेता हूं कि मैं अपने परिवार के साथ, सभी रूसियों के महान, सच्चे और अच्छे ज़ार अलेक्सांद्र निकोलायेविच और तत्रभवान् महाराजाधिराज के युवराज निकोलाई अलेक्सांद्रोविच का एक निष्ठावान्, आज्ञाधारक तथा अच्छा प्रजाजन रहूंगा, विदेशों से कोई संबंध न रखूंगा, तत्रभवान् महाराजाधिराज के शत्रुओं के साथ मित्रता नहीं करूंगा, पवित्र

तत्रभवान् महाराजाधिराज की सत्ता अधिकारक्षेत्र से संबंधित हर बात की प्रतिरक्षा तथा समर्थन मैं अपनी सारी बुद्धि तथा शक्ति के साथ, अपने प्राणों तक की बाज़ी लगाकर करूंगा और हर संभव मार्ग से तत्रभवान् महाराजाधिराज की सहायता करूंगा; यदि ज़ार के संबंध में बुरी अथवा अपमानजनक बात सुनूंगा तो योग्य अधिकारी को उसकी सूचना दूंगा और उसका प्रतिकार करूंगा, और अपने को सौंपी गयी सभी गोपनीय बातों को अपने पास सुरक्षित रखूंगा। परमेश्वर की सहायता से मैं ईमानदारी के साथ अपना सारा कर्तव्य पालन करूंगा। मैं पवित्र धर्मग्रंथ का चुंबन करता हूं और अपने निर्माता की मूर्ति की शपथ लेता हूं। परमेश्वर मेरी सहायता करे।"

"वाह! कैसी अजीब बात है!" लोस ने कहा। कटारी वाले उस ग्रैंड ड्यूक की बात! और वह भी कहां? उत्तरी ध्रुव की पहाड़ियों में!"

"यह है ज़ारशाही का आख़िरी दुर्ग," अन्द्रेई ने मुस्कराकर कहा और आये की ओर मुड़कर पूछा: "क्या यह काग़ज़ मैं अपने पास रख लूं?"

"मुझे डर लगता है कि यातख़िरगिन मुझसे यह मांग लेगा," आये ने हिचकिचाते हुए कहा।

"उससे कह दो कि यह काग़ज़ अब किसी काम का नहीं रहा। अब दुनिया में कोई ज़ार ही नहीं बचा।"

"ठीक है, यह तुम्हीं अच्छी तरह जानते हो," आये ने जवाब दिया।

बारहसिंगों का रेवड़ पहाड़ी की दूसरी ढाल पर से नीचे चला गया था। आये एक बरफ़-गाड़ी पर अन्द्रेई के साथ बैठ गया और दूसरी गाड़ी पर रिन्तेऊ और लोस सवार हुए। बरफ़-गाड़ियां हैमेलकोत के पड़ाव के लिए रवाना हुईं। कुत्ते शांतिपूर्वक आगे क़दम बढ़ाते रहे।

बाईसवां अध्याय

हैमेलकोत के पड़ाव में अलितेत आ पहुंचा और वहां के लोगों का शांत जीवन पूरी तरह से अस्तव्यस्त हो गया। कोई भी समझ न पाया कि नदियों में बसंती बाढ़ आने से पहले ही अलितेत पहाड़ियों में क्यों आया। पहले पहल लोगों ने सोचा कि शायद वह लोमड़ियों की खालों के लिए आया है लेकिन अलितेत ने खालों के बारे में बात तक न की। हर कोई और ख़ास कर याराक इस बारे में सतर्क रहा। वह पड़ाव से कहीं भी नहीं गया और बराबर अलितेत की परछाईं सा बना रहा।

अलितेत को पड़ाव में आये आज तीसरा दिन था लेकिन फिर भी उसने अपने आगमन के कारण के बारे में एक शब्द तक न कहा। सारा समय वह बारहसिंगे के मांस पर हाथ साफ़ करता रहा मानो शक्ति संचय कर रहा हो। सारे पड़ाव के सो जाने पर भी याराक उनींदी आंखों इधर उधर घूमता रहता था। उसने मेरी को जलावन लाने के बहाने 'ख़रगोश-राह' घाटी में भेज दिया था और उससे कह दिया था कि जब तक अलितेत पड़ाव में से टल न जाये तब तक वह वापस न आये।

बूढ़ा हैमेलकोत अच्छी तरह जानता था कि क्यों उसकी भानजी मेरी याराक के साथ भाग गयी और क्यों वे दोनों अब उसके पड़ाव में रहते हैं। 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' यही अलितेत का हाल था और इस अनाहूत अतिथि की उपस्थिति से बूढ़ा हैमेलकोत काफ़ी परेशान था। लेकिन एक सच्चे पशुपालक के नाते उसने सब कुछ सह लिया और अपना कुतूहल प्रकट न होने दिया। तीसरे दिन के अंत में अलितेत ने ख़ुद ही हैमेलकोत को बता दिया कि वह वहां क्यों आया है।

"तुम मेरी से ही पूछ लो न! वह कोई बारहसिंगा तो है नहीं वह ख़ुद बोल सकती है। अगर वह चाहती हो तो ज़रूर चली जाये," हैमेलकोत ने कहा।

"वह नहीं जाना चाहती। लेकिन चार्ली ने मुझसे कहा है कि मैं उसे वापस ले जाऊं।"

हैमेलकोत ने मुस्कराकर कहा:

"बारहसिंगे को पकड़कर कहीं भी ले जाया जा सकता है। बारहसिंगा है एक गूंगा जानवर। लेकिन मेरी... उसके तो कोई सींग नहीं दिखाई देते जिनमें फंदा डाला जा सके।"

"रूलतिना और चार्ली—दोनों ने मुझसे कहा कि मैं उसे वापस ले आऊं," अलितेत ने बात दोहरायी।

बूढ़े ने अपनी आंखें और नाक सिकोड़ ली। कुछ देर रुककर उसने कहा:

"हैमेलकोत को क्या तुम दुधमुंहां बच्चा समझते हो! मैंने काफ़ी लंबी ज़िंदगी देखी है और ठीक ठीक जानता हूं कि मेरी बहन रूलतिना क्या सोचती है। और क्या तुम तांग बन चुके हो, जो यह भी नहीं जानते कि लड़की के लिए शौहर की ज़रूरत है या नहीं? आओ, बारहसिंगों के रेवड़ में से नरों को हटा दो और फिर देखो कितनी मादाएं वहां रहती हैं! अच्छा होगा कि इस वक़्त तुम सो जाओ। बाद में तुम याराक के साथ बातचीत कर सकोगे। वह उसका शौहर है।"

जब अलितेत सो गया तो हैमेलकोत ने याराक को पास बुलाकर कहा:

"पड़ाव छोड़कर कहीं मत जाना! अलितेत जब मेरी के बारे में तुमसे बात करेगा उस वक़्त मुझे बुला लेना। तुम जवान हो और यह नहीं जानते कि भेड़िये से किस तरह बात करनी चाहिए।"

"मैं उसे मार ही डालूंगा," याराक ने जोश में आकर कहा।

"हां, छुरे से कमज़ोर आदमी ताक़तवर को मार सकता है। चलो, छुरा एक ओर रख दो और सो जाओ। नींद न आने से आदमी कमज़ोर हो जाता है।"

पहाड़ी की बग़ल में दो कुत्ता-दल एक दूसरे से होड़ सी लगाते हुए दिखाई दिये। यह सोचकर कि चार्ली आ रहा है, याराक के दिल में डर की एक लहर दौड़ गयी। लेकिन फ़ौरन उसने चिल्लाकर कहा:

"आये रूसियों को ले आया है!" याराक उनकी अगवानी के लिए दौड़ा।

बरफ़-गाड़ियां रुक गयीं।

"काकोमेई लोस!" याराक ने ख़ुश होकर कहा।

"कहो याराक, कहो कैसे हो?" उससे हाथ मिलाते हुए लोस ने कहा। "देखो, मैं तुमसे मिलने आया हूं।"

"अन्द्रेई, रिन्तेऊ और आये भी आये हैं! काकोमेई!" याराक ने कहा। उसका चेहरा ख़ुशी से दमक उठा। "यह हैं मेज़बान, मेरे चाचा," उनके पास आ रहे हैमेलकोत की ओर संकेत करते हुए उसने कहा।

समीप आते हुए हैमेलकोत ने इन असामान्य अतिथियों पर एक नज़र डाली। वह धीरे धीरे और बड़ी शान के साथ आ रहा था। तुरंत ही लोस इस बूढ़े की ओर आकृष्ट हुआ। उसके चतुर चेहरे और पैनी आंखों से वह बड़ा प्रभावित हुआ। अपना हाथ आगे बढ़ाकर उसने कहा:

"नमस्कार हैमेलकोत!"

बूढ़े के चेहरे पर मंद मुस्कराहट बिखर गयी। उसने कहा:

"तुम हैमेलकोत को जानते हो?"

"हां, नाम बहुत बार सुना है," लोस ने जवाब दिया।

"सुनो री!" हैमेलकोत ने औरतों से कहा, "सब से मोटे-ताज़े बारहसिंगे का गोश्त पकाओ। देखो, बड़े इज़्ज़तदार मेहमान आये हैं!"

सब लोग अलाव के पास चले गये, जिसपर तांबे का एक बड़ा देग़ टंगा था। रोवेंदार खाल के कपड़े पहने एक नन्हा सा बच्चा लटपटाती चाल से उनके सामने से गुज़रा। वह भालू के झबरीले बच्चे जैसा दिखाई देता था। उसका चेहरा मैला और बारहसिंगे के ख़ून से रंगा था। लोस ने उसे गोद में उठा लिया और हवा में ऊंचा उठाते हुए रूसी भाषा में पूछने लगा:

"कहो नन्हे-मुन्ने, कैसे हाल हैं?"

नन्हा-मुन्ना ज़ोर से गुर्रा उठा।

"अरे, यह क्या? मैं तुम्हें प्यार करता हूं और तुम्हारी यह चाल! पकड़ो, यह लो शक्कर की टिकिया। जाओ लटपट, लटपट!" लोस ने कहा।

"वह कुछ नहीं समझ पाता। नन्हा जो है। और आज ही पहली बार वह तांगों को देख रहा है," हैमेलकोत ने मानो क्षमायाचना के स्वर में कहा।

"याराक, मेरी नहीं दिखाई दी! कहां है वह?" लोस ने पूछा।

"वह जलावन लाने के लिए नदी घाटी में गयी है। उसे गये हुए काफ़ी देर हो गयी," याराक ने फुसफुसाते हुए कहा। "वह अलितेत से डरती है। उसे डर लगता है कि वह कहीं उसे चार्ली के पास वापस न ले जाये।"

"वह कोशिश करके ही देख ले न!"

हैमेलकोत ने स्वीकार सूचक ढंग से लोस की पीठ थपथपायी। इसका मतलब था कि हैमेलकोत उसे सच्चा आदमी मानता था।

पहाड़ी पड़ाव एक अस्थायी बस्ती थी। यहां यारंग एक भी न था बल्कि खुले आसमान के नीचे खालों के कुछ तंबू तने थे।

जाड़ों और बर्फ़ीले तुफ़ानों में भी लोग गरम निवासों का उपयोग सिर्फ़ सोने के लिए करते थे। जाग उठने के बाद वे खाल के तंबुओं को नीचे गिरा देते और रात भर में उनपर जमा हुए हिम-कणों को औरतें झाड़ देतीं। मौसम कैसा भी हो, उम्र में छोटे-बड़े सभी लोग खुली हवा में ही रहते। आदमी जागता और चलता रहे तो उसके ठिठुर जाने का कोई डर नहीं रहता।

हैमेलकोत के पड़ाव के इर्दगिर्द माल-असबाब की कई बरफ़-गाड़ियां खड़ी थीं। कुछ बेढब सी इन बरफ़-गाड़ियों की हालें भारी थीं और ये सामान और तंबू आदि की ढुलाई के काम आती थीं। नाजुक कारीगरी वाली सफ़री बरफ़-गाड़ियां भी वहां थीं। ढुलाई की बड़ी और बेढब गाड़ियों के आगे ये खिलौनों सी लग रही थीं। ऐसी एक बरफ़-गाड़ी को बग़ल में दबाकर भागना बायें हाथ का खेल लग रहा था।

"आये, उधर लग्गी के सहारे क्या टंगा है?"

"वह एक बच्चा है। देखना चाहते हो?"

बरफ़ में गाड़ी हुई लग्गी के सहारे रोवेंदार खाल की एक थैली टंगी थी जिसमें एक नन्हा सोया हुआ था। थैली के किनारे से पंछी की सी नन्हीं काली आंखें झांक रही थीं। यह बालक अपने घोंसले में बैठे हुए पंछी जैसा ही लग रहा था। हल्की सी बयार में यह घोंसला धीरे धीरे झूम रहा था और ऊपर थी धूप की गरमाहट। इस हालत में बच्चा बहुत ही ख़ुश नज़र आ रहा था और शायद ख़ुश था भी।

"अभी तक वह चल नहीं पाता," आये ने बताया।

भभकती आग पर टंगे हुए देग़ में मांस पक रहा था। औरतें पास बैठी देख रही थीं। पानी में उबाल आने से पहले मांस को निकाल लेना जरूरी था। बूढ़े ने कहा था कि मांस ठीक तरीक़े से पकाया

जाये ताकि वह ज़ायक़ेदार बने। नाज़ुक, गुलाबी मांस को अगर तरीक़े से पकाया जाये तो वह पेट के लिए भारी नहीं होता। ऐसा मांस डटकर खाया जा सकता है। टुंड्रा में कभी कभी खाने की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इनमें ऐसे ऐसे भोजन भट्ट भाग लेते हैं जो एक बैठक में बारहसिंगे के बहुत बड़े टुकड़े चट कर सकते हैं। ऐसे भोजन के बाद खाने वाला पेट के बल लोटता है और फिर दो-तीन दिन पेट में एक भी निवाला न डालते हुए बराबर रेवड़ों के पीछे दौड़ने के लिए तैयार रहता है।

औरतों ने नोकदार छड़ियों के सहारे देग़ में से मांस निकाला और लकड़ी के बड़े थाल में रख दिया। मांस से सोंधी ज़ायक़ेदार गंध आ रही थी। हैमेलकोत ने लोस और अन्द्रेई के लिए चुने हुए टुकड़े परोस दिये। इन टुकड़ों का आकार देखकर गोरे मेहमान चौंक उठे लेकिन उन्हें ज़्यादा अचरज इस बात पर हुआ कि उन्होंने बड़ी आसानी से ये टुकड़े खा लिये।

बाक़ी मेहमान बारहसिंगे को ख़त्म कर चुके थे और अब बड़ी सावधानी से हड्डियां साफ़ कर रहे थे।

"हैमेलकोत, मांस बहुत बढ़िया था। बारहसिंगा अच्छा बना था," लोस ने तारीफ़ करते हुए कहा।

"हैमेलकोत के यहां पधारने वाले हर मेहमान को अच्छे मांस का एकाध टुकड़ा ज़रूर मिलता है। हैमेलकोत के यहां से अभी तक कोई भी खाली पेट नहीं लौटा। औरतो, एक और बारहसिंगा पका लो," बूढ़े ने कहा।

इसी वक़्त अलितेत की नींद खुल गयी और उसने रूसियों की आवाज़ सुन ली। ख़ुशी से उसने खीसें निकालीं और उनकी बातचीत सुनने के लिए कान खड़े करके लेटा रहा। आख़िर वह उठ खड़ा हुआ और अलाव के पास चला गया।

"नमस्ते, रूस्की सरदार!" अलितेत ने कुछ चापलूसी के स्वर में कहा। "हैमेलकोत के लिए तो आज त्योहार है। देखो, कितने मेहमान आये हैं!"

अलितेत ने आसन जमाया।

"कहो, तुम यहां कैसे?" लोस ने पूछा।

"हर आदमी के लिए कुछ न कुछ काम होता ही है। टुंड्रा में तो जानवर भी किसी न किसी चीज़ के पीछे दौड़ते रहते हैं... चार्ली ने मुझे याराक के पास भेजा है, अपने कुत्ते ले आने के लिए... चार्ली ने वे मेरे हाथ बेच दिये हैं।"

"तुमने ख़रीद लिये?" लोस ने कठोरता से पूछा।

कुछ हिचकिचाहट के बाद अलितेत ने ख़रीद स्वीकार की।

"और मेरी को भी तुमने ख़रीदा है?" अन्द्रेई ने पूछा।

"चार्ली ने मुझसे कहा कि 'कुत्तों को और मेरी को वापस ले आओ।' कुत्ते उसके हैं और मेरी भी उसी की है। इन्हें चुराया गया था।"

याराक उठ खड़ा हुआ। लेकिन हैमेलकोत ने उसकी बांह पकड़कर उसे अपनी जगह पर बैठा दिया।

"तुम यहां से किसी को भी नहीं ले जा सकते। समझे?" लोस ने पूछा।

"सरदार, मैं तुम्हारा क़ानून नहीं मानता। मैंने वही किया जो चार्ली ने मुझसे कहा। मेरी की मां रूलतिना ने भी मुझे यहां आने के लिए कहा है।"

बूढ़ा रिंतेऊ एक हड्डी का मज़ा लेता हुआ बड़े ग़ौर से सारी बातें सुन रहा था। अब वह बोल उठा :

"अलितेत, रूलतिना ने तुमसे कुछ भी नहीं कहा। मैं जानता हूं। हैमेलकोत भी जानता है कि उसकी बहन रूलतिना ने अलितेत

से कुछ नहीं कहा। ग्रादमी के लिए झूठ बोलना बहुत बुरा है!" ग्रपनी गर्दन को निषेध सूचक ढंग से झटकते हुए उसने कहा।

"हम कल रवाना हो रहे हैं," लोस ने कहा, "ग्रौर ग्रलितेत तुम्हें भी हमारे साथ चलना है। चलो, तैयारी करो।"

"ग्रगर तुम चाहो तो मैं चल सकता हूं। ग्रगर मेरी को ले जाना ज़रूरी न हो तो वह भले ही यहीं रहे। लेकिन बात यह है कि ग्रगुग्रा कुत्ते के साथ मेरे दल के सात कुत्ते लगाम कुतरकर किनारे भाग गये हैं। पता नहीं ग्रब मैं वापस कैसे जाऊंगा," ग्रलितेत ने कहा।

"मैं ग्रपने कुत्ते उसे दूंगा!" याराक ने कहा। "बस, वह यहां से टल जाये!"

"नहीं!" लोस ने ग्रापत्ति की। "वह रिन्तेऊ के साथ उसी बरफ़-गाड़ी में जायेगा।"

"हां, यही ठीक होगा," बूढ़े ने हामी भर दी। "उसके बचे हुए कुत्ते मेरी गाड़ी में जोते जायेंगे ग्रौर उसकी गाड़ी भी मेरी गाड़ी के साथ बांधकर ले जायी जायेगी।

"रिंतेऊ," ग्रलितेत ने कहा, "हमें वक़्त नहीं खोना चाहिए। सूरज ग्रंगार बरसा रहा है। ग्रगर बाढ़ ग्रा जाये तो हम नदियों को कैसे लांघेंगे?"

"हां ग्रलितेत, यह सही है," रिंतेऊ ने जवाब दिया।

ग्राये के साथ ग्रन्द्रेई नदी-घाटी की ग्रोर चला गया। एक दूसरे से मिलकर उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई थी। लंबे ग्रर्से के बाद वे फिर से मिल रहे थे।

हैमेलकोत को दढ़ियल रूसी सरदार बहुत पसंद ग्राया ग्रौर उसने लोस से ग्रनुरोध किया कि वह उसके रेवड़ों को देख ले। फ़ौरन हल्की सी सफ़री बरफ़-गाड़ियों में ख़ूबसूरत सफ़ेद बारहसिंगों का दल जोता गया।

"याराक, तुम भी चलो न!" लोस ने कहा।

"नहीं, मैं यहीं रहूंगा।"

"याराक, तुम ज़रा भी न डरो। ध्यान रखो कि जब तक मैं इस प्रदेश में हूं, कोई तुम्हारा बाल तक बांका नहीं कर सकता। तुम्हारी ही वजह से तो मैं यहां आया हूं। इस बूढ़े से पूछ लो न। रूलतिना ने ही उसे मेरे पास भेजा था।"

याराक को राहत मिली और वह मुस्करा दिया।

"शुक्रिया लोस! तुम्हें आते देखकर मेरे दिल की तेज़ धड़कन तो कम हुई।"

तेईसवां अध्याय

क्रांति-समिति के लोगों ने हैमेलकोत के पड़ाव में दो दिन बिताये। इस अवधि में लोस ने बारहसिंगा-पालन की जानकारी प्राप्त कर ली। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि दो हज़ार बारहसिंगों का मालिक हैमेलकोत सचमुच बेहद ग़रीब है। वहां की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भरता की प्राचीन प्रणाली पर आधारित थी। लोग बारहसिंगों का मांस खाते थे और उनकी खाल से बने हुए कपड़े पहनते थे—बस, यही सब कुछ था। ये बारहसिंगे जंगली जानवरों की तरह समूचे टुंड्रा में भटकते रहते थे, एक चरागाह की काई ख़त्म हुई कि दूसरे की ओर चले जाते थे और लोग उसी तरह उनके पीछे चलते थे जिस तरह चूहों के पीछे लोमड़ियां। इधर कई बारहसिंगे भेड़ियों के शिकार हो जाते थे और कई खुर की बीमारी से या दुर्घटनाओं के कारण या तेज़ वासंतिक पाले के मौसम में असमय बच्चा जनने के फलस्वरूप मर जाते थे। इस तरह के लाखों बारहसिंगे चुकोत्स्क टुंड्रा में चरते रहते थे।

"हां, इसके बारे में कुछ न कुछ हमें ज़रूर करना चाहिए," लोस ने सोचा, हालांकि ख़ुद उसकी भी समझ में साफ़ साफ़ नहीं

आ रहा था कि इस पशुधन की समस्या को वाजिब तरीक़े से कैसे हल किया जाये।

तीसरे दिन रात के समय हैमेलकोत के पड़ाव से दो बरफ़-गाड़ियां रवाना हुईं। रिंतेऊ और अलितेत आगे आगे चल रहे थे। अलितेत की गाड़ी, जो पीछे बंधी थी, लड़खड़ाती घसिटती चली जा रही थी और कुत्ता-दल की राह में बाधा डाल रही थी। लोस को बार बार अपनी गाड़ी रोकनी पड़ती थी। कुत्ता-दल उत्सुकता और अधीरता के साथ मार्ग पर बड़ी मशक़्क़त से दौड़ रहा था। धीरे धीरे सफ़र करने से गाड़ीवान थक जाता है और उसे नींद आने लगती है जबकि तेज़ सफ़र से उसकी चुस्ती बढ़ जाती है। अच्छी रफ़्तार से दौड़ने में कुत्तों को भी मज़ा आता है।

क्षितिज पर धुंध दिखाई दिया जो धीरे धीरे नीचे उतरता हुआ चारों ओर फैलने लगा। शीघ्र ही पहाड़ियों की चोटियों को धुंध के कंबल ने ढक दिया।

"धुंध बरफ़ को आग की लपट की तरह निगल जाता है। रिंतेऊ, हमें जल्दी करनी चाहिए, नहीं तो हम बाढ़ की वजह से यहीं अटक जायेंगे," अलितेत ने कहा।

वह घबड़ाया सा दिखाई दे रहा था। मानो, धुंध ने उसे परेशानी में डाल रखा हो। लेकिन असल में वह बड़ा बेचैन था और गाड़ी पर बैठे बैठे पिशाचों की मन्नतें मना रहा था कि वे और भारी धुंध फैला दें।

"अलितेत, इस धुंध के हटने के कोई आसार नहीं नज़र आते। हवा है कहां—एक झोंका तक नहीं," रिंतेऊ ने परेशान होकर कहा।

धुंध आगे बढ़कर उनके पास आ पहुंचा। शीघ्र ही धरती को उसने ढक दिया। ऐसा दिखाई दिया कि सफ़ेद, नम बादलों में से

बरफ़-गाड़ियां तैरती चली जा रही हैं। टुंड्रा पर तना हुआ असीम आकाश आंखों से ओझल हो गया।

"इस शैतान अलितेत के कारण ही हमारी राह में रुकावटें आ रही हैं। अपनी गाड़ी उसने पीछे जो जकड़ दी है। मैं तो चाहता हूं कि उसे चकमा देकर यहीं छोड़ दूं। फिर भले ही वह अपने पांच कुत्तों के सहारे चाहे जैसे चला जाये," जुकोव ने खीजते हुए कहा।

"अन्द्रेई, मेरे दिमाग़ में जो बारहसिंगे घुसे हैं, किसी तरह हटते ही नहीं। सचमुच कैसी दौलत बेकार जा रही है! तुम तो जानते ही हो कि हमारी सरकारी योजना में कामचात्का का मछली उद्योग तक शामिल है।" लोस अपने हाथ में डंडा पकड़े था और बरफ़ की चिकनी सतह पर से सरपट भागने वाले कुत्तों को आवाज़ दे रहा था। भारी धुंध में कुत्तों की सिर्फ़ पिछली जोड़ी की पीठें और झबरी पूंछें अस्पष्ट दिखाई दे रही थीं।

"और यहां अनगिनत रेवड़ ऐसे हैं जो टुंड्रा में चूहों की तरह भटकते रहते हैं। हमें बारहसिंगा-पालकों का सम्मेलन करना चाहिए।"

छोटे छोटे दर्रों को लांघते समय बरफ़-गाड़ी कभी कभी खिसक जाती थी और एकाध पहाड़ी झरने की भुरभुरी बरफ़ पर से फिसलती चली जाती थी।

"इधर उधर से बटोरा हुआ कुत्ता-दल कभी ठीक से नहीं दौड़ सकता। रिंतेऊ, हमें जल्दी करनी चाहिए," अलितेत ने सलाह दी।

"हां सही है! अच्छा, तांगों को हम आगे रखें। फिर हमारे कुत्ते अच्छी तरह दौड़ने लगेंगे," रिंतेऊ ने कहा। अलितेत की चालबाज़ी का उसे शक तक न हुआ।

रिंतेऊ ने अपनी गाड़ी रोक ली और वह लोस के पास चला आया।

"लोस, हमें जल्दी करनी चाहिए। दो एक दिन में नदियों में बाढ़ आयेगी और फिर हमें गरमियों के आख़िर तक टुंड्रा ही में रहना पड़ेगा। सुनो, तुम आगे आगे चलो और मैं आवाज़ देकर रास्ता बताता जाऊंगा।"

"बहुत अच्छा," रिंतेऊ की सलाह से ख़ुश होकर लोस ने कहा।

वह अपनी बरफ़-गाड़ी को आगे ले गया। अब उसके पीछे रिंतेऊ के कुत्ते कुछ अच्छी रफ़्तार से दौड़ने लगे।

अलितेत ने बारीकी से धुंध में झांककर देखा और बड़ी सतर्कता से फुसफुसाया :

"बायें चलो; और बायें। कुत्ते रास्ते से दूर दूर जा रहे हैं।"

"लोऽऽस! बायीं तरफ़ से चलो!" रिंतेऊ चिल्लाया।

"कर्र! कर्र!" लोस ने कुत्तों को आवाज़ दी और कुत्ते हुक्म मानकर बायीं तरफ़ मुड़ गये।

"सुनो रिंतेऊ, यहां चिलम का एकाध कश हो जाये!" अलितेत ने कहा।

बूढ़े ने अपनी चिलम निकालकर बड़ी ख़ुशी से अलितेत की ओर बढ़ा दी। अलितेत ने गाड़ी पर माचिस जलायी और दोनों चिलम का मज़ा लेने लगे।

"बायें, और बायें," बढ़ती हुई अधीरता के साथ अलितेत बढ़ावा देता रहा।

पहाड़ के जिस करारे की ओर अलितेत इन रूसियों को दौड़ाना चाहता था वह कहीं बायीं तरफ़ था। अब तक किये हुए सफ़र में जो वक़्त लगा था उसके हिसाब से उन्हें इस समय उस स्थान के पास पहुंच जाना चाहिए था। अलितेत मन ही मन भुन्नाता और रास्ता ठीक से मालूम न होने के लिए अपने ही को कोसता रहा।

"अगर कुत्ते उस करारे को चूक जायें तो अलितेत के यहां आने का मतलब ही क्या रहा? रात में अपने सात कुत्तों को गाड़ी से खोलकर भगा देने में क्या फ़ायदा रहा? अब एक ही इलाज बचा था – अपनी ही राह पर पीछे दौड़कर फिर नीचे की ओर आना। वह रिंतेऊ से गाड़ी रोकने के लिए कहने ही को था कि उसे एक चीख़ सुनाई दी।

अलितेत बिजली की तरह गाड़ी पर से कूद पड़ा। ज़मीन पर औंधे मुंह गिरकर उसने अपना शिकारी छुरा करारे के बिल्कुल किनारे पर सख़्त बरफ़ में गाड़ दिया और जी-जान से उसे मुट्ठी में मज़बूती से पकड़े रहा। दूसरे ही क्षण रिंतेऊ और उसकी गाड़ी उस करारे के जबड़े में ग़ायब हो गयी।

अलितेत देर तक न हिला न डुला, चुपचाप पड़ा रहा। फिर अपना सिर उठाकर वह धीरे धीरे पीछे की ओर रेंगा, खड़ा हुआ और कुछ क़दम पीछे दौड़कर एकदम रुक गया।

"रिंतेऊ!" ऊंची से ऊंची आवाज़ में वह चिल्लाया।

लेकिन कोई जवाब न मिला। अलितेत ने राहत की सांस ली, पसीने से तर चेहरा अपनी टोपी से पोंछा और घने धुंध से ढके हुए टुंड्रा में ग़ायब हो गया।

चौबीसवां अध्याय

सूर्य-ग्रहण देखकर टुंड्रा के लोग घबड़ा जाते हैं। हैमेलकोत के पड़ाव में रूसी मेहमानों के आगमन से भी वैसी ही हलचल मच गयी। इस संबंध में लोग अपना अपना दिमाग़ लड़ाने लगे। हां, विचार के लिए यह अच्छी-ख़ासी ख़ुराक जो मिली थी।

हैमेलकोत ने भी टुंड्रा के एकांतवास का सहारा लिया ताकि बिना किसी बाधा के वह सोच-विचार कर सके। दढ़ियल रूसी सरदार

के साथ वाली बातचीत से वह काफ़ी बेचैन हो उठा था। सचमुच, इन तांगों को बारहसिंगों के इलाज के लिए टुंड्रा में ग्राने की क्या ज़रूरत थी? बीमारियों का मतलब है पिशाच, ग्रौर इन्हें कहीं न कहीं किसी के शरीर में रहना ही पड़ता है; ग्रादमी की ज़िंदगी में बीमारियां ग्राती हैं ग्रौर बारहसिंगे की ज़िंदगी में भी। ग्रौर ग्राज तक जो पहाड़ी लोग बड़े बड़े रेवड़ पालते ग्राये हैं उन्होंने कभी तांगों से मदद पायी थी क्या? ख़ुद उसके पिता के पास भी कितना बड़ा रेवड़ था। ग्रौर यह रेवड़ ग्रभी तक ज़िंदा था। ग्रो—हो! कैसी ग्रजीब बात है! बारहसिंगों की दवादारू ये तांग करेंगे, जैसा कि उस दढ़ियल ने कहा है! ग्राख़िर उन्हें कैसे पता चलेगा कि बारहसिंगे के मन में क्या है? ख़ुद हैमेलकोत ने ग्रपनी ग्राज तक की सारी ज़िंदगी ग्रपने रेवड़ के बीच बितायी। कई बार तो वह बरफ़ीले तूफ़ान में बारहसिंगे के पेट के नीचे भी सोया है! फिर भी वह पूरी तरह नहीं जानता कि बारहसिंगा क्या सोचता है। वह जानता था कि बारहसिंगे की मादा बच्चा जनने के लिए कौनसी जगह पसंद करती है, जानता था कि वनमक्खी की तकलीफ़ से बचाने के लिए बारह-सिंगों को कहां ले जाना चाहिए ग्रौर यह भी जानता था कि किन जगहों में उनके खुर फट जाने का डर है। बारहसिंगे के कंधों की हड्डी की सहायता से वह भविष्यवाणी कर सकता था कि रेवड़ को किस राह से जाना चाहिए। वह जानता था कि इस हड्डी को किस तरह ग्राग पर रखना चाहिए जिससे उसमें फटन पैदा हो ग्रौर वह यह सूचित करे कि कौनसी दिशा में ग्रच्छे चरागाह हैं ग्रौर कहां सिर्फ़ नंगी चट्टानें। तांगों को ये बातें थोड़े ही मालूम हैं?

बूढ़ा हैमेलकोत एक शिलाखंड पर बैठा था। वह गहरे विचारों में डूबा था। चारों ग्रोर ख़ामोशी ही ख़ामोशी छायी हुई थी। धुंध उठने लगा ग्रौर ग्राकाश के हिस्से दिखाई देने लगे।

अलितेत का स्मरण होते ही बूढ़े के चेहरे पर मज़ेदार मुस्कराहट दौड़ गयी। दढ़ियल सरदार का अलितेत को फंसाने का तरीक़ा बूढ़े को पसंद आया था। यह बात रेवड़ में से मादाओं को ललचाकर ले जाने वाले बारहसिंगे जैसी ही थी। वैसे भी बूढ़े के मन में अलितेत के प्रति बड़ी नफ़रत पैदा हुई थी और जब रूसी सरदार ने उसे फटकारा था तो बूढ़े ने देख लिया था कि दढ़ियल सरदार सच्चाई का समर्थक है। यह बात अच्छी और उपयुक्त थी। लेकिन सरदार की बारहसिंगे वाली बात उसे बिल्कुल पसंद न आयी।

सरई की टहनियों का एक गट्ठर लेकर आती हुई मेरी पहाड़ी की चोटी पर दिखाई दी। बूढ़े के पास पहुंचकर उसने जलावन का बोझ ज़मीन पर रख दिया।

"मेरी, तुम ज़रा आराम करो। तुम्हारा चेहरा थकान से मुरझा गया है। इसका कारण यह हो सकता है कि तुम्हारा बाप गोरा है। अब तुम आराम से सो सकोगी। अलितेत तुम्हें नहीं ले जायेगा। वह दढ़ियल सरदार से डरता है।"

"कुत्तों की बरफ़-गाड़ियां मुझे दूर से ही दिखाई दीं। मैंने सोचा कि अलितेत के पीछे पीछे ख़ुद चार्ली भी आया है। पिछले तीन दिन मैंने सिर्फ़ कंदमूल और चूहों के बिलों में मिले हुए भंडार के सहारे गुज़ारे हैं।"

"चूहों का सारा भंडार तो तुमने नहीं लूटा न?"

"जी नहीं हैमेलकोत, हर बिल के भंडार में से मैंने सिर्फ़ आधा हिस्सा ही लिया है।"

"ठीक ही किया तुमने। छोटे से चूहे का भी सब कुछ नहीं लूटना चाहिए तुम्हें—नहीं तो नयी लूट मिलने से पहले ही बेचारा मर जायेगा।"

बूढ़ा उठ खड़ा हुआ और उसने जलावन का गट्ठर उठाना चाहा लेकिन मेरी ने चुपचाप उसके पास से गट्ठर लेकर अपनी पीठ पर लाद लिया और हैमेलकोत के पीछे हो ली। जैसे ही वे पड़ाव के पास दिखाई दिये कि याराक उनकी अगवानी के लिए दौड़ा। मेरी से उसने गट्ठर ले लिया और खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"जानती हो मेरी? लोस यहां आया है। अलितेत उसी तरह उसका हुक्म मानता है जिस तरह गाड़ी खींचने वाला बूढ़ा बारहसिंगा अपने गाड़ीवान का। वह वही करता है जो लोस उसे करने को कहता है।"

फिर एक ओर मुड़कर याराक चिल्लाया:

"शुक्रिया लोस!"

हैमेलकोत के पड़ाव में हर किसी की ज़बान पर लोस का नाम था और हर कोई उसके बारे में सोचता था। उपकारी पिशाच की तरह वह इन लोगों के पास आया था और उसने उन्हें अपनी ज़िंदगी के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया था।

आये सारा दिन अलाव के पास बैठकर सोचता रहा। लेकिन अकेले ही सोचना-विचारना मुश्किल था। याराक को देखकर उसने कहा:

"याराक, चलो हम दोनों मिलकर विचार करेंगे। उधर उस छोटी सी पहाड़ी के पास हम चलेंगे। दूसरे लोगों के आगे अपने विचार रखने में मुझे डर लगता है।"

नीरव टुंड्रा में वे चुपचाप चलते रहे। वहां आवाज़ आ रही थी सिर्फ़ बारहसिंगों की टापों की। हटने वाले हिमक्षेत्रों की सी यह आवाज़ थी।

"याराक," पहाड़ी के पास जब दोनों बैठे तो आये ने धीरे से कहा, "लोस ने मुझे बताया है कि 'जब गरमियों में जहाज़ आयेगा

तो हम तुम्हें पढ़ने के लिए रूसी महाद्वीप में भेज देंगे। वहां पेत्रोग्राद नाम की एक बहुत ही बड़ी बस्ती है जिसकी आबादी सारे चुकोत्स्क की आबादी से भी ज़्यादा है।' पता नहीं मैं वहां क्या पढ़ूंगा। कुछ समझ में नहीं आता। रात भर मैं सिर खपाता रहा लेकिन बात ज़रा भी न बनी। मेरा दिमाग़ सुन्न हो गया है। अकेले सोचना-विचारना कितना मुश्किल है।"

"आये, तुम ज़रूर जाओ। मैं नहीं समझता कि इसमें कोई बुराई है। तुमने देख ही लिया कि लोस अलितेत के साथ किस तरह बोल रहा था और तुम्हारे साथ किस तरह। अलितेत के साथ और तुम्हारे साथ बोलते वक़्त उसकी आंखें अलग दिखाई दे रही थीं। यह साफ़ है कि वह तुम्हारा भला ही चाहता है, बुरा नहीं।"

"लेकिन याराक, ख़ुद उन्हीं ने तो कहा है कि उनके मुल्क में न बारहसिंगे हैं, न वालरस, और न सील ही। फिर मैं वहां रहूं कैसे? मैं तो मर जाऊंगा।"

"आये, जब चार्ली ने मुझे काम करने के लिए अमरीकी व्हेल-मार पर भेजा था उस वक़्त जहाज़ पर व्हेल और वालरस का काफ़ी गोश्त था, लेकिन अमरीकी लोगों ने वह नहीं खाया। कई दिन हम बरफ़ में फंसे रहे और मुझे कुछ खाना न मिला। फिर मैंने छोटे छोटे लोहे के बक्सों में बंद अमरीकी चीज़ें खानी शुरू कीं और ज़िंदा रहा।"

आये ग़ौर से याराक की बातें सुनता रहा। यह जानना बड़ा दिलचस्प था कि तांग कैसे रहते हैं और क्या खाते हैं। याराक उनके साथ रह चुका था—और उन्हें वह अच्छी तरह जानता था।

"आये, इन चीज़ों की आदत डालनी चाहिए, बस। जिधर जाओ उधर खाने की चीज़ें रहती ही हैं। लोस का इरादा अच्छा है। वह तुम्हारी भलाई करना चाहता है। उसे नफ़रत है अलितेत से।"

"अलितेत है भी बुरा आदमी, दुष्ट आदमी। उसी की वजह से मुझे छड़ा रहना पड़ा। मैं मानता हूं कि तीग्रेना अब मुझे भूल भी गयी होगी।"

आये के चेहरे पर परेशानी झलकने लगी। तांगों के मुल्क में जाने के विचार से वह घबड़ा उठा। लेकिन आख़िर कर भी क्या सकता था! पहाड़ियों में वह रहना न चाहता था और किनारे की ज़िंदगी में भी उसके लिए कोई दिलचस्पी नहीं रही थी। आये ने एक आह भरी और कहा:

"याराक, कुछ भी हो! मैं चला जाऊंगा!"

वे बातचीत में मशग़ूल थे। इस बीच धुंध उठ गया था।

वे जब पड़ाव की ओर लौट रहे थे तो उन्हें रास्ते में यकायक एक आदमी धीरे धीरे अपने क़दमों को घिसटता हुआ सा दिखाई दिया।

"देखो याराक! यह तो अलितेत है।"

याराक ने अपनी आंखें मलीं।

हां, वह अलितेत ही था।

"याराक, तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ गया? क्या तुम उससे डरते हो? डरो नहीं, अब मैं जो तुम्हारी मदद करूंगा। अगर वह मेरी को ले जाने की कोशिश करेगा तो हम उसे मार डालेंगे। उसके कारण मैं क्रोध से इतना पागल हो गया हूं कि बारहसिंगे की तरह उसकी आंत ही फाड़ निकालूंगा," अधिकाधिक उत्तेजित होते हुए आये ने कहा।

पड़ाव के लोग भी चिल्ला रहे थे:

"अलितेत आ रहा है, अलितेत!"

मेरी तंबू से बाहर आयी। अलितेत को देखकर वह चीख़ पड़ी और ज़ोरों से पीछे की ओर दौड़ पड़ी।

याराक और आये भी पहाड़ी की ढाल पर से उसकी ओर दौड़े।

वे इतने तेज़ दौड़ रहे थे कि उनके चेहरे सुर्ख़ हो उठे और टोपियां सिर पर से खिसककर तस्मों के सहारे उनकी पीठ पर लोटती-उछलती रहीं।

हैमेलकोत पड़ाव के बीच चुपचाप खड़ा सोच रहा था: "अलितेत वापस क्यों आ गया?"

आये ने अपना छुरा निकालकर पीठ पीछे छिपा लिया।

"आये, लाओ वह छुरा मुझे दे दो," हैमेलकोत ने कहा। "अरे तुम तगड़े जवान हो न? या इतने कमज़ोर हो गये कि छुरा न हो तो ताक़त भी जवाब दे जाती है? क्यों उस आदमी के ख़ून का दाग़ मेरे मुल्क पर लगा रहे हो? अरे इससे तो यहां काई तक का उगना बंद हो जायेगा! सुनो याराक, तुम भी अपना छुरा मुझे दे दो!"

"हैमेलकोत, यह लो मेरा भी," मेरी ने कहा।

बूढ़े ने सब छुरे ले लिये और उन्हें बरफ़ पर फेंककर खुद उनपर खड़ा रहा।

अलितेत आ पहुंचा।

"तांग ग़ायब हो गये," उसने सहज ही में कहा। "और उनके साथ रिंतेऊ भी। वे शायद करारे पर से गिर पड़े होंगे।"

"लेकिन तुम कैसे नहीं ग़ायब हुए? तुम भी तो उनके साथ ही सफ़र कर रहे थे न?" आये ने पूछा।

"ज़बान संभाल, कुतिया के बच्चे! अरे कमीने, तुझसे कौन बोल रहा है? धत् बिना बीवी का मर्द!"

आगबबूला होकर आये अलितेत की ओर झपटा लेकिन हैमेलकोत ने उसकी पेटी के सहारे उसे पकड़ लिया।

"बात अभी ख़त्म नहीं हुई!" उसने आये से कहा। "बोलो अलितेत!"

अलितेत बरफ़ पर बैठ गया और उसने अपना पेट पकड़ लिया। उसका चेहरा इस तरह ऐंठ गया मानो उसे भारी दर्द हो रहा हो।

"आखिर तुमने कैसे उन्हें ग़ायब होने दिया? तुम रिंतेऊ की बरफ़-गाड़ी पर ही सवार थे न?" हैमेलकोत ने पूछा।

"मैंने शायद ढेरों चरबीदार मांस खा लिया था," अलितेत ने कराहते हुए कहा। "मुझे बहुत बार गाड़ी पर से उतरना पड़ा। ओह, अभी तक मेरे पेट में कैसा दर्द हो रहा है!"

आये क्रोध से कांप उठा। वह जानता था कि पास में एक ही करारा है 'रीछ का कान' और यह बरफ़-गाड़ी की राह से बहुत ही दूर है।

"हो सकता है कि तुमने जानबूझकर ही उन्हें 'रीछ के कान' की ओर जाने की सलाह दी हो," आये ने कहा।

"...चुप रह! नहीं तो ऐसा तमाचा जड़ूंगा कि ज़बान ही बाहर निकल आयेगी," अलितेत ने कहा।

"आये का कहना सही है," हैमेलकोत बोला। "'रीछ का कान' बरफ़-गाड़ी की राह से एक ओर हटकर है। आखिर तुम वहां गये कैसे? वह तो खतरनाक जगह है। पिछले साल बरफ़ीले तूफ़ान में भेड़िये आठ बारहसिंगों को वहां भगाते हुए ले गये थे। बारहसिंगे उधर गिरकर टुकड़े टुकड़े हो गये।"

"मेरकिचकिन, अलितेत!" याराक ने एक गाली दे डाली और आये की ओर मुड़कर पूछा: "आये, तुम जानते हो यह जगह?"

"अच्छी तरह जानता हूं! हाल ही में मैं वहां से होकर गुज़रा था।"

"चलो, हम फ़ौरन वहीं चलें। हमें उनको ढूंढना चाहिए।"

हैमेलकोत ने कहा:

"वह बहुत ही दूर है और पैदल जाना मुश्किल भी है। देखो, मेरी बारहसिंगा-गाड़ी ले जाओ। तब तुम जल्दी पहुंच जाओगे।"

दोनों जवान बरफ़-गाड़ी में बारहसिंगों को जोतने के लिए दौड़ पड़े।

अलितेत उठ खड़ा हुआ, बूढ़े के पास आया और फुसफुसाकर कहने लगा :

"अगर वे तुम्हारे बारहसिंगों को ले जायेंगे तो पिशाच तुमपर ख़फ़ा होंगे और तुम्हारे रेवड़ के बारहसिंगे बीमार होकर मर जायेंगे।"

हैमेलकोत चौंक उठा। एक मिनट विचार करके वह बोला :

"याराक, ठहरो! बरफ़-गाड़ी न जोतो। लगता है कि बारहसिंगों को ले जाना ठीक न होगा।"

पच्चीसवां अध्याय

करारे की तलहटी में भारी धुंध फैला हुआ था। यहां भुरभुरी बरफ़ के एक ढेर के बीच लोस पड़ा था। दर्द के एक दौर से वह होश में आया और उसने अपनी आंखें खोलीं।

"बाक़ी लोग कहां हैं? कुत्तों का क्या हुआ?.. ऊ-हू-हू! कैसा दर्द हो रहा है!" वह कराह उठा। "पैर में मोच आयी सी लगती है।" अपनी सारी ताक़त बटोरकर वह चिल्ला उठा : "अन्द्रे-ई-ई-ई!"

चट्टान की बग़ल में प्रतिध्वनि गूंज उठी।

"एहे-हे ऽ ऽ!" पूरे ज़ोर से लोस फिर चिल्लाया।

फिर एक बार प्रतिध्वनि ने ही उसकी पुकार का जवाब दिया।

तेज़ दर्द का मुक़ाबला करते हुए लोस बड़ी मुश्किल से उठा और चोट खाये हुए पैर की जांच करने लगा।

"मैंने जो सोचा था, वही हुआ। हड्डी टूट गयी। ख़ैरियत यही है कि ख़ून नहीं बह रहा है... लेकिन अन्द्रेई का क्या हाल है?"

लोस सारी घटना को याद करने लगा।

"जब हम गिर रहे थे उस वक़्त अन्द्रेई बिल्कुल मेरे पास था। मतलब यह कि वह अब भी यहीं कहीं होगा। वज़न में वह मुझसे

हल्का है... तो हममें से पहले कौन गिरेगा? वह मेरे दाहिने था। हो सकता है कि मैंने कलाबाज़ी खायी हो और दाहिने-बायें में बिल्कुल अदल-बदल हो गया हो!" उजड़े हुए ख़ानाबदोश पड़ाव के पास रिंतेऊ ने जिस तर्क प्रणाली से बरफ़-गाड़ियों की लीकों का पता चलाया था उसी का अनुसरण करते हुए लोस अनुमान कर रहा था।

तेज़ दर्द के बावजूद लोस हांफता-कराहता अपनी कोहनियों के बल ऊपर उठा और धीरे धीरे आगे सरकने लगा। दोनों ओर लगे हुए बरफ़ के नये ढेरों को जैसे पैनी निगाह से वह देखता गया। कठिन परिश्रम के कारण उसके सारे बदन में पसीना छूट आया। वह मुश्किल से कुछ गज़ आगे बढ़ा होगा कि सहसा रुक गया और मुंह में अपनी दो अंगुलियां रखकर उसने तेज़ सीटी बजायी।

"मालचिक, मालचिक!"* अपनी बरफ़-गाड़ी के आगे वाले कुत्ते को पुकारता हुआ वह चिल्लाया लेकिन उसकी पुकार सुनसान बरफ़ीले मैदान में डूब गयी।

"कैसी आफ़त आ गयी," खिन्न होकर उसने सोचा। "आख़िर ये सब के सब गये कहां? बरफ़ीली चट्टान के नीचे दब तो नहीं गये?" रंजीदगी के साथ कुछ मुस्कराकर वह ज़ोर से बोल उठा:

"किनारे तक रेंगते हुए जाने की कोशिश करने में कुछ फ़ायदा नहीं।"

लोस को याद हो आयी गृह-युद्ध की और अपनी बख़्तरबंद ट्रेन की... वहां मौत हमेशा ही बग़ल में खड़ी रहती थी और लोस मौत की नज़र से नज़र भिड़ाकर देखने का आदी हो गया था। लेकिन यहां इन सफ़ेद चट्टानों और ग़ैरदुनियावी ख़ामोशी के बीच उसे पहले पहल मौत का डर लगा।

---

* लड़का। (रूसी)

"ओह, हद हो गयी! भाड़ में जाये सब कुछ... पिशाचों ने दढ़ियल सरदार का ख़ात्मा कर डाला... ओह, नताशा!"

उसने टटोलकर अपनी पाइप और चिमटी-सिमटी दियासलाई की डिबिया निकाली और पीठ के बल लेटकर पाइप पीने लगा।

"लोस इतनी आसानी से हारेगा नहीं... अभी हमारा कुछ और मुक़ाबला होगा," आसमान की ओर देखकर लोस गरज उठा।

यकायक उसे कुत्ते की गुर्राहट सुनाई दी।

"अन्द्रे – ई – ई – ई!" लोस ने आवाज़ दी।

कुत्ता भौंक उठा।

कुत्ते की आवाज़ की दिशा में लोस रेंगता गया और शीघ्र ही उसे बरफ़ में ढंकी हुई एक बरफ़-गाड़ी दिखाई दी। गाड़ी पर रिंतेऊ का ऐंठा-सिकुड़ा शरीर पड़ा था। उसका सिर छिन्न-विच्छिन्न हो गया था। गाड़ी के इर्दगिर्द वाली बरफ़ पर ख़ून के धब्बे दिखाई दे रहे थे। गाड़ी में जुता हुआ एक कुत्ता वहीं बैठकर ख़ून से रंगी बरफ़ पेटू की तरह चट करता जा रहा था।

लड़ाई के मोर्चे पर लोस ने कई आदमियों को मौत के घाट उतरते देखा था लेकिन इस बूढ़े की लाश का जो दिलख़राश असर उसपर हुआ वैसा और कभी न हुआ था। कुत्तों के पट्टे जहां पर बंधे हुए थे वह लगाम का सिरा चबा चबाकर काटा गया था और यह साफ़ था कि धुरे में जुते हुए कुत्ते को छोड़कर बाक़ी सभी कुत्ते नौ दो ग्यारह हो गये थे।

लोस ने इस अकेले कुत्ते को खोल दिया, उसका चमड़े का पट्टा अपनी पेटी में बांध लिया और तेज़ी से रेंगकर आगे बढ़ा।

इस विचार से कि अब अन्द्रेई की लाश दिखाई देगी, वह यकायक सिहर उठा। ख़ून से रंगी बरफ़ को गटकते जा रहे कुत्ते को देखकर वह अपने आप ही से बोला:

"नहीं, मैं अपना मांस खाने का मौक़ा तुम्हें नहीं दूंगा। इससे पहले कि मेरे प्राण मुझे छोड़कर जायें, मैं तुम्हें मार डालूंगा।

कुत्ता मानो उसके विचार समझ गया। उसके रोंगटे खड़े हुए और वह गुर्राया। लोस चौंक उठा। इसी क्षण उसने पास ही से किसी के कराहने की अस्पष्ट आवाज़ सुनी।

लोस ने अपनी टोपी उतारी और ग़ौर से सुनने लगा। लेकिन सर्वत्र ख़ामोशी थी। कहीं भी ज़िंदगी की कोई निशानी नहीं नज़र आयी। कुत्ता चुपचाप पट्टे को खींच रहा था। लोस ने उसे अपनी पेटी से खोल दिया, पट्टे का एक सिरा अपने हाथ में पकड़कर कुत्ते को आगे बढ़ने दिया और ख़ुद उसके पीछे रेंगता गया।

दूर ही से उसे बरफ़ पर अन्द्रेई का सिर दिखाई दिया। कंधे तक उसका बदन बरफ़ में गड़ा था। लोस आगे झपट सा पड़ा। वह अन्द्रेई के पास पहुंचा ही था कि ख़ुद बेहोश हो गया।

"निकीता सेर्गेयेविच! लगता है कि मैं सो गया था," आंखें खोलकर अन्द्रेई ने कहा।

अपना एक हाथ छुड़वाकर उसने लोस के चेहरे और दाढ़ी का स्पर्श किया।

"सेर्गेयेविच, तुम जवाब क्यों नहीं देते?"

अन्द्रेई ने उठने की कोशिश की। उसका पिस्तौल उसकी छाती में गड़ रहा था। एक हाथ से अन्द्रेई ने अपने इर्दगिर्द की बरफ़ हटायी और अपनी रोवेंदार क़मीज़ के अंदर हाथ डालकर अपना पिस्तौल निकाल लिया। पिस्तौल से गोली छूटी और उसकी ज़ोरदार आवाज़ चट्टानों के गोरखधंधे में गूंज उठी। जब यह आवाज़ डूब गयी तो अन्द्रेई ने दो गोलियां और दाग़ीं।

"अन्द्रेई, अरे गोली कौन चला रहा है?.." होश में आते हुए लोस ने कहा।

"सेर्गेयेविच, तुम ज़िंदा हो?" बेहद ख़ुशी से अन्द्रेई चिल्लाया।

"हां, लगता तो ऐसा ही है," लोस ने मुस्कराकर कहा। "अभी मरकर कैसे चलेगा–बहुत से काम करने हैं।"

"सेर्गेयेविच तुम रेंगते क्यों हो?"

"पैर में कुछ चोट आयी है। लगता है हड्डी टूट गयी है। उसे कमठी से बांध रखना ज़रूरी है।"

"मैं जाकर बरफ़-गाड़ी ढूंढूंगा और उसी से कुछ खपच्चियां छील लाऊंगा।"

"ज़रा ठहरो अन्द्रेई, जाओ मत। जब तक धुंध ख़त्म नहीं होता तब तक यहीं रहो, कहीं हम फिर से बिछुड़ न जायें।"

"अच्छा सेर्गेयेविच, कुछ चाकलेट ही चबा लें।"

अन्द्रेई ने चाकलेट का एक ख़ासा बड़ा बार निकाल लिया।

"कैसी फूटी क़िस्मत है, अन्द्रेई!" चाकलेट का टुकड़ा तोड़ते हुए लोस ने कहा। "बिल्कुल शुरू से ही। और वह पक्का लुटेरा थामसन है कि यहां बीस साल से रहता आया लेकिन उसे कुछ नहीं हुआ! डॉलर ही अपने सामने रखकर रहता है।"

धुंध उठ गया और वह चट्टान साफ़ दिखाई देने लगी जिसकी तलहटी में बरफ़ के ढेर ही ढेर पड़े थे। नज़दीक ही रिंतेऊ़ की बरफ़-गाड़ी की पीठ नज़र आ रही थी। अन्द्रेई उठ खड़ा हुआ और सेर्गेयेविच का पैर बांध रखने के लिए कुछ खपच्चियां लाने चला गया।

छब्बीसवां अध्याय

जैसे ही जैसे मि० थामसन के अमरीका के लिए रवाना होने का समय नज़दीक आ रहा था वैसे ही वैसे उसके बुरे दिन आ रहे थे। क्रांति-समिति के कार्यालय से उसके पास एक पत्र आया जिसमें

लिखा था कि वह अपने पास बची हुई रोवेंदार खालें वाजिब क़ीमत पर बेचने के लिए प्रादेशिक केंद्र में ले आये। स्वाभाविक ही था कि यह प्रबंध मि० थामसन को ज़रा भी पसंद न आया। स्कूनर के न आने के कारण उसके पास जो पंद्रह सौ खालें बची हुई थीं, मि० थामसन समझता था कि वह उसकी अपनी पूंजी है। इन खालों को अमरीका भेज देने की व्यवस्था उसने अलितेत के साथ कर ली थी और वह उत्सुकता से अलितेत की राह देख रहा था। रूलतिना ने अपने पति की अस्थिरता देखी और उसे शक हुआ कि चार्ली ज़रूर कोई चाल चलने की सोच रहा है।

भंडार के पास जब चार्ली को रूलतिना दिखाई दी तो उसने बीवी के साथ बड़े प्यार से बातचीत की।

"देखो रूलतिना, स्कूनरों का मेरे पास आना बंद हो गया है। रूसियों ने मेरे लिए ख़रीद-फ़रोख़्त करना मना कर दिया है; लेकिन बग़ैर माल के हम रहें भी कैसे? अब कुछ माल लाने के लिए मुझे अमरीका जाना पड़ेगा।"

"चार्ली, तुम्हें क्या करना चाहिए यह तुम जानते ही हो," रूलतिना ने लाचारी से कहा।

मि० थामसन यह कहने को था कि वह बेन को अमरीका दिखाने के लिए ले जाना चाहता है लेकिन उसने न कहना ही ठीक समझा।

भंडार में जाकर उसने टाट में बंधे खालों के गट्ठरों और बैंक के काग़ज़ात और रोकड़ वाली लोहे की तिजोरी की जांच-पड़ताल की। तिजोरी पर बैठकर उसने अपनी पाइप जलायी और सोचने लगा: "मेरी सारी ज़िंदगी इस तिजोरी में बंद है। आख़िर वह बेकार नहीं गयी। मैंने अच्छी-ख़ासी माया जोड़ ली है। अब बाक़ी है यहां से नौ दो ग्यारह होना और खालों के इस आख़िरी अंबार को उन रूसियों से बचाना।"

यकायक उसे बाहर से बच्चों की चीख़ सुनाई दी :

"अलितेत ! अलितेत !"

मि० थामसन बाहर की ओर दौड़ा और क्षितिज पर व्हेल-नाव का पाल देखकर जल्दी जल्दी अपने कमरे में लौट आया।

"रूलतिना, बच्चों को ज़रा मेरे पास भेज देना!" उसने चिल्लाकर कहा।

वह छोटा सा कमरा बच्चों से भर गया। कुछ डरते हुए से वे अपने पिता की आरामकुर्सी के इर्दगिर्द भीड़ लगाये खड़े रहे।

"आओ बच्चो, और नज़दीक आओ! आओ बेन आओ!" उन्हें गले लगाकर उसने कहा :

"सुनो, मैं कुछ दिन के लिए अमरीका जा रहा हूं। कहो, तुम्हारे लिए क्या क्या ले आऊं? जो कहो, मैं ज़रूर ले आऊंगा।"

"चार्ली, मेरे लिए कुछ 'चूइंग गम' ले आना," टेढ़ी आंखों वाली बेर्ता ने ढिठाई से कहा।

"उसका एक पिटारा का पिटारा ले आऊंगा तुम्हारे लिए। अच्छा, औरों को क्या चाहिए? बेन, कहो तुम्हारे लिए क्या ले आऊं?"

"मेरे लिए एक छोटी सी राइफ़ल ले आना–मगर हल्की। मैं किनारे पर से सीलों का शिकार करूंगा। कहते हैं कि अपने हाथ से मारे हुए सील का मांस ज्यादा ज़ायक़ेदार होता है।"

मि० थामसन ने एक लंबी सांस ली और लगभग फुसफुसाते हुए कहने लगा :

"अच्छा बेन, बहुत अच्छा! मैं तुम्हारे लिए ज़रूर राइफ़ल ले आऊंगा।"

बाप और बच्चों के बीच की यह बातचीत रूलतिना दरवाज़े के बाहर खड़ी खड़ी सुन रही थी। चार्ली उनके साथ प्यार भरी बातें कर

रहा था। रूलतिना ने पहले कभी उसे इस तरह सभी बच्चों के साथ बातें करते न देखा था।

इधर धुंध ने मध्यरात के सूरज को ढक दिया। व्हेल-नाव किनारे की ओर आ रही थी। बच्चे उधर दौड़ गये। मि० थामसन भी जल्दी जल्दी उनके पीछे हो लिया। उसने अलितेत का हार्दिक स्वागत किया।

"अलितेत, अरे अभी से मैं तुम्हारी राह देख रहा हूं! सब कुछ तैयार रखा है मैंने। अपने लोगों से कह दो कि जल्दी जल्दी वे खालों के गट्ठर और तिजोरी जहाज़ पर रख दें। सब सामान भंडार में तैयार है।"

मि० थामसन ने मि० साइमन्स के व्यापार-केंद्र पर एक नज़र डाली। फिर, कुछ देर सोचकर वह अपने देश-बंधु से मिलने गया। मुद्दत से वह उससे न मिला था।

"ओहो, थामसन! वाह भई, बड़ी ख़ुशी हुई!" मि० साइमन्स ने कहा।

"साइमन्स, अगर मैंने कभी तुम्हें भला-बुरा कहा हो, तो मुझे मुआफ़ कर देना..." कुछ परेशान सा होकर मि० थामसन बोला।

"अरे कुछ नहीं, मि० थामसन, कुछ नहीं!"

"साइमन्स, मैं तुम्हारी सलाह को अमल में लाना चाहता हूं। मैं जा रहा हूं और फिर न लौटूंगा। बूढ़े आदमी का कुछ बुरा न मानना!"

"मि० थामसन, तुम्हारा विचार अच्छा है! मैं तुम्हारे लिए शुभ कामना करता हूं। कहो, कब रवाना होने का इरादा है?"

"बस अभी, इसी क्षण! अलविदा, साइमन्स।"

"ठहरो, एक मिनट ठहरो। मैं तुम्हें विदा करने आऊंगा..."

"शुक्रिया। अच्छा हो कि तुम न आओ। सचमुच, मेहरबानी करो।"

मि० थामसन बाहर आया और जल्दी जल्दी किनारे की ओर चला गया। उसने खालों के गट्ठर गिने, तिजोरी पर नज़र दौड़ायी और फिर उत्सुकता से पूछा :

"बेन कहां है?"

"तुम अपने दस्ताने लेना भूल गये थे। वह उन्हें लाने गया है," रूलतिना ने जवाब दिया।

व्हेल-नाव में मल्लाह अपनी अपनी जगह जा बैठे थे। अलितेत पतवार के पास खड़ा था। अकेला मि० थामसन अभी तक किनारे पर खड़ा अधीरता से बेन की राह देख रहा था।

बेन हांफता हुआ आ पहुंचा और उसने दस्ताने अपने पिता को दे दिये। मि० थामसन ने दस्ताने पहने और अपने पैरों को ज़रा इधर उधर किया। बेन की ओर देखकर उसने पूछा :

"बेन, तुम वालरस का शिकार देखना चाहते हो?"

लड़के की आंखें चमक उठीं।

जवाब की राह न देखते हुए मि० थामसन ने बेन को उठाया और व्हेल-नाव में खड़ा कर दिया। नाव को आगे ढकेलकर वह भी उसमें बैठ गया।

"चार्ली, देखो बेन ने सफ़री जूते नहीं पहने हैं!" रूलतिना चिल्लायी।

लेकिन नाव रवाना हो चुकी थी। बेन हाथ हिलाता हुआ चिल्लाया :

"रूलतिना, मेरे जूते अभी अच्छे हैं! सुनो, मैं तुम्हारे लिए वालरस का ताज़ा जिगर लाऊंगा!"

"तूमातूगे, चलो पाल फहरा दो!" अलितेत ने हुक्म दिया।

शीघ्र ही व्हेल-नाव धुंध में ग़ायब हो गयी।

रूलतिना किनारे पर खड़ी थी। उसे अपने बेटे की चिंता होने लगी। "चार्ली बेन को ले गया है। शायद हमेशा के लिए। वह मुझे फिर

कभी न मिलेगा।" घोर निराशा के स्वर में रूलतिना चिल्ला उठी:

"बेन, बेन!"

कंकरीले किनारे पर वह ढह सी गयी और धुंध में ढंके हुए सागर को देर तक ताकती रही। अपने लंबे जीवन की स्मृतियां उसके मन में घिर आयीं। चार्ली के साथ वह उस तरह कभी नहीं बोल सकी थी जिस प्रकार अन्य स्त्रियां अपने पति के साथ बोलती हैं। गोरे आदमी के साथ रहना बड़ा मुश्किल था। लेकिन अब वह घर जायेगी और लोगों के साथ खुलकर बातें करेगी। पहले की तरह अब उसे फुसफुसाने की कोई ज़रूरत नहीं। सदा की फुसफुसाहट से उसका गला ख़राब हो गया था। उसने भागती हुई व्हेल-नाव को धुंध के बीच से देखने की कोशिश की। नाव में उसका बेन जो जा रहा था! उसकी आंखों में आंसू उमड़ आये।

धुंध के ख़त्म हो जाने की उम्मीद करती हुई वह देर तक किनारे पर बैठी रही। आस-पास सन्नाटा छाया हुआ था। कहीं दूर से बंदूक़ों की आवाज़ सुनाई दी। अब लोग ताज़ा मीठा मांस लेकर घर आयेंगे। वालरस के मांस की दावत होगी।

बेर्ता दौड़ती हुई आ पहुंची और उसने फुसफुसाकर रूलतिना को घर चलने के लिए कहा।

"बेर्ता, अब तुम्हें ज़ोर से बोलना चाहिए," मां ने कहा।

सत्ताईसवां अध्याय

व्हेल-नाव उत्तर-पूर्व ३५ अंश पर रवाना हुई। मि० थामसन ने ही यह मार्ग निश्चित किया था। अलितेत पतवार के पास खड़ा कुतुबनुमे को ताक रहा था। सागर की सतह पर जहां-तहां बरफ़ के तूदे तैर रहे थे।

मि० थामसन लोहे के संदूक पर बैठा था। एक हाथ से उसने बेन को पकड़ रखा था, मानो डर रहा हो कि वह कहीं भाग न जाये। थामसन पीछे मुड़कर उस किनारे की ओर ताकने लगा जहां उसकी आधी ज़िंदगी बीती थी। लेकिन किनारा धुंध में छिप गया था। थामसन को कुछ खेद हुआ।

चार्लस थामसन अब सभ्य संसार की ओर जा रहा था। उसके मन में विचार आया कि अपने को नये कोलाहलपूर्ण जीवन के अनुकूल किस प्रकार ढालूं? उसके हृदय में यकायक भय उत्पन्न हुआ। परेशान होकर उसने व्हेल-नाव को पीछे घुमाने की बात भी सोच डाली। यदि उसके मन में यह विवेकपूर्ण विचार न आता कि अब किनारे पर लोस का राज है तो वह ज़रूर व्हेल-नाव को वापस घुमा लेता। फिर उसने अपने संदूक की ओर देखा और फुसफुसाकर बेन से कहा:

"देख बेन, इसमें हमारी सारी ज़िंदगी बंद है। हम दोनों दौलतमंद बनेंगे। अपनी मूल पूंजी को बचाये रखने के लिए हम अपना एक छोटा सा धंधा शुरू करेंगे। हमें किसी चीज़ की कमी नहीं होगी।"

लेकिन बेन अपने बाप की बात कहां सुन रहा था? वह टकटकी बांधे देख रहा था सागर की सतह को, जहां पर जबतब एकाध सील तैर आता था।

मि० थामसन नाव के पिछले हिस्से में अलितेत के पास गया।

"अब वह रूसी देर तक चल नहीं सकेगा। असल में मुझसे ज़रा सी ग़लती हो गयी। चट्टानों का निशाना मैं चूक गया और वे भुरभुरी बरफ़ में गिर गये," अलितेत ने झुककर थामसन के कान में कहा।

"अलितेत, मैं जाड़ों में ख़रीद-फ़रोख़्त के लिए नहीं आऊंगा। ये रूसी मेरी राह में रोड़े अटकायेंगे। आख़िर वे बच तो गये ही हैं। गरमियों में मैं स्कूनर पर माल ले आऊंगा।"

"बहुत अच्छा!" अलितेत ने कहा। "लेकिन सुनो, एनमकाई बस्ती के पास न फटकना बल्कि 'चिड़िया चोंच' घाटी तक चले जाना। वहां कोई रहता नहीं और किसी को कानों कान ख़बर भी न होगी। गरमियों में मैं वहीं तुम्हारी राह देखूंगा।"

व्हेल-नाव बरफ़ के तूदों के बीच में से होती हुई आगे बढ़ रही थी। पौ फट चुकी थी और इधर उधर सूरज की किरणें धुंध को चीरकर बाहर आने की कोशिश कर रही थीं। अलितेत उत्सुकता से देख रहा था कि कहीं किनारे की झलक दिखाई दे। वैसे कुतुबनुमा है बड़ी अच्छी चीज़, लेकिन चट्टानों के बारे में सतर्क रहने में कुछ नुक़सान थोड़े ही था!

"रुक जाओ, रुक जाओ!" ज़ोरों से फुसफुसाते हुए अलितेत ने डांड़ चलाने वाले मल्लाहों से कहा। "देखो चार्ली, देखो! उधर बरफ़ के तूदे पर एक वालरस पड़ा है!"

मि० थामसन ने दूरबीन में से देखा।

"काफ़ी बड़ा वालरस है! ओह, कैसे बड़े बड़े दांत हैं उसके! अलितेत, मैं उसका सिर और दांत बतौर यादगार के ले जाना चाहता हूं। हमें इस वालरस का शिकार करना ही चाहिए।"

"यह बड़ा ज़ालिम वालरस है। जब वह बच्चा था और अपनी मां की पीठ पर जा रहा था तो मां को किसी ने मार डाला होगा और फिर यह अकेला रह गया। ऐसा वालरस किनारे से सभी सीलों को भगा देता है। हम अभी उसका ख़ात्मा कर देंगे।"

व्हेल-नाव बिल्कुल आवाज़ न करते हुए उस सोये हुए जानवर के पास पहुंची। तूमातूगे ने डांड़ रखा, अपनी बंदूक़ उठायी और नाव के अगले हिस्से पर रेंगकर चला गया। अलितेत ने बरछी और हवाई थैली तैयार रखी।

बेन वालरस को देख रहा था। उसकी सांस घुटती जा रही थी। वालरस के शिकार का उसके लिए यह पहला ही अनुभव था।

लेकिन बेन जानता था कि वालरस को एकदम नहीं मारना चाहिए–वह बरफ़ पर से खिसककर डूब जायेगा। उसे पहले जख़्मी करना चाहिए, उसपर बरछी चलानी चाहिए और फिर उसके सिर में गोली चलाकर उसे मार डालना चाहिए। इसमें कोई शक न था कि तूमातूगे अभी उसके डैनों में या गर्दन में गोली चला देगा।

व्हेल-नाव बिना आवाज़ किये पानी को काटती जा रही थी। आवाज़ आ रही थी सिर्फ़ डांड़ों से टपकने वाली बूंदों की।

गोली छूटी। वालरस ने अपने विशाल दांत ऊपर उठाये, सिर हिलाया और अलितेत की बरछी छूटने से पहले ही पानी में गोता लगाया।

हर कोई बड़े ग़ौर से देख रहा था कि वालरस कहां तैर आता है ताकि बरछी फेंकने वाले को आगाह किया जा सके। लेकिन देर तक वह पानी की सतह पर आया ही नहीं।

यकायक एक ख़तरनाक चपेट से व्हेल-नाव का तल कांप उठा। तल की तीन तख़्तियां ऊपर उखड़ आयीं और दूसरे ही क्षण दरार में से उस जानवर के विशाल दांत उभर आये। नाव में पानी घुसने लगा। चीख़-चिल्लाकर मल्लाह उस दरार पर गिर पड़े और जल्दी जल्दी उन्होंने उसमें अपने परके को ठूंसना शुरू किया। अगले ही क्षण वालरस का सिर नाव के किनारे उभर आया। उसमें से ख़ून के फ़व्वारे छूट रहे थे और वह आंखें बंद किये ग़ुर्रा रहा था। उसने नाव के किनारे अपने दांत इस तरह फंसा दिये थे मानो किसी बरफ़ के तूदे पर चढ़ने की कोशिश कर रहा हो। तूमातूगे ने सीधे गोली दाग़ दी और उसी क्षण उस भीमकाय वालरस के भारी शरीर के नीचे व्हेल-नाव उलट गयी।

मि० थामसन वालरस की तरह फुंकारता हुआ नज़दीक से नज़दीक वाले बरफ़ के तूदे की ओर झपटा, तैरता हुआ उसके पास गया और उसके किनारे को पकड़कर लड़खड़ाता हुआ उसपर चढ़

गया। उसका चेहरा फीका पड़ गया था और तर-ब-तर बदन से पानी चू रहा था। उसका चश्मा भी कहीं गिर गया था और उसकी अंगुलियों के नाखून टूट गये थे।

"हे भगवान्!" अपने चारों ओर देखकर और उन्मत्त होकर वह कराह उठा। "बेन! बेन!"

थामसन के शरीर में कंपकंपी पैदा हो गयी, और वह उस दिशा की ओर देखने लगा जहां व्हेल-नाव डूब गयी थी। एक ही क्षण में सारा जीवन उसके आगे साकार हो उठा।

"हे भगवान्!" फिर एक बार भगवान् का नाम लेकर वह बरफ़ पर गिर गया।

अलितेत का सिर पानी की सतह पर दिखाई दिया। डाट की तरह वह ऊपर-नीचे हो रहा था। हवाई थैली उसने कसकर पकड़ रखी थी और पानी में गर्दन तक डूबा हुआ नज़र आ रहा था।

अलितेत लड़खड़ाता हुआ बरफ़ के दूसरे तूदे पर चढ़ गया और जल्दी जल्दी अपने कपड़े उतारने लगा।

"चार्ली, अपने कपड़े उतार लो! सारे कपड़े उतार लो वरना नतीजा बुरा होगा!" अलितेत ने चिल्लाकर कहा।

मि० थामसन के दांत कटकटा रहे थे और वह कहता जा रहा था:

"हे भगवान्! हे भगवान्!"

"अपनी सूती क़मीज़ें उतार फेंको — उनके सूखने में काफ़ी देर लगेगी!" अलितेत चिल्लाया। सिर्फ़ तोरबाज़ पहने हुए वह नंगधड़ंग खड़ा था और ज़ोरों से अपने रोवेंदार कपड़े झटकार रहा था।

इसी बीच, ये दोनों आदमी जिन तूदों पर खड़े थे वे धीरे धीरे एक दूसरे से दूर दूर चले गये। अलितेत ने दोनों हाथों से अपना परका फहराते हुए पाल की तरह उसका उपयोग करना चाहा

लेकिन हवा का कोई पता न था। समुद्री धाराएं बरफ़ के तूदों को और भी दूर दूर लेती गयीं।

बरफ़ के तूदे के पास ताज़े पानी का एक पीपा तैर रहा था। अलितेत ने चिल्लाकर कहा:

"देखो चार्ली – ध्यान से देखो! उधर पानी का पीपा तैर रहा है!"

पीपा और भी नज़दीक आ गया।

उसके पीछे रोवेंदार खालों के कुछ गट्ठर भी दिखाई दिये।

मध्याह्न के समय अलितेत वाला बरफ़ का तूदा आंखों से ओझल हो गया।

मि० थामसन सर्दी से कांप रहा था। शाम के समय उसे तेज़ बुख़ार चढ़ा। प्यास से उसके प्राण सूखे जा रहे थे। उसने बरफ़ का एक टुकड़ा मुंह में दबा दिया लेकिन फ़ौरन थूक दिया। नीरस मीठे-नमकीन स्वाद से उसे मतली आने लगी। अत्यंत श्रांत-क्लांत मि० थामसन ने बरफ़ का एक टुकड़ा अपने माथे पर रख लिया।

अट्ठाईसवां अध्याय

लोस क्रांति-समिति के दफ़्तर वाले अपने कमरे में ही पड़ा रहता और बिस्तर से मेज़ तक और वहां से वापस बिस्तर तक बैसाखी के सहारे कुदकता हुआ चल-फिर लिया करता। अन्द्रेई जुकोव मन लगाकर परिचर्या का काम किया करता।

पहाड़ी वाली दुर्घटना के बाद जब ये दोनों याराक, आये और मेरी को साथ लेकर वापस किनारे आये उस समय से मेरी को नौकरानी के रूप में क्रांति-समिति की सेवा में ले लिया गया था। मेरी समिति के दफ़्तर को ख़ूब क़ायदे से रखती थी। वह सबेरे काम पर आती थी और शाम को देर से वापस जाती थी। उसपर

काम का कुछ खास बोझ न था और वह रूसी भाषा तथा पढ़ना-लिखना सीखने में काफ़ी समय लगा सकती थी।

लोस ने घर में पड़े रहने के कारण ही ख़ुशी ख़ुशी अध्यापक का काम स्वीकार किया था। वह आम तौर पर अपने बिस्तर में पड़ा रहता और मेरी फ़र्श पर बिछी हुई बारहसिंगों की खालों पर बैठी सामने वाली बेंच पर काग़ज़ फैलाये बड़ी सावधानी से वर्णमाला की घुंघराली आकृतियां घसीटती रहती। यह काम वह इतनी बारीकी से करती मानो बारहसिंगे की ऊन से चमड़े पर कढ़ाई कर रही हो।

"वाह मेरी, वाह!" लोस ने प्रोत्साहन देते हुए कहा। "अगर तुम इसी तरह मेहनत-मशक़्क़त करो तो जल्द ही तुम यह सारा हुनर सीख जाओगी।"

मेरी मुस्करायी और अपने काम में मशग़ूल रही।

"मेरी, तुम्हारे पिता ने कभी तुम्हें पढ़ना-लिखना सिखाने की कोशिश नहीं की?" लोस ने पूछा।

"जी नहीं। उसका कहना था कि यह हुनर सिर्फ़ गोरों के लिए है। और मैं ठहरी आधी गोरी!"

लोस हैरान रह गया।

"लेकिन फिर भी तुम उसकी बेटी हो न?"

मेरी चुप रही।

"तुम्हारा पिता शायद इन गरमियों में अमरीका जायेगा।"

"कुछ परवाह नहीं," मेरी ने उपेक्षाभाव से कहा।

"क्या तुम उसके साथ नहीं जाना चाहतीं?"

"जी नहीं। मैं याराक को छोड़कर कहीं न जाऊंगी। हमारे एक नन्हा सा बच्चा पैदा होने वाला है। हम यहीं रहेंगे। चार्ली भले ही चला जाये।"

मेरी उठकर स्टोव के पास चली गयी। उसके कामदार मुलायम तोरबाज़ों में कोई चरमराहट न हुई। पीठ पर लटकती हुई उसकी

काली लंबी चोटियां उसके चलन के साथ साथ झूमने लगीं। उसने सूती पोशाक पहन रखी थी। लोस को नताशा का स्मरण हो आया। उसने कल्पना की कि वह यहीं कमरे में टहल रही है और मेरी की तरह घर की देखभाल कर रही है। शायद वह अगले स्टीमर में आ रही थी। "मैं नहीं समझता कि मेरी इस डरावनी दाढ़ी के रहते नताशा मुझे पहचान सकेगी..." लोस ने सोचा।

"मेरी, मेहरबानी करके मुझे ज़रा शीशा दे देना।"

लोस ने शीशे में अपना मुंह देखा और फिर मेरी से कतरनी मांग ली। उसने दाढ़ी काटी और ज़मीन पर पटक दी।

मेरी अवाक् रह गयी।

"लोस, तुम यह क्या कर रहे हो?" उसने भौचक होकर पूछा।

लोस मुस्कराया, मेरी की ओर देखते हुए उसने सिर हिलाया और फिर उस्तरा और साबुन उठा लिया।

"क्या तुम अपना चेहरा साफ़ करना चाहते हो?"

"हां।"

"मैं जानती हूं यह काम। चार्ली यह काम मुझसे कराता था। लाओ, मैं ही कर देती हूं!"

मेरी ने उसकी हजामत बना दी।

"ओहो! लोस तुम तो एकदम जवान बन गये! और अब तुम डरावने भी नहीं लगते। लोग अब तुमसे डरेंगे नहीं!" कहकर मेरी खिलखिलाकर हंस उठी।

"लेकिन मेरी, मैं तो बिल्कुल नहीं चाहता कि लोग मुझसे डरें। देखो मेरी, इधर मेरे मसूढ़े और पैर सूजने लगे हैं। यह ठीक नहीं। काफ़ी कसरत न करने का यह नतीजा है। मुझे डर लग रहा है कि मैं कहीं स्कर्वी से बीमार न पड़ जाऊं।"



"ऐसा है तो तुम सील का कच्चा मांस खाओ," मेरी ने कहा।

इसी समय बूढ़ा इल्यीच यानी भूतपूर्व उमकातागेन कमरे में आ गया।

"लोस कहां है?" उसने पूछा।

"यही तो है," मेरी ने बिस्तर की ओर संकेत करते हुए कहा।

बूढ़े ने लोस की ओर देखा, फिर मेरी की ओर मुड़कर झिड़की के स्वर में बोला:

"तुम क्या यह समझती हो कि मैं इतना छोटा हूं कि तुम भी मुझसे मज़ाक़ करो! मैं काम से आया हूं। अगर तुम्हारी जवानी को ऐसे ही अल्हड़पन की ज़रूरत हो तो किसी हमउम्र को चुनो न!"

"लेकिन इल्यीच, मैं मज़ाक़ कहां कर रही हूं? मैंने तो सच ही कहा है," मेरी ने साश्चर्य कहा।

इसी समय लोस गंभीरतापूर्वक बोला:

"इल्यीच, मेरी सच कहती है। मैं लोस हूं। मैंने अपनी दाढ़ी बना ली है इसी से तुम मुझे पहचान न पाये।"

बूढ़े ने बारीकी से उसकी ओर देखा।

"हां, मुझे भी लगता है कि तुम लोस ही हो," आख़िर उसने कहा।

बूढ़े ने सोचा कि अपनी सूरत बदलकर लोस ने अच्छा ही किया क्योंकि बीमार लोस का सुराग़ अब पिशाच न पा सकेंगे। सब से चालाक पिशाच भी अब धोखा खायेंगे और लोस को कोई और ही समझ बैठेंगे।

बूढ़ा तिपाई के किनारे बैठ गया और थैली में से सील के मांस का एक टुकड़ा निकालकर बोला:

"मैंने सुना है कि तुम्हारे पैर सूजते जा रहे हैं। तुम्हें यह गोश्त खाना चाहिए। अगले शिकार के बाद मैं और ले आऊंगा।"

लोस गद्गद् हो उठा। उसकी ग्रांखें डबडबा ग्रायीं।

"शुक्रिया, इल्यीच!" उसने कहा। बूढ़ा वहां से चल दिया।

"इसे कहते हैं दिलदारी!" लोस बोला।

उनतीसवां ग्रध्याय

समुद्र-तट पर भारी चहलपहल ग्रौर शोरगुल था। बरछियां, हवाई थैलियां, बंदूक़ें ग्रौर ताज़े पानी के पीपे नौकाग्रों पर ठिकाने से रखे जा रहे थे। चीख़-चिल्लाहट से वायुमंडल गूंज रहा था। लोग जल्दी जल्दी शिकार के लिए जा रहे थे।

इल्यीच ग्रपनी नाव के पिछले हिस्से में पहले ही जा बैठा था ग्रौर शिकारी उसमें कूद रहे थे। ये थे उसका बेटा एरमेन, याराक, ग्राये तथा चार ग्रौर लड़के। बूढ़ा मुस्करा रहा था। यह स्वाभाविक भी था। हट्टे-कट्टे युवक मल्लाहों का यह दल पाकर किसे ख़ुशी न होती? इस नौका को सरपट दौड़ाने के लिए ग्रनुकूल हवा का इंतज़ार करने की ग्रावश्यकता न थी।

किनारे पर वापस ग्राकर याराक ग्रौर ग्राये बड़े ख़ुश थे। उन्होंने बड़े उत्साह के साथ डांड़ पकड़ लिये। यह थी सच्ची ज़िंदगी! पहाड़ों में बारहसिंगों के पीछे दौड़ने से यह जीवन कहीं ग्रच्छा था!

"लेकिन ग्रन्द्रेई कहां है?" बूढ़े ने पूछा।

"देखो, वह प्राइमस स्टोव लिये ग्रा रहा है," एरमेन ने कहा।

शिकारी चाहते थे कि जुकोव उनके साथ हो। जुकोव हर तरह से उनकी मदद करता – बोझ उठाने में ग्रौर नाव को किनारे की ग्रोर खींचने में भी। लेकिन शिकारियों को वह सब से ज्यादा पसंद था उसकी क़िस्सा-गोई के लिए। ग्रन्द्रेई जवान था लेकिन शिकारियों की राय थी कि क़िस्सा-गोई में वह प्राचीन से प्राचीन ऋषि-मुनियों के साथ होड़ लगा सकता है। ग्रौर सचमुच उसके पास

रोचक कहानियों का ख़ज़ाना था। इनमें से रूसी डाक्टरों की कहानियों पर तो शिकारी लोग लट्टू हो जाते। जुकोव ने उन्हें बताया था कि ये रूसी डाक्टर ज़िंदा आदमी का पेट फाड़ते हैं, उसके अंदर इस तरह ढूंढते-टटोलते हैं मानो वालरस का पेट हो, बीमारी को "काट बाहर करते हैं," फिर पेट को सूई-डोरे से सीते हैं और वह आदमी इस तरह चलने-फिरने लगता है मानो कुछ हुआ ही न हो।

असल में ऐसी कहानी में विश्वास करना मुश्किल था लेकिन वह थी बड़ी ही मनोरंजक।

अन्द्रेई नाव में कूद पड़ा और नाव ने किनारा छोड़ दिया। शीघ्र ही मल्लाहों ने अपने कपड़े उतारे और ये अधनंगे वीर ज़ोरों से डांड़ चलाने लगे। डांड़ अपने कांटों पर चरचरा रहे थे और पतवार संभालने वाला बूढ़ा जबतब चिल्लाता जा रहा था:

"अहा-हा! अहा-हा!"

समतल पानी पर नाव सरपट आगे बढ़ रही थी। बाक़ी नावें पीछे रह गयीं।

इल्यीच सजगता से आगे देख रहा था। शिकारियों को अपने कर्णधार पर पूरा भरोसा था। वे जानते थे कि उनकी कोशिशें बेकार न होंगी और बूढ़ा उन्हें ज़रूर वालरस वाली जगह ले जायेगा।

नाव बरफ़ के तूदों के बीच आ पहुंची। बूढ़े ने उसे रोक लिया और शिकारियों से कहा कि वे बरफ़ीली चट्टान पर चढ़कर चारों ओर एक नज़र डालें। कुछ ही दूर एक बरफ़ के तूदे पर उन्हें पीला पीला सा कुछ दिखाई दिया। उन्होंने बूढ़े को यह बता दिया और नाव फ़ौरन उस दिशा में आगे बढ़ी।

बूढ़ा लड़खड़ाता हुआ उस तूदे पर चढ़ गया, बारीकी से उसका मुआयना किया और बोला:

"वालरस ज़रूर यहां रहते थे। कल ही वे यहां थे। दो वालरस थे—एक नर, एक मादा।"

मध्याह्न के समय मल्लाहों को वालरस दिखाई दिये। बरफ़ के एक तूदे पर विशालकाय जानवर आराम से सोये हुए थे।

गोली चलने की आवाज़ हुई और फ़ौरन एक बरछी फेंकी गयी। तैरती हुई हवाई थैली को अपने पीछे खींचता हुआ वालरस पानी में अदृश्य हो गया।

लेकिन गर्दन में जख़्मी हुआ वह जानवर उतराता हुआ सतह पर आया और आसपास का पानी लाल हो गया।

फिर तीन गोलियां एक के बाद एक छूटीं। वालरस के प्राणपखेरू उड़ गये और वह थैली के सहारे उतराता रहा।

"ढेर हो गया!" बूढ़े ने चिल्लाकर कहा।

मुर्दा वालरस को शिकारी बरफ़ पर ले आये और उन्होंने सिल्लियों पर अपने छुरों को तेज़ करना शुरू किया। इस समय उनकी आंखें उत्तेजना से चमक रही थीं।

"सुनो अन्द्रेई, जब तक ये लोग वालरस को साफ़ करें तब तक तुम प्राइमस जला दो। हम चाय पियेंगे," इल्यीच ने कहा।

केतली का पानी उबलने से पहले ही वालरस की सफ़ाई हो गयी। शिकारियों ने उसका मांस नाव पर चढ़ा दिया, हाथ धोये और चाय पीने बैठ गये। शिकार के शुभारंभ से उन्हें बेहद ख़ुशी हुई थी।

"चलो, चाय जल्दी पी लो!" बूढ़े ने कहा। "हमें दूसरे वालरस को भी ढूंढ निकालना चाहिए–यह नर वालरस है और होगा यहीं कहीं।"

फिर से डांड़ों की चरचराहट-छपछपाहट शुरू हुई।

"याराक, तुम डांड़ रख दो और चौकसी करते रहो। तुम्हारी आंखें ज़्यादा तेज़ हैं," बूढ़े ने हुक्म दिया।

नाव बरफ़ के तूदों में से होती हुई सागर की ओर बढ़ती गयी। दिन ढलने लगा था।

“वालरस, वालरस!” याराक चिल्लाया।

ग्राये ग्रौर एरमेन ने ग्रपनी बंदूक़ें उठायीं ग्रौर दोनों नाव के ग्रगले हिस्से में खड़े हो गये। ग्रन्द्रेई ने दूरबीन में से शिकार को देख लिया। शिकारी गोली दाग़ने ही को थे कि ग्रन्द्रेई चिल्ला उठा:

“रुक जाग्रो, यह वालरस नहीं, ग्रादमी है ग्रादमी!”

शिकारियों ने बंदूक़ें नीचे कर लीं ग्रौर मल्लाहों ने डांड़।

बरफ़ के तूदे पर मि० थामसन पड़ा था। चेहरा उसका झुलसा हुग्रा था ग्रौर वह हांफ रहा था। उसने ग्रपनी ग्रांखें खोलीं ग्रौर उठ बैठने की कोशिश की लेकिन उसकी ताक़त जवाब दे गयी थी।

“पानी,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

ग्रन्द्रेई ने उसका हाथ ग्रपने हाथ में लेकर नाड़ी देखी।

“सब कुछ डूब गया,” मि० थामसन ने कहा। “सब चौपट हो गया।”

चार्लस थामसन को सूखे कपड़ों में लपेटा ग्रौर नाव पर रखा गया। उसपर उन्माद का दौरा शुरू हुग्रा था।

नाव सरपट दौड़ने लगी। रोवेंदार खालों से ढके हुए वालरस के मांस के ढेर पर मि० थामसन निश्चल पड़ा था।

ग्रन्द्रेई ने उसके माथे का स्पर्श किया, ग्रपना कान उसकी छाती पर टेका ग्रौर सिर ऊपर उठाकर कहा:

“वह मर गया... चलो, किनारे की ग्रोर चलो।”

शिकारी ग्रविचल बैठे रहे। बूढ़ा इल्यीच भी चुपचाप बैठा रहा। नाव में लाश के लिए जगह न थी। उसे सागर ही में फेंक देना चाहिए था।

“इल्यीच! चार्ली एक गोरा था। उसे किनारे ले जाना चाहिए। इससे कोई मुसीबत न ग्रायेगी। चलो, जल्दी करो,” ग्रन्द्रेई ने कहा।

फिर बूढ़े ने पतवार चलायी।

चार्ली की मृत्यु का समाचार शीघ्र ही बस्ती में फैल गया। किनारे पर लोगों की भीड़ लग गयी। मेरी चुपचाप ग्रपने बाप की

लाश की ओर देखती रही। उसे याद आया कि चार्ली ने किस तरह याराक को टांग पकड़कर और गालियां देते हुए घर से निकाल बाहर किया था। अब वही चार्ली वहां पड़ा था—उसके चेहरे की लाली उड़ गयी थी और आंखों पर चश्मा न था। मेरी यकायक घबड़ा उठी। इल्यीच के पास जाकर उसने कहा:

"उसे फ़ौरन दफ़नाना चाहिए।"

"अपने क़ब्रिस्तान में हम उसे नहीं दफ़ना सकते। उसे लोरेन ले जाना चाहिए, जहां वह रहता था," बूढ़े ने कहा।

जिस जगह मि० थामसन ने बीस साल से अधिक समय बिताया था वहां उसका शव लाया गया। रूलतिना दौड़ी दौड़ी किनारे पर आ गयी।

"याराक, बेन कहां है?" चार्ली की ओर बिल्कुल न देखते हुए उसने पूछा।

"वह डूब गया। वे सब डूब गये।"

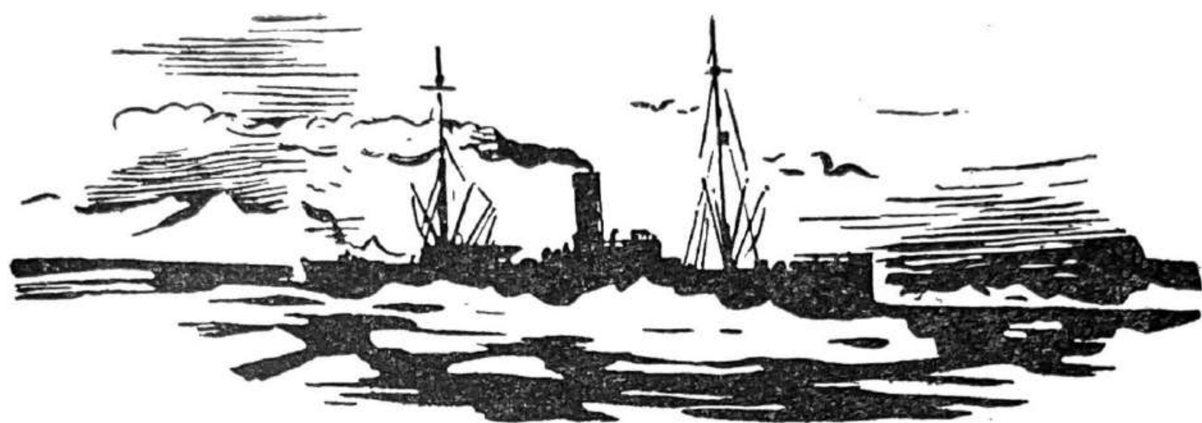
रूलतिना किनारे पर ढनमना गयी। उसे अपने पैरों के नीचे से ज़मीन खिसकती सी लगी।

"मेरी, हमें उसके लिए नया परका सिलाना और उसे चट्टानों वाले क़ब्रिस्तान में ले जाना चाहिए," रूलतिना ने उदासीनता के साथ कहा।

"रूलतिना, चार्ली के दफ़नाने का काम साइम को ही करने दो—अमरीकी तरीक़े से। उसे हमें अपने क़ब्रिस्तान में नहीं ले जाना चाहिए, क्योंकि चार्ली सच्चा आदमी न था," मेरी ने दुःख के साथ कहा।



तीसरा भाग



पहला अध्याय

कभी अस्त न होने वाला सूर्य निरभ्र नील-कृष्ण नभोमंडल में मंथर गति से चल रहा था और सागर-तट तथा महासागर के धूमिल-हरित बिस्तार को जगमग प्रकाश से नहला रहा था। सागर में बरफ़ का एक भी तूदा न था और आकाश में एक भी बदली न थी। ऐसा लग रहा था मानो अंतरिक्ष में अकेले भ्रमण करना सूरज को नीरस सा लग रहा है।

बरफ़ के पिघलकर नष्ट हो जाते ही घाटियों में नये तृणांकुर फूटे और वे रंग-बिरंगे फूलों से लहलहा उठीं। जंगली जीव-जंतु तक इस ख़ूबसूरत ग़लीचे के किनारे किनारे घूमते रहे किन्तु उन्होंने उसपर क़दम रखकर उसे मलिन नहीं किया।

कोमल नाल वाले लाल, नीले तथा पीले फूलों ने अपनी मृदु पारदर्शी पंखुड़ियां मानो मंदोष्ण वायु-लहरियों के साथ लयबद्ध कर दी थीं। वे मानो सूरज को सावधानी से देख रहे थे और जैसे ही वह क्षितिज पर उतरा, उन्होंने पंखुड़ियां बंद कर लीं।

फिर घाटियों में फैला हुआ बहुरंगी ग़लीचा धीरे धीरे अदृश्य हो गया।

यारंगों के पास कुत्ते सोये थे। बीच बीच में वे अपनी उनींदी आंखें खोलते थे। अब उन्हें माल से लदी बरफ़-गाड़ियां नहीं खींचनी

पड़ती थीं बल्कि वे सारे दिन धूप से तपे बालू पर पड़े रहते – जाड़ों की तरह शरीर को गेंद की शकल में लपेटकर नहीं बल्कि आराम से फैलाकर। जाड़ों के काम के लिए वे शक्ति का संचय कर रहे थे।

सागर भी उस गोधूलि-बेला में सुस्ताता हुआ दिखाई दे रहा था। कंकरीले तट को वह ज़रा सा छू भर रहा था। उसकी कोमल पुलक कंकरों का प्रेम-स्पर्श कर रही थी।

तीग्रेना अपने बेटे आयवाम को लेकर किनारे पर बैठी थी और सागर में कंकर फेंककर उसका मन बहला रही थी। आज वह भी आराम करना चाहती थी। रेवड़ वालों के लिए तोरबाज़ बनाने को आज उसका मन नहीं कर रहा था।

उसने अपना रंगीन सूती फ़ाक साफ़ किया और मुस्करायी। उसकी काली काली आंखें चमक उठीं। लापरवाही के अंदाज़ से अपनी बेनियों को कंधों पर झटकारते हुए उसने सोचा: "इस सूती कपड़े से मुझे कैसी नफ़रत थी!"

अपनी पोशाक पर की रंगीन फूल-पत्तियों को वह निहार रही थी कि उसके मन में अलितेत संबंधी विचार आये। फ़ौरन उसके चेहरे पर से मुस्कराहट ग़ायब हो गयी और डर और परेशानी ने उसकी जगह ली। रात की ठंडी सांस के स्पर्श से फूल इसी तरह कुम्हलाता है।

अलितेत पांच दिन के लिए बाहर गया था। लेकिन बीस से ज़्यादा दिन बीत चुके थे और फिर भी उसका कोई पता न था। और वैसे, जब उसकी मनहूस आंखों के दर्शन नहीं होते थे तभी ज़िन्दगी कुछ अच्छी तरह से कटती थी।

आयवाम अब चलना और खिलखिलाकर हंसना सीख चुका था। इस समय वह बारहसिंगे के बछड़े की खाल का कनटोपदार परका पहने था जिसमें वूलवेरिन की खाल का किनार लगा हुआ था। उसके

परों में नन्हें खूबसूरत तोरबाज़ थे जो बारहसिंगे के रंगीन बालों से कढ़े थे। सागर को, अपनी मां को और इर्दगिर्द की हर चीज़ को वह कौतूहल से देख रहा था। आयवाम भी इस वक़्त बड़ा खुश था।

तीग्रेना मन ही मन उसकी सराहना कर रही थी, उसकी हर हरकत को, हर सांस को और काली काली आंखों की हर चितवन को निहार रही थी। यकायक एक कोमल अंत:प्रेरणा से उसने अपने नन्हे को गोद में लेकर हवा में उठाया और उसके मुंह से अपना मुंह रगड़ते हुए उसे चूम लिया।

अपनी बलिष्ठ भुजाओं में आयवाम को पकड़कर तीग्रेना ने कहा:

"देख आयवाम, यह है सागर! तू समुंदरी जानवरों का बड़ा शिकारी बन जायेगा! मैं खुद तुझे इसमें माहिर बनाऊंगी। तू सच्चा आदमी बनेगा!"

जीवन के स्रोत – सागर को – देखकर तीग्रेना को फिर अलितेत की याद हो आयी। "यह हमेशा ही ऐसा होता है," व्यथित होकर उसने सोचा। "वह घर से दूर है लेकिन फिर भी मेरे दिमाग़ में रेंगता रहता है।"

सागर की लहरों की तरह एक के बाद एक अशांत विचार उछल उछलकर उसके दिमाग़ में उमड़ते चले आ रहे थे। "वह जल्द ही वापस आयेगा। यह अच्छा है कि वह बराबर बहुत दिन बस्ती में नहीं रहता – हमेशा इधर उधर दौड़ता रहता है। छोटा चांद अब बड़ा हो गया है लेकिन अलितेत है कि लगातार सफ़र ही करता रहता है। ठीक है, वह सफ़र ही करता रहे। मैं तो चाहती हूं कि वह वापस ही न आये।"

वर्ष की यह ऋतु उत्तर में बड़ी ही आश्चर्यजनक होती है! सूर्य-प्रकाश में धरती इस प्रकार डूबी रहती है कि आंखें चौंधिया जाती

हैं। सूरज अपनी चमकदार लम्बी किरणों की वर्षा करता है और मनुष्य प्रसन्न हो उठता है। किन्तु यह भी पर्याप्त नहीं लगता—इधर पहाड़ियों के पीछे से चांद निकल आता है। आग की तरह लाल लाल यह पूर्ण चंद्र सूरज की ओर देखकर मुस्कराता है।

तीग्रेना ने चांद की ओर इशारा करते हुए अपने बच्चे से कहा:

"देख आयवाम, यह सूरज की बीवी आ गयी।"

इसी समय किनारे के पास एक बिदारका दिखाई दी। तीग्रेना खुशी से चिल्ला उठी:

"देख आयवाम देख! बिदारका आ रही है! देख, उसमें वामचो आ रहा है!"

लम्बे नंगे मस्तूल वाली वह नाव किनारे के पास आ रही थी। मस्तूल की चोटी से किनारे तक चमड़े की एक लम्बी रस्सी लटक रही थी। चमड़े की रस्सी के सहारे नाव को खींचते हुए पांच कुत्ते पानी के किनारे किनारे दौड़े। बिदारका ने सागर को मथ सा दिया और एनमकाई बस्ती के पास रुक गयी।

सील की खाल का पतलून पहने एक मल्लाह कुत्तों के साथ साथ दौड़ा। धूप में उसका कांसे जैसा शरीर चमक उठा।

बिदारका और नज़दीक आयी। वामचो उसमें से सीधे पानी में कूद पड़ा। एक असाधारण समाचार सुनाने की उत्सुकता में हांफता हुआ वह तीग्रेना के पास दौड़ा चला आया। उसका चेहरा उत्तेजित था और यद्यपि उसने नाव में डांड़ चलाया था फिर भी उसकी गर्दन पर पसीने की ठंडी ठंडी बूंदें दिखाई दे रही थीं। वह चुपचाप तीग्रेना के पैरों के पास बैठ गया और सागर की ओर ताककर शांत स्वर में कहने लगा:

"तीग्रेना, मैं बुरी ख़बर लाया हूं। यह मैंने पास वाली बस्ती में सुनी है।"

"क्या खबर है वामचो?" तीग्रेना ने घबड़ाकर पूछा।

"एक भयंकर वालरस ने अलितेत की व्हेल-नाव डुबा दी। नाव का हर आदमी डूब गया। सब के सब गये। हमारे कई शिकारी भी समुंदर में समा गये।"

तीग्रेना के चेहरे का रंग बदल गया।

"डूब गया?" उसने घबड़ाकर पूछा। "हर कोई डूब गया?"

"हां, सब के सब डूब गये। सिर्फ़ चार्ली लाल-नकुआ बरफ़ के एक तूदे पर तैर आया। वह भी आख़िरी सांस लेता हुआ पाया गया। तीग्रेना, अलितेत भी डूब गया।"

तीग्रेना के मन में एक साथ आनन्द और दुःख के भाव उमड़ आये। उसके पैरों में कंपकंपी पैदा हुई और वह एकदम बैठ गयी। अपने बच्चे को छाती से चिपकाये वह चुप बैठी रही। वामचो भी चुप था। उधर लोग बिदारका को खींचकर किनारे पर ले आये।

तीग्रेना ने प्यार से अपने बच्चे की ओर देखा।

"आयवाम, मुझे लगता है कि अब हमारी ज़िन्दगी बदल जायेगी," वह फुसफुसायी।

सुख की क्षणिक किरण से उसका चेहरा चमक उठा। अब कोई भी उसे एनमकाई बस्ती में रहने के लिए मजबूर नहीं करेगा। अलितेत इस दुनिया में नहीं रहा था। फिर तीग्रेना के चेहरे पर दुःख की छाया फैल गयी। ओह, एक साथ कितनी औरतों का सुहाग लूट गया! तूमातूगे, आपा, केईनिन, वलखिरगिन, गिरगोल –इनकी बीवियों पर क़हर का पहाड़ टूट गया। गिरगोल की शादी अभी अभी तो हुई थी। "ओह, कैसी दुख की बात है!" तीग्रेना ने व्यथित हृदय से सोचा।

वह देर तक मौन बैठी रही। वामचो ने भी उसके विचारों में बाधा नहीं डाली। आयवाम तक चुप रहा। वह समझ न सका

कि उसकी मां की हंसी क्यों ग़ायब हो गयी थी। तीग्रेना किसी अंत:प्रेरणा से उठ खड़ी हुई और उसने अपने बेटे का हाथ पकड़ लिया।

"वामचो," उसने निश्चयपूर्वक कहा। "मैं कल ही एनमकाई से विदा लूंगी। मैं आये को ढूंढने जाऊंगी। अब मैं उसके साथ रहूंगी।"

"तीग्रेना, वह अब एक बस्ती में रूसियों के साथ रह रहा है। ख़ानाबदोशों को उसने छोड़ दिया है।"

"कोई हर्ज नहीं। अगर यह सच हो कि वे उसके दोस्त बन गये हैं तो मैं उन रूसियों के लिए बढ़िया से बढ़िया तोरबाज़ों की कढ़ाई कर दूंगी । मैं और भी अच्छा शिकार करूंगी। हमें काफ़ी गोश्त मिलेगा। हमारे कई बच्चे होंगे।"

"तीग्रेना, मैं तुम्हें अपनी बिदारका में ले जाऊंगा। मैं दस कुत्ते जोतूंगा और हम बसन्त की बत्तख़ों की तरह तेज़ी से सफ़र करेंगे। कुत्तों को हांकने का काम मैं ख़ुद करूंगा–तुम जानती हो कुत्ते मैं कितने तेज़ दौड़ाता हूं।"

"वामचो, तुम अच्छे हो, बहुत अच्छे। तुम सच्चे आदमी हो! आयवाम भी तुम्हारे जैसा होगा। आये उसे बहुत प्यार करेगा। मैं जानती हूं।"

औरतें दौड़ती हुई किनारे के पास आ पहुंचीं। विस्फारित नेत्रों से उन्होंने वामचो की बात सुनी। उनके चेहरे जैसे पत्थर बन गये। लेकिन सूरज ने एक भी आह न सुनी और चांद ने एक भी आंसू न देखा।

दूसरा अध्याय

क्रान्ति-समिति वाले लोग अभी तक सोये हुए थे लेकिन जहाज़ के भोंपे की कर्कश और लम्बी चीख़ के कारण उनकी नींद उचट गयी। इस आवाज़ ने उत्तर की सुप्त प्रतिध्वनियों को जागृत किया और एक ही क्षण में सारी बस्ती में चहलपहल शुरू हो गयी।

क्रान्ति-समिति का प्रतिनिधि लोस और उसका सेक्रेटरी अन्द्रेई जुकोव अपने बिछौनों से उछल पड़ा। वे खीसें निकालकर एक दूसरे की ओर घूरते हुए उस आवाज़ को सुनते रहे।

दरवाज़ा फट से खुल गया और आये एकदम कमरे में घुस आया। उसने उत्तेजना के साथ दबी सी आवाज़ में कहा:

"यह स्टीमर है। किनारे की ओर आ रहा है।"

अलितेत ने लोस और जुकोव को मार डालने की कोशिश की थी और उसी के परिणामस्वरूप वे करारे पर से गिर पड़े थे। उस वक़्त आये ने उनकी मदद की और उन्हें वह टुंड्रा के बाहर ले आया। फिर वह उन्हीं के साथ क्रान्ति-समिति के कार्यालय में गया और महाद्वीप जाने की तैयारी करने लगा। रूसी सरदारों का मित्रता का व्यवहार देखकर आये अपने को हैसियतदार समझने लगा और उम्र की दृष्टि से भी उसमें प्रौढ़ता आ गयी। उसकी पतली काली मूंछें अब कुछ घनी हो गयीं और उसके चेहरे पर से परेशानी ग़ायब हो गयी। उसे इस बात पर गर्व हुआ कि वह एक लम्बे सफ़र पर जा रहा है—ऐसे सफ़र पर जो हर आदमी के बूते की बात नहीं। लेकिन स्टीमर को देखते ही आये का जी मचल उठा।

"मुझे शायद महाद्वीप नहीं जाना चाहिए?" तर्कपूर्ण स्वर में वह फुसफुसाया।

आये ने यह बात इतने धीरे से कही कि अपने विचारों में मग्न लोस और अन्द्रेई उसे सुन भी न पाये।

अन्द्रेई दौड़कर खिड़की के पास गया, सर्र से परदा हटाया और यकायक उछल कूदकर चिल्लाने लगा—

"यह तो 'सोवियत' है! 'सोवियत' जहाज़ आ गया!"

"प्यारे, तुम्हें यह ख़बर ज़रा देर से मिली। मैंने तो जहाज़ को उसके भोंपे से ही पहचान लिया था," जल्दी जल्दी अपने

छोटे कोट के बटन लगाते हुए लोस ने कहा। फिर वह भी नाचने लगा।

उस छोटे से मकान की दीवालें झूमने-थर्राने लगीं।

अकेला आये चुपचाप खड़ा था। वह समझ न पाया कि क्या किया जाये – ख़ुशी मनायी जाये या दु:ख? यही स्टीमर उसे दूर दूर, अज्ञात रूस देश को ले जाने वाला था। वहां उसका क्या हाल होगा? वह सोच रहा था।

लंगर की ज़ंजीर की खनखनाहट से सुबह की ख़ामोशी टूट गयी और किनारे से प्रतिध्वनियां उठने लगीं। लोहे की कर्कश ध्वनि लोस और जुकोव को सुमधुर संगीत सी लगी।

उत्तेजना और शोरग़ुल के साथ शिकारियों ने एक बिदारका सागर में उतार दी।

लोस इतने जोश में डांड़ों पर झपटा कि वे चरमराने लगे।

"अहा-हा-हा! अहा-हा-हा!" कर्णधार बूढ़ा इल्यीच चिल्लाता रहा और बिदारका स्टीमर की ओर सरपट दौड़ती रही।

'सोवियत' के डेक पर लोगों की भीड़ जमा हो गयी। ये लोग अपनी ओर आने वाली बिदारका को बड़े कौतूहल से देखते और उत्साहपूर्ण स्वर में बातें करते रहे। उन्होंने ऐसी नाव कभी न देखी थी जिसके बाज़ुओं में से रोशनी निकलती हो। वालरस की पीली सी, पारदर्शी खाल से बनायी गयी यह बिदारका इतनी ओछी लग रही थी कि 'सोवियत' के मुसाफ़िरों को आश्चर्य हुआ कि ये लोग ऐसी नाव पर सागर में जाने का साहस भी कैसे करते हैं। लेकिन यही बिदारका तीन तीन मुर्दा वालरसों को ढो सकती थी।

कप्तान के पुल से अधिकारयुक्त आवाज़ सुनाई दी:

"हेल्लो, साथी लोस!"

लोस ने पहचान लिया कि यह आवाज़ कप्तान मिख़ाईल पेत्रोविच ल्यादोव की है जिसने उसे पिछले जहाज़रानी मौसम में चुकोत्सक के किनारे पर उतार दिया था।

हवा में अपनी टोपी हिलाकर लोस ने अभिवादन का उत्तर दिया और साथ साथ डेक पर खड़े लोगों के चेहरे ग़ौर से देखता रहा। उसे उमीद थी कि उसकी बीवी भी इस जहाज़ पर आ गयी होगी। लेकिन वह नहीं आयी थी। अगर आयी होती तो सब से पहले वही उसका अभिवादन न करती?

"बड़ी सीढ़ी खोल दो!" कप्तान ने रोब के साथ हुक्म दिया।

डेक पर आते ही लोस ने ख़ुशी से अपना पैर पटका, मानो अपने देश ही की ज़मीन पर खड़ा हो।

"साथी लोस, कप्तान ने तुम्हें अपनी केबिन में आने को कहा है," एक जवान जहाज़ी अफ़सर बोला। "अभी अभी वह पुल पर से उतर आयेगा।"

अपने कप्तान की आदतों से सुपरिचित ख़ानसामे ने केबिन में मेज़ लगा दी थी और बरफ़ से सफ़ेद कपड़े पर जलपान की चीज़ें तैयार रखी थीं। लंगर की ज़ंजीर की आवाज़ सुनाई देते ही यह काम वह बिलकुल यंत्र की तरह करता था।

ख़ानसामे को हैसियतदार मेहमान पसन्द थे। लेकिन लोस उसे ऐसा मेहमान नहीं लगा। लोस ने ढीला-ढाला फ़ौजी कोट और खाकी पतलून पहन रखा था और पतलून की आस्तीनों को सील के चमड़े के बेढब से तोरबाज़ों में खोंस लिया था।

कप्तान की केबिन में हर चीज़ क़ायदे से रखी थी। इस अपरिचित वातावरण में लोस को कुछ घबड़ाहट महसूस हुई। चंचल चित्त से उसने चारों ओर देखा और धम्म से एक कुर्सी में बैठ गया। ख़ानसामा तेज़ निगाह से देख रहा था। लोस उठ खड़ा हुआ, कुर्सी

की सफ़ेद खोल पर एक नज़र दौड़ायी और धीरज बांधकर फिर से बैठ गया।

"यहां तो बड़ी सफ़ाई है," ख़ानसामे से उसने कहा। वह विस्मित सा लग रहा था।

"हम पानी पर रहते हैं," खानसामे ने कहा। फिर लोस के पास आकर सख़्ती से बोला, "वह कप्तान की कुर्सी है। आप उधर उस सोफ़ा पर तशरीफ़ ले जाइये।"

लोस चुपचाप वहां जा बैठा। ख़ानसामे ने अपने नैपकिन से कुर्सी की गद्दी झटक दी।

कप्तान मुस्कराता हुआ आया, लोस से हाथ मिलाया और बड़ी आत्मीयता से कहने लगा :

"फिर राबिन्सन,* हमारी यह मुलाक़ात शराब के साथ होनी चाहिए। मेरे पास कुछ कन्याक है, यक़ीन करो कि यह देवताओं का अमृत है! अरे, तुम लकड़ी के सहारे क्यों चलते हो?"

"मिख़ाईल पेत्रोविच, मेरी टांग टूट गयी थी। ख़ैर, अब तो हड्डी सध गयी है।"

"तब तो तुम्हारी सेहत का जाम पीने का एक और मौक़ा मिल गया," बेतकल्लुफ़ कप्तान ने बोतल उठाते हुए कहा। "ज़रा देखो तो, तुम क्या पीने जा रहे हो। बोतल पर की सितारों की भीड़ तो देखो जो मृगशिरा नक्षत्र जैसे लग रहे हैं!"

"मिख़ाईल पेत्रोविच, अरे जहाज़ पर कुछ आलू-वालू हैं कि नहीं? इधर एक साल से उनके दर्शन नहीं हुए।"

"मित्रिच, ज़रा वह क़ीमती फल ले आओ," कप्तान ने खानसामे से कहा।

---

*यहां राबिन्सन क्रूसो से अभिप्राय है।

इधर लोस लगातार अपनी बीवी के बारे में सोच रहा था लेकिन कप्तान ने इस संबंध कुछ भी नहीं कहा।

पुराने दोस्तों ने अपने गिलास एक दूसरे से लगाकर टुनटुनाये और ख़ाली कर दिये। कप्तान ने नैपकिन से अपनी सफ़ेद मूंछें पोंछ लीं।

"कहो, चीज़ पसन्द आयी?" चालाकी से पलक मारते हुए उसने पूछा।

"वह तो अच्छी रही, लेकिन खाने की चीज़ें उससे भी मज़ेदार हैं!" भुने हुए आलू पर हाथ साफ़ करते हुए लोस ने कहा।

उन्होंने स्टीमर के आगमन और फिर से अच्छी हवा की कामना में जाम पिये।

"मिख़ाईल पेत्रोविच, कहो, महाद्वीप की कुछ नयी-पुरानी ख़बर? कोई अख़बार लाये हो या नहीं?"

"तुम्हारे लिए सब कुछ ले आया हूं। साल भर के अख़बार हैं। पुराने अख़बार पढ़ते समय तुम्हें उपन्यास का सा मज़ा आयेगा। पूरा सेट जमा करने में मुझे बड़ी मशक़्क़त करनी पड़ी थी। आख़िर पुराने अख़बार मिलते कहां हैं! मैंने तो गुबेर्निया क्रान्ति-समिति की फ़ाइल में से ले लिये। और सुनो, मैं तुम्हारे लिए कुछ आदमी भी लाया हूं।"

"कौन कौन हैं वे?"

लोस के दिमाग़ में फिर एकदम अपनी बीवी की तस्वीर घूम गयी लेकिन कप्तान ने आगे कहा:

"ये हैं–तीन अध्यापक, पांच आदमियों का एक रेड क्रॉस मेडिकल दल–अरे, काफ़ी हैं भई! इस मुल्क ने आज तक कभी इतने विशेषज्ञ देखे नहीं!"

"वाह! बहुत अच्छा!" लोस ने ख़ुश होकर कहा।

"क्रान्ति-समिति के छः कार्यकर्ता और एक मिलीशियामैन भी है।"

"ज़्यादा मिलीशियामैन आते तो और अच्छा होता, क्योंकि यहां चुंगी-चोरी बहुत बढ़ गयी है।"

"अरे, यह अकेला मिलीशियामैन बीस के बराबर है। यह दोहरे बदन का आदमी है और मूंछें उसकी मेरी मूंछों से भी बड़ी हैं। यह बरनाउल का निवासी है और लाल सेना का भूतपूर्व सैनिक बड़ा ही मज़ाकिया है। एक बार जहाज़ के पुल पर आया और जहाज़रानी के औज़ारों और मेरे नक़्शे को देखकर पूछा, 'क्या कप्तान का काम सीखना मुश्किल है?' 'हां, मिलीशियामैन के काम से तो मुश्किल ही है,' मैंने जवाब दिया। 'वाह जी!' उसने कहा, 'मिलीशिया का काम कितना अहम है। वह अमन और क़ानून का पहरेदार है।' वह सचमुच अपनी सेवा पर गर्व करता है।"

कप्तान रुक गया।

"और रोवेंदार खालों के व्यापार-केंद्रों के लिए भी मैं कुछ आदमी ले आया हूं। तुम तो जानते ही हो कि नॉर्थ कंपनी की पोल खुल गयी है। उसके साथ का इक़रार रद्द हो गया है और उसका कारोबार बन्द हो रहा है। अब नयी सोवियत कंपनी की स्थापना हुई है जिसका नाम है ओख़ोत्स्क-कामचात्का मत्स्योद्योग कंपनी या संक्षेप में 'ओकारो'। कैसा नाम है! बिलकुल जापानी सा लगता है! 'ओकारो' द्वारा रोवेंदार खालों के व्यापार की भी निगरानी होगी। मतलब यह कि नॉर्थ कंपनी को 'टा-टा' कह दिया गया है!"

इस समाचार से लोस को आश्चर्य हुआ। उसने और अन्द्रेई ने सोचा था कि यहां की हालत का मास्को को पता न लगा होगा। फिर भी वहां के लोगों ने ठीक निर्णय कर लिया था। उसके दिल को इस विचार से कुछ ठेस भी पहुंची कि क्रान्ति-समिति के प्रतिनिधि

के नाते उसे कुछ कहने का मौक़ा दिये बिना ही यह फ़ैसला कर लिया गया था। लोस ने एक आह भरी।

"हम भी इसी निर्णय पर पहुंचे थे कि नॉर्थ कंपनी का कारोबार बन्द कर दिया जाये," उसने कहा, "लेकिन हमारी डाक – लानत है उसपर – अभी तक उस आलमारी में पड़ी हुई है। यह है हमारी डाक सेवा! अगर हमारे पास संचार के उपयुक्त साधन होते तो हमारी ओर से भी ठीक ठीक सलाह मिल जाती..."

"मतलब यह कि मास्को ने तुम्हारे विचार भांप लिये?"

"सब से आश्चर्यजनक बात तो यही है! मास्को यहां से कितना दूर है लेकिन वह ठीक ठीक जान लेता है कि यहां किस चीज़ की ज़रूरत है। जो निर्णय किया गया है वह बिलकुल ठीक है। बिना अमरीकियों के हम यहां का कारोबार चला सकते हैं। हमने क्रान्ति सफल बनायी है और मैं मानता हूं कि हम किसी तरह व्यापार करना भी सीख जायेंगे।"

"वाह! क्या ख़ूब कहा तुमने!" कप्तान बोल उठा। "सारे आर्थिक मोर्चे पर देश भर में बाक़ायदा चढ़ाई शुरू की गयी है। और जानते हो, आर्खांगेल्स्क के एक कप्तान ने मुझसे कहा था कि उधर जब गृह-युद्ध शुरू था उसी समय लेनिन ने उत्तर में स्थित उख़्ता तेल क्षेत्रों से संबंधित जानकारी इकट्ठी करने की हिदायतें दे रखी थीं। इसे कहते हैं इन्सान! अरे हां, मैं तुम्हारे लिए एक भूगर्भ-शास्त्री ले आया हूं। उससे शुरुआती काम लिया जा सकता है। वह पता लगा लेगा कि इन पहाड़ियों में क्या छिपा है? नव रूस पर मुझे अभिमान है, बहुत ही अभिमान है!"

"हां, यहां भूगर्भ-शास्त्री के लिए काफ़ी काम है," पहाड़ियों में अपने कुतुबनुमे की अजीब हरकतों को याद करते हुए लोस ने कहा।

कप्तान ने कन्याक का एक और घूंट लिया और कहने लगा :

"जानते हो, क्रान्ति के फ़ौरन बाद ही से मैं रूस से भाग गया। तुम्हें याद होगा कि उधर सुदूर पूर्व में सरकारों की इस क़दर उथल-पुथल होती थी कि मेरा जी मिचलाने लगता था। मैंने यह ठीक से देख लिया। फिर क्या–लंगर उठाया और कूच कर दिया। यही है वह जहाज़! मैं चीनी जहाज़ी मार्ग पर काम करता था। बिना देश के आदमी की तरह! फिर सोवियत सरकार आयी और मैं व्लादिवोस्तोक लौट आया। जहाज़ का पहला नाम मैंने रंग से मिटा दिया और उसका नया नाम रखा 'सोवियत'..."

लोस मुस्कराता हुआ सुन रहा था। कप्तान ने यही सारी बातें एक साल पहले उसे कह सुनायी थीं।

"मैं तुम्हारे लिए रेडियो की सामग्री और एक आपरेटर भी ले आया हूं ताकि तुम लोगों को यहां तनहाई न महसूस हो।"

"सच कहते हो?" लोस बेहद ख़ुशी से चिल्लाया। "अच्छा, मिख़ाईल पेत्रोविच, अब हमें इस रेडियो के नाम पर तुम्हारे उस अमृत का जाम पीना होगा।"

"अरे, ऐसे मौक़े पर पीने से कोई इनकार भी कर सकता है?" फिर से गिलास भरते हुए कप्तान ने कहा। "अरे, हां. तुम्हारे लिए मैं एक चिट्ठी लाया हूं। पिछले साल के सफ़र के समय से ही वह मेरे पास रखी है। तब कोलिमा से वापस जाते वक़्त मैं इधर नहीं आ सका था। फिर मैं उसे व्लादिवोस्तोक ले गया। वहां से अपने घर और बाद में शांहाई, नागासाकी और दाइरेन। ख़ैर, अब तो मैंने वह चिट्ठी पाने वाले के पास पहुंचा ही दी। तोल्स्तूख़िन तुम्हें याद है? उसी की दी हुई चिट्ठी है यह... हां, एक और भी चिट्ठी है," कहकर कप्तान ने ख़ुश होकर आंख मारी। "यह है तुम्हारी बीवी की चिट्ठी। लेकिन सुनो, तुम उसे मेरी केबिन में

नहीं पढ़ सकोगे। जाने क्या क्या लिखा है उसने? हो सकता है कि मुझे खूब गालियां दे रखी हों और अगर तुम उन्हें पढ़ लो तो फिर मेरे गिलास से गिलास नहीं मिलाना चाहोगे।"

लोस ने लिफ़ाफ़े पर अपनी पत्नी की लिखावट पहचानी और बड़ी अधीरता के साथ लिफ़ाफ़ा ले लिया। वह एकांत में उसे पढ़ना चाहता था, उसपर सोचना चाहता था और अपनी जवानी की सारी स्मृतियों को याद करना चाहता था – जब वह एक इंजन ड्राइवर था और उसकी पत्नी थी अध्यापिका। अपनी शिक्षा का श्रेय वह उसी को देता था। लोस ने बड़े ध्यानपूर्वक पत्र अपने बैग में रख लिया।

"मिखाईल पेत्रोविच, तुम उससे मिले थे?"

"हां, हां। व्लादिवोस्तोक से हम रवाना होने जा रहे थे कि एक औरत दौड़ी दौड़ी मेरे पास आयी। बड़ी ही अधीर थी वह, और आंखें उसकी चमक रही थीं। आते ही उसने मुझपर सवालों की बौछार कर दी: 'साथी कप्तान, क्या आप हमेशा ही 'सोवियत' पर काम करते आये हैं?' 'हां,' मैंने कहा, 'मैं बराबर 'सोवियत' पर ही रहा हूं।' वह समझती है कि जहाज़ भी कोई क्रान्ति-समिति का कार्यालय या फ़ेक्टरी है? 'गत वर्ष भी मैंने इसी पर सफ़र किया था।' उसने मुझसे पूछा, 'क्या आप लोस को जानते हैं?' 'ज़रूर जानता हूं,' मैंने जवाब दिया। 'पिछले सफ़र के समय हम चालीस दिन साथ साथ रहे थे!' 'आप कहां गये थे?' हाः हाः हाः! वह समझती है कि बस, जहाज़ पर सिर्फ़ सवारी की जा सकती है, कहीं जाया नहीं जा सकता! खैर, उसने तुम्हारे बारे में बहुत कुछ पूछा और जानना चाहा कि तुम कहां हो? वह तुम्हारे साथ हो लेना चाहती थी। मैंने उसके साथ इस बारे में काफ़ी बातचीत की। हां, सच कहता हूं। मैंने उसे सारी वस्तुस्थिति समझा दी। 'मैंने

लोस को एक उजाड़ किनारे पर उतार दिया,' मैंने कहा। 'कह नहीं सकता, अब उसका क्या हाल है!' मैंने उसे सलाह दी कि वह लंगर उठाने की जल्दी न करे। सचमुच मैंने कह दिया..."

"मिख़ाईल पेत्रोविच, ठीक ही किया तुमने," लोस ने कुछ संदेह भरे स्वर में कहा।

"मैं भी मानता हूं कि मैंने ठीक किया। इधर के मुल्क को क्या मैं जानता नहीं? हां, जब तुम यहां अच्छी तरह बस जाओगे और मकान-वकान बना लोगे तो वह भी आगे बढ़े और पाल फहरा दे। यही मैंने उससे कहा था ... फिर भी तुम्हारे पास आने के लिए वह बड़ी उत्सुक है! हम कप्तानों की बीवियों जैसी बात थोड़े ही है! वे तो बिना अपने शौहरों के रहने की आदी हो गयी हैं!.. अच्छा और एक दौर हो जाये... मित्रिच, और आलू ले आओ!" ज़ैतूनों और लेमन कैंडी के लिए हाथ बढ़ाते हुए कप्तान ने हुक्म दिया।

"मिख़ाईल पेत्रोविच, कहो महाद्वीप पर ज़िन्दगी कैसी गुज़रती है?"

"लेनिन द्वारा बतायी गयी राह पर बढ़ रही है।"

विंच की चरमराहट सुनाई दी। जहाज़ के डेक पर और सामने घरों में एक शोरोगुल हुआ जिसमें ख़ुशी की गूंज थी। "ऐ-है-हो-ऐ-हो!" की आवाज़ कप्तान की केबिन वाली छोटी सी खिड़की में से सुनाई देने लगी।

"मैं तुम्हारे लिए बीस कमरों वाला एक मकान ले आया हूं। तीन स्कूली मकान भी हैं।"

विचारमग्न लोस ने सिर हिलाया।

"मिखाईल पेत्रोविच, यह काफ़ी नहीं है। तीन स्कूलों से क्या होगा? किनारे की बस्तियों का फैलाव तुम्हें मालूम है न?"

"लेकिन प्यारे, तुम्हारा ख़्याल क्या है कि 'सोवियत' जहाज़ रबड़ का बना है? शुरू शुरू में यह सामान काफ़ी है। तुम तो जानते ही हो कि मास्को शहर एक दिन में नहीं बसा है।"

कप्तान गरज उठा :

"मित्रिच, फ़र्स्ट मेट से कहो कि इधर आ जाये!"

फ़र्स्ट मेट आ खड़ा हुआ।

"देखो, इवान इवानोविच," कप्तान ने कहा, "अपने साथी लोगों से कह दो कि क्रान्ति-समिति का मकान जल्दी खड़ा कर दें। इस काम के लिए मैं तुम्हें अड़तालीस घंटों की मुहलत देता हूं।"

"बहुत अच्छा, मिख़ाईल पेत्रोविच!"

"क्रान्ति-समिति की चिमनियों से धुआं निकलते ही हम इधर लंगर उठायेंगे... अच्छा, कहो, ये स्कूली मकान कहां ले जाने हैं?" कप्तान ने लोस से पूछा।

"एक यहीं रहेगा। दूसरा ले जाया जायेगा इस इलाक़े के दक्षिणी हिस्से में और तीसरा एनमकाई बस्ती में।"

"ऊंह... एनमकाई में? वहां तो लगभग तीन सौ मील हिमक्षेत्रों को लांघकर जाना होगा।"

"कुछ भी हो मिख़ाईल पेत्रोविच, एक मकान वहां ले जाना ज़रूरी है, बहुत ही ज़रूरी!"

कप्तान सोचता हुआ खड़ा रहा। उसने चुपचाप अपनी पाइप सुलगायी और निश्चयपूर्वक कहने लगा :

"अच्छा निकीता सेर्गेयेविच! मैं यह ज़िम्मेदारी उठा ही लूंगा..." उसने मेज़ पर मुक्का मारा और बड़ी ख़ुशी से बोल उठा : "यह है मेरा प्यारा रूस! एक छोटा सा स्कूली मकान पहुंचाने के लिए वह बरफ़ीले मुल्क में बड़ा भारी जहाज़ तक भेज देगा।" कप्तान ने हाथ हिलाया। "आज तक दुनिया ने कभी ऐसी इन्सानियत नहीं देखी!"

"मिखाईल पेत्रोविच, बात और हो ही नहीं सकती। यह तो हमारे रोज़ाना काम का ही एक हिस्सा है।"

दोनों बाहर डेक पर चले आये। अन्द्रेई जुकोव भी दौड़ता हुआ आ पहुंचा।

"व्हेल-नावें!" उसने उत्तेजित स्वर में कहा। "निकीता सेर्गेयेविच, देखो बारह व्हेल-नावें हैं!"

"व्हेल-नावें?" लोस ने साश्चर्य पूछा।

"हां, मैं ले आया हूं," कप्तान ने कहा। "उत्तरी समिति ने मुझसे सलाह-मशविरा किया था और मैंने ही यह सिफ़ारिश की थी!"

"तुम्हारा बड़ा आभारी हूं, मिखाईल पेत्रोविच!" लोस ने अपनी ठुड्डी ऊपर उठायी और गर्दन पर हाथ फेरते हुए कहा, "यहां उनकी इतनी ज़रूरत है!"

तीसरा अध्याय

नवागत कर्मचारी क्रान्ति-समिति के छोटे से मकान में भीड़ लगाये खड़े थे और लोस की बाट जोह रहे थे।

डाक्टर प्योत्र पेत्रोविच इन लोगों में से एक था। उम्र उसकी चालीस के क़रीब थी और चेहरे से सौजन्य टपक रहा था। चुकोत्स्क प्रायद्वीप के एक हाथ से बने और बेतरतीबवार से नक़्शे के सामने खड़े खड़े वह भूगर्भ-शास्त्री द्यागीलेव के साथ बातचीत कर रहा था।

"व्लादीमिर निकोलायेविच, ज़रा इधर भी ध्यान दो। यह शायद लोस नक़्शा दफ़्तर का नवीनतम, परिष्कृत और परिवर्धित प्रकाशन है," दीवार पर टंगे हुए नक़्शे की ओर संकेत करते हुए उसने भूगर्भ-शास्त्री से व्यंग्यपूर्वक कहा।

लम्बे क़द, इकहरे बदन और उत्साहपूर्ण नाक-नक़्शे वाले द्यागीलेव ने अपने सफ़री बैग में से एक छपा हुआ नक़्शा निकाला, लोस के नक़्शे से उसे मिलाया और आश्चर्य प्रकट करते हुए कहने लगा:

"मैं तो कहूंगा कि वहां वाला नक़्शा मेरे पास वाले नक़्शे से अधिक पूर्ण और अधिक अच्छा है। देखो प्योत्र पेत्रोविच, मेरे वाले नक़्शे में यह जगह बिलकुल ख़ाली है। बस, तट-रेखा दिखायी गयी है, और यह भी यथातथ्य नहीं। इधर लोस के नक़्शे में खाड़ियां और अंतरीप तक अंकित हैं!"

भूगर्भ-शास्त्री क्रान्ति-समिति वाले नक़्शे के अध्ययन में मग्न हो गया।

लोस द्वारा कापीबुक में संग्रहीत चुकची शब्दों और वाक्व्यवहारों का कोश तीन जवान बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ रहे थे। ये थे अध्यापक निकोलाई द्वोरकिन, कुज़्मा दोज़ोर्नी और मिख़ाईल स्कोरिकोव। चुकची भाषा में संख्याओं की व्याकरण शास्त्रीय रचना देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ।

"देखो साथियो, पद-रचना की यह बहुत ही रोचक प्रणाली है," स्कोरिकोव ने कहा। "मेरे मन में इन लोगों की गणन-प्रणाली पंचकों पर आधारित है, दशकों पर नहीं।"

"यह कैसे हो सकता है?" द्वोरकिन ने कहा। "देखो, एक के लिए है इन्नेन, दस के लिए मिंगित्केन और ग्यारह के लिए मिंगित्केन इन्नेन पारोल। इससे स्पष्ट है कि यह प्रणाली दशकों पर ही आधारित है।"

"लेकिन ज़रा आगे भी तो देखो!" स्कोरिकोव ने कुछ जोश के साथ प्रतिवाद किया। "किलहिनकेन का मतलब है पंद्रह और किलहिनकेन इन्नेन पारोल के मानी है सोलह। बोलो, इससे क्या सिद्ध होता है?"

"मैं भी मानता हूं कि इनकी गणन-प्रणाली पंचकों पर आधारित है," कुज़्मा दोज़ोर्नी बोल उठा।

इसके बाद गरमागरम बहस हुई।

क्रान्ति-समिति का हिसाबनवीस प्रिगुनोव अकेला एक कोने में मौन साधे बैठा हुआ था। उसके गोबरे से चेहरे पर कुछ उदासी छायी हुई थी और वह विचारों में डूबा दिखाई दे रहा था। "ख़ैर, साथियो! हम गर्त में उतर आये हैं, और मैं मानता हूं कि हर ऐरी-गैरी बात पर बहस करना कोई अक़्लमंदी नहीं!"

मिलीशियामैन ख़ोख़लोव पेन्सिल और काग़ज़ के साथ कुछ लड़ाई सी कर रहा था और अपने घुटनों पर रखे हुए चमड़े के सफ़री बैग के सहारे कुछ लिख रहा था।

"उधर तुम इंजन की तरह क्यों फुंकार रहे हो जी?" हिसाबनवीस ने गुर्राकर पूछा।

"मैं तुम्हारे ख़िलाफ़ शिकायत लिख रहा हूं और इसलिए तुम दख़ल मत दो," ख़ोख़लोव ने जवाब दाग़ दिया।

रूस के विभिन्न हिस्सों से आये हुए ये लोग मार्ग पर ही एक दूसरे से परिचित हो चुके थे और अनिच्छा से आ पड़ी लम्बी निष्क्रियता से छुट्टी पाने के लिए आपस में हास्य-विनोद कर लेते थे। इस हंसी-मज़ाक़ का सब से बड़ा शिकार था प्रिगुनोव जो अपनी थैली भरने के लिए उत्तर की ओर गया था।

रोवेंदार खाल के व्यापार-केंद्रों के व्यवस्थापक कमरे में आ गये। ये थे रुसाकोव और जोहोव, जिन्हें सफ़र के दौरान 'लाल सौदागर' का ख़िताब दिया गया था।

जोहोव बरामदे में रुक गया, कमरे का निरीक्षण किया और व्यंग्यपूर्वक बोल उठा:

"तो यह है चुकोत्स्क प्रदेश का सोवियत प्रासाद?"

प्रिगुनोव हंसते हंसते लोटपोट हो गया।

"ध्यान रहे कि कहीं तुम्हें मुंह की न खानी पड़े!" मिलीशियामैन ने सख़्ती से कहा। "अरे, इसी जगह से तुम्हें ख़ुश होना चाहिए! अगर बड़े मकान का बंदोबस्त न हो सका तो तुम्हें इसी की छत पर बैठकर अपने गिनती के चौखटे पर काम करना पड़ेगा।"

क्रांति-समिति के प्रशिक्षक ओसिपोव के साथ लोस ने कमरे में प्रवेश किया।

"साथी लोस, यह है हमारी मंडली," ओसिपोव बोला।

मोटा-नाटा ओसिपोव चालीस साल का था लेकिन अपनी उम्र के हिसाब से कुछ बड़ा मालूम देता था। पार्टी ने उसे मोटर विशेषज्ञ के नाते यहां भेजा था।

लोस ने नवागंतुकों से हाथ मिलाया और पूछा:

"आपमें से पार्टी के सदस्य कौन कौन हैं?"

"मैं हूं," व्यापार-केन्द्र व्यवस्थापक रुसाकोव ने कहा।

"सारे अध्यापक कोमसोमोल के सदस्य हैं," ओसिपोव ने बता दिया। "उन सब को पार्टी में प्रवेश दिया जा सकता है। रेडियो विशेषज्ञ मोलोत्सोव भी कोमसोमोल का सदस्य है।"

"आपमें से रेडियो-आपरेटर कौन है?"

"बस, शैतान का नाम लेने की देर है कि वह हाज़िर हुआ," मोलोत्सोव का परिचय देते हुए ओसिपोव ने कहा। मोलोत्सोव अभी अभी तो भागता हुआ आया था।

सब से प्यारे मेहमान की तरह लोस ने उसका अभिवादन किया। "नमस्ते साथी मोलोत्सोव! यह है तुम्हारा रेडियो-घर। यहां हम रेडियो-केन्द्र क़ायम कर लेंगे।"

"जगह तो काफ़ी नहीं है," निराशाभरी दृष्टि से कमरे को देखते हुए आपरेटर बड़बड़ाया।

"मकान की ख़ूबसूरती उसकी बनावट में नहीं बल्कि वहां की ख़ातिरदारी में होती है," लोस बोला। "अरे, यह बड़ा अच्छा

रेडियो-केन्द्र बनेगा।" फिर उसने बाक़ी लोगों से कहा: "साथियो, आप देखते ही हैं कि हम कितनी कम जगह में रह रहे हैं। मैं आपको बैठने की जगह तक नहीं दे सकता। लेकिन मैं देर तक आपको इस तरह नहीं रखूंगा। बात यह है कि जब तक स्टीमर यहां लंगर डाले है तभी हमें क्रान्ति-समिति का नया मकान जोड़ना और खड़ा करना चाहिए। मकान बनाने वाले लोगों के अलावा कप्तान जहाज़ के सारे मल्लाहों को इस काम के लिए मेरे मातहत करने को तैयार है। इस फ़ौरी काम में हम सबों को भी अपना हाथ बंटाना चाहिए। मैं आपसे कहूंगा कि आप पूरी कोशिश कर लें। बाद में हम काफ़ी आराम कर सकते हैं। यहां रातें बहुत ही लम्बी होंगी।"

"साथी लोस, तुम ज़रा भी फ़िक्र न करो। हम बाक़ी लोगों के कंधे से कंधा लगाकर काम करेंगे," डाक्टर ने कहा। "हमें चुनते समय यह देखा गया है कि हम स्वस्थ-शरीर हैं और हर प्रकार का काम कर सकते हैं।"

"बहुत अच्छा! ओसिपोव, तुम्हारी ज़िम्मेदारी होगी मकान की जगह पर इमारती लकड़ी पहुंचाने की। ईंट और गारे के काम की या यों कहिये कि चूल्हों के काम की निगरानी डाक्टर करेगा। किनारे से सामान लाने के लिए हम एक जीवधारी मशीन तैयार करेंगे। यहां के रहने वाले जवान अपनी एक माला सी बना लेंगे और जहाज़ से यहां तक हाथों हाथ ईंटें पहुंचा देंगे। साथी डाक्टर, इस काम के प्रबंध में मैं बाद में तुम्हारी मदद करूंगा। ध्यान रखना कि मकान का सब से महत्वपूर्ण हिस्सा यही है। अगर जहाज़ के यहां रहते हुए हम चिमनियां न बना सकें तो समझ लेना कि हमारी बुरी हालत हो जायेगी। हमारे पास कोई ऐसा आदमी नहीं जो चूल्हे-चिमनी का काम जानता हो।"

"ऐसा क्यों कहते हो, साथी क्रान्ति-समिति-प्रतिनिधि, मैं ऐसे चूल्हे बना दूंगा जो सौ साल टिक सकेंगे! ये चूल्हे तार की बाइंडिंग के होंगे," मिलीशियामैन बोला।

"तुम तैयारी करो किनारे के उत्तरी हिस्से में जाने की। बस, इसी क्षण। एक बिदारका उधर जा रही है। वह तुम्हें वहां उतार देगी। तुम 'बसंत दर्रा' नामक स्थान पर उतर जाना। तुम्हारा काम होगा चुंगी-चोरी की रोकथाम। साथी जुकोव तुम्हें इसके बारे में तफ़सीलवार जानकारी देगा।"

"साथी क्रान्ति-समिति-प्रतिनिधि, मैं तैयार हूं। यह सूट-केस उठाया और मैं चला। भई, हम ठहरे फ़ौजी आदमी!" मिलीशियामैन ने ख़ुशी के साथ कहा।

"साथी जुकोव को मैं इस फ़ौरी काम से छुट्टी देता हूं। क्योंकि वह 'सोवियत' पर महाद्वीप जा रहा है। उसे तैयारी करनी चाहिए। एक और व्यक्ति को भी हमें यहां से छुट्टी देनी होगी। एक अध्यापक को फ़ौरन एनमकाई बस्ती जाना चाहिए। ओझों का प्रभाव वहां काफ़ी ज़ोरदार है। वहां जाकर यह अध्यापक स्कूल के लिए उपयुक्त स्थान चुन लेगा और वहां के लोगों को इस बात के लिए तैयार करेगा कि स्टीमर के वहां पहुंचते ही वे स्कूली मकान जोड़ने का काम शुरू कर दें। एक मिनट भी बेकार नहीं जायेगा। कप्तान जोखिम उठा रहा है। हम स्टीमर को यों ही रोक नहीं रख सकते। हां, वहां छात्र ज़्यादा तो न मिलेंगे। यही कोई आठ-दस होंगे। कहो, कौन अध्यापक वहां जाने को तैयार है? मैं कहे देता हूं कि यह कोई आराम की जगह नहीं है।"

"हममें से कोई भी जाने को तैयार है," दुबले-पतले युवक कुज़्मा दोज़ोर्नी ने जवाब दिया। "हम सब कोमसोमोल के सदस्य हैं और जानते हैं कि हमें कहां जाना है।"

"तुमसे बड़ा कोई अध्यापक नहीं है क्या?" लोस ने पूछा।

द्वोरकिन उठ खड़ा हुआ। लम्बा क़द, दोहरा बदन और मुंह पर चेचक के कुछ दाग़।

"क्या इससे काम चल जायेगा?" लजीली मुस्कान के साथ उसने पूछा।

"हां, चल जायेगा। साथी जुकोव तुम्हें ज़रूरी हिदायतें देगा। यह है सब के कामों का बंटवारा। साथियो, अब अपनी अपनी जगह संभालो और फ़ौरन काम शुरू कर दो।"

"मैं कुछ कहना चाहता हूं," भूगर्भ-शास्त्री ने कहा। "साथी लोस, इस फ़ौरी काम के ख़िलाफ़ मुझे कुछ नहीं कहना है, लेकिन चूंकि मुझे अपना काम मुख्यत: गरमियों में ही करना चाहिए इसलिए मैं एक मिनट भी नहीं गंवाना चाहता। क्या तुम भी ऐसा नहीं समझते कि मैं अपना थैला पीठ पर लटका लूं और हथौड़ा लिये फ़ौरन पहाड़ियों की ओर चल दूं?"

"ठीक है," लोस ने कहा, "लेकिन देखो, साथ में मार्गदर्शक को ले जाओ।"

चौथा अध्याय

'सोवियत' जहाज़ किनारे पर लंगर डाले खड़ा था। उसकी चिमनियां धीरे धीरे धुआं छोड़ रही थीं। वायुमंडल विंच की खड़खड़ाहट से गूंज रहा था। छोटी छोटी नावों की क़तार को खींचती हुई मोटर-बोट स्टीमर और किनारे के बीच दौड़ रही थी।

किनारे पर क्रान्ति-समिति के मकान के पास ही नयी इमारत के चूलदार बल्लों के थापे लगाये जा रहे थे। कुल्हाड़ियों की खटाखट और आरों के रेतने की छिर्र छिर्र वायुमण्डल में गूंज रही थी। चारों

ग्रोर से ज़ोरदार ग्रावाज़ें सुनाई दे रही थीं। नावें लगातार लट्ठे, तख़्ते ग्रौर जोड़ी हुई चौखटें लगा रही थीं।

ग्रध्यापक द्वोरकिन ग्रौर मिलीशियामैन ख़ोख़लोव बिदारका में बैठे थे।

"ग्रन्द्रेई!" लोस चिल्लाया। "शब्दों ग्रौर मुहावरों वाली मेरी कापियों में से कुछ कापियां ग्रध्यापक को दे दो। वहां मेरे पास उनके छः सेट हैं।"

"क्या मिलीशियामैन को भी एक सेट दे दूं?"

"हां उसे भी एक दे दो।"

"एरमेन," ग्रन्द्रेई ने मल्लाह को पुकारकर कहा, "यह काग़ज़ वामचो को दे दो ग्रौर उससे कहो कि होली में जलाये गये काग़ज़ के बदले हम यह भेज रहे हैं। उससे यह भी कह दो कि हम ग्राज भी उसे एनमकाई क़बीला सोवियत का ग्रध्यक्ष मानते हैं। उसे यह समझा दो कि ग्रोझा कोराउगे ने उस समय ऐसे ही उसे डराने की कोशिश की थी। समझ गये न? देखो, ख़ुद तुम भी एक ग्रध्यक्ष हो।"

एरमेन ने सिर हिलाया ग्रौर काग़ज़ रोवेंदार खाल पोस्तीन के ग्रन्दर रख लिया। बिदारका रवाना हुई। उसका पाल फैल गया ग्रौर ग्रनुकूल हवा के सहारे वह निर्माण-स्थल के पास से होती हुई ग्रागे बढ़ी।

एक लट्ठे पर बैठा हुग्रा बढ़ई चिल्ला उठा:

"साथियो, एक मिनट चुप रहिये! मिलीशिया जा रही है!"

लोगों ने कुल्हाड़ी, ग्रारा या तख़्ता हिलाते हुए मिलीशिया का ग्रभिवादन किया।

मिलीशियामैन ने बिदारका के किनारे खड़े होकर सलामी के बतौर हवा में बंदूक़ की तीन गोलियां दाग़ीं।

बिदारका उत्तर-पश्चिमी दिशा में ग्रागे बढ़ी।

मकान झटपट तैयार होने लगा, मानो जादू से बन रहा हो! चूल्हे ग्रौर दीवारें साथ साथ खड़ी हुईं। बढ़ई कोशिश करते रहे कि

वे अपना काम चूल्हे बनाने वालों से पहले पूरा कर लें और चूल्हे बनाने वालों ने सोचा कि हम बढ़इयों को मात दे दें। काम पूरी रफ़्तार से होता रहा। ग्रीष्मकालीन उत्तरी हवा की सुखकर लहरों ने हर किसी को उत्साहित कर दिया।

लम्बी दाढ़ीवाला येगोरिच सफ़ेद पेशबन्द पहने चूल्हें बनाने का काम बड़े ज़ोरशोर से करता रहा। एक ईंट को यथास्थान रखते हुए वह चूल्हे की चोटी पर से ख़ुशी से चिल्लाया:

"अच्छा जवानो, हम सूरज के डूबने तक काम करते रहेंगे!"

किसी ने चिल्लाकर ही जवाब में कहा:

"अजी यहां सूरज के डूबने तक तो हम एक पूरा का पूरा शहर बसा लेंगे।"

"कैसी अजीब बात है!" येगोरिच ने आश्चर्यपूर्वक कहा। "मैंने सुना था कि कई देश ऐसे हैं जहां सूरज कभी डूबता ही नहीं, लेकिन मैंने इसका विश्वास नहीं किया था। सोचा था कि यह सिर्फ़ गप है।"

शिकारी और बस्ती की स्त्रियां बड़े बड़े अजीबोग़रीब बोझ उठा उठाकर ला रही थीं। एक दूसरे के हाथों में ईंटें थामे क़तार में खड़े लड़के-लड़कियों की आंखें चमक रही थीं। उन्हें बड़ा मज़ा आ रहा था।

बूढ़ा इल्यीच बड़े ठाठ के साथ लट्ठों और तख़्तों के बीच से होता हुआ चुपचाप इमारत के चारों ओर घूम रहा था। वह सोच रहा था कि इन सारी नयी बातों से कहीं किनारे की बस्ती ज़िंदगी बिगड़ न जाये। आख़िर ये इतने तांग यहां क्यों आ धमके हैं? और काम भी कितनी चुस्ती से कर रहे हैं! बस, देखते ही बनता है! ख़ूब काम करते हैं और बड़े मन से! काम करते हैं और हंसी-मज़ाक़ भी! ये सभी शायद लोस के सगे-सम्बन्धी हैं।

अगर ऐसा न होता तो भला वे उसकी मदद करते! ओह, कितने रिश्तेदार हैं उसके! बूढ़े को लोस दिखाई दिया और फिर वह उसके पास गया।

"ओहो, इल्यीच! नमस्ते! बैठो, ज़रा सिगरेट पी लें," सिगरेटों का एक बक्स निकालते हुए लोस ने कहा।

"इस इमारत में क्या होगा?" मकान की ओर इशारा करते हुए बूढ़े ने पूछा।

"रहेंगे और काम करेंगे। नये लोग आये हैं। नयी ज़िंदगी बनाने में वे तुम लोगों की मदद करेंगे। देखो, मोटर वाली व्हेल-नावें आ गयी हैं। वे बिना डांड़ों के, वालरस के शिकार पर जायेंगी। उधर खड़ी मोटर-बोट जितनी ही तेज़ चलती हैं ये।"

"कौन जाने?" बूढ़े ने शक करते हुए कहा। उसने सिगरेट का एक कश खींचा और फिर खांसने लगा।

दूसरे दिन शाम को 'सोवियत' का कप्तान किनारे पर आ गया। मकान छत तक तैयार हो गया था और अब पाटन की धरनें यथास्थान रखी जा रही थीं।

"देखा मिख़ाईल पेत्रोविच, छत अभी तक तैयार नहीं, लेकिन फिर भी एक चिमनी से धुआं निकलने लगा है। अब शीघ्र ही हम तुम्हें जाने देंगे। दरवाज़े और चौखटें हम खुद बिठा देंगे," कप्तान का अभिवादन करते हुए लोस ने कहा।

"अजी, यह भी कोई बात हुई? हम तो काम पूरा करके ही वापस जायेंगे। काम अधूरा छोड़ना मुझे पसन्द नहीं। इधर हवा अच्छी है और तूफ़ान के भी कोई लक्षण नहीं।"

सूरज लगभग सागर तक ढल चुका था। लेकिन मानो ठंडे पानी में डुबकी लगाने से डरते हुए वह आग की तरह लाल गोला फिर से आसमान में ऊपर ऊपर चढ़ने लगा।

शीघ्र ही उसकी लंबी तिरछी किरणें नयी इमारत की चद्दर वाली चमकदार छत पर थिरकने लगीं। बड़ी बड़ी खिड़कियों की चौखटों में लगे हुए शीशे जगमगाने और लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने लगे। लोस भी नये मकान की ओर देखता ही रह गया।

"अब यहां नवजीवन गूंज उठेगा!" विचारमग्न लोस ने मन ही मन कहा। फिर अपनी पत्नी की याद आते ही उसने सोचा: "लेकिन, अफ़सोस है कि कप्तान उसे यहां नहीं लाया। ज़रा इस मकान की शान तो देखो! अच्छा-ख़ासा महल बन गया है!"

इसी वक़्त अन्द्रेई आ गया। उसकी कमर में हाथ डालते हुए लोस ने कहा:

"बेटा अन्द्रेई, तुम्हारे बिना तो मेरा मन भी न लगेगा।"

"क्यों? देखो न तुम्हारे पास लोगों की भीड़ की भीड़ लगी है। ये सभी अपने आदमी हैं, सोवियत आदमी।"

"लेकिन मुझे तुम्हारे साथ रहने की आदत जो पड़ गयी है... हां भई, देखो, कहीं तुम वहीं उलझ न जाना। वापस आने का ख़्याल ज़रूर रखना! मैं तुम्हें इसलिए भेज रहा हूं कि उस ओर से भी काम जल्दी हो जाये। तुम सारी बातें ठीक कर लेना। जानदार आदमी हमारे काग़ज़ पत्रों और प्रतिवेदनों से ज़्यादा काम कर सकता है। सब से महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम उन्हें इस बात के लिए तैयार करो कि यहां एक सांस्कृतिक सेवा केन्द्र बन जाये। यह तुम्हारी ही सूझ थी। आओ ज़रा इस लट्ठे पर बैठो..."

कुछ देर दोनों मौन रहे।

"कप्तान ने मुझसे कहा कि मास्को में अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के अधीन एक उत्तरी समिति बनायी गयी है। तुम वहां भी जाना। और देखो, हमारी समस्याएं सभी को समझा देना। समझे अन्द्रेई, मेरे बेटे?"

"हां, निकीता सेर्गेयेविच, सब समझ गया।"

"जब तुम लोरेन बस्ती में जाओगे उस समय क्रान्ति-समिति के प्रतिनिधि की हैसियत से काम लेना। वहां रेड क्रॉस और स्कूल की स्थापना में सहायता देना। मेरी को सलाह देना कि वह परिचारिका की ट्रेनिंग ले—मैंने उसके बारे में डाक्टर से बातचीत कर ही ली है। बड़ा अच्छा आदमी है वह... याराक को रोवेंदार खालों के गोदाम का व्यवस्थापक बना देना। यथासमय हम उसे व्यापार-केन्द्र का व्यवस्थापक बना देंगे। जाने क्यों मुझे वह आदमी जोहोव पसन्द नहीं आता। और ओसिपोव ने भी उसकी कोई अच्छी सिफ़ारिश नहीं की थी।"

घुटनों पर नोटबुक रखे अन्द्रेई ने सभी आदेशों तथा सूचनाओं को नोट कर लिया।

"अब मि० साइमन्स के बारे में। व्यापार-केन्द्र को हमारे अधीन करके उसे 'सोवियत' पर पेत्रोपावलोव्स्क तक जाना है। व्यापार-समाप्ति के समझौते के अनुसार ये अमेरिकन व्यापारी सारा माल हमें हस्तांतरित कर रहे हैं। इसमें से बिक्रीयोग्य वस्तुओं पर हमें चालीस प्रतिशत और बाक़ी चीज़ों पर साठ प्रतिशत बट्टा मिलेगा। समझे न? यह काफ़ी बड़ी रक़मों का मामला है और वह भी विदेशी मुद्रा के रूप में। इन बातों को भूलना नहीं। वे लोग माल वापस नहीं ले जा सकते क्योंकि उसमें उन्हें कोई फ़ायदा नहीं। मसलन ये ज़नाने साये-वाये ही ले लो—कौन लेगा ये? ये कपड़े यहां पहनता ही कौन है? न बिकने वाली चीज़ों की सूची में ये कपड़े जायेंगे। जोहोव पर निर्भर रहकर काम नहीं चलेगा। वह तो ऐसा आदमी है जो बीस डालर में अपने को कपड़े-लत्ते सहित बेच देगा।"

"निकीता सेर्गेयेविच, तुम्हें चाहिए कि क्रान्ति-समिति के प्रशिक्षक को भेज दो।"

"अब सब कुछ तुम्हीं करो। ओसिपोव दूसरे व्यापार-केन्द्र की जांच-पड़ताल करने जायेगा। बस। और एक बात–लेकिन इसे लिखने की ज़रूरत नहीं। यह मेरा निजी अनुरोध है, मैं चाहता हूं कि तुम एक मित्र के नाते यह काम करो। कोशिश करके व्लादिवोस्तोक में नताशा से मिलो और यदि उसका स्वास्थ्य ठीक हो तो उसे यहां खींच लाओ। तुम तो देखते ही हो कि यहां ढेरों काम पड़ा है। यहां की असुविधाजनक बातें बनाकर उसे घबड़ा न देना। इसकी कोई ज़रूरत नहीं। वह यहां आयेगी और ख़ुद ही सब कुछ देख लेगी।"

"निकीता सेर्गेयेविच, तुम यक़ीन करो। मैं सब कुछ क़ायदे से कर दूंगा।"

लोस मुस्कराया और अन्द्रेई की कमर में हाथ डालकर धीरे से बोला:

"मैं जानता हूं, बेटा अन्द्रेई... अच्छा अब आये के बारे में सुनो। तुम उसके बारे में क्या करना चाहते हो?"

"मैं उसे अपने साथ ले जाऊंगा। वह भी ज़रा दुनिया देख ले। यह यात्रा उसके लिए विश्वविद्यालय का काम देगी। वह जब लौटेगा उस समय यहां वालों को महाद्वीप के बारे में सारी बातें ख़ुद ही बता देगा। लेकिन मेरे मन में कुछ और बात है। यह केवल हम दोनों के बीच की बात है। ज़रा सोचो तो, जब मैं आये को, अपनी जनता के सच्चे सजीव प्रतिनिधि को अपने साथ लिये गुबेर्निया क्रान्ति-समिति के कार्यालय में जाऊंगा तो कैसा असर पड़ेगा! सचमुच बड़ा ही प्रभाव पड़ेगा। जो मांगे वही मिल जायेगा।"

लोस संतोष के साथ मुंह दबाकर हंसा। "वाह अन्द्रेई, बड़े होशियार हो तुम! बढ़िया तरक़ीब निकाली तुमने! जब तुम लोरेन

जाओगे और जोहोव अपना माल उतार देगा उस समय आये के लिए एक सूट चुन लेना। बूट, दूसरे कपड़े-वपड़े और अन्य आवश्यक चीज़ें भी। समझे? उसे ठीक सजा-धजा देना।"

'सोवियत' ने विदाई का भोंपा बजाया। हर कोई जहाज़ की ओर दौड़ पड़ा।

लोस और जुकोव जहाज़ के लदान संबंधी काग़ज़ात में उलझे थे और आये अपनी मातृभूमि के किनारे की ओर टकटकी लगाये जहाज़ की रेलिंग के पास खड़ा था। कई बार उसके मन में विचार उठा कि फ़ौरन सीढ़ियां उतर जाऊं, शिकारियों की बिदारका में कूद पड़ूं और टुंड्रा में भाग जाऊं। अगर आये को यह मालूम न होता कि स्कूल मकान का सामान उतारने के लिए जहाज़ एनमकाई के पास रुकने वाला है तो शायद वह कूद भी पड़ता। तीग्रेना और उसके नन्हे बच्चे को देखने और ओझा कोराउगे को चिढ़ाने के लिए वह उत्सुक था। "देखो तो आये अब क्या बन गया है! लोहे के जहाज़ का वह मास्टर है। मैं तीग्रेना को ले जाने आया हूं। वह मेरी बीवी है। बचपन ही में मेरे साथ उसकी सगाई हुई है।"

आये विचारमग्न खड़ा था। लोस और अन्द्रेई उसके पास आ गये।

"आये, अभी हम रवाना हो रहे हैं!" अन्द्रेई ने खुशी के साथ कहा।

"हां, रवाना हो रहे हैं," आये बोला। उसके चेहरे पर उदासी थी। और आवाज़ इस तरह आ रही थी मानो सूली पर जा रहा हो।

"आये, घबड़ाओ मत," लोस ने उसे धीरज बंधाया।

"अगले साल अन्द्रेई के साथ तुम वापस आओगे। मैं तुम्हारा स्वागत करने आऊंगा।" उसने ज़ोरों से आये का हाथ हिलाया।

फिर उसने अन्द्रेई को गले लगाया और चूम लिया। लंगर की ज़ंजीर की आवाज़ होते ही वह सीढ़ी से सहारे बिदारका में उतर गया। भले ही उसने चाहा न हो लेकिन दुःख उसे अवश्य हुआ।

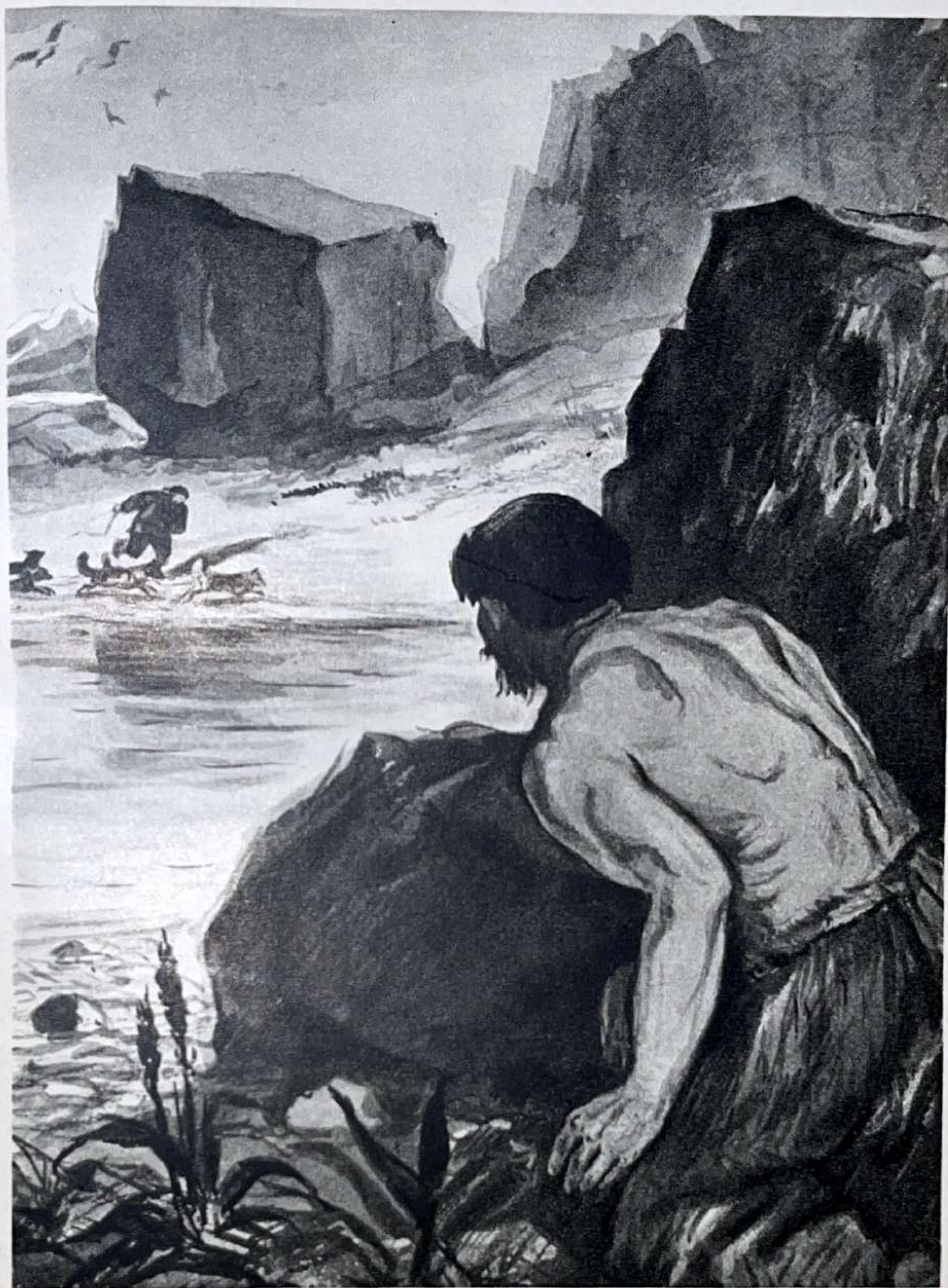
पांचवां अध्याय

अलितेत किनारे किनारे चल रहा है। समुद्र-तट के बालू में उसके नंगे पैर धंसे जा रहे थे। उसके रोवेंदार मोज़े फट फटकर चिथड़े हो गये थे और परके में से भी केवल दो पट्टियां ही बची थीं जो किसी तरह उसके सीने और पीठ को ढके थीं। उसकी वालरस खाल की पेटी, तोरबाज़ या बारहसिंगे की खाल की टोपी इनमें से कुछ भी न बचा था। इन सब को और सील की हवाई थैली तक को अलितेत बहते हुए हिम शैलों पर बैठे बैठे पेट की भट्ठी में झोंक चुका था।

शरीर पर चिथड़े लटक रहे थे। वह बहुत ही क्षीण हो गया था। इस समय वह ज़मीन पर चलता हुआ अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ा रहा था। उसके मन में चार्ली का विचार आया। चार्ली भी उसी की तरह एक हिमशैल पर चढ़ गया था। अब वह कहां होगा? और व्हेल-नाव तो चौपट ही हो गयी थी। व्हेल नौका के लिए उसे कितना दुःख हो रहा था! और वे रोवेंदार खालें! ओह, कितनी खालें थीं!

व्हेल-नाव के टूट जाने के बाद अलितेत ने दो दिन पानी तक न पिया। उसके ओंठ झुलस से गये और गला सूख गया। समुद्र के पानी और खारी बरफ़ के कारण उसे उबकाई आने लगी।

फिर तीसरे दिन अलितेत वाला हिमशैल तैरता हुआ एक हिमक्षेत्र में घुस गया और हिमशिलाओं के बीच घूमते-घामते हुए



उसे शुद्ध पानी की बरफ़ की एक चट्टान दिखाई दी। चारों ग्रोर की नीली पहाड़ियों में वह फीकी दिखाई दे रही थी। कई वर्षों की हवा ग्रौर सख़्त पाले ने उसमें से नमक का ग्रंश चूस लिया था।

दूर ही से उसे देखकर ग्रलितेत पागल की तरह चिल्ला उठा ग्रौर एकदम उसकी ग्रोर झपट पड़ा। दौड़ते दौड़ते उसने ग्रपना छुरा निकाल लिया ताकि उस चट्टान से बरफ़ का टुकड़ा काट सके। लेकिन चट्टान के पास ग्राते ही उसने छुरा एक ग्रोर फेंक दिया ग्रौर चट्टान पर ग्रौंधा गिरकर उसने ग्रपने दांतों से पेटू की तरह उस बरफ़ को काटना-कुतरना शुरू कर दिया। फटे होंठों से निकलने वाले ख़ून तक की ग्रोर उसका ध्यान नहीं गया।

पीड़ादायी प्यास बुझाकर ग्रौर ग्रागे के लिए बरफ़ का एक बड़ा सा टुकड़ा साथ लेकर उसने ग्रपनी राह ली। दरारों को वह उछलकर लांघता ग्रौर पानी के खुले क्षेत्रों की परिक्रमा करता गया। एक एक हिमशैल को लांघता हुग्रा वह तट की दिशा में जाने लगा। ग्राख़िर वह एक हिमक्षेत्र के किनारे ग्रा पहुंचा। खुले सागर की एक चौड़ी पट्टी उसे किनारे से दूर रख रही थी। पहाड़ियों के परिचित दृश्य को वह क्षुधित की तरह एकटक निहारता रहा।

बरफ़ पर सूरज की किरणों की क्रीड़ा चल रही थी। पिघलता हुग्रा सा नारंगी सूर्यमंडल ग्रंगारे बरसा रहा था। बरफ़ीली चट्टानों ग्रौर इक्के-दुक्के हिमपर्वतों की काली परछाइयां ग्रादमियों को धोखा दे रही थीं। वें बेचारे समझ बैठते कि यह खुले सागर का ही एक ग्रत्यंत गहरा भाग है।

देर तक ग्रलितेत चुपचाप खड़ा रहा, मानो ख़ुद भी एक हिमपर्वत बन गया हो। उसकी ग्रांखें रिरकालिग्राउत की चोटी पर गड़ी हुई थीं। कितनी ही बार उसने ग्रपनी कुत्ता-गाड़ी पर उस पहाड़ी की परिक्रमा की थी!

अलितेत के पैरों में कंपकंपी होने लगी और वह बैठ गया। उसने अपने दांत पीसे। उसे नींद तो आ रही थी लेकिन वह सो न सका। उसने हाथ ऊपर उठाये और सिर थाम लिया। उसे ज़रा भी दर्द न हुआ और यह तक उसके ध्यान में न आया कि बालों का एक गुच्छा उसके हाथ में उखड़ आया है।

अंतर्धारा के सहारे बहता हुआ एक छोटा सा हिमशैल हिमक्षेत्र के किनारे से होता हुआ चला जा रहा था। उसे देखकर अलितेत सचेत हो गया। वह उछलकर खड़ा हुआ और बरफ़ के किनारे की ओर बेतहाशा दौड़ा। उसकी सांस घुट रही थी। सागर पर झुककर वह प्यासी नज़रों से हिमशैल की ओर देखने लगा। फिर उसकी आंखें बड़ी आशा के साथ रिरकालिआउत की चोटी पर गड़ गयीं। उसके शरीर में एक लहर दौड़ गयी। शुद्ध पानी की बरफ़ का एक टुकड़ा हाथ में पकड़कर उसने पूरी ताक़त बटोरकर एक ज़ोरदार छलांग मारी और हिमशैल पर जा पहुंचा। उसके पैर धरते ही साथ हिमशैल डगमगाया और पानी की गहरी हरी सतह पर वृत्ताकार तरंगें पैदा हो गयीं। अलितेत उकडूं बैठ गया और अपनी गर्दन सिकोड़ ली। उसे हिलने-डुलने में भी डर लग रहा था।

हल्की सी बयार चली और उसने अलितेत के माथे पर से पसीने की बड़ी बड़ी बूंदें हटा दीं। अलितेत ने बरफ़ का एक टुकड़ा काटकर निगला और अपने कपड़े उतार डाले। उसने पाजामा हाथों पर रखा, परके का बचा हुआ हिस्सा खोला और उन्हें हवा में ऊंचे उठाते हुए उस हिमशैल को चलाने के लिए पाल की तरह इस्तेमाल किया। भूख और सुरक्षित किनारे तक पहुंचने की तीव्र इच्छा ने उसे इस भयानक हिमशैल का सहारा लेने पर मजबूर कर दिया। उसने जान लिया कि अगर ज़ोरदार हवा फिर शुरू हुई तो लहरें उसे वहां से बहा ले जायेंगी। लेकिन अज्ञात भय ने ही उसे उस हिमक्षेत्र का

सहारा छोड़ देने को मजबूर किया था जहां पर खाने को कुछ भी न था।

हवा बराबर बहती रही और अलितेत वाला हिमशैल बिदारका की तरह चलता रहा। अलितेत नंगा खड़ा था। माथे पर चढ़े हुए सूरज की झुलसाने वाली किरणें उसके सारे शरीर पर बरस रही थीं। अलितेत ने एक क्षण भी अपने हाथ नीचे नहीं किये। किनारा उसे फ़ुसलाकर लिये जा रहा था। हिमशैल जैसे जैसे किनारे के नज़दीक आ रहा था, उसकी गति मंद होती सी लग रही थी।

अलितेत के हाथ चेतनाहीन से हो गये। फिर भी वह बड़ी मुश्किल से उन्हें ऊपर उठाये खड़ा रहा और टकटकी बांधे उन पहाड़ियों की ओर देखता रहा।

संध्या हुई और तब कहीं वह हिमशैल उस छिछले पानी में पहुंचा जहां से किनारा बिलकुल नज़दीक था। ऐसा लगा कि अलितेत पागल हो जायेगा। उसने अपना वह बरफ़ का टुकड़ा पकड़ा और पानी में कूद पड़ा। जानवर की तरह वह हाथ-पैरों के सहारे रेंगता हुआ किनारे की गरम रेत पर जा पहुंचा, वहां लेट गया और फ़ौरन सो गया।

अलितेत जागा तो उसका शरीर जैसे ठिठुर रहा था। सूरज आकाश के किनारे तक जा चुका था। अलितेत ने अपनी आंखें खोलीं। उसके पास ही शुद्ध पानी वाली बरफ़ का एक छोटा सा टुकड़ा पड़ा था जिसमें से बड़ी बड़ी बूंदें धीरे धीरे चू रही थीं। अब यह टुकड़ा बेकार बन गया था। अलितेत उसकी ओर देर तक एकटक देखता रहा।

"यह तो पिघल गया," वह फुसफुसाया और उछलकर सागर से दूर भागने लगा।

वासंतिक पुष्पों के कारण क़ालीन से लगने वाले मुलायम टुंड्रा पर दौड़कर अलितेत अपने शरीर में गर्मी पैदा कर रहा था। एक

छोटा सा पोखरा देखते ही वह उसके पास औंधे मुंह लेट गया और कुत्ते की तरह लपालप पानी पीने लगा। यकायक उसे पानी के पंकिल दर्पण में एक भयानक, बालों वाली शक्ल दिखाई दी। वह उछलकर खड़ा हुआ और पोखरे से दूर हट गया। उसने पीछे मुड़कर भयाकुल दृष्टि से पोखरे की ओर देखा।

शीघ्र ही उसे चूहे का एक बिल मिल गया। उसने ढीली भुरभुरी मिट्टी हटा दी। और वहां का सारा अन्न भंडार अपने हाथों में ले लिया। अनाज का एक एक दाना और खाने लायक़ जड़-मूलों का एक एक टुकड़ा उसने उठा लिया। लेकिन यह उसने खाया नहीं। जंगली अम्लबेंत की दो पत्तियां तोड़कर उसने अपने मुंह में ठूंसीं और उन्हें चबाता हुआ किनारे पर फिर से आगे बढ़ने लगा।

लोगों की निगाहों से बचने की कोशिश करता हुआ वह एनमकाई की ओर जा रहा था। जिन लोगों की दूर ही से उसपर नज़र पड़ती वे उसे टेराक*–खानाबदोश जंगली आदमी – समझकर मारे डर के भाग जाते।

अलितेत क्षीणकाय हो गया था। चेहरा उसका सूख गया था और आंखें धंस गयी थीं। गालों की हड्डियां निकली हुई थीं और

---

*तट-प्रदेश में रहने वाले चुकचियों का टेराकों के अस्तित्व में गहरा विश्वास है। टेराक वे लोग होते हैं जिन्हें शिकार के समय बरफ़ के तूदे बहा ले जाते हैं। वे पागल बन जाते हैं, उनके शरीर बालों से ढंक जाते हैं और उनकी ज़बान जवाब दे जाती है, लेकिन उनमें बड़ी बड़ी तकलीफ़ें सहने की शक्ति आ जाती है। टेराक आदमियों से डरते हैं। कभी कभी वे चोरी चोरी बस्तियों में चले जाते हैं और मांस और कपड़ों की चोरी करके फिर हिमक्षेत्रों में भाग जाते हैं। (लेखक की टिप्पणी।)

दाढ़ी लम्बी और सफ़ेद हो गयी थी। अपने चिथड़ों में वह बड़ा भयंकर लग रहा था। वह बिना हाथों को झुलाये धीरे धीरे चल रहा था। बड़ी मुश्किल से उसके क़दम उठ रहे थे लेकिन वह रुका नहीं। जबतब वह अम्लबेंत की पत्तियां तोड़ने के लिए झुक जाता और फिर आगे बढ़ जाता। धूप तेज़ होने तक वह चलता ही रहा। फिर वह एक गड्ढे में उतर गया, वहां उगी हुई काई पर लेटा और गहरी नींद में डूब गया। सूरज आसमान का एक बड़ा चक्कर लगा चुका था, फिर भी अलितेत सोता ही रहा। फिर ठंढी बयार के स्पर्श से वह जाग पड़ा, उछलकर खड़ा हुआ, चूहे के अन्न में से कुछ चबाया और फिर किनारे पर आगे बढ़ा। रात भर वह चलता रहा।

तेज़ सूरज फिर चमक उठा। अलितेत किसी तरह एक टीले पर चढ़ गया। दूर से उसे एक बिदारका उसी की दिशा में आती हुई दीख पड़ी। वह सरपट दौड़ रही थी। किनारे किनारे दौड़ने वाला कुत्ता-दल उसे चमड़े के एक लम्बे पट्टे के सहारे खींचता जा रहा था। मल्लाह की बाहों की हरकतों से अलितेत ने पहचान किया कि यह वामचो है। आंखें सिकोड़कर उसने देखा कि बिदारका के अगले हिस्से में तीग्रेना बैठी है। अपने शिकार को ढूंढ़ने वाले भेड़िये की तरह अलितेत धीरे से नीचे झुका और जल्दी जल्दी टीले के नीचे उतरकर छिप गया।

जब कुत्ते उस छोटे से टीले के पास से गुज़रने लगे तब अलितेत छिपने की जगह से बाहर आया और बिदारका के मस्तूल में बंधा हुआ पट्टा उसने पकड़ लिया। वामचो स्तंभित खड़ा रहा। बिदारका में बैठे हुए लोग चीख पड़े। अलितेत भूत-पिशाच की तरह मानो ज़मीन में से निकल आया था।

कमज़ोरी और बेहद थकावट के कारण अलितेत कुत्तों को न रोक सका। वह गिर गया लेकिन उसने पट्टा नहीं छोड़ा। कुछ दूर

तक वह कंकरीले किनारे पर से घसिटता गया। आखिर कुत्ता-दल रुक गया।

"इधर आओ," अलितेत ने चिल्लाकर वामचो को पुकारा। कई दिन बाद यही पहले शब्द उसके मुंह से निकले।

वामचो टस से मस न हुआ।

"डरो मत। अरे, पिशाचों ने मेरी सहायता की और मैं इधर छूट आया..."

वामचो भयाकुल दृष्टि से अलितेत को ताकता रहा।

"इधर आओ, पागल आदमी!" कंकरीले किनारे पर कुत्तों के बीच बैठा हुआ अलितेत चिल्लाया।

वामचो का चेहरा फक पड़ गया और हाथ कांपने लगे। यंत्रवत् वह आगे बढ़ा।

"डरो नहीं। मैं भूखा हूं। मैं जल्दी घर पहुंचना चाहता हूं। बिदारका किनारे लगाओ।"

ऐंठे हुए हाथों से वामचो ने पट्टा पकड़ लिया। उसे यह न महसूस हुआ कि अपने हाथ हिल भी रहे हैं।

अलितेत नाव में लुढ़क सा पड़ा और उसकी मुलायम पेंदी में गिर गया। वहां पसरकर वह आकाश ताकने लगा।

तीग्रेना ने मुंह फेर लेना चाहा लेकिन वह ऐसा कर न सकी। उसने कुछ कहना चाहा लेकिन ज़बान उसकी जवाब दे गयी। नाव के अगले हिस्से से वह कुछ फिसल सी गयी। डर ने उसे इस तरह दबा लिया कि आयवाम उसके हाथ से छूटकर गिर गया। तीग्रेना ने अपना होंठ इस तरह काटा कि उससे खून निकल आया। फिर बच्चे को उठाकर उसने छाती से लगा लिया।

"कुत्तों को पीछे घुमा दो!" अलितेत चिल्लाया।

कुत्ते जिस राह से आये थे उसी राह पीछे दौड़ने लगे। पतवार पर बैठा हुआ आदमी इतना डर गया था कि उसे इस बात की

सुधबुध ही न रही कि पतवार की रस्सी किस ग्रोर बांधे। बिदारका ग्रब छिछले पानी में सर्पिल गति से चलने लगी, किन्तु दूसरे ही क्षण ज़ोर की ग्रावाज़ के साथ समुद्र में पलटती सी दिखाई दी। ग्राख़िर वह किनारे लग गयी।

ग्रलितेत नें ग्रपने चेहरे पर का पानी हटा लिया, ग्रौंधा हुग्रा ग्रौर हाथ-पैरों के सहारे रेंगता हुग्रा जहाज़ के पिछले हिस्से में चला गया। उसने पतवार वाले को ग्रपनी जगह से हटा दिया ग्रौर पतवार की रस्सी पकड़ ली। वह न हिला, न डुला। चुपचाप बैठा रहा। उसकी धंसी हुई ग्रांखें काली ग्रौर गूढ़ सी लग रही थीं। बिदारका में बैठे हुए लोग उसकी ग्रोर देखने में डर रहे थे लेकिन फिर भी उनकी ग्रांखें उसकी ग्रोर खिंच ही जाती थीं। उन्हें ग्राश्चर्य हुग्रा कि वे ग्रभी ज़िंदा कैसे हैं, मारे डर के मर कैसे न गये?

घर की दिशा में कुत्ते ग्रौर तेज़ी से दौड़ रहे थे। वे हमेशा ही ऐसा करते थे। वामचो उनके पीछे बेतहाशा दौड़ रहा था, मानो हवा के पंखों पर सवार हो। बिदारका में किसी ने चूं तक न की।

तीग्रेना ने, जो बच्चे को सीने से चिपकाये थी, सीधे ग्रलितेत के चेहरे पर ग्रपनी ग्रांखें गड़ायीं। दोनों की नज़रें टकरा गयीं। साहस बटोरकर उसने ज़ोर से पूछा। ज़ोरदार ग्रावाज़ ने उसका साहस बढ़ाने में मदद की।

"कौन हो तुम? टेराक?"

ग्रलितेत बड़े विचित्र ढंग से मुस्कराया लेकिन फ़ौरन उसकी मुस्कराहट उसके ऐंठे हुए होंठों पर से हट गयी। उसकी भूरी दाढ़ी थरथरायी।

"तुम भूल गयीं मैं कौन हूं? तुमने सोचा कि मैं मर गया, है न?"

"लोग यही कहते थे," तीग्रेना ने इस समय शान्ति से उत्तर दिया।

"नहीं। मैं मरा नहीं। यह मैं ही हूं। भूख के पिशाचों से मैं कई दिन लड़ता रहा। मेरे सामने उन्हें हथियार डालने पड़े... अरे, मुझे ज़रा पानी तो पिलाओ!"

पानी के पीपे के पास बैठे हुए शिकारी ने जल्दी से एक मग भरकर थरथराते हुए हाथों से उसकी ओर बढ़ाया।

अलितेत ने एक ही घूंट में पूरा मग ख़ाली कर दिया।

"और दो!" हाथ बढ़ाकर अलितेत ने कहा।

दूसरा मग ख़ाली कर देने के बाद उसने अपने चेहरे पर हाथ फेरा और कहा:

"आसपास कहीं खाने की चीज़ का एक टुकड़ा भी न था। हिमक्षेत्र पर मुझे एक बार सिर्फ़ एक सील दिखाई दिया। तेज़ हवा का सामना करते हुए मैं उसके पास रेंगता हुआ गया और उसे सुफ़ेन से पकड़ लिया लेकिन वह मेरे हाथ से छूट निकला और समुंदर में गिर पड़ा। आख़िर मेरे कपड़ों ने ही मुझे खाने का काम दिया।"

अलितेत की गरजती आवाज़ नाव में बैठे हुए लोगों के कानों से टकरा रही थी। तीग्रेना की तो घिग्घी बंध गयी थी। वह बेहोश होकर एकदम गिर पड़ी। बच्चा उसके नीचे दब गया।

तीग्रेना जब होश में आ गयी उस समय बिदारका बहुत आगे निकल चुकी थी। बच्चे को अपने पास न देखकर उसे कंपकंपी आ भर गयी। उसने सोचा कि समुंदर के पिशाचों को अलितेत ने बच्चे की बलि चढ़ा दी। उसने घबड़ाकर इधर उधर देखा तो उसे बच्चा नज़र आया। वह रेंगता हुआ एक ओर खिसक गया था। उसने उसे उठा लिया और अलितेत को घृणा की दृष्टि से देखने लगी।

अलितेत नाव में पीछे की ओर बैठा था। उसकी शकल-सूरत पहले जैसी ही डरावनी थी। वह चुपचाप, नाक की सीध में एकटक देख रहा था। ऐसा लग रहा था मानो निर्जीव हो। तीग्रेना ने अपनी

उंगलियों के बीच की छोटी सी फटन में से उसे अच्छी तरह देखा। उसे मालूम था कि अब अलितेत पिशाचों को धन्यवाद देने के लिए कोई बलिदान समारोह मनायेगा—और न जाने क्यों, उसे दढ़ियल रूसी सरदार की याद आ गयी। उसके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कराहट दौड़ गयी। उसके दुःखित हृदय में यह विचार आया कि "अलितेत अगर आयवाम ही की बलि चढ़ाने की सोचे तो क्या किया जाये? उसने नारगिनाउत के बच्चों को इसी तरह तो मरवा डाला था!"

सभी लोगों ने सोचा कि 'आयवाम' नाम 'अलितेत' और 'वाम' —'बड़ा झरना'—शब्दों से बनाया गया है। किसी ने भी नहीं सोचा कि इसमें तीग्रेना की चालबाज़ी है। वह चाहती थी कि बच्चा आये से पैदा हो लेकिन वह पैदा हुआ था वामचो से। इसलिए तीग्रेना ने उसके नाम का पूर्वार्ध आये से लिया और उत्तरार्ध वामचो से—आय-वाम।

अलितेत की वामचो और आये से बिल्कुल न पटती थी। तीग्रेना डर रही थी कि अलितेत को कहीं नाम का रहस्य न मालूम हो जाये। यदि वह जान जाये तो आयवाम की बलि चढ़ाये बिना न रहेगा।

एनमकाई की बस्ती दिखाई देने लगी।

अलितेत ने पतवार की रस्सी छोड़ दी और नाव के पिछले हिस्से में खड़ा हो गया। उसके चेहरे पर भय दौड़ गया। उसके धंसे हुए गाल थरथराये। भयाकुल दृष्टि से वह बस्ती की दिशा में टकटकी लगाये रहा।

यारंगों के बीच एक लम्बा सा लकड़ी का मकान खड़ा था जिसका चद्दरदार छप्पर धूप में जगमगा रहा था। खिड़कियों के रोशनदान सूरज की किरणों के लिए शीशे का काम दे रहे थे।

नाव में बैठे हुए लोग मौन प्रश्नवाचक मुद्रा से एक दूसरे की ओर देखते रहे। उनकी नज़रें जैसे कह रही थीं: क्या हर कोई इसे देख रहा है?

पिशाच अभी तक उनपर सवार थे।

"यह लकड़ी का यारंग यहां कैसे आया?" उस मकान की ओर भयग्रस्त दृष्टि से देखते हुए अलितेत ने दबी आवाज़ में पूछा।

अलितेत की भयग्रस्तता और बस्ती में बने लकड़ी के नये यारंग को देखकर तीग्रेना की हृदय कलिका खिल पड़ी। और फिर न जाने क्यों उसे दढ़ियल रूसी सरदार का स्मरण हो आया।

"कहो, तुम चुप क्यों हो?" अलितेत चिल्लाया।

"हमें बस्ती छोड़े छः दिन हो गये, लेकिन जब हम रवाना हुए थे उस समय सब कुछ पहले जैसा ही तो था," उत्कट भावुकता भरे स्वर में तीग्रेना ने कहा। "किसी को मालूम नहीं यह लकड़ी का यारंग आया कहां से?"

कुत्ते पूरी रफ़्तार से बस्ती की ओर दौड़े। उनका गाड़ीवान वामचो बहुत ही पीछे छूट गया। बिदारका के पीछे फेनिल तरंगें लहरा उठीं।

नये मकान की बरसाती की सीढ़ियों पर एक लम्बा नौजवान खड़ा था जिसके चेहरे पर चेचक के हल्के से दाग़ थे। वह रूसी कपड़े पहने था। नज़दीक आने वाली बिदारका को देखता हुआ वह पाइप के कश लगा रहा था। शुद्ध और स्वच्छ हवा में तंबाकू के धूम्र-वलय तैर से रहे थे। यह व्यक्ति था स्कूल मास्टर द्वोरकिन।

छठा अध्याय

दिन-प्रति-दिन सूर्य के दर्शन अधिकाधिक दुर्लभ होने लगे। वह अक्सर कुहरे में या सफ़ेद और सर्द बादलों के धुंध में ढंका रहता।

दिन बहुत ही छोटे हो गये। शीघ्र ही शिशिर का आगमन हुआ। सितंबर के अंतिम दिन थे और अभी से सारी भूमि हिमाच्छादित हो चुकी थी। क्रान्ति-समिति के नवागंतुक कर्मचारियों में

से किसी ने भी शिशिर का इतना शीघ्र आगमन न देखा था। क्षितिज को ढक देने वाले सफ़ेद पर्दे की ओर ताकते ताकते उन्हें घर पर बैठ रहन की व्याधि ने घेर लिया। लेकिन कुछ भी हो, उत्तर के असीम बिस्तार ने उन्हें मुग्ध कर दिया। इसके अलावा लोस सदैव इसके प्रति जागरूक बना रहा कि कोई ऊब न जाये।

नये मकान में क्रान्ति-समिति के लोग हर रोज़ चुकची भाषा का अध्ययन करने लगे। क्रान्ति-समिति का कार्यालय मानवजाति-शास्त्र की एक फ़ेकल्टी सा बन गया जिसके अध्यक्ष और प्राध्यापक रहे लोस महाशय।

अब तट-प्रदेश में तीन स्कूल क़ायम हुए, रेड क्रॉस सेवा ने अपना काम शुरू कर दिया और सोवियत फ़र व्यापार-केन्द्र स्थानीय जनता से लेन-देन करने लगे। क़बीला सोवियतें भी कार्यशील बनीं। प्रदेश के सारे हिस्सों से क्रान्ति-समिति के कार्यालय में शिकारियों के हाथ चिट्ठियां आने लगीं। क़बीला सोवियतों के अध्यक्ष 'जीवित शब्द' के लिए समिति में आने लगे।

"यह है कार्यशीलता का प्रभाव!" अपनी डाक पढ़ते हुए लोस ने ख़ुश होकर सोचा। व्यापार-केन्द्र व्यवस्थापक रुसाकोव के पत्र में उसने ख़ास दिलचस्पी दिखायी। मुड़ा-मरोड़ा वह पत्र उसने डेस्क पर फैला दिया और बग़ल वाले कमरे में बैठे हुए अपने सेक्रेटरी से कहा:

"सुनो पेत्या, ओसिपोव से कह दो कि मैं उससे मिलना चाहता हूं।"

क्रान्ति-समिति के प्रशिक्षक की प्रतीक्षा करते हुए लोस अपने कार्यालय में चहलक़दमी करता रहा। यह एक काफ़ी बड़ा और साफ़-सुथरा कमरा था और उसे देखकर लोस मन ही मन मुस्करा रहा था। दीवार पर सोवियत संघ और चुकोत्स्क प्रायद्वीप के नक़्शे टंगे थे। चुकोत्स्क के नक़्शे पर सारी बस्तियां दिखायी गयी थीं। यह नक़्शा

खुद लोस ही के हाथ की कारीगरी थी। लिखने की डेस्क के ऊपर लेनिन का पोर्ट्रेट टंगा था। सामने वाली दीवार पर लेव तोलस्तोय का एक छोटा सा चित्र लगा था जो किसी किताब में से निकाला हुआ था।

ओसिपोव अन्दर आ गया।

"देखो, यह है रुसाकोव की चिट्ठी। बड़ी रोचक है," लोस ने कहा। "सचमुच वहां की स्थिति की मैं कल्पना कर सकता हूं। बात यह है कि एक दर्रे के कारण बंटी हुई उस बस्ती में दो अलग अलग गुट्ट हैं। एक ओर वे लोग रहते हैं जो हमारा विश्वास नहीं करते और दूसरी ओर वे जो स्पष्टतया हमसे सहानुभूति रखते हैं। हां, दर्रे के इस ओर वाली बस्ती में रुसाकोव ने मच्छीमारी और शिकार आर्टेल शुरू किया है। उसने लिखा है कि यदि हम उन्हें मोटरचलित व्हेल-नाव दे दें तो शायद दूसरी ओर के लोग भी आर्टेल में शामिल होंगे।"

"तो जरूर उन्हें व्हेल-नाव देनी चाहिए," ओसिपोव ने कहा।

"हां, ठीक तो है... लेकिन बात इतनी आसान नहीं। शिकारियों के दूसरे गुट्ट का अपना एक मुखिया है जो अमरीकी द्वीप के एस्किमो बाशिंदों का रिश्तेदार है। यह काना बड़ा ही हृष्ट-पुष्ट है और सब से अच्छा शिकारी। वे उसे 'ऊपर से देखने वाला आदमी' कहते हैं। बूढ़ा है बड़ा खुर्राट। उस ओर के लोगों को उसने अपनी मुट्ठी में कर लिया है। उसके अधिकार को कोई चुनौती नहीं दे सकता। उसका हृदय परिवर्तन करना इतना आसान नहीं। लेकिन यह हमें करना जरूर चाहिए। अलितेत के लिए वह सहारे का काम दे रहा है।"

"मैं वहां जाकर रुसाकोव की सहायता करूंगा," ओसिपोव ने कहा।

"वहां के बाशिंदों पर प्रभाव डालने में? बड़ा मुश्किल है। अन्द्रेई ने और मैंने पूरे साल भर कोशिश की और इसी बीच

अमरीकी माल ला लाकर अपना प्रभाव डालने लगे। यह सही है कि हम हमेशा ही असफल न रहे; लेकिन अब अपने कार्य द्वारा उन्हें प्रभावित करने का हर अवसर हमें प्राप्त है। हम अपना काम बसंत में शिकार का मौसम शुरू होने के पहले आरंभ करेंगे। उस समय हमारे आर्टेल की व्हेल-नाव शिकार के लिए रवाना होगी। लेकिन इस समय बूढ़े के पीछे पड़ने में कोई फ़ायदा न होगा बल्कि मामला बिगड़ ही जायेगा। उसपर असर डालने के लिए सचमुच कुछ करके दिखाना होगा। हम बसंत तक प्रतीक्षा करेंगे। इस बीच मैं तुम्हें दो महीने की छुट्टी दे रहा हूं।"

ओसिपोव ठठ्ठा मारकर हंस पड़ा।

"छुट्टी?"

"हां, यहां की भाषा की पढ़ाई के लिए। मैं चाहता हूं कि तुम दो महीने के अंदर अंदर अच्छी तरह बोलने लगो।"

"मैं नहीं समझता कि यह दो महीने में हो सकता है।"

"तुम्हें करना ही चाहिए। तुम्हें मन में निश्चय करना चाहिए कि मैं यह करके दिखाऊंगा।"

"मैं कोशिश करूंगा।"

"कोशिश के लिए हमारे पास वक़्त नहीं है। तुम्हें यह करना ही चाहिए, बस। वरना यहां काम करना ही असंभव है।"

"ठीक है," ओसिपोव ने कहा, लेकिन उसे पूरा इतमीनान न था।

इसी समय बूढ़ा इल्यीच अंदर आया। लोस ने चुकची भाषा में उसका अभिवादन किया और उसके लिए कुर्सी बढ़ा दी। बूढ़ा बैठा लेकिन फ़ौरन कुर्सी से हट गया और फ़र्श पर पलथी मारकर जम गया।

"लोस," बूढ़े ने रोब के साथ कहा, "सुनो, ख़बर आयी है। उधर दूर उत्तर में अंतरीप के पास बरफ़ में स्टीमर खड़ा है।

ग्रौर धुएं का कोई निशान नहीं। जाड़े भर के लिए वह ठप्प हो गया है।"

जाड़े भर 'सोवियत' के बरफ़ में ग्रटके रहने की ख़बर सुनते ही लोस इतना घबड़ा उठा कि उसने फ़ौरन ग्रपनी पाइप निकालकर जल्दी जल्दी सुलगायी। मानो स्टीमर के बारे में कुछ तफ़सील से पूछने में डरते हुए उसने एक ज़ोरदार कश लगाया ग्रौर कहा:

"ग्रौर कोई ख़बर?"

"नहीं, ग्रौर कोई नहीं।"

"तुम्हारा बेटा एरमेन एक मास्टर को ले गया था, उसके बारे में तुमने कुछ नहीं सुना?"

"नहीं, कुछ भी नहीं।"

"ग्रौर उस मिलीशिया वाले के बारे में?"

"जी नहीं।"

लोस के चेहरे पर चिंता के बादल छा गये।

"बुरा समाचार है!" उसने ग्रोसिपोव से कहा।

"क्यों, क्या बात है?" ग्रोसिपोव ने पूछा।

"'सोवियत' जहाज़ बरफ़ में फंस गया है। फिर दस महीने वह बेकार पड़ा रहेगा। यह बड़ी ही बाधा उठ खड़ी हुई है," ग्राह भरते हुए लोस ने कहा। "फ़िलहाल सुदूर पूर्व के व्यापारी जहाज़ी बेड़े में थोड़े से जहाज़ हैं ग्रौर उनमें से एक को मैंने, यानी क्रांति-समिति के एक प्रतिनिधि ने, एनमकाई बस्ती के एक छोटे से स्कूल की ख़ातिर बरफ़ में फंसा दिया! क्या यह ठीक था?" लोस ने कुछ सोचते हुए कहा।

"कहना मुश्किल है, निकीता सेर्गेयेविच।"

"नहीं, कुछ मुश्किल नहीं। मैंने ठीक ही किया। ऐसे मामलों में हम बोल्शेविक व्यापारी दृष्टिकोण से नहीं देख सकते। यह तो हमारी

राष्ट्र-नीति का सार है... अच्छा इल्यीच, ख़बर के लिए धन्यवाद। अगर कोई और ख़बर लगे तो मुझे बता देना। ठहरो, जाने से पहले ज़रा पाइप का मज़ा तो लो।"

कुछ भी हो, स्टीमर के विचार ने लोस को चिंताग्रस्त कर दिया। लोस यह अभी तक निश्चय ही न कर पाया कि उसने जो कुछ किया यह ठीक था या नहीं। परेशानी की दूसरी बात यह थी कि रेडियो-स्टेशन भी चुप था। उसने अपना परका ओढ़ा और रेडियो-आपरेटर के पास चला गया।

मोलोत्सोव की शर्मीली मुस्कराहट से वह समझ गया कि स्टेशन अभी तक निष्क्रिय है।

लोस चुप न रह सका। "तुम्हारा वह रोबदार नाम* एक बड़ी भारी भूल है!" उसने चुभता हुआ ताना कसा।

"निकीता सेर्गेयेविच, बस मैं भी अपने आपको कोस रहा हूं। मेरा कलेजा जल रहा है। जी करता है, गले में फांसी लगा लूं। क्या करूं, किसी भी तरह स्टेशन चालू कर ही नहीं पा रहा हूं।" मोलोत्सोव की आंखों में आंसू उमड़ आये।

"लेकिन मेरे दोस्त, तुम इधर आये ही क्यों? तुम मुझे दुनिया के संपर्क से वंचित रख रहे हो। ओह, यह बड़ा ही दर्दनाक है! तुमने पहले कभी यह काम किया था?"

मोलोत्सोव सिर लटकाये चुप बैठा रहा। अपने अपराध से वह शर्मिंदा हो गया था लेकिन उस रेडियो ठीक करने के लिए वह जितनी ज्यादा कोशिश कर रहा था उतना ही अधिक उलझता जा रहा था।

---

*रूसी शब्द 'मोलोदेत्स' से बना हुआ नाम, जिसका मतलब है शूर या होशियार व्यक्ति।

"पेत्रोपावलोव्स्क में मेरा काम का रेकार्ड अच्छा था—रेडियो संकेत पाने का भी, और भेजने का भी," उसने सफ़ाई देना शुरू किया। "इसी लिए तो मुझे यहां भेज दिया गया। लेकिन लगता है कि रेडियो इंजीनियरिंग में मैं कमज़ोर हूं।"

"किस गधे ने तुम्हें यहां भेज दिया? तुम जानते ही हो कि यहां हमारी मदद के लिए अड़ोस-पड़ोस में कोई आपरेटर नहीं है। और अब हमें गिलहरी की तरह अपने सूराख में बैठना पड़ रहा है। अब मुझे साफ़ साफ़ बताओ कि तुम स्टेशन चालू कर सकोगे कि नहीं?"

"मुझे मालूम नहीं, निकीता सेर्गेयेविच।"

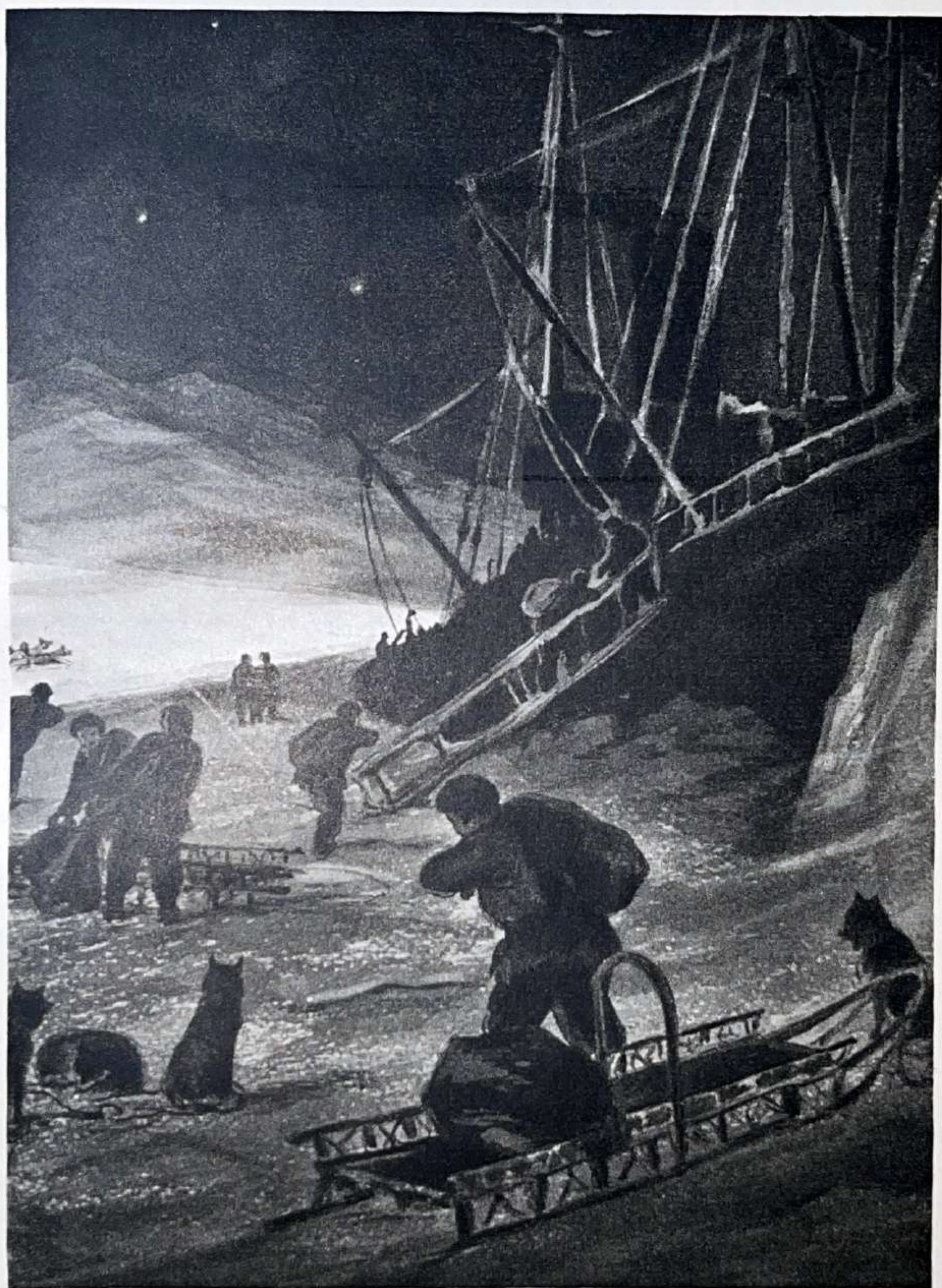
लोस ने नफ़रत से अपना हाथ हिलाया और बिना एक भी अधिक शब्द बोले हुए वह स्टेशन से चल दिया। "अच्छा होता यदि हमारे पास रेडियो होता ही नहीं," उसने सोचा। "मन को शांति तो मिलती।"

सातवां अध्याय

दूसरे क्षेत्रों से आये हुए पंछी चुकोत्स्क क्षेत्र छोड़ चले गये थे। केवल उन्हीं पंछियों के झुंड दक्षिण की ओर उड़ते हुए दिखाई दे रहे थे जो उस क्षेत्र से वक़्त पर निकल न पाये थे। सारा समुद्र-तट हिमक्षेत्रों से ढका था। ये क्षेत्र क्षितिज के उस पार तक फैले हुए थे। इस प्रदेश का स्वामी शिशिर आ चुका था।

शांत प्रभात का समय। कहीं एक कुत्ता गुर्रा रहा था।

उधर हिमक्षेत्रों में धरती और सागर की बरफ़ सी सफ़ेद चादर की पृष्ठभूमि पर यकायक एक धूम्र-रेखा उठी जो आकाश का स्पर्श करती हुई दिखाई दी। उसी क्षण बस्ती के सारे बाशिंदे आतुर हो उठे। लोग जल्दी जल्दी किनारे की ओर दौड़ने लगे।



लोस एक दूरबीन लेकर मकान के छप्पर पर चढ़ गया। उसने देखा कि एक स्टीमर बड़ी मुश्किल से हिमक्षेत्रों के बीच से खुले पानी की ओर बढ़ रहा है। कभी कभी वह पीछे जाता है और फिर पूरे ज़ोर से आगे बढ़ता है। उसका सारा ढांचा बरफ़ से टकराता है और बरफ़ फटकर चूर चूर हो जाती है। बरफ़ में लंगर अड़ाकर उसने हिमखंडों को अलग किया लेकिन वे फिर आ मिले।

क्रांति-समिति के मकान के इर्दगिर्द ख़ासी भीड़ लग गयी। हर कोई हिमाच्छादित सागर की ओर कुतूहल भरी दृष्टि से देख रहा था।

"अरे यह तो बरफ़-तोड़ जहाज़ है!" छप्पर पर से लोस यकायक चिल्लाया।

जहाज़ बरफ़ में से निकल आया और सागर के खुले पानी वाले पट्टे से होता हुआ बस्ती की ओर तेज़ी से बढ़ने लगा।

लोस ने जहाज़ का नाम पहचान लिया।

"ओहो! 'क्रास्नी ओक्त्याब्र!'" वह गरज उठा। "पहले का 'नदेज्नी' जहाज़।"

'क्रास्नी ओक्त्याब्र' ने देर तक ज़ोर से भोंपा बजाया जिसकी आवाज़ पहाड़ियों में गूंज उठी।

लोस जल्दी जल्दी छप्पर से उतरा कुत्ता-गाड़ी जोती और एरमेन को लेकर स्टीमर की ओर दौड़ा दी। टीलों के बीच बरफ़-गाड़ी उछलती-कूदती आगे बढ़ती रही।

... चुकोत्स्क तट से दूर उत्तरी ध्रुव सागर के शून्य प्रदेश में छिपा हुआ व्रांगेल द्वीप रूसी जहाज़ियों ने ही खोजा था। इस द्वीप ने ब्रिटिश डाकुओं का ध्यान आकृष्ट किया था। उस समय सुदूर पूर्व में जो स्थिति थी उससे फ़ायदा उठाकर उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय क़ानून तोड़कर इस टापू पर अधिकार करने की कोशिश की। वेल्स नामक एक आदमी अपने एक दल के साथ यहां उतरा था।

सरकारी हिदायतों के अनुसार जलगति-वैज्ञानिक दवीदोव के अभियान-दल ने इस विदेशी दल को उक्त टापू पर से हटा दिया और वहां सोवियत झंडा गाड़ दिया।

'क्रास्नी ओक्त्याब्र' अब व्रांगेल द्वीप से वापस घर जा रहा था और उसका सारा कोयला बरफ़ का मुक़ाबला करने में ख़तम हो गया था। जहाज़ के सारे लकड़ों वाले हिस्से, पाल, रस्से, भोजन-भंडार में रखा हुआ आटा और चीनी – ग़र्ज़ यह कि जलने वाली हर चीज़ भट्ठियों में स्वाहा हो चुकी थी। सारे जहाज़ी बड़े कष्ट में थे।

लोस जहाज़ के पास पहुंचा और चौकीदार उसे फ़ौरन अभियान के प्रधान के पास ले गया।

अभियान के प्रधान विख्यात जलगति-वैज्ञानिक प्रोफ़ेसर दवीदोव लोस से मिले। उन्होंने उससे हाथ मिलाया और रुखाई के साथ अभियान के कमिसार दोम्निकोव से उसका परिचय करा दिया। उन दोनों के चेहरों पर गहरी चिंता छा गयी थी। सारे जहाज़ियों की ज़िंदगी की ज़िम्मेदारी इन्हीं दोनों पर थी। जहाज़ी दल में एक सौ बीस जहाज़ी थे। उन्होंने लोस को अपने अभियान का उद्देश्य संक्षेप में बताया और अपनी मुसीबतें कह डालीं।

लोहे की आराम-कुर्सी पर बैठे हुए – लोस ने केबिन पर नज़र दौड़ायी। दीवारों का रंग उड़ गया था और सब जगह ज़ंग चढ़ा लोहा नज़र आ रहा था।

"किस अधिकार से ये अंग्रेज़ हमारे टापू पर उतरे?" उसने पूछा।

"इस कहावत के आधार पर कि जो हथिया सको हथिया लो। लेकिन उनका अंदाज़ कुछ ग़लत रहा। अरे, उस वेल्स की तो घिग्घी बंध गयी," कमिसार ने हंसते हुए कहा। "जब हम द्वीप के समीप दिखाई दिये तो वह एक डोंगी में बैठा हुआ बड़े जोश के साथ हमारे पास आ पहुंचा। साफ़ था कि वह हमारे जहाज़ को अंग्रेज़ी जहाज़

समझ बैठा था। लेकिन जैसे ही उसने जहाज़ पर लाल झंडा देखा कि डोंगी घुमाकर वापस जाने लगा। फिर तोप के दो एक गोले दाग़कर हमने उसकी डोंगी रोक ली। उसकी लागबुक का हमारे हाथ आना बड़ी ही अहम बात थी।"

"जब हम उसे अपने जहाज़ पर ले आये उस समय उसे कंपकंपी आ गयी थी मानो जूड़ी का दौरा पड़ गया हो। उसने सोचा कि ये बोल्शेविक मुझे परलोक भेज देंगे। अब उसे कुछ तसल्ली हुई है – अब तो वह पंछी की तरह मस्त है और रूसी वोदका की तारीफ़ों के पुल बांधता है," अभियान के प्रधान ने कहा।

"मैं आपको दिखा दूंगा कि ये वेल्स महाशय हैं कैसे," कमिसार ने लोस से कहा।

"मैं उससे बिलकुल नहीं मिलना चाहता! यहां मैंने कई अमरीकी देखे हैं। वेल्स दर्शन कराने के बदले आप मुझे बस यह बता दें कि 'सोवियत' जहाज़ कहां फंस गया? क्या आप उससे संपर्क रखे हुए हैं?"

"मतलब? 'सोवियत' जहाज़ तो अब व्लादिवोस्तोक पहुंच रहा है।"

लोस को आश्चर्य हुआ। "क्या कहा? यहां तो अफ़वाह उड़ी थी कि वह 'उत्तरी' अंतरीप के पास बरफ़ में फंस गया है।"

"वह तो हम लोग थे। हमने अपने बायलर बुझा दिये और वहीं पूरा जाड़ा बिताने की तैयारी भी कर ली। लेकिन इतने में हमें खुले पानी की एक पट्टी सी दिखाई दी और हमने उसके बीच से निकल जाने का ख़तरा मोल लेने का निर्णय किया," कमिसार ने बात स्पष्ट की।

"लेकिन अब तो हम बड़ी आफ़त में फंस गये हैं," अभियान के प्रधान ने उदास होकर कहा। "हमने कोयले के आख़िरी टुकड़े तक का उपयोग कर लिया है और जहाज़ की हालत तो आप देख

ही रहे हैं। बस उसका कंकाल मात्र बचा है।" उसने आह भरकर आगे कहा: "हम 'प्रोविदेनिये' कोयला स्टेशन तक पहुंच न सके। हमें बहुत ज़्यादा कोयले की ज़रूरत नहीं है। इस समय हम बरफ़ के साथ बहते जा सकते हैं लेकिन शीतकालीन पड़ाव के लिए हमारे पास ज़रूरी माल नहीं है। हमें यह डर है कि कहीं हमें जहाज़ को छोड़कर किनारे का सहारा न लेना पड़े। और हम लोग पूरे एक सौ बीस हैं!"

अभियान के प्रधान की बातें लोस बड़े ग़ौर से सुन रहा था। इसी बीच उसने सोचा कि "मेरे पास एक सौ पचास टन कोयला है। क्या मैं यह उन्हें दे दूं? नहीं, यह असंभव है। ऐसा करने का मतलब है क्रांति-समिति की गतिविधियों को समेट लेना। हां, लेकिन अन्द्रेई ने और मैंने यहां सारा शीतकाल बिना कोयले के ही तो बिताया है; और फिर भी काम चलता ही रहा न? हम तो अपने नये मकान में ताला जड़कर यारंगों में रह सकते हैं।"

कमिसार दोम्निकोव बोला:

"जहाज़ पर ऐसी कोई चीज़ नहीं बची जो ईंधन के काम में आये लेकिन फिर भी हम जहाज़ नहीं छोड़ सकते।"

लोस ने अपने छोटे कोट का कालर बटन खोलते हुए रुखाई से कहा:

"मैं मानता हूं कि मुझे आपकी सहायता करनी होगी।"

"तुम किस तरह सहायता कर सकोगे?" अभियान के प्रधान ने कुछ उलझन भरे से स्वर में पूछा।

"मेरे पास है एक सौ पचास टन..."

"क्या! कोयला!" दवीदोव और कमिसार एक साथ चिल्ला उठे।

"हां, कोयला।"

"चीफ़ इंजीनियर को फ़ौरन बुलाओ," खुशी से गद्गद होकर दवीदोव ने ड्यूटी पर तैनात आदमी से कहा। फिर लोस की ओर मुड़कर उसने पूछा: "लेकिन यह कोयला तो मकान को गरम रखने और खाना पकाने के लिए होगा न? बिना इसके आप जाड़े के दिन कैसे गुज़ार सकेंगे?"

"साथी प्रधान, आप हमारी चिंता न करें। हम सब कुछ ठीक कर लेंगे," लोस ने निश्चयात्मक स्वर में कहा।

इसी समय चीफ़ इंजीनियर आ पहुंचा।

"कोयला स्टेशन पहुंचने के लिए हमें कितने कोयले की ज़रूरत है जी?" प्रधान ने पूछा।

इंजीनियर ने मन ही मन हिसाब कर लिया और खिन्नता के स्वर में कहा:

"लगभग दो सौ टन।"

"हमें एक सौ टन मिल सकता है।"

"नहीं, एक सौ पचास टन," लोस ने फ़ौरन भूल सुधार ली।

"नहीं भई, नहीं!" दवीदोव ने अपना हाथ उठाकर और ज़ोर देकर कहा। "फिर आप लोग अपना खाना कैसे पकायेंगे?" इंजीनियर की ओर मुड़कर उसने कहा: "तो फिर साथी इंजीनियर, देखो हमारे पास एक सौ टन है।"

"शायद काम चल सकता है," चीफ़ इंजीनियर ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

यह खुशी की ख़बर एक क्षण में सारे जहाज़ पर फैल गयी। अकार्डियन के स्वर गूंज उठे और डेक पर एक जहाज़ी ने जोशभरा गोपाक* नृत्य नाचना शुरू किया।

---

* एक उक्रइनी लोक नृत्य।

"तुम्हारा नाम और पितृनाम क्या है?" अभियान के प्रधान ने लोस से पूछा।

"निकीता सेर्गेयेविच।"

"निकीता सेर्गेयेविच, हम कैसे तुम्हारा शुक्रिया अदा करें?"

"साथी प्रधान, इसकी कोई ज़रूरत नहीं। हां, हम आपको एक तकलीफ़ देना चाहते हैं। हमारा रेडियो-स्टेशन बंद हो गया है। हो सकता है उसे चालू करने में आप लोग कुछ मदद दें। हमारा वह लड़का शायद कुछ न कर पायेगा।"

दवीदोव ने फ़र्स्ट मेट को बुला लिया और आदेश दिया:

"सुनो साथी फ़र्स्ट मेट, सारे जहाज़ियों को कोयला भंडार भरने के काम में लगाओ। रेडियो-आपरेटरों को इस फ़ौरी काम से छूट दो और उन सब को किनारे भेज दो। इसी क्षण। किनारे के रेडियो-स्टेशन की कुछ मरम्मत करनी है। कोयला ढो लाने के लिए हमारे पास कुछ बोरे बचे हैं?"

"जी हां।"

"ढोने की कोई ज़रूरत नहीं। कुत्ता-गाड़ियों पर लादकर हम बहुत जल्दी कोयला यहीं ले आयेंगे," लोस ने कहा। "मैं अभी किनारे जाऊंगा और आसपास की सभी बरफ़-गाड़ियां इकट्ठा करूंगा। हमें यह काम करते कोई देर न लगेगी।"

"वाह भई वाह! लेकिन हमें जल्दी करनी चाहिए। बरफ़ की हालत लगभग हर घंटे बदल रही है।"

रात हुई। जहाज़ ने सर्चलाइट जलायी और हिमाच्छादित सागर जगमगा उठा। रोशनी में जहाज़ियों की टुकड़ियां किनारे की ओर जाती हुई दिखाई दीं। किनारे पहुंचकर उन्होंने देखा कि कोयले के एक ढेर के पास कुत्ता-गाड़ियां खड़ी हैं।

जहाज़ियों ने झटपट बोरों में कोयला भरा और गाड़ीवानों ने बोरे अपनी बरफ़-गाड़ियों पर रख दिये। मध्यरात्रि के समय लोस पास-पड़ोस की बस्तियों से दर्जनों और बरफ़-गाड़ियां ले आया। सर्चलाइट की तेज़ रोशनी में बरफ़-गाड़ियां सारी रात किनारे से जहाज़ तक आती-जाती रहीं।

दिन भर के भारी परिश्रम और रात में सो न सकने के कारण थका हुआ लोस आख़िरी कुत्ता-गाड़ी पर जहाज़ के पास आ पहुंचा।

'क्रास्नी ओक्त्याब्र' के चोंगे ने घना, काला धुआं उगलना शुरू किया। इंजनों के शुरू होते ही जहाज़ थरथराने लगा। फिर वह आगे बढ़ने के लिए तैयार हुआ। भोंपे ने विदाई का संकेत दिया।

दवीदोव ने लोस से विदा ली। अपना हाथ उसके हाथ में थामे बड़ी ही गंभीर भावभरी आवाज़ में उसने कहा:

"निकीता सेर्गेयेविच, तुमने जहाज़ को बचाया है और सारे जहाज़ियों को भी! सारे जहाजियों की तरफ़ से हार्दिक धन्यवाद!"

लोस कुछ व्यग्रता से मुस्कराया। फिर वह नीचे बरफ़ पर उतर आया। 'क्रास्नी ओक्त्याब्र' चल पड़ा और खुले पानी में आगे बढ़ा।

टीलों के बीच उछलती हुई लोस की कुत्ता-गाड़ी को देखते हुए डेक के जहाज़ियों ने अपनी टोपियां हवा में हिलायीं। एकदम ऊपर खड़ा एक जहाज़ी तब तक टोपी हिलाता रहा जब तक कि वह कुहरे के बीच ओझल न हो गया।

आठवां अध्याय

लोस देर से जागा। उसने कंबल का किनारा उठाया और मुस्कराते हुए भट्ठी में कोयला झोंकने वाले की ओर देखा। लंगड़ा नालेक कमरे में लंगड़ाता हुआ और कहीं मालिक की नींद न टूट जाये इसलिए शोर न करता हुआ अपना काम कर रहा था। अपना

काम वह बड़ी लगन के साथ करता था। शिकार के लिए वह जा नहीं सकता था और यहां वह यकायक धनी सा बन गया था। अपने काम के लिए नालेक को काग़ज़ – रूबल – मिलते थे और वह आदमी के लिए ज़रूरी सारी चीज़ें व्यापार-केंद्र में ख़रीद सकता था – सच्चे शिकारी की तरह।

दरवाज़े पर दस्तक सुनाई दी। नालेक ने जल्दी जाकर धीरे से दरवाज़ा खोला और मौन संकेत करते हुए मुलाक़ाती को बताया कि लोस सोया हुआ है।

"कौन है?" लोस ने पूछा।

"मास्टर जी," नालेक फुसफुसाया।

"आओ स्कोरिकोव, अंदर चले आओ!" बिस्तर से उठते हुए लोस ने कहा। "कहो शिक्षा का मामला कैसा चल रहा है?"

"बहुत अच्छा, निकीता सेर्गेयेविच! स्कूल ज़ोरों से तरक़्क़ी कर रहा है। मैं तो प्रौढ़ निरक्षरों के लिए एक क्लास खोलना चाहता हूं। इसके लिए उम्मीदवार कभी से तैयार हैं। तुम्हारी क्या राय है?" खिड़की की पटिया पर बैठते हुए अध्यापक ने पूछा।

"वाह! बहुत ही अच्छा विचार है। स्कोरिकोव, आम तौर पर तुम्हें अपने स्कूल को एक आदर्श संस्था बनानी चाहिए। यह देश का केंद्रीय स्थान जो है!" पलक मारते हुए लोस ने कहा।

"मैं तो दिन-रात काम करने को तैयार हूं, निकीता सेर्गेयेविच।"

"अच्छी बात है!"

"अच्छी तो है, लेकिन उतनी अच्छी नहीं, निकीता सेर्गेयेविच। इस कोयले के सौदे को लेकर कुछ चखचख शुरू हो रही है।"

"कैसी चखचख?" बाल संवारते हुए लोस गुर्राया।

"आज सवेरे भोजन-शाला में कोई कह रहा था कि लोस को क्या तकलीफ़ है! वह तो सर्दी में रहने का आदी हो गया है!

इधर क्रांति-समिति का सेक्रेटरी पेत्या और हिसाबनवीस अपनी तरह से कोयले की समस्या हल करने में लगे हुए हैं।"

"समस्या हल करने का अधिकार उन्हें दिया किसने?" लोस ने तीखे स्वर में पूछा।

"उन्हें डर लग रहा है कि बचा हुआ कोयला तुम कहीं स्कूल को न दे डालो!"

लोस मुस्कराया और बोला:

"हां, उनका डर सही है। लेकिन स्कोरिकोव, तुम फ़िक्र न करना। स्कूल के लिए किसी भी हालत में कोयले की कमी नहीं पड़ेगी। विश्वास रखो।"

"मैं यही तो उनके दिमाग़ में ठूंसना चाहता था लेकिन मेरी कोशिश बेकार रही। उन्होंने ऐसा झगड़ा खड़ा कर दिया कि सारा मकान थर्रा उठा। इधर रसोईदारिन निलोव्ना ने उन्हें समझाने की कोशिश की।

अधेड़ उम्र की स्त्री निलोव्ना 'सोवियत' जहाज़ पर बर्तन मांजने वाली नौकरानी थी। लोस की प्रार्थना पर कप्तान ने यहां उसका तबादला कर दिया था। वह क्रांति-समिति की भोजन-शाला में रसोईदारिन का काम करती थी और हिरन और जंगली बत्तख़ों के मांस से बढ़िया रसोई तैयार करती थी। इस सुयोग्य स्त्री के पास हर काम के लिए समय था—रसोई वही तैयार करती थी, खाने की मेज़ वही लगाती थी और परोसने का काम भी वही करती थी।

जब क्रांति-समिति के कर्मचारी खाने पर आये तो लोस ने कहा:

"निलोव्ना, एक मिनट बैठो तो।" फिर बाक़ी लोगों की तरफ़ मुख़ातिब होते हुए उसने कहा, "साथियो, हमारी शुरुआत अच्छी नहीं हुई।"

"क्या आपको मेरी रसोई पसंद नहीं?" निलोव्ना ने अधीर होकर पूछा।

"नहीं निलोव्ना, यह बात नहीं। तुम बढ़िया खाना बनाती हो। बात यह है कि हमारे बीच कुछ असंतुष्ट लोग हैं। मैंने सुना है कि हमारी छोटी सी बिरादरी के कुछ सदस्यों ने हाथ-पैर हिलाना भी शुरू किया है। उन्हें अधिक चिंता है अपने नेता की देखभाल करने की। वे इस बात पर असंतोष प्रकट करते हैं कि मैंने दूसरों को कोयला दे डाला। अच्छा मैं सीधे सीधे और साफ़ साफ़ कह दूं। हिसाबनवीस प्रिगुनोव इस सब की जड़ है।" लोस ने उंगली से उसकी ओर इशारा किया। "इस तरह का बर्ताव एक सोवियत आदमी को शोभा नहीं देता। लानत है तुमपर साथी प्रिगुनोव! अरे बूढ़े इल्यीच तक ने मुझसे कहा कि 'लोस, तुमने ठीक ही किया। अपने पास का कुछ कोयला दूसरों को भी दे दिया। सच्चे शिकारी की तरह।'" लोस का चेहरा लाल हो गया और वह चिल्लाया, "और इधर तुमने कैसी बकवास शुरू कर दी! क्या तुम्हें यह डर लगने लगा कि तुम ठिठुर जाओगे? अरे तुम्हारी नसों में मछली का ख़ून तो नहीं बहता?" लंबी सांस खींचकर फिर लोस ने शांत स्वर में कहा: "डरो नहीं–तुम ठिठुर न जाओगे। अगर कोयला ख़तम हो जायेगा तो हम क्रांति-समिति के मकान में ताला जड़कर यारंगों में चले जायेंगे। इसका नतीजा अच्छा ही होगा। लोगों के लिए भी और हमारे लिए भी। बस। और सुनो, मैं नहीं चाहता कि यह सवाल किसी भी सूरत में फिर उठाया जाये। हमारे पास इससे भी ज़रूरी काम पड़े हैं। अच्छा निलोव्ना, खाना परोस दो!"

कमरे में गहरी शांति छा गयी। आवाज़ आ रही थी सिर्फ़ निलोव्ना की पदचाप की। वह रसोई में चली गयी। फिर किसी ने कुछ कहने की आज्ञा मांगी।

"हम न कुछ कहें-सुनेंगे और न बहस-मुबाहिसा ही करेंगे। बात साफ़ हो चुकी है और जो कुछ हुआ वह काफ़ी है," लोस ने निर्णायक स्वर में कहा। "इस कोरी बकवास से मुझे ज़्यादा फ़िक्र है अपने मिलीशियामैन की और अध्यापक द्वोरकिन की। इधर हमें उनकी कोई ख़बर न मिली। मैंने किनारे के उत्तरी हिस्से को जाने का निश्चय किया है। भूगर्भ-शास्त्री का भी कुछ समाचार नहीं मिला। शायद मैं आज ही रवाना हो जाऊंगा। मैं चाहता हूं कि आप लोग यहां के बाशिंदों के साथ घनिष्ठ संपर्क रखें। इससे भाषा सीखने में आपको मदद मिलेगी और यहां की जनता की आत्मा से आप परिचित हो सकेंगे। यह आत्मा बड़ी ऊंची है। मैं डेढ़-दो महीने में वापस आऊंगा और फिर आप सब को अलग अलग बस्तियों में भेज दूंगा। बसंत में हम अपना पहला सम्मेलन आयोजित करेंगे। हमारी कार्यसूची में दो प्रश्न रहेंगे—पहला, सोवियत सरकार की राष्ट्रीय नीति और क़बीला सोवियतों का कार्य और दूसरा, समुद्री शिकार का व्यापार। आप लोग भी इन बातों पर विचार कर लें। अगर मेरे लौट आने में देर लगी—तो ओसिपोव, तुम लोरेन चले जाना और देखना कि जोहोव किस तरह व्यापार कर रहा है। फ़र गोदाम के व्यवस्थापक के रूप में याराक की स्थिति को मज़बूत करने का हर प्रयत्न करना। जोहोव के पत्र से मुझे लगता है कि उसने पैर फैलाना शुरू कर दिया है और याराक से छुट्टी पाना चाहता है। जोहोव एक गड़बड़िया अधिकारी है और है बड़ा स्वार्थी। यह मेंढक अपने कुएं के बाहर की कोई चीज़ देख ही नहीं पाता। देखो ज़रूरत पड़े तो रेड क्रॉस और स्कूल की मदद करना। इस बात का भी ख़्याल रखना कि मेरी नर्स का काम कर रही है। और इस बात का सब से अधिक ध्यान रखना कि मेरी प्रसूति के लिए रेड क्रॉस अस्पताल ही में जाये और उस ओझा की बात न माने। समझे न!

डाक्टर और याराक के साथ बात करना। यह है तुम्हारी ख़ास ज़िम्मेदारी।"

"निकीता सेर्गेयेविच, तुम मेरी के बारे में इतना सोचते हो कि शक होता है," क्रांति-समिति के सेक्रेटरी ने मज़ाक़ में मुस्कराते हुए कहा।

"क्या कहा?" लोस ने ग़ुस्से में भरकर पूछा। लेकिन अगले ही क्षण उसने शांत स्वर में कहा, "क्रांति-समिति के सेक्रेटरी को ज़रा और अक़्लमंद होना चाहिए। इस तरह की कल्पनाओं से गपोड़बाज़ी को मौक़ा मिलता है... ख़ैर, सुनो ओसिपोव, वह बड़ी महत्व की बात है। शिशुजन्म के मामले ओझा के हाथ से छीन लेना आसान नहीं है। डाक्टर लिखता है कि प्रसूति के लिए स्त्रियां अस्पताल में आती ही नहीं। बस, मेरी को ही शुरुआत करनी है। उसे समझा देना कि लोस ने कहा है।"

निलोव्ना एक बर्तन ले आयी और बड़ी दक्षता के साथ शोरबा परोसना शुरू किया।

"निलोव्ना, मुझे शोरबा नहीं चाहिए," लोस ने कहा। "मेरे लिए गोश्त ही ले आना।"

"ऐसा क्यों, निकीता सेर्गेयेविच! ज़रा चखकर तो देखिये। आपको व्लादिवोस्तोक के रेस्तरां में ऐसा शोरबा कभी न मिला होगा। आपको देखना चाहिए था कि कैसा रसदार बारहसिंगा था वह!"

लोस कुछ मुस्कराया। "हो सकता है, ख़ैर मैं चखकर देखूंगा।"

"हां, हां, ज़रूर। नहीं तो मैं काम छोड़ दूंगी।"

"ओह, ऐसी सख़्ती की सूरत में मुझे शोरबा लेना ही चाहिए।" लोस ने ज़बरदस्ती कुछ शोरबा खा लिया।

भोजन के बाद लोस क्रांति-समिति के पुराने मकान की ओर गया। यहां अब रेडियो-स्टेशन काम कर रहा था। कटर कटर करती हुई

बरफ़ पर से वह चल रहा था और हिमकण उसके चेहरे में चिकोटी सी काटकर रोमांच की मज़ेदार अनुभूति करा रहे थे। उसने एक लंबी सांस ली।

बरसाती की सीढ़ियों पर से दौड़ता हुआ वह ज़ोर-शोर के साथ कमरे में घुसा और ख़ुशी में भरकर पूछने लगा:

"कहो इल्यूशा, क्या हाल है?"

मोलोत्सोव ने ईयरफ़ोन हटाये और बड़ी प्रसन्नता के साथ उत्तर दिया:

"पेत्रोपावलोव्स्क ने अभी अभी गुबेर्निया क्रांति-समिति के लिए हमारे तार लिख लिये हैं। मैं कोलिमा के कॉल लेटर्स की जांच-पड़ताल करूंगा; शायद काम आयें।"

"वाह इल्यूशा! मैं तुम्हें बोनस के रूप में रीछ की खाल दूंगा। बोलो, चाहिए?"

"यह किस लिए, निकीता सेर्गेयेविच?" मोलोत्सोव ने सकुचाकर पूछा। "मैंने अभी तक ऐसा किया भी क्या है?"

"इल्यूशा, आगे तुम करोगे।"

"हां, यह सही है। मैं कोशिश करूंगा लेकिन रीछ की खाल मुझे किस लिए? मैं समझता हूं कि राज्य को उसकी ज़्यादा ज़रूरत है।"

"यह सही है इल्यूशा। फिर भी मैं तुम्हें बोनस देना चाहता हूं। जानते हो तुम्हें मैं क्या बोनस दे रहा हूं? दस टन कोयला।"

"वाह, यह तो बहुत बढ़िया होगा! मैंने सुना था कि कोयला किसी योजना के अनुसार बांटा जा रहा है जिसमें से मेरा हिस्सा सवा टन का है। अरे, मेरे यहां पूरा रेडियो-केंद्र जो है। उसे सामान्य स्थिति में रखना भी तो जरूरी है।"

"तुम्हें दस टन कोयला मिल जो रहा है।"

"निकीता सेर्गेयेविच, मैं किन शब्दों में आपको धन्यवाद दूं!"

"गुबेर्नीया क्रांति-समिति में मेरी ओर से संदेशा भेजो और पूछो कि उन्हें जुकोव का पता-ठिकाना मालूम है या नहीं।"

शाम को लोस अकेला ही तट-प्रदेश के उत्तरी इलाक़े के लिए रवाना हुआ। उसने गाड़ीवान को भी साथ नहीं लिया।

नवां अध्याय

जैसे ही 'सोवियत' स्टीमर एनमकाई से रवाना हुआ कि द्वोरकिन ने लोस के कापीबुक शब्दकोश का विस्तृत अध्ययन आरंभ कर दिया। स्कूल के ख़ाली मकान में वह ज़ोर ज़ोर से चुकची वाक्यांशों का उच्चारण करता, अपनी कापी में उन्हें लिखता और फिर यारंगों में जाकर अपने ज्ञान की आज़माइश करता या एकाध नया शब्द नोट कर लेता।

एक बार एक यारंग में वह गया लेकिन वहां रहने वालों में से किसी के मुंह से एक शब्द तक न कहला सका। कोई भी व्यक्ति, यहां तक कि बच्चे भी, उससे बात नहीं करना चाहते थे। अध्यापक को इसमें कोई शक न रहा कि ओझा कोराउगे ने इन लोगों को भयभीत कर दिया है और भयंकर दुर्भाग्य की – सारे बच्चों की मौत की – धमकी देकर उस रूसी के साथ बातचीत करने से मना कर दिया है जो बस्ती में लकड़ी के मकान में रहने के लिए आया है। अध्यापक ने वामचो और तीग्रेना के बारे में भी पूछताछ की लेकिन उसे कोई सूचना न मिली।

अध्यापक को अकेलेपन का अनुभव हुआ। इस लंबे-चौड़े, दोहरे बदन वाले आदमी को उदासी ने घेर लिया। उसे यह जानकर बड़ा दुःख हो रहा था कि जिन लोगों के लिए वह इस अति दूर देश में

ग्राया ग्रौर जिनके लिए कुछ न कुछ करने के लिए वह बहुत उत्सुक था वही लोग उससे बात भी नहीं करना चाहते।

ग्रध्यापक बेचारा स्कूल के बरामदे में इस सिरे से उस सिरे तक टहलता रहा। फिर वह किनारे की ग्रोर चला जहां बच्चों की भीड़ लगी थी। लेकिन उसके ग्राते ही सारे बच्चे दौड़ते हुए ग्रपने ग्रपने यारंग में चले गये।

"ग्रब क्या किया जाये?" द्वोरकिन ने सोचा लेकिन उसे कोई जवाब न मिला।

लेकिन सब से बड़ी परेशानी कुछ ग्रौर ही थी—'सोवियत' ने ग्रप्रत्याशित रीति से लंगर उठाया, बरफ़ की प्रतिकूल स्थितियों के कारण समुंदर में ग्रागे बढ़ा ग्रौर कोयला उतारने के लिए उसके पास समय न रहा। उन लोगों ने किनारे पर तिहरे शीशों की खिड़कियों वाला एक बढ़िया मकान तो बना दिया लेकिन मकान को गरम रखने का कोई प्रबंध न था। ग्राख़िर जाड़े के मौसम में इस मकान में कोई रहे भी तो कैसे!

ग्रध्यापक ने मन ही मन निर्णय कर लिया कि ये लोग किसी न किसी समय बात ज़रूर करेंगे। यह उदासी भरा मौन सदैव थोड़े ही रहेगा! उसे ग्रब निश्चय होने लगा कि यह सब ग्रोझा ही की करतूत है।

लेकिन ठंडे मकान में वह बच्चों को पढ़ा भी कैसे सकता था?

एक दिन द्वोरकिन खिड़की के पास बैठा हुग्रा उदासीनता से सागर की ग्रोर देख रहा था। उसने पाइप जलायी ग्रौर धूम्र-वलय छोड़ता ग्रपना मन बहलाता रहा।

द्वोरकिन को एक एक बात याद ग्राने लगी। कैसे वह सागरयात्रा करके ग्रा पहुंचा, स्टीमर पर समय कैसा मज़े में कटा, किस तरह लोग क्रान्ति-समिति का मकान बनाने लगे ग्रौर स्थानीय

लोगों ने रूसियों का कैसा हार्दिक स्वागत किया। अब ऐसा लगा कि यहां रहने वाले लोग कोई दूसरे ही थे। "लोस का कहना सही था कि यहां का मामला उतना आसान नहीं है," द्वोरकिन न सोचा।

खिड़की में से अध्यापक को एक बिदारका किनारे की ओर आती दिखाई दी। वह बरामदे में चला गया।

बिदारका की अगवानी के लिए ओझा कोराउगे यारंग से बाहर निकला। वह जल्दी जल्दी दौड़ता गया—यह सोचकर कि कहीं अध्यापक उससे पहले न पहुंच जाये। लेकिन द्वोरकिन बरामदे में ही खड़ा रहा। बिदारका आ पहुंची और ओझा भीड़ में ग़ायब हो गया।

अक्सर ऐसा होता है कि ख़तरनाक हालत में फंसा हुआ आदमी अपने जीवन के लिए संघर्ष करने का साहस बटोरता है लेकिन ख़तरा ख़तम होते ही उसकी हिम्मत उसे छोड़ जाती है और बेचारा असहाय रह जाता है। अलितेत का यही हाल हुआ। नाव से बाहर आते ही वह किनारे पर ढह सा गया।

द्वोरकिन ने देखा कि लोग किसी बीमार आदमी को सहारा देकर लिये आ रहे हैं; यह आदमी चिथड़े पहने है और क़दम उठाना उसके लिए बड़ा दूभर लग रहा है।

"कौन होगा यह?" अध्यापक ने सोचा।

भीड़ स्कूल के पास से गुज़री। स्कूल की ओर किसी ने आंख उठाकर भी न देखा। केवल एक स्त्री ने अध्यापक की ओर देखा और गर्दन हिलाकर इस नवागंतुक के प्रति मैत्रीपूर्ण संकेत किया। यह तीग्रेना थी।

लोग अलितेत के यारंग की ओर बढ़े। अध्यापक ने ताड़ लिया कि यह बीमार आदमी अलितेत ही है।

दूसरे दिन वामचो स्कूल आया। वह डरा सा और परेशान था।

उसके आने से द्वोरकिन फूला न समाया। स्कूल आने वाला यही पहला व्यक्ति था। मेज़ के पास पड़ी एक कुर्सी पर उसने अपने मुलाक़ाती को पकड़कर बैठाया और उसके लिए चाय रखी।

"तुम वामचो हो न?" द्वोरकिन ने पूछा। उसे जुकोव की बात याद आयी। जुकोव ने ही उसे वामचो के बारे में बताया था।

वामचो ने सिर हिलाकर हां कर दी।

उसके साथ बातचीत करना अध्यापक के लिए बड़ा मुश्किल रहा। दोनों ने इशारों, संकेतों और मुद्राओं से काम चलाया। आश्चर्य यह कि दोनों एक दूसरे की बात समझ भी गये। वामचो ने फिर से अध्यक्ष बनना स्वीकार किया और वह काग़ज़ ले लिया जो जुकोव ने भेजा था। उन्होंने तय किया कि अगर कोई छात्र आ गये तो अध्यापक वामचो के यारंग में उन्हें पढ़ाया करेगा। वामचो ने बरफ़ीले तूफ़ान की आवाज़ की नक़ल की और आगामी सर्दी के स्वरूप की सूचना दी। वामचो इन बातों के संकेत इतनी अच्छी तरह से दे रहा था कि द्वोरकिन को उसका भाव समझने में ज़रा भी कठिनाई न हुई। 'संभाषण' के अंत में वामचो ने अपना एक हाथ अपने कान पर रखकर यारंग का संकेत दिया और द्वोरकिन के सीने पर अपनी उंगली टिका दी। मतलब यह कि वह अध्यापक को जाड़ों में अपने यारंग में रहने के लिए आमंत्रित कर रहा था।

उस दिन अध्यापक ने कई नये चुकची शब्द और उनके भाव लिख लिये।

वामचो देर से घर पहुंचा। रूसी अध्यापक के साथ हुई मुलाक़ात पर उसे गर्व हो रहा था। उसने अपनी पत्नी अलेक को इस मुलाक़ात के बारे में बताया। लेकिन जिससे वामचो को खुशी हुई उसी से अलेक भयभीत हुई। उसने वामचो को मनाना शुरू

किया कि वह उस काग़ज़ को फेंक दे और अध्यापक को अपने यारंग में न आने दे।

इस घरेलू बातचीत के बीच ही तीग्रेना अंदर आयी।

"सारा वक़्त मैं अलितेत से डरती रही!" उत्तेजनापूर्ण स्वर में उसने कहना आरंभ किया। "वह चुपचाप पड़ा रहा और बराबर खाना खाता रहा। मुझे ऐसा लगा कि वह सोच रहा है कि पिशाचों को कैसी बलि चढ़ायी जाय। लेकिन अब सब कुछ ठीक है। आयवाम के बारे में अब मुझे कोई डर नहीं। अलितेत ने अपना नाम बदल लिया है। अब उसका नाम है चार्ली। हां, यह सही है कि अलितेत के चेहरे पर बदमाशी अभी तक बनी हुई है। वह अकेला पहाड़ियों में चला गया है। शायद वह ओझा बनना चाहता है। मैं बराबर उसपर चौकसी रखती रही। वह और कोराउगे इस रूसी आदमी से डरते जो हैं।"

"तीग्रेना, लोस ही ने इस आदमी को हमारे पास भेजा है," वामचो ने कहा। "वह हमारी मदद करेगा। वह मेरे लिए नया काग़ज़ लाया है। वे चाहते हैं कि मैं फिर अध्यक्ष बनूं।"

"वामचो, तुम ज़रूर अध्यक्ष बनो," तीग्रेना ने ज़ोर देकर कहा।

अलेक तीग्रेना से गुस्सा होकर अपने बच्चे को गोद में लिये एक कोने में खिसक गयी। उसकी आंखें अंगार उगल रही थीं। दबी सांस लेकर वह क्रोध में कुछ बुदबुदायी।

वामचो तीग्रेना की बात सुनता और अलेक की ओर देखता हुआ बैठा रहा। वह दुविधा में पड़ गया। फिर ये दो स्त्रियां उसे दोनों ओर खींच रही थीं।

"अलेक," तीग्रेना ने कहा, "अरी, उस वक़्त कोराउगे ही ने भूरे रीछ वाली ख़बर उड़ायी थी। तुमने वह काग़ज़ यों ही जला डाला। अरी, ये लोग तो झूठ ही के सहारे जीते हैं। तुम इनका

भरोसा न करो – मैं सच कहती हूं। अलेक, मैं मानती हूं कि वामचो को अध्यक्ष बने रहना चाहिए। हो सकता है कि समय बीतते वे उसकी हंसी उड़ाना छोड़ दें। उस समय जब कोराउगे होली जलाकर वापस आया तो मैंने उसे अलितेत के साथ हंसते-बोलते सुना था। वे वामचो पर हंस रहे थे।"

"तीग्रेना, तुम उसे अलितेत क्यों कहती हो? क्या उसने अपना नाम बदल नहीं लिया?" वामचो ने गंभीरता के साथ पूछा।

"मैं कुछ परवाह नहीं करती। मैं तो जानबूझकर ऐसा करती हूं जिससे पिशाच सुन लें कि कैसे वह उन्हें धोखा देकर दूर रखने की कोशिश कर रहा है। वामचो, तुम अध्यक्ष बन जाओ।"

"अलेक, सुना तुमने तीग्रेना क्या कह रही है? लगता है सच बोल रही है।"

"मैं नहीं जानती। झूठ-सच तुम्हीं जानो... लेकिन यह समझ रखना कि मैं कंदमूलों के लिए टुंड्रा नहीं जाने की। मैं नहीं चाहती कि वह रीछ तुम्हारे बाप की तरह मेरा गला घोंट दे," अलेक ने गुस्से में भर खट से जवाब दिया।

"ठीक है! मैं खुद जाऊंगा," वामचो ने परेशानी के स्वर में कहा।

"नहीं वामचो, तुम्हें नहीं जाना है," तीग्रेना ने बात काटी। "तुम अगर औरतों का काम करने लगे तो लोग तुम्हारी खिल्ली उड़ायेंगे। सुनो, जब अलितेत चला जाये तो खुद मैं ही तुम्हारे लिए कंदमूल बटोरने जाऊंगी।"

वामचो ने बात सुन ली लेकिन कहा कुछ नहीं। फिर यकायक उसे गुस्सा आ गया। औरतों के काम के बारे में बहस करना एक शिकारी के लिए अशोभनीय था। वह चुपचाप उठ खड़ा हुआ और यारंग से बाहर चला गया। तीग्रेना उसके पीछे दौड़ी।

"रुक जाओ, वामचो। हम ज़रा यहीं खड़े रहें। यहां हमें कोई देख न पायेगा।"

"तीग्रेना, मैं जाऊंगा और उस रूसी से मिलूंगा। उसका नाम है द्वोरकिन। उसने कहा है कि तुम भी आओ। और हां, तुमने वह ख़बर सुनी?"

"कैसी ख़बर?"

"जब जहाज़ यहां यह मकान लेकर आया था उस समय जहाज़ पर आये भी था।"

"आये?" तीग्रेना ने उत्तेजित होकर कहा। "वह यहां आया था? क्यों आया था वह?"

"जहाज़ उसे महाद्वीप ले गया था। रूसियों के पास। अब आये बुरी तरह फंस गया।"

"वे उसे ले गये? वे रूसी?" उदास स्वर में तीग्रेना ने पूछा।

"हां, वही उसे ले गये... यहां वह दुःखी दिखाई पड़ता था। बराबर उसके चेहरे पर उदासी छायी रहती थी। अलेक ने मुझे बताया था।"

तीग्रेना विस्फारित नेत्रों से वामचो की ओर घूरती रही। उसकी सांस तेज़ और भारी हो गयी।

वामचो ने स्कूल की ओर संकेत करते हुए कहा:

"तीग्रेना, चलो हम मास्टर जी के पास जायें। वह हमें रूसी देश के बारे में कुछ बता देगा।"

तीग्रेना वैसी ही मौन खड़ी रही। उसकी आंखों में क्रोध उमड़ आया।

"मैं उसके पास नहीं जाऊंगी," उसने कहा। "उस रूसी के पास कभी न जाऊंगी। और तुम भी मत जाओ! वे तुम्हें भी ले जायेंगे!"

दसवां अध्याय

जाड़ा शुरू होने से पहले तक लकड़ी के मकान में पढ़ाई का काम आसानी से हो सकता था लेकिन बच्चों ने वहां जाने से इन्कार कर दिया और इसलिए वामचो के यारंग में स्कूल खोला गया। लेकिन बच्चे यारंग वाले स्कूल में भी नहीं गये क्योंकि उनके मां-बाप उन्हें जाने न देते थे।

फिर अध्यापक महाशय विधवाओं के साथ वामचो की बिदारका पर वालरसों का शिकार करने गये।

अध्यापक एक बलवान् आदमी था; वह बिना थकावट का कोई चिन्ह दिखाये सुबह से रात तक नाव खेता रहता था। ये स्त्रियां अब उसके साथ हिलमिल गयीं और यहां तक कि उसके साथ हास्य-विनोद भी करने लगीं। जब से उन्होंने अपने पतियों के डूब जाने का समाचार सुना था तब से अब तक काफ़ी अर्सा गुज़रा, वे हंसी न थीं। उन्होंने आपस में समझ लिया कि यह रूसी शिकार में उनकी मदद करने के लिए ही आया है। सचमुच उसने अपने को एक अच्छा निशानेबाज़ और सच्चा शिकारी सिद्ध कर दिया था।

बात यह हुई कि पूरे सप्ताह भर शिकार बड़े मज़े में चलता रहा। हर रोज़ बिदारका वालरस ले आती। और जब घर में मांस होता है और आदमी के खाने का काफ़ी सामान होता है उस समय उसके मन में चिंताएं कम होती हैं और हृदय उसका प्रसन्न रहता है। अब मांस का संचय काफ़ी हो चुका था लेकिन फिर भी अध्यापक वाकत से शिकार के लिए आग्रह करता था। तूमातूगे अलितेत की व्हेल-नाव पर सर्वोत्तम शिकारी था लेकिन उसकी पत्नी ने इससे पहले अपने घर में इतना मांस कभी न देखा था। अब वाकत खुश थी। तूमातूगे डूब गया था लेकिन घर में सारी सर्दी के लिए काफ़ी

खाना था। उनके लिए सब से अचरज की बात यह थी कि यह रूसी अपने लिए मांस का एक टुकड़ा भी न रखकर अपने हिस्से का सारा मांस इन स्त्रियों में बांट देता था। जब बिदारका से शिकार उतारा जाने लगा उस समय वह वालरस का सब से भारी बोझ किनारे खींच लाया। उसके कपड़े उस समुद्री जानवर के ख़ून से रंग गये। फिर इन स्त्रियों ने वालरस की आंतों की एक बरसाती उसके लिए सिला दी और जब द्वोरकिन ने वह पहन ली तो वे हंसते हंसते लोटपोट हो गयीं। आख़िर अलेक भी, जो अध्यापक की ओर संशयपूर्वक देखती थी, उसके साथ हंसने-बोलने लगी।

शिकार के वक़्त द्वोरकिन ने वालरस की शरीर-रचना का अध्ययन किया और किसी विशेषज्ञ की तरह वालरस के मृत शरीर की काट-छांट करने लगा। लेकिन ज़िंदगी भर सीखने की कोशिश करके भी उसे गोल पत्थर के सहारे छुरे पर धार चढ़ाना न आता। उसकी यह मजबूरी देखकर उन स्त्रियों का बड़ा मनोरंजन होता। फिर वे एक दूसरी से होड़ लगाकर अध्यापक के लिए यह काम कर देतीं। यह करते हुए वे उसकी ओर देखकर कई बार सिर हिलातीं और मुस्करातीं।

"बस, अगले साल तक इंतज़ार करो। क्रांति-समिति यहां मशीन वाली व्हेल-नाव भेज रही है–फिर शिकार की बात करना!" कुशलता से वालरस के शरीर की काट-छांट करते हुए अध्यापक ने कहा।

फ़ौरन सब लोगों ने जान लिया कि अध्यापक बुरा आदमी नहीं है।

देखते देखते एक अच्छा-ख़ासा शिकार आर्टेल बन गया।

आर्टेल एक बढ़िया चीज़ बन गया। तीग्रेना कितनी ख़ुशी से उसमें शरीक होती! लेकिन वह उधर नहीं गयी, क्योंकि वहां एक रूसी था और रूसी ही तो आये को दूर ले गये थे।

अलितेत ने भी अपनी बीवियों को बिदारका में बिठा दिया और मांस इकट्ठा कर लिया। वह ऐसी हालत कभी न आने देता जब उसे लाचार होकर मांस के टुकड़े और ज़रा सी चरबी के लिए आर्टेल वाली स्त्रियों का मुंह ताकना पड़े!

ज़िंदगी की नैया की पेंदी उलट गयी थी और इसका कारण था लकड़ी के यारंग में रहने वाला रूसी।

फिर जाड़ों के दिन आ गये और किनारे तक हिमक्षेत्र फैल गये। वालरस का शिकार ठप्प हो गया।

अध्यापक ने सर्द स्कूली मकान में स्त्रियों को इकट्ठा किया और अपने बच्चों को स्कूल भेजने की बात उनके सामने उठायी। इनकार करना स्त्रियों के लिए मुश्किल था। उसी की मदद से जो वे साल भर के लिए काफ़ी मांस जमा कर सकी थीं। उन्होंने सिर्फ़ अपनी लड़कियों को वामचो के यारंग में भेजना स्वीकार किया। वे अभी तक ओझा से डरती थीं और उसने तो लड़कों को स्कूल भेजना मना कर दिया था।

अलेक यारंग में अध्यापक की उपस्थिति का ख्याल न करती थी और छात्राओं की ओर भी ध्यान न देते हुए अपने घरेलू कामधंधे में व्यस्त रहती थी। हां, यह सही है कि छात्राओं की संख्या केवल तीन ही थी। पेट के बल लेटकर वे बर्तन उठाने टांगने के कांटों-चिमटों की शकल वाले टेढ़े-मेढ़े अक्षर लिखने लगतीं। वे बड़े उत्साह से इस 'खेल' में मगन हो जातीं।

अलेक यदा-कदा कनखियों से उन छात्राओं और अध्यापक की ओर देखती और सोच लेती कि "इन रूसियों की बात समझ लेना बड़ा मुश्किल है। यह मोटा-ताज़ा रूसी भी एक बच्चे जैसा ही है! उसे असल में सीलों के शिकार के लिए हिमक्षेत्रों में जाना चाहिए। बस्ती में आदमी हैं भी कितने थोड़े। और इधर यह बच्चों के साथ बैठकर खेलता रहता है!"

केवल लंगोटी पहने अलेक ढिबरी पर केतली टांगने के लिए छात्रों और अध्यापक के पास से चली जाती या सील का उबला हुआ बदबूदार चमड़ा निकालकर यारंग के बीचों बीच उसे रगड़ना शुरू कर देती। उधर बच्चा अक्सर चिल्ला उठता।

द्वोरकिन एक आह भरकर अपना पाठ जारी रखता। पोलोग में बड़ी उमस और घुटन होती। वह खुद बिना क़मीज़ के ही बैठता—पहनकर बैठे तो क़मीज़ पसीने से तर हो जाती।

पहले कुछ दिन अध्यापक को ऐसा लगा कि वह इस वातावरण को सह न पायेगा लेकिन सह लेना ज़रूरी था। धीरे धीरे वह हर बात से अभ्यस्त हो गया। स्कूली पाठों में लड़कियों की ऐसी लगन रही कि सारी बस्ती में उसकी चर्चा होने लगी। शीघ्र ही स्कूल में नये छात्र भर्ती हुए—दो लड़कियां और एक लड़का।

स्कूल के प्रति लड़कों का चाव देखकर अलेक को आश्चर्य हुआ। यह शायद इसी कारण हो सका कि वे सब निरे पोंगे थे!

एक दिन शाम को वामचो के यारंग में क़बीला सोवियत की पहली बैठक हुई। इस सोवियत में हाल ही में दो स्त्रियां चुन ली गयी थीं। अध्यापक ने बैठक में कह दिया कि कुत्तों की लाशों को यारंगों के इर्दगिर्द फेंक देना ठीक नहीं। उधर अलितेत के दो कुत्ते, जिनके कोथले चीरे गये थे, बस्ती में पड़े थे और ज़िंदा कुत्ते उनकी आंतों को इधर उधर खींचते-घसीटते थे।

क़बीला सोवियत ने प्रस्ताव स्वीकार किया कि मरे हुए कुत्तों को बस्ती में इधर उधर न फेंककर कहीं दूर टुंड्रा में छोड़ आना होगा।

दूसरे दिन बड़े सबेरे वामचो अलितेत के घर गया। उसे वह समय याद आया जब अपने पिता के जीवनकाल में उसे एक मांस के टुकड़े और ज़रा सी चरबी के लिए अलितेत के पास जाना पड़ा

था। वह उस समय अलितेत के पास नहीं जाना चाहता था लेकिन उसकी बूढ़ी मां ठंडे पोलोग में ठिठुरी जा रही थी और उसपर तरस खाकर ही वह चला गया था। वामचो को उस चीज़ की याद हो आयी जो अलितेत ने उसके लोमड़ी वाले चारे पर उंडेल दी थी। फिर उसे अपने पिता के इन शब्दों का स्मरण हो आया: "अगर अलितेत ने हमारे चारे पर दीये की चरबी उंडेल दी हो तो वह सचमुच बड़ा दुष्ट है।" उसे अपना कुत्ता चेगित भी याद आया जिसे उसने ओझा की आज्ञा पर मौत के घाट उतार दिया था। अलितेत की सारी बुराइयां उसे स्मरण हो आयीं।

अध्यापक के आधार से प्रोत्साहित होकर वामचो यह निश्चय करके बड़े रोब के साथ चल दिया कि वह अलितेत के साथ वैसे ही डटकर बात करेगा जैसा कि द्वोरकिन ने उसे सिखाया है।

मकान मालिक की रस्मी सलाम-दुआ की राह देखे बिना ही वामचो अलितेत के पोलोग में दाखिल हुआ और रटे हुए शब्द खट से कह दिये:

"कुत्तों की लाशें बस्ती से हटा दो! यह क़बीला सोवियत का ठहराव है।"

वामचो की आज़ाद आवाज़ सुनकर अलितेत को जैसे काठ मार गया। वह चुपचाप वामचो की ओर घूरता रहा।

"कुत्तों की लाशें फ़ौरन हटा दो! याद रखना, वे कहीं इधर उधर पड़ी न रहें," वामचो ने सख्त आवाज़ में दोहराया।

अलितेत खालों पर उठ बैठा, अपने नंगे घुटने थपथपाये और वामचो की ओर एकटक देखते हुए उपहास के साथ फुसफुसाया:

"किस बस्ती से आये हो तुम? या आज ही पहली बार बस्ती में कुत्तों की लाशें देख रहे हो? ऐं? तुम हो किस झाड़ की पत्ती?"

"मैं हूं अध्यक्ष," वामचो ने डटकर जवाब दिया और अपना प्रमाणपत्र खोलकर कहा: "देखो, यह रहा अध्यक्ष का काग़ज़! वह फिर मेरे पास आ गया।"

"अरे, तुममें यह हिम्मत कहां से आयी जो तुम मेरे साथ इस ढंग से बात कर रहे हो? ऐं!"

"वह तो मेरे ख़ून ही में है। हां, वह छिपी हुई थी। अब वह आज़ाद हो गयी है। क्योंकि अब तुम ताक़तवर नहीं रहे। तुम हमेशा बड़े रोब के साथ अपने मेरिकन दोस्त का ज़िक्र करते थे और उसका नाम लेकर मुझे डराने की कोशिश करते थे। लेकिन अब वह भी चला गया। और इधर कई रूसी मेरे दोस्त बन गये हैं।" वामचो ने उंगलियों के सहारे गिनना शुरू किया। "लोस मेरा दोस्त है, अन्द्रेई मेरा दोस्त है, मास्टर मेरा दोस्त है और रूसी गोदाम का व्यवस्थापक भी मेरा दोस्त है। देखो कितने दोस्त हैं मेरे! ये चार्ली लाल-नकुए से ज़्यादा ताक़तवर हैं। चार्ली अकेले तुम्हारा दोस्त था लेकिन ये सभी शिकारियों के दोस्त हैं। मास्टर यही कहता है। अब तुम लोमड़ी वाले चारे पर दीये की चरबी उंडेल दो तो मैं चुप न रहूंगा... ख़ैर, पहले उन कुत्तों को हटा दो।"

"अरे पगले, क्या तुम चाहते हो कि हमारी बस्ती पर दुष्ट पिशाचों का कोप हो?" अलितेत ने धमकाते हुए पूछा। "कुत्ते तब तक वहीं पड़े रहेंगे जब तक वे सड़ न जायें।"

"नहीं, वे नहीं पड़े रहेंगे। नया क़ानून उन्हें वहां पड़े नहीं देखना चाहता," वामचो ने खट से कहा और बाहर चला गया।

"अरे, तुम्हारे क़ानून की ऐसी-तैसी! मैं थूकता हूं उसपर! मेरा अपना अलग क़ानून है।" अलितेत ने चिल्लाकर वामचो को सुनाया।

फ़र के पर्दे के पीछे से तीग्रेना यह सारा संभाषण सुन रही थी। बाहर जाते हुए वामचो की ओर उसने गौरवपूर्ण मुस्कराहट के साथ

देखा। वामचो को इतना ढीठ उसने पहले कभी न देखा था। तीग्रेना की ओर ध्यान न देते हुए वामचो बाहरी दरवाज़े की ओर दौड़ा।

वामचो सीधे अध्यापक के पास गया। फिर दोनों वहां चले गये जहां कुत्तों की लाशें पड़ी थीं।

"हम उन्हें खुले पानी के डबरे में फेंक देंगे, समझे वामचो?" अध्यापक ने रास्ते में कहा।

"नहीं, हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। यह ठीक न होगा। हम दुष्ट पिशाचों को कुपित कर देंगे। फिर समुद्री जानवर हमारे किनारे न आयेंगे। हमें उन्हें दूर टुंड्रा ही में फेंक आना चाहिए।"

द्वोरकिन ने मुस्कराते हुए स्वीकृति दी। मरे हुए कुत्तों की पिछली टांगें पकड़कर वे उन्हें बस्ती से बाहर, किनारे से दूर खींच ले जाने लगे... अलितेत अपने यारंग के बरामदे में खड़ा उन दोनों को देखता रहा। निष्प्रभ क्रोध में उसने अपनी मुट्ठियां कसीं जिससे उसके व्हेल की हड्डियों जैसे सख़्त नाख़ून हथेलियों में गड़ गये।

स्कूल की पढ़ाई बाक़ायदा जारी रही।

एक दिन अलितेत वामचो के यारंग में चला आया। वह नशे में चूर था। उसके गाल उभर आये थे, मांसल बन गये थे और सख़्त पाले और शराब के कारण उनपर लाली चढ़ गयी थी। हालांकि वह एक हल्की सी अंदरूनी पोशाक–एक सिझायी हुई खाल का एक परका पहने था फिर भी उसे सर्दी नहीं लग रही थी। वह द्वेष भरी आंखों से अध्यापक की ओर घूरने लगा।

"तुम यहां आये किस लिए? तुम तो हमारे लोगों को बिगाड़ देने पर तुले हो! लोग नहीं चाहते कि तुम यहां रहो। जाओ, अपने रूसियों के पास लौट जाओ!" अलितेत गुर्राया।

अलितेत की सारी बात तो द्वोरकिन समझ न पाया।

"हमारी पढ़ाई में रुकावट मत डालो, अलितेत!" उसने कहा।

"वह यहां नहीं है। यहां जो आया है वह चार्ली है। मैं चार्ली हूं!" सीना ठोंकते हुए अलितेत ने कहा।

फिर द्वोरकिन ने लोस के शब्दकोश का सहारा लेकर कहा:

"कांतो!"*

अलितेत की आंखें जंगली जानवर की तरह चमक उठीं। उसने अध्यापक की एक टांग पकड़ ली और उसे यारंग के बाहर घसीटना शुरू किया।

"छोड़ दो!" अध्यापक चिल्लाया। लेकिन क्रोधोन्मत्त अलितेत रुका नहीं। वह अध्यापक को बाहर घसीट ही लाया। फिर अध्यापक पीठ के बल घूम गया और अपने दाहिने पैर की ज़ोरदार लात से अलितेत की पकड़ तोड़ दी। उछल खड़ा होकर उसने अलितेत के जबड़े पर कसकर एक घूंसा जमा दिया। अलितेत अध्यापक पर झपट पड़ा लेकिन अध्यापक ने एक और घूंसा जमाया और अलितेत लुढ़कता-मुढ़कता बरफ़ पर जा गिरा।

द्वोरकिन का चेहरा लाल हो उठा। वह अलितेत के उठ खड़े होने के इंतज़ार में उसपर सख़्त नज़र गड़ाये रहा।

लेकिन अलितेत बरफ़ ही में पड़ा रहा और ग़ुस्से में बत्तीसी बिचकाकर अध्यापक की ओर देखा। पड़े पड़े ही वह बोल उठा:

"आज तक इस किनारे पर किसी की हिम्मत न हुई कि मुझे इस तरह पटक दे।"

अध्यापक ने उसकी ओर मुक्का ताना और फिर अपना पाठ जारी रखने के लिए यारंग में चला गया।

---

*चले जाओ!

दूसरे दिन जब बच्चों की पढ़ाई हो रही थी उस समय अलितेत का बेटा गोई-गोई वामचो के यारंग में आ गया।

"मेरे बाप ने मुझे पढ़ने के लिए भेजा है," उसने कहा।

"बहुत अच्छा!" द्वोरकिन ने कहा। "आओ बैठो।"

ग्यारहवां अध्याय

क्रांति-समिति के सदर-मुकाम से रवाना होने के बाद बारहवें दिन लोस 'बसंत गुफा' आ पहुंचा। खाड़ी की ढालें लोस को निर्जन दिखाई दीं। पहाड़ी की बग़ल में बरफ़ में ढंके हुए तीन यारंगों के छोर अस्पष्ट दिखाई दे रहे थे; लेकिन ये इनेगिने यारंग भी एक दूसरे से दूर दूर थे।

हवा धरती का आलिंगन कर रही थी और आसमान इतना नीचे उतर आया था कि बेचारे तीन यारंगों को दबाता हुआ सा लगता था। यह कितना अजीब था कि नज़दीक ही कोई आदमी रहते थे।

लोस ने सब से नज़दीक वाले यारंग के पास अपनी कुत्ता-गाड़ी रोक ली। नंगे सिर वाला एक आदमी बरफ़ के नीचे से उभर आता सा दिखाई दिया और उसने मैत्रीपूर्ण मुस्कराहट के साथ लोस का अभिवादन किया।

"बूढ़े बाबा, पिछले बरसात के मौसम में यहां एक रूसी आने वाला था; उसकी कुछ ख़बर है आपको?"

"याने कचाक तो नहीं?" बूढ़े ने पूछा।

अभी तक 'मिलीशियामैन' शब्द किनारे पर प्रचलित नहीं हुआ था और वहां के लोग अपनी आदत के अनुसार मिलीशियामैन को 'कचाक' याने कज़्ज़ाक कहते थे।

"उधर देखिये, हमने उसके लिए वह छोटा सा यारंग बना दिया है," यारंग की ओर अपनी बैसाखी से संकेत करते हुए बूढ़े ने कहा।

निद्रामग्न मिलीशियामैन ख़ोख़लोव छोटे से पोलोग के इस छोर से उस छोर तक पसरा हुआ था। एक ख़ूबसूरत लड़की, जो बूटेदार सूती पोशाक पहने थी, ढिबरी के पास बैठकर सिलाई कर रही थी।

"नमस्ते," लोस ने कहा।

लड़की ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा, फिर कपड़ा एक ओर रख दिया और ख़ोख़लोव को जगाने लगी। ख़ोख़लोव बारहसिंगे के बछिये की खाल का पतलून और वर्दी पहने था। उसने अंगड़ाई और जम्हाई ली, आंखें खोलीं, और झट से उठ बैठा। फिर घुटनों के बल उठकर उसने झटपट मूंछें सहलाकर ठीक कर लीं।

"साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, मुझे रिपोर्ट पेश करने की इजाज़त हो कि..."

"ठहरो, ठहरो!" लोस ने बात काटते हुए कहा। "तुमने मुझे समझ क्या रखा है—कोई पवित्र साधु-संत? तुम घुटनों के बल क्यों खड़े हो?"

"साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, और कोई चारा है ही नहीं। यहां मैं सीधा खड़ा रह ही नहीं पाता," मिलीशियामैन ने घबड़ाहट की सी आवाज़ में कहा।

"लेकिन इसकी ज़रूरत ही क्या है? लेटे लेटे ही बातचीत कर लो। अच्छा पहले यह बताओ कि यह लड़की कौन है?"

"अजी लड़की नहीं, साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, यह मेरी बीवी है बीवी।"

"तो तुमने शादी भी कर ली! कहो, तुम मज़ाक़ तो नहीं कर रहे हो?"

"क्यों, मज़ाक़ कैसे ग्रां० स० प्रतिनिधि? अब उसके पांव भी भारी हैं... भई, यहां अकेले रहा ही नहीं जा सकता। यहां की तनहाई का आदी होने से पहले आदमी खुदकुशी ही कर लेगा। फिर आदमी के लिए खाना बनवाने, कपड़े-लत्ते सिलवाने और एक न एक बात की ज़रूरत रहती ही है। इसके अलावा, बीवी की वजह से मैं उनकी ज़बान जल्दी जल्दी सीख पाता हूं और यहां के लोग मुझे अपना ही आदमी समझते हैं। उन्होंने मेरे लिए एक कुत्ता-गाड़ी तक बना दी। गुबेर्निया मिलीशिया सदर-मुकाम में लोग सोचते होंगे कि यहां तो कुत्ता पचास कोपेक का एक मिल सकता है, लेकिन भई यहां कुत्ता घोड़े के बराबर है। सच कहना हो तो उधर बरनाउल में घोड़ा भी इससे सस्ता है। यहां एक अच्छे अगुआ कुत्ते के लिए काफ़ी बड़ी क़ीमत देनी पड़ती है। एक कुत्ते के लिए यहां सफ़ेद लोमड़ी की पांच खालें देनी पड़ती हैं और ऐसी एक लोमड़ी की क़ीमत है चालीस रूबल। अब तुम्हीं हिसाब जोड़ लो। लेकिन मैं मानता हूं कि तुम यह सब जानते ही हो।"

"वाह, बात तो बढ़िया है!" मिलीशियामैन की बीवी पर निगाह दौड़ाते हुए लोस ने कहा। "अच्छा, नाम क्या है इसका?"

"असल में उसका नाम है तायूरिंतिना लेकिन मैंने उसे बदलकर तान्या कर दिया है। तान्या, तुम राह किस चीज़ की देख रही हो? पहले चाय तो बना दो... या, साथी ग्रां० स० प्रतिनिधि, पहले हिरन के मांस का शोरबा पसंद करोगे?"

"बारह दिन के सफ़र में मैं चाय पर ही गुज़ारा करता आया हूं। ग़रज़ यह कि शोरबा ही हो जाये... कहो, खाने-पीने की दृष्टि से तुम्हारी माली हालत कैसी है?"

"बहुत ही अच्छी। मैं इधर रुसाकोव के व्यापार-केंद्र पर गया था।"

"कैसा काम चल रहा है उसका?"

"बहुत अच्छा, क्रां० स० प्रतिनिधि। वहां की हर बात पर वह निगरानी रखता है—व्यापार पर भी और शिकार पर भी। रहता है शहर के से मकान में। उसकी बीवी बड़ी भली औरत है—उसने वहां एक स्कूल खोल रखा है जिसमें पांच बच्चे पढ़ते हैं। उसने मुझपर भी असर डाला। वापस आते ही मैंने तान्या को पढ़ना लिखना सिखाना शुरू किया। वैसे मैं कोई ख़ास मास्टर थोड़े ही हूं? लेकिन फिर भी हम पूरी वर्णमाला तो समाप्त कर चुके हैं..."

पोलोग छोटा ज़रूर था, लेकिन था बड़ा साफ़-सुथरा, गरम और रोशन। इर्दगिर्द सब जगह कंबलों की तरह मुलायम खालें बिछी हुई थीं। फ़रदार दीवारें और छत बूटेदार सूती कपड़े से ढकी थीं। एक ओर की दीवार पर मिलीशियामैन के कई पोज़ों वाले फ़ोटोग्राफ़ टंगे थे। एक फ़ोटो में मिलीशियामैन हाथ में तलवार लिये, काठ के घोड़े पर सवार बच्चे के रूप में था।

बाहर हवा हहरा रही थी। बरफ़ीला तूफ़ान उठ रहा था।

क्रांति-समिति के सदर-मुकाम से रवाना होने के बाद लोस को आज ही पहली बार खाने का मज़ा नसीब हुआ था।

"भई, यह रोटी तुम्हें कहां से मिली?" एक छोटी सी पाव-रोटी की ओर संकेत करते हुए लोस ने पूछा।

"ढिबरी पर पतीली में उसे सेंकने की तरक़ीब मैंने सीख ली है। जब रोटी का निचला हिस्सा तैयार हो जाता है तो मैं उसे पलटकर फिर सेंक लेता हूं। रुसाकोव से मैं कुछ ख़मीर भी ले आया हूं। यह तरकीब मैंने यहां के सभी लोगों को बता दी है। यहां आटे की तो कोई कमी नहीं। अच्छे गेहूं का मनों बढ़िया आटा मिल सकता है। एक सफ़ेद लोमड़ी के बदले पांच पूद* आटा मिलता है।

---

*एक पूद = सोलह किलोग्राम।

शिकारी अपने घर पर पतीली में रोटी बना लेते हैं। यह तो कुछ नहीं! वे आटे से घरेलू शराब तक बनाने लगे थे। वे आटे में ख़मीर डालकर गेंडुरीदार नली के बदले विंचेस्टर बंदूक़ की नली का इस्तेमाल करते और उसमें से शराब की बूंदें चूने लगतीं। लेकिन मैंने यह मना कर दिया क्योंकि इससे बढ़िया आटा बेकार जाता था।"

अपनी बीवी की ओर घूमकर मिलीशियामैन ने कहा: "तान्या, अब कॉफ़ी हो जाये। यहां तो मैं पूरा कॉफ़ीबाज़ बन गया हूं। सुबह उठते ही उठते पहले कॉफ़ी चढ़ाता हूं—डिब्बे वाले दूध की कॉफ़ी। वाह! बड़ा मज़ा आता है।"

"मालूम होता है बड़े आराम से हो तुम, हो न?"

"सच है साथी क्रां० स० प्रतिनिधि। हां, जगह ज़रा कम है। और शुरू शुरू में अपनी टांगों के बल बैठने की आदत डाल लेना बड़ा मुश्किल रहा। लेकिन सुना है कि जानवरों तक से चाहे जो स्टंट करवाया जा सकता है।"

"चिन्ता न करो ख़ोख़लोव, हम तुम्हारे लिए भी एक मकान मंगवा लेंगे। तुम सिर्फ़ एक बात का ख़्याल रखना। अपनी इस तान्या के साथ अच्छी तरह पेश आना।"

"हम दोनों की ज़िंदगी बड़ी अच्छी तरह से गुज़र रही है।"

मिलीशियामैन मुस्कराया और अपने बड़े भारी पंजे के सहारे बीवी को अपने पास खींच लिया।

"इधर चुंगी-चोरी का क्या हाल है?"

"पिछली शरद से मैंने चुंगी-चोरों का कोई निशान देखा हो तो वह था एक टिनपाट स्कूनर जो दूर समुंदर में खड़ा था। साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, तुम ज़रा घूमने फिरने न चलोगे?"

"शुक्रिया मेरे दोस्त, इस सफ़र में मैं इतना चला हूं कि अब मुझे नींद के अलावा और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं।"

"तो फिर लेट जाओ। और सुनो, मैं रात गुज़ारूंगा पड़ोसियों के यहां। क्योंकि इस जगह में हम सब का समा जाना मुश्किल है।"

"तो ऐसी हालत में मुझी को वहां जाने दो।"

"कैसी बात कर रहे हो साथी क्रां० स० प्रतिनिधि! उनके यारंगों में इतनी सफ़ाई थोड़े ही है?"

लोस सभी हालतों का आदी हो चुका था लेकिन मिलीशियामैन के घर से बाहर जाने को उसका मन नहीं कर रहा था।

फिर ख़ोख़लोव ने अपनी बीवी से कहा:

"तान्या, तुम सोने के लिए अपने बूढ़े बाबा के यहां जाओ।"

लोस रातभर लट्ठे की तरह सोया रहा। सबेरे जब वह जागा तो मिलीशियामैन अपने घुटनों के बीच एक छोटी सी मशीन पकड़कर मांस पीस रहा था। उधर तान्या मांस के समोसे बना रही थी।

"देखो साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, इस तरह चल रही है हमारी गृहस्थी," मिलीशियामैन ने ख़ुशी के साथ कहा।

लोस की नीली आंखें मुस्करा उठीं और उसके चेहरे पर आश्चर्यजनक कोमलता खिल उठी।

ख़ोख़लोव को बातें करने की इतनी अनिवार्य इच्छा थी कि रातभर बेचारे की पलक से पलक न लगी। अब वह मशीन की मूंठ घुमाता हुआ अपनी गतिविधियों का विस्तृत विवरण सुनाता गया।

"बोलो ख़ोख़लोव, तुम अपनी ख़बर क्यों नहीं देते रहते? मैं तो तुम्हारे बारे में बड़ा चिंतित होने लगा था।"

"चिंतित होने की क्या बात है साथी क्रां० स० प्रतिनिधि? अरे, मेरा कौन क्या कर सकता है? हां, जहां तक विवरण भेजने का सवाल है, मैं एक विस्तृत विवरण के लिए सब प्रकार की सामग्री जुटा रहा था। मैंने विवरण लिखना शुरू भी किया है। यहां कई बातें होती रहती हैं। उदाहरणार्थ, तान्या ने मुझे बताया कि किसी

नदी के मुहाने पर कुछ रूसी रहते हैं। मैं खोजबीन करने निकला। पांच दिन का रास्ता था यहां से। नदी के मुहाने से यहां तक लगभग बारह किलोमीटर का अंतर है। मैं अपनी कुत्ता-गाड़ी पर वहां गया। बरफ़ीला तूफ़ान चल रहा था। आसपास कहीं इन्सान का कोई निशान न था। शुरू शुरू में मुझे बड़ा डर लगा। फिर मैंने देखा कि एक कुत्ता-गाड़ी मेरी ओर दौड़ी आ रही है। वह रुक गयी। कुत्ते बड़े दबंग थे—बिल्कुल भेड़ियों जैसे लग रहे थे। गाड़ी पर से एक आदमी उतरा। फ़र के आवरण में से एक रूसी चेहरा दिखाई दिया। उसके मुंह से शब्द निकलते ही मैं समझ गया कि वह औरत थी। 'कहां जा रही हो?' मैंने पूछा। 'फंदों की जांच करने के लिए,' वह बोली। 'नदी के मुहाने के पास जाओ, तुम्हें वहां एक गड्ढा-घर मिलेगा। मेरा पति घर पर है। मैं जल्द ही वापस आऊंगी।' वह कुत्तों पर गरज उठी और पलक झेंपते न झेंपते गाड़ी सरपट दौड़ने लगी। वह बरफ़ीले तूफ़ान में ग़ायब हो गयी। मैं भौचक रह गया। ख़ैर, मैं मुहाने तक चला ही गया। गड्ढा-घर खोजने में बड़ी दिक़्क़त हुई। जिधर देखो उधर बरफ़ ही बरफ़ थी। कुछ सूझा न बूझा। लेकिन आख़िर पता लग ही गया—धुएं के ज़रिये। घर बरफ़ में छिपा था और उसकी सिर्फ़ चिमनी खुली दिखाई दे रही थी। मैं अंदर गया। वह औरत वापस आ चुकी थी—ख़ासी मोटी-ताज़ी थी वह। उसका घरवाला एक केकड़ा सा था। सफ़ाचट चेहरे वाला और अमेरिकन पोशाक डाटे। हां, जिस ढंग से वह बोल रहा था उससे पता चलता था कि पढ़ा-लिखा ज़रूर होगा।"

"एक मिनट ठहरो तो, आख़िर यह सब तुम क्या बता रहे हो? दोस्त, तुमने कहीं सपना तो नहीं देखा?" लोस ने पूछा।

"साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, तुम ज़रा आगे सुनो तो... यह घर पानी में बहकर आयी लकड़ी का बना हुआ था। उसने मुझसे

कहा था कि उस क्षेत्र में कोई समुद्री प्रवाह है। बड़ी बड़ी नदियों में जब वासंतिक बाढ़ आती है उस समय पेड़ उखड़कर बहने लगते हैं। ये फिर समुद्र में चले जाते हैं और यह समुद्री प्रवाह उन्हें इधर ला पटकता है। लकड़ी के ये लट्ठे लेना, कोलिमा और अमरीकी युकोन नदियों से बहकर आते हैं, उस घर की हर चीज़ इन्हीं लट्ठों की बनी थी – मेज़, बेंच और सब कुछ। चूल्हा बना था एक बड़े पीपे का। यह भी समुद्र में बहकर आया था। किनारे पर मुझे भी ऐसे पीपे मिले। वह देखो, सात वहां खड़े हैं जिनमें गेसोलिन, अल्काहोल और केरोसिन भरा पड़ा है। यहां के बाशिंदे पीपों का इस्तेमाल नहीं करते। उन्हें इनकी कोई ज़रूरत ही नहीं ... ख़ैर, वे लोग मुझसे बड़े तकल्लुफ़ के साथ पेश आये और मुझे बिठाकर मेरी ख़ातिरतवाज़ा की... 'महाद्वीप से आये हुए आपको काफ़ी दिन हुए होंगे?' घरवाले ने मुझसे पूछा। 'नहीं, बहुत दिन तो नहीं हुए,' मैंने जवाब दिया। 'अच्छा उधर आपने कभी धातुओं की थकावट के बारे में कुछ सुना?' 'यह क्या बात होती है?' मैंने पूछा। 'अच्छा कोई नया फ़रमान?' और यक़ीन करो, उस चालाक ने मुझे उल्लू बनाने की कोशिश की। कहने लगा कि धातु भी एक सजीव वस्तु के समान है, वह थक जाती है और जब उसका समय आ पहुंचता है तो बिना किसी कारण के वह तड़क जाती है, समझे? वह किसी प्रयोगशाला में काम करता था और कह रहा था कि उसके पास फ़ौजी मोरचे से तरह तरह की घिसी-टूटी चीज़ें थकावट के सिद्धांत की खोज-बीन के लिए भेज दी जाती थीं। 'आख़िर आप हैं कौन?' मैंने पूछा। 'इंजीनियर,' उसने जवाब दिया, 'और मेरी बीवी है डाक्टर। अब हम सफ़ेद लोमड़ियां फंसाने का काम करते हैं।' बस, मैंने सोचा कि यहां मेरे लिए कुछ शिकार है! मैं समझ न पाया कि उनके साथ किस तरह बात की जाये। कुछ भी हो, मैंने कह दिया,

'यहां के अफ़सर के नाते मुझे आपके नाम रजिस्टर करने की इजाज़त दीजियेगा।'"

मिलीशियामैन ने अपनी पत्नी से कहा: "तान्या, वह मेरा केस ले आओ तो।"

लोस पेट के बल लेटा हुआ अपनी कोहनियों के आधार से सिर उठाये मिलीशियामैन का क़िस्सा बड़े ग़ौर से सुनता रहा। उसके विशाल ललाट पर बल पड़े।

खोख़लोव ने अपनी नोटबुक में देखा।

"उनके नाम रूसी नहीं है। वह है साब्लेर, वादीम पेत्रोविच और उसकी पत्नी का नाम है वलेन्तीना युरियेव्ना। देखो साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, हमारे इस इलाक़े में कैसी कैसी अजीब मछलियां हैं। बस, यह तान्या ही की बदौलत हो सका कि मैंने उन्हें खोज निकाला, नहीं तो मैं उनके बारे में कुछ न जान पाता।"

"आख़िर ये लोग आये हैं कहां से?" लोस ने आश्चर्य से पूछा।

"यही तो मैंने उनसे पूछा। सारी शाम वह मुझे अपनी राम-कहानी सुनाता रहा। उसने कहा कि लड़ाई के पहले ज़माने में ज़ार ने इस क्षेत्र में रेडियो-स्टेशन बनाने के लिए एक हुक्म जारी किया था। शायद दस-बारह स्टेशन बनाने थे। लेकिन लड़ाई शुरू हुई और यह हुक्म जहां का तहां रह गया। फिर भी १९१६ में उन्होंने कोलिमा में एक स्टेशन बनाने का निश्चय किया। यह साब्लेर ने बनाया। क्रांति के बाद वहां किसी के साथ उसकी झड़प हुई और उसने अपना काम छोड़ देने का निश्चय किया। उसने कुछ कुत्ते ख़रीदे, अपनी बीवी को बरफ़-गाड़ी पर बैठा दिया और गाड़ी किनारे की ओर दौड़ायी। लगभग दो हज़ार किलोमीटर का फ़ासला उसने तय किया। आख़िर वह इस मुहाने तक आ गया। यह जगह उसे बहुत ही पसंद

ग्रायी ग्रौर फिर यहीं बस गया। 'यहां की ज़िंदगी से ग्रच्छी ज़िंदगी मैंने कभी नहीं देखी,' वह कहता है। 'यहां न कोई मुझपर हुकूमत करता है ग्रौर न मैं किसी पर।' ग्राख़िर वह ग्राराम से क्यों न रहे? ज़रूरत की सारी चीज़ें उसके पास हैं। जाड़ों में वह ग्रौर उसकी बीवी डेढ़ सौ के क़रीब लोमड़ियां फंसाते हैं ग्रौर गर्मियों में मछली, छत्रक ग्रौर रसभरी बटोरकर रखते हैं। ग्रौर यह है उनके रहने का तरीक़ा। बिल्कुल ग्रपने ग्राप में मगन। लेकिन मैंने सोचा कि ज़रूर इस क़िस्से में कुछ राज़ है। हो सकता है कि यह जोड़ा किसी घात की खोज में है। गरमियों में कुत्ता भी वहां नहीं दिखाई देता। बिल्कुल सुनसान रहती है वह जगह। हां, उन्हें जो खाने-पीने की चीज़ें मिलती हैं, उसके बारे में मेरा ख़्याल है कि ग्रमरीकी स्कूनर यह ला देते हैं। लेकिन इस वर्ष उसके पास इन चीज़ों की बड़ी तंगी है। लेकिन कहता है कि 'यही बात है तो मुझे कोई ज़रूरत नहीं उन चीज़ों की। मैं तो बारहसिंगे के मांस ग्रौर मछलियों पर गुज़ारा कर सकता हूं। ख़ानाबदोशों की तरह।' लेकिन इस मामले में ज़रूर दाल में कुछ काला है। सच पूछो तो वह कुछ बातें छिपा रहा है।"

"साथी ख़ोख़लोव, तुम्हें फिर उनके पास जाकर देखना होगा। उससे तुम कह दो कि उसे क्रांति-समिति के दफ़्तर में ग्राना ही चाहिए। लेकिन दो महीने बाद। मैं ख़ुद उससे मिलना चाहता हूं।"

"साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, यह मैं ज़रूर करूंगा। लेकिन देखो, यहां यही ग्रकेली चिड़िया नहीं है। ग्रभी तक मैं सूंघ न पाया लेकिन इस शिकार का सुराग़ मुझे मिला है। यहां से दूर, लगभग उन पहाड़ियों में दूसरी नदी के किनारे एक ग्रमरीकी रह रहा है। ग्रब तक वह केवल गरमियों में वहां रहता था। वसंत ऋतु में मोटर-ब्रोट पर वह ग्राता था ग्रौर शरद में चला जाता था। लेकिन लगता

है कि इन जाड़ों में वह यहीं डेरा डाले है। मैंने यही ख़बर सुनी है। मैं वहां भी देखूंगा कि हक़ीक़त क्या है।"

"हां ज़रूर," लोस ने कहा। "साथी ख़ोख़लोव, यह ध्यान में रखना कि हमें इन साहसियों और ढोंगियों को इसी वर्ष या ज़्यादा से ज़्यादा अगले वर्ष तक यहां से भगा देना चाहिए।"

"साथी क्षां० स० प्रतिनिधि, हम ज़रूर उन्हें यहां से हटा देंगे... यह दूसरा धूर्त शायद मिस्टर निक नाम धारण किये हुए है।"

बरफ़ीला तूफ़ान दूसरे दिन शांत हुआ और फ़र व्यापार-केंद्र में रुसाकोव से मिलने के लिए लोस ख़ोख़लोव के साथ रवाना हुआ।

बारहवां अध्याय

फ़र व्यापार-केंद्र का व्यवस्थापक रुसाकोव पेंज़ा गुबेर्निया का निवासी था। ठिंगना सा यह आदमी बड़ा ही फुर्तीला था। ललौहीं और नुकीली छोटी सी दाढ़ी और फीकी फीकी सी आंखें।

रुसाकोव का पिता एक भूमिहीन किसान था और रुसाकोव अपने बचपन में पिता के साथ साइबेरिया में बसने के लिए गया था। इस नये देश में वह रोवेंदार खालों वाले जानवरों के शिकार में दिलोजान से लग गया। वह बराबर महीने महीने साइबेरिया के तैगा जंगलों में घूमता रहा और अपनी युवावस्था में ही एक अच्छे शिकारी के रूप में प्रसिद्ध हो गया। साइबेरियाई फ़र व्यापारी बाबकिन का ध्यान उसने अपनी ओर आकृष्ट किया और बाबकिन ने उसे नौकरी दी। कुछ ही वर्षों में रुसाकोव एक प्रमुख फ़र विशेषज्ञ बन गया।

उक्त व्यापारी ने रुसाकोव को अपना दामाद यानी अपनी इकलौती बेटी का पति बनाना चाहा। रुसाकोव के सामने उज्ज्वल व्यापारिक भविष्य था।

यह सब साकार हो जाता यदि व्यापारी को पता न चलता कि उसका भावी दामाद सफ़ेद टिकट वाले अपराधियों के साथ गठबंधन कर रहा है। निर्वासिन दंड भुगतने वाले क्रांतिकारियों को यह व्यापारी इसी नाम से पुकारता था। व्यापारी को ऐसा लगा कि रुसाकोव ख़ुद भी इस बुरे काम में फंस गया है। फलतः उसने उसे फटकार सुनायी। रुसाकोव ने फिर तैगा की शरण ली और जानवरों का सुराग़ लगाना शुरू किया।

गृह-युद्ध की अवधि में वह एक गुरिल्ला सैनिक था, फ़ौजी दख़लंदाज़ी करने वालों के ख़िलाफ़ वह लड़ा था और कई बार जापानियों के पंजों में फंस गया था। जापानियों ने उसे बुरी तरह मारा पीटा था और उसकी पीठ की खाल उधेड़ दी थी। लेकिन फिर भी वह हर बार दुश्मन के फंदे से छूट भागा था। भयंकर यंत्रणाओं और उत्पीड़न के कारण रुसाकोव हकलाने लगा। फिर ज़िंदगी उसे दुनिया के इस छोर पर ले आयी और यहां उसने अपना प्रिय व्यवसाय जारी रखा।

पुराना कम्यूनिस्ट रुसाकोव कटोर परिश्रमी व्यक्ति था। जब भंडार या गोदामों में कुछ काम न रहता तो वह यारंगों में शिकारियों और बहेलियों के साथ बैठकर शिकार को संगटित एवं विकसित करने के संबंध में बातचीत किया करता। यह सही है कि हकलाहट और स्थानीय भाषा के अज्ञान जैसी बाधाओं के कारण बातचीत करने में उसे बड़ी कठिनाई होती थी।

फिर भी, शिकारी के जीवन और मनोविज्ञान की पूरी जानकारी के कारण वह स्थानीय जनता का प्रिय बन गया। उन

लोगों के खाने-पीने की चीज़ों से रुसाकोव को परहेज़ नहीं था और वे भी बड़ी खुशी से उसे वालरस का मांस और बढ़िया सील के चुने हुए टुकड़े खिलाकर उसके प्रति अपनी आदर की भावना प्रकट करते थे। वे उसे सच्चा आदमी मानते थे।

इधर सुदूर उत्तर में भी जहां समय की कोई कमी न थी रुसाकोव के लिए वह काफ़ी न होता। वह घर आता था कुछ खाने-पीने और अच्छी सी नींद लेने के लिए। इस डर से कि कहीं बीवी ऊब न जाये, उसने उसे व्यापार-केंद्र के मकान में स्थानीय शिकारियों और बहेलियों के बच्चों के लिए एक स्कूल खोलने के लिए राज़ी कर लिया।

फिर किसी ने यह अफ़वाह उड़ा दी कि यदि बच्चों को स्कूल में न भेजा गया तो रुसाकोव को बुरा लगेगा और वह कारतूस और तंबाकू बेचना बंद कर देगा। नतीजा यह हुआ कि स्कूल में छात्रों की उपस्थिति काफ़ी अच्छी रही। आन्ना इवानोव्ना एक मोटी सी रूसी औरत थी – स्वभाव की बड़ी अच्छी। उसने कभी सपने में भी न सोचा था कि उसे अध्यापिका बनना पड़ेगा लेकिन वही अब चुकची बच्चों को रूसी पढ़ना-लिखना सिखा रही थी। इस सुस्वभावी गोरी महिला के साथ बच्चे शीघ्र ही हिल-मिल गये और बड़ी उत्सुकता के साथ स्कूल जाते रहे।

लोस जब व्यापार-केंद्र में आया उस समय आन्ना इवानोव्ना अपने छात्रों को पढ़ा रही थी। दस लड़के-लड़कियां खाने की एक मेज़ को घेरकर बैठी थीं। मेज़ पर एक प्राइमर पड़ी थी। व्यापार-केंद्र में यह प्राइमर कहां से आयी यह एक रहस्य था जो अभी तक खुल न पाया था।

अच्छी तरह से सिझायी हुई वालरस-खाल का एक बड़ा चौकोर टुकड़ा लकड़ी की पट्टियों की चौखट में बैठाया गया था और

दीवार पर लटके हुए ब्लेकबोर्ड का काम दे रहा था। उसपर खड़िया से कुछ अंक और शब्द लिखे हुए थे।

लोस के कमरे में प्रवेश करते ही आन्ना इवानोव्ना शरमाकर कुछ उलझन में पड़ गयी। उसने उससे हाथ मिलाया और फिर बच्चों से कहा :

"अच्छा बच्चो, आज की पढ़ाई ख़त्म।"

"क्यों ?" लोस ने कहा। "पढ़ाई जारी रखिये।"

"निकीता सेर्गेयेविच, अजनबियों के सामने मैं नहीं पढ़ा सकती। मैं जब पढ़ाती हूं उस समय अपने पति को भी अंदर नहीं आने देती।"

"बाप रे बाप! बड़े ही कठोर नियम हैं आपके!" लोस ने मुस्कराते हुए कहा। वह एक छात्र के पास बैठा और उसकी कापी देखी जो साधारण काग़ज़ से घर ही पर बढ़िया तरीक़े से सिली गयी थी।"

"यह कौन नंबर है ?" गहरे खर्ज स्वर में लोस ने पूछा।

"आठ," भीमकाय भालू जैसे इस आदमी की ओर कौतूहल से देखते हुए उस बालक ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

"और यह ?"

बच्चे ने अपनी अध्यापिका की ओर देखा और कुछ हिचकिचाते हुए जवाब दिया :

"छः।"

"अरे आको, तुम भूल गये क्या ?" आन्ना इवानोव्ना ने पूछा।

"ठीक तो है। अगर कापी को उल्टी करके देखें तो यह छः ही होते हैं," लोस ने प्रोत्साहन के स्वर में कहा। "अच्छा बेटा, अब यह शब्द पढ़ो तो।"

"'मम्मी'," बच्चे ने विश्वास के साथ पढ़ दिया।

"वाह! बिल्कुल ठीक। तुम लिख भी सकते हो? फिर लिखो तो 'पापा'।"

बच्चे ने आत्मविश्वास के साथ यह शब्द लिख दिया।

"भई, तुम तो स्कालर हो!" लोस ने प्रशंसा की।

कुछ भी हो, आन्ना इवानोव्ना ने अपने छात्रों को छुट्टी दे ही दी। रुसाकोव और मिलीशियामैन ख़ोख़लोव अंदर आ गये। शीघ्र ही सब लोग खाने पर बैठ गये।

"यहां मुझे अपने घर जैसा लगता है—यहां रूसी वातावरण जो है," लोस ने अभिमान के साथ कहा। "गत वर्ष मैं उस लाल सिर वाले मि० ओल्सन के साथ यहां बैठा था। और हम दोनों जो बातें कर रहे थे असल में उनमें कोई दम न था। बड़ी चालाकी से हम काम ले रहे थे।"

"म-म-मैं भी तो ल-ल-लाल सिर वाला हूं," रुसाकोव ने हंसते हुए कहा।

"मतलब यह कि हालत में कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ा है," शोरबा परोसते हुए आन्ना इवानोव्ना ने कहा।

"काफ़ी बड़ा फ़र्क़ है, आन्ना इवानोव्ना, बहुत ही बड़ा फ़र्क़। अच्छा देखिये, आप मुझे एक आवेदनपत्र लिख दीजिये और मैं हमारे स्टाफ़ में आपका नाम एक अध्यापिका के रूप में दर्ज कर लूंगा।"

आन्ना इवानोव्ना ने झटके से हाथ ऊपर उठाकर आश्चर्य प्रकट किया। "आप कहते क्या हैं, निकीता सेर्गेयेविच! मैं किस अधिकार से अध्यापिका बन सकती हूं? यहां मैं पढ़ा रही हूं सिर्फ़ इसलिए कि मेरे पास दूसरा कोई काम है ही नहीं।"

"आन्ना इवानोव्ना, अब हमारे पास सभी अधिकार हैं। आवेदनपत्र आप ज़रूर लिख दीजिये, भूलियेगा नहीं। और अगर

आपने प्रौढ़ निरक्षरों के लिए एक और जमात शुरू कर दी तो मैं आपको क्रांति-समिति की ओर से एक विशेष कृतज्ञता-पत्र दे दूंगा। आपने यहां श्रीगणेश तो बहुत अच्छा किया है। दस छात्र!"

भोजन के बाद लोस और रुसाकोव गोदाम और भंडार देखने गये।

"क-क-कुछ भी हो लोस, इन अ-अ-अमरीकियों ने म-म-मुझे चोट दे ही दी!"

"सचमुच?"

"त-त-तंबाकू यहां काफ़ी चलती है। वह थी भी अच्छी हालत में। म-म-मैं उसे बेकार माल की सूची में न-न-नहीं डाल सकता था। उसपर मुझे ब-ब-बीस फ़-फ़-फ़ीसदी घाटा हुआ। स-स-सोने के सिक्कों में इसकी क़-क़-क़ीमत द-द-दस हज़ार रूबल होती है।"

"लेकिन वह तंबाकू बेकार क्यों है?"

"क्योंकि मैं यहां चेर्कासी की पत्ती तंबाकू 'प-प-पपूशा' ले आया हूं। मैं जानता था कि स-स-साइबेरिया के लोग इसे बहुत पसंद करते हैं। ग-ग-गरम पकौड़ियों की तरह बिकती है वह। अब श-श-शिकारी अमरीकी प्लग तंबाकू की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखना चाहते। स-स-सिर्फ़ 'पपूशा' ही अब उन्हें प-प-पसंद आती है।"

भंडार अमरीकी और रूसी माल से अटा पड़ा था। फ़र के गोदाम में लोमड़ियों की खालें टंगी थीं। लोस ने देर तक गोदामों की देखभाल की और व्यापार-केंद्र और शिकार के काम में गहरी दिलचस्पी दिखायी।

कमरे में लौट आने पर लोस ने आन्ना इवानोव्ना से चाय बनाने के लिए कहा।

"मेरे लिए नहीं—एक मुलाक़ाती आ रहा है मेरे पास," पलक मारते हुए उसने कहा।

लोस का यह अपेक्षित मुलाक़ाती था दर्रे के उस पार का निवासी बूढ़ा 'एकाक्ष'।

मिलीशियामैन ने कहा कि मैं वहां जाकर बूढ़े को ले आऊंगा। लेकिन लोस बोला:

"देखो, रुसाकोव को जाने दो। बूढ़ा कहीं यह न सोचे कि मैं उसे मिलीशियामैन से डराना चाहता हूं। ख़ैर, नाम क्या है उसका?"

"लिओक," रुसाकोव ने उत्तर दिया। "ल-ल-लोस, क्या तुम सोचते हो कि मैंने बूढ़े को समझाने-बुझाने की क-क-कोशिश नहीं की? मैंने ज़रूर कोशिश की। ल-ल-लेकिन वह सुने तब न। मैंने उससे व्हेल-नावों और मोटरों के बारे में कहा—और ज-ज-जानते हो उसने क्या किया? 'त-त-त्राकोदा' दियासलाई की एक डिबिया निकालकर एक के बाद एक माचिस घिसता गया ल-ल-लेकिन एक भी तीली ने जलने का नाम न लिया। उसकी इस हरकत का कोई जवाब न था। फिर मैंने पैंतरा बदलकर बातचीत शुरू की और वह उसी द-द-दियासलाई वाली बात पर लौट आया। एक मुट्ठी भर अमरीकी सलाइयां उसने निकालीं और एक के बाद एक जलानी शुरू कीं। ख़-ख़-ख़ूब जलीं वे। 'ये हैं दियासलाइयां,' उसने कहा, 'पहले दियासलाई बनाना तो सीखो और फिर मोटरों की बात करो।'"

लोस को आश्चर्य हुआ, "सचमुच?"

"म-म-मैं तो उस कुतिया की औलाद म-म-माचिस फ़ैक्टरी के डाइरेक्टर को लटका दूंगा..." रुसाकोव ने अपनी बीवी की ओर देखा और फिर कहा, "कान के सहारे। वह तो हमारे क-क-काम में र-र-रोड़े अटका रहा है। हमारे दुश्मनों की मदद कर रहा है... फिर उस 'एकाक्ष' के साथ बात करो।"

"तुम्हारा यह 'एकाक्ष' मुझे पसंद है—बहुत ही पसंद है," लोस ने कहा। "और इन दियासलाइयों के बारे में मैं ज़रूर कुछ

बंदोबस्त करूंगा। अच्छा, तुम जाओ, उस बूढ़े को ले आओ। हमें किसी भी तरह उसे अलितेत से अलग कर देना चाहिए। उनकी दोस्ती मैं नहीं रहने दूंगा।"

"त-त-तुम्हारा आग्रह ही हो तो मैं ज़-ज़-ज़रूर जाऊंगा। लेकिन तुम्हारा तीर भी बेकार ही जायेगा। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं।"

"देखो तुम जाओ और उसे बुला लाओ, बस। उसे यह न बताना कि किस लिए बुलाया है। सिर्फ़ यह कहना कि 'रूसी सरदार आपसे मिलना चाहता है'।"

रुसाकोव चला गया और लोस ख़ुशी से मुस्कराते हुए चहलक़दमी करने लगा।

"यहां बड़ा अच्छा है, आन्ना इवानोव्ना! जी नहीं करता कि यहां से चला जाऊं। देखिये एक सोवियत परिवार क्या कर सकता है। अगर मुझे गत वर्ष के अमरीकियों की याद न होती तो यह फ़र्क़ मेरे ध्यान में भी न आता। तुलना के ज़रिये ही तो हम भला-बुरा समझ पाते हैं न?"

"यहां का जीवन है सचमुच बड़ा रोचक। हां, पहले-पहल मुझे डर लगता था कि मैं ऊबकर मर जाऊंगी। लेकिन अब मुझे इन बच्चों की इतनी आदत पड़ गयी है कि बिना इनके मैं जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकती। वे बड़े ही तत्पर और कर्तव्यनिष्ठ हैं। मैं जब उन्हें छुट्टी देती हूं, फ़ौरन दूसरे दिन के पाठ की तैयारी करने बैठ जाती हूं। निकीता सेर्गेयेविच, आप तो जानते ही हैं कि खुद ही शिक्षा-प्रणाली बनाना कितना कठिन काम है। मैं स्कूली अध्यापिका तो हूं नहीं। मैं नहीं समझती कि बिना लाइसेंस के काम करना ठीक होगा।"

"आन्ना इवानोव्ना, आप यह क्या कहती हैं? 'लाइसेंसों' की बात आप भूल जाइये। उनकी चिंता करने से आपके काम में

रुकावट ही आयेगी। अधिक आत्मविश्वास से काम कीजिये, बस!" लोस ने अपना हाथ हिलाते हुए कहा। "जब मैं यहां आया उस समय मेरे पल्ले न कुछ अनुभव था और न मैंने जीवन ही देखा था। लेकिन अब मैं उसे काफ़ी अच्छी तरह जानता हूं। आन्ना इवानोव्ना, आप अच्छी अध्यापिका बनेंगी। सब से महत्व की बात है वैसा बनने की इच्छा।"

रुसाकोव एक लंबे, तगड़े और एकाक्ष बूढ़े को लेकर वापस आया। यह था लिग्रोक। वह बारहसिंगे के बछिये की रोवेंदार खाल का अच्छी बनावट वाला और आरामदेह परका पहने था और बड़ा चुस्त एवं साफ़-सुथरा लग रहा था। उसने अजीब ढंग से पलक मारते हुए लोस को ऊपर से नीचे तक देखा।

लोस ने सद्भावपूर्वक अपना हाथ आगे बढ़ाया और पुरानी पहिचान वाले व्यक्ति की तरह उसका अभिवादन किया:

"कहिये लिग्रोक, कैसे हैं आप?"

बूढ़े के चेहरे पर फिर एक बार हल्की सी मुस्कराहट दौड़ गयी।

"बैठिये। कहिये, चाय लेंगे न?"

"मैं अभी अभी चाय पीकर ही आया हूं। लेकिन आपके साथ थोड़ी सी ले सकता हूं," कुर्सी पर बैठते हुए लिग्रोक ने जवाब दिया।

लोस ने केतली और चायदानी उठायी।

"आपको कैसी चाय पसंद है? तेज़ न?" उसने पूछा।

"हां, मुझे तेज़ ही पसंद है," अपनी अकेली आंख मिचकाते हुए बूढ़े ने कहा।

लोस उसके सामने बैठ गया। चाय की चुस्कियां लेते हुए उसने संभाषण का श्रीगणेश कर दिया:

"मैं देखने आया हूं कि आप लोग किस तरह रह रहे हैं।"

"बस, उसी तरह जैसे हमेशा से रहते आये हैं। आपने पिछले साल के जाड़ों में तो देखा ही था न?" लिग्रोक ने आराम से पूछ लिया।

"पिछले साल की बात दूसरी थी। इस साल कुछ फ़र्क़ तो ज़रूर ही पड़ा होगा?"

"अजी नहीं, कुछ फ़र्क़ नहीं! पंछी अभी वैसे ही उड़ते हैं, लोमड़ियां वैसी ही दौड़ती-भागती हैं और वालरस वैसे ही तैरते रहते हैं—हर चीज़ वैसी ही है जैसी पिछले साल थी। बरफ़ीला तूफ़ान भी बिल्कुल वैसा ही चलता है, उसकी आवाज़ आप अभी भी सुन रहे हैं न?"

"मतलब यह कि कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा? ख़ैर, मैं यहां आपसे कुछ बातें करने आया हूं।"

बूढ़े ने कप मेज़ पर रख दिया और लोस के चेहरे पर अपनी नज़र गड़ाते हुए कहने लगा:

"कुछ भी हो, आर्टेल में मैं नहीं आऊंगा।"

"हां, मुझे मालूम है कि आप नहीं आयेंगे। लेकिन यह तो मानना ही पड़ेगा कि हालत कुछ बदल गयी है। पिछले साल दर्रे के इस हिस्से में आर्टेल नहीं था। इस साल है। बसंत में पानी के खुलते ही मैं मोटर वाली एक व्हेल-नाव भी इस आर्टेल के पास भेज रहा हूं।"

"जब वालरस आयेंगे तो मैं बिना मोटर के भी उनका शिकार कर लूंगा।"

"बिल्कुल ठीक। लेकिन मोटर की मदद से यह काम और जल्दी हो सकेगा। लिग्रोक, मोटर से ज़िंदगी सुधारी जा सकती है, बदली जा सकती है।"

"आप ज़िंदगी बदल देंगे?"

"हां, हां," लोस ने निश्चयपूर्वक उत्तर दिया।

"लेकिन ज़रा यह भी बताइये कि कैसे बदल देंगे? अरे, आप रूसी लोग तो माचिस बनाना भी नहीं जानते।"

बूढ़े ने अपने परके के अंदर हाथ डालकर 'त्राकोदा' दियासलाई की एक डिब्बी निकाली और चुपचाप एक सलाई घिसी। वह जली नहीं। उसने डिब्बी लोस के हाथ में रख दी।

"यह माचिस बड़ी ख़राब है," कुछ परेशान होते हुए लोस ने हामी भरी।

"और आप बात करते हैं ज़िंदगी बदल देने की!" लिम्रोक के स्वर में तिरस्कार का पुट था। "देखिये, यह अमरीकी माचिस चलती हवा में भी जल सकती है।"

"लेकिन लिम्रोक, आप हर बार माचिस ही की बात क्यों छेड़ते हैं? क्या माचिस ही सब कुछ है? ख़ैर, मुझे यह तो बताइये कि आप चिलम में कौनसी तंबाकू डालते हैं?"

बूढ़ा चुपचाप लोस पर आंख गड़ाये बैठा रहा।

"आइये, दिखाइये तो अपनी बटुइया!"

कुछ हिचकिचाहट के साथ बूढ़े ने अपना हाथ परके में डाला। जब लोस ने देखा कि उसकी बटुइया में 'पपूशा' तंबाकू है तो उसने अमरीकी तंबाकू का एक प्लग मेज़ पर रख दिया।

"बताइये, आप यह तंबाकू क्यों नहीं पीते?"

"क्योंकि 'पपूशा' और तेज़ है," बूढ़े ने जवाब दिया। कुछ देर वह चुप रहा। "बिना तंबाकू के," बूढ़े ने कहा, "आदमी की ज़िंदगी बड़ी मुहाल है; बिना आग के वह नामुमकिन ही है। ख़ैर, कुछ भी हो, मैं आर्टेल में कभी न जाऊंगा। आदमियों को आप वैसा ही रहने दीजिये जैसा वे चाहते हैं। इस ओर के लोग आर्टेल में जाना चाहते थे–ठीक है। मैं कुछ नहीं कहता।"

"मैं आपको आर्टेल में ज़बरदस्ती थोड़े ही भर्ती करना चाहता हूं।"

"आप ज़बरदस्ती नहीं करते, लेकिन चाहते ज़रूर हैं कि मैं भर्ती हो जाऊं।"

"लिम्रोक, मैं सचमुच चाहता हूं और मानता हूं कि वह समय आकर ही रहेगा जब आप खुद आर्टेल में भर्ती होना चाहेंगे। और फिर लोग सोचेंगे कि आपको भर्ती करें कि न करें।"

"वे कुछ नहीं सोचेंगे। मेरे हां करने की देर है कि वे मुझे फ़ौरन दाखिल कर लेंगे।"

"कुछ और चाय डालूं?"

"हां, थोड़ी सी।"

चाय डालते हुए लोस ने कहा:

"ख़ैर लिम्रोक, फ़िलहाल यह मामला हम यहीं छोड़ दें। बसंत आने पर देखा जायेगा।"

"मैं जानता हूं बसंत में क्या होगा। सब से ज़्यादा वालरस मुझे मिलेंगे, और क्या?"

"देखा जायेगा। ज़िंदगी सब कुछ दिखा देगी।"

बूढ़ा उठ खड़ा हुआ। "मैं घर जा रहा हूं," उसने कहा। "मुझे एक बिदारका बनानी है।"

"तो फिर अलविदा लिम्रोक। हां फिर कभी मिलने आइयेगा।"

"आपसे मिलने? अच्छा, ठीक है," उसने कहा।

उसके जाते ही मिलीशियामैन बोला:

"कैसी पुरानी आतिशबाज़ी रही! लेकिन लगता है कि दर्रे के दूसरी ओर भी आर्टेल बन जायेगा।"

"ज़रूर बन जायेगा," लोस ने हामी भरी। "आज शाम को मैं उसके यारंग में जाकर उससे फिर बातचीत करूंगा।"

तेरहवां अध्याय

लोरेन बस्ती में इधर काफ़ी रद्दोबदल हुआ था। वहां न चार्ली थामसन की झोंपड़ी दिखाई दे रही थी और न पनारीदार चद्दरों का गोदाम ही।

रूलतिना के लिए इन मकानों का कोई उपयोग न था। उसने एक दिन याराक से कहा:

"इन्हें देखकर हर समय आंखों को तकलीफ़ ही होती है। इन्हें उखाड़ फेंकना ही अच्छा होगा।"

रूलतिना ऐसी कोई चीज़ नहीं चाहती थी जो उसे अपने गोरे पति की याद दिलाती।

इन मकानों का सारा सामान पहाड़ी के उस हिस्से में एक यारंग बनाने में लगाया गया जहां सब लोग रहते थे।

यह यारंग अपनी लोहे की छत के कारण चमकता रहा और रूलतिना सभी लोगों की तरह अपने बच्चों के साथ उसमें रहने लगी। उसे ऐसा मालूम हुआ कि ज़िंदगी नये सिरे से शुरू हुई है।

मि० साइमन्स के भूतपूर्व अमरीकी व्यापार-केंद्र के अलावा दो नये मकान बस्ती में बनकर तैयार हुए थे। इनमें से एक था स्कूल और दूसरा था रेड क्रॉस का अस्पताल। व्यापार-केंद्र में इस समय जोहोव नया प्रधान था।

स्थानीय शिकारियों के यारंग पहले की तरह पहाड़ी के पास ही खड़े थे लेकिन रिंतेऊ का प्रवासी यारंग अब वहां नहीं था। रिंतेऊ के चट्टान से गिरकर मर जाने के फ़ौरन बाद उसकी बेटी ने एक शिकारी के साथ ब्याह कर लिया था और वह पड़ोस वाली बस्ती में चली गयी थी। रिंतेऊ के यारंग की सिर्फ़ गोल पथरीली कुर्सी बची थी। समुद्री प्राणियों की हड्डियां और एक बेकार ढिबरी

बरफ़ में से उखड़ आयी थी। उस घर का चूल्हा हमेशा के लिए बुझ गया था। उसकी बेटी ने दूसरे यारंग का सहारा लिया था।

याराक और मेरी व्यापार-केंद्र के मकान में रहने लगे थे। जिस बिस्तर पर ख़ुद चार्ली सोता था उसी पर वे सोते थे और जिस मेज़ पर मि० साइमन्स खाना खाता था उसी पर वे भोजन करते थे। आम तौर पर वे तांगों की सी ज़िंदगी बसर कर रहे थे।

रूलतिना अक्सर उनसे मिलने आती और पुरानी आदत की वजह से उस गोरे आदमी के घर की निगरानी करती थी और उसे साफ़-सुथरा रखती थी। रूलतिना जानती थी कि ऐसे मकानों का प्रबंध किस तरह किया जाता है। उसे आश्चर्य हुआ कि याराक और मेरी ने गोरे आदमियों की ज़िंदगी का तरीक़ा इतनी जल्दी कैसे अपना लिया। लेकिन उसे पूरा विश्वास न था कि इस तरीक़े से उन्हें ज़्यादा आराम मिलता होगा। यह नयी ज़िंदगी शायद उन्होंने इसलिए अपनायी थी कि याराक व्यापार-केंद्र में काम करता था और मेरी अस्पताल में। उसने सोचा : अगर वे चाहते हैं तो भले ही इस नये तरीक़े से रहें।

पास ही दीवार के उस ओर फ़र व्यापार-केंद्र का व्यवस्थापक जोहोव रहता था। रात में वह ज़ोरों से खर्राटे लिया करता और मेरी हंसते हुए याराक से कहती: "सुनो, वालरस किनारे पर चढ़ आया है।"

यह बड़ी मज़ेदार बात थी क्योंकि जोहोव बहुत कुछ वालरस से मिलता-जुलता था : वही मोटा उदर, वैसी ही झुकी हुई मूंछें और वैसी ही वालरस जैसी गुर्राहट।

हर सबेरे मेरी कॉफ़ी बनाती और याराक के लिए नाश्ते का ऐसा बंदोबस्त कर देती, मानो चार्ली ही मेज़ पर बैठा हो। वे हमेशा ख़ुश-दिल रहते थे, ज़ोर से बोलते थे और सूती या ऊनी कपड़े पहनते थे। मेरी का यौवन गदरा उठा और वह गोरी-मुखी स्त्री जैसी दिखाई

देनें लगी। अब याराक शायद ही कभी समुद्री शिकार के लिए जाता था और जब जाता था तो केवल दिल-बहलाव के लिए। लेकिन फिर भी उनके घर में खाने-पीने की चीज़ें हमेशा रहती थीं। याराक अब लोमड़ियां नहीं फंसाता था लेकिन फिर भी वह जो चीज़ें ख़रीदता था वे सर्वोत्तम शिकारी की ख़रीदारी से ज़रा भी कम न होती थीं। मेरी को भी डाक्टर से बाक़ायदा पैसा मिलता था और वह व्यापार-केंद्र में चाहे जो चीज़ ख़रीद सकती थी।

रूलतिना को इन सब बातों से बड़ा आश्चर्य हुआ। अब वह चार्ली वाले ज़माने की तरह झुककर नहीं चलती थी बल्कि पीठ उसकी सीधी रहती थी और सिर उठा हुआ। बेर्ता दौड़ी दौड़ी स्कूल से आती। पाठों के बारे में उसके पास समाचारों का ख़ज़ाना सा रहता। "स्कूल का कुछ उपयोग नहीं है," रूलतिना सोचती थी, "लेकिन अभी वह बच्ची है। भले ही खाये और खेले।"

सारी बस्ती में नवजीवन का संचार होता दिखाई दिया।

एक दिन सवेरे रूलतिना अपनी गर्भवती बेटी से मिलने आयी। याराक कॉफ़ी के इन्तज़ार में मेज़ के पास बैठा था। जब मेरी ने गरम गरम कॉफ़ी का प्याला उसके सामने रख दिया तो यकायक उसने अपनी मुट्ठी मेज़ पर दे मारी और बिल्कुल चार्ली की नक़ल करते हुए चिल्लाया :

"गोड डेम! कॉफ़ी ठंडी क्यों है?" वे सब – रूलतिना, मेरी और याराक – ठट्ठा मारकर हंस पड़े।

याराक ने कॉफ़ी पी ली, उसपर सील के मांस का एक टुकड़ा चबा लिया और फ़र-गोदाम के लिए रवाना हुआ। मेरी अस्पताल चली गयी। रूलतिना ने सफ़ाई का काम शुरू किया।

गोदाम में सफ़ेद लोमड़ियों की कई खालें थीं। स्टीमर के आने तक याराक उन सब का मालिक था। खालों को साफ़ करते हुए वह

किसी छोटे से गाने की धुन गुनगुना रहा था। याराक अच्छी तरह जानता था कि खालों पर चरबी का सूखा निशान भी नहीं रहना चाहिए। गर्मी के आते ही चरबी पिघल जायेगी और इससे फ़र पर पीला सा रंग चढ़ जायेगा जबकि उसका असल में बरफ़ की तरह सफ़ेद होना ज़रूरी है। याराक जो गाना गुनगुना रहा था वह इसी बात को लेकर था।

जोहोव गोदाम में आ पहुंचा। उसने बारहसिंगे के बछड़े की खाल का भारी रोवेंदार कोट पहन रखा था जिसकी कालर में ऊदबिलाव की फ़र लगी हुई थी। उसके सिर पर 'बीवर' का टोप था।

"नमस्ते!" याराक ने प्रसन्नतापूर्वक अभिवादन किया।

जोहोव चुपचाप लटकती हुई खालों की क़तार देखता गया, खालों की पूंछें पकड़कर हिलाता गया और फिर रूखे स्वर में बोला:

"इन सब को थैलों में भर दो। मैं हर थैले पर मुहर लगा दूंगा।"

"क्यों?" याराक ने अचरज के साथ पूछा। "खालें यहीं लटकती रहें, उनके लिए यही ठीक होगा। जब हमें समुंदर में स्टीमर दिखाई देगा तब भी इन्हें थैलों में भर देने के लिए हमारे पास काफ़ी वक़्त होगा। हम उन्हें फैलाकर खुली हवा में रख देंगे।"

"कल के छोकरे तुम, और मुझे फ़र का धंधा सिखाने लगे!" जोहोव ने खट से कहा। "अरे, क्रास्नोयार्स्क में मेरे बड़े बड़े गोदाम थे, समझे! पचीस साल से मैं यही धंधा कर रहा हूं।"

याराक ने सफ़ेद लोमड़ी की एक खाल निकाली और उसे उलटकर कहा:

"देखो जोहोव, यहां अंदर की ओर चरबी बची हुई है। बहेलिये अच्छी तरह नहीं जानते कि खालों को कैसे साफ़ करना

चाहिए। सफ़ाई के लिए उनके पास भूसी भी नहीं होती। चार्ली के ज़माने में मैं हमेशा भूसी से साफ़ करता था। चार्ली अच्छी तरह जानता था कि खालों की देखभाल कैसे करनी चाहिए। रूलतिना उन्हें साफ़ करती थी और मेरी भी – हम सब यह काम करते थे।"

"भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा चार्ली! मुझे क्या करना चाहिए यह मैं चार्ली से ज़्यादा अच्छी तरह जानता हूं। भूसी की बात छोड़ दो और वही करो जो मैंने कहा है।"

उत्तेजित होकर याराक ने रूसी तरीक़े से संवरे हुए अपने बालों के घने गुच्छे को एक झटका दिया और कहा:

"जोहोव, मैं मानता हूं कि वैसा करने से खालें ख़राब हो जायेंगी। चार्ली कहा करता था कि अगर ऐसी खालों को जहाज़ के माल-घर में भर दिया जाये तो वे पिघल जायेंगी क्योंकि माल-घर काफ़ी गरम रहता है। फ़र में चरबी के धब्बे लग जायेंगे और खालों का रंग पीला पड़ जायेगा।"

"जो कहा सो करो। औरतों को थैले बनाने का आर्डर दो। हम सारे माल की पैकिंग शुरू करेंगे।"

"जो मर्ज़ी! मैं पहले उन्हें साफ़ करके फिर खुली हवा में टांग देना चाहता था। इससे खालों पर पाला जम जायेगा और वे बरफ़ की तरह सफ़ेद हो जायेंगी!"

"जो मैंने कहा है वही करो। थैलों का आर्डर दे दो!" कहकर जोहोव बाहर चला गया।

याराक उस दरवाज़े की ओर घूरता रहा जहां से जोहोव गया था।

"वह भला आदमी नहीं है," आह भरते हुए याराक ने कहा और औरतों से बात करने के लिए यारंग के बाहर चला गया।

जाते समय वह खालों के बारे में सोचता रहा। एक यारंग में वह डाक्टर से मिला।

"कहो लाल व्यापारी, कैसा चल रहा है काम?" प्योत्र पेत्रोविच ने मुस्कराते हुए पूछा।

"काम अच्छा चल रहा है, लेकिन कुछ बुरा भी," याराक ने जवाब दिया और जोहोव के साथ हुई बातचीत डाक्टर को बता दी।

डाक्टर ने भी दिलचस्पी दिखायी। उसने याराक से फ़र के बारे में कई सवाल पूछे जिनमें एक यह था कि उसे कैसे साफ़ किया जाये, कैसे ठीक से रखा जाये। बरफ़ गिर रही थी लेकिन फिर भी वे बातचीत करते रहे।

जोहोव अपनी डेस्क के पास बैठा हुआ गोलियों वाले चौखटे की सहायता से हिसाब कर रहा था। इसी समय डाक्टर वहां आ पहुंचा।

"नमस्ते नाऊम इसिदोरोविच! हम एक ही जगह रहते हैं लेकिन एक दूसरे से शायद ही मिलते हैं।"

"डाक्टर, इसी में हमारा भला है। एक दूसरे के मार्ग से हम उतना ही दूर रहते हैं," जोहोव गुर्राया।

"सुनो, भले आदमी। अभी याराक के साथ मेरी बातचीत हुई है। फ़र के बारे में उसने कुछ दिलचस्प बातें कहीं... तुम्हारे हुक्म से वह नाराज़ हो गया है।"

जोहोव ने चौखटा एक ओर रख दिया और अपने चश्मे में से डाक्टर की ओर घूरकर देखा।

"वह नाराज़ हो मेरी बला से। मुझे उसकी कोई परवाह नहीं," उसने बेपरवाही के साथ कहा। "वह जो कहता है उसे तुम्हीं ग़ौर से सुनते रहो। तुम शायद उसे एक अच्छा-खासा क़िस्सागो बना दोगे।"

डाक्टर उदास होकर कमरे में चहलक़दमी करने लगा।

"माफ़ करो! यह क़िस्सागोई का मामला नहीं है। फ़र की देखभाल के बारे में वह जो कुछ कहता है उसमें काफ़ी तथ्य है।"

जोहोव ने क़हक़हा लगाया। थरथराती हुई तोंद पर रखे हुए उसके हाथ उठने और गिरने लगे।

"देखो डाक्टर, तुम पढ़े-लिखे आदमी हो और फिर भी नहीं जानते कि याराक अभी तक जंगली है," जोहोव ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में कहा। "अरे, इस धंधे में मैंने पचीस साल बिताये हैं। तुम क्या यह चाहते हो कि अब मैं उससे सबक़ लेना शुरू कर दूं? ऊंह, हम यह विषय छोड़ ही दें न!"

डाक्टर ने सिगरेट का कश लगाते हुए जोहोव की ओर सख़्त नज़र से देखा।

"मैं याराक को जंगली मानने के लिए तैयार नहीं हूं," उसने कहा। "मैं और भी कुछ कहना चाहता हूं – मुझे विश्वास है कि उसका कहना सही है। मेरी समझ में नहीं आता कि तुम उसकी अच्छी और वाजिब सलाह क्यों नहीं मानते। याराक जब तक खालों से चरबी हटाकर उन्हें साफ़ न कर दे तब तक तुम उनकी पैकिंग नहीं कर सकते।"

"माफ़ कीजिये डाक्टर साहब," जोहोव बरस पड़ा। "व्यापार-केंद्र का व्यवस्थापक मैं हूं। 'ओकारो' ने इस काम पर मुझे नियुक्त किया है, आपको नहीं। व्यापार-केंद्र की ज़िम्मेदारी मुझपर है। मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप अपना काम देखें। अस्पताल के काम में मैं कभी दख़ल नहीं देता और यह सिखाने की कोशिश नहीं करता कि मरीज़ों का इलाज आप किस तरह करें। हां, यह दूसरी बात है कि मरीज़ आपके पास आना ही नहीं चाहते। ग़रज़ यह कि इस बात पर आप ध्यान दीजियेगा।"

डाक्टर मौन रहा। उसके गाल लाल हो गये और नीचे का होंठ थरथराने लगा। वह उठ खड़ा हुआ और चुपचाप दरवाज़े की ओर चला गया।

"चुग़लख़ोर कहीं का!" डाक्टर के चले जाने पर जोहोव चिल्लाया।

क्रोध से थरथराता हुआ डाक्टर प्रायः दौड़ता हुआ अस्पताल पहुंचा। उत्तरी इलाक़े की उसकी ज़िंदगी में आज तक किसी ने भी उसे इतना नहीं उभाड़ा था। वह अपनी विवश निष्क्रियता के कारण स्वयं ऊब उठा था। अध्यापक के सहयोग में उसने जो भी उपाय किये वे सब के सब असफल रहे थे। लोग उसके अस्पताल में आना ही न चाहते थे। आज तक उसने एक ही मरीज़ का इलाज किया था। यह था एक लड़का जिसे खुजली हुई थी।

डाक्टर अस्पताल के बरामदे के पास आकर रुक गया। सीढ़ी का डंडा पकड़कर उसने एक गहरी सांस ली।

"डाक्टर, आप यहां क्यों खड़े हैं?" उसका उत्तेजित चेहरा देखकर मेरी ने विनम्रता से पूछा।

"ऐसे ही। मेरी, मैं अभी आता हूं। पहले मुझे जाकर अध्यापक से मिलना चाहिए।"

अध्यापक कुज़्मा दोज़ोर्नी अंगीठी के पास बैठा हुआ बारहसिंगे का मांस भून रहा था।

"ओहो डाक्टर! आइये, आइये। अभी बढ़िया गोश्त तैयार होता है," उसने ख़ुशी से कहा।

डाक्टर किताबों की एक छोटी सी अलमारी के पास गया। अलमारी घर ही पर बनायी गयी थी। उसने किताबों पर एक सरसरी नज़र डाली और कुर्सी पर बैठ गया।

अध्यापक का छोटा सा कमरा साफ़-सुथरा था। हर चीज़ क़ायदे से रखी हुई थी। घर पर बनाया गया एक सोफ़ा भी वहां था जिसपर बारहसिंगे की खालों का आवरण था। खाट और लिखने की डेस्क के पास भी बारहसिंगे की खालें पड़ी थीं। ऐसा लग रहा था मानो

डाक्टर यह सब पहली ही बार देख रहा हो। उसने मन ही मन कहा: "वाह कुज़्मा, बढ़िया जगह है तुम्हारे पास।"

अध्यापक एक गरम कड़ाही ले आया।

"डाक्टर, आप बरसात के बादल की तरह काले पड़ गये हैं। कहिये क्या बात है?"

"देखो कुज़्मा, उस बिसाती ने मेरी बड़ी बेइज़्ज़ती की। मेरे कलेजे में छुरा भोंक दिया। मैं आपे से बाहर हो गया। जी हुआ कि उसके मुंह पर एक घूंसा जमा दूं, लेकिन मैंने किसी तरह अपने को रोक लिया।"

"भाड़ में जाये वह! उसपर बिल्कुल ध्यान न दीजिये, प्योत्र पेत्रोविच। आइये, हम इस बढ़िया गोश्त का मज़ा लें। यह मुंह में गल सा जाता है।"

"कुज़्मा, एक मेहरबानी करो। मेरे यहां चले जाओ। उधर अलमारी में तुम्हें एक बोतल मिलेगी। उसे यहां ले आओ। इस वक़्त मुझे दवा के लिए उसकी ज़रूरत है।"

अध्यापक दौड़ता हुआ चला गया। आते समय वह जमी हुई एक बड़ी सी मछली भी ले आया।

"मेरा पड़ोसी पूरी बरफ़-गाड़ी भर मछलियां ले आया था। यह मछली मैं देखते देखते तैयार कर लूंगा।"

अध्यापक ने मछली को मेज़ पर रखकर तेज़ छुरी से उसके पतले टुकड़े काटने शुरू किये। तश्तरी में ये टुकड़े घुंघराले बन गये। मिर्च की बुकनी छिड़कने पर ये बड़े ही ज़ायक़ेदार हो गये।

कुछ पीने और ज़रा सा खाने के बाद डाक्टर ने कहा:

"जलपान के लिए यह फांकदार मछली बहुत अच्छी चीज़ है... ख़ैर कुज़्मा, मैं कुछ बातें करने के लिए उस भंडारी के पास गया था—और वह मेरे साथ इस तरह पेश आया!"

"लेकिन उसके साथ क्या बातें करनी थीं? मैं तो उसके पास महीने में सिर्फ़ एक बार जाता हूं। और अब तो मैं सोच रहा हूं कि एक टब भर मक्खन और बोरा भर चीनी ख़रीदकर अपने गलियारे में रख लूं ताकि उसका मुंह देखने की ज़रूरत ही न पड़े।"

डाक्टर ने फ़र वाला क़िस्सा उसे सुनाया। अध्यापक ने सुझाव दिया कि यह सारी बात क्रांति-समिति को लिख दी जाये।

"नहीं," डाक्टर ने कहा। "अभी नहीं। कहते हैं कि लोस अभी तक वापस नहीं आया है। होगा यह कि क्रांति-समिति से कोई दूसरा ही आदमी आ जायेगा जो इस बेवक़ूफ़ के दिमाग़ में अक़्ल नहीं भर सकेगा। इस काम के लिए लोस ही की ज़रूरत है।"

कुछ रुककर डाक्टर ने फिर कहा:

"मैं शायद सचमुच ही काहिल हूं। है न कुज़्मा? तुम स्कूल में काम करते हो और वह व्यापार-केंद्र में जबकि मैं मक्खी मारता हूं। मैं बिल्कुल ऊब जाता हूं। कहो, तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

"डाक्टर, आप फ़िक्र न करें। सब कुछ ठीक होगा। अब हम कुछ गोश्त ही खा लें।"

शाम कभी की हो चुकी थी लेकिन वे दोनों बैठे ही रहे।

व्यापार-केंद्र से स्त्रियां थैले बनाने के लिए मोटा टाट ले आयीं।

"अभी तक लोग इस भंडारी से पिंड नहीं छुड़ा सके हैं," अध्यापक ने कहा। "उसी को वे यहां का सब से बड़ा आदमी मानते हैं।"

"मैं जानता हूं। मेरी ने मुझे शिकारियों के साथ हुई बातें बता दी हैं। वह लोगों के दिमाग़ में यह विचार भर देने की कोशिश करता है कि बिना स्कूल के और बिना अस्पताल के उनका काम चल सकता है लेकिन बिना खुद उसके और उसके माल के नहीं चल सकता। देखा कैसी चाल चल रहा है? बड़ा ख़तरनाक आदमी है। परले सिरे का ढोंगी!"

चौदहवां अध्याय

धुपहले दिनों का आगमन हो रहा था। उत्तर ध्रुव-प्रदेश की लंबी रात समाप्त हो रही थी किंतु बसंत बहुत दूर था। कई दिनों से दक्षिणी हवा बह रही थी। किनारे से बरफ़ हट गयी थी जिससे समूचे तट के समीप खुले पानी का एक पट्टा तैयार हो गया था। हवा गरम थी और धूप में बरफ़ चमक रही थी।

लोस अपने दौरे पर से लौट आया। मकान में प्रवेश करने से पहले कुछ रुककर उसने अपनी बरफ़-गाड़ी के पास खड़े खड़े प्रशिक्षक ओसिपोव के साथ बातचीत की। लोस ने सुझाव दिया कि वह खुले पानी से फ़ायदा उठाकर फ़ौरन दो व्हेल-नावों के साथ उत्तरी तट के लिए रवाना हो।

"एक व्हेल-नाव तुम रुसाकोव को दे दो और दूसरी अध्यापक द्वोरकिन को। बसंत तक तुम वहीं रहो और हर बस्ती में एक एक मोटरिस्ट तैयार करो। मोटर चलाने का काम खुद रुसाकोव और अध्यापक भी सीख लें तो अच्छा ही होगा।"

"लेकिन निकीता सेर्गेयेविच, अगर रास्ते ही में व्हेल-नावों पर बरफ़ जम गयी तो?"

"तो क्या? उसे तोड़कर हटा दो। साथ में कुल्हाड़ियां ले जाओ। वहां तक पहुंचना आसान नहीं है लेकिन यह काम किया ज़रूर जा सकता है।"

"अच्छा, मैं आज रवाना होने के लिए तैयार हूं। लेकिन यह आपके गाल पर क्या हुआ?"

"कुछ नहीं। पाले के काटने की एक छोटी सी निशानी। कहो, यहां की कुछ नयी-पुरानी?"

"अन्द्रेई जुकोव ने एक तार भेजा है। सांस्कृतिक सेवा केंद्र बनाने के लिए कुछ रक़म मंजूर हुई है और उसी को केंद्राध्यक्ष नियुक्त किया गया है।"

"वाह भाई अन्द्रेई! बढ़िया काम रहा," लोस ने कहा।

इल्यूशा मोलोत्सोव दौड़ता हुआ बरफ़-गाड़ी के पास आया। "नमस्ते निकीता सेर्गेयेविच! आप यहां बाहर ही क्यों खड़े हैं? उधर रेडियो-स्टेशन में चलिये न। वहां मैंने आपके लिए एक खाट रख दी है। हर कोई यारंगों में रहने चला गया है।"

"हां, हमारा कोयला लगभग ख़त्म हो गया है," ओसिपोव ने कहा।

"धन्यवाद इल्यूशा, लेकिन मैं तो इल्यीच के यहां रहने जा रहा हूं। तुम वहां से खाट हटा लो और उसकी जगह मेरी डेस्क रख लो।"

"निकीता सेर्गेयेविच, वहां तो खाट और डेस्क दोनों के लिए जगह होगी।"

"नहीं नहीं," लोस ने ज़ोर देते हुए कहा।

"हम केवल हिसाबनवीस का कमरा गरम रख रहे हैं," ओसिपोव ने कहा। "उसे स्कर्वी की बीमारी हो गयी है। उसके पैर और मसूढ़े सूज गये हैं।"

"वह क्यों बीमार पड़ा? बुरे मिज़ाज के कारण? या बहुत ज़्यादा सोने के कारण? असल में स्कर्वी बसंत की बीमारी है और अभी बसंत का कोई ठिकाना नहीं।"

"हम उसे अस्पताल भेजना चाहते थे लेकिन वह मानता ही नहीं।"

"कोई ज़रूरत नहीं। मैं यहीं पर उसका इलाज करूंगा।"

लोस ने अपनी बरफ़-गाड़ी पर से एक थैला उतारकर अपने कंधे पर रख लिया और हिसाबनवीस से मिलने के लिए चला गया।

हिसाबनवीस बिस्तर में लेटा था। चेहरा उसका फीका पड़ गया था और दाढ़ी बढ़ गयी थी। लोस के प्रवेश करते ही उसने उदासीनता से ऊपर देखा।

"क्यों हिसाबनवीस, बीमार पड़ गये?"

"हां निकीता सेर्गेयेविच।"

"क्यों? कोयला काम नहीं आया?"

हिसाबनवीस ने एक आह भरी। "यहां तो मेरी मौत ही आ जायेगी।"

"हां, ज़रूर आयेगी। अभी हुआ ही क्या है? कुछ ही दिनों में तुम्हारे दांत गिरने लगेंगे।"

"निकीता सेर्गेयेविच, आप बड़े डाही आदमी हैं।"

लोस ने अपने थैले में से बरफ़ वाले सील के मांस का एक टुकड़ा निकाला और कहा: "लो, खा लो उसे। जब तक तुम्हारे दांत बाक़ी हैं, इसे चबा लो।"

"क्या माने? निकीता सेर्गेयेविच, मैं चुकची थोड़े ही हूं। मैं इसे नहीं खा सकता।"

"मैं तुम्हें खाने का हुक्म देता हूं!" तेज़ आवाज़ में लोस ने कहा। "अगर तुम ख़ुद इसे खाने की हिम्मत नहीं करते तो चलो, हम दोनों यह काम कर लें।" वह हिसाबनवीस के बिछौने के किनारे बैठ गया और मांस खाना शुरू कर दिया।

हिसाबनवीस ने अनिच्छा से एक टुकड़ा उठा लिया और उसे नाक-भौं सिकोड़ते हुए उलट-पुलटकर देखने लगा।

"स्कर्वी का यही सब से अच्छा इलाज है। अमंडसेन के साथ तुम्हारी बराबरी थोड़े ही हो सकती है। लेकिन उसने भी बिना किसी शिकवा-शिकायत के यह मांस खा लिया था। हर यारंग में चुकचियों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की। जब तुम उनके भोजन पर नाक-भौं नहीं सिकोड़ते तो उन्हें बड़ा अच्छा लगता है। और यह मांस स्कर्वी की अच्छी दवा है। मैं अपने अनुभव से जानता हूं। गत साल जब मैं स्कर्वी से बीमार पड़ा था तो यही एक चीज़ थी जिसने मुझे बचा लिया।"

"हां, वैसे यह चीज़ बुरी तो नहीं है," बरफ़ वाले मांस को चबाते हुए हिसाबनवीस फुसफुसाया।

इसी वक़्त रेडियो-ग्रापरेटर मोलोत्सोव ग्रंदर ग्राया।

"निकीता सेर्गेयेविच, साब्लेर नाम का एक ग्रादमी ग्रापसे मिलना चाहता है।"

"ग्रोहो साब्लेर? ठीक है, उसे रेडियो-स्टेशन में बुला लो। मैं ग्रभी ग्राता हूं।"

संध्या का समय था। रेडियो-स्टेशन में एक लैंप जल रहा था। साब्लेर ने रेडियो की यंत्र-सामग्री को बारीकी से देखा।

"स्टेशन ठीक तरह से काम कर रहा है न?" उसने मोलोत्सोव से पूछा।

"हां। पेत्रोपावलोव्स्क के साथ मैं बराबर संपर्क रखे हुए हूं," मोलोत्सोव ने साभिमान उत्तर दिया।

साब्लेर बहुत कुछ बोलता रहा। उसके भाषण में पारिभाषिक शब्दों की भरमार रही।

"ग्राप रेडियो इंजीनियरिंग भी जानते हैं?" मोलोत्सोव ने साश्चर्य पूछा।

"मैं जानता था," साब्लेर ने कहा। उसके कहने में वक्रोक्ति की झलक थी।

लोस ग्रा गया ग्रौर रेडियो-ग्रापरेटर की मेज़ के पास बैठ गया।

"नमस्ते साब्लेर महाशय!" दाढ़ी की घनी काली खूंटियों से ढके हुए पंछी के से चेहरे वाले इस छोटे-नाटे व्यक्ति की ग्रोर बारीकी से देखते हुए लोस ने कहा। "बैठिये।"

"मैं एक स्थानीय शिकारी हूं ग्रौर ग्रापके ग्रनुरोध पर यहां ग्राया हूं।"

लोस ने ग्रांखें सिकोड़कर उसकी ग्रोर देखा।

"मैं तो समझता हूं कि आप शिकारी नहीं, बल्कि इंजीनियर हैं।"

"एक ज़माने में मैं इंजीनियर था ज़रूर, लेकिन अब शिकारी हूं।"

"धर्मसभा के मुख्य प्रतिनिधि साब्लेर आपके कोई लगते हैं?"

"नहीं नहीं। केवल नाम की समानता है... अच्छा मैं अपना परका उतार लूं?"

"हां हां, जरूर।"

साब्लेर ने अपना फ़रदार टोप और बारहसिंगे के बछड़े की खाल वाला हल्का सा परका उतार लिया और उपेक्षाभाव से एक कीले पर टांग दिया। फिर अपने बिखरे हुए लंबे बालों को आराम से ठीक करते हुए बेंच पर बैठ गया। उसकी आंखें कुछ परेशानी के साथ ऊपर उठीं। उसकी छोटी सी नुकीली दाढ़ी उसके चेहरे पर खड़ी सी दिखाई दी। वह बड़ा सावधान लग रहा था।

"क्या आप सचमुच इंजीनियर हैं?"

"हां," साब्लेर ने तड़ से जवाब दिया।

"क्या मैं आपका डिप्लोमा देख सकता हूं?"

"मैंने वह जला दिया। फ़र के शिकारी के लिए फंदे की ज़रूरत होती है, डिप्लोमा की नहीं।"

"और आपकी बीवी डाक्टर है न?"

"थी।"

"तो यह बताइये कि ऐसे अच्छे अच्छे काम छोड़कर आपने शिकारियों की जंगली की सी ज़िंदगी क्यों अपनायी?"

"यहां के अपने जीवन से हम पूरी तरह संतुष्ट हैं—इतना ही नहीं, हम बड़े ख़ुश भी हैं। हमें पसंद हैं खुले मैदान और पूरी आज़ादी। यहां मुझपर कोई हुकूमत नहीं करता...हम ऐसे समाज में नहीं रहना चाहते जहां लोग भूखे भेड़ियों की तरह एक दूसरे से लड़ते हैं... यहां का हमारा जीवन सच्ची स्वतंत्रता का जीवन है।

मेरे लिए और मेरी बीवी के लिए यही उत्तर का आकर्षण है," पाइप निकालते हुए इंजीनियर ने कहा।

"क्या आप जानते हैं कि पुराने रूसी साम्राज्य के प्रदेशों में एक नये समाजवादी समाज का निर्माण हो रहा है, पुराने भेड़ियाई क़ानून ख़त्म कर दिये गये हैं और लोगों के परस्पर संबंध एकदम नये सिद्धांतों की बुनियाद पर क़ायम किये जा रहे हैं?"

"हां, मैंने सुना तो है... लेकिन यह सब आगे की बातें हैं। मैं इस समय पचास साल का हूं और इसी वक़्त अपनी आज़ादी का मज़ा लेना चाहता हूं।"

"माफ़ कीजिये, यह आगे की नहीं, आज की बात है।"

इल्यूशा चुपचाप इस संभाषण को सुनता रहा। उसने इस विचित्र आदमी को बड़ी जिज्ञासा से देखा।

"कैसी अजीब बात!" लोस ने कहा। "एक डाक्टर और एक इंजीनियर – अपना अपना पेशा छोड़कर शिकारियों की ज़िंदगी में रम गये!"

"शिकारी का फ़िलसफ़ा बिल्कुल सरल है – वह जानवर को मारता है और पेट भर खाता है। मैं पूरी तरह इस जीवन का समर्थक हूं।"

"लेकिन क्रांति के पहले आप शायद काम करते थे? ठीक है न?" लोस यकायक गरज उठा। "धातुओं में थकावट की प्रक्रिया के बारे में आपको दिलचस्पी थी न? फिर क्रांति के बाद आपने इन सब बातों को ताक़ पर क्यों रख दिया?"

"हां, मैं काम करता था। और मुझे इसका बड़ा दुःख है कि आज की ज़िंदगी मैंने इतनी देर से अपनायी।"

लोस ने उदास होकर सिगरेट के कश लगाने शुरू किये। बातचीत जारी रखने की उसकी इच्छा काफ़ूर हो गयी। फिर संभलकर उसने साधारण स्वर में पूछा:

"क्या आपकी बीवी यहां की जनता का इलाज करने म कुछ मदद देती है?"

"नहीं। वह इस नतीजे पर पहुंची है कि मनुष्य की शरीर-रचना में दख़ल नहीं देना चाहिए। यह एक ऐसा पूर्ण यंत्र है जो बिना बाहरी मदद के भी बीमारी का मुक़ाबला कर सकता है। उसकी राय में दवा एक धोखेबाज़ी है। बिल्कुल ओझाई की तरह।"

"बड़ी अजीब बात है। और कहिये, अगर किसी का पैर-वैर कटवाना हो तो? शरीर यंत्र यहां कुछ नहीं कर पाता।"

"वह मानती है कि बिना पैर का आदमी असल में आदमी है ही नहीं। उसके आगे सुख के सपने खड़े करके उसे धोखा नहीं देना चाहिए।"

"बड़ा अजीब फ़िलसफ़ा है आप लोगों का।"

"हर आदमी का अपना अलग फ़िलसफ़ा होता है।"

कुछ देर चुप्पी रही। फिर साब्लेर ने लोस को एक पत्र दिया।

"आपके भूगर्भ-शास्त्री ने आपको यह पत्र देने को कहा था," वह बोला।

लोस ने लिफ़ाफ़ा ले लिया। यह एक काम-चलाऊ लिफ़ाफ़ा था जो कई स्थानों पर धागे से टांका गया था। उसे सावधानी से देखकर उसने ब्लेड से ये धागे काट लिये। उसने दो-तीन बार पत्र पढ़ा। पढ़ते समय वह चुपचाप बैठे हुए साब्लेर की ओर कनखियों से जबतब देख रहा था।

"क्या आपने यह पत्र पढ़ा?" लोस यकायक बोल उठा।

"मैंने?" साब्लेर ने आश्चर्य के स्वर में पूछा। "आपने मुझे क्या समझ रखा है? दूसरों के पत्र पढ़ने की मेरी आदत नहीं है..."

"ख़ैर, मैं आपका विश्वास करता हूं," लोस ने बात काटते हुए कहा।

"मुझे इस ख़त में ज़रा सी भी दिलचस्पी नहीं," इंजीनियर ने कहा।

"अच्छा साब्लेर महाशय, तो सुनिये। मैं चाहता हूं कि आप और आपकी बीवी जहाज़रानी का मौसम शुरू होने से कुछ एक महीना पहले क्रांति-समिति के दफ़्तर में आ जायें। मैं आपको महाद्वीप की ओर भेजूंगा।"

"क्या मैं पूछ सकता हूं कि मैंने ऐसा क्या अपराध किया है जिसके लिए मुझे यह देशनिकाला दिया जा रहा है?" साब्लेर ने शांत स्वर में प्रश्न किया। ऐसा लगा जैसे वह इसके लिए पूरी तरह से तैयार बैठा था।

"कारण मैं तब बताऊंगा जब आप मय बीवी के यहां आ जायेंगे। बस। और देखिये, मेरा हुक्म तोड़ने की कोशिश न कीजियेगा। मिलीशियामैन ख़ोख़लोव आपको यहां ले आयेगा। अच्छा, अब आप जा सकते हैं।"

इंजीनियर उठ खड़ा हुआ, उसने अपना परका पहना और फ़रदार टोप हाथ में लिये हुए कहा:

"अब रात हो गयी है। क्या मैं रात भर बस्ती में सोकर सबेरे रवाना हो सकता हूं?"

"क्यों नहीं?"

इंजीनियर विदा हुआ। लोस देर तक बंद दरवाज़े की ओर ताकता रहा।

"बदमाश कहीं का!" लोस ने कहा। "सोचता है कि अपने सड़े से फ़िलसफ़े का हौआ दिखाकर मुझपर रोब डालेगा!"

"क्या बात है निकीता सेर्गेयेविच?" रेडियो-आपरेटर ने पूछा।

"भूगर्भ-शास्त्री ने लिखा है कि अमरीकी स्कूनर इस 'फ़िलसूफ़' से मिलते रहते हैं... उसे टुंड्रा में एक मोटर भी मिली है।"

पंद्रहवां अध्याय

एरमेन और प्रशिक्षक ओसिपोव व्हेल-नावों को समुद्र में उतारने की तैयारी कर रहे थे और एरमेन का बाप बूढ़ा इल्यीच किनारे पर खड़ा खुले सागर को बारीकी से देख रहा था। उसने आकाश की ओर ताकते हुए कहा :

"दक्षिणी हवा चार दिन चलती रहेगी। तब किनारे पर फिर बरफ़ आयेगी। मुझे लगता है कि मैं भी तुम्हारे साथ हो लूं।"

"आइये पिताजी, ज़रूर चलिये," एरमेन ने कहा। "हो सकता है कि रास्ते में हमें कठिनाइयों का सामना करना पड़े। वापसी सफ़र हम बरफ़-गाड़ी पर करेंगे। व्हेल-नावों पर हम दो बरफ़-गाड़ियां रख लें।"

"ठहरो," इल्यीच ने कहा। "मैं बाबा कोमो से बातचीत करता हूं।"

दक्षिणी हवा ने बरफ़ को किनारे से बहुत दूर भगा दिया था। किनारे पर बरफ़ की एक हल्की सी परत बची थी। इधर छोटी छोटी लहरियां उठ रही थीं लेकिन उधर दूर समुद्र में बड़ी बड़ी लहरें उछल रही थीं। सागर और धरती को आकाश छू सा रहा था। सूरज अभी तक नहीं निकला था।

बूढ़ा इल्यीच सफ़र की पोशाक पहने आ पहुंचा।

"हम लोग चल दें," उसने कहा।

एक व्हेल-नाव बरफ़ की परत पर से फिसलती हुई पानी में दाखिल हुई और दूसरी उसके पीछे पीछे चली आयी। आदमियों ने जल्दी जल्दी कुत्तों को नावों पर चढ़ाना शुरू किया। शिकारियों ने उन्हें बच्चों की तरह गोद में उठाया। कुत्ते गुर्राते रहे।

मोटरों की भनभनाहट शुरू हो गयी। पाल फहरा उठे। व्हेल-नावों ने किनारा छोड़ दिया।

लोस आगे बढ़ती हुई नावों को देखता हुआ किनारे पर खड़ा था। बूढ़ा इल्यीच पतवार पर बैठा था और पैनी नज़र से आगे देख रहा था।

लोस को याद आया कि किस तरह उसने इस बूढ़े को मौत के पंजे से बचाया था। "यह है काम करने का तरीक़ा," उसने संतोषपूर्वक सोचा। "इन लोगों को अंधविश्वास, अज्ञान और अंधेरे की गहरी खाई में से उबारना है। हम बोल्शेविक यह करके दिखायेंगे।"

व्हेल-नावें आंखों से ओझल हो गयीं और लोस इल्यीच के यारंग को लौट गया। उन दो आदमियों की ग़ैरहाज़िरी में भी पोलोग भरा भरा सा लग रहा था। लोस ने कपड़े उतारे, एक कंबल ओढ़ा और शीघ्र ही निद्रामग्न हो गया।

सबेरे याराक आ पहुंचा। एरमेन की बीवी ने उसके नाश्ते का बंदोबस्त किया। दोनों चाय के पहले सील की हड्डियां चूसते रहे। उन्होंने कोई बात नहीं की – इसलिए कि कहीं लोस की नींद न खुल जाये।

दूसरी दीवार के पास बच्चे सोये थे। बाहर से खड़खड़ाने वाली छत की आवाज़ आ रही थी। लोस यकायक जाग उठा और आवाज़ सुनता रहा।

"कैसी हवा चल रही है?" बिना करवट लिये हुए ही उसने पूछा।

औरत ने हड्डी एक ओर रख दी।

"अच्छी हवा है," उसने झट से जवाब दिया। "दक्षिणी हवा है न। व्हेल-नावें अब बहुत दूर जा पहुंची हैं। मोटर और पाल के कारण वे सरपट दौड़ती हैं। कुत्ता-गाड़ी में बैठकर आप उनका मुक़ाबला नहीं कर सकते!"

लोस ने करवट बदली और मेहमान को देख लिया। याराक सूती क़मीज़ पहने था। वह मुस्कराया और अपने बालों पर हाथ फेरने लगा।

"अरे, याराक आ गया!" बिस्तर में से उठते हुए लोस ख़ुशी से चिल्लाया।

"हां, मैं आ गया। फिर मेरी मदद करो," याराक ने कहा।

"क्यों, मेरी को तो कुछ नहीं हुआ?"

"नहीं, कुछ नहीं। सिर्फ़ बच्चा पैदा हुआ है। मेरी अब डाक्टर के यहां है। सब कुछ ठीक है। मेरी और रूलतिना कहती हैं कि डाक्टर बहुत भला आदमी है।"

"वाह, बधाई! अच्छा कहो, क्या बात है?"

"रोवेंदार खालों को बड़ा नुक़सान पहुंच रहा है," याराक ने हल्की दुखी आवाज़ में जवाब दिया। "कई खालों का सत्यानाश हो रहा है," कहते हुए उसने जोहोव के साथ हुए झड़प की बात बता दी। "खालों के थैलों को उसने लोहे की मुहरों से बंद कर दिया है। बस, यही ख़बर है," कहकर याराक रुक गया।

"बुरी ख़बर है," लोस ने कहा।

"बहुत ही बुरी। जोहोव बड़ा झूठा है। डाक्टर भी उसपर गुस्सा हो गया। उसने तुम्हें ख़त भी लिखा लेकिन जल्दी में मैं उसे लाना भूल गया।"

"ठीक है याराक, तुमने यह अच्छा किया कि यहां आ गये। बड़ी ज़रूरी ख़बर लाये हो तुम। मैं आज ही तुम्हारे साथ चलकर जोहोव से मिलूंगा।"

"लोस, आप फिर शिकार के लिए जायेंगे?" उस औरत ने चटखारा लेते हुए कहा।

लगातार सफ़र से लोस को थकान महसूस होने लगी थी। रोज़ बराबर छः-सात और कभी कभी दस-बारह घंटे बरफ़-गाड़ी पर बैठना

ग्रासान बात न थी। ग्रक्सर बरफ़ीले तूफ़ानों का भी मुक़ाबला करना पड़ता था। उसकी ताक़त पर सरदी का बुरा ग्रसर पड़ रहा था। फिर भी याराक के साथ वह उसी दिन रवाना हुग्रा।

पांचवें दिन की रात को वे लोरेन बस्ती में ग्रा पहुंचे। मेरी ग्रभी तक ग्रस्पताल ही में थी। याराक ने ख़ुद कॉफ़ी बनायी। कुछ खा-पीकर दोनों सो गये।

दूसरे दिन सबेरे जल्दी उठकर याराक मेरी ग्रौर ग्रपने नवजात बच्चे को देखने के लिए ग्रस्पताल की ग्रोर दौड़ा। इधर जोहोव कमरे में ग्रा पहुंचा। उसने लोस का ग्रभिवादन किया। उसके स्वर में स्निग्धता, मधुरता ग्रौर खिन्नता का ग्रजीब मिश्रण था।

"नमस्ते निकीता सेर्गेयेविच, ग्राप कैसे हैं? हमारे इलाक़े में ग्रापका ग्रागमन बड़ा ही दुर्लभ है।"

"हां, बड़ा ही दुर्लभ – ग्रौर यही बहुत बुरा है," लोस ने जवाब दिया।

"हां, सचमुच बुरा है। याराक ही को देखिये न। बिल्कुल बेक़ाबू हो रहा है। एक हफ़्ते के लिए बिना इजाज़त लिये ही कहीं चला गया। ग्रौर तो ग्रौर साथ में चाभियां भी ले गया। इधर मैं गोदाम में नहीं जा सकता ग्रौर खालों को तो खुली हवा में रखना ज़रूरी है।"

लोस ने चुपचाप उसकी ग्रोर देखा। "हां, यह ठीक नहीं हुग्रा," उसने ऐसे ही कह दिया।

"प्रशिक्षक ग्रोसिपोव ने ही इस गुस्ताखी के बीज बोये थे। साथी लोस, इन लोगों को ग्रनुशासन ग्रौर सुव्यवस्था के सबक़ सिखाने चाहिए, गुस्ताखी के नहीं। ये काले लोग हैं। उन्हें रूसियों की बात माननी चाहिए। हमसे सीख लेनी चाहिए।"

जोहोव धम्म से बैठ गया। कुर्सी चरमरा उठी।

"लेकिन ऐसी भी कुछ बातें हैं जो वे हमें सिखा सकते हैं..." उस छोटे से कमरे में चहलक़दमी करते हुए लोस ने कहा।

"ज़रूर, उन्हें कुछ बातें ज़्यादा अच्छी तरह मालूम हैं। उदाहरणार्थ, सीलों के बारे में।"

"जोहोव, आप पहले कहां काम करते थे? क्रांति के पहले?"

"मैं?.. मैं क्रास्नोयार्स्क में काम करता था। पचीस साल फ़र का धंधा किया है मैंने। मैं क्रास्नोयार्स्क में था और रुसाकोव था चीता में! हम विशेषज्ञ हैं। 'ओकारो' ने मुझे क्रास्नोयार्स्क से बुला लिया है। प्रबंध-समिति के अध्यक्ष मुझे अच्छी तरह जानते हैं। दोस्त ही हैं मेरे," जोहोव ने ज़ोर देते हुए कहा।

"अच्छा, मुझे अपना व्यापार-केंद्र दिखाइयेगा।"

"बड़ी ख़ुशी से। आइये, चलिये।"

दोनों जोहोव के कमरे में गये। कमरा फ़र्नीचर से अटा पड़ा था लेकिन फिर भी काफ़ी बड़ा लग रहा था। उसमें एक कपड़े की अलमारी, खाट, सोफ़ा, साईड बोर्ड, छः कुर्सियां और मि० थामसन वाली पुरानी झूलन-कुर्सी पड़ी थी। फ़र्श पर बारहसिंगों की खाल वाले क़ालीन बिछे थे।

"कहिये, कॉफ़ी लेंगे कि ज़रा सी शराब?" जोहोव ने पूछा।

"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

इधर जोहोव कपड़े पहन रहा था, उधर लोस कमरे का मुआयना कर रहा था।

"यह जगह तो फ़र्नीचर की दूकान जैसी लगती है। यहां आप अकेले रहते हैं और आपका सहायक याराक विवाहित होते हुए भी ख़ाली से कमरे में रहता है, यद्यपि आपकी व्यापार प्रणाली में उसे वही अधिकार प्राप्त है जो आपको। कहिये यह सब आपको ठीक

लगता है? मुझे तो ठीक नहीं लगता। आपको उसे यह कपड़े की अलमारी, साईड बोर्ड, और दो कुर्सियां देनी चाहिए।"

"लेकिन ये लोग इन चीज़ों के आदी नहीं हैं।"

"जो चीज़ अपने पास है ही नहीं उसके आदी होना मुश्किल होता है। लेकिन इन लोगों को भी आदत पड़ सकती है। ख़ैर, हम जाकर भंडार और गोदाम देख लें।"

लोस को भंडार में हर चीज़ बिल्कुल क़ायदे से रखी हुई दिखाई दी। फिर वे फ़र गोदाम में आ गये।

"देखिये, यहां पर ताला पड़ा हुआ है और चाभी है याराक के पास।"

"उसे बुला लीजिये।"

लेकिन बुलाने की कोई ज़रूरत नहीं पड़ी। याराक चाभी घुमाता हुआ खुद ही आ पहुंचा।

"बिना छुट्टी मांगे तुम भाग गये। इसका मतलब?" जोहोव ने पूछा।

"मैंने कुछ खास काम से उसे क्रांति-समिति में बुलाया था।"

गोदाम फ़र की बोरियों की ढालों से अटा पड़ा था। इनके अलावा लगभग एक हज़ार खालें क़तारों में टंगी थीं।

"सुना है कि आपकी फ़र ठीक से नहीं रखी गयी है, उन्हें ठीक से साफ़ नहीं किया गया है। क्या यह सच है?" लोस ने पूछा।

"यह सिर्फ़ उन लोगों की बकवास है जो असल में कुछ नहीं जानते," जोहोव ने उत्तर दिया। "हम अच्छी तरह जानते हैं कि फ़र को किस तरह रखना चाहिए।"

"देखिये, यह ख़ाली बकवास नहीं है। ख़ुद याराक ने मुझसे कहा है। फ़र के बारे में वह ज़रूर एकाध बात जानता है। सुनो याराक, मुझे लोमड़ी की एक-दो खालें दिखा दो।"

याराक ने झट से सफ़ेद लोमड़ी की एक खाल निकाल ली। "देखो लोस," खाल को उलटते हुए उसने कहा। "तुम्हीं देखो। देखा, अंदर की ओर कितनी चरबी बाक़ी है?"

"कहिये जोहोव, आपका क्या कहना है?"

"मैं इन खालों को बाद में साफ़ करवाना चाहता था।"

"नहीं, यह ठीक नहीं," याराक ने बात काटते हुए कहा। "आप तो इन खालों को भी बोरियों में भर देना चाहते थे। लेकिन आप यह कर न पाये क्योंकि मैं यहां से चला गया था।"

याराक ने खाल का फ़र वाला हिस्सा ऊपर किया और उसपर फूंककर लोस से कहा:

"देखो देखो। अंदर के रोवें पीले पड़ रहे हैं। जहाज़ के माल-घर में जब खालें गर्म होंगी तब यह पीला रंग ऊपर भी फैल जायेगा।"

जोहोव ने याराक की ओर घूरकर देखा। वह आश्चर्यचकित लग रहा था। "कैसा गुस्ताख़ बन गया है!" उसने सोचा। "दो दिन पहले मेरे साथ इस तरह बोलने की उसकी हिम्मत न होती थी!"

"साथी लोस, फ़र के लिए मैं ज़िम्मेदार हूं सदर दफ़्तर के प्रति। मैं जानता हूं कि मैं क्या कर रहा हूं," जोहोव ने कहा।

"आप जानते हैं इसमें कोई शक नहीं! लेकिन मैं अभी तक समझ नहीं पाया कि फ़र के इतने बड़े ज़ख़ीरे को बरबाद करने के माने क्या हैं? याराक ने जब फ़र की सफ़ाई का सुझाव आपको दिया तो आपने उसे ऐसा क्यों नहीं करने दिया? यह सब कुछ आप जानबूझकर तो नहीं कर रहे हैं?"

"हे भगवान! आप क्या कह रहे हैं, निकीता सेर्गेयेविच?" जोहोव ने चौंकते हुए कहा। "हो सकता है कि असावधानी से मुझसे कुछ भूल हो गयी है। क्रास्नोयार्स्क में हम हमेशा इसी तरह खालों को रेल-गाड़ी पर लादकर मास्को की फ़ैक्टरी में भेज देते थे..."

लोस ने याराक के हाथ से खाल छीन ली और जोहोव की नाक के नीचे उसे पकड़ते हुए क्रोधपूर्वक कहने लगा :

"देखिये, ज़रा इधर देखिये। मैं फ़र का विशेषज्ञ तो नहीं हूं लेकिन फिर भी मैं सब कुछ समझ सकता हूं। इस पचीस साल की अवधि में आप फ़र के व्यापार के बारे में छोटी छोटी चीज़ें भी न सीख पाये? नहीं, मैं आपका विश्वास नहीं करता। आप जानते नहीं कि स्टीमर को अपना सफ़र पूरा करने में चालीस-पचास दिन लग जायेंगे? क्या आप चाहते हैं कि ये सारी खालें जहाज़ के घुटनदार माल-घर में सड़ जायें?"

"नहीं, निकीता सेर्गेयेविच, यह कैसे हो सकता है? मेरे दिमाग़ में ऐसा विचार कभी नहीं आया। हो सकता है कि मेरी कुछ असावधानी, स्थानीय परिस्थिति का अज्ञान..."

"आप बहुत अच्छी तरह जानते हैं। और हम जानते हैं आपकी सारी चालबाज़ियां। अब यह नहीं चलने की!" जोहोव की नाक के आगे अपनी उंगली नचाते हुए लोस ने कहा।

याराक ने विजय की भावना से लोस की ओर देखा।

"आपको इतनी बड़ी सरकारी जायदाद सौंपी गयी है और आप हर तरह उसे नुक़सान पहुंचाने पर तुले हुए हैं। है न? जानते हैं इसे क्या कहते हैं?"

जोहोव चुप रहा।

"इन खालों को ठीक करने के लिए मैं आपको दस दिन की मुहलत देता हूं।"

"हम यह पांच ही दिन में कर लेंगे," याराक ने कहा।

"एक और चेतावनी मैं देना चाहता हूं: अगर मेरे जाने के बाद आपने याराक के साथ कुछ अड़ंगेबाज़ी शुरू की तो मैं आपको नौकरी से हटा दूंगा। समझे?"

"इस जगह पर मेरी नियुक्ति सदर दफ़्तर के बुरागोव ने की है और मुझे हटाने का अधिकार सिर्फ़ सदर दफ़्तर को है। मेरे पास जो हिदायतें हैं वे यही कहती हैं," जोहोव फुसफुसाया।

"ज़रूरत पड़े तो आपको बिना सदर दफ़्तर की सलाह के भी हटा देने की हिम्मत मुझमें है। याद रखियेगा।" लोस झट से घूमकर वहां से चल दिया।

दिल ही दिल में भनभनाता हुआ वह अस्पताल में आ पहुंचा।

"कहिये, आपने उस मकान का ठीक से बंदोबस्त कर दिया?" व्यापार-केंद्र की दिशा में संकेत करते हुए डाक्टर बोला। "याराक से जो कुछ मैंने सुना उससे मालूम होता है कि मामला आसान नहीं है।"

"धन्यवाद डाक्टर, जो आपने याराक को मेरे पास क्रांति-समिति में आने की सलाह दी। जानते हैं नतीजा क्या होता? हमपर लांछन लग जाता। वे लोग कह देते कि हम कम्यूनिस्ट नहीं बल्कि बेवक़ूफ़ों की एक टोली हैं। एक अर्धशिक्षित विशेषज्ञ को भी रास्ते पर नहीं ला पाते।"

"क्या यह संकेत भलमनसाहत का है?" डाक्टर ने कुछ नाराज़गी के स्वर में पूछा।

"मैंने यह ऐसे ही कहा था," लोस ने हंसते हुए डाक्टर की कमर में हाथ डाल दिया। "कहिये, आपका क्या हाल है?"

"ख़ास अच्छा तो नहीं। निकीता सेर्गेयेविच, ये लोग अस्पताल आना ही नहीं चाहते। इस जाड़े में कई स्त्रियों के बच्चे हुए लेकिन अस्पताल में एक भी नहीं आयी। अब मेरी इस समय अस्पताल में है और मुझे बेहद ख़ुशी हुई है। लेकिन इसकी भी क्या गिनती! वह तो हमारी नर्स है। असल में उसे बहुत पहले ही घर वापस चले जाना था लेकिन मैंने उसे इजाज़त नहीं दी। सोचा कि जब तक वह यहां

है, अस्पताल चलता रहेगा। मैं एक बात कहना चाहता हूं। अगर किसी का आपरेशन करना हो तो उसका कोई बंदोबस्त यहां नहीं है।"

"इस वर्ष हम एक सांस्कृतिक सेवा केंद्र बनाने जा रहे हैं जिसमें बीस बिस्तर वाला एक अस्पताल भी होगा और उसमें आपरेशन का कमरा भी होगा।"

"वाह, यह तो बहुत अच्छा होगा!" अपने छोटे से अस्पताल के बरामदे की सीढ़ियां चढ़ते हुए डाक्टर ने कहा।

"प्योत्र पेत्रोविच, मैं मेरी से मिलना चाहूंगा।"

"ज़रूर आइये। लेकिन यह अस्पताली चोग़ा पहन लीजिये।"

मेरी बिस्तर में लेटे लेटे कुछ लिख रही थी। उसके खुले बाल तकिये पर लोट रहे थे। लोस को लगा कि वह बड़ी ख़ूबसूरत है।

"हेलो मेरी!"

मेरी चौंक उठी और ख़ुशी से चिल्ला पड़ी:

"लोस!"

लोस उसके पास गया, उससे हाथ मिलाया और खाट के पास एक तिपाई पर बैठ गया।

"मेरी, क्या लिख रही हो?"

"तुम्हीं को चिट्ठी लिख रही हूं," उसने मुस्कराते हुए कहा।

"देखें, पढ़ लें।"

पत्र में दो-तीन ही पंक्तियां थीं:

"लोस, तुम बहुत ही खराब हो गये हो। तुम बिगड़ गये हो। तुम यहां आकर भी मुझसे बात नहीं करना चाहते ..."

लोस हंस पड़ा।

"तुम ग़लत समझ रही हो, मेरी। तुम्हारी चिट्ठी भी ठीक नहीं है। देखो, मुझे चिट्ठी मिली ही नहीं और फिर भी मैं आ पहुंचा। खैर कहो, कैसी हो तुम?"

"बहुत अच्छी। अब मेरे बेटा हुआ है। देखो न। यह याराक की तरह ताक़तवर होगा।"

लोस ने खटिया पर झांककर देखा और अचरज के साथ गाने की धुन में कहा:

"न ऽऽऽ हीं, जी नहीं! यह मुन्ना तो याराक से भी ज़्यादा ताक़तवर होगा।"

मेरी उठ बैठी और ओढ़ी हुई चादर उसकी कमर तक खिसक आयी।

रूलतिना वार्ड में आ गयी और दरवाज़े के पास उकड़ूं बैठ गयी।

"कहो रूलतिना, कैसी हो? मैं तुम्हारी बेटी और नाती से मिलने आया हूं।"

बुढ़िया ने मुस्कराते हुए सिर हिलाया। लोस ने उसके पास जाकर अपना हाथ आगे बढ़ाया।

रूलतिना ने उसे अपने हाथ में ले लिया और उसकी ओर देखते हुए कहा:

"तुमने मेरी को सुखी कर दिया। तुम सच्चे आदमी हो।"

"अच्छा, इस मुन्ने का नाम क्या रखा है?" लोस ने पूछा।

"अन्द्रेई," मेरी ने कहा।

"अन्द्रेई? वाह, बहुत अच्छा नाम है! अन्द्रेई याराकोविच।"

"मैं चाहती थी कि ये लोग उसे बेन कहा करें," रूलतिना ने खिन्नता से कहा। "मेरे एक बेटे का नाम था बेन... लेकिन इन्होंने अपनी ही पसंद का नाम रख लिया। ठीक है, अन्द्रेई ही सही," कहते हुए उसने अपना हाथ हिलाया और बाहर चली गयी।

मेरी ने बड़े जोश के साथ बता दिया कि वह अस्पताल में कैसे काम करती है, डाक्टर उसे किस तरह पढ़ाते हैं, व्यापार-केंद्र के मकान में रहना उसे कितना पसंद है और याराक कैसा अच्छा पति है।

उसकी ओर देखते हुए लोस ने सोचा: "यह ज़रूर खुश है। लेकिन बात उल्टी भी हो सकती थी!"

विदा होते समय लोस ने मेरी का हाथ पकड़कर दबाया। मेरी ने उसका हाथ अपने हाथ में देर तक रहने दिया और यकायक अपने होंठ उसपर टिका दिये... लोस शरमा गया।

"मेरी, ऐसा नहीं करना चाहिए! यह ठीक नहीं है," लोस ने तेवर चढ़ाते हुए कहा।

मेरी भी लज्जित हो गयी और चौंक उठी। उसे मालूम न था कि ऐसा करना ठीक नहीं है।

लोस ने सोचा कि मेरी को सदमा पहुंचा है। वह झुका, उसके ललाट का चुंबन किया और चुपचाप बाहर चला गया।

"मेरी का काम कैसे चल रहा है?" डाक्टर से मिलते हुए लोस ने पूछा।

"बड़ी होशियार लड़की है," प्योत्र पेत्रोविच ने कहा। "सिर्फ़ पढ़ी-लिखी नहीं है।"

"जानते हैं डाक्टर, मैं आपकी जगह होता तो उसे दाई की ट्रेनिंग देता। यह बड़ी महत्व की बात है।"

"मैं इसके बारे में सोचूंगा," डाक्टर ने कहा।

फ़र गोदाम में इस समय दस स्त्रियां रई के मोटे आटे से लोमड़ियों की खालें साफ़ कर रही थीं। चरबी हटाने में रूलतिना बड़ी माहिर थी। हर औरत अपने पास वाली खाल उसे दिखाती और निरीक्षण के बाद जब रूलतिना 'ठीक' कह देती तब वह खाल दूसरे कोने में रख दी जाती। चार्ली के साथ अपनी सारी जिंदगी में रूलतिना ने इतने उत्साह के साथ कभी काम न किया था। याराक ने कहा था कि हालांकि सभी खालें जोहोव के गोदाम में टंगी हुई हैं फिर भी उनका मालिक है लोस।

सोलहवां अध्याय

अलितेत अपने पोलोग में बारहसिंगे की एक फटी-पुरानी खाल पर लेटा था। उसकी नज़र छत पर गड़ी थी, चेहरा चिंताग्रस्त था और उसके साथ बात करने की किसी को हिम्मत नहीं थी। लेटे लेटे वह सोच रहा था: "आखिर हमारे किनारे पर हुआ क्या है? लोग ऐसा बर्ताव क्यों कर रहे हैं जैसा उन्होंने पहले कभी न किया था? मेरा ख्याल है कि इस सब की जड़ वह मास्टर है। गोई-गोई भी दौड़ता हुआ उसके पास चला जाता है। वह ताक़तवर आदमी है! और लोग हमेशा ताक़तवर आदमी की ओर दौड़ते हैं। लेकिन माल के हिसाब से वह ताक़तवर नहीं है। उन रूबल वाले कागज़ों को छोड़कर उसके पास कुछ नहीं है! लेकिन ये कैसे ताक़तवर कागज़ हैं? अब तो व्यापार-केंद्र भी इन कागज़ी रूबलों के बदले सामान दे रहा है।"

अलितेत ने अपने छोटे से संदूक़ में से एक कागज़ी रूबल निकाला और अपने हाथ में उसे मरोड़ने लगा। "क्या यह कागज़ का टुकड़ा सफ़ेद लोमड़ी से भी बढ़कर है?" उसने नफ़रत के साथ यह रूबल संदूक़ में फेंक दिया और फिर छत की ओर टकटकी बांधकर देखने लगा।

उसे कल अपने बेटे के साथ हुई बातचीत याद आयी। अध्यापक के वामचो का यारंग छोड़कर अपने लकड़ी वाले यारंग में चले जाने का क़िस्सा गोई-गोई ने बड़े दिलचस्प ढंग से बता दिया था। अध्यापक ने अपने यारंग में काई से जलने वाली पांच ढिबरियां रखी थीं और उन्हें अच्छी तरह से जलती रखने के लिए वाकत बराबर दौड़-धूप करती थी। हर महीने की शुद्ध प्रतिपदा को अध्यापक उसे इस काम के लिए कागज़ी रूबल देता था। इन रूबलों के बदले उसे इतनी

चीनी, कारतूस, आटा और तंबाकू मिलती थी मानो उसने लोमड़ी की बढ़िया खालें ही बेच दी हों। इसके अलावा वाकत क़बीला सोवियत की सदस्या थी और इसके लिए भी उसे काग़ज़ी रूबल मिलते थे। असल में वह अलितेत के यारंग का रास्ता तक भूल गयी थी।

नारगिनाउत नें दीन मुद्रा से अपने पति की ओर देखा, बारहसिंगे की एक अच्छी सी खाल निकाली और उसके पास बिछा दी।

"चार्ली," उसने कहा, "यह खाल ज़्यादा मुलायम है।"

"अब मैं माल के हिसाब से ताक़तवर आदमी नहीं रहा। मुझे अब पहाड़ियों में चले जाना चाहिए और सख़्त बिस्तर पर सोने की आदत डाल लेनी चाहिए। हटा लो यह खाल!" अलितेत ने कड़ककर कहा। उसने उस खाल को ठुकराकर हटा दिया।

कोराउगे एक कोने में बैठ ऊंघ रहा था। अलितेत की आवाज़ सुनकर वह चौंक उठा। आलस भाव से उसने अपनी ढोलक ली और बजाने लगा। ढोलक धम-धम बोलने लगी।

"बंद करो!" अलितेत ने ग़ुस्से में भरकर कहा। "तुम्हारी वजह से मैं सोच-विचार भी नहीं पाता। और अब वे भूत-पिशाच भी तुम्हारी बात नहीं मानते भी।"

कोराउगे अपनी निस्तेज और उदास आंखों से अलितेत की ओर घूरने लगा। उसने ढोलक एक ओर रख दी।

पोलोग में फिर सन्नाटा छा गया। अलितेत विचारों में उलझा हुआ था: "लोग गुस्ताख़ बन गये हैं। और तीग्रेना? वह तो जब कभी रूसियों की ख़बर आती थी, हमेशा कान खड़े करके सुनती थी। उनके पड़ाव की ओर वह दौड़ती हुई जाती थी। उसपर नज़र रखना बड़ा मुश्किल था। लेकिन अब वह एक बार भी उस रूसी से मिलने नहीं गयी। मास्टर ने उसे बुलाया था लेकिन वह नहीं

गयी। मास्टर खुद यारंग में चला आया लेकिन तीग्रेना ने उसकी बात तक सुनने से इन्कार कर दिया। सारी बातें ढाल पर से दौड़ने वाले कुत्ता-दल की तरह एकदम उलझकर रह गयी हैं।"

तीग्रेना एक अलग पोलोग में रहती थी। यहां अपना सारा समय वह तोरबाज़ों की सिलाई में बिता देती और शायद ही बाहर जाती। वह अपनी क़िस्मत के आगे झुक गयी थी। आये तो चला ही गया था। इधर रूसी व्यापार-केंद्र में जब अलितेत को माल देने से इन्कार किया जाता था तो उसे ग़ुस्सा आ जाता था। अलितेत को सिर्फ़ दो खालों के लिए माल दिया जाता था और बाक़ी खालें उसे वापस लानी पड़ती थीं। वह काग़ज़ी रूबल लेकर फ़र देने के लिए तैयार न था। अलितेत उदास हो गया। सफ़र पर जाना उसने छोड़ दिया। शायद ख़ाली बरफ़-गाड़ी पर सफ़र करने में उसे शरम आ रही थी।

और अब तीग्रेना पहली बार उसके लिए दुखी हुई।

अलितेत उसके पोलोग में आ पहुंचा। तीग्रेना ने विनय से उसकी ओर देखा।

"तुम्हें अब तोरबाज़ सिलाने की कोई ज़रूरत नहीं," उसने कहा। "ख़ानाबदोशों के पास सिर्फ़ तोरबाज़ ले जाने का कोई मतलब नहीं। मेरे पास न कारतूस हैं, न तंबाकू, न माचिस। है सिर्फ़ तांगों का कुछ खाना – लोहे के डिब्बों में बंद गोश्त, फल, मक्खन, प्याज़ और काली मिर्च।" अलितेत ने नफ़रत के साथ अपनी नाक सिकोड़ी और कहा: "चाहिए किसको ये चीज़ें?"

तीग्रेना ने चुपचाप अलितेत की ओर देखा।

"अगर इन गर्मियों में ब्राउन 'चोंच दर्रे' के पास नहीं आया तो हमें पहाड़ियों में जाना पड़ेगा। रूसियों से बिल्कुल दूर। इस साल उनके कई लोग हमारे किनारे पर आ पहुंचे हैं। मैं अब ख़ानाबदोश हो

गया हूं। मैं अपने सारे बारहसिंगे इकट्ठा करूंगा और उनका एक रेवड़ बना लूंगा। वैसे तो मेरे पास बहुत कम बारहसिंगे हैं। यही दो हज़ार होंगे। खानाबदोश मेरी हंसी उड़ायेंगे। मुझे कुछ और बारहसिंगे खरीद लेने चाहिए – लोमड़ियों की खालें देकर।" खिन्नता से उसने अपना सिर हिलाया और कहा : "लेकिन वे लोग खालों के बदले में बारहसिंगे नहीं देंगे। उन्हें तो चाहिए तरह तरह के सामान।"

असाधारण मानसिक श्रम के कारण अलितेत का चेहरा पसीना पसीना हो गया। वह बारहसिंगे की खाल पर तीग्रेना के पास पलथी मारकर बैठ गया।

"चार्ली, तुमने वह खबर सुनी?" अलितेत को नये नाम से पुकारते हुए तीग्रेना ने पूछा। "कुवेत नदी के पास एक और रूसी आया है। वह गरम लोहे से छुरे और छोटी कुल्हाड़ियां बनाता है। जो कोई उसके पास थोड़ा सा लोहा ले जाता है उसी को वह ये चीज़ें बना देता है। लेकिन लोगों के पास लोहा है कहां? पुरानी कुल्हाड़ियों से वह नयी कुल्हाड़ियां भी बनाता है।"

अलितेत का चेहरा खिल उठा। "तुम्हें कहां से यह खबर मिली?" उसने पूछा।

"यहां से गुज़रने वाले एक खानाबदोश ने मुझे बताया है। बहुत बढ़िया कुल्हाड़ियां बनाता है वह। बिल्कुल वैसी ही जैसी बारहसिंगा वालों को चाहिए।"

अलितेत विचारमग्न हो गया। यकायक उसका चेहरा चमक उठा।

"तुमने खुद सुनी थी यह खबर?"

"हां, खुद सुनी थी।"

अलितेत अपने भंडार की ओर दौड़ा और वहां बरफ़ को ठुकराकर उखाड़ना शुरू किया। अमरीकी चुंगी-चोरों द्वारा छोड़ी गयी लोहे की छड़ों का एक ढेर वहां पड़ा था। अमरीकी चुंगी-चोर

असल में ये छड़ें व्यापार के लिए ले आये थे लेकिन अलितेत ने इस लोहे के लिए एक भी खाल नहीं दी। फिर उन्होंने यह लोहा वहीं पर छोड़ दिया ताकि जहाज़ पर उसे वापस न ले जाना पड़े।

अलितेत ने चमकती हुई आंखों से उस लोहे की ओर देखा और मन ही मन कुछ फुसफुसाया। उसने बरफ़ में से एक छड़ निकाल ली। उसे ऐसा लगा कि यह छड़ हाथ में चिपकी सी जा रही है। उसने छड़ छोड़ दी और पाले से ठिठुरी जा रही अपनी उंगली चूसते हुए फुसफुसाया:

"एक छुरा – एक बारहसिंगा, एक कुल्हाड़ी – तीन बारहसिंगे।"

शाम के वक़्त उसने एक बरफ़-गाड़ी पर लोहा लाद लिया और दूसरी पर तांगों का खाना – मक्खन और फल। सब से ऊपर उसने सफ़ेद लोमड़ियों की खालों से भरा हुआ थैला रख दिया। गोई-गोई को अपने साथ लिये वह कुवेत नदी के मुहाने के लिए रवाना हुआ।

सत्रहवां अध्याय

अलितेत की विदाई के तुरंत बाद अध्यापक ने समुद्र में मोटर की आवाज़ सुनी। उसने वामचो को बुला लिया और दोनों जी तोड़ तेज़ी से किनारे की ओर दौड़े। नन्हे-मुन्नों का एक झुंड भी उनके पीछे हो लिया। यारंगों से स्त्रियां भी दौड़ी चली आयीं।

व्हेल-नाव जल्दी जल्दी किनारे की ओर आ रही थी।

जब उसका अगला हिस्सा बरफ़ के किनारे पर लगा तो अध्यापक हर्ष से चिल्ला उठा:

"हेल्लो! ओसिपोव!"

लोगों ने पलक झंपते झंपते जहाज़ को बरफ़ पर खींच लिया।

"हेल्लो द्वोरकिन! अभी तक ज़िंदा हो न?" ओसिपोव ने पूछा।

"हां, बेशक!"

"मैं आर्टेल के लिए यह व्हेल-नाव ले आया हूं। एक और रुसाकोव के यहां छोड़ दी है। यहां मैं तुम्हारे लिए एक मोटरिस्ट तैयार कर लूंगा और फिर कुत्ता-गाड़ी पर उसके पास चला जाऊंगा।"

"वाह, ख़ूब! तुम हमारे यहां कितने दिन रहोगे?"

"शायद दो हफ़्ते।"

"वामचो, इधर आओ," अध्यापक ने वामचो को बुलाया और ओसिपोव के साथ उसका परिचय करा दिया: "वामचो, क़बीला सोवियत का अध्यक्ष।"

ओसिपोव ने उससे हाथ मिलाया।

"वह और मैं तुमसे मोटर चलाना सीखेंगे," द्वोरकिन ने कहा। "अच्छा, अब हम स्कूल चलें।"

"मोटर हमें अपने साथ ले जानी चाहिए," ओसिपोव ने कुछ चिन्ता के साथ कहा।

उन्होंने मोटर को उसकी जगह में से उठाया और अध्यापक ने उसे अपने कंधे पर रख लिया। धातु के हिस्सों और विभिन्न रंगों के कारण मोटर चमक रही थी। अध्यापक के पीछे लोगों की अच्छी-ख़ासी भीड़ लगी हुई थी। इसी बीच बूढ़े इल्यीच ने कुल्हाड़ी लेकर व्हेल-नाव की बग़लों में लगी हुई बरफ़ को सावधानी से हटा दिया।

"द्वोरकिन, यह व्हेल-नाव किसकी है?" वामचो ने पूछा।

"हमारी ही है, और किसकी? हमारे आर्टेल की। और मोटर भी हमारी है!"

"ओ-ओ-ओ!" वामचो ने ख़ुशी से कहा। "मैं मानता हूं कि हमें एक बैठक बुलानी चाहिए।"

"बिल्कुल ठीक कहा तुमने! वामचो, सब लोगों को स्कूल के मकान में बुला लो।"

"औरतों और बच्चों को भी?"

"हां, हां, हर किसी को। जो आना चाहते हैं उन सब को!"

वामचो दौड़ता हुआ चला गया। तीग्रेना भीड़ को देखती हुई अलितेत के यारंग के बाहर खड़ी थी।

वामचो ने उसके पास जाकर कहा:

"तीग्रेना, लोस ने हमारे आर्टेल के लिए एक व्हेल-नाव भेजी है – मशीन वाली नाव! लोस ने हमें धोखा नहीं दिया। हम इसी वक़्त एक बैठक कर रहे हैं। आओ न तीग्रेना!"

"नहीं वामचो, बैठक में मैं नहीं जाऊंगी।"

"तुम्हारी मर्ज़ी," कहकर वामचो अगले यारंग की ओर बढ़ा।

उसकी ओर देखते हुए तीग्रेना ने सोचा: "यह अब डरपोक नहीं रहा। साहसी बन रहा है। रूसियों के साथ उसने दोस्ती कर ली है।"

यकायक उसके मन में विचार आया कि स्कूल चली जाऊं जहां चारों ओर के यारंगों में से लोग दौड़ते हुए जा रहे थे। वह ख़ुद उस अध्यापक से बातचीत करना चाहती थी जिसे दढ़ियल सरदार ने यहां भेज दिया था। "आये उस दढ़ियल को प्यार करता था। लेकिन उसने आये को हमारे मुल्क से हटाकर उधर रूस क्यों भेज दिया? वामचो ने कल कहा था कि आये नया क़ानून लाने के लिए वहां गया है। लेकिन नया क़ानून तो ख़ुद ही यहां चला आया है। सारे किनारे पर लोग नये क़ानून की बात कर रहे हैं। वामचो मुझे धोखा दे रहा है। लगता है कि उसने रूसियों से उसी तरह धोखेबाज़ी सीख ली है जिस तरह अलितेत ने मेरिकनों से सीखी थी।"

अलेक उसके पास चली आयी।

"तीग्रेना, चलो हम स्कूल में जायें," उसने कहा। "ख़ूब ख़बरें वहां सुनने को मिलेंगी। बड़ा मज़ा आयेगा। वह मास्टर बड़ा अच्छा आदमी है।"

तीग्रेना ने चुपचाप उस ग्रौरत की ग्रोर देखा जो हमेशा वामचो का क़दम पीछे खींचती थी ग्रौर जो ग्रब तीग्रेना को नयी राह पर ले जाने की कोशिश कर रही थी।

तीग्रेना के तेवर बदल गये। "तुम्हीं जाग्रो, ग्रकेली!" उसने कहा।

लेकिन जैसे ही ग्रलेक ग्रांखों से ग्रोझल हुई कि तीग्रेना ने भी वही राह पकड़ ली।

स्कूल के कमरे में लोगों की ठसाठस भीड़ लगी थी। ग्रध्यक्ष-मंडल की मेज़ के पास बैठे थे बूढ़ा इल्यीच, वामचो, ग्रध्यापक ग्रौर स्कूल की देखभाल करने वाली वाकत।

स्कूल में प्रवेश करते ही तीग्रेना को ऐसा महसूस हुग्रा कि वह वहां ग्रजनबी है। उसे लगा कि हर कोई उसकी ग्रोर देख देखकर हंस रहा है। उसने स्कूल के बरामदे में से झांककर कमरे में देखा। वामचो के पास बैठी हुई वाकत पर उसकी नज़र पड़ी। इसी ग्रौरत ने ग्रौर वामचो ने चाहा था कि मरे हुए कुत्तों को ग्रलितेत बस्ती से बाहर कर दे। वह हमेशा सिर झुकाये चलती थी ग्रौर ग्रलितेत के साथ दबी ज़बान से बात करती थी। लेकिन वही ग्रौरत ग्रब सिर तानकर चलने लगी थी। यह सब हुग्रा कैसे? क्या इसका कारण यह है कि वह हमेशा उस लकड़ी वाले यारंग में जाती है ग्रौर हर समय उस रूसी मास्टर से बातचीत करती है?

तीग्रेना ने ग्रब बूढ़े इल्यीच पर एक नज़र डाली। वह कैसी गौरव की भावना के साथ लोगों की ग्रोर देख रहा था।

ग्रध्यापक ने मोटर उठाकर मेज़ पर रख दी।

"साथियो!" उसने कहा। "यह है मोटर। ग्रौर ग्रापकी व्हेल-नाव किनारे खड़ी है। ग्रब ग्राप लोगों को कभी भूखे नहीं रहना पड़ेगा। वसंत में हम सच्चा शिकार करेंगे। इस मोटर वाली व्हेल-नाव पर हम बहुत जल्दी वालरसों का पीछा कर सकेंगे।"



"मास्टर सच कह रहा है," बूढ़ इल्यीच ने कहा। "व्हेल-नाव पर यहां आते समय मैंने देखा कि यह कैसी चलती है। अरे, इसके लिए पालों की भी ज़रूरत नहीं। खुद ही चलती है। एक बार भी डांड़ चलाये बिना हमने तीन दिन में अपना सफ़र पूरा कर लिया था। मास्टर ने बिल्कुल ठीक कहा—बसंत में बड़ा अच्छा शिकार होगा।"

हर कोई जिज्ञासा और आश्चर्य से मोटर की ओर टकटकी बांधे देख रहा था।

"इसमें एक अच्छा पिशाच रहता है," इल्यीच ने कहा। "और उसका नाम है गेस-ओ-लीन। हां, प्रशिक्षक ने यही बताया था।"

अठारहवां अध्याय

प्राइवेट कुज़ाकोव लाल सेना का एक सेवानिवृत्त सैनिक था। लोस के मित्र तोल्स्तूख़िन के कमान में लाल सेना की ख़ास ड्यूटी वाली टुकड़ी में वह काम करता था। लाल सेना में नौकरी करते समय ही वह पार्टी में दाख़िल हुआ था और अब कम्यूनिस्ट बनकर महाद्वीप की ओर वापस जा रहा था। कोलिमा से बेरिंग सागर तक जाकर वहां से स्टीमर पर सफ़र करने का उसका इरादा था लेकिन तट-प्रदेश में वह भटक गया और फिर जाड़ों में उसे वहीं ठहरना पड़ा।

कुज़ाकोव एक शिकारी के यारंग में रहता था। उसके पास कोई ख़ास काम न था। एक दिन ऐसे ही समय गुज़ारने के लिए उसने एक टूटी हुई कुल्हाड़ी की मरम्मत करना शुरू किया। उसने उसे फिर से गढ़ लिया। यह देखकर बस्ती के शिकारियों को बड़ा ही आश्चर्य और आनन्द हुआ। कुज़ाकोव पेशे से लुहार था और उसने यहां फिर से वही काम शुरू किया था। लंबी शिशिरकालीन रात में अपना समय बिताने के लिए वह कुल्हाड़ियां और छुरे बनाने लगा।

कुज़ाकोव पोलोग में बैठा हुआ एक टूटे-पुराने छुरे के टुकड़े को ढिबरी पर गरम कर रहा था। इसी समय अलितेत वहां आ पहुंचा।

"नमस्ते," अलितेत ने नम्रतापूर्वक कहा।

"नमस्ते, नमस्ते," कुज़ाकोव ने उत्तर में कहा और फिर तपकर लाल बने लोहे को एक पत्थर पर रखकर छोटी सी हथौड़ी से ठोंकने लगा।

अलितेत बड़ी लगन के साथ देखता रहा कि हथौड़ी के नीचे मुलायम, गरम लोहे की शक्ल किस तरह बदलती जा रही है। कुज़ाकोव ने छुरे को फिर ढिबरी पर धर लिया।

"तुम भी रूसी सरदार हो?" अलितेत ने डरते डरते पूछा।

"किसने कहा कि मैं सरदार हूं! मैं तो लुहार हूं लुहार।"

कुज़ाकोव द्वारा बनायी गयी एक कुल्हाड़ी अलितेत ने उठा ली और उसे सहलाता रहा।

"बहुत अच्छी कुल्हाड़ी है। सौदागर यहां लाते हैं सिर्फ़ मेरिकन और रूसी कुल्हाड़ियां। लेकिन ख़ानाबदोशों को तुम्हारी जैसी कुल्हाड़ियां पसन्द हैं।"

"मेरे पास अगर लोहा होता तो जानते हो मैं ऐसी कितनी कुल्हाड़ियां बना देता?"

"लोहा मेरे पास है," अलितेत ने झट से कहा। "काफ़ी लोहा है। मेरी बरफ़-गाड़ी पर पड़ा है।" कुज़ाकोव की आंखों में आंखें गड़ाकर अलितेत ने चापलूसी के स्वर में पूछा: "देखना चाहते हो?"

"चलो देखें!"

दोनों बरफ़-गाड़ी के पास चले गये और कुज़ाकोव के मुंह से एक आश्चर्योद्गार निकल गया।

"ओहो, कितना बढ़िया लोहा है!" वह सहसा बोल उठा। "अगर मेरे पास सच्ची निहाई और भट्ठी होती तो मैं यहां कुल्हाड़ियों के ढेर लगा देता!"

"निहाई और भट्ठी? ये क्या होती हैं जी?" कुज़ाकोव का चेहरा बारीकी से निहारते हुए अलितेत ने उत्सुकता से पूछा।

जब कुज़ाकोव ने इनका मतलब समझा दिया तो अलितेत को यकायक याद आया कि कुछ साल पहले ये चीज़ें उसने टुंड्रा में पड़ी हुई देखी थीं। 'गंजी खोपड़ी' नामक चट्टान के पास अमरीकन इन्हें छोड़ गये थे।

"हैं, मेरे पास हैं ये चीज़ें!" अलितेत ख़ुशी से चिल्लाया। "दो दिन में मैं ले आता हूं। मैं दिन-रात बरफ़-गाड़ी दौड़ाता रहूंगा। हल्की सी बरफ़-गाड़ी पर मैं जल्दी जल्दी हो आऊंगा।"

कुछ ही दिन बाद अलितेत निहाई, भट्ठी और कुछ कोयला ले आया। कोयला उसे बरफ़ के नीचे मिला था।

अलितेत ने एक तंबू गाड़ लिया और उसमें लुहार की भट्ठी लगा दी। वह बराबर हथौड़ा चलाने का काम करता रहा। उसके हथौड़े में से चिनगारियां छूटने लगीं। अब हर दिन अलितेत कुल्हाड़ियों के ढेर के ढेर अपनी बरफ़-गाड़ी पर लादने लगा। एक हफ़्ते में पूरी बरफ़-गाड़ी कुल्हाड़ियों से भर गयी। कुज़ाकोव को उसने तांगों वाली खाने की चीज़ें दे डालीं और एक थैला लोमड़ियों की खालें भी। फिर वह गाड़ी भर लोहा और ले आने के लिए जल्दी जल्दी घर चला गया।

इसी बीच कुज़ाकोव के यहां मेहमान आ गये थे। ये थे वामचो और प्रशिक्षक ओसिपोव। ओसिपोव के आने से कुज़ाकोव को बड़ी ख़ुशी हुई क्योंकि वह रूसी भाषा सुनने के लिए तरस रहा था। उसने ओसिपोव को यहां की अपनी ज़िंदगी के बारे में, अलितेत के बारे

में और उसके लिए बनायी जाने वाली कुल्हाड़ियों के बारे में सब कुछ बता दिया।

ओसिपोव ने शांतिपूर्वक कुज़ाकोव की बातें सुन लीं और फिर पूछा:

"तुम कम्यूनिस्ट हो न?"

"हां। यहां मैं गरमियां आने तक रहूंगा और फिर स्टीमर पर चला जाऊंगा। अलितेत ने मुझे एक कुत्ता-दल देने का आश्वासन दिया है। बड़ा ज़िंदादिल आदमी है वह! उसके जैसा हथौड़ा चलाने वाला तो मैंने अपनी सारी जिंदगी में नहीं देखा!"

"ऊंह! लालची कहीं के!" ओसिपोव ने आह भरते हुए कहा। "अच्छे कम्यूनिस्ट रहे तुम! जानते हो अलितेत कौन है? वह कुलक है। चुंगी-चोर है। सारे टुंड्रा पर वह हुकूमत चलाता था। यह तो बुरा था ही, लेकिन इधर वह तुम्हारे जैसे बेवक़ूफ़ कम्यूनिस्टों की भी ख़बर ले रहा है!"

कुज़ाकोव चौंक उठा। "अरे, अरे!" उसने कहा। "ज़रा ज़बान रोककर कहो न!"

"सुन लो बेवक़ूफ़!" ओसिपोव गरज उठा। "हमने कुलकों को नियंत्रित करने और उन्हें अर्थ-व्यवस्था से उखाड़ फेंकने की नीति अपनायी है और एक तुम हो कि अलितेत को फिर सहारा दे रहे हो। क्या यह बात कभी तुम्हारे मोटे दिमाग़ में आयी भी थी? तुम हमारे सारे काम की बुनियाद ही उखाड़ रहे हो। अरे, अलितेत ने तो तुम्हें ख़रीद ही लिया है! बल्कि पूरी तरह से निगल लिया है, और तुम्हें इसका पता तक नहीं। जानते हो, अगर क्रांति-समिति के प्रतिनिधि लोस को इस लुहारशाला का पता लग जाये तो वह तुम्हारी गर्दन ही मरोड़ देगा।"

"लेकिन इन बातों को मैं कैसे जान लेता?" तुतलाते हुए कुज़ाकोव ने पूछा।

"चलो, यहां की दूकान बढ़ा दो और हमारे साथ चलो। क्रांति-समिति में हम तुम्हारे लायक़ काम ढूंढ़ लेंगे। तुम अगर काम करने को उत्सुक हो तो हमारे लिए काम करो, कुलकों के लिए नहीं।"

वामचो ने निहाई और भट्ठी बरफ़-गाड़ी पर रख दी। और दूसरे दिन सबेरे तीनों एनमकाई के लिए रवाना हुए।

सूरज चमक रहा था। जमी हुई बरफ़ की परत पर से बरफ़-गाड़ी दौड़ रही थी। लीक का कोई निशान नहीं पड़ रहा था। किनारे के पास फिर बरफ़ की चट्टानें उभर आयी थीं। क्षितिज तक असीम हिमक्षेत्र फैले हुए थे। वामचो बरफ़-गाड़ी के साथ दौड़ रहा था। जब वह कुछ विश्राम के लिए बैठा उस समय ओसिपोव बाहर कूद पड़ा। कुज़ाकोव भी दौड़ पड़ा।

शाम को अलितेत की बरफ़-गाड़ी से उनकी मुठभेड़ हो गयी। उसपर इतना लोहा लदा हुआ था कि कुत्ते उसे खींच ही नहीं पा रहे थे और अलितेत को उनकी मदद करनी पड़ रही थी। अलितेत परेशान हो उठा और उसने दबी, थरथराती आवाज़ में पूछा:

"कुज़ाकोव, अरे तुम कहां चले?"

"क्रांति-समिति में," कुज़ाकोव ने जवाब दिया।

"वामचो, आगे बढ़ो," ओसिपोव ने कहा।

अलितेत देर तक अपनी लोहे से लदी हुई बरफ़-गाड़ी को ताकता रहा और फिर पता नहीं क्यों उसने अपने अगुआ कुत्ता को एक ज़ोरदार लात जमा दी।

उन्नीसवां अध्याय

थूथनियां नीचे किये और बरफ़ में लड़खड़ाते हुए कुत्ते धीरे धीरे बरफ़-गाड़ी को खींच रहे थे। पश्चिमोत्तर दिशा से बहने वाली चुभीली हवा हिमकणों को अलितेत के चेहरे पर मार रही थी लेकिन

वह हवा की ओर गाल किये निश्चल बैठा था और कुत्तों को टिटकारता भी न था। बरफ़ीला तूफ़ान चारों ओर ऊधम मचाने लगा, सितारे ओझल हो गये और अंधेरे में केवल उन कुत्तों की नाचती-चमकती दुम दिखाई दी जो धुरे में जुते हुए थे। आधी रात का समय हो गया था।

अलितेत का गाल उसे दिशा-सूचक का काम दे रहा था। हवा के रुख़ के मुताबिक़ अलितेत अपना रुख़ बदल लेता था। आदमी को अंधा सा बना देने वाले बरफ़ीले तूफ़ान की उसे परवाह न थी। वह केवल कुज़ाकोव के बारे में सोच रहा था। "उसे वे क्यों ले गये? मैं मानता हूं कि यह नया रूसी भी सरदार है। लेकिन वामचो कैसा बेवक़ूफ़ बन गया है! वही तो उस रूसी को यहां ले आया था!"

"मेरकिचकिन!" अलितेत ने ज़ोर से गाली दी। "ख़ैर, अब तो मैं बिना कुज़ाकोव के भी कुल्हाड़ियां बना लूंगा। हथौड़ा चलाने के लिए मैं ओम्रितागेन को रख लूंगा – बड़ा ताक़तवर है वह। लोहे को पकड़ने और मोड़ने-घुमाने का काम ख़ुद मैं करूंगा।"

भावी काम के विचार से ख़ुश होकर वह बरफ़-गाड़ी पर से उछल पड़ा, कुत्तों पर गुर्रा उठा और तूफ़ान का मुक़ाबला करते हुए गाड़ी का धुरा पकड़कर कुत्तों की मदद करने लगा।

अलितेत के गालों पर बरफ़ की एक हल्की सी परत जम गयी थी जिसे उसने हाथ से हटा लिया और फिर गाड़ी पर बैठकर गालों पर बरफ़ मलने लगा। पीड़ा के कारण उसके होंठ सिकुड़ रहे थे। "अरे, यह क्या हुआ?" उसने अपने आपसे पूछा। "बरफ़ मुझे पहले कभी नहीं काटती थी। अब शायद मैं सच्चा आदमी नहीं रहा।"

गालों पर बरफ़ मल चुकने के बाद वह फिर उछल पड़ा, कुत्तों पर गरज उठा और अंधेरे में बरफ़-गाड़ी के साथ साथ दौड़ने लगा।

लुहार भट्ठी वाली बस्ती सो गयी थी। वहां के बाशिंदों को किसी मेहमान के आने की उम्मीद नहीं थी और स्वाभाविक ही था कि अलितेत के स्वागत के लिए कोई आगे नहीं बढ़ा। वह सीधे लुहार भट्ठी वाले तंबू की ओर दौड़ा। उसने कुत्तों को रोक लिया। और जल्दी जल्दी अंदर घुस गया। उसने एक बड़ी सी अमरीकी माचिस जलायी और देखता क्या है कि निहाई और भट्ठी नदारद है। अलितेत एक आह भरकर रह गया। वह अंधेरे में पलथी मारकर बैठ गया और सिर झुका लिया। देर तक वह चुपचाप बैठा रहा, यहां तक कि उसके पैर सुन्न पड़ गये। तंबू भी कराहता सा लग रहा था और कैनवास की फड़फड़ाहट से कलेजा कांप उठता था।

अलितेत ने माचिस जलायी, लकड़ी के एक टुकड़े को तराशकर कुछ खपचियां निकालीं और आग जला दी। आग में कुछ कोयले डालकर उसने उनपर हवा करना शुरू किया। आग की लपटों से सारा तंबू रोशन हो उठा। अलितेत को एक कोने में हथौड़ी दिखाई दी। उसकी नज़र उसपर गड़ सी गयी।

बाहर एक कुत्ता भौंकने लगा और फिर सारे का सारा दल उसका साथ देने लगा। पड़ोस वाले यारंग से एक आदमी तंबू में आ पहुंचा।

"चार्ली, तुम यहां बैठे क्या कर रहे हो? आओ, मेरे पोलोग में चलो। वहां चाय है और गोई-गोई वहीं सोया है," उसने कहा।

अलितेत ने सिर उठाया और बिना कुछ कहे उस आदमी को घूरकर देखने लगा।

"आओ चार्ली, यहां बड़ी ही सर्दी है।"

"यहां की ये चीज़ें कौन ले गया?" निहाई वाले कुंदे की ओर संकेत करते हुए अलितेत ने पूछा।

"वे रूसी ले गये। पहले उन्होंने कुछ बातचीत की और फिर वामचो ने सारी चीज़ें बरफ़-गाड़ी पर लाद दीं। इन रूसियों को

पहचान लेना बड़ा मुश्किल है! नया आदमी ग़ुस्सा हो गया। वामचो उसे ले आया था। वह भी सरदार बन गया है। उसी ने मुझे बताया था।"

"मैं उनका पीछा करूंगा और वामचो को भगा ले जाऊंगा–जंगली बारहसिंगे की तरह उसे फंदा डालकर यहां, इस तंबू में घसीट लाऊंगा। उसका पतलून उतारकर उसे ठंडे लोहे पर बिठाऊंगा–फिर देख लेना यह कैसा सरदार है... अच्छा यह बताओ कि वह कुज़ाकोव को कहां ले गया?"

"लोस के पास।"

"क्या कह रहे थे वे लोग?"

"अरे, चिड़ियां जब आपस में बोलती हैं तो कोई समझता है कि वे क्या कह रही हैं?"

"और उस पागल, बेवक़ूफ़ वामचो ने क्या कहा?"

"उसने कहा कि हमारी बस्ती में से किसी एक आदमी को लोस के पास एक बड़े जलसे में जाना चाहिए। ओम्रितागेन ने अपनी ख़ुशी से जाना मंज़ूर कर लिया।"

"ओम्रितागेन ने? अरे, मैं तो उसकी मदद से कुल्हाड़ियां बनाने वाला था।"

"वे लोग उसके पास बटनों की एक माला छोड़ गये थे। वह हर दिन सबेरे उसमें से एक बटन निकाल लेता है। जब धागे में बटन न रहेंगे उस समय वह 'बड़ी बातचीत' के जलसे में जायेगा।"

"आगे कुछ न कहो!" अलितेत ने चिढ़कर कहा। "एक शब्द भी नहीं। अच्छा हो, हम चलकर चाय पियें।"

गोई-गोई बारहसिंगे की खाल पर बैठा हुआ पेन्सिल के ठूंठ से काग़ज़ पर कुछ लिख रहा था। अलितेत ने उसके हाथ से काग़ज़ और पेन्सिल छीन ली। उसने काग़ज़ टुकड़े टुकड़े कर डाले और बड़े उन्माद

में पेन्सिल को चबा चबाकर उसकी लुगदी सी बना दी। लड़का अपराधी की सी नज़र से बाप की ओर देखता रहा।

"पिताजी, आप ही ने तो मुझसे पढ़ने के लिए कहा था," उसने नरमी से कहा।

"कोई ज़रूरत नहीं पढ़ने-वढ़ने की। जाओ अपनी कुत्ता-गाड़ी जोत लो। मैं जल्दी ही उसपर चला जाऊंगा। मेरे कुत्ते जब आराम कर चुकेंगे तब तुम मेरी बरफ़-गाड़ी पर घर आ जाना।"

"लेकिन चार्ली, शायद अकेले उसे रास्ता न मिलेगा," यारंग के मालिक ने कहा।

"वह ढूंढ़ लेगा," अलितेत फुसफुसाया। "चलो, चाय पिलाओ।"

बीसवां अध्याय

चाय पी चुकने के बाद अलितेत फिर लुहारख़ाने में आ पहुंचा। लुहारख़ाने की जो कुछ निशानी यहां बची थी वह थी एक छोटी सी हथौड़ी। अलितेत देर तक उसकी ओर देखता रहा और फिर उसे उठाकर लकड़ी के कुंदे पर खटखटाने लगा। आख़िर उसने तंबू को उखाड़कर बरफ़-गाड़ी पर रख लिया और एनमकाई के लिए रवाना हो गया।

तीसरे दिन रात को अलितेत घर पहुंचा। उसने तीग्रेना को जगाया और ढिबरी जलाने के लिए कहा।

तीग्रेना ने आयवाम को बारहसिंगे के बछिये की खाल उढ़ा दी और सील की चरबी में पड़ी हुई काई की ढिबरी जला दी। एक छोटी सी लौ से सारा पोलोग रोशन हो उठा। जलती हुई खपची के सहारे उसने एक और ज्योति जलायी और जल्दी जल्दी दोनों को मिलाकर एक बड़ी लौ पैदा कर ली।

इसी बीच नारगिनाउत पोलोग में पहुंची।

अलितेत ने तिरछी निगाहों से उसे देखते हुए कहा :

"तुम क्यों यहां आयीं? बेवक़ूफ़ औरत हो तुम! जाओ, उधर कुत्तों की देखभाल करो। उनका साज़ उतारो और उन्हें खिलाओ-पिलाओ। पर हां, उन्हें ज़रा सुस्ता लेने दो। वे तेज़ दौड़ते रहे हैं और इससे उनके बदन गरम हो गये हैं। जाओ!"

नारगिनाउत चुपचाप चली गयी।

तीग्रेना ने छत की धरन से बारहसिंगे की एक खाल निकाली और खोलकर अलितेत के पास बिछा दी। खाल पर लोटते हुए अलितेत ने कमर सीधी की।

"बस्ती में कितने रूसी हैं?" छत ताकते हुए उसने पूछा।

"एक। बस, वही मास्टर," तीग्रेना ने जवाब दिया।

"और बाक़ी कहां चले गये?"

"दो तो आज सबेरे ही चले गये।"

"वामचो भी उनके साथ चला गया क्या?"

"नहीं, वह यहीं है।"

अलितेत ने करवट बदली। "यहां है?" उसने फुसफुसाते हुए पूछा।

फ़र का परदा ऊपर उठा और ओझा कोराउगे का पीला चेहरा पोलोग में दिखाई पड़ने लगा।

"चार्ली, तुम आ गये?" कांपती हुई आवाज़ में उसने पूछा।

"जाकर सो जाओ! आख़िर तुमसे मदद ही क्या मिल सकती है? चले जाओ।"

कोराउगे ने घबड़ाकर अपना थरथराता हुआ हाथ अपनी विरल दाढ़ी की ओर बढ़ाया।

"चार्ली, तुम दिन-ब-दिन बदतमीज़ होते जा रहे हो," बेटे की ओर घूरते हुए उसने कहा।

"मैं थक गया हूं। बहुत थक गया हूं।" अलितेत ने अपना हाथ हिलाकर कहा, "सो जाओ।"

कोराउगे फुसकारता हुआ पोलोग में से चुपचाप बाहर चला गया।

"चार्ली," तीग्रेना ने कहा, "उससे कह दो कि वह मेरे पोलोग में कभी न आये। चार्ली, अगर वह मेरे पास आया तो बहुत बुरा होगा।"

अलितेत ने कुछ न कहा। इसका मतलब था कि वह तीग्रेना से सहमत है।

तीग्रेना ने ढिबरी के ऊपर केतली टांग दी और बारहसिंगे का जमा हुआ मांस काटने लगी।

"मेरे दिमाग़ में न जाने कितने विचार उठ रहे हैं," अलितेत ने कहा। "सभी तरह के विचार... ले जाओ गोश्त यहां से। मैं नहीं खाऊंगा..."

तीग्रेना चौकन्नी हो गयी। यकायक उसे घबड़ाहट मालूम होने लगी।

अलितेत उसके पास सरक आया। उसकी आंखें चमक रही थीं। वह फुफकार उठा:

"मैं उसका ख़ात्मा कर दूंगा।"

"तुम वामचो को मार डालना चाहते हो क्या?"

"हां, चाहता हूं। यह पागल आदमी मेरी राह का रोड़ा है।"

"कैसे तुम उसे मारोगे! छुरे से या बंदूक़ से?"

"मैं अपने हाथों से उसका गला घोंट दूंगा।"

तीग्रेना ने चुपचाप चाय की ईंट निकाल ली और छुरी से उसके टुकड़े काटकर केतली में डालने लगी।

"चार्ली," उसने शांत स्वर में कहा, "अगर तुम वामचो का गला घोंट दो तो वह मास्टर तुम्हें जान से मार डालेगा। वह उसका जिगरी दोस्त है। मास्टर ताक़तवर आदमी है... और कहो, फिर पड़ोस वाले क़बीले के रेवड़ों में से तुम्हारे बारहसिंगे कौन बटोरेगा?"

अलितेत ने पाइप भरकर कश लगाना शुरू किया।

"तुम्हारी यह राय है कि मुझे वामचो को छोड़ देना चाहिए?"

"हां, यही मेरी राय है। तुम अंधेरी रात में पहाड़ियों में भाग जाओ तो भी ये रूसी तुम्हारा पीछा कर लेंगे। उनके काफ़ी लोग अब किनारे पर आ चुके हैं। वामचो उनका बड़ा दोस्त है। वह बिल्कुल बदल गया है। अब वह डरपोक नहीं रहा।"

"आख़िर उसमें इतनी ताक़त आयी कहां से?" अलितेत ने पूछा।

"मैं क्या जानूं? लेकिन शायद उन रूसियों से उसे यह ताक़त मिली है। वालरसों के शिकार के लिए वे उसके पास एक व्हेल-नाव ले आये हैं। लोहे की मोटर चलाना भी उन्होंने उसे सिखा दिया है। हर रोज़ स्कूल के बाहर वामचो एक पट्टे के सहारे उस मोटर को झंझोड़ता है। मोटर धुआं उगलती है, ग़ुस्से में आती है, गुर्राती है और फिर शोर मचाने लगती है। और उसके बीच में होती है आग। यह मोटर व्हेल-नाव को शिकार की जगह तक ले जायेगी। 'चुकोत्स्क नाक' अंतरीप से यहां तक व्हेल-नाव को यही मोटर लायी थी।"

अलितेत की सारी शक्तियां कानों में केंद्रित हो गयीं।

"कहां है वह मोटर?" उसने पूछा।

"वे उसे स्कूल में ताले में बन्द करके रखते हैं। व्हेल-नाव किनारे पर वामचो के यारंग के सामने है।"

तीग्रेना ने उसके लिए चाय का एक प्याला भर दिया।

"लो, पियो," उसने कहा।

अलितेत ने प्याला एक ओर सरका दिया। उसके शरीर में उत्तेजना की आग धधक उठी और आंखों में द्वेष की चिनगारियां चमक उठीं। वह रेंगकर पोलोग के बाहर चला आया।

"तीग्रेना," छोटे से गलियारे में से उसकी आवाज़ सुनाई दी। "ज़रा रोशनी जलाओ। यहां अंधेरा है।"

तीग्रेना ने जलती हुई खपची ऊपर उठा दी। "चार्ली," उसने घबड़ाकर पूछा, "तुम कहां जा रहे हो?"

अलितेत के हाथ में लंबे हत्थे वाली अमरीकी कुल्हाड़ी थी।

"वामचो को तुम कुल्हाड़ी से मारना चाहते हो?" तीग्रेना ने पूछा।

चूं तक न करते हुए अलितेत अंधेरे में ग़ायब हो गया।

तीग्रेना ने झटपट कपड़े पहने और दौड़ती हुई जाकर वामचो के यारंग के पास रुक गयी। लेकिन अंदर से सिर्फ़ सोये हुए लोगों की सांसों की आवाज़ आ रही थी।

तीग्रेना ने सोचा कि "वह यहां नहीं है। शायद व्हेल-नाव के पास चला गया है।"

वह वामचो के यारंग में घुसी और अंधेरे में तब तक टटोलती रही जब तक वह न मिला। फिर उसे झंझोड़कर उसने कहा:

"वामचो, अलितेत कुल्हाड़ी लेकर व्हेल-नाव के पास गया है।"

अलेक की नींद टूट गयी। उसने उठकर ढिबरी जलायी। वामचो अपने बिस्तर में उठ बैठा था और अपने तोरबाज़ पहन रहा था। वह इतनी जल्दी में था कि झट से तोरबाज़ पहन न सका।

"जाओ, मास्टर को बता दो," तीग्रेना ने कहा।

रात के बादलों में से इधर उधर कुछ सितारे टिमटिमाते हुए दिखाई दे रहे थे। अंधेरे में स्कूल का मकान एक विशाल ग्रेनाइट शिला-खंड सा लग रहा था।

स्कूल से होते हुए वामचो सीधे तट की ओर दौड़ा। अलितेत अपने हाथ में कुल्हाड़ी लिये नाव की पेंदी पर सवार था।

वामचो को देखते ही वह सकपका गया और उसके हाथ की कुल्हाड़ी खड़खड़ाती हुई पेंदी में गिर गयी। वामचो ने लंबे हत्थे के सहारे कुल्हाड़ी उठा ली।

"क्यों रे निसाचर, तुम यहां कुल्हाड़ी लेकर क्यों आये?" उसने ज़ोरदार आवाज़ में पूछा।

अलितेत चुपचाप व्हेल-नाव में बैठा रहा।

जवाब की राह न देखते हुए वामचो ने कुल्हाड़ी दूर फेंक दी और अलितेत को एक धक्का दिया। अलितेत गिर गया, लेकिन जल्द ही उठ खड़ा हुआ। दोनों एक दूसरे के आमने-सामने खड़े थे। व्हेल-नाव उनके बीच में थी।

"तुमने न जाने कितने आदमियों को डुबोकर उनकी बीवियों को बेवा बना दिया है!" वामचो ने कहा। "अब तुम चाहते हो कि वे बिना व्हेल-नाव के भूखों मरें, यही न?"

"प्रेतात्माओं को मत जगाओ!" अलितेत ने कहा और कुछ रुककर बात आगे चलायी, "यह भारी-भरकम व्हेल-नाव है। मैं उसे तोड़ने-फोड़ने आया था लेकिन यह मैं कर न सका। मुझे साहस ही नहीं हुआ। मेरी कुल्हाड़ी ने मेरा हुक्म मानने से इन्कार कर दिया। मैं मानता हूं कि मेरी डूबी हुई व्हेल-नाव से यह काफ़ी अच्छी है... मुझे चक्कर आ रहा है। मुझे मेरी कुल्हाड़ी लौटा दो और फिर मैं घर चला जाऊंगा।"

वापस अपने पोलोग में आकर अलितेत चाय पीता हुआ बैठा रहा। अनगिनत निराशापूर्ण विचारों ने उसे घेर लिया था।

"अपनी व्हेल-नाव के लिए मैंने उस मेरिकन को काफ़ी बड़ी क़ीमत दे डाली थी। लेकिन इस व्हेल-नाव की क़ीमत वामचो कहां से चुकती करेगा?" उसने तीग्रेना से पूछा।

"कहते हैं कि सब मिलकर इसकी क़ीमत चुका देंगे। सारा आर्टेल इसका दाम देगा।"

"बकवास न करो तीग्रेना," अलितेत ने मुंह चिढ़ाते हुए कहा। "इन बेवाओं के पास पैसा आयेगा कहां से? क्या तुम जानती नहीं

कि उनके यारंगों में बारहसिंगों की सड़ी-गली खालों के अलावा और कुछ नहीं? और तांगों को ये खालें थोड़ी ही पसन्द हैं? उन्हें तो चाहिए लोमड़ियों की खालें। रूसियों को अभी तक इस बात का पता नहीं है। जाओ, और उस मास्टर को बता दो। बस, अकेले मुझसे ही उन्हें अच्छी क़ीमत मिल सकती है।"

"मैं उसके पास नहीं जाऊंगी। मेरी ज़बान रूसी के साथ बात करने से इन्कार कर देगी," तीग्रेना ने कहा।

"मेरी ज़बान भी," अलितेत ने संतोष के साथ हामी भर दी।

"सुना है कि सब लोग थोड़ी थोड़ी करके पांच जाड़ों में सारी क़ीमत चुका देंगे। वालरस की खालों, दांतों और रूबल वाले काग़ज़ों के ज़रिये यह क़ीमत अदा की जायेगी।"

"लोमड़ी की खालों के बारे में ये रूसी क्या जानते हैं? ख़ाक? ऐसी अच्छी व्हेल-नाव के लिए मैं लोमड़ी की कई खालें दे दूंगा! अगर ब्राउन होता तो सिर्फ़ वालरसों की खालों के लिए ऐसी नाव कभी न देता। वह जानकार आदमी है।"

ब्राउन की याद आते ही तीग्रेना बोल उठी:

"मैं समझती हूं कि तुम्हारा वह ब्राउन धोखेबाज़ है। उसकी नियत बुरी है। मुझे लगता है कि वह तुम्हारे पास कुछ भी नहीं लायेगा। जब उन अमरीकियों ने जलता पानी पी लिया तो मैं बराबर उन्हें भांप रही थी। याद रखो, वे तुम्हें धोखा देंगे। तुम्हारे पास कुछ नहीं लायेंगे।"

"चुप रहो!" अलितेत चिल्लाया। "तुम्हारी ज़बान बहुत लंबी हो गयी है। बस, औरत को ज़रा मौक़ा दे दो और देखो—उसकी बेवक़ूफ़ी की कोई हद नहीं रहेगी।"

तीग्रेना ढिबरी की ओर मुड़ी और बत्ती ठीक करने लगी।

अलितेत खालों पर पसर गया और आह भरकर बोला:

"हमें पहाड़ियों में चले जाना चाहिए... यहां इन रूसियों को देख देखकर तो आंखें दुखने लगेंगी... और वह आर्टेल... मेरे पास कुल्हाड़ियां तो कई हैं, लेकिन साथ साथ शराब न हो तो उन्हें सस्ते में बेचना पड़ेगा। ख़ैर, मैं ख़ुद ही शराब बना लूंगा।"

तीग्रेना आश्चर्य से अलितेत की ओर घूरने लगी। उसे लगा कि अलितेत का सिर फिरने लगा है।

"तुम मेरी ओर इस तरह क्यों घूर रही हो जैसे उल्लू ख़रगोश की ओर घूरता है?" अलितेत ग़ुर्राया।

"तुम शराब बना सकते हो?" तीग्रेना ने पूछा।

"हां, बना सकता हूं। बस, पानी में आटा मिला दो, उसे गरम खालों से ढंक दो और ढिबरी के ऊपर धर दो–उधर विंचेस्टर की नली में से जलता पानी चूने लगेगा। लेकिन मेरे पास आटा ही नहीं है। रूसी व्यापारी मुझे एक बार एक पूद से ज़्यादा आटा देता ही नहीं। बेवक़ूफ़ है। लगता है कि उसे मेरी लोमड़ियों वाली खालों की कोई ज़रूरत नहीं। वह मुझे उनके बदले रूबल के काग़ज़ देना चाहता था।"

सबेरा हो गया लेकिन अलितेत बराबर सोच-विचार में डूबा रहा। उसने चिल्लाकर नारगिनाउत से कहा:

"पड़ोसियों के पास जाओ और लोमड़ी की एक एक खाल देकर एक एक पूद आटा ख़रीद लो। यह भाव सुनकर मारे ख़ुशी के उनकी आंखें बाहर निकल आयेंगी और वे अपने पास का सारा आटा बेच डालेंगे। वह रूसी एक खाल के लिए चार पूद देता है और मैं तो सिर्फ़ एक मांग रहा हूं।"

नारगिनाउत अपने काम पर चल दी। अलितेत ने सील का मांस खा लिया और सो गया। उसे थोड़ी सी ही नींद आयी और वह भी बार बार उचटती रही। नारगिनाउत वापस आ पहुंची।

"चार्ली, आटा नहीं मिल सकता। मैंने तूमातूगे की बीवी के साथ एक छोटी सी बोरी का सौदा पटा लिया था लेकिन मास्टर ने उससे कह दिया कि वह तुम्हारी वाली खाल न ले। फिर उसने अपना आटा वापस ले लिया। मास्टर ने कहा, 'तुम्हारे पास कुत्ते हैं, तुम खुद ही व्यापारी यारंग में चली जाओ।' और उसने वही किया।"

"मेरकिचकिन!" अलितेत ने गाली दी। उसकी भौंहें सिकुड़ गयीं और वह सोचने लगा: "ऐसी बात है तो तुम यह ख़बर उड़ा दो कि अलितेत आटे की हर छोटी सी बोरी के लिए एक एक कुत्ता दे रहा है," अंत में उसने कहा। "बारह बोरियों के लिए मैं पूरा कुत्ता-दल दे दूंगा। वैसे मेरे पास हैं भी बहुत कुत्ते। सिवा खाने के वे करते भी क्या हैं?"

नारगिनाउत बाहर चली गयी और उसने जो ख़बर उड़ायी वह शीघ्र ही यारंगों में पहुंच गयी।

वामचो फ़ौरन दौड़ता हुआ मास्टर के पास पहुंचा। ह्वोरकिन ने ख़बर सुन ली और कहा:

"वामचो, तुम्हें एक अच्छा सा कुत्ता-दल चाहिए न?"

"हां, हां, मुझे ज़रूर चाहिए," वामचो ने अधीरता से कहा। "ओह, अच्छे कुत्ता-दल की मुझे कितनी ज़रूरत है! उसपर तेज़ी से सफ़र किया जा सकता है। लेकिन मेरे पास आटे की सिर्फ़ चार बोरियां हैं और मुझे चाहिए बारह।"

"अच्छा वामचो, मैं तुम्हें अपनी आठ बोरियां दे दूंगा। तुम मुझे बाद में लौटा देना।"

"हां, हां। मैं लौटा दूंगा। मेरे पास लोमड़ियों की खालें हैं और रूबल के कागज़ भी। मैं जल्द ही रुसाकोव के पास जाऊंगा।"

"ठीक है वामचो। उससे कुत्ते ख़रीद लो। बड़ा सस्ता सौदा है, है न?"

वामचो ने पलक मारी। "जैसे मुफ़्त ही में सौदा पट रहा है," उसने मृदुता से कहा। "मुझे लगता है कि उसका सिर घूमता जा रहा है। एक खाल के लिए रुसाकोव चार बोरियां देता है। और एक कुत्ते की क़ीमत लोमड़ियों की पांच खालों के बराबर है। उसके सभी कुत्ते बड़े अच्छे हैं।"

"जाओ वामचो! ख़रीद लो उन्हें!" अध्यापक ने निश्चयपूर्वक कहा।

अपने यारंग में पहुंचने पर वामचो बाहरी किवाड़ की बग़ल के सहारे खड़ा होकर आसमान का मुआयना करने लगा, मानो इसी एक चीज में उसकी दिलचस्पी हो।

अलितेत अपने यारंग के पास खड़ा खड़ा समुद्र की ओर देख रहा था।

वामचो अपने को रोक न पाया। "चार्ली," वह यकायक गरज उठा। "आटा लेकर तुम कुत्ता-दल देना चाहते हो?"

"हां।"

"वैसे मेरे पास अपने कुत्ते तो हैं लेकिन अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें बारह बोरियां दे दूंगा। लेकिन सिर्फ़ अच्छे कुत्तों के बदले, समझे?"

अलितेत के माथे पर बल पड़ गये। "अरे पगले!" वह चिल्लाया। "तुमने मेरे पास कभी घटिया क़िस्म का कुत्ता देखा है? तुम वही दल ले लो जिसपर गोई-गोई घर लौट रहा है!"

"हां, उस दल के बदले मैं आटा दे सकता हूं। मैं गोई-गोई से मिलने जाऊंगा।"

"लेकिन पहले आटा तो लाओ।"

वामचो ने झटपट आटे की बारह बोरियां बरफ़-गाड़ी पर लादीं, और उन्हें अलितेत के यारंग के पास उतारकर जल्दी जल्दी गोई-गोई से मिलने के लिए चला गया।

इक्कीसवां अध्याय

तट-प्रदेश में जो कुछ घट रहा था उसे लोग नया जीवन कहते थे। और इससे अलितेत के सब्र की हद हो रही थी। घर पर उसने नये जीवन के बारे में बात करने की मनाही कर दी थी। जो पेशा उसने अपनाया था उसमें वह बुरी तरह नाकामयाब रहा। अलितेत ने शिकस्त खायी। वह समझ न सका कि क्या किया जाये। अब केवल रूसियों के पास माल था। सारे प्रदेश में एक भी अमरीकी व्यापारी नहीं बचा था। अलितेत की व्हेल-नाव डूब गयी थी। स्कूनर का कोई ठिकाना न था। आख़िर उसे माल मिले भी कहां से? इन विचारों ने अलितेत को पागल बना दिया।

वह अपनी बरफ़-गाड़ी के चारों ओर कुदक-फुदक रहा था और उसपर कुल्हाड़ियां और वालरसों के मूत्राशय से बनी थैलियों में भरी हुई घरेलू शराब लाद रहा था। यह सही है कि यह माल अच्छा था लेकिन उसके पास न बंदूक़ें थीं, न कारतूस ही। तंबाकू, मणियां और लब्बे-चूस भी नहीं था। सूइयों, अंगुश्तानों, कंघियों और घंटियों का भी पता न था...

अलितेत ने बरफ़-गाड़ी पर माल लादा और विचारों में डूबा हुआ उसके पास खड़ा हो गया। फिर वह पोलोग में चला गया।

"तीग्रेना," उसने पुकारा। लगता है कि मुझे कपड़े की क़मीज़ पहन लेनी चाहिए। इससे मैं ज़्यादा अमरीकी दिखाई दूंगा। बरफ़-गाड़ी पर मेरे पास माल कम है। बहुत ही कम। ख़ाली कुल्हाड़ियां ही तो हैं।

अलितेत ने क़मीज़ निकालकर पहन ली।

मि० ब्राउन द्वारा दिया गया 'तेकी काला गोबरैला' वाला काग़ज़ उसकी जेब में सरसराया।

अलितेत ने काग़ज़ बाहर निकाला, सावधानी से उसे खोला और आंखें सिकोड़कर एकटक देखता रहा।

"देखो," काग़ज़ को हवा में लहराते हुए उसने तीग्रेना से कहा, "इसमें तरह तरह का माल भरा पड़ा है। गर्मियों में ब्राउन यह सब ले आयेगा। वह जानता है कि माल कहां ले आना है—मैंने उसे वह जगह बता दी है। किसी को कानों कान ख़बर न होगी।"

तीग्रेना चुप रही।

काग़ज़ को वापस जेब में डाल अलितेत ने सफ़र की पोशाक पहनी और पहाड़ियों के लिए रवाना हुआ। वहां उसका दोस्त बारह-सिंगा-पालक एचावतो रहता था।

बूढ़ा एचावतो दो साल से उन्हीं जगहों में घूमता-फिरता रहा था। लेकिन उसके पड़ावों की ज़िंदगी को भी धक्का लगता था। नव-जीवन संबंधी समाचार पहाड़ियों में भी पहुंच गये थे। तभी एक रूसी आया और उसने चरवाहों के साथ बातचीत की। एचावतो उसके साथ बेकार बातें करने के लिए तैयार न था। यह रूसी कोई सौदागर नहीं था। फिर एचावतो उससे क्या कहता सुनता? चरवाहों के साथ वह बातचीत करता है, करे मेरी बला से! लेकिन जब एचावतो को पता चला कि तीन चरवाहों को, जो अब क़बीला सोवियत कहलाते हैं, उसके पड़ावों का मालिक मुकर्रर किया गया है तो वह हंस पड़ा।

उस रूसी के चले जाने के बाद उसने उक्त तीन चरवाहों को अपने पास बुलाया और कहने लगा:

"मेरे लिए अच्छी रफ़्तार वाले सफ़ेद बारहसिंगों की बरफ़ गाड़ी तैयार कर दो। मैं रेवड़ के पास चला जाऊंगा।"

चरवाहे बरफ़-गाड़ी ले आये। एचावतो उसपर बैठ गया, रास अपने हाथों में ले ली और बोला:

"सुनो, ओ क़बीला सोवियत, अब दौड़ो मेरे पीछे।"

रास के सिरे से उसने बारहसिंगों को चाबुक लगाया और वे जमी हुई बरफ़ की परत पर से सरपट दौड़ने लगे। उनकी टापों के नीचे से बरफ़ के टुकड़े उछलते जा रहे थे। तीनों चरवाहे पूरे ज़ोर से बरफ़-गाड़ी के पीछे दौड़ रहे थे।

जब वे रेवड़ के पास पहुंचे तो बूढ़ा एचावतो वहां पर चरने वाले बारहसिंगों के बीच चहलक़दमी करने लगा। वह हल्का रंग-विरंगा परका पहने था जो बीच में चमड़े की पेटी से बंधा था। उधर बारहसिंगे पहाड़ी की सारी तलेटी में बिखरे हुए थे। जहां तक नज़र पहुंच सकती थी, बारहसिंगे ही बारहसिंगे दिखाई दे रहे थे।

"इधर आओ," एचावतो ने कर्कश स्वर में कहा।

चारवाहे हांफते हुए पास आये और बरफ़ में उसके पैरों के पास बैठ गये।

"तुम्हारे अपने कितने बारहसिंगे हैं?" एचावतो ने सब से बूढ़े चरवाहे से पूछा।

"बीस," उसने जवाब दिया।

"और तुम्हारे?" उसने दूसरे आदमी से पूछा।

"यही आठ। बहुत ही थोड़े।"

"और कहो, तुम्हारे कितने हैं।"

"ग्यारह," तीसरे ने कहा।

"अहा-हा!" एचावतो ने धीरे से कहा। "वाह भई, अब तो काफ़ी बारहसिंगे हैं तुम्हारे पास। जब तुम पहली बार मेरे यहां आये थे तो तुम्हारे पास एक भी नहीं था... खैर, रेवड़ में से अपने बारहसिंगे बटोर लो और मेरे पड़ाव से चले जाओ। अपना डेरा अलग बना लो। मुझे तुम्हारी क़बीला सोवियत की कोई ज़रूरत नहीं।"

चरवाहों ने एक दूसरे की ओर देखा।

"एचावतो," आठ बारहसिंगों के मालिक चरवाहे ने कातर स्वर में कहा। "फिर हमारा गुज़ारा कैसे होगा? हमारे पास न यारंग हैं, न बरफ़-गाड़ियां और न गाड़ी में जोतने के बारहसिंगे ही! हम अपने बारहसिंगों को चारा भी कहां से खिलायें? हमें तो किनारे पर चूहाखोरों के पास जाना पड़ेगा।"

"एचावतो, हम बरबाद हो जायेंगे," दूसरे ने कहा।

"मेरे पास काफ़ी चरवाहे बचे हैं," अपने पतलून को सीधा करते हुए एचावतो ने कहा। "चलो, जल्दी जल्दी अपने बारहसिंगे चुन लो और रास्ता नापो।"

चरवाहे मुंह लटकाये चुपचाप खड़े रहे।

"चलो भई, जल्दी करो!" एचावतो चिल्लाया।

जब अलितेत पड़ाव में आ पहुंचा उस समय एचावतो अपने पोलोग में लेटा हुआ बोतल में से एक घूंट पी रहा था।

"चार्ली, तुम आ गये?" झूमते-लहराते स्वर में उसने पूछा।

अलितेत ने अचरज भरी नज़र से बूढ़े की ओर देखा। आखिर इसे यह जलता पानी मिल कहां से गया? उसने अपना परका उतार लिया, कपड़े वाली क़मीज़ को सहलाकर ठीक किया और आश्चर्य के स्वर में पूछा:

"तुम्हें कहां से मालूम हुआ कि मैं चार्ली हूं?"

"टुंड्रा अफ़वाहों से अटा पड़ा है," एचावतो ने पतली आवाज़ में कहा।

औरतें चुपचाप चार्ली-अलितेत की ओर देखती रहीं।

"मैं काफ़ी माल लाया हूं," अलितेत ने कहा। एचावतो की एक बीवी की ओर मुड़कर उसने कहा: "केइपा, जाओ मेरी बरफ़-गाड़ी पर से एक कुल्हाड़ी ले आओ।"

केइपा उसी क्षण ग़ायब हुई और एक कुल्हाड़ी लिये वापस आ गयी जो अलितेत ने जान-बूझकर सब से ऊपर रखी थी।

एचावतो कुल्हाड़ी को अपनी नाक के पास उलटता-पलटता रहा मानो उसे सूंघ रहा हो। फिर ख़ुशी से बोला :

"अच्छी कुल्हाड़ी है!"

"मैं ढेरों ऐसी कुल्हाड़ियां लाया हूं," अलितेत ने घमंड के स्वर में कहा।

"और क्या क्या चीज़ें लाये हो?"

अलितेत ने अपनी पाइप जलायी, कुछ धुआं पिया और फिर गला साफ़ करके कहा :

"मैं तेज़ जलता पानी भी लाया हूं। केइपा, मेरी बरफ़-गाड़ी पर से मसक ले आओ। वह ऊपर ही पड़ी है।"

एचावतो ने अलितेत की ओर झुककर उसकी कपड़े वाली क़मीज़ छू ली।

"अरे, तुम तो तांग बन गये," उसने कहा।

"हां, मेरिकन!" अलितेत ने रोब झाड़ा।

"सुना है कि अब किनारे पर कोई मेरिकन नहीं बचा। हां, टुंड्रा में ऐसी ही ख़बर आयी है। आजकल रूसी तो काफ़ी आ पहुंचे हैं। एक रूसी मेरे पास भी आया था। बेमतलब की बातें कर रहा था। उसके पास बस बातों की ही पूंजी रहती है। उसने यहां एक क़बीला सोवियत क़ायम कर दी थी। तीन चरवाहों की पंचायत। मैंने तो उन्हें निकाल बाहर कर दिया। अब कोई भी रेवड़ वाला उन्हें सहारा नहीं देगा।"

अलितेत के कान खड़े हो गये। "फिर गये कहां ये चरवाहे?"

"समुंदर के किनारे। पैदल ही चले गये।"

केइपा मसक लिये वापस आयी और दोनों आदमियों की बातचीत सुनती रही।

अलितेत ने उसके हाथ से मसक लेकर एचावतो की ओर बढ़ा दी।

"यह रहा जलता पानी। बहुत ही बढ़िया है। कभी जमता नहीं।"

"ही-ही-ही, जलता पानी और ऐसे बर्तनों में? आज तक मैंने कभी नहीं देखा!" एचावतो ने व्यंगपूर्ण स्वर में कहा।

"ख़ानाबदोशों के लिए यही चीज़ अच्छी है। टूटने-फूटने का कोई डर नहीं।"

"अब मेरे पास अपना जलता पानी है। काफ़ी जलता पानी!"

"लेकिन यह तुम्हें मिला कहां से?" अलितेत ने पूछा।

"ही-ही" करके बूढ़े ने कहा: "'गरम सोते' के पास एक नया मेरिकन आया है। नाम उसका 'निक' है।"

"क्या वह सौदागर है?" अलितेत ने पूछा।

"नहीं। जाने झरनों और पहाड़ियों में क्या खोजता रहता है! उसके पास कुछ माल-वाल भी नहीं है। है सिर्फ़ जलता पानी। पहले वह सिर्फ़ गरमियों में आया करता था लेकिन अब की बार जाड़ों में भी आया है। उसकी नाव ख़राब हो गयी है। 'गरम सोते' के पास मैंने उसके लिए एक यारंग बनवा दिया है। मैं उसके लिए गोश्त भी भेजता हूं और सवारी के लिए बारहसिंगे भी। वह हमारा मुल्क देखना चाहता है। एक काग़ज़ के टुकड़े पर नदियों और पहाड़ियों की छोटी छोटी तसवीरें बना लेता है। वही मुझे जलता पानी देता है।"

यह ख़बर सुनकर अलितेत पर मानो गाज गिर पड़ी। वह भौचक होकर एचावतो के होठों की ओर ताकता रहा। जब वह होश में आया तो घरेलू शराब का एक प्याला भरकर कहा:

"देखो दोस्त, अब ज़रा इसका मज़ा लो।"

एचावतो ने इन्कार नहीं किया। प्याला उठाकर उसने तुरंत ख़ाली कर दिया। फिर अपने तर होठों पर ज़बान फेरते हुए बोला:

"अच्छी चीज़ है... ख़ैर तुम्हारे पास कुछ और सामान है?"

ग्रलितेत हिचकिचाया। यह कहने में उसे शर्म लगी कि उसके पास ग्रौर कुछ माल नहीं है।

ग्रपना प्याला ख़ाली करके उसने खेदपूर्ण स्वर में कहा:

"सभी मेरिकन माल लाने गये हैं। गरमियों में वे ग्रायेंगे।"

"ग्रोह, यह बात!" कहते हुए एचावतो मुंह बाकर ग्रलितेत की ग्रोर ताकता रहा। वह ऐसा बन गया जैसे ग्रनाड़ी हो।

ग्रलितेत ने परेशान होकर मुंह फेर लिया ग्रौर ग्रपनी घरेलू शराब से फिर प्याले भर दिये। उन्होंने फिर चढ़ा ली।

"एचावतो," ग्रलितेत ने कहा, "ग्रब मुझे ग्रपने बारहसिंगे इकट्ठे कर लेने चाहिए। मैं ख़ानाबदोश बनने की सोच रहा हूं।"

"वाह! वाह! ग्रागे बढ़ो!"

"सोचता हूं कि तुम्हारे उन तीन चरवाहों के पीछे जाऊं ग्रौर उन्हें ग्रपने ग्रलग रेवड़ की देखभाल के लिए रख लूं। ऐं?"

"तुम्हारे रेवड़ के साथ रहने में उन्हें बड़ी ख़ुशी होगी। ग्रपने बचे-खुचे बारहसिंगों को खा जाने के बजाय उनके लिए यह ग्रच्छा होगा कि वे तुम्हारे साथ रहें। मैं नहीं मानता कि वे ग्रब फिर से क़बीला सोवियत में जाने का नाम लेंगे।"

"ग्रगर उन्होंने फिर से क़बीला सोवियत में जाने की बात की तो मैं उनके सिर चट्टानों पर पटक दूंगा," प्याले फिर से भरते हुए ग्रलितेत ने कहा।

एचावतो ने बात काटते हुए कहा: "ठहरो, ठहरो! हमें ज़्यादा नहीं चढ़ानी चाहिए। ग्राख़िर तुम्हारे पास कुछ माल भी तो नहीं है। ग्रब मैं कम पीता हूं। वह देखो – मेरे पास जलते पानी का पूरा पीपा भरा पड़ा है।" एचावतो सरकता हुग्रा एक कोने में चला गया। वहां बारहसिंगे की कुछ खालें एक ग्रोर हटाते ही उसे तीस लिटर वाला एक पीपा दिखाई दिया। "ग्रभी भी ग्राधे से ऊपर बचा है।

यहां तक।" खीसें निकालते हुए एचावतो नें अपने सख़्त नाखून से पीपे पर एक निशान बना दिया।

अलितेत ने ईर्ष्या से चुस्की ली। वह चुपचाप अपने दोस्त की ओर देखता रहा। समझ न पाया कि क्या कहा जाये।

"तुम्हारे पास माल नहीं है। अकेला जलता पानी दिल को ख़ुश करने के लिए काफ़ी नहीं है।"

"मेरे पास कुल्हाड़ियां हैं," अलितेत ने सपाट आवाज़ में कहा। "कई कुल्हाड़ियां। पूरी बरफ़-गाड़ी भरी पड़ी है।"

"ही-ही-ही ... मेरे लिए दस कुल्हाड़ियां काफ़ी हैं," एचावतो ने कहा। "हर रेवड़ के लिए एक एक।" फिर कुल्हाड़ी की ओर देखकर वह बोला: "हां, कुल्हाड़ियां अच्छी हैं। मैं दस और लूंगा। मेरे पास लोमड़ियों की कुछ खालें हैं। कुल्हाड़ियों के बदले मैं तुम्हें सब की सब खालें दे दूंगा।"

"मुझे लोमड़ियों की खालों की ज़रूरत नहीं। मुझे चाहिए ज़िंदा बारहसिंगे।"

"ही-ही-ही। अब तुम्हें लोमड़ियों की जरूरत नहीं? और मेरे पास वे काफ़ी पड़ी हैं। तुम्हारे ही लिए तो मैंने इकट्ठा की थीं।"

"एचावतो, मैं ख़ानाबदोश बनना चाहता हूं। किनारे की ज़िंदगी से मैं ऊब गया हूं। लेकिन मेरा रेवड़ अभी छोटा है।"

"ही-ही-ही ... ख़ानाबदोश की ज़िंदगी बिताना चाहते हो? ठीक है। कुछ भी हो, तुम मेरे दोस्त हो। बीस कुल्हाड़ियों के लिए मैं तुम्हें दस कोड़ी बारहसिंगे दूंगा।"

एचावतो के रेवड़ में से अलितेत के बारहसिंगों को चुनकर अलग करने का प्रबंध उन्होंने कर लिया और अलितेत उन तीन चरवाहों के पीछे भागा ताकि उन्हें अपने नये रेवड़ की देखभाल सौंप दे।

पहाड़ी के उस पार वह आंखों से ओझल हुआ ही था कि तरह तरह के मालों से लदी हुई आठ बरफ़-गाड़ियां दौड़ती हुई पड़ाव में आ पहुंचीं। यह था व्यापारी-केंद्र का व्यवस्थापक रुसाकोव, जो फेरी करके माल बेचने आया था।

बाईसवां अध्याय

अमगुएमा नदी बरफ़ की मोटी परत के नीचे से कराहती सी जा रही थी। अनादीर पर्वतमाला से उत्तरी ध्रुव सागर तक उसका पानी पथरीले बहाव-क्षेत्र में से होता हुआ बह रहा था। सर्पिल घाटियों और ऊंचे ऊंचे पहाड़ों के बीच के दर्रों में से घूमती-मुड़ती और उमड़ती-घुमड़ती अमगुएमा सैंकड़ों मील तक फैली हुई थी। अनगिनत सहायक नदियों और झरनों-सोतों से उसके तट खंडित थे। बहाव के आसपास का विशाल क्षेत्र रसपूर्ण काइयों से भरपूर था और इसी कारण बड़े बड़े बारहसिंगा-पालकों के लिए वह दिलपसंद चरागाह बना हुआ था। दसों हज़ारों बारहसिंगे यहां अर्धवन्य अवस्था में चरते रहते थे।

रेंगती हुई सरई, ठिंगने बर्च और भूर्ज जैसे पेड़-पौधों यानी उत्तरी इलाक़े की वनस्पतियों से परिपूर्ण यत्र-तत्र बिखरे हुए भाग गरमियों के आने तक बरफ़ से ढंके रहते थे। केवल पहाड़ियों की ढालों पर, जहां से तूफ़ानी हवा बरफ़ की परत को ज़ोरों से हटा रही थी, खरगोशों द्वारा कुतरे हुए इक्के-दुक्के पेड़ों के तने दिखाई दे रहे थे।

शुभ्र अवनत आकाश गहरी बरफ़ के साथ एकाकार हो गया था और इस विशाल विस्तार में हर सजीव वस्तु लुप्त हो गयी थी। ये स्थान उजाड़ और निर्जीव से लग रहे थे। हां, कभी कभी हिम-

धवल तीतर चिड़ियां उड़ान भरती हुई दिखाई देती थीं। और दूसरे ही क्षण आंखों से ओझल हो जाती थीं।

नदी की जमी हुई सतह पर से वायु नीरव बरफ़ को उड़ा रही थी और स्वच्छ, पारदर्शी हिम आकाश-गंगा की तरह चमक रहा था।

अलितेत अपनी बरफ़-गाड़ी को डंडे की लोहेदार नोक से कुछ रोकता हुआ प्रवाह के नीचे की ओर सरपट दौड़ा रहा था। अपने पीछे बरफ़ पर वह एक लकीर का निशान छोड़ता जा रहा था ताकि मालूम हो जाये कि यहां से कोई आदमी गुज़रा है।

ख़ामोश, नुकीली, काली चट्टानें हिम-धवल टुंड्रा की पृष्ठभूमि पर विशेष उठी हुई लग रही थीं।

यकायक अलितेत ने खट से गाड़ी रोक ली जिससे बरफ़ में गहरी लीक खिंच गयी। कुत्ते बरफ़ में नाख़ून गड़ाकर रुक गये।

अलितेत ने अपनी विंचेस्टर उठा ली और चट्टानों की ओर देखने लगा। उधर काफ़ी ऊंचे पर एक पहाड़ी भेड़ा एक सीधी-सतर चट्टान की टांड़ों पर कुदकता-फुदकता दिखाई दिया। वह ऐसे मज़ेदार ढंग से उछल रहा था कि अलितेत बंदूक़ तान लेने के बजाय मोहित सा होकर देखता ही रह गया। फिर उसने गोली चलायी। क्षणार्ध के लिए वह भेड़ा अपनी जगह में चिपका हुआ सा लगा; फिर हवा में लटकता हुआ सा दिखाई दिया, और अगले ही क्षण चट्टान की टांड़ों पर से लुढ़कता-पुढ़कता हुआ नीचे खिसक आया। ऐसा लग रहा था कि मौत के बाद भी वह उछल-कूद रहा हो। यकायक उसके भारी-भरकम छल्लेदार सींग एक चट्टान के उभरे-नुकीले हिस्से में फंस गये और वह वहीं पर लटककर दायें-बायें झूमने लगा।

अलितेत ने विंचेस्टर की निचली नली में आठ कारतूस भर लिये और भेड़े के सींगों का निशाना साधकर गोली चलाना शुरू कर

दिया। आठों गोलियां ख़त्म हो गयीं, लेकिन मुर्दा भेड़ा टस से मस न होकर वहीं लटका रहा।

"ख़ैर, हवा ही उसे खिसका देगी," बरफ़-गाड़ी की ओर लौटते हुए अलितेत फुसफुसाया। भेड़े की ओर कनखियों से देखता हुआ वह बैठा रहा।



"मेरिकन यह गोश्त पसंद करते हैं," उसने सोचा। "बारहसिंगे के गोश्त से भी उन्हें यह अच्छा लगता है।" उसने कारतूसों का एक और बक्स निकाल लिया और विचारों में डूबा हुआ उसके साथ खेलता सा रहा। गोलियों को बेकार जाने देना ठीक न था लेकिन उसने विंचेस्टर में कारतूस भरकर फिर से निशाना साधा और डमडम गोली चलायी। भेड़ा सीधे अलितेत के पैरों के पास आ गिरा और उसके पीछे पीछे चट्टानों के कुछ टुकड़े भी। अलितेत उछलकर एक ओर हो गया। चट्टान का खिसकना बंद होते ही अलितेत भेड़े के पास आया। फटे-टूटे सींग का मुआयना करने के बाद सलामत सींग को पकड़कर वह अपने शिकार को बरफ़-गाड़ी के पास घसीट लाया।

"यह मैं मेरिकन निक को दे दूंगा और उसके पास का सारा जलता पानी खरीद लूंगा," अलितेत ने सोचा। "ताकि एचावतो के लिए एक बूंद भी न रहे।"

अलितेत मेरिकन निक के बारे में ही बराबर सोचता रहा। उससे मिलने के लिए वह इतना उत्सुक था कि एचावतो के हटाये गये तीन चरवाहों के पास पहुंचने की बात तक भूल गया। उसके मन में इस आशा की किरण का उदय हुआ कि वह शायद अपनी बिगड़ी हुई बना सकता है। वह कुत्तों पर ग़ुर्रा उठा और वे हवा से बातें करते हुए चिकनी बरफ़ की परत से ढंकी हुई नदी पर दौड़ने लगे। नदी के मोड़ के पास बरफ़-गाड़ी कगारों से टकराती थी और उसे तेज़ नोकदार चट्टानों पर पटककर चकनाचूर होने से बचाने के लिए अलितेत टांग टूटने का संकट मोल लेकर भी लातों के आघातों के सहारे गाड़ी को दूर रख रहा था।

शीघ्र ही टुंड्रा की शांति में उसे एक प्रपात का गर्जन सुनाई दिया। कुत्तों ने कान खड़े कर लिये। अलितेत को यह स्थान पसंद न था। तेज़ से तेज़ पाले में भी न जमने वाले इस प्रपात के बारे में अलितेत के मन में एक अंधविश्वासपूर्ण भय छाया हुआ था। उसने कुत्तों को घुमाकर एक ढाल पर दौड़ाया। इस ढाल की उंचाई पर से उसने देखा कि बरफ़ के आवरण के नीचे से प्रपात खिसककर घुंघराली लहरों में नीचे की ओर टूटता जा रहा है। यहां नदी सजीव थी और वेगवती भी। दो कगारों से वह बंधी हुई थी लेकिन अपने बरफ़ीले क़ैदख़ाने से छूटकर विशाल प्रवाह के साथ घाटी में उमड़ती जा रही थी। हिमाच्छादित सतह पर पानी की पतली सी परत जमकर हल्के हरे हिमानी आवरण में परिवर्तित हुई थी।

लंबे जाड़ों भर यह स्थान बरफ़ के टीलों से अटा रहता था और ऐसा लगता था कि सूरज इन्हें कभी न पिघला सकेगा। किंतु वासंतिक बाढ़ों की विनाशकारी शक्ति इस समूचे हिम-पुंज को उठा लेती थी, चकनाचूर कर देती थी और सागर की ओर बहा ले जाती थी।

लोग इस स्थान को दुष्ट भूत-पिशाचों से पीड़ित मानकर उससे दूर रहते थे। दबी आवाज़ में अपने कुत्तों को बढ़ावा देते हुए अलितेत ने उसकी परिक्रमा की। वह घूमकर 'गरम सोतों' की ओर आगे बढ़ा। ये सोते भी उक्त प्रपात की तरह दुष्ट पिशाचों से पीड़ित थे।

यदि अलितेत को इन सोतों के पास रहने वाले उस मेरिकन निक से मिलने की तीव्र इच्छा न होती तो वह कभी वहां जाने का नाम न लेता।

सारी रात वह कुत्तों को बराबर दौड़ाता रहा। उस मेरिकन से मिलने के लिए वह इतना उत्सुक था।

प्रभात होने के पहले अलितेत को दूरी पर ज़मीन से भाफ के बादल उठते हुए दिखाई दिये। कुत्तों पर ज़ोर से गुर्राकर और डंडे में लगे हुए छल्लों को झनझनाकर उसने गाड़ी पूरी रफ़्तार से दौड़ाई।

शीघ्र ही उसे एक अकेला यारंग दिखाई दिया जो सफ़ेद बरफ़ की पृष्ठभूमि पर काले रंग में रंगे हुए शिला-खंड जैसा लग रहा था। यहां के इस सफ़ेद जंगल में मि० निक अकेला रह रहा था। बस उसका एकमात्र साथी था भूरा, घुंघराले बालों वाला कुत्ता टॉमी।

एक पहाड़ी की तलेटी में, गरम सोतों के बीच यह यारंग था। सोतों की संख्या लगभग तीस थी। वे धरती से फूट निकलते थे और नदी में जा गिरते थे।

सब से बड़े सोते के पास दस मीटर से भी लंबी बरफ़ की एक सुशोभित कंदरा बनी हुई थी। बरफ़ीले तूफ़ान के कारण उसमें हिमकणों के ढेर लग जाते थे और वाष्प के प्रभाव से वे सख़्त हो जाते थे। इस विशाल गुफा की छत से पानी की बड़ी बड़ी बूंदें टपकती थीं। हरी फफूंदी से ढंका हुआ पत्थरदार फ़र्श गरम पानी के झरनों से धुलता जाता था।

गुफा के फ़र्श में एक गड्ढा बनाया गया था जिसमें सब ओर गोल पत्थर लगे हुए थे। यह मि० निक के लिए स्नानगृह का काम दे रहा था। दमकल के होजपाइप के ज़रिये उसने यहां ठंडे पानी का प्रबंध कर लिया था। उक्त सोतों के पानी का तापमान ९४ डिग्री सेंटीग्रेड तक रहता था और इस चतुर अमेरिकन ने वहां की सारी उष्णता-शक्ति को अपने काम में लगा रखा था। सोते में वह कॉफ़ी उबाल लेता और बारहसिंगे का मांस पका लेता। एक पोटली में चावल बांधकर वह सोते में डुबा रखता और कुछ देर बाद निकाल लेता तो चावल उसे पककर तैयार मिलते। फिर उसमें नमक और मक्खन डालने से बढ़िया खाना बन जाता था। एचावतो के चरवाहों द्वारा बनाये गये इस यारंग में फ़रदार पोलोग था और इसमें होज की दोहरी गेंडुरी लगी हुई थी जिसमें से बराबर गरम पानी बहता रहता था।

अलितेत की बरफ़-गाड़ी के आ धमकते ही मि० निक का भूरा झबरा कुत्ता बेहद घबड़ा उठा। वह चीख़ता-कलपता सीधे उस गुफा में भागा जहां मि० निक सिर में अंगोछा लपेटे अपने बाथ में कंधों तक डूबा हुआ बैठा था। मारे डर के पागल बने उस कुत्ते ने सीधे अपने मालिक के सिर पर छलांग मारी।

"हाय! हाय! किस शैतान ने मेरे प्यारे टॉमी को डरा दिया?" निक गरज उठा।

मनुष्य की आवाज़ सुनते ही अलितेत सचेत हो गया। हाथ में विंचेस्टर लिये उसने सावधानी से गुफा की ओर क़दम बढ़ाया।

"ऐ! विंचेस्टर रख दो! मेरी बंदूक़ के पास ही रख दो!"

अलितेत ने चुपचाप और विनयपूर्वक अपनी बंदूक़ चट्टान पर रख दी। निक टॉमी को पानी की सतह पर पकड़े हुए बाथ में बैठा रहा।

वह तब तक पानी में बैठा रहा जब तक नहाने के लिए निश्चित किया गया समय समाप्त न हो गया।

इस अजीब अमेरिकन की ओर अलितेत अवाक् होकर देखता रहा।

निक कुत्ते को हाथ में लिये पानी से बाहर आया और फफूंदी से आवृत पत्थरों पर से चलता हुआ गुफा के किनारे आ पहुंचा। कुत्ते को उसने छोड़ दिया और फ़ौरन रोएंदार स्नानोत्तर लिबास पहन लिया और फिर बारहसिंगे के बछिये की खाल का चोग़ा। अलितेत के पास से दौड़ते हुए वह चिल्लाया :

"दौड़ो मेरे पीछे!"

तेईसवां अध्याय

मि० निक के पोलोग में एक सफ़री खाट, तीन पायों वाली और तह की जाने वाली एक मेज़ और छावनी वाली एक तिपाई थी। फ़र की दीवार से लटकने वाले कारबाइड लैम्प से काफ़ी अच्छी रोशनी मिल रही थी। बिस्तर के नीचे से एक हरे लोहेदार संदूक़चे का किनारा दिखाई दे रहा था। सारे फ़र्श पर बारहसिंगों की खालें बिछी थीं। यारंग और पोलोग दोनों चुकची आवास की सही सही नक़ल थे।

अपने 'मकान' में प्रवेश करते ही मि० निक ने अपने कपड़े एक ओर फेंके और किवाड़ के पास वाली एक जगह की ओर संकेत करते हुए उसने अलितेत से कहा :

"वहां बैठो!"

नहाने के कारण लाल हुए अपने सुगठित शरीर को निक न खूब रगड़ा। मि० निक की उम्र क़रीब पैंतीस साल की थी। गहरा रंग, चंचल और चालाक भूरी आंखें, सफ़ाचट चेहरा। जब से वह कुछ जानने-समझने लगा था, उसने अपने जीवन का अधिकतर अंश अलास्का में सोने की खोज में बिताया था। वह एक असामाजिक, जिद्दी और यों कहिये कि बुरे स्वभाव वाला आदमी लगता था। तरह

तरह की अविश्वसनीय परिस्थितियों का वह इतना अभ्यस्त हो चुका था कि अन्य प्रकार के जीवन की कल्पना तक नहीं कर सकता था। इस कठोर और एकाकी जीवन ने उसपर एक अमिट छाप छोड़ रखी थी। उत्तर की निर्जन और ऊसर भूमि उसके लिए प्रिय प्रकृति थी और उसके जीवन की साधना थी सोना। इधर अमगुएमा नदी द्वारा सिंचित क्षेत्र में सोने के ज़ख़ीरे खोज निकालने में उसने चार गर्मियां बितायी थीं। हर बरसात में वह अपनी मोटर-बोट में अलास्का वापस जाता और हर वसंत में यहां लौट आता था।

जब अलास्का के ज़ख़ीरे "सूख गये" तो बड़े बड़े खदान-मालिक चुकोत्स्क प्रायद्वीप में दिलचस्पी लेने लगे। कुछ वैज्ञानिकों के अनुसार यह प्रायद्वीप प्राचीन भूगर्भ-शास्त्रीय युगों में जल-डमरूमध्य द्वारा अलास्का से पृथक् नहीं हुआ था।

इस कल्पना के आधार पर कि अलास्का की स्वर्ण-नाड़ियां चुकोत्स्क प्रदेश में फैली हुई हैं, स्वर्ण-खनिक इस प्रदेश की खोजबीन करने एवं वहां के सोने के ज़ख़ीरों पर अपना अधिकार स्थापित करने के प्रयत्न में कोई कसर नहीं रखते थे।

अनुभवी तथा उद्यमी स्वर्ण-अन्वेषक निक कई वर्षों से एक स्वर्ण-खनिक मंडली के तत्वावधान में चुकोत्स्क प्रदेश की खोजबीन कर रहा था।

एक दिन अपने झोंपड़े में वापस आने पर उसने देखा कि वहां की सारी चीज़ें अस्तव्यस्त हैं। गैसोलिन के आधे से अधिक पीपे ख़ाली पड़े थे। भूरे रीछ ने अपने शिकार की खोज में या शायद शैतानी करने की भावना से गैसोलिन के पीपों में सूराख़ बना दिये थे और कारतूसों के बक्स तक को पत्थर से कूट डाला था। इन चमकदार चीज़ों ने स्पष्टतया उसे मोह लिया था क्योंकि कई कारतूस फ़र्श पर इस तरह बिखरे पड़े थे मानो वह उनके साथ खेलता रहा

हो। इन्हें इकट्ठा करने में निक को काफ़ी समय लगा और ऐसा करते समय उसने उस रीछ को चुन चुनकर गालियां दीं। इस भूरे रीछ की ही वजह से तो उसे अमगुएमा द्वारा सिंचित क्षेत्र में इस वर्ष जाड़ों के दिन गुज़ारने पड़ रहे थे।

लंबे जाड़ों में उसे जबरदस्ती बेकार रहना पड़ रहा था क्योंकि पथरीला नदी-तल बरफ़ की गहरी मोटी परत के नीचे गड़ गया था और नदी तथा झरने-सोते सभी जम गये थे। उसे शिकार खेलने या जानवरों को फंसाने का शौक़ नहीं था। उसके निवास-स्थान के आस-पास सफ़ेद और लाल लोमड़ियां घूमती-घामती रहती थीं लेकिन उसने कभी एक लोमड़ी को भी नहीं मारा। वह शिकार के पेशे को सच्चे स्वर्ण-अन्वेषक की प्रतिष्ठा की दृष्टि से निम्न श्रेणी का मानता था।

यदा-कदा जब एचावतो उसके पास बारहसिंगों की गाड़ी भेजता तो वह अच्छी हवा में नदी-घाटियों और पहाड़ियों का चक्कर लगाता। उस समय वह अपनी अनुभवी आंखों से वहां की भौगोलिक स्थिति का अध्ययन और भूतल की बारीकी से जांच-पड़ताल करता था। भूगर्भीय बनावट के आधार पर वह अपनी व्यावसायिक संभावनाएं निश्चित कर लेता था।

अलितेत ने अपना परका उतारा, उसे तह किया और पलथी मारकर उसी पर बैठ गया। पोलोग में काफ़ी गरमी थी।

"ओहो, तुमने अमेरिकन क़मीज़ पहन रखी है!" मि० निक ने आश्चर्यपूर्वक कहा।

"मुझे मेरिकन लोग बहुत पसंद हैं," अलितेत ने चापलूसी के स्वर में कहा। "मेरे दोस्त हमेशा मेरिकन ही रहे हैं। मुझे रूसी बिल्कुल पसंद नहीं। वे हमारे लोगों को उसी तरह बिगाड़ रहे हैं जैसे ख़राब गाड़ीवान अपने कुत्तों को बिगाड़ते हैं।"

"इन बातों में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं!" निक चिल्लाया। "बेकार की बकवास बंद करो। यह टेंटें मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। बजाय इसके यह बताम्रो कि तुम कौन हो ग्रौर यहां किसलिए ग्राये हो?"

निक ने जल्दी जल्दी कामकाज की नीली पोशाक पहन ली, पाइप जला ली ग्रौर पैर पर पैर रखे तिपाई पर बैठ गया।

"मैं हूं चार्ली," ग्रलितेत ने शांति से कहा। "मेरा नाम चार्ली है।"

"ग्रोहो! चार्ली!" निक ठट्ठा मारकर हंस पड़ा।

"काफ़ी दिन मैं फ़र का लेन-देन करता था। लेकिन ग्रब ये रूसी मुझे यह काम नहीं करने देते। 'पेहेक ग्रंतरीप' से 'चुकोत्स्क नाक' तक मैं सारे टुंड्रा का ज़र्रा ज़र्रा जानता हूं। ये रूसी ऐसी बातें कर रहे हैं जो ख़ानाबदोशों के लिए बड़ी ख़राब हैं।"

"वे जो कुछ कर रहे हैं, वही सही है। फ़र का लेन-देन एक बेकार पेशा है। तुम्हें तो सोना खोजना चाहिए, सोना।"

मि० निक ने ग्रपना संदूक़चा खोला ग्रौर उसमें से मुट्ठी भर सोने की मिट्टी निकाली। वह धीरे धीरे उसे एक हाथ से दूसरे हाथ पर छोड़ता रहा।

"यह है चीज़ जिसकी खोज करनी चाहिए!" उसने कहा। "यह बड़ा ऊंचा पेशा है। उन नाचीज़ खालों को बेचना कोई पेशा है? समझे कि नहीं?"

ग्रलितेत ने लापरवाही से उस मिट्टी पर नज़र दौड़ायी। वह समझ न पाया कि इस ग्रजीब मेरिकन से क्या बात की जाये।

"कहते हो कि तुम सारे टुंड्रा को जानते हो। तो बताग्रो, तुमने कभी झरनों-सोतों के तल में ऐसी चीज़ भी देखी है?" ग्रलितेत के हाथों में सोने का एक कंकड़ फेंककर निक बोला।

"हां, देखी है," अशुद्ध सोने के उस टुकड़े को बारीकी से देखते हुए अलितेत ने कहा। "लेकिन मैंने ये कंकड़ नहीं बटोरे। मुझे इनकी क्या ज़रूरत?"

"तुमने कहां देखे ऐसे कंकड़, बताओ तो?" निक ने अधीरता से पूछा।

"कुवेत की सहायक नदियों में।"

मि० निक ने झट से एक नक्शा खोलकर मेज़ पर बिछा दिया और अलितेत की ओर संकेत करते हुए पूछा:

"दिखाओ, कहां है कुवेत नदी?"

अलितेत झुककर नक्शे को देखता रहा और फिर बोला:

"यहां नहीं है कुवेत। यह क्या है?"

"यह है अमगुएमा और उसकी सारी सहायक नदियां।"

अलितेत ने सिर हिलाया और कहा:

"यह अमगुएमा ग़लत है और उसकी सहायक नदियां भी।"

"ग़लत है? तो तुम उन्हें ठीक कर दो। यह लो पेन्सिल।"

"मैं यहां कुछ नहीं कर सकता। चलो बाहर बरफ़ पर चलें।"

वे बाहर चले गये और अलितेत ने अपने डंडे की नोके के सहारे बरफ़ पर अमगुएमा द्वारा सिंचित पूरा क्षेत्र खींचना शुरू किया।

"यहां पर है कुवेत," पैरों की उंगलियों के बल अपने नक्शे पर बच बचकर चलते और एक लंबी घुंघराली लकीर खींचते हुए अलितेत ने कहा।

"वाह, भई वाह!" मि० निक ने आश्चर्यपूर्वक कहा। "तुम्हारी इस खोपड़ी में दिमाग़ है ज़रूर!"

उसने फ़ौरन एक काग़ज़ लिया और अलितेत द्वारा बरफ़ पर बनायी गयी हर आकृति की नक़ल बनानी शुरू की। दोनों यारंग में वापस आये और मि० निक ने व्हिस्की की एक बोतल निकाली।

"तुम बड़े होशियार हो। मैं तुम्हारी ख़ातिरतवाज़ा करना चाहता हूं। बैठो इस तिपाई पर।" मेजबान ख़ुद बिस्तर पर जम गया।

नदियों और झरनों-सोतों के बहावों में पड़े हुए लाल लोहे के बारे में उन्होंने बातचीत की। अपनी मोटर के लिए गैसोलिन नहीं बचा है यह ध्यान में रखते हुए मि० निक ने अलितेत से यह भी पूछा कि क्या वह उसे अमेरिकन द्वीप तक ले जा सकता है।

दोनों अभी जलते पानी के मग चढ़ा भी नहीं पाये थे कि कुत्तों के भौंकने की आवाज़ उन्हें सुनाई दी। दोनों दौड़े दौड़े बाहर आये और देखते क्या हैं कि अलितेत के कुत्ते उस भूरे झबरे कुत्ते को कुचल रहे हैं और वह बेचारा मारे डर के चीख़ रहा है। अपने टॉमी को छुड़वाने के लिए मि० निक अलितेत के कुत्तों के घेरे में घुस गया। अलितेत भी उन्हें अपने डंडे से पीटने लगा।

ख़ून से लथपथ टॉमी हांफ रहा था और दीन मुद्रा से अपने मालिक की ओर देख रहा था। मि० निक ने अपने कुत्ते को गोद में उठा लिया और क्रोध में चिल्ला उठा :

"हरामज़ादे कहीं के! अगर टॉमी कहीं आज रात को मर गया तो मैं तुम्हारे इन सड़े कुत्तों को गोली मार दूंगा। चुन चुनकर सब को मार डालूंगा।"

अलितेत सकपकाकर मि० निक की ओर ताकता रहा। यह मेरिकन अंट-संट चिल्ला रहा था। क्या वह जानता नहीं था कि अगर वे कुत्ते उस लाचार पिल्ले पर झपट पड़े तो उसमें उनका कोई दोष नहीं। आख़िर यह पिल्ला ज़िंदा भी किस लिए था! अलितेत ने उस भूरे झबरे पिल्ले पर एक तिरस्कारपूर्ण नज़र दौड़ायी।

फिर अपना परका लेने के लिए वह यारंग में गया। चलते चलते उसे पहनते हुए वह चुपचाप अपनी गाड़ी की ओर चला गया।

"ठहरो, ठहरो! कहां चले तुम?" निक चिल्लाया। "शायद

टॉमी मरेगा नहीं। अरे, हमने अभी तक न जलता पानी ही पिया है और न हमारी बातचीत ही ख़त्म हुई है। या तुम्हें जलता पानी पसंद नहीं है?"

पसोपेश में पड़ा अलितेत रुक गया।

एक हाथ में अपने पिल्ले को पकड़े हुए निक ने दूसरे हाथ से अलितेत की पेटी पकड़कर उसे अंदर खींच लिया।

अलितेत के मन में यकायक मि० निक के लिए नफ़रत पैदा हो गयी। यह मेरिकन जो काम कर रहा है वह क्या बालिग़ आदमी के लायक़ है? उसने सोचा। वह नादान बच्चे की तरह झरनों में मिले हुए लाल लोहे के बिल्लौरों के साथ खेल जो रहा था। अलितेत के लिए उसके यहां एक ही आकर्षक चीज़ थी—जलता पानी।

पोलोग में जाकर मि० निक ने टॉमी के घावों पर आयोडिन लगाया, पट्टी बांधी और उसे अपने तकिये पर लिटा दिया। अलितेत चुपचाप इस मेरिकन की हरकतें देखता रहा। यहां की कोई भी बात उसे पसंद नहीं आ रही थी। जलते पानी का दूसरा मग चढ़ा लेने के बाद ही उसने मुंह खोला।

"उधर लोरेन में रहने वाला सौदागर चार्ली मेरा जिगरी दोस्त था," उसने कहा। "अब उसी का नाम मैंने लिया है। ब्राउन भी मेरा दोस्त है। उसके साथ हमने अच्छा लेन-देन किया था।"

"बड़े बदमाश होते हैं ये सौदागर!" निक चिल्लाया। "असल में तुम्हें सोने की तलाश में रहना चाहिए—एकदम मालदार बन जाओगे। तुम मुझे बताओ कि लाल लोहा कहां मिलता है और फिर देखो कैसे धनी बन जाओगे। तुम मेरे साथ अमरीका जाओगे और जब वहां के किसी बड़े शहर की सड़क पर से चलोगे तो हर कोई

कहेगा, 'देखो इस आदमी को। बड़ा मालदार है। उसे घोड़े के सिर जितना बड़ा सोने का पत्थर मिला है।'"

मि० निक जो कुछ कह रहा था उसका एक अक्षर भी अलितेत की समझ में न आया। उसने कहा:

"कुछ और जलता पानी डालो।"

उसने प्याला ख़ाली कर दिया, मक्खन की तरह लगने वाली बारहसिंगे की कुछ चरबी गटक ली और फिर तेकी काला गोबरैला वाला वचन-पत्र अपनी जेब में से निकालकर कहने लगा:

"देखो, ब्राउन ने मुझे यह काग़ज़ दिया था। इसमें ढेरों माल लिखा हुआ है। जल्द ही वह मेरे लिए 'चोंच दर्रे' के पास यह माल ले आयेगा।"

मि० निक ने काग़ज़ पढ़ा। अलितेत की नज़र उसके चेहरे पर गड़ी हुई थी। उसे वहां वही भाव दिखाई दिये जो इस काग़ज़ को पढ़ते समय चार्ली लाल-नकुए के चेहरे पर दिखाई दिये थे।

मि० निक ने यकायक क़हक़हा लगाया।

"अरे, पक्का जूं है तुम्हारा यह ब्राउन!" निक ने कहा। "वह ठग है और धोखेबाज़ है। तुम इस काग़ज़ के टुकड़े टुकड़े कर डालो और भाड़ में झोंक दो। जानते हो उसने क्या लिखा है? अरे इस कुतिया के बच्चे ब्राउन ने तुम्हें उल्लू बनाया है!" मि० निक ने गरजकर कहा।

निक की यकायक गरज-तरज से हक्का-बक्का होकर अलितेत सांस रोके बैठा रहा। "क्यों यह काग़ज़ ख़राब है?" आख़िर बड़ी मुश्किल से उसने पूछा।

"ऊंह! यह भी कोई काग़ज़ है? बस, रद्दी का एक टुकड़ा है। ब्राउन तुम्हारा मज़ाक़ उड़ा रहा है। वह सपने में भी तुम्हारे लिए माल ले आने की नहीं सोचेगा।" फिर निक ने ब्राउन की लिखी बातें तफ़सील के साथ उसे समझा दीं।

झुकी हुई भौंहों के नीचे से अलितेत देखता रहा। उसके चेहरे पर अप्रसन्नता के भाव झलक उठे। वह चुपचाप सुनता रहा। फिर उसने कहा :

"कहो, ब्राउन ने और क्या क्या लिखा है?"

निक ने काग़ज़ पढ़ सुनाया।

"'काने शैतान, तुम्हें विदाई का सलाम! इन पांच दिनों तुम मुझे अपनी गर्दन में घुसे हुए छुरे की तरह मालूम हुए। भाड़ में जाओ तुम और तुम्हारा वह उस्ताद जिसने तुम्हें व्यापार का यह तरीक़ा सिखाया। कोई फ़िक्र नहीं—बची हुई खालों से मैं चंगा हो जाऊंगा। अरे बछिया के ताऊ, रीछ की खालें भी मेरे लिए दवा का काम करेंगी। अमेरिका में उनके लिए काफ़ी ख़रीदार मिलेंगे। फिर से अलविदा और इस वक़्त सदा के लिए!' यह लिखा है तुम्हारे उस सौदागर दोस्त ने, परले सिरे के ठग ने।"

कुछ देर पहले ही अलितेत शांत हो चुका था। इस समय वह विक्षिप्त सा दिखाई दे रहा था और उसका सिर चकरा रहा था—लेकिन शराब की वजह से नहीं बल्कि ग़ुस्से से।

"इस ब्राउन को मैं अलास्का से जानता हूं," निक आगे कहता गया। "आज का सब से बड़ा ठग है वह। हां, हां मैं सच कह रहा हूं। सुनो, तुम यह फ़र वाला लेन-देन छोड़ दो। धंधा करना हो तो सोने का करो। यह ईमानदारी का और बड़ी इज्ज़त का पेशा है। गरमियों में तुम मुझे अमरीकी टापू पर ले चलना। इस वक़्त चलो हम सोने चलें। धंधे की बातें कल करेंगे।" यह कहकर निक ने उस काग़ज़ के टुकड़े टुकड़े कर दिये।

फिर ठंडी सांसें लेते हुए अलितेत ने फ़र्श पर खालों वाला बिस्तर बिछा दिया। निक अपनी खाट पर सो गया और कुछ ही देर में उसके ज़ोरदार खर्राटों से सारा पोलोग गूंज उठा।

अलितेत को नींद नहीं आ रही थी। लेटे लेटे वह ब्राउन के साथ हुए सौदे के बारे में सोचता रहा। उसे हाल ही में तीग्रेना के साथ मेरिकनों के बारे में हुई बातचीत की भी याद आयी। "उसका कहना ठीक ही था कि ये लोग बड़े ठग होते हैं। और चार्ली लाल-नकुआ? वह तो मेरा नेवतुम था। उसने क्यों कहा था कि यह काग़ज़ अच्छा था? उसने यह क्यों कहा कि काग़ज़ में लिखी हर चीज़ मुझे मिलेगी? ऐं? चार्ली लाल-नकुआ भी ठग ही निकला! उसने चालाक लोमड़ी का सा काम किया। मेरी सब खालें हड़प लीं और मुझे गुमराह कर दिया। ये सभी गोरे लोग बस, एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं!"

अलितेत उठा और हल्की आवाज़ में गाली दे बैठा :

"मेरकिचकिन!"

पोलोग में निस्तब्धता थी। कारबाइड लैम्प से हल्की हल्की रोशनी मिल रही थी। अलितेत ने सोये हुए निक पर नज़र दौड़ायी और सोचा: "गोरे आदमी, सब के सब ठग होते हैं। उनकी ज़बानें बक-झक खूब करती हैं लेकिन उनके दिमाग़ में धोखेबाज़ियों का तांता बंधा रहता है।" ब्राउन और अब ऊपर वाली दुनिया में रहने वाले चार्ली लाल-नकुए का बदला चुकाने की असमर्थता के कारण उसके दिल में एक जंगली विचार पैदा हुआ।

खाट पर लेटे हुए निक को अलितेत बराबर घूरता रहा। पोलोग में सन्नाटा छाया हुआ था, यहां तक कि होजपाइप में गलगलाने वाले पानी की भी आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह मानो कह रही थी कि ये गोरे लोग बड़े ही ख़राब होते हैं—सब के सब, यह सोया हुआ निक भी।

"शायद यह भी मुझे धोखा देने का जाल रच रहा है। कोई

बात नहीं। मैं उसे कहीं न ले जाऊंगा। चार्ली लाल-नकुए को मैं अपनी व्हेल-नाव पर ले गया और मेरा सितारा डूब गया। पिशाच चाहते हैं कि मैं इन मेरिकनों को कहीं न ले जाऊं।"

अलितेत ने आंखें फाड़कर निक की ओर देखा।

"इसे मैं ऊपर वाली दुनिया में ही क्यों न भेज दूं? निक ही वहां जाकर चार्ली लाल-नकुए को मेरे ग़ुस्से की ख़बर सुना दे," अलितेत के मन में विचार आया और उसने अपना चेहरा बारहसिंगे की खाल में छिपा लिया...

उसने करवट बदली और जब उसकी नींद खुली तो उसका सारा शरीर पसीने से तर था। उसने झटके से अपनी अमरीकी क़मीज़ खींचकर उतार ली। "मुझे यहां से चल देना चाहिए," अपनी बाहों की रगों को रगड़ते हुए उसने सोचा। "मुझे यहां से फ़ौरन चले जाना चाहिए।"

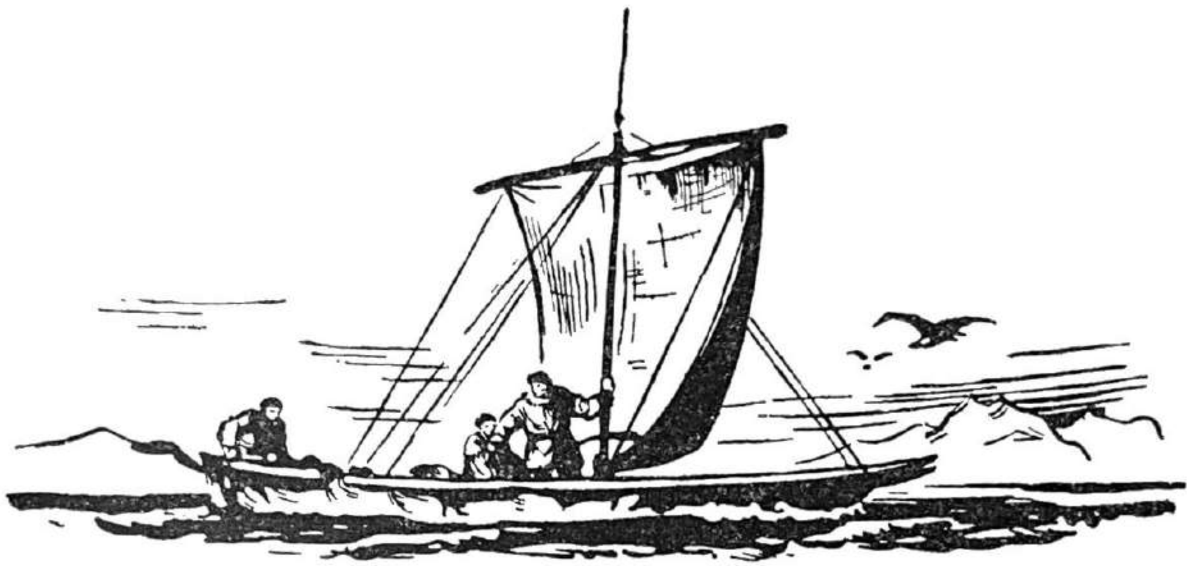
अपने नंगे शरीर पर अलितेत ने परका पहन लिया, सोये हुए निक पर एक नज़र दौड़ायी और हल्के से रेंगकर पोलोग के बाहर हो लिया। अपनी बरफ़-गाड़ी पर सवार होकर वह उन चरवाहों की खोज में गया जिन्हें एचावतो ने अलग कर दिया था। अपने बारहसिंगों को इकट्ठा कर उसे एक बड़ा रेवड़ जो बनाना था।



[illegible]

चौथा भाग

[illegible] [illegible]



पहला अध्याय

ओफ़! वह दृश्य कितना भयानक था!

आये ने देखा कि अलितेत हाथ में छुरा लिये तीग्रेना के बच्चे आयवाम के सामने खड़ा था। तीग्रेना अपने बच्चे को बचाने के लिए झपट पड़ी और छुरा उसने छीन लिया। उसके हाथ से ख़ून बह निकला। वह चीख़ पड़ी और आये जाग उठा।

आये घबड़ाहट में उछल पड़ा और अपने ही को चिकोटी काटने लगा। मारे डर के थरथराता हुआ वह बिस्तर के किनारे बैठा रहा। उसने इर्दगिर्द देखा और फिर तसल्ली की सांस ली।

"हो सकता है कि महाद्वीप पर की मेरी ज़िंदगी भी एक सपना ही हो?" फिर से अपने को चिकोटी काटते हुए उसने सोचा।

अर्धचेतना की स्थिति में उसने अपने बिस्तर की ओर देखा। बिस्तर देखते ही उसे बारहसिंगों वाली उस चौड़ी और ऊंचे तल्लों वाली बरफ़-गाड़ी की याद आ गयी जो माल ढुलाई के काम आती है। इन सभी परायी, अपरिचित चीज़ों की ओर अचरजभरी नज़र से देखते हुए आये ने बिस्तर पर भी एक निगाह डाली।

आये के आगे उसी के जैसे बिस्तर पर अन्द्रेई जुकोव सोया हुआ था। वह धीरे धीरे खुर्राटे ले रहा था। आये की नज़र उसपर

पड़ी और उसने सोचा कि "कुछ भी हो, मैं यहां अकेला तो हूं नहीं। अन्द्रेई की सांस मुझे सुनाई दे रही है।"

हां, यह टुंड्रा नहीं था जहां आये बरफ़ीले तूफ़ान में भी फ़ौरन समझ सकता था कि वह कहां है। वहां बरफ़ देखकर ही वह बता सकता था कि उत्तर कहां है और कहां है दक्षिण। उत्तरी हवा बरफ़ को समुद्र की ओर से उड़ा लाती थी और पहाड़ियों की दिशा में उसके ढेर लगा देती थी। वहां आदमी नदी-नालों के बहाव की दिशा देखकर ही बता सकता था कि वह कहां है। वहां भटक जाने का डर न था। लेकिन यहां, इस महाद्वीप में लंबी लंबी दीवारों के कारण हर चीज़ आंखों से ओझल थी। यहां तक कि हवा के आने-जाने के लिए भी काफ़ी जगह नहीं थी। यहां हर क़दम पर भटक जाने का डर था। आये को यह बात खली कि वह पूरी तरह से अन्द्रेई पर आश्रित है।

आये बिस्तर से बाहर आया। क़ालीन उसके नंगे तलवों में गुदगुदी पैदा कर रहा था। इस विचार से कि अपने मित्र अन्द्रेई की नींद न टूट जाये उसने सांस रोककर जल्दी जल्दी अपने मोज़े पहन लिये।

वालरस की खालों के परदे के समान दिखाई देने वाले मखमल के भारी परदे ने इस शयन-कक्ष को दूसरे कमरे से अलग कर दिया था। परदे के दो हिस्सों के बीच वाली फटन में से सूरज की किरणें जगमगा रही थीं।

इधर उधर देखता हुआ आये दबे पांव परदे के पास पहुंचा और ऐसी सावधानी से उसे ज़रा एक ओर हटाया, मानो चोरी चोरी किसी जानवर के पास पहुंच रहा हो। फटन के बीच में से ही वह खिसक गया और उसकी आंखें चौंधिया गयीं। बाहर रोशनी चमचमा रही थी।

"अरे, यह मौसम तो टुंड्रा के वसंत जैसा है," आये ने सोचा। "चश्मा लगाने लायक़ है।"

बड़े कमरे की हर चीज़ ने आये को क्रांति-समिति वाले छोटे से मकान की याद दिलायी। यहां भी खिड़कियां थीं, लेकिन बहुत ही बड़ी। मेज़ें, कुर्सियां और बेंचें भी थीं जो काफ़ी चौड़ी और मुलायम थीं, मानो उनपर काई का आवरण हो।

आये केवल मोजे पहने हुए, नंगे बदन उस कमरे में चहलक़दमी कर रहा था और पहली रात को देर से आने के कारण जो जो चीज़ वह ठीक से देख न पाया था उसे अब बारीकी से देख रहा था। उधर मेज़ पर एक छोटी, काली, बोलने वाली संदूक़ची पड़ी थी। आये अब इससे परिचित हो चुका था। अन्द्रेई कल उसमें चिल्ला चिल्लाकर किसी अदृश्य व्यक्ति से बातें कर रहा था। आये ने इस संदूक़ची को थपथपाना चाहा लेकिन टेलीफ़ोन के पास आते ही उसने एकदम कहा: "ओहो, यह तो रस्सी से बंधा पड़ा है!"

आये ने संदूक़ची को सहलाना-थपथपाना चाहा लेकिन उसे ऐसा करने का साहस न हुआ।

शहर सागर की लहरों की तरह शोरगुल कर रहा था। आये ने खिड़की में से देखा। 'सुनहरा सींग' नामक खाड़ी में कई जहाज़ लंगर डाले खड़े थे। तीसरी मंज़िल की उंचाई पर से उसने नीचे की ओर देखा तो उसे एक छोटा सा मकान – ट्रामगाड़ी – खड़खड़ाहट करता दौड़ता हुआ दिखाई दिया और एक बड़ा काला गोबरैला – मोटरकार – भी जो उस मकान से होड़ लगाये था। आये ने खिड़की में से झुककर देखा और उसका सिर चकराने लगा। ट्रामगाड़ी और मोटरकार पर वह तब तक आंखें गड़ाये रहा जब तक वे आंखों से ओझल न हो गयीं।

"कैसी बड़ी और शोरगुल वाली रूसी बस्ती है यह," आये ने आश्चर्यपूर्वक सोचा।

आख़िर खिड़की से हटकर वह कमरा लांघ गया और दीवार पर लटकते हुए एक चित्र के सामने आकर खड़ा हो गया। चित्र में उसे आग दिखाई दी। लपटों की लंबी लंबी ज़बानों के गोरखधंधे में मकान घिर गये थे और आदमी हाथों में बंदूक़ें लिये धुएं के बादलों के बीच से दौड़ रहे थे। यह लड़ाई की तस्वीर थी।

"आये!" अन्द्रेई ने पुकारा। "अरे, तुम जाग उठे?"

"हां, हां," अन्द्रेई की आवाज़ सुनकर बड़ी ख़ुशी से आये ने जवाब दिया और परदे की ओर दौड़ा।

अन्द्रेई बाहर आया।

"अरे, तुम इस तरह नंगधड़ंग क्यों घूम रहे हो?"

"यहां काफ़ी गरमी है, बिल्कुल पोलोग की तरह।"

"ख़ैर, चलो, ग़ुसलख़ाने में चलें।"

"फिर एक बार?"

"हां।"

"क्या मुझे भी चलना चाहिए?"

"ज़रूर।"

"अगर मैं इस तरह पानी में डुबकियां लगाता रहूं तो सील न बन जाऊंगा?" आये ने कहा।

स्नान कर चुकने के बाद आये अपने हाथ में एक टाई लिए अन्द्रेई के पास आया। "क्या यह फंदा मुझे फिर अपने गले में डालना होगा?"

"बेशक," अन्द्रेई ने कहा। "यह इस शहर का क़ानून है।"

आये सज-धज कर तैयार हुआ और अकड़ के साथ कमरे में चहलक़दमी करने लगा। यहां तक कि उसने अन्द्रेई की तरह अपने

हाथ भी पीठ पीछे बांध लिये। एक बड़े शीशे के पास से जाते हुए उसने चोरी चोरी अपनी ज़बान निकालकर देखा।

आये में कल्पनातीत परिवर्तन हो गया था। उसने एक बढ़िया काट वाला साफ़-सुथरा नीला सूट पहन रखा था। अब उसके बाल खड़े-बिखरे नहीं थे बल्कि मुलायम और रूसी ढंग से संवरे हुए थे। उसके सांवले चेहरे के कारण सफ़ेद क़मीज़ विशेष रूप से फब रही थी। फ़र वाले ऊंचे बूट पहने वह यहां आया था, लेकिन अब उनकी जगह वह अच्छे शू पहने था। एक आदमी कमरे में ये शू ले आया था। लेकिन आये लाख सिर खपाने पर भी यह न समझ पाया कि वह इन्हें ले क्यों आया। उनके तलवे सख़्त थे मानो लकड़ी के बने हों!

"ऐसे बूट पहनकर सारा दिन बारहसिंगों के पीछे दौड़ना नामुमकिन है," अपने नये जूतों का अगला हिस्सा देखकर आये ने सोचा।

"आये, कैसे ख़ूबसूरत नौजवान बन गये हो तुम!" उसकी ओर प्रशंसा की दृष्टि से देखते हुए अन्द्रेई बोला।

"अब हम कुछ खायेंगे और फिर लोस की बीवी का पता लगाने जायेंगे। कहो, ज़ोरों की भूख लगी है न?"

"नहीं। अब मुझे भूख लगती ही नहीं।"

"देखो, उधर वह बटन है न? ज़रा दबाओ तो उसे। फ़ौरन एक आदमी दौड़ा आयेगा।"

"नहीं, कोई नहीं आयेगा," आये ने अविश्वास से कहा।

एक आदमी चुपचाप कमरे में आ गया। अन्द्रेई ने उसे नाश्ता लाने की आज्ञा दी। वह आदमी अदब के साथ झुककर चला गया।

आये दौड़ता हुआ बटन के पास पहुंचा और उसे जांचने लगा।

"देखो, यह तो मछली की आंख जैसा है!" कहकर उसने बटन दबा दिया।

वह ग्रादमी फिर ग्रा गया ग्रौर हुक्म के इंतज़ार में कमरे में खड़ा रहा। ग्राये मुंह खोले उसकी ग्रोर ताकता रहा।

"फिर कहो ग्राये, तुम्हें क्या चाहिए? बोलो, तुमने इसे बुलाया है न?" ग्रन्द्रेई ने कहा।

ग्राये गड़बड़ा गया ग्रौर उसने ग्रपना सिर हिलाया। फिर परेशान सी ग्रावाज़ में बोला :

"मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

नाश्ते में ग्राये को सासेज मिले थे। दांतों को यह मसालेदार मांस पिलपिला सा लग रहा था। उसमें वालरस के मांस जैसा मज़ा नहीं था लेकिन कुछ भी हो वह खाने लायक़ ज़रूर था। उसे खाकर ग्रौर एक गिलास चाय पीकर ग्राये ने कहा :

"ग्रन्द्रेई, क्या मैं कुछ ग्रौर चाय ले सकता हूं?"

"ग्ररे सिर्फ़ उस 'मछली की ग्रांख' को दबाने की देर है, जितनी चाहो चाय ले लो। वह ग्रादमी ले ग्रायेगा।"

"वह शायद मेरी बात नहीं मानेगा।"

"क्यों नहीं? दबाग्रो तो बटन।"

वह ग्रादमी ग्रंदर ग्राया। ग्राये ने साहस बटोरा। "चाय," उसने ग्रदब से कहा। "मुझे कुछ ग्रौर चाय मिल सकती है?"

ग्राये देर तक 'मछली की ग्रांख' के ग्रचंभे में डूबा हुग्रा खड़ा रहा।

"ग्रन्द्रेई, क्या यह तुम्हारा यारंग है?" ग्राये ने पूछा।

"नहीं, यह मुसाफ़िरखाना है। तुम्हें रिंतेऊ का मुसाफ़िर यारंग याद है न? बस, उसी तरह का यह भी है।"

दरवाज़े पर दस्तक सुनाई दी। ग्रन्द्रेई उठ खड़ा हुग्रा। एक महिला उससे मिलने ग्रायी थी।

"क्या मैं ग्रन्द्रेई मिख़ाइलोविच जुकोव से मिल सकती हूं?" उसने पूछा।

"मैं ही अन्द्रेई हूं।"

"बड़ी खुशी हुई। कहिये, आप कैसे हैं?" महिला न प्रसन्नतापूर्वक कहा। "मैं हूं निकीता सेर्गेयेविच लोस की पत्नी।"

"नतालिया सेम्योनोव्ना!" तपाक से हाथ मिलाते हुए अन्देई ने कहा। "अभी हम आप ही से मिलने जा रहे थे।"

"मैं 'सोवियत' जहाज़ पर हो आयी हूं। कप्तान ल्यादोव ने मुझसे कह दिया है कि कल शाम से आप होटल में रहने गये हैं। जानते हैं, मैं लगभग एक घंटे से यहां चहलक़दमी कर रही हूं। सोचा कि आप सोये होंगे।"

"आइये, नतालिया सेम्योनोव्ना, अंदर आइये। आये से आपका परिचय करा दूं। वह बारहसिंगा-पालकों के यहां चरवाहे का काम करता था।"

नतालिया सेम्योनोव्ना ने आये से हाथ मिलाया और दिलचस्पी से उसकी ओर देखा।

"नतालिया सेम्योनोव्ना, इस युवक ने निकीता सेर्गेयेविच की और मेरी जान बचायी। यों कहिये कि मौत के पंजे से ही छुड़ा लिया। हम एक लंबी चट्टान से फिसल पड़े थे। हमारे कुत्ते भाग गये थे और टुंड्रा में हम अकेले रह गये थे। लेकिन इस युवक ने हमारी सहायता की। इसका नाम आये है।"

नतालिया सेम्योनोव्ना ने कृतज्ञतापूर्ण दृष्टि से आये की ओर देखा और फिर एक बार उससे हाथ मिलाया।

"आये, जानते हो यह कौन है? यह है हमारे लोस की बीवी," अन्द्रेई ने कहा। "बैठिये नतालिया सेम्योनोव्ना, बैठिये।"

आये इस महिला के चेहरे पर से अपनी नज़र न हटा सका। जिसे वह सब से बड़ा रूसी सरदार मानता था उसकी यह बीवी थी। इस स्वस्थ, सुंदर गौरांगना ने उससे हाथ मिलाया था और कोमल

स्मितपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा था। वह सफ़ेद पोशाक पहने थी। कोई सोचता कि चारों ओर बरफ़ फैली हुई है और वह शिकार के लिए रवाना होना चाहती है। लेकिन उसकी जूतियां बड़ी अजीब थीं। पता नहीं कैसे वह उनके सहारे खड़ी भी रह सकती थी! उसके काले बाल कुछ सफ़ेद से लग रहे थे लेकिन उसकी ज़ैतूनी आंखों में जवानी थी। आये ने झट से ये सारी बातें जान लीं।

"अच्छा साथियो, मैं कैसे शुरुआत करूं?" नतालिया सेम्योनोव्ना ने कहा। "मेरे पास इतने सवाल हैं कि मैं समझ ही नहीं पाती कि कौनसा सवाल पहले पूछूं।"

"निकीता सेर्गेयेविच मज़े में है। कामों में वह गले तक डूबा हुआ है लेकिन आपको बराबर याद करता रहता है। और नतालिया सेम्योनोव्ना, वह तो असल में आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। अब वहां हमारे पास अच्छा सा मकान है और काफ़ी दिलचस्प काम भी। नतालिया सेम्योनोव्ना, वहां के लोग बहुत ही भले हैं!"

"अन्द्रेई मिख़ाइलोविच, आप मेरे साथ देहात चलिये। गरमियों में मैं वहीं रहूंगी। बड़ी अच्छी जगह है। जंगल और फूल। हम सैर-सपाटा करेंगे और बातें भी। ट्रेन से हम वहां बात की बात में पहुंच जायेंगे।"

"बहुत अच्छा! और आये जंगल भी देख लेगा। चुकोत्स्क में कोई जंगल है ही नहीं। लेकिन ट्रेन से क्यों चलें? हम कार मंगवा लेंगे। आये, ज़रा दबाओ तो 'मछली की आंख'।"

आये ने जाकर बटन दबाया और उंगली वहीं लगाये रहा।

अन्द्रेई हंस पड़ा। "आये, अरे भई उंगली तो हटा लो। नहीं तो घंटी बजती ही रहेगी।"

तीनों होटल के बाहर आ गये। इस बीच दरवाज़े पर एक 'गोबरैला' आकर खड़ा हो गया था।

अन्द्रेई ने ड्राइवर के पास वाला किवाड़ खोला और कहा :

"आये, तुम यहां बैठो और खिड़की में से देखो।"

"और तुम कहां बैठोगे?" आये ने कुछ घबड़ाकर पूछा।

"हम यहां तुम्हारे पीछे बैठेंगे।"

"अच्छा हो कि मैं तुम्हारे साथ ही बैठूं। अकेले मुझे डर लगता है।"

"आये, अरे डरने की क्या बात?"

"हम तीनों यहां बैठेंगे," नतालिया सेम्योनोव्ना ने कहा।

कार मज़े से चल पड़ी और आये अन्द्रेई से चिपक गया। कार जंगली बारहसिंगे की तरह तेज़ दौड़ने लगी। एक चलता-फिरता छोटा सा घर एक मोड़ के पीछे से धड़धड़ाता हुआ आता दिखाई दिया और सीधे कार की ओर झपट सा पड़ा। आये कार में उचका और कार की छत से उसका सिर टकरा गया। अन्द्रेई ने पकड़कर उसे फिर से उसकी सीट पर बैठा दिया। कार शहर के बाहर आयी। अमूर खाड़ी के किनारे किनारे दौड़ते हुए उसकी रफ़्तार और भी तेज़ हो गयी। आये को ऐसा लगा मानो सागर उनसे मिलने के लिए दौड़ा चला आ रहा हो। पहाड़ियों से घिरी हुई खाड़ी को देखकर उसे कुछ तसल्ली हुई।

जब ये लोग जंगल में पहुंचकर कार से नीचे उतरे तो आये ने उसकी परिक्रमा की और सोचा कि "इसमें बैठकर लोमड़ियों का शिकार करने में कितना मज़ा आयेगा! एक भी लोमड़ी छूट न पायेगी।"

"कहिये साथी आये, हमारा व्लादिवोस्तोक आपको पसंद आया न?" नतालिया सेम्योनोव्ना ने पूछा।

"हां, ठीक है लेकिन टुंड्रा इससे अच्छा है," आये ने जवाब दिया। "वहां कैसी खामोशी रहती है। और यहां देखिये, कानों में ज़बरदस्ती शोरगुल घुसता है और नाक में धुआं।"

आय ने गर्दन पीछे झुका ली और एक लंबे, मोटे और काफ़ी पुराने पाइन वृक्ष का मुआयना करने लगा।

महाद्वीप पर अपने आरंभिक दिनों में आये के मन पर इतनी बातों का प्रभाव पड़ा था कि अब उसे हर चीज़ को देखकर पहले जैसा आश्चर्य न होता था।

अन्द्रेई और आये शीघ्र ही मास्को के लिए रवाना हो गये क्योंकि उन्हें वहां उत्तरी समिति को अपनी रिपोर्ट पेश करनी थी।

स्टीमर, रेल और मोटर से उन्होंने हज़ारों मील की यात्रा की। अब फिर व्लादिवोस्तोक आने पर आये ने कहा:

"अन्द्रेई, आजकल हम लोग हवा की तरह रह रहे हैं।"

आये अब फर्राटे से रूसी बोलता था। मास्को में उसे जुकोव का सहायक नियुक्त किया गया था। जुकोव को चुकोत्स्क सांस्कृतिक केंद्र के निर्माण का काम सौंप दिया गया था। वे दोनों नतालिया सेम्योनोव्ना के फ़्लैट में रहते थे। तीनों राह देख रहे थे कि कब उत्तरी जहाज़रानी का मौसम शुरू हो और कब हम कठोर किन्तु कमनीय चुकोत्स्क भूमि के लिए रवाना हों।

अन्द्रेई मकानों के निर्माण की निगरानी कर रहा था और स्कूल के सामानों, अस्पताल की साधन-सामग्रियों और तरह तरह के फ़र्नीचर के आर्डर उसने दे रखे थे। आये चुकोत्स्क प्रदेश को भेजे जाने वाले मोटर-बोट को चलाने की शिक्षा ले रहा था। वह अब शहर से पूरी तरह से वाक़िफ़ हो चुका था और अपने आप कहीं भी जा सकता था। फ़ुर्सत के समय वह बड़ी बड़ी दूकानों, सिनेमाघरों और बग़ीचों में जाया करता था जहां आमोद-प्रमोद में लगे हुए लोगों की भीड़ लगी रहती थी।

अब वह स्वतंत्र रीति से मोटर-बोट चला सकता था। वह एक छोटे से स्टीमर का कप्तान था। मोटर-बोट चुकोत्स्क सांस्कृतिक सेवा

केंद्र के लिए ख़रीदा गया था और अन्द्रेई के मातहत था। एक दिन खाने के बाद अन्द्रेई ने सुझाव दिया कि इस जहाज़ पर अमूर खाड़ी की सैर की जाये। आये ने बड़ी ख़ुशी से इस सुझाव का समर्थन किया। हां, समुद्र से संबंधित हर बात उसे हमेशा ही खुश कर देती थी। वह अधीरता से इतवार की प्रतीक्षा करता रहा।

इतवार के दिन कोई दस आदमी – चुकोत्स्क के लिए रवाना होने वाले मकान कामगार और अध्यापक – घाट पर इकट्ठा हुए। ये सब बड़े ख़ुश थे। आये ने पहले ही इन लोगों के साथ दोस्ती कर ली थी। वह बड़ी शान से पतवार के पास अपनी जगह पर जा बैठा। जहाज़ खाड़ी में सरपट दौड़ने लगा और आये नाक की सीध में देखता हुआ अपने समुंदर के बारे में सोचने लगा। अपने चुकोत्स्क सागर में वह कैसी शान से इस जहाज़ को चलायेगा यह विचार भी उसके मन में आया। वहां अब वालरसों को पकड़ने का बसंती मौसम शुरू हो रहा था...

दूसरा अध्याय

एकाक्ष लिग्रोक ने नयी बिदारका के ढांचे की परिक्रमा की। यह ढांचा किसी दुर्लभ भीमकाय प्राणी के कंकाल जैसा दिखाई दे रहा था। नयी बिदारका बनाने के लिए लिग्रोक कई वर्षों से लकड़ी इकट्ठा कर रहा था। इस तरह की नाव बनाना हर किसी के बस की बात न थी। लेकिन लिग्रोक कुशल कारीगर था। ज़रूरी यह था कि बिदारका काफ़ी बोझ उठा सके, वज़न में हल्की हो और समुंदर पर चल सके। जाड़े भर लिग्रोक ने बड़ी लगन से एक छुरे से बिदारका की लकड़ी की पसलियां चिकनी की थीं और बड़ी सावधानी से उनमें छोटे छोटे छेद बनाये थे। पसलियों को बांध रखने वाले तस्मों को

इन्हीं छिद्रों में से गुज़रना था। बिदारका की लंबाई पंद्रह क़दम थी। नाव की पेंदी की रीढ़ का काम देने वाला मुख्य बल्ला बर्च की लकड़ी का बना था। इस बल्ले में से दोनों ओर के छोटे बल्ले नाव के अगले और पिछले हिस्से की ओर मुड़े हुए थे। सावधानी से बनाये गये जोड़ों से ये अच्छी तरह बंधे हुए थे। इस ढांचे से बिदारका की पेंदी बनायी गयी थी। बग़लों में झुकी हुई स्थिति में पसलियां खड़ी थीं जो ऊपर की ओर छल्लों से जुड़ी थीं। पेंदी के सभी हिस्से एक ही औज़ार से बनाये गये थे। यह औज़ार था छुरा। यह कहना ठीक न होगा कि लिग्रोक ने बिना किसी अंदाज़ अनुमान के ही यह बिदारका बनायी थी। ये अनुमान उसने काग़ज़ पर भले ही न लिखे हों लेकिन अपने दिमाग़ में उनकी कल्पना ज़रूर कर ली थी।

ढांचा तैयार हो चुका था। लिग्रोक ने बड़े संतोष और विजय की भावना से उसकी परिक्रमा की। ढांचे को उसने चारों ओर से देख लिया – नज़दीक से भी और कुछ दूर से भी।

आख़िर उसने शिकारियों को पुकारकर बिदारका का नम आवरण लाने के लिए कहा। नाव के ढांचे के लायक़ यह खोल वालरस की नयी चमड़ियों से सिलकर बनाया गया था। पांच आदमी एक गड्ढे की ओर दौड़े और पानी में से जल्दी जल्दी ये चमड़ियां खींचने लगे। इन्हें अपने कंधों पर लादकर वे ढांचे के पास खींच लाये। ख़ुद लिग्रोक ने खोल फैला लिया और कहा :

"चढ़ाओ इसे ढांचे पर।"

बिदारका का ढांचा शीघ्र ही वालरस के आवरण से ढंक गया। इस आवरण की खालें एक ख़ास तरीक़े के बारीक टांके से सिली हुई थीं। खालों के किनारों में छेद बने थे, जिनके बीच में से वालरस के मोटे मोटे तस्मे नाव की पेंदी के बग़ल वाले बल्लों तक खिंचे हुए थे। इन तस्मों को कसकर तना दिया गया और बिदारका बनकर तैयार हुई।

लिम्रोक ने एक डांड़ उठाया ग्रौर उसे पीछे की ग्रोर तानकर नाव की बग़ल में ज़ोर से वार कर दिया। वालरस की खाल किसी भीमाकार ढोल की तरह बोल उठी।

"उधर पीछे की ग्रोर ज़रा ग्रौर कसो," लिम्रोक ने कहा।

ग्रादमियों ने पैर रोपकर ग्रौर पूरी ताक़त लगाकर तस्मों को खींच लिया।

"ठीक है, ग्रब बिदारका को समुंदर के पास ले चलो।"

ग्राठ ग्रादमियों ने नाव की बग़लों में ग्रपने कंधे लगाये ग्रौर उसे तट तक खींच ले गये। लिम्रोक ग्रन्तरीप की दिशा में चल दिया। वह बड़े ग्राराम से चल रहा था। ऊपर ऊपर से ऐसा दिखाई देता था कि उसके पास कोई ग्रौर काम नहीं है। लेकिन ग्रसल में वह एक ज़रूरी काम पर जा रहा था।

दर्रे के उस पार रहने वाले शिकारियों ने जब उसे देखा तो वे घबड़ा उठे ग्रौर एक यारंग से दूसरे यारंग तक इस तरह दौड़ने लगे मानो उनकी बस्ती में सफ़ेद रीछ ग्रा गया हो। उन्होंने फ़ौरन भांप लिया कि लिम्रोक क्या करने जा रहा है। फ़ौरन उस भीड़ में से एक शिकारी बाहर ग्राया ग्रौर व्यापार-केन्द्र की ग्रोर दौड़ा।

उसने हांफते हुए ग्रान्ना इवानोव्ना से कहा:

"ऐ ऐ, ग्रान्ना! लिम्रोक यह देखने गया है कि वालरसों का ग्राना-जाना शुरू हुग्रा कि नहीं। इधर ग्रभी तक रुसाकोव का कोई पता नहीं है। हमारे शिकारी भी यहां नहीं हैं। ख़ानाबदोशों के साथ लेन-देन करने के लिए ग्राठ ग्रादमी उसके साथ गये हैं। ऐ ऐ! लिम्रोक जानता है वालरस कब ग्राते हैं।"

ग्रान्ना – बच्चे ग्रौर बड़े सब उसे इसी नाम से पुकारते थे – उस शिकारी की परेशानी समझ गयी। उसने ग्राश्वासन के स्वर में कहा:

"फ़िक्र न करो। वे जल्दी ही वापस आयेंगे। क्या वे जानते नहीं कि जल्द ही वालरसों का शिकार शुरू होगा?"

"हां, हां वे जानते हैं। लेकिन वे हैं कहां?"

शिकार का मौसम सचमुच नज़दीक था। हर कोई यह जानता था। यहां तक कि कुत्ते भी ताड़ गये थे। वे अक्सर किनारे की ओर दौड़ने लगते और अपनी थूथनियां उठाकर समुद्र की गंध सूंघने लगते।

स्कूल की छुट्टियां हुईं। एक दिन पहले ही छात्रों ने बता दिया था:

"आन्ना, पढ़ना-लिखना काफ़ी हो गया है। अब कुछ ही दिन में वालरसों का शिकार शुरू होगा।"

अध्यापिका ने बहुत आग्रहपूर्वक कहा कि वे स्कूल जाना बंद न करें और तब तक पढ़ते रहें जब तक शिकारी शिकार के लिए रवाना नहीं होते। लेकिन बच्चों ने स्कूल आने का नाम न लिया। बड़े तड़के उठकर वे किनारे पर घूमने-घामने लगे और बत्तख़ों का शिकार करने और जालों के सहारे मछलियां पकड़ने लगे। हर कोई बड़े जोश में था। बच्चों की गूंजती हुई आवाज़ें कुनकुनी बसंती बयार की लहरों पर तैरती रहती थीं।

एकाक्ष लिग्रोक अपनी राह की जानकार बूढ़ी लोमड़ी की तरह भू-नासिका की तलेटी में आ पहुंचा। उसपर नज़र रखे हुए शिकारियों को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि चट्टानों पर चढ़ने के बजाय वह तट पर बैठ गया और पानी में कंकड़ फेंकने लगा।

तटवर्ती बरफ़ पिघल गयी थी और सागर शांत हो चुका था। प्रायः अस्त न होने वाले सूरज के दिखलाई पड़ने पर वह सदा ही शांत रहता था।

लिग्रोक देर तक सागर में कंकड़ फेंकता हुआ और उनके कारण पैदा होने वाले वृत्तों को देखता हुआ बैठा रहा। फिर यकायक वह

ग़ायब हो गया। चट्टानों पर विश्राम करने के लिए सागर से रेंगकर ग्राने वाले वालरस की तरह वह पेट के बल सरकता हुग्रा चट्टानों पर चढ़ने लगा।

यह विशाल ग्रंतरीप तरह तरह के ग्राकारों वाली ग्रेनाइट चट्टानों से बना था। गोल गोल शिला-खंड यहां ग्रस्त-व्यस्त बिखरे पड़े थे। लगता था कि ख़ुद शैतान ही वहां गेंद खेलता रहा हो। चट्टानें काली थीं ग्रौर उनपर यत्र-तत्र लिचेन पौधों के भूरे धब्बे दिखाई दे रहे थे। ये पौधे उनमें दृढ़मूल होकर चिपके हुए थे।

लिग्रोक देर तक चट्टानों पर सरकता हुग्रा ग्राख़िर चोटी पर जा पहुंचा। वहां उसे एक सपाट पत्थर दिखाई दिया जो धूप की वजह से गरम हो गया था। लिग्रोक ने ग्रपना परका उतारकर उस पत्थर पर फैला दिया ग्रौर सागर की ग्रोर मुंह किये उसपर पसर गया। इस ग्रंतरीप की चोटी पर से उसे ग्रासपास का इलाक़ा ग्रच्छी तरह दिखाई दे रहा था। चट्टानों से ग्रटा हुग्रा किनारा दाहिने-बायें दूर तक फैला हुग्रा था। दूर सागर में विरल हिमक्षेत्र तैरते जा रहे थे। लिग्रोक ने बारीकी से उन्हें देखा ग्रौर यह नतीजा निकाला कि वे धीरे धीरे दक्षिण-पूर्वी दिशा से उत्तर-पश्चिमी दिशा में बहते जा रहे हैं। "इन हिमक्षेत्रों के साथ वालरस भी ग्राते होंगे," उसने सोचा। उसने तंबाकू का बटुग्रा निकाला ग्रौर कुछ 'पपूशा' मलने लगा। फिर ग्रपनी पाइप भरकर उसने सुलगा ली। उसकी नज़र बराबर सागर पर गड़ी रही।

ग्राधा दिन बीत गया लेकिन लिग्रोक पत्थर पर लेटा ही रहा। उसके मन में विचार ग्राया कि प्याला भर चाय पी लेना ग्रौर सील के गोश्त का एकाध टुकड़ा खा लेना बुरा न होगा। वह घर जाने की सोच ही रहा था कि यकायक उसे एक परिचित ग्रावाज़ सुनाई दी। वह चौंक उठा, ग्रपनी टोपी उतारी ग्रौर उकड़ूं बैठा हुग्रा एकटक समुद्र की ग्रोर देखता रहा।

हां, यह वालरस के झुंड की दूर से आने वाली आवाज़ ही थी। झुंड अभी तक दिखाई न दे रहा था लेकिन लिम्रोक जानता था कि वालरस अपनी ताक़त बचाने के लिए बरफ़ के तूदों पर जोड़ी जोड़ी से तैर रहे थे। अपनी अकेली आंख से उसने बारीकी से उन तूदों का मुआयना किया। वालरसों की गर्जनाएं अधिकाधिक ज़ोरदार होती गयीं।

लिम्रोक एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर उछलता हुआ जल्दी जल्दी उस ढवलां चट्टान के नीचे उतर आया और बस्ती की ओर दौड़ा। अंतरीप की तलेटी में आकर उसका चित्त स्थिर हुआ। जब उसका हांफना बंद हुआ तो वह अपने यारंग की ओर चलने लगा। उसकी चाल से कुछ पता न चलता था कि उसकी मन:स्थिति क्या है। वह आराम से क़दम बढ़ा रहा था क्योंकि उसने अनुमान किया था कि वालरसों का झुंड दोपहर को देर से बस्ती के सामने आ पहुंचेगा। आर्टेल वाले शिकारियों के यारंग के पास से वह बड़े रोब के साथ गुज़रा, दर्रे में उतरा और फिर उस पार निकल आया। यहां रुककर उसने टुंड्रा पर नज़र दौड़ायी। फिर वह अपने यारंग के पास पड़ी हुई एक शिला पर खड़ा होकर पूरी ताक़त लगाकर पुकार उठा :

"वालरस हो-ओ-ओ-ओ!"

लोग फ़ौरन अपने यारंगों के बाहर निकल आये।

लिम्रोक ने फिर बांग दी, "वालरस हो-ओ-ओ-ओ!" फिर चाय की और खाने की बात भूलकर वह उधर किनारे की ओर दौड़ा जहां नयी बिदारका तैयार खड़ी थी। ठीक उसके पीछे शिकारी लोग भाले-बरछियां, हवाई थैलियां, बंदूक़ें और नाव का पाल वग़ैरह शिकार का साज-सामान लिये दौड़ पड़े।

लिम्रोक ने बिदारका की परिक्रमा और उसके खोल की पक्की सिलाई की जांच की। सिलाई में से पानी दसने की कोई संभावना

न थी। फिर डांड़ को पीछे की ओर तानकर पूरी ताक़त के साथ उसने नाव की बग़ल में एक चोट की। सारी बस्ती में एक गहरी टंकार गूंज उठी। यह इस बात का संकेत था कि वालरसों का शिकार शुरू हो गया है। बस्ती की यही सब से बड़ी बिदारका थी। यह चार वालरसों का बोझ उठा सकती थी।

"होशियार, उतार दो बिदारका समुंदर में!" लिम्रोक गरज उठा।

शिकारियों ने बिदारका सागर में उतार दी और वह सागर पर हौले हौले झूमती रही। छोटे डांड़ों का उपयोग करते हुए शिकारियों ने नाव को घुमा दिया और उसका पिछला हिस्सा किनारे के पास गया जहां बूढ़ा लिम्रोक बच्चों, औरतों और बूढ़े लोगों की भीड़ से घिरा हुआ खड़ा था। उछलकर वह नाव पर चढ़ा, पीछे की ओर बैठा और पतवार अपने हाथ में थाम ली। रोबदाब वाले आदमी की तरह बड़ी शान से वह बैठा था। सर उसका ऊंचा था और नज़र नाक की सीध में गड़ी हुई थी।

बिदारका ने किनारा छोड़ा। चमड़े की पकड़ों में झटपट लंबे डांड़ बैठाये गये।

"परके उतार लो!" लिम्रोक ने गरजकर हुक्म दिया।

शिकारियों ने परके उतार लिये। "आ-हा! आ-हा! आ-हा!" लिम्रोक कह रहा था और उसके कमान में वे सफ़ाई और तेज़ी से डांड़ चला रहे थे। उस समय उनकी मांसपेशियां लहरा सी उठती थीं। कुछ ही देर में बिदारका आंखों से ओझल हो गयी।

आर्टेल वाले शिकारी भी अपनी बिदारका ठीक-ठाक करने लगे। यह एक छोटी सी नाव थी जो एक समय एक ही छोटा सा वालरस उठा सकती थी। अधिक अनुभवी शिकारी रुसाकोव के साथ चले गये थे और बिदारका को सागर में उतारने के लिए लिम्रोक जैसी सफ़ाई किसी के पास न थी।

आन्ना इवानोव्ना भी यहां दौड़ी चली आयी। इस वक़्त आदमियों को पहाड़ियों में अटकाये रखने के लिए वह मन ही मन रुसाकोव को कोस रही थी। शिकारियों की मदद करने के लिए वह उत्सुक थी।

"साथियो, आप व्हेल-नाव पर क्यों नहीं जाते? यहीं तो खड़ी है वह।"

"नहीं जी, वह बहुत भारी है और मोटर चलाने वाला भी रुसाकोव के साथ गया है," एक शिकारी ने शिकायत के स्वर में कहा।

आर्टेल वाले शिकारी अभी अपनी नाव को पानी में उतार ही रहे थे कि समुंदर पर बंदूक़ों की आवाज़ सुनाई दी। लिम्रोक और उसके आदमियों ने शिकार शुरू कर दिया था।

लिम्रोक ने नौ वालरस मार लिये। उन्हें खींचकर बहते हुए बरफ़ के तूदों पर रख दिया गया। इन समुंदरी जानवरों की ख़ून से लथपथ गहरी भूरी लाशों के भारी बोझ के नीचे ये तूदे डगमगा रहे थे। लिम्रोक के आदेश पर शिकारियों ने वालरस के गोश्त के बड़े बड़े टुकड़े अपनी बिदारका में भर लिये।

"चौथे वालरस का भी गोश्त निकाल लो। बिदारका में और जगह है," अभिमानपूर्ण आत्मविश्वास के साथ उसने कहा।

शिकारियों ने अपने छुरों को तेज़ करना शुरू किया। लिम्रोक का हुक्म मानने के लिए वे बड़ी ख़ुशी से तैयार थे। वह उन्हें जल्दी जल्दी काम करने के लिए कह रहा था क्योंकि किनारे से वे कोई दस किलोमीटर दूर थे और उन्हें यह गोश्त किनारे पर पहुंचाकर वालरसों की बाक़ी लाशों के लिए वापस आना था।

भारी लदान ढोती हुई यह बिदारका किनारे को लौट रही थी। आर्टेल वाले शिकारियों की नाव इन्हें रास्ते में मिली। वह अभी शिकार के लिए रवाना हो रही थी।

"ऐ है!" लिग्रोक चिल्लाया। "अरे, वालरस तो चले भी गये। अब वहां एक भी वालरस नहीं मिलने का। हां, तीन दिन बाद और वालरस आयेंगे।"

लिग्रोक सच कह रहा था। वालरसों के मुख्य झुंड का आना अभी शुरू नहीं हुआ था। भूले-भटके जो कुछ वालरस आये थे उन्हें लिग्रोक ने मार डाला था। अब तीन-चार दिन तक नये वालरसों के आने की संभावना नहीं थी। आर्टेल के शिकारियों ने अपनी नाव पीछे घुमायी। हालांकि उनकी बिदारका ख़ाली थी फिर भी वह लिग्रोक की बिदारका के साथ रह न पायी। लिग्रोक की बिदारका तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। शिकार की कामयाबी ने खलासियों में नया जोश फूंक दिया था।

लिग्रोक ने जल्दी जल्दी बिदारका ख़ाली कर ली और बाक़ी वालरसों को लाने के लिए फिर रवाना हो गया।

लेकिन इधर हिमक्षेत्र वहां से हट गये थे। जब लिग्रोक वहां पहुंचा तो उसे वालरस की लाशों का कोई निशान न मिला। अपने शिकार की खोज में लिग्रोक सबेरे तक बरफ़ के तूदों के गोरखधंधे में घूमता रहा। पौ फटने के समय बिदारका बरफ़ से घिर गयी। लिग्रोक ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे उसे वहां से खींचकर हिमक्षेत्र पर ले जायें। अब खुद शिकारी ही मुर्दा वालरसों की तरह उत्तर-पश्चिमी दिशा में बहते जा रहे थे। स्थिति का निरीक्षण करने के लिए लिग्रोक एक ऊंचे तूदे पर चढ़ गया।

"बिदारका अपने कंधों पर उठाओ और मेरे पीछे पीछे चले आओ!" लिग्रोक ने कहा।

वह किनारे की दिशा में चल रहा था। आठ शिकारी बिदारका को हिमक्षेत्र के किनारे तक उठा लाये। इस बोझ के नीचे बेचारे लड़खड़ा रहे थे।

जब बिदारका पानी में उतारी गयी तो लिग्रोक ने कहा :

"हमें घर लौटना चाहिए। पांच वालरसों को खो देना कोई ख़ुशी की बात तो है नहीं। लेकिन ख़ैर। हम कुछ और का शिकार करेंगे। किनारे पर का एक वालरस समुंदर के दस के बराबर है।"

लिग्रोक ख़ुशी ख़ुशी किनारे पहुंचा और व्यापार-केंद्र में चला गया।

"आन्ना," उसने कहा। "आर्टेल की व्हेल-नाव सो रही है और उसके साथ साथ मोटर भी! और इधर हम चार वालरस मार लाये हैं। लिग्रोक ने ठीक ही कहा था कि वह काफ़ी वालरस मार लेगा।" यह कहते हुए लिग्रोक ने गर्व से अपना सीना ठोंक लिया।

"आओ लिग्रोक, अंदर आओ। मैं तुम्हारे लिए चाय बनाऊंगी – तेज़ चाय!" आन्ना इवानोव्ना ने कहा।

"ठीक है, हो जाये चाय," लिग्रोक मुस्कराते हुए बोला।

लिग्रोक बेंत की कुर्सी में डटकर बैठ गया और उपहासभरी दृष्टि से इस रूसी महिला की ओर देखने लगा।

"लिग्रोक, तुम मेरी ओर इस तरह क्यों देखते हो?"

"मैंने तुम्हें आर्टेल की बिदारका को विदा करते हुए देखा था। लेकिन तुम मुझे विदा करने नहीं आयीं – हालांकि मैं सब से अच्छा शिकारी हूं," बूढ़े ने अपमानित के से स्वर में कहा।

"लिग्रोक, मैं तो आना चाहती थी, लेकिन तुम इतनी जल्दी चले गये कि मैं तुमसे मिल न पायी। देखो लिग्रोक, तुम्हें आर्टेल वाले लोगों को कुछ गोश्त देकर उनकी मदद करनी चाहिए। तुम जानते ही हो कि सब के पास का गोश्त ख़त्म हो चुका है।"

लिग्रोक मुस्कराया, चाय की चुस्कियां लीं और बोला :

"मैंने हुक्म दिया है कि दो वालरसों का गोश्त दर्रे के इस पार वाले लोगों को दिया जाये। उनके पास मोटर भले ही हो, लेकिन बेचारे भूखे ही रह जायेंगे।"

"ओह लिम्रोक, तुम बड़े भले आदमी हो!"

"हां, ज़रूर," उसने उदारतापूर्वक स्वीकार किया।

तीसरा अध्याय

वसंत आया। बरफ़ जब क़रीब क़रीब पिघल चुकी उस समय रुसाकोव घर लौटा। इन ढाई महीनों में वह कई बस्तियां घूम आया और बारहसिंगा-पालकों के साथ उसने अच्छे संपर्क स्थापित कर लिये। हर जगह अच्छे दोस्त की तरह उसकी आवभगत हुई। हर किसी ने उसे अच्छा मेहमान माना।

रूसी व्यापारी की भलमनसाहत की बात ख़ानाबदोशों की एक बस्ती से दूसरी बस्ती तक फैलती गयी। हां, यह सही है कि कुछ लोगों ने रुसाकोव को बुद्धू क़रार दिया था क्योंकि वह अपने माल की क़ीमत नहीं जानता था। एक खाल के लिए वह कई चीज़ें दे डालता था। हर कोई जानता था कि बारहसिंगे की खाल का दाम नगण्य है लेकिन यह सौदागर ऐसी खाल के लिए भी कारतूसों का एक पैकेट और चाय की एक ईंट दे देता था। इस तरह का सौदा पहले किसी ने नहीं किया था – किसी ने नहीं! हां, लेकिन एक बात ठीक नहीं थी। यह सौदागर शराब नहीं लाया था!

चुकोत्स्क की जनसंख्या का सब से पिछड़ा हिस्सा था ये पहाड़ी लोग – ख़ानाबदोश बारहसिंगा-पालक। उनकी ख़ानाबदोश ज़िंदगी के कारण वहां सोवियत प्रणाली प्रचलित कराना बड़ा मुश्किल था।

लेकिन फिर भी नयी ज़िंदगी और नये क़ानून की बात वहां तक पहुंच गयी थी।

रुसाकोव केवल व्यापारी नहीं था। खालों के बदले माल देते समय वह इस बात पर विचार करता रहता था कि पहाड़ियों में किस तरह सोवियत प्रणाली संगठित की जाये। उसने देखा था कि खानाबदोश बस्तियों की क़बीला सोवियतें किस तरह समाप्त हो जाती थीं और जैसे ही उनकी स्थापना करने वाला क्रांति-समिति का आदमी वहां से चल दिया कि दूसरे ही दिन उनका कोई नामोनिशान न रहता था। पहाड़ी लोग ख़ुद अपने क़ानूनों के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर करते थे और प्राकृतिक अर्थ-व्यवस्था के अनुसार उनका व्यवहार चलता था। ऐसा लगता था कि उनके सोच-विचार के लिए बारहसिंगों के अलावा कुछ है ही नहीं। ज़िंदगी को नयी बुनियाद पर क़ायम करने की बात वे झट से भूल जाते थे।

घुमंतू दूकान की कल्पना रुसाकोव की अपनी थी और अपने सौदागरी दौरे की सफलता पर उसे बड़ा संतोष था। लेकिन एक बात उसके मन में खरकती रही। वह यह कि दौरे के दौरान आठ बरफ़-गाड़ियों में जोते गये छियानवे कुत्तों ने छः सौ से भी अधिक बारहसिंगों को स्वाहा कर दिया था।

"अरे, यह तो पूरा रेवड़ ही हो गया!" घर लौटते समय वह सोच रहा था। "यह काफ़ी महंगा पड़ता है। इस तरह से तो हम बारहसिंगों का सफ़ाया कर डालेंगे। हमें बारहसिंगों की बरफ़-गाड़ियों से काम लेना चाहिए। वे अपना चारा खुद ही ढूंढ लेते हैं। और यहां सोवियत प्रणाली का संगठन व्यापारी प्रणाली के द्वारा ही करना चाहिए। मध्य श्रेणी वाले बारहसिंगा-पालकों की सहकारी समितियों के ज़रिये ही यह काम करना चाहिए।"

रुसाकोव जब घर पहुंचा तो आन्ना इवानोव्ना ने उसे अच्छी-खासी डांट पिलायी।

"तुम पागल हो गये हो!" उसने कहा। "इधर वालरसों का शिकार शुरू हुआ है और तुम चले गये पहाड़ियों में। खुद गये सो गये, शिकारियों को भी लेते गये।"

"क्या वालरस कहीं दिखाई दिये?" रुसाकोव ने उत्सुकता से पूछा।

"हां ज़रूर। इधर लिम्रोक आर्टेल के सदस्यों पर ताने कस रहा है। बराबर कहता रहता है कि 'व्हेल-नाव सो रही है, मोटर सो रही है'। तुमने आर्टेल का संगठन किया और तुम्हीं उसे तोड़ रहे हो।"

"त-त-तुम्हारा कहना सही है। लेकिन हमें स-स-सोवियत प्रणाली प-प-पहाड़ियों में भी लागू करनी है। है न? वहां का काम व-व-वहीं तो करना चाहिए।"

आन्ना इवानोव्ना आगबबूला हो उठी। "इधर किनारे पर बसे हुए लोगों में भी सच्ची सोवियत प्रणाली का पता नहीं और तुम बात करते हो पहाड़ियों की! पहले यहीं के लोगों को दिखाओ कि सोवियत प्रणाली है क्या।"

"लड़ाई स-स-सभी मोर्चों पर एक साथ छ-छ-छेड़ी जाती है, एक म-म-मोर्चे पर नहीं। वहां स-स-सहकारी समिति की ज़-ज़-ज़रूरत है। च-च-चढ़ाई सभी मोर्चों पर एक साथ क-क-करनी पड़ती है।"

"चढ़ाई! इधर लिम्रोक वालरस मार भी लाया और तुम थे कि सारा आर्टेल पहाड़ियों में ले गये! उन लोगों के रिश्तेदार तुम्हें कोसते फिर रहे हैं। देख लो यह सहकारी समिति!"

रुसाकोव उछलकर खड़ा हो गया और मोटर-चालक तेवलिम्रांकाऊ को ढूंढने चला गया। इस जवान को ओसिपोव ने तालीम दी थी।

पहाड़ियों से वापस ग्राने पर सभी शिकारी कुत्तों को छोड़कर फ़ौरन बिदारका में बैठ समुंदर पर गये थे। उन्हें जिस बात की ज़रूरत थी उसके ग्रागे उन्हें व्हेल-नाव ग्रौर मोटर की क्या परवाह थी।

रुसाकोव को यह बात चुभ गयी कि शिकारी उससे कहे बिना शिकार के लिए चले गये।

"कहो, ग्रब तुम्हें क्या कहना है? वे तो ग्रभी भी मोटर को मनबहलाव की चीज़ भर मानते हैं," सागर पर नज़र दौड़ाते हुए उसने मन ही मन कहा।

लिग्रोक ग्रपने हाथों में समुद्री गोभी का एक गुच्छा लिये पानी के किनारे उसके पास ग्रा पहुंचा।

"ह-ह-हेल्लो, लिग्रोक," रुसाकोव ने कहा। "त-त-तुम शिकार पर क्यों नहीं गये?"

"मेरे ख़्याल में लिग्रोक सुस्त बन गया है," बूढ़े ने बनावटी ढंग से मुस्कराते हुए कहा।

"लिग्रोक, इस तरह घुमा-फिराकर बातें न करो।"

"ग्राज कोई वालरस नहीं मिलने के," सिर हिलाते हुए उसने गंभीरतापूर्वक कहा।

"तो फिर ग्र-ग्र-ग्रार्टेल वाले ग्रादमी क्यों शिकार पर गये?"

"हां: हा:! वे खोये हुए वक़्त की भरपाई चाहते हैं। लिग्रोक जो छोड़ ग्राया है उसी को उठाने गये हैं ग्रार्टेल वाले शिकारी। कल मैं बरफ़ के तूदों पर पांच वालरस छोड़ ग्राया हूं..."

इतने में उन्हें मोटर की धड़कन सुनाई दी। चट्टान के पास एक व्हेल-नाव दिखाई दी। वह किसी पहाड़ी झील में तैरने वाले राजहंस की तरह ग्रागे बढ़ रही थी। उस व्हेल-नाव पर ग्रपनी तेज़ नज़र गड़ाये लिग्रोक चुपचाप खड़ा रहा।

व्हेल-नाव अभी काफ़ी दूर थी, लेकिन उसने जान लिया कि उसपर सिर्फ़ औरतें हैं। उसपर कोई भी डांड़ चलाने वाला नहीं था लेकिन फिर भी वह तेज़ी से आगे बढ़ रही थी। मोटर की निरंतर धड़कन किनारे पर गूंज उठी।

"अरे, कौन है यह?" रुसाकोव ने पूछा।

"मुझे लगता है कि पतवार पर वामचो बैठा है," लिम्रोक ने आश्चर्य के स्वर में कहा। वह जल्दी जल्दी पानी के किनारे जा पहुंचा।

मोटर यकायक थम गयी और व्हेल-नाव झट से घूम गयी। उसकी रफ़्तार कम होती गयी और वह किनारे के पास आ रुकी।

"रुसाकोव!" अध्यापक द्वोरकिन ने व्हेल-नाव पर से पुकारा।

रुसाकोव उससे मिलने के लिए जल्दी जल्दी आगे बढ़ा। द्वोरकिन कंकरीले किनारे पर कूद पड़ा और मुस्कराते हुए उससे हाथ मिलाया। एक अर्से से वह किसी रूसी से मिल न पाया था।

वामचो धीरे धीरे उनके पास पहुंचा और गंभीरता से रुसाकोव की ओर अपना हाथ बढ़ाया। लिम्रोक आंख सिकोड़कर उसकी ओर ताकता रहा।

"ओहो! यह भी हाथ ऊपर-नीचे करना सीख गया है!" लिम्रोक ने सोचा। वह व्हेल-नाव के और नज़दीक आ गया।

"रुसाकोव, हम गैसोलिन के लिए यहां आये हैं," द्वोरकिन ने ख़ुशी से कहा। "शिकार का मौसम शुरू होने से पहले हमें स्टाक कर लेना चाहिए।"

"कुछ ही दिन में वालरस आने लगेंगे," वामचो ने कहा।

लिम्रोक ने व्हेल-नाव का और उसमें बैठी हुई औरतों का मुआयना किया और अपने सिर को झटका देकर उपहास के स्वर में कहा :

"क्या आप सैर करने निकली हैं?"

"नहीं," वाकत ने गंभीरता से उत्तर दिया। "वामचो ने हमसे कहा था कि चलिये, शायद रास्ते में वालरस मिल जायें। हमें कुछ शिकार करना होगा।"

"ओहो! ऐसी बहादुर औरतें मैं पहली बार देख रहा हूं! अपनी चौड़ी आस्तीनों की वजह से आप वालरसों को डराकर भगा देंगी और कुछ नहीं। वालरसों को आप कहीं बुद्धू आदमी तो नहीं समझ बैठीं? एं?" आख़िर लिग्रोक ने ऐसी मज़ेदार और अश्लीलता भरी बात की कि वे सारी औरतें हंसते हंसते लोट-पोट हो गयीं।

वामचो दौड़ता हुआ आया।

"ज़रा सुनना, मेरा दोस्त रुसाकोव सब औरतों को चाय पर बुला रहा है। चाय होगी और बिस्कुट भी!" उसने कहा।

लिग्रोक ने नज़र बदलकर वामचो की ओर देखा और यह मानते हुए कि वामचो झूठ बता रहा है, उसने व्यंग्यपूर्वक पूछा:

"वह तुम्हारा दोस्त कब से बना? तुम्हारा दोस्त तो है पहाड़ी भेड़ा।"

"किनारे पर रहने वाले सभी रूसी मेरे दोस्त हैं। मास्टर ने ही मुझसे कहा था," वामचो ने खट से जवाब दिया।

"तो क्या लोस भी तुम्हारा दोस्त हो गया?"

"हां हां, ज़रूर!" वामचो ने कहा और गर्व से अपने सिर को पीछे झटका देकर उन औरतों के साथ लंबे डग भरता हुआ व्यापार-केंद्र की ओर चल दिया।

लिग्रोक की यह शोहरत थी कि वह एक बड़ा शिकारी और बिदारका बनाने वाला कारीगर है और तट-प्रदेश के सभी शिकारियों को उसकी ज़रूरत पड़ती है। लेकिन वामचो ने उसके बारे में अपनी राय बदल ली थी। इस तब्दीली की वजह अलितेत के साथ हुई बातचीत थी।

अलितेत ने कहा था कि लिम्रोक उसका दोस्त है क्योंकि वह कुत्ता-दल के अगुआ कुत्ते जैसा आदमी है—वह ज़िंदगी की राह जानता है। बिना लिम्रोक और अलितेत के लोगों का काम ही नहीं चल सकता।

अलितेत का डींग मारना वामचो को पसंद न आया था। उस समय गुस्से में आकर उसने कहा था: "हमारा सब काम ठीक चलेगा। अपनी राह हम खुद ढूंढ लेंगे। हमें न तुम्हारी ज़रूरत पड़ेगी और न तुम्हारे दोस्त लिम्रोक की ही।" यही कारण था कि वामचो आज की मुलाक़ात के मौक़े पर लिम्रोक के साथ बेमुलाहिज़ा पेश आया।

लिम्रोक वामचो की ओर ताकता हुआ खड़ा रहा। ऐसा लग रहा था जैसे यह सब उसे ज़रा भी पसंद नहीं। फिर वह झट से व्हेल-नाव की ओर मुड़ा और उकड़ूं बैठकर उसका निरीक्षण करने लगा।

"अगर यह नाव इस तेज़ी से वालरसों का पीछा करे तो लिम्रोक का सितारा ही डूब जाये," उसने सोचा। "लेकिन क्या वामचो को ज़िंदगी का उतना तजरबा है, जितना लिम्रोक को है? ओहो, असल में किनारे पर लिम्रोक जितने लोग इने-गिने ही तो हैं। बताइये, जैसी बिदारका मैं बना सकता हूं, कोई और बना सकता है? कोई नहीं।"

फिर वह भी व्यापार-केंद्र की ओर चल दिया।

व्हेल-नाव वाली औरतें गोदाम के बाहर दो बड़े पिटारों पर बैठी हुई चाय पी रही थीं। आन्ना इवानोव्ना उनकी ख़ातिरदारी कर रही थी। लिम्रोक को दूर ही से उनका खुशी से हंसना-हंसाना सुनाई दिया। वामचो के आर्टेल वाली स्त्रियां आज ही पहली बार गोरी औरत को देख रही थीं। आन्ना इवानोव्ना ही उनके हंसी-मज़ाक़ का निश्छल कारण थी।

इधर लिम्रोक को सागर पर एक बिदारका की झलक मिली—यह दर्रे के इस पार वाले आर्टेल शिकारियों की बिदारका थी।

"ख़ाली है। तभी तो ऊपर उछल रही है," लिम्रोक ने मन ही मन कहा। वह चट्टान की एक टांड़ पर बैठा और आने वाली बिदारका पर नज़र टिका दी।

सब से पहले तेवलिम्रांकाऊ किनारे पर कूदा। लिम्रोक की ओर बिना ध्यान दिये ही वह सीधे व्यापार-केंद्र की ओर दौड़ा चला गया।

बिदारका में बैठे हुए बाक़ी लोग भी उसके पीछे पीछे दौड़े। उनसे लिम्रोक को पता लगा कि वामचो की व्हेल-नाव को आते हुए देखकर ही ये लोग वापस आये थे।

तीव्र जिज्ञासा से लिम्रोक भी रुसाकोव के पास चला गया।

"आन्ना, कहां हैं वे लोग?" उसने पूछा।

"उधर, कमरे में बैठे हैं।"

"वामचो और तेवलिम्रांकाऊ भी?"

"हां हां, लिम्रोक, सब वहीं हैं।"

"ऊंह! ये भी दोस्त बन गये!" वामचो और तेवलिम्रांकाऊ के बारे में सोचते हुए लिम्रोक ने मन ही मन कहा। आम तौर पर लिम्रोक इस मंडली से चार हाथ दूर रहता लेकिन अब उसने आत्मसम्मान को ठुकराकर चुपचाप उस मकान में प्रवेश किया। इससे पहले कभी भी उसने रुसाकोव के घर में इतने अस्थिर चित्त से प्रवेश नहीं किया था।

उसने किवाड़ खोला और किवाड़ की बग़ल का सहारा लिये खड़ा रहा। तेवलिम्रांकाऊ और सभी मेहमान मेज़ पर बैठे चाय पी रहे थे। इसी मेज़ पर लिम्रोक कई बार बैठ चुका था।

"ब-ब-बैठो, लिम्रोक," रुसाकोव ने कहा।

इतने में बाहर से "वालरस! वालरस!" की पुकार सुनाई दी।

हर कोई बाहर को दौड़ा। सभी आदमी वालरसों के एक बड़े-भारी झुंड की गर्जना सुनते रहे।

लिम्रोक तीर की तरह अपनी बिदारका की ओर भागा। उसके शिकारियों ने बिदारका पानी में उतार भी दी थी। लिम्रोक दौड़ते दौड़ते कूदकर उसमें बैठ गया।

मोटर-चालक तेवलिम्रांकाऊ अपनी व्हेल-नाव की ओर दौड़ा, लेकिन वामचो ने उसे रोक लिया।

"एक मिनट ठहरो, तेवलिम्रांकाऊ। कोई जल्दी नहीं है। लिम्रोक सभी वालरस थोड़े ही मार देगा! सुनो, उनके गरजने की आवाज़ सुन रहे हो न? देखो, अभी हमारी तैयारी नहीं हुई है।"

तेवलिम्रांकाऊ ने दंग रहकर वामचो की ओर देखा।

"हमें अपने आर्टेलों की एक बैठक बुलानी चाहिए।"

"आम्रो वामचो, आम्रो!" अध्यापक ने बात कही। "यह बैठक का वक़्त नहीं है! हमें फ़ौरन रवाना होना चाहिए!"

"छोटी सी बैठक। हो सकता है कि हम दो व्हेल-नावों पर साथ साथ ही शिकार करें। हमें उन औरतों को इसके बारे में बता देना चाहिए।"

किनारे पर व्हेल-नाव के पास वामचो ने शिकारियों को साथ साथ शिकार करने की बात बता दी। इधर यह भाषण चल रहा था, मोटर अपनी जगह में रखी जा रही थी और उधर सागर पर से बंदूक़ों की आवाज़ आ रही थी। लिम्रोक ने शिकार शुरू भी कर दिया था।

बैठक समाप्त होते ही दोनों व्हेल-नावें चल पड़ीं। जहां शिकार चल रहा था उस हिमक्षेत्र के पास पहुंचकर उन्होंने देखा कि लिम्रोक अपनी बिदारका पर मुर्दा वालरसों को लादे वापस जा रहा है। व्हेल-नावें बिदारका के पास से होकर आगे बढ़ीं और बिदारका में पीछे की ओर बैठा हुआ लिम्रोक खड़ा होकर कुछ चिल्ला पड़ा।

वामचो ने झट से अपनी व्हेल-नाव घुमा ली और जल्द ही बिदारका के पास पहुंचा।

"लिम्रोक, क्या कहा तुमने?"

"मैंने उधर तीन वालरस छोड़ रखे हैं!.. उन्हें तुम ले सकते हो!.. तुम्हारे आर्टेल के लिए यह मेरी भेंट है!" लिम्रोक चिल्लाया।

"हम खुद ही जितने चाहें मार लेंगे। तुम्हारी भेंटों की हमें कोई ज़रूरत नहीं," द्वोरकिन ने उत्तर दिया।

अध्यापक हाथों में बंदूक़ लिये नाव के अगले हिस्से में खड़ा था। औरतें आंखें फाड़ फाड़कर सागर को देख रही थीं कि कहीं वालरस दिखाई तो दे। वाकत बरछी लिये तैयार खड़ी थी। उसका हाथ मज़बूत था और निशाना कभी न चूकता था।

तेवलिम्रांकाऊ साथ साथ शिकार के लिए इस शर्त पर राज़ी हो गया था कि औरतों का आर्टेल उतने ही वालरस मारे जितने कि मर्दों का आर्टेल मारता है।

वामचो की व्हेल-नाव वालरसों के एक छोटे से झुंड में घुस गयी। उनमें से चार वालरस अपनी भद्दी थूथनियां पानी के ऊपर उठाये नाव के पास से गुज़रे। सर्र से एक गोली छूटी और फ़ौरन दूसरी – एक नाव के अगले हिस्से से और दूसरी पिछले हिस्से से। साथ ही साथ एक बरछी फेंकी गयी और उसने ठीक निशाना साधा। वालरस अपने पीछे सील की फूली हुई थैली खींच लाया।

व्हेल-नाव ने वापस जाने वाले वालरसों का ख़ात्मा कर डाला और जल्द ही चारों बेजान वालरस फूली थैलियों के सहारे लटकने लगे। अध्यापक, वामचो और औरतों ने झटपट उन वालरसों को काट-छांट लिया।

"वामचो, चलो जल्दी किनारे चलो," अध्यापक ने कहा। "एक वालरस को हम रस्सी से घसीटते हुए ले जायेंगे।"

लिग्रोक की बिदारका ग्रभी तक किनारे नहीं पहुंची थी। व्हेल-नाव पीछे से ग्राकर ग्रागे निकल गयी। लिग्रोक के शिकारी पूरी मेहनत-मशक़्क़त के साथ खे रहे थे ग्रौर उनके गहरे भूरे शरीर पसीने से चमक रहे थे।

"ऐ है, लिग्रोक! देखो, हमारे साथ रह सकते हो कि नहीं!" वामचो चिल्लाया ग्रौर उसने एक तस्मे का सिरा उसे दिखाया। इसका मतलब था कि "मेरी नाव की रस्सी से ग्रपनी बिदारका जोड़ लो"।

लिग्रोक ने मुंह फेर लिया। ग्रपना क्रोधपूर्ण तिरस्कार सूचित करने के लिए उसने ग्रपने ग्रादमियों से कहा कि वे नाव खेना बंद कर दें।

व्हेल-नाव के किनारे बैठी हुई ग्रौरतें मुंह दबाकर हंस पड़ीं।

ग्रब दूसरी व्हेल-नाव भी लिग्रोक की बिदारका के ग्रागे निकल गयी। यह भी वालरसों से लदी हुई थी।

हिमक्षेत्र तक लिग्रोक के पहुंचने से पहले ही व्हेल-नाव वाले खलासियों ने दो फेरियां कर लीं। बंदूक़ों के कारण तितर-बितर होकर वालरस बरफ़ छोड़कर चले गये ग्रौर फिर शिकार पानी में जारी रहा।

लिग्रोक ग्रपनी बिदारका में खड़ा होकर तेवलिग्रांकाऊ की ग्रोर देखता रहा। वालरस ने गोता लगाया था एक ग्रोर ग्रौर उसकी व्हेल-नाव जा रही थी बिल्कुल दूसरी ग्रोर। तेवलिग्रांकाऊ ग्रभी तक लिग्रोक जितना ग्रनुभवी शिकारी नहीं बन सका था।

लिग्रोक तिरस्कार के स्वर में बोल उठा: "ऐ ऐ, कैसा भद्दा शिकारी है!"

वालरस जब काफ़ी दूर पानी की सतह पर निकल ग्राया तब कहीं तेवलिग्रांकाऊ की नज़र उसपर पड़ी। झट से व्हेल-नाव घुमाकर वह उसके पास जा पहुंचा। एकदम गोलियां छूटीं। रुसाकोव ने भी गोली चलायी थी।

रात तक शिकार चलता रहा।

शिकार बड़ा कामयाब रहा। व्हेल-नाव भी अच्छी तरह चल रही थी। आज तक कोई भी बिदारका एक ही दिन में बत्तीस वालरस नहीं ला सकी थी। इस प्रदेश में ऐसा शिकार किसी ने न देखा था, न सुना था। व्हेल-नाव के बारे में शक करने वाला तेवलिग्रांकाऊ को अब गौरव अनुभूति हो रही थी। सभी लोग नाव से उतर पड़े लेकिन वह वहीं बैठा रहा। उसने मोटर को थपथपाया और मुंह ही मुंह में उसकी तारीफ़ करता गया – मानो मोटर कोई चतुर अगुआ कुत्ता हो।

वामचो के मातहत काम करने वाला महिला आर्टेल भी पच्चीस वालरस ले आया। दर्रे के इस पार के किनारे पर गोश्त ही गोश्त हो गया। काम में मशग़ूल लोग इधर उधर दौड़ रहे थे। कुत्ते वालरस के ख़ून पर टूट पड़े थे।

लेकिन दर्रे के उस पार ख़ामोशी थी। उधर किनारे पर सिर्फ़ आठ वालरस पड़े थे। दर्रे के इस पार लिग्रोक आंख उठाकर भी देखना न चाहता था। वह इस ओर से मुंह फेरे खड़ा था मानो यह बताना चाहता हो कि उसने वहां कुछ ख़ास बात देखी ही नहीं। बूढ़े को अपनी हार के ख़्याल से काफ़ी सदमा पहुंचा था। अपनी भावनाएं उभड़ न उठें इस विचार से वह किनारा छोड़कर अपने यारंग में चला गया।

एक महान शिकारी और कुशल कारीगर और बिदारकाओं के सिद्धहस्त निर्माता लिग्रोक का नाम एक दिन में काफ़ूर हो गया।

लिग्रोक अपने पोलोग में बैठा चाय पी रहा था और व्हेल-नाव के बारे में विचार कर रहा था। यह विचार उसके मन को बराबर अशांत किये था।

"इस तरह की व्हेल-नाव मैं ख़ुद बना लूंगा... हां, लेकिन इसके लिए मुझे तख़्ते कहां से मिलेंगे?.. और मोटर बनाना तो मेरे लिए नामुमकिन ही है!" वह सोचता गया।

लिग्रोक को दढ़ियल रूसी सरदार की, नयी ज़िंदगी के बारे में उसकी बातों की, अमरीकी माचिस की और रूसी 'पपूशा' तंबाकू की याद आयी। "और व्हेल-नाव? कैसी व्हेल-नाव है! ऐ! औरतें भी कितने वालरस मार लायीं!.. और तेवलिग्रांकाऊ! वह क्या शिकारी है! ज़िंदगी और जानवरों की आदतें क्या मुझसे ज़्यादा वह जानता है? लेकिन यह मोटर उसे सीधे वालरस की नाक तक ले जाती है! ज़रा बिदारका पर मुझसे होड़ लगाये तो... दर्रे के उस पार रहने वाले लोग आजकल बड़े ख़ुश हैं। शायद वे लिग्रोक का मज़ाक़ भी उड़ाते होंगे।"

बूढ़े ने तेवलिग्रांकाऊ को अपने पास बुला लिया।

तेवलिग्रांकाऊ फ़ौरन आ पहुंचा।

"लिग्रोक," उसने कहा, "तुम शायद वे दो वालरस वापस चाहते हो जो तुमने हमारे आर्टेल को दे दिये थे? हम तुम्हें दो की जगह चार देंगे। तुम्हारे पास काफ़ी वालरस तो हैं नहीं।"

लिग्रोक ने तेवर चढ़ाये, अपनी आंख सिकोड़ी और बर्फ़ की खाल से बनी हुई एक पीकदानी में थूक दिया। उसका मन हुआ कि तेवलिग्रांकाऊ को निकाल बाहर कर दूं लेकिन उसने अपने को क़ाबू में रखा और कहा:

"नहीं, मैंने तुम्हें इसलिए नहीं बुलाया।" फिर उसकी नज़र से नज़र मिलाकर उसने कहा: "मैं तुमसे एक बात पूछना चाहता हूं–कहो, तुम मुझसे अच्छे शिकारी हो? ऐ?"

तेवलिग्रांकाऊ चुप रहा।

"या तुमने मुझसे ज़्यादा ज़िंदगी देखी है? ऐ!"

"लिम्रोक, तुम सब से अच्छे शिकारी हो। सभी लोग यह जानते हैं। हमारे यहां सब से अच्छा शिकारी है हमारी मोटर," तेवलिम्रांकाऊ ने कहा।

"मोटर?" लिम्रोक ने पूछा। "हां, सचमुच वह अच्छा शिकार करती है। मैं बराबर देख रहा था। मैं मानता हूं कि मोटर को मात करना मुश्किल है।"

"लिम्रोक, अब हम ख़ानाबदोशों के बीच सौदागरी करने गये थे उस समय हमें 'गरम सोतों' के पास एक मोटर मिली थी। वहां निक नामी एक मेरिकन रहता था। हमने दो दिन उसकी राह देखी लेकिन हमारे पास का कुत्तों का खाना ख़त्म हो रहा था। वह मोटर अब रुसाकोव के गोदाम में है। उसने कहा: अगर लिम्रोक आर्टेल में होता तो हम यह मोटर उसकी बिदारका में लगा देते। तब बिदारका व्हेल-नाव से भी तेज़ दौड़ेगी। हां, रुसाकोव ने यही कहा।"

लिम्रोक उछल पड़ा। उसकी आंख चमक उठी। "मैं समझता हूं कि उसका कहना ठीक है। मेरी बिदारका मज़बूत भी है और वज़न में हल्की भी।"

"लेकिन वह मोटर भी हमारे आर्टेल ने खरीद ली है। यह हाल है लिम्रोक," तेवलिम्रांकाऊ ने कहा।

बूढ़ा विचारमग्न हो गया। अपनी पाइप में कुछ 'पपूशा' भरकर उसने पाइप सुलगायी और फिर निर्णायक स्वर में कहा:

"मैं आर्टेल में आ जाऊंगा। और मेरे सभी शिकारी भी। क्या तुम्हारा ख़्याल है कि मेरी बिदारका में मोटर बैठायी जा सकेगी? व्हेल-नाव में तो मोटर बैठाने के लिए एक जगह बनी रहती है।"

"रुसाकोव कह रहा था कि तुम्हारी बिदारका के पिछले हिस्से में मोटर लगायी जा सकती है। उसने यह भी कहा कि फिर बिदारका सरपट दौड़ने लगेगी। उसमें सिर्फ़ एक तख़्ता लगाना होगा, बड़ी बड़ी कीलें ठोककर।"

"नहीं नहीं, कीलें नहीं काम में लायेंगे। मैं उसे तस्मों से कसकर बांध दूंगा।"

तेवलिग्रांकाऊ को यह सुनकर बड़ी ख़ुशी हुई कि लिग्रोक ग्रार्टेल में दाख़िल हो रहा है। हर कोई जानता था कि लिग्रोक बस्ती का सब से ग्रधिक ग्रनुभवी शिकारी है। नये जीवन की राह ग्रपनाने का निश्चय उसने कर लिया इससे तेवलिग्रांकाऊ को बड़ी ख़ुशी हुई। हर कोई साफ़ साफ़ जानता था कि ग्रार्टेल के लिए ऐसे ग्रादमी की सलाह ज़रूरी है। तेवलिग्रांकाऊ ने ख़ुशी से कहा:

"ग्राग्रो लिग्रोक, हम रुसाकोव के पास चलें।"

"नहीं नहीं, एक मिनट ठहरो। तुम मोटर वाले ग्रादमी हो न?"

"हां," तेवलिग्रांकाऊ ने गर्व से उत्तर दिया।

"ग्रौर मैं बनूंगा ग्रार्टेल का मुखिया, समझे? चूंकि तुम मुझसे छोटे हो इसलिए यह ठीक न होगा कि मैं तुमसे हुक्म सुनता रहूं।"

"बहुत ग्रच्छा लिग्रोक, मुझे मंजूर है। सिर्फ़ एक बात है कि हमें बैठक बुलानी चाहिए। यह नया क़ानून है। मेरा चुनाव बैठक ही में हुग्रा था। ग्रब लोग तुम्हें चुन लें।"

"बैठक-वैठक की कोई ज़रूरत नहीं। चुनाव का सवाल ही कहां ग्राता है? क्या लोग जानते नहीं कि मैं कितना बड़ा शिकारी हूं। तुम उनसे कह देना कि मैं ग्रार्टेल का मुखिया बनूंगा।"

"लिग्रोक, तुम ही उनसे कहो। वे सब तुम्हीं को मुखिया चुनना चाहेंगे।"

बूढ़े ने इसपर कुछ विचार करके कहा:

"ठीक है, हो जाये बैठक। लेकिन देखो एनमकाई वाली ग्रौरतों को उसमें न बुलाना। यह ठीक नहीं कि शिकार जैसे मर्दाना काम में ग्रौरतें दख़ल दें।" फिर कुछ रुककर उसने कहा: "ग्रगर तुम्हारा यह कहना सच हो कि मोटर मेरी बिदारका को तेज़ दौड़ायेगी तो

हम शिकार इस तरह करेंगे: तुम्हारे आर्टेल के सब से अच्छे निशानेबाज़ों और बरछीमारों को मैं अपने साथ लूंगा और तुम्हारी व्हेल-नाव के लिए मैं अपने कुछ कम कुशल आदमी दूंगा। वालरसों को मारने का काम मैं करूंगा और उन्हें ढोकर ले जाने का काम तुम्हारा होगा। तुम्हारी व्हेल-नाव काफ़ी भारी है। छोटी बिदारका हम उसके पीछे जोड़ देंगे।"

"बहुत अच्छा लिग्नोक, बहुत अच्छा," तेवलिग्रांकाऊ ने खुशी से हामी भरी।

"जाओ, और लोगों को बैठक के लिए बुला लाओ," लिग्नोक ने हुक्म दिया।

चौथा अध्याय

भूगर्भ-शास्त्री द्यागीलेव केवल गरमियों के दिन पहाड़ियों में बिताना चाहता था लेकिन वह जाड़ों में भी वहीं रहा। वह खुली हवा में रहने का आदी हो गया था और इस अज्ञात प्रदेश की मानचित्र संबंधी सूचना जुटाने के लिए बस्ती बस्ती घूम रहा था। एक प्रणालीबद्ध भूगर्भ-शास्त्रीय मानचित्र के लिए वह सामग्री बटोर रहा था। उसका अविलंब उद्देश्य यह था कि भावी अन्वेषकों के लिए प्रारंभिक सूचना उपलब्ध हो जिसके आधार पर वे आवश्यक क्रमबद्ध सर्वेक्षण कर सकें। बारहसिंगा-पालक उसे बड़ी खुशी से जगह जगह ले जाते थे क्योंकि द्यागीलेव उन्हें समीपतम व्यापार-केंद्र के लिए हुंडियां लिख देता था जिनके बदले में इन मार्गदर्शकों को तंबाकू और कारतूस मिलते थे। वह खानाबदोश बारहसिंगा-पालकों की ज़िंदगी बसर करता था। वह उन्हीं की तरह खाना खाता था और उन्हीं के जैसे हल्के, गरम और आरामदेह कपड़े पहनता था।

अपने जाड़ों के सफ़र के दौरान वह लगभग एक महीना साब्लेर परिवार के साथ रहा। वह इनके बारे में लोस को सूचना दे चुका था। द्यागीलेव इस बात पर बुरी तरह से नाराज़ था कि अमरीकी उठाईगीर इस प्रदेश में पैठ गये हैं। उसे कई बार उनकी निशानियां यहां मिली थीं।

द्यागीलेव ने वसंत के आरंभ होने से पहले तट-प्रदेश पहुंचने, क्रांति-समिति के कार्यालय में अपनी टिप्पणियां तैयार करने और रेडियो के ज़रिये अपने सदर दफ़्तर को संक्षिप्त विवरण भेजने का निश्चय किया।

पहाड़ियों से नीचे आने पर उसे अपने मार्गदर्शक से पता चला कि 'गरम सोतों' के पास कोई अमरीकी रहता है। द्यागीलेव यह जानना चाहता था कि वह वहां क्या करता है। उसने मार्गदर्शक को 'गरम सोतों' की ओर चलने के लिए कहा।

मि० निक अपनी मड़ैया में था। अलास्का वापस जाने की योजना में वह मग्न था और इस समस्या पर सलाह-मशविरा करने के लिए साब्लेर के पास भी गया था क्योंकि यह बात उसके लिए काफ़ी महत्वपूर्ण थी। वह अकेला व्हेल-नाव नहीं ले जा सकता था। अलितेत यकायक चुपचाप चला गया था। उधर साब्लेर एक ऐसा गेंद सिद्ध हुआ जो ख़ुद ही खिलाड़ी के पास दौड़ आता है। लोस से फिर एक बार मिलने और महाद्वीप याने सोवियत रूस वापस जाने का उसे कोई मोह न था। निक और साब्लेर शीघ्र ही सहमत हो गये। और यही कारण था कि निक की मड़ैया में इस वक़्त मेहमान हाज़िर थे—वादीम पेत्रोविच साब्लेर और उसकी पत्नी वलेन्तीना युरियेव्ना। इधर नदी जल-यात्रा के योग्य हुई ही हुई कि अपनी नाव पर मुहाने के पास चले जाने का उनका इरादा था। और मुहाने से अमरीका दूर थोड़े ही था। ये तीनों सेन-फ़्रांसिस्को भी जा सकते थे। यहां से

सटककर ग्रमरीका जाने की साब्लेर दंपती की उत्सुकता निक की योजना के लिए ग्रनुकूल थी क्योंकि साब्लेर के पास कुछ रोचक सूचनाएं थीं ग्रौर इस 'स्वतंत्रता-प्रेमी' रूसी इंजीनियर को 'बेच डालने' से निक ग्रपना उल्लू सीधा कर सकता था।

जब मि० निक ग्रपने मेहमानों को घर लेकर ग्राया तो उसे फ़ौरन पता चला कि मोटर ग़ायब है।

"कौन शैतान मेरी मोटर उठा ले गया होगा!" मि० निक ने विस्मयपूर्वक कहा। वह ग्रपने भारी-भरकम क़दम खोले ग्रौर कूल्हों पर हाथ रखे खड़ा था। "मैं जब घर पर नहीं था उस वक़्त कहीं तिरछी ग्रांखों वाला चार्ली तो नहीं ग्राया था? उसने सोचा होगा कि यह चीज़ उसके काम ग्रायेगी।"

"मि० निक, कोई फ़िक्र नहीं," साब्लेर ने कहा। "मैं नहीं मानता कि बग़ैर ईंधन के मोटर की हमारे लिए कोई क़ीमत है।"

"गैसोलिन का एक डब्बा बचा हुग्रा है जो व्हेल-नाव के पास पड़ा है। संकट के क्षण में भाग निकलने के लिए यह काफ़ी है।"

"बकवास न करो! थोड़े ही दिन में नदी जहाज़रानी के लिए खुल जायेगी ग्रौर फिर तेज़ धारा हमें महासागर में ले जायेगी। फिर भी मस्तूल बना लेना बुरा न होगा।"

"धत्! यहां ग्रोरेगान पाइप के पेड़ थोड़े ही उगते हैं! फिर हमें मस्तूल कहां से मिलेगा?"

"किनारे पर काफ़ी लकड़ी बहकर ग्रायी है," साब्लेर ने कहा।

"वादीम, तुम बिल्कुल बच्चे हो," वलेन्तीना युरियेव्ना ने बात काटकर कहा। "इधर क्रांति-समिति के ग्रादमी हमारा सुराग़ लेते घूम रहे हैं। ऐसी हालत में हम मस्तूल की खोज में सारे किनारे पर ग्रपना जुलूस निकालें? ग्ररे, मैं तो सोचती हूं कि वह कलमुंहा मिलीशियामैन हमारे लिए घात लगाये बैठा होगा। खुदा का शुक्र

है कि वे अकेले अकेले घूमते हैं। हम तीनों अपने को ठीक से संभाल सकेंगे। मि० निक, आप यह न समझिये कि मैं एक कमज़ोर औरत हूं। अपनी जवानी में मैं मुक्केबाज़ी तक खेलती थी। कुछ भी हो, सतर्कता एक श्रेष्ठतम गुण है। हमें इन लोगों को टालने की कोशिश करनी चाहिए।"

"खर दिमाग़, हमें किसी से डरने की ज़रूरत नहीं। हमारी कलाइयां मज़बूत हैं और पास में बंदूक़ भी है जो बेधड़क काम कर जाती है।"

"हमें अपनी सैर के लिए एक बारहसिंगा काट डालना चाहिए," वलेन्तीना युरियेव्ना ने कहा।

"भला क्यों? अब मौसम काफ़ी गरम है। गोश्त रास्ते में ख़राब हो जायेगा। डिब्बे में बंद खाने की चीज़ों का एक पिटारा अभी हमारे पास बचा हुआ है जो अलास्का पहुंचने तक हमारे लिए काफ़ी होगा। और सुनिये श्रीमती जी, अब इन फ़रदार कपड़ों को उतार फेंकने का वक़्त आ चुका है। धूप से अब काफ़ी गरमी मिल सकती है। मैं अपनी कामकाज की पोशाक आपको दे सकता हूं। आप काफ़ी हट्टी-कट्टी औरत हैं और आपको वह बिल्कुल ठीक आयेगी।" यह कहकर मि० निक ने गहरे नीले रंग का कामकाजी लिबास, एक जोड़ा बढ़िया पहाड़ी जूते और पैर ढकने की पट्टियां पेश कीं।

"क्या ख़ूब! मैं सभ्य नारी बनना चाहती हूं।"

वलेन्तीना युरियेव्ना कपड़े बदलकर मि० निक के सामने आ खड़ी हुई।

"कहिये, अब मैं कैसी लगती हूं?"

"वाह श्रीमती जी, बहुत बढ़िया!" मि० निक ने कहा। "मि० साब्लेर, आपकी क्या राय है?"

"बीस साल पहले मैं ऐसा ही मानता था," साब्लेर ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

साब्लेर की ओर देखते हुए मि० निक ने सोचा, "अगर इस कंजूस मक्खीचूस के पास इतना भी दिमाग़ न होता तो उसकी खोपड़ी गंजी करके उसे गरम पानी के सोते में डुबो देना ही अक़्लमंदी का काम हो जाता।"

लेकिन प्रकट रूप में उसने कहा:

"ठीक है, अब कॉफ़ी हो जाये।"

"वादीम, तुम कॉफ़ी विशेषज्ञ हो। जाओ, गरम सोते पर जाकर कुछ कॉफ़ी बना लाओ।"

"मेरी बीवी का हुक्म मेरे लिए हमेशा क़ानून रहा है," साब्लेर ने कहा और बाहर चला गया।

वे मेज़ पर बैठे और उन्होंने काफ़ी मक्खन लगे हुए बिस्कुटों के साथ कॉफ़ी-पान किया। कॉफ़ी की चुस्कियां लेते लेते उन्होंने अमगुएमा के तट पर जाने की अपनी योजना बना ली। वहां झुरमुटों में व्हेल-नाव उनकी राह देख रही थी।

यकायक उन्हें पोलोग के पर्दे के पीछे कुछ शोर सुनाई दिया। साब्लेर बाहर की ओर दौड़ा, देखा कि द्यागीलेव वहां पर खड़ा है और अपने मार्गदर्शक के लिए एक हुंडी लिख रहा है।

"ओहो, भूगर्भ-शास्त्री द्यागीलेव!" साब्लेर ने सतर्कता के स्वर में कहा। "कहिये, कैसे आना हुआ?"

"सांस्कृतिक संपर्क बढ़ाने के लिए। इसी महत्वपूर्ण कारण से मैंने यहां का चक्कर लगाया। आपके यहां मेहमानी करने आया हूं।"

मि० निक बाहर आया और उसके पीछे पीछे साब्लेर की पत्नी। वह भी अपने पति की तरह हड़बड़ा उठी।

"मि० निक," साब्लेर ने कहा, "मि० द्यागीलेव से परिचय प्राप्त कीजिये। यही है वह रूसी भूगर्भ-शास्त्री जिसके बारे में मैंने आपसे बात की थी।"

मि० निक ने चुपचाप हाथ मिलाया।

साब्लेर की पत्नी का अभिवादन करते हुए द्यागीलेव ने मुस्कराकर कहा :

"और वलेन्तीना युरियेव्ना आप तो इस बरफ़ में भी खिल रही हैं। नीली पोशाक और पट्टियां आप पर कितनी फब रही हैं।"

"धन्यवाद। यह मर्दानी पोशाक है और कुछ ढीली-ढाली भी। मि० निक का उपहार है यह।"

मि० निक ने बारीकी से रूसी भूगर्भ-शास्त्री के चेहरे पर एक दृष्टि डाली। चेहरा काली दाढ़ी से आवृत था।

"और कहिये वादीम पेत्रोविच, आप कैसे यहां आये?" द्यागीलेव ने पूछा।

"बस, सांस्कृतिक संपर्क के लिए," कंधे सिकोड़कर साब्लेर ने कहा।

द्यागीलेव ने चारों ओर नज़र दौड़ायी।

"ख़ूब जगह है यह भी," उसने कहा। "उधर वह हिम-कंदरा देखिये, कैसी सुंदर है! यहां की बरफ़ तो गरमियों में भी पिघलने का नाम न लेगी। और ये सोते? लगता है कि ये ज्वालामुखी के कारण पैदा हुए हैं?"

"उसमें तो आप पूरा भीमहाथी उबाल सकते हैं। चौरानवे डिग्री सेंटीग्रेड तापमान रहता है वहां!" मि० निक ने कहा। "आइये, फिर अंदर आइये।"

वे फ़रदार पोलोग में गये। वलेन्तीना युरियेव्ना तह की जाने वाली तिपाई पर बैठी। निक खाट पर बैठा और साब्लेर और द्यागीलेव को अपने पास बैठने के लिए बुलाया।

"धन्यवाद," द्यागीलेव ने कहा। "मैं बाहर खुले में काम करने वाला आदमी हूं। मुझे बारहसिंगों की खालों पर आराम करने

की ग्रादत पड़ गयी है।" यह कहकर द्यागीलेव खालों से ढके फ़र्श पर बैठ गया।

साब्लेर उसी की बग़ल में जम गया।

"मि० निक, ग्रापका मकान बड़ा ग्रच्छा है। उसे गरम रखने का भी बढ़िया बंदोबस्त है।"

"हम ग्रमरीकी लोग व्यवहारी होते हैं," निक ने उत्तर दिया। खाट पर वह किसी मूर्ति की तरह सीधा-सतर ग्रौर निश्चल बैठा था।

"तो ग्रापकी खोजबीन के नतीजे कैसे रहे?" द्यागीलेव की ग्रोर मुड़कर साब्लेर ने पूछा।

"बस, मैं उनसे संतुष्ट हूं," द्यागीलेव ने मुख़्तसर जवाब दिया।

"देखिये व्लादीमिर निकोलायेविच, मुझे बड़ी ख़ुशी हुई कि ग्राप एक सुयोग्य भूगर्भ-शास्त्री हैं। ग्रभी मेरे मन में एक मज़ेदार बात ग्रायी है," उंगली ऊपर उठाते हुए साब्लेर ने कहा।

"कहिये क्या बात है?" द्यागीलेव ने सतर्क होकर पूछा।

"ग्राख़िर क्यों ग्राप ऐसी मुश्किल हालतों में उस कम्यूनिज़्म के लिए काम करते हैं?" साब्लेर ने मुंह सिकोड़कर पूछा। "वे लोग ग्रापकी क़ीमत नहीं जान सकेंगे। व्लादीमिर निकोलायेविच, ये लाल लोग बड़े जंगली हैं। क्रांतिपूर्व काल में मैं एक विख्यात विशेषज्ञ के साथ काम करता था। यह विशेषज्ञ धातुग्रों की थकान संबंधी सिद्धांत निश्चित करने के लिए प्रयत्नशील था। बड़ा ही प्रतिभाशाली था वह। उसे काफ़ी धन ग्रौर सम्मान मिल जाता, लेकिन जानते हो उन लोगों ने उसके साथ क्या किया?"

"क्या?" द्यागीलेव ने खट से पूछा। ग्रागे की बात वह ताड़ गया।

"उन्होंने उसे गोली मार दी!.."

"तो क्या हुआ?" द्यागीलेव ने शांत स्वर में पूछा। "इसका मतलब यह है कि वह इसी के लायक़ था। आख़िर क्रांति जो हो रही थी! और क्रांति अपने मार्ग से सभी गयी गुज़री चीज़ों को उखाड़ फेंकती है। हर किसी का वही अंजाम हुआ जो होना चाहिए था! जब जंगल काटा जाता है तो खपची की परवाह किसे होती है?"

"लेकिन जिसपर गोली चलायी गयी वह मेरा मित्र खपची व्यक्ति नहीं था। मैं मानता हूं कि तुम भी उन लोगों से कुछ ऊंचे हो जो तुम्हें हुक्म दिया करते हैं। तुमने जर्मनी में अच्छी शिक्षा प्राप्त कर ली है। तुम्हीं ने मुझसे कहा था न? अमरीका में रूसी इंजीनियरों की काफ़ी क़द्र है। इधर अमगुएमा कुछ ही दिन में जहाज़रानी के लिए खुल जायेगी और मि० निक और हम अमरीका के लिए रवाना होंगे। मेरा सुझाव है कि आप भी हमारे साथ चलें।"

द्यागीलेव कोहनियों के बल कुछ ऊपर उठा, साब्लेर के चेहरे पर नज़र गड़ायी और क्रोध के स्वर में कहा:

"वादीम पेत्रोविच, आप बड़े बदमाश हैं!"

साब्लेर आगबबूला होकर उछल खड़ा हुआ और धमकी के स्वर में फुसफुसाया:

"क्या? क्या कहा तुमने?"

"मैंने कहा कि आप बड़े बदमाश हैं। यह मेरी अपनी राय है। मैं उन सब लोगों को इसी श्रेणी में रखता हूं जो एक निवाले के लिए अपने देश को बेच डालते हैं, जो अपनी रूसी जनता को प्यार नहीं करते।"

"तुम्हारी यह जुर्रत? मैं इसके लिए तुम्हें कभी माफ़ न करूंगा!" साब्लेर कर्कश स्वर में चिल्लाया।

"ख़ुदा गवाह है अगर मैं आपसे माफ़ी मांगूं।"

"अरे, अरे!" वलेन्तीना युरियेव्ना घबड़ाकर चिल्लायी। "आप लड़ क्यों रहे हैं?"

निक ने शांत स्वर में कहा :

"मि० द्यागीलेव! आप अमरीका में काफ़ी धन–डॉलर–बटोर सकेंगे। इस प्रायद्वीप की भौगोलिक बनावट अलास्का से मिलती जुलती है। इसी लिए तो हम अमरीकी इस प्रदेश में इतनी दिलचस्पी ले रहे हैं। मुझे विश्वास है कि अमरीकी इसे ख़रीद लेंगे।"

"मुझे शक है," द्यागीलेव ने कहा।

"अमरीकी लोग व्यापारी हैं," मि० निक कहता गया, "और अगर उन्हें कोई अच्छा भूगर्भ-शास्त्री मिल जाये तो उसकी वे सही क़द्र कर सकते हैं।"

"मि० निक, आप जिसकी खोज में हैं वह माल मैं नहीं हूं। मि० निक, इस देश में आपकी उपस्थिति से व्यक्तिशः मुझे बहुत ही क्रोध आता है। मैं जानता हूं कि सोवियत रूस ने आपको यहां आने का नेवता नहीं दिया था। आपके इस काम को दूसरे शब्दों में कहते हैं किसी के मकान में खिड़की के ज़रिये चोरी चोरी घुस आना और असल में जो चीज़ अपनी नहीं है उसकी खोज में कोना कोना छान मारना। यह एक तरह की डाकाज़नी ही है या यों कहिये कि डाकाज़नी से इसका सीधा संबंध है। समझे? जहां तक मेरा संबंध है, मैं हरचंद कोशिश करूंगा कि यह सब ख़त्म हो जाये।"

"मि० द्यागीलेव, ज़रा कहिये तो सही कि आप कैसे यह करने जा रहे हैं?" मि० निक ने अभ्यस्त शांति से कहा। द्यागीलेव चुप रहा लेकिन जब उसने देखा कि मि० निक तकिये के नीचे कुछ टटोल रहा है तो फ़ौरन उसने अपना कोल्ट पिस्तौल तान लिया और चिल्लाया :

"छोड़ दीजिये वह पिस्तौल!"

निक उछलकर खड़ा हो गया। साब्लेर लोटता हुआ उसकी दूसरी बग़ल में चला गया।

वलेन्तीना युरियेव्ना, जो शांत रहने का प्रयत्न कर रही थी, उठ खड़ी हुई और द्यागीलेव की ओर झुककर निषेध के स्वर में फ़ुसफ़ुसायी :

"व्लादीमिर निकोलायेविच! भले आदमी, यह क्या कर रहे हो? अरे, हम अपने को सभ्य लोग कहते हैं न?" फिर वह यकायक उसपर झपट पड़ी और पिस्तौल वाला उसका हाथ पकड़ लिया। मि० निक और साब्लेर भी झट से उसपर आ गिरे।

"जकड़ लो उसे, जकड़ लो!" छोटा-नाटा साब्लेर चिल्लाया। उसने द्यागीलेव का पिस्तौल छीन लिया और उसे हवा में घुमाते हुए विजयी मुखमुद्रा के साथ व्यंगपूर्वक कहा: "क्या तुमने यह सच माना था कि तुम हमें क्रांति-समिति के कार्यालय में ले जा सकोगे?"

द्यागीलेव पड़ा पड़ा हांफ रहा था। मि० निक उसके सीने पर सवार था और अपने मज़बूत हाथों से उसे फ़र्श पर दबोच रहा था।

"अब शायद हमारे साथ अमरीका जाने पर राज़ी हो जाओगे?" मि० निक ने कहा। "आख़िर तुम्हारे पास दूसरा रास्ता ही क्या है?"

द्यागीलेव चुप रहा।

"व्लादीमिर निकोलायेविच, आपको यह बढ़िया सुझाव स्वीकार कर लेना चाहिए," एक रस्सी से द्यागीलेव के पैर बांध लेने की कोशिश करते हुए वलेन्तीना युरियेव्ना ने कहा।

द्यागीलेव ने उसकी ओर देखा और कटु स्वर में कहा:

"मैंने कभी नहीं सोचा था कि अपने को सभ्य कहलाने वाली औरत ठगी के मामलों में इतनी माहिर हो सकती है।"

वलेन्तीना युरियेव्ना ने क़हक़हा लगाते हुए कहा:

"आखिर मैं शिकारी जो ठहरी!"

"मि० द्यागीलेव मैं आपके निर्णय की प्रतीक्षा में हूं," निक ने कहा। "मैं फिर से बताये देता हूं कि आपके लिए दूसरा कोई रास्ता नहीं है। आपकी सभी टिप्पणियां मेरे हाथों में होंगी और कुछ भी हो मैं किसी तरह रिपोर्ट कर दूंगा कि मैंने ये तुमसे बीस हज़ार डॉलर देकर ख़रीदी थीं।"

"यह है ठगी, डाकाज़नी!" द्यागीलेव तिरस्कारपूर्वक गरज उठा। "लेकिन ध्यान रखना कि अमगुएमा पांच दिन से पहले नहीं खुलेगी और तब तक मिलीशियामैन ख़ोख़लोव यहां आ पहुंचेगा।"

"वह आयेगा! ऊंह, वह आयेगा!" साब्लेर ने चिंचियाकर कहा। "तो फिर हम तुम्हारा अकेले का फ़ैसला कर देते हैं!" यह कहकर उसने बिना और चेतावनी दिये सीधे द्यागीलेव के ललाट में गोली चला दी।

"पागल चूहे!" साब्लेर की ओर मुड़कर मि० निक चिल्लाया। "लानत है तुमपर। अरे, तुम्हारे दिमाग़ से तो वालरस का दिमाग़ अच्छा। उसने यहां किसी के आने की बात की और तुमने उसका विश्वास किया!"

"मि० निक, आप हमारी हालत को पूरी तरह नहीं जानते। मैंने आपसे कह दिया था न, कि मुझे क्रांति-समिति में हाज़िर होने का हुक्म दिया गया है! ख़ुद मुझी से कहा गया कि अगर मैं अपने आप न चला जाऊं तो वह मिलीशियामैन मुझे ले जायेगा। जानते हो वह कैसा राक्षस है? अगर उसकी और हमारी मुठभेड़ हुई तो हमें तुरंत उसकी आंखों के बीचों बीच गोली चला देनी चाहिए। नहीं तो वह हम सब को पकड़ लेगा!"

"सेर, आप छोटी सी बात भी नहीं जानते! आपके विक्षिप्त डरपोकपन के कारण मुझे काफ़ी बड़ी रक़म से हाथ धोना पड़ा।

अरे, बंधे-जकड़े भूगर्भ-शास्त्री की भी काफ़ी बड़ी क़ीमत थी! और अब? बस लोमड़ियों के चारे के लायक़ ही रह गया है वह।"

"जो हुआ सो हुआ," साब्लेर ने कहा, "अब उसकी नुक्ताचीनी करने में कोई मतलब नहीं। जब मौक़ा आयेगा तो मेरी भी कुछ क़ीमत ज़रूर होगी... हमें जल्दी जल्दी इस लाश से पिंड छुड़ा लेना चाहिए। हो सकता है कि मिलीशियामैन सचमुच ही आ धमके। और फिर अपने काम का समर्थन करना हमारे लिए मुश्किल होगा।"

तीन दिन बाद मि० निक, साब्लेर और उसकी पत्नी काईदार टुंड्रा में क़दम घसीटते हुए दिखाई दिये। वे खाने-पीने की चीज़ों और पाल के कपड़े का बोझ ढो रहे थे। वे अमगुएमा नदी के तट की ओर जा रहे थे जहां व्हेल-नाव उनकी प्रतीक्षा कर रही थी।

नदी लगभग साफ़ थी। जो कुछ बरफ़ बची थी, वह उत्तर-ध्रुव सागर की ओर बह रही थी। पानी पड़ रहा था—बड़ी अच्छी वासंतिक रिमझिम हो रही थी।

पांचवां अध्याय

ओम्रितागेन को सारी रात नींद न आयी। पोलोग में अंधेरा था लेकिन फिर भी उसकी आंख न लगी। उसका मन व्यग्र था। कई साल गुज़र गये ओम्रितागेन बहू ब्याह लाया था और उसके पास छः कुत्ते भी हो गये थे लेकिन उसे किसी ने सील पर्व में बुलाने का नाम भी न लिया। और अब वामचो ने यकायक कह दिया कि दढ़ियल सरदार ओम्रितागेन को बड़े भाषण के पर्व के लिए नेवता देना चाहता है। ओहो! फिर इसमें क्या आश्चर्य कि उसकी आंखों से नींद ग़ायब हो गयी थी!

हर दिन यह पर्व समीप आ रहा था फिर भी लगता था कि समय बहुत ही धीरे धीरे गुज़र रहा है। हर दिन बटनों वाली माला छोटी, और छोटी, होती जा रही थी। अब तो धागे में सिर्फ़ एक बटन बचा था। यही कारण था कि खालों पर लेटा हुआ ओम्रितागेन सारी रात करवटें बदलता रहा।

सबेरा होने को था और तब कहीं ज़रा उसकी आंख लग गयी।

ज़ंगदार केतली ढिबरी पर ज़ोरों से उबल रही थी और उसका ढकना उठ उठकर काफ़ी शोर कर रहा था। औरत ने चाय की ईंट में से कुछ चाय निकाल ली और गलगलाती हुई केतली में डाल दी।

"ओम्रितागेन!" उसने पुकारा। "चाय उबल चुकी है!"

ओम्रितागेन चौंक पड़ा। उसकी उनींदी आंखें उस दीवार पर गड़ गयीं जहां उसका बटन-कैलेंडर लटक रहा था। दीवार से उसने यह कैलेंडर खींच लिया, उसमें से बटन निकाल लिया और फिर पूरी तरह जगकर कहा:

"बस, हो गया। यह रहा आखिरी बटन। अब मुझे बड़े भाषण पर्व में जाने की तैयारी कर लेनी चाहिए।"

उस दिन सबेरे ओम्रितागेन के जीवन में एक विलक्षण घटना घटी। उसकी भूख ग़ायब हो गयी। आज तक की ज़िंदगी में जो कभी न हुआ था वह हुआ। उसने सील का गोश्त ज़रा भी न खाया और सिर्फ़ चाय के तीन बड़े बड़े मग पी गया। चाय भी उसने जल्दी जल्दी पी यहां तक कि उसका मुंह जल गया। चाय पीते समय वह बिल्कुल चुप था और दो मगों के बीच ही उसने किसी तरह कह दिया: "गोश्त मेरी थैली में रख देना," और "मेरे फ़ालतू तोरबाज़ रखना न भूलना क्योंकि काफ़ी दूर जाना है।"

चाय का तीसरा मग पी लेने पर उसने गर्व से कहा:

"ओहो! लगता है कि ओम्रितागेन अब सच्चा आदमी बन रहा है!"

उसने गंभीरतापूर्वक वह बटन ले लिया, बारीकी से उसका मुआयना किया और अपनी बीवी के हाथ में उसे रखकर कहा कि वह इस बढ़िया तावीज़ को उसकी पेटी में टांक दे।

फिर उसने सील के चमड़े का पतलून पहन लिया, फ़रदार मोज़ों को अपने हाथों में लेकर ठीक किया, तोरबाज़ों में सींकों के अंदरूनी तलवे खुद डाल दिये, तोरबाज़ों में मोज़े डाल दिये और हाथ डालकर मोज़ों के तलवों की सब सिकुड़नें साफ़ कर लीं—बिल्कुल उंगलियों तक। अब वे पहनने के लिए तैयार हो चुके थे। ओम्रितागेन कोहनियों के बल पीछे को झुका, अपनी टांगें हवा में उठा लीं और रोबदार स्वर में अपनी बीवी से कहा:

"तस्मे ठीक से बांध दो।"

बीवी ने उसकी टांगों पर सफ़ेद सील के चमड़े की चौड़ी पट्टियां लपेट दीं और उनमें दांतों के सहारे कसकर गांठ लगा दी।

ओम्रितागेन ने परका पहन लिया, अपनी थैली और लाठी ले ली और यारंग के बाहर चल दिया। अब वह सम्मेलन का उत्साही और बनाठना प्रतिनिधि था।

उस दिन सबेरे तेज धूप थी। ओम्रितागेन खुश था। कंकरीले किनारे की लंबी काली पट्टी काफ़ी दूर तक फैली हुई थी। हिम-धवल 'गल' पंछी शोर मचाते हुए सागर के ऊपर चक्कर काट रहे थे, अबाबीलें अनंत आकाश में तेज़ उड़ानें भर रही थीं और उधर दूरी पर सुंदर उत्तरी सागर फैला हुआ था।

ओम्रितागेन ने घुटनदार पोलोग से बाहर आकर ताज़ी हवा में सांस ली और कहा:

"कुत्तों को कुछ मत खिलाना। गोश्त को लोमड़ियों के चारे के लिए बचाये रखना। अब मौक़ा आया है जब मुझे अच्छी सी बंदूक़ मिल सकती है। कुत्तों को टुंड्रा में जाकर चूहे पकड़ने देना।"

"एहेई!" पोलोग के अंदर से उसकी बीवी की आवाज़ आयी। इसका मतलब था "ठीक है"।

बीवी को घर-गिरस्ती के बारे में तरह तरह की हिदायतें देकर ओम्रितागेन ने कंधों पर लाठी आड़ी रख ली और, हल्के हल्के, बड़ी शान के साथ क़दम बढ़ाया। कंकड़ों के बीच पड़ा हुआ एक कोयले का टुकड़ा देखकर ओम्रितागेन रुक गया, टुकड़ा हाथ में उठा लिया और सोचने लगा: "यहीं पर तंबू था। अलितेत कुल्हाड़ियां बनाता था... जाने इन लोगों ने अलितेत को बड़े भाषण के त्योहार में क्यों नहीं बुलाया! यह शायद नया क़ानून है..."

ओम्रितागेन ने उलझन भरे अंदाज़ से सिर हिलाया, कोयले का टुकड़ा दूर फेंक दिया और आगे बढ़ा। बस्ती पीछे छूट गयी।

दूसरे दिन वह पड़ोस वाली बस्ती में पहुंचा। उसने देखा कि पिलिग्राक अपने हाथ में एक दांतेदार लाठी थामे विचारों में डूबा हुआ बैठा है। पिलिग्राक के चेहरे पर फ़िक्र और परेशानी नज़र आ रही थी। उसने ओम्रितागेन से कहा कि वह बड़े पसोपेश में है। वह नहीं जान सकता कि त्योहार के लिए उसे कब रवाना होना चाहिए।

जब पिलिग्राक सीलों के शिकार पर गया था उस समय उसके नासमझ बेटे ने उस लाठी पर कुछ अपने निशान बना लिये थे। ये उसने इतनी सफ़ाई से बनाये थे कि पिलिग्राक समझ न पाया कि कौनसे निशान उसके हैं और कौनसे उसके बेटे के। सारी बात उलझ गयी थी। बड़ा अच्छा हुआ कि ओम्रितागेन वहां से होकर जा रहा था। नहीं तो पिलिग्राक समझ न पाता कि उसे कब रवाना होना चाहिए!

पिलिग्राक ने झटपट सफ़र की तैयारी कर ली और फिर दोनों साथ साथ आगे बढ़े।

जब वे 'चोंच दर्रे' के पास पहुंचे तो उन्हें तंबाकू के धुएं की एक पतली सी रेखा चट्टानों के ऊपर तैरती हुई दिखाई दी और फिर पत्थरों के बीच लेटी हुई एक मनुष्याकृति भी।

यह व्यक्ति अलितेत था। आख़िर वह पूर्व निश्चित स्थान पर आ पहुंचा था। मि० ब्राउन से मिलने की धुंधली आशा में वह कई दिन से यहीं लेटा था। यह सही है कि अब वह जान गया था कि ब्राउन एक ठग है, लेकिन फिर भी ऐसी कोई शक्ति उसे इस दर्रे के पास खींच लायी थी जिसपर उसका कोई क़ाबू न था।

अलितेत एक चट्टान पर लेटे लेटे शांत सागर पर आंखें गड़ाये था। लेकिन उधर क्षितिज बिल्कुल साफ़ था। बराबर सागर की ओर टकटकी बांधे रहने के कारण अलितेत की आंखों में दर्द होने लगा था।

अलितेत ने एकांत में सोच-विचारकर अपने भावी जीवन की योजना बना ली थी। उसे बूढ़े लिग्रोक की याद हो आयी। वह अच्छा-ख़ासा पुराना खुर्राट निकला। अफ़वाह थी कि लाख मिन्नतों के बावजूद उसने आर्टेल में भर्ती होने का नाम न लिया था। "लिग्रोक समझदार आदमी है। अगर इन गरमियों में भी ब्राउन धोखा दे जाये तो मुझे फिर से लिग्रोक के ज़रिये ही उन रूसियों को रोवेंदार खालें बेचनी होंगी। रूसी सौदागर उसके साथ लेन-देन करते हैं। वह जितना माल मांगता है रूसी उतना ही उसके हाथ बेच देते हैं और मेरे हाथ बेचते हैं सफ़ेद लोमड़ियों की सिर्फ़ एक जोड़ा खालों के बदले में जितना मिले उतना ही। ऊंह! लगता है कि ये रूसी यहां लोमड़ियों की खालों के लिए आये ही नहीं। पागल कहीं के—वे जानते नहीं कि मेरे पास ऐसी खालें हैं जो दूसरे किसी भी बहेलिये के पास नहीं हैं। ओहो! कितना बड़ा ज़ख़ीरा है मेरे पास!

मैं लिग्रोक के पास संदेस भेजूंगा कि वह मुझसे मिलने ग्राये। फिर मैं उसके साथ तफ़सील से बात करूंगा।"

ग्रलितेत की नज़र उस गुफा पर पड़ी जहां रोवेंदार खालें छिपाकर रखी गयी थीं। उसे दो ग्रादमी किनारे की ग्रोर ग्राते दिखाई दिये। ग्रपनी मांद पर से शिकारियों का ध्यान हटाकर ग्रपने बच्चे की रक्षा करने वाले मादा जानवर की तरह ग्रलितेत चट्टानों के बीच से झपट पड़ा ग्रौर किनारे की ग्रोर दौड़ा। पहाड़ी मेढ़े की तरह वह एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदता गया।

पिलिग्राक ग्रौर ग्रोम्रितागेन से मिलकर उसने कहा:

"मैं ग्रपने लिए कोई जगह ढूंढ रहा हूं। मैं एनमकाई से चला जाना चाहता हूं।"

"यह बुरी जगह है," पिलिग्राक ने कहा। "यहां इन्सान कभी नहीं रहा। मेरे दादा को भी याद नहीं कि यहां कभी कोई यारंग था। यह बड़ी ख़राब जगह है।"

"तुम कहां जा रहे हो?" ग्रलितेत ने पूछा।

"हमें बड़े भाषण के त्योहार का नेवता मिला है।"

"ग्रोहो! ग्रौर ग्राम्रितागेन, क्या तुम भी इसी त्योहार में जा रहे हो?" ग्रलितेत ने नफ़रत से खीस निकालते हुए कहा।

वह उनसे कहना चाहता था कि वे उल्लू के पट्ठे हैं ग्रौर बेकार ग्रपने तोरबाज़ों के तल्ले घिस रहे हैं। लेकिन उसने कही कुछ दूसरी ही बात:

"जाग्रो, जाग्रो, सब के सब चले जाग्रो! वामचो भी जाने की तैयारी कर रहा है। लेकिन मास्टर को ग्रपने साथ ज़रूर ले लेना। ग्रगर तुम किसी रूसी को साथ लिये बिना गये तो रूसी त्योहार में तुम्हें कोई शरीक न होने देगा। फिर तुम्हारा वहां जाना बेकार हो जायेगा।"

यात्रियों ने सिर हिलाकर हामी भरी और अपनी राह चले गये।

एनमकाई में वामचो ने उनकी अगवानी की और फिर तीनों की टुकड़ी बड़े ज़ोर-शोर के साथ स्कूली मकान की ओर बढ़ी।

"द्वोरकिन!" वामचो ने कहा, "देखो, ये लोग आ गये। अब हमें चलना चाहिए!"

"बैठो, साथियो, बैठो," द्वोरकिन ने कुर्सियां आगे बढ़ाते हुए दोस्ताना अंदाज़ से कहा। "हम चाय लेंगे और फिर चल देंगे। हम व्हेल-नाव पर जायेंगे।"

ओम्रितागेन और पिलिआक बैठने में हिचक रहे थे। वे डरे डरे से खड़े रहे और अध्यापक की ओर कातर दृष्टि से देखते रहे।

"बैठो, भई बैठो," कहकर वामचो ऐसी बेतकल्लुफ़ी से बैठ गया कि मेहमान दंग रह गये।

उन्होंने रोटी के साथ चाय पी ली। रोटी उनके लिए एक ख़ास चीज़ थी। चायपान के बाद द्वोरकिन सैर की तैयारी करने लगा।

ओम्रितागेन और पिलिआक ने एनमकाई की अपने आप चलने वाली व्हेल-नाव की बात सुनी थी। किनारे पर ख़बर के फैलने में देर नहीं लगती। वे यह स्वचालित व्हेल-नाव देखने के लिए इतने उत्सुक थे कि चाय से भी इनकार करने को तैयार थे।

चायपान ख़त्म होते ही वाकत ने चाय के बरतन हटा लिये। वह बेलबूटेदार सूती पोशाक में बड़ी रोबदार लग रही थी। चलती थी ऐसी शान से मानो लकड़ी वाले पूरे यारंग की मालकिन वही हो। फिर से कमरे में आकर उसने पूछा:

"द्वोरकिन, क्या औरतें इस त्योहार में नहीं जा रही हैं?"

"यह भाषण का त्योहार है। वहां सिर्फ़ आदमी ही जायेंगे," वामचो ने रोब से जवाब दिया।

"ठीक है वाकत, बाद में औरतों का अलग त्योहार होगा। यह सिर्फ़ समुंदरी शिकारियों का त्योहार है," द्वोरकिन ने कहा।

"तो क्या हम एनमकाई वाली औरतें अच्छी शिकारी नहीं हैं? क्या तुमने हमें शिकार करते हुए नहीं देखा?" वाकत ने तीखे स्वर में पूछा।

"तुम बड़ी बातूनी बन गयी हो!" वामचो ने गुस्से में कहा और कंधे पर मोटर रखकर किनारे की ओर चला गया।

व्हेल-नाव पानी में उतारी जा रही थी। औरतें, जवान और बच्चे सभी नाव के चारों ओर इकट्ठा होकर उसे बड़ी मेहनत-मशक़्क़त से ढकेल और खींच रहे थे। ओम्रितागेन दौड़ा आया और व्हेल-नाव की पेंदी व्हेल-हड्डियों की रेलों पर से तेज़ी और आसानी से फिसलती गयी।

तीग्रेना अपने यारंग के बाहर खड़ी थी और किनारे से रवाना होने वाली नाव की ओर देख रही थी। वह उदास मन से सोच रही थी: "इन लोगों को ज़िंदगी की ख़ुशी मिल गयी है। वे ख़ुश हैं। मैं अलितेत को छोड़ दूंगी। मैं उसके साथ पहाड़ियों में नहीं जाऊंगी। नारगिनाउत चाहे तो चली जाये... लेकिन आख़िर मैं जाऊं कहां? मास्टर के पास? वहां जाकर ढिबरी की निगरानी और लकड़ी के फ़र्श की सफ़ाई करती रहूं? लेकिन वाकत मुझे इजाज़त नहीं देगी। उसे शायद स्कूल वाले यारंग की आदत पड़ गयी है। तो फिर मैं किसके पास चली जाऊं? जाने वामचो दूसरी बीवी क्यों नहीं ब्याहना चाहता? अब उसके पास खाने-पीने की काफ़ी चीज़ें हैं। उसके पास अब ख़ुद अपने दो दो कुत्ता-दल हैं! वह मोटर वाला आदमी बन गया है। अब वह ताक़तवर है। लेकिन वह दूसरी बीवी नहीं चाहता। नया क़ानून आदमी को दूसरी बीवी ब्याह लाने की इजाज़त नहीं देता। वामचो बुद्धू है, एकदम बुद्धू।"

वाकत स्कूल के बाहर दौड़ी। वह बढ़िया फ़्राक पहने थी जो धूप में झिलमिला रहा था। वह इस तरह किनारे की ग्रोर दौड़ी मानो ख़ुद तूमातूगे ही शिकार के लिए रवाना हो रहा हो। "ग्रब वह सूती कपड़ों की ग्रादी हो रही है। लगता है कि मास्टर ने ही उससे यह पोशाक पहनने के लिए कहा है। वह उस गोरे की बीवी बनने की तो नहीं सोच रही है?"

व्हेल-नाव पानी पर झूलने लगी। ग्रोम्रितागेन ग्रौर पिलिग्राक ग्राड़ी बेंच पर बैठे बैठे मोटर को उसकी जगह में बैठाने वाले वामचो की ग्रोर दंग होकर देख रहे थे। इंजन के साकिट में पानी छपछपाया ग्रौर ऐसा लगा कि व्हेल-नाव में सूराख़ बन गया है। वामचो ने मोटर उठायी ग्रौर घुमा घुमाकर साकिट में कसकर बैठा दी। फिर गैसोलिन का एक डब्बा लेकर उसने मोटर में उंडेलना शुरू कर दिया।

"देखो, पिलिग्राक, देखो!" ग्रोम्रितागेन ने दबी ग्रावाज़ में कहा। "ग्ररे, मोटर पी रही है!"

वामचो ने घुमा घुमाकर ढक्कन लगा दिया ग्रौर फिर दोनों हाथों से मोटर की गोल टिकुली हिलाने लगा।

"ग्रोहो!" ग्रोम्रितागेन ने ग्राश्चर्यचकित होकर कहा। "वामचो तांग ग्रोझाग्रों का जादू सीख गया है! तभी तो मुखिया बन गया है।"

वामचो ग्रच्छी तरह जानता था कि उसके मोटर के साथ काम करते वक़्त पिलिग्राक ग्रौर ग्रोम्रितागेन क्या सोच रहे हैं। यह देखकर कि वे उसकी ग्रोर टकटकी बांधे देख रहे हैं वह धीरे धीरे काम करने लगा। ग्रपनी हर हरकत के ज़रिये वह यह दिखा रहा था कि इस जटिल काम में वह कितना माहिर है।

उसने मोटर के सिर के चारों ग्रोर एक पतली रस्सी लपेट दी ग्रौर उसका एक सिर ग्रपने हाथ में पकड़कर चिल्ला उठा,

"द्वोरकिन, होशियार!" अध्यापक द्वोरकिन नाव के पिछले हिस्से में पतवार के पास बैठा था।

फिर वामचो ने यह रस्सी ज़ोरों से खींच ली। मोटर खांस खखार उठी और फ़ौरन नाव ने किनारा छोड़ दिया।

पिलिग्राक और ओम्रितागेन कसकर हाथ में हाथ पकड़े हुए, आश्चर्यचकित, एक क्षण वामचो की ओर देखते तो दूसरे क्षण मोटर की ओर। मोटर शायद नयी ज़िंदगी का और नये क़ानून का तराना गा रही थी! वाह, अब ओम्रितागेन के पास अपने लोगों को बताने के लिए एक अच्छी-ख़ासी ख़बर तो हो गयी।

इसी बीच रुसाकोव के निवास में एक सम्मेलन हो रहा था। क़बीला सोवियत का अध्यक्ष आनचोऊ, मोटर चालक तेवलिग्रांकाऊ और शिकारी आर्टेल का हाल ही में चुना गया अध्यक्ष लिग्रोक वहां हाज़िर था। सभी मेज़ के पास बैठकर क्रांति-समिति के दौरे के बारे में बातें कर रहे थे। रुसाकोव ने वे सभी सवाल दोहराये जिनपर चर्चा होने जा रही थी।

"आनचोऊ को ज़-ज़-ज़रूर जाना चाहिए। वहां पर क़बीला सोवियत के बारे में बहस होगी।"

तेवलिग्रांकाऊ ने बहस में भाग लेना स्वीकार किया। उसका विषय था: "समुंदरी जानवरों के शिकार का सब से अच्छा तरीक़ा"।

लिग्रोक चुप्पी साधे बैठा रहा। उसके चेहरे पर नाराज़गी का कोई लक्षण नहीं दिखाई दिया। हां, हर आदमी इस तरह अपने दिल की बात छिपाये नहीं रख सकता। असल में, लिग्रोक ग़ुस्से में था, बहुत ही ग़ुस्से में, लेकिन यह किसी की समझ में न आया।

"तो साथियो, यह बात तय हुई न?" रुसाकोव ने अंत में पूछा।

तब कहीं लिग्रोक बोल उठा। उसकी आवाज़ ग़मगीन थी।

"नहीं, तय नहीं हुआ। आख़िर मेरा क्या होगा? रुसाकोव, तुम भूल तो नहीं गये कि लोस ने मुझे यहां मेहमान की हैसियत से बुलाया था? एं! मेरा ख़्याल है कि उसने तेवलिआंकाऊ को नेवता नहीं दिया था। तुम भूल गये होगे, लेकिन मुझे अच्छी तरह याद है। अगर ये लोग वहां समुंदरी जानवरों के शिकार के बारे में बोलने वाले हों तो मेरे बग़ैर वे कहेंगे भी क्या? क्या मैं अब बड़ा शिकारी नहीं रहा? या आप यह सोचते हैं कि शिकार का काम मुझसे ज़्यादा तेवलिआंकाऊ जानता है? नहीं, यह सही नहीं है।" तेवलिआंकाऊ की ओर मुड़कर उसने सख़्त आवाज़ में पूछा: "तेवलिआंकाऊ, कहो तुमने कभी व्हेल मारा है?"

"नहीं लिओक, मैंने व्हेल कभी नहीं मारा।"

लिओक ने विजय की मुद्रा में रुसाकोव की ओर देखा। वह इस बात के इंतज़ार में था कि अब रूसी व्यापारी अपनी बात कैसे कहेगा।

लेकिन रुसाकोव चुप रहा। वह निरुत्तर सा दिखाई दिया।

"और मैंने एक नहीं, कई व्हेलों का शिकार किया है," लिओक आगे कहता गया। "मैंने अपनी ज़िंदगी में कितने व्हेल-त्योहार मनाये हैं! मैं इस त्योहार में भी ज़रूर जाऊंगा। मैं आर्टेल का मुखिया हूं।"

"ल-ल-लिओक, मैंने यह सुझाव इसलिए दिया था कि तेवलिआंकाऊ मोटर चलाना जानता है।"

"ठीक है, तेवलिआंकाऊ को व्हेल-नाव पर जाने दीजिये और मैं जाऊंगा अपनी बिदारका पर। ओह! लेकिन अभी तक मेरे पास मोटर चलाने वाला आदमी नहीं है," लिओक ने ग़मगीन आवाज़ में कहा। "वह मेरा छोकरा अभी तक मोटर चलाना नहीं सीख पाया।"

"फ़िक्र न करो लिम्रोक। तुम्हारा मोटर चालक मैं बनूंगा।" रुसाकोव ने कहा। "तेवलिम्रांकाऊ की मोटर हम बिदारका में लगा देंगे और जो मोटर हम पहाड़ियों पर से ले आये हैं उसे व्हेल-नाव में लगा देंगे।"

"ख़ैर, हम कब रवाना हो रहे हैं?" लिम्रोक ने उत्तेजित होकर पूछा।

"ह-ह-हमें वामचो की राह देखनी चाहिए। हम साथ ही चलेंगे। और रास्ते में हम द-द-दूसरे प्रतिनिधियों को लेते जायेंगे।"

"आओ तेवलिम्रांकाऊ, मैं तुम्हारी मोटर ले लूंगा," लिम्रोक ने ऐसे स्वर में कहा कि उसकी बात से इनकार करना संभव ही न था। "उसे मेरी बिदारका के पास रख दो।" कमरे से बाहर जाते समय उसने बड़ी ख़ुशी से कहा: "हम अपना शिकार का साज़ो-सामान साथ ले जायेंगे। हो सकता है कि हमें वालरस मिल जायें। वासंतिक शिकार का मौसम अभी ख़त्म नहीं हुआ है।"

छठा अध्याय

मिलीशियामैन ख़ोख़लोव जब घर आ पहुंचा तो उसका मन उदास था। उसने सोचा कि बस, मेरा मिलीशिया वाला ठाठ ख़त्म हो गया। साब्लेर नौ दो ग्यारह हो गया था। ख़ोख़लोव जानता था कि इसके लिए लोस उसे कभी माफ़ न करेगा।

परिस्थिति से स्पष्ट था कि साब्लेर जल्दी जल्दी में चंपत हुआ है। उसकी झोंपड़ी में सब तरह का कूड़ा-करकट बिखरा पड़ा था और चूल्हे में जलाये गये काग़ज़ात की राख दिखाई दे रही थी। कोई भी क़ीमती चीज़ वहां नहीं बची थी।

"तान्या, उधर नदी के ऊपर की ओर रहने वाले रूसी के बारे में तुमने कुछ सुना? क्या वह क्रांति-समिति में गया था? तुमने कुछ सुना या नहीं?" ख़ोख़लोव ने अपनी पत्नी से पूछा।

"नहीं तो। देखो, तुम्हारे लिए कोई यह चिट्ठी दे गया है।" तान्या ने उसे लिफ़ाफ़े में बंद चिट्ठी पकड़ा दी।

ख़ोख़लोव लिफ़ाफ़ा खोलकर आतुरता से चिट्ठी पढ़ने लगा। चिट्ठी इस प्रकार थी:

"साथी ख़ोख़लोव,

ख़ानाबदोश लोगों की बस्ती में सौदा करते समय मैं निक नामी अमरीकी के घर में घुस गया था। उसका यारंग 'गरम सोतों' के पास है। मैंने उसकी तलाशी ली। यारंग को देखकर ऐसा लगा कि निक कहीं बाहर गया है। लेकिन मैं उसके लिए रुका नहीं, क्योंकि मेरे पास कुत्तों की काफ़ी ख़ुराक नहीं थी। यारंग के गलियारे में मुझे खालों में लपेटी हुई एक मोटर मिली। मैंने वह उठा ली, सोचा कि कभी काम आ जाये। मैंने अफ़वाहें सुनी हैं कि नदी के खुलते ही यह अमरीकी रफ़ूचक्कर होना चाहता है। तुम्हें मेरी सलाह है कि उसपर निगरानी रखो। क्रांति के समय की सी चौकसी से काम ले। वहां मोटर मिली—इसका मतलब यह है कि व्हेल-नाव भी वहीं कहीं होनी चाहिए।

"कम्यूनिस्ट अभिवादन के साथ,

रुसाकोव।

"मेरी बीवी आन्ना इवानोव्ना तुम्हें सलाम भेज रही है। उसे हमारी 'सोवियत' वाली सैर की हमेशा याद आती है और उसे तुम्हारा ईद का चांद हो जाना बुरा लगता है। इस चिट्ठी के साथ मैं भूगर्भ-शास्त्री द्यागीलेव की एक चिट्ठी भेज रहा हूं। वह तुम्हारे काम आयेगी।"

ख़ोख़लोव ने दूसरी चिट्ठी खोली।

"रुसाकोव, व्यापारी केन्द्र व्यवस्थापक।

"यह चिट्ठी ले आने वाले बारहसिंगा-पालक कामेरिन को ३० × ३० कारतूसों के तीन पैकेट, ३० × ४० का एक पैकेट, चाय की चार ईंटें, एक सेर तंबाकू ('पपूशा'), दियासलाई की दस डिब्बियां (जहां तक हो सके नॉन सेफ़्टी), पांच गज़ लाल सूती कपड़ा और उसकी इच्छा के अनुसार आठ रूबल की दूसरी चीज़ें दे देना।

"यह एक अच्छा मार्गदर्शक है। उसकी ठीक से खातिर करना। वह अभी अभी मुझे 'गरम सोतों' के पास ले आया है।

"तुम्हारी मिलनसार बीवी को प्रणाम।

तुम्हारा,

भूगर्भ-शास्त्री द्यागीलेव।

"पुनश्च: मैं 'गरम सोतों' के पास अमरीकी निक के यहां तीन-चार दिन ठहरूंगा। कहीं ज़रूरत पड़े तो उसका पता यों है: अमगुएमा नदी का बीच वाला हिस्सा, जलप्रपात के नीचे की ओर लगभग २० किलोमीटर, इचून उपनदी के दक्षिण तट पर लगभग ३५ किलोमीटर।

१६ मई

व्ला० द्या०"

"आहा!" पत्र पढ़ने के बाद ख़ोख़लोव ने कहा। अपना हाथ अपनी घनी 'अयाल' में घुसाकर वह सोचता रहा। इस समय चिंता उसे काट सी रही थी। "अगर ये लोग निक के यहां इकट्ठा होकर अमरीका भाग गये तो क्या होगा? ख़ोख़लोव, तब तो तुम्हारी मौत ही आ गयी समझ लो!"

मिलीशियामैन गुर्रा उठा। इसी क्षण उसके मन में एक विचार उठा। हां, अगर उनके पास व्हेल-नाव होती तो वे अमगुएमा के मुहाने को चले गये होते!..

"तान्या! जाकर बूढ़े को बता दो कि वह बिदारका तैयार रखे। वह हमें नदी के मुहाने तक ले जायेगा। वहां हम तंबू गाड़कर रहेंगे।"

फिर मिलीशियामैन ने अपनी कार्रवाई का अड्डा अमगुएमा के मुहाने के पास बना लिया।

"वहां के एक छोटे से टापू में अंडे मिलते हैं," ख़ोख़लोव के बूढ़े ससुर ने कहा। "हंसों के अंडे और जितने चाहो ले लो!"

मुहाने के पास वाले इस टापू का नाम 'हंस द्वीप' था। ज्वार के समय यह पूरी तरह डूब जाता लेकिन जैसे ही भाटा आया कि लंबी-लंबी घास खड़ी हुई दिखाई देने लगती। देशांतर करने वाले पंछियों के लिए यह टापू एक सुरक्षित स्थान था क्योंकि वहां लोमड़ियां बिल्कुल न थीं।

अपने दामाद को मुहाने के क्षेत्र में छोड़कर बूढ़ा पैदल ही लौट आया।

मिलीशियामैन ने तंबू गाड़ दिया, उसमें बारहसिंगों की खालें बिछा दीं और सो गया। हां, इससे पहले उसने तान्या को हिदायतें दे रखी थीं कि वह नदी पर नज़र रखे और अगर कोई ख़ास बात दिखाई दे तो फ़ौरन उसे जगा दे।

ख़ोख़लोव की योजना बिल्कुल सरल थी – हाथ में बंदूक़ लिये नदी के तट पर भगोड़ों की ताक में रहना, चेतावनी की गोलियां दाग़कर उन्हें रोक लेना, तट पर आने के लिए मजबूर करना, फिर उन्हें दिगंबर बनाकर टुंड्रा में सौ-डेढ़ सौ गज़ दूर भगा देना और नाव की तलाशी लेना, फिर नाव के पिछले हिस्से में पतवार के पास ख़ुद

बैठकर और अपनी बंदूक़ तानकर उन्हें नाव खेने के लिए मजबूर करना। इस तरह वह उन लोगों को ज़िंदा पकड़कर ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन में क्रांति-समिति में पहुंचा देना चाहता था।

उसने अपनी योजना में तान्या को भी शामिल कर लिया था। वह तट के पास एक छोटे से टीले पर बैठकर नदी की चौकसी कर रही थी।

मिलीशियामैन दिन में सो जाता और रात में ख़ुद चौकी देता। रातें काफ़ी रोशन थीं और दिन-रात में फ़र्क़ सिर्फ़ यही था कि रातें अधिक शीतल होती थीं। ख़ोख़लोव ने 'हंस-द्वीप' की सैर की और वापस आते समय लगभग बिदारका भर अंडे ले आया। एक लंबी काठी में जाल बांधकर उसने मछलियां भी पकड़ लीं। मछलियां इतनी अधिक थीं कि तान्या और वह दोनों मिलकर भी उन्हें जल्दी साफ़ न कर सके। धूप में सुखाने के लिए वे मछलियों को डंडियों पर टांग देते। इस काम से ऊब जाने पर वह एक टीले पर चढ़ जाता। इस टीले पर बेरों की झाड़ियां थीं। वह पेट के बल लेटकर और सीधे इन झाड़ियों में मुंह लगाकर बेर खा लेता। हां, इस समय भी उसकी नज़र बराबर नदी पर टिकी रहती। वह सिर्फ़ एक चीज़ से डरता था— कोहरे से। कोहरे में से व्हेल-नाव का दिखाई देना असंभव था। उसने और तान्या ने कोहरे के दिन में नदी पर सैर करने और आवाज़ों पर ध्यान रखने का निश्चय किया। हां, वे लोग मुंह सिये हुए व्हेल-नाव चला कैसे सकते थे—और ख़ासकर कोहरे के दिन में जब एक दूसरे से सलाह-मशविरा करना ज़रूरी होता है।

दोनों ओर सैकड़ों मील तक तट-प्रदेश उजाड़ था।

एक दिन तान्या तंबू में दौड़ी आयी जहां उसका पति सोया हुआ था।

"व्हेल-नावें!" वह चिल्ला उठी।

ख़ोख़लोव फ़ौरन अपनी बंदूक़ उठाकर बाहर की ओर दौड़ा।

एक बिदारका और उसके पीछे दो व्हेल-नावें आती हुई दिखाई दीं। इंजनों की आवाज़ से वायुमंडल गूंज रहा था और नावें बड़ी तेज़ रफ़्तार से आ रही थीं।

यह स्पष्ट था कि ये भगोड़ों की नावें नहीं हैं। ख़ोख़लोव टीले की चोटी पर चढ़ गया, हवा में एक गोली दाग़ दी और अपनी टोपी हिलायी।

इधर लिम्रोक की नज़र तंबू पर पहले ही पड़ चुकी थी। उसने उसी दिशा में अपनी नाव मोड़ ली थी। इन्सान का डेरा उसकी नज़र से कैसे छूट सकता था? साथ साथ लोगों को यह देखने का मौक़ा भी तो देना था कि उसकी बिदारका कैसी सरपट दौड़ती है।

मुहाने में लिम्रोक ने सब से पहले प्रवेश किया। विरुद्ध प्रवाह में बिदारका का वेग कम हुआ।

"ख़-ख़-ख़ोख़लोव, तुम यहां क्या कर रहे हो? मछलियां पकड़ रहे हो क्या?" मिलीशियामैन से हाथ मिलाते हुए रुसाकोव ने पूछा।

"हां, ताज़े पानी की मछलियां! मेरा अंदाज़ है कि साब्लेर और निक भी यहां आयेगा। साब्लेर छूट निकला है और मैं समझता हूं कि निक को छोड़कर वह और किसी के पास नहीं जा सकता।"

"ल-ल-लेकिन वे होंगे व्हेल-नाव पर और तुम रहोगे किनारे पर। तुम उन्हें पकड़ोगे कैसे?"

"आख़िर यह बंदूक़ किस लिए है? वैसा ही मौक़ा आ गया तो सीधे गोली चला दूंगा और क्या? बस, छुट्टी हो गयी!"

"चाय के लिए सभी लोग किनारे पर आ जायें!" एकाक्ष लिम्रोक गरज उठा।

अंगारे बरस रहे थे लेकिन फिर भी लिम्रोक ने ठाठदार चमकीला परका पहन रखा था। उसके पैरों में सील के चमड़े के

बढ़िया कामदार तोरबाज़ थे। उसका सिर नंगा था और सफ़ाचट चांद धूप में चमक रही थी। उसके बाल सिर के चारों ओर पतली सी झालर की तरह लटक रहे थे। वे एक अजीब टोप जैसे लग रहे थे। लिओक बड़ी ख़ुशी से त्योहार मनाने जा रहा था।

"मैं ज़रा इस पहाड़ी की चोटी पर जाकर देख लूं – कोई वालरस तो नहीं हैं?" उसने व्यावहारिक ढंग से कहा और वहां से चल दिया।

"ख़ोख़लोव, भई तुमने जगह तो बढ़िया ढूंढ निकाली! क्या यह तुम्हारा गरमियों वाला बंगला है?" कंकरीले तट पर बैठते हुए द्वोरकिन ने कहा।

ख़ोख़लोव ने जवाब नहीं दिया। उसने कुछ ईर्ष्या से कहा:

"तुम लोग तो बाक़ायदा जहाज़ी बेड़े की तरह सफ़र कर रहे हो। नज़ारा बड़ा ख़ूबसूरत लगता है। काश, मुझे भी मोटर मिल जाती!"

"तो आर्डर दे दो न! अगले साल तक ज़-ज़-ज़रूर मिल जायेगी," रुसाकोव ने कहा। "लोस ही इसके बारे में कहे तो ठीक।"

वामचो और तेवलिआंकाऊ ने अपनी मोटरों में फिर से गैसोलिन डाला।

"तेवलिआंकाऊ!" रुसाकोव चिल्लाया। "बिदारका वाली मेरी मोटर में भी तेल डाल दो।"

"क्या तुम सचमुच जा रहे हो?" मिलीशियामैन ने ग़मगीन स्वर में पूछा।

"पहले हम चाय पियेंगे और फिर रवाना होंगे," द्वोरकिन ने कहा। "हमें जल्दी जाना है।"

"वाह रे दोस्त! और हम दोनों यहां साथ साथ आये थे। मुझे ज़रा लोगों के साथ बातचीत करने का मौक़ा भी तो दो। अरे

यहां महीनों महीनों रूसी में बातचीत करने का मौक़ा नहीं मिलता। ठहरो मैं अभी अभी चूल्हे पर मछली का शोरबा चढ़ाये आता हूं। ज़रा यहां की मछली देख तो लो। देखो, वहां जाल पड़ा है। उसे खींच लो। उसमें तुम्हें मछली मिल जायेगी। मैं सच कह रहा हूं।"

द्वोरकिन ने दिलचस्पी दिखायी। "कहां है जाल?"

"जहां खूंटी है वहीं। देखा?"

द्वोरकिन ने पानी के किनारे जाकर जाल खींच लिया। उसमें डेढ़ फ़ुट लंबी कई 'लोच' मछलियां थीं। उसने बड़े उत्साह से जाल में से मछली उठा उठाकर किनारे पर फेंकना शुरू किया।

"पूरी उनतीस हैं!" उसने कहा।

"सुनो, यह डंडा लो और जाल को ज़रा और गहराई में कर दो। आधे घंटे में तुम्हें फिर इतनी ही मछलियां और मिल जायेंगी," ख़ोख़लोव ने कहा।

द्वोरकिन गद्‌गद हो गया। "तुम्हारी तो मज़े में बीत रही है, ख़ोख़लोव! कौन यहां मौत का नाम भी लेगा?"

"मैं लेना चाहता भी नहीं। थोड़े ही दिनों में यहां 'सामन' मछलियों का जमघट लगेगा। मैंने यह कभी देखा नहीं। लेकिन कहते हैं कि सारे मुहाने पर ये मछलियां इस तरह अटी रहेंगी कि इस किनारे से उस किनारे तक सिवा उनकी पीठों के कुछ नज़र ही न आयेगा!"

लिम्रोक लौट आया और कंकरीले तट पर बैठ गया।

"कोई वालरस नहीं दिखाई दिये। हां, एक व्हेल-नाव ज़रूर दिखाई दी," उसने शांत स्वर में कहा। "उधर बरफ़ीली चट्टानों की तलेटी में। तीन आदमी हैं उसमें।"

"क्या? क्या कहा?" खट से बंदूक़ पकड़कर ख़ोख़लोव गरज उठा।

"शायद शिकारी होंगे?" द्वोरकिन ने पूछा।

"नहीं, नहीं," लिग्रोक ने बेहिचक कहा। "तीन शिकारी कभी समुंदार पर नहीं जायेंगे। वे ज़रूर तांग हैं।"

"ग्ररे!" ख़ोख़लोव सहसा फुसफुसा उठा। "वे रहे। रुसाकोव, मुझे ज़रा ग्रपनी दूरबीन तो दे देना।" यह कहकर वह टीले की ग्रोर दौड़ा।

"उधर, वसंत गुफा के पास! बरफ़ के नज़दीक!" लिग्रोक ने चिल्ला चिल्लाकर कहा।

ख़ोख़लोव ने दूरबीन से देखा तो उसे एक व्हेल-नाव दिखाई दी। उसके हाथ कांपने लगे। एक घुटने के बल बैठकर उसने ग्रपने हाथों को स्थिर किया ग्रौर फिर उसे तीन मनुष्याकृतियां साफ़ साफ़ दिखाई दीं।

"वे ही तो हैं!" वह चिल्लाया। "मैं भी कैसा गधा हूं! उन्होंने मुझे ग्रच्छा चकमा दिया!"

"लाग्रो, ज़रा देखें," दूरबीन लेते हुए रुसाकोव ने कहा।

मिलीशियामैन को पता ही न था कि रुसाकोव ग्रौर द्वोरकिन वहां ग्रा पहुंचे हैं।

"सूग्रर कहीं के! मेरे गले में फांसी लगा गये! जहन्नुम में जायें, सूग्रर के बच्चे!" मिलीशियामैन चिल्लाया। "बस, ग्रांखें सिकोड़कर उन्हें देख भर लेना काफ़ी नहीं। हमें उन्हें फ़ौरन पकड़ लेना चाहिए।" उसने रुसाकोव से कहा।

"ठ-ठ-ठहरो, एक मिनट ठहरो! ज-ज-जामे से बाहर न होग्रो! दो डांड़ों के सहारे वे दूर नहीं जा सकते। व्ह-व्ह-व्हेल-नाव पर हम बात की बात में उनके पास जा पहुंचेंगे। क-क--कहो, तुम क्या सोचते हो?" रुसाकोव ने पूछा।

"हमें उन्हें ज़िंदा पकड़ना है। यह व्हेल-नाव पर नहीं हो सकेगा। हमें बिदारका से ही काम लेना चाहिए। मैंने देखा है, वह हवा को कैसे चीरती हुई चलती है।"



"फ-फ-फिर हम चलें।"

लिम्रोक एक सूखी मछली दोनों हाथों में पकड़कर खा रहा था।

"लिम्रोक," रुसाकोव बोला। "उस न-न-नाव वाले लोगों ने लोस के साथ धोखेबाज़ी की है। हमें उन्हें प-प-पकड़कर क्रांति-समिति में ले जाना चाहिए।"

"पहले हम चाय पियेंगे और फिर उन्हें पकड़ेंगे। वे भागकर कहीं दूर थोड़े ही जा सकते हैं?"

"लेकिन उनकी नाव में कुत्ते और बरफ़-गाड़ी भी तो हैं," दूरबीन में से देखते हुए अध्यापक ने कहा।

"किसी के पास कैंची है?" ख़ोख़लोव ने उत्सुकता से पूछा।

"क्यों भई, कैंची की क्या ज़रूरत पड़ी?"

"मैं चुकची तरीक़े से बाल बनवाना चाहता हूं—लिम्रोक की तरह।"

बूढ़े ने आश्चर्यपूर्वक मिलीशियामैन की ओर देखा और चाय की चुस्कियां लेते लेते कहा:

"कहो तो इस छुरी से तुम्हारे बाल बना दूं।"

"अच्छी बात है, शुरू करो लिम्रोक। लेकिन जल्दी!"

"आख़िर बात क्या है?" अध्यापक ने पूछा।

"यह है एक चाल," ख़ोख़लोव ने जवाब दिया।

लिम्रोक ने अपनी छुरी तेज़ की और जल्दी जल्दी ख़ोख़लोव की चांद साफ़ करने लगा। किनारे के बाल उसने उसके माथे पर ठीक से संवार दिये। ख़ोख़लोव की इस केश-रचना को देखकर तान्या भी हंस पड़ी। लेकिन फ़ौरन उसके मन में विचार आया कि उसका पति अब ज़रूर एक सच्चा आदमी दिखाई देने लगा है।

ख़ोख़लोव ने ऊंचे क़द वाले ओम्रितागेन की ओर देखते हुए कहा:

"सुनो दोस्त, अपना परका मुझे दे दो।"

ख़ोख़लोव ने परका पहन लिया और सचमुच का चुकची बन गया।

"भई, कमाल की सूझ है!" उसकी योजना का अनुमान लगाते हुए रुसाकोव ने कहा।

इसी बीच मिलीशियामैन हुक्म पर हुक्म दे रहा था।

"देखो द्वोरकिन, तुम बिदारका की पेंदी में लेटे रहना। जैसे ही हम उस व्हेल-नाव की बग़ल में पहुंचेंगे, मैं अमरीकी पर झपट पड़ूंगा और तुम भी कूदकर मेरी मदद करना। सुनो रुसाकोव, तुम मेरा पिस्तौल ले लो। उसमें गोलियां भरी हुई हैं। तुम भी बिदारका की पेंदी में से कूद पड़ना और पिस्तौल को उस पाजी साब्लेर पर तान देना। अरे वह तो एकदम बुज़दिल केकड़ा है – फ़ौरन अपने हाथ ऊपर उठा देगा।"

"वाह, योजना ब-ब-बहुत अच्छी है। आओ लिओक!" रुसाकोव ने ख़ुशी से कहा।

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा," वामचो बोला।

"तेवलिआंकाऊ, तुम यहीं रहना। लेकिन गोली की आवाज़ सुनते ही मोटर शुरू कर देना और हमसे आ मिलना," रुसाकोव ने कहा।

"फिर चलें हम शिकार पर," लिओक ने मुस्कराते हुए कहा।

बिदारका अपनी नाक ऊपर उठाये शांत सागर पर बरफ़ीली चट्टान की तलेटी की दिशा में सरपट दौड़ने लगी।

बिदारका में हर कोई चुपचाप बैठा था। लिओक पीछे के हिस्से में पतवार पर जमा था। रुसाकोव उसके पैरों के पास लेटा हुआ बराबर मोटर की देखभाल कर रहा था। ख़ोख़लोव बग़ल में द्वोरकिन की पीठ की ओर पांव फैलाये बैठा था। उसका सिर नंगा

था। वामचो, ग्रानचोऊ ग्रौर पिलिग्राक बिदारका के बीच वाले हिस्से में बैठे थे।

जब व्हेल-नाव बिना दूरबीन की मदद से दिखाई दी तो लिग्रोक ने कहा :

"उन्होंने खेना बंद कर दिया है। उनकी व्हेल-नाव रुक गयी है। व्हेल-नाव वालों में से एक ग्रादमी एक ग्रांख में नली लगाकर हमारी ग्रोर देख रहा है।"

बिदारका तेज़ी से व्हेल-नाव के ग्रागे निकल गयी। ख़ोख़लोव ग्रब ग्रमरीकी को साफ़ साफ़ देख रहा था। साब्लेर ग्रौर उसकी बीवी डांड़ पकड़े साथ साथ बैठे थे। ग्रमरीकी खड़ा था ग्रौर दूरबीन में से देख रहा था। ग्राख़िर वह नाव के पिछले हिस्से में बैठ गया। साब्लेर ग्रौर उसकी बीवी ने डांड़ एक ग्रोर रख दिये। यह साफ़ ज़ाहिर था कि उन्हें किसी तरह का शक-शुबहा नहीं था। साब्लेर ने तो ग्रपना टोप भी हिलाया।

लिग्रोक ने ग्रपनी बिदारका झट से व्हेल-नाव की बग़ल में ला खड़ी की ग्रौर रुसाकोव के पेट में एक हल्की सी लात जमा दी – यह पूर्वनियोजित संकेत था। रुसाकोव ने मोटर बंद कर दी।

ख़ोख़लोव ने व्हेल-नाव का कगार पकड़ लिया। बिदारका रुक गयी। पलक झपते न झपते ख़ोख़लोव निक पर टूट पड़ा। द्वोरकिन भी कूदकर उसकी मदद करने गया।

"ह-ह-हाथ ऊपर उठाग्रो!" साब्लेर पर पिस्तौल तानते हुए रुसाकोव गरज उठा।

निक ने बदहवास होकर ग्रपने को छुड़ाने की कोशिश की लेकिन ख़ोख़लोव ग्रौर द्वोरकिन ने उसे नाव की पेंदी में ही दबोचे रखा।

वामचो ग्रौर ग्रानचोऊ ने साब्लेर ग्रौर उसकी बीवी के हाथ बांध दिये।

भारी सांस लेता हुश्रा ख़ोख़लोव हरे संदूक़ पर बैठ गया श्रौर साब्लेर की श्रोर तीखी नज़र से देखने लगा।

"शैतान की श्रांत! भाग जाना चाहता था! श्ररे, तुमने तो मेरा गला ही घोंट दिया था!"

साब्लेर के हाथ बंधे हुए थे। वह बिल्कुल शांत नज़र श्रा रहा था।

"यह क्या माजरा है?" उसने पूछा। "मैं तो क्रांति-समिति जा रहा था। मुझसे तुम क्या चाहते हो? मि० निक तो मुझे रास्ते में उतार ही देता!"

मि० निक जहाज़ के पिछले हिस्से में पड़ा हुश्रा था। वह मिलीशियामैन ख़ोख़लोव को श्रौर उसके श्रजीब बालों को घूर रहा था। देर तक चुप रहने के बाद उसने गुस्ताख़ी के लहजे में कहा:

"तुम मुझसे इस तरह नहीं पेश श्रा सकते। मैं संयुक्त राज्य श्रमरीका का नागरिक हूं। मैं इस समय सीमा-बाह्य सागर में हूं!"

"सरासर झूठ!" मिलीशियामैन चिल्लाया। "हम बिल्कुल श्रपने किनारे के नज़दीक हैं। ज़बान-दराज़ी बंद करो वरना तुम्हारी श्रांखों के बीच गोली चला दूंगा!"

बिदारका व्हेल-नाव को श्रपने पीछे खींचती गयी। लिश्रोक पतवार पर बैठा था श्रौर वामचो मोटर चला रहा था।

"इन गोरे लोगों की जंग छिड़ गयी है," लिश्रोक ने सोचा।

रुसाकोव ने लिश्रोक को पुकारकर बिदारका रोकने के लिए कहा श्रौर फिर ख़ोख़लोव से बोला:

"स-स-साब्लेर को बिदारका में रख दो, त-त-ताकि वे एक दूसरे से बातचीत न कर सकें। हूंह! स-स-सोवियत किनारे के पास तो है श्रौर कहता है 'सीमा-बाह्य सागर'!"

साब्लेर को जब बिदारका में बिठाया जा रहा था उस समय वलेन्तीना युरियेव्ना को कंपकंपी चढ़ गयी थी।

शीघ्र ही सब लोग मिलीशियामैन के तंबू में आ पहुंचे। एक क्षण की भी देर न लगाते हुए सभी क्रांति-समिति के लिए रवाना हुए। लिग्रोक की बिदारका आगे आगे चल रही थी। उसमें साब्लेर, रुसाकोव और मिलीशियामैन बैठे थे। बिदारका के पीछे तेवलिग्रांकाऊ की व्हेल-नाव चल रही थी जिसमें साब्लेर की बीवी और तान्या बैठी थीं। इस व्हेल-नाव के साथ जीती हुई व्हेल-नाव भी बंधी थी जिसमें ख़ुद निक बैठा था। इस नौका-दल में सब से पीछे थी वामचो की व्हेल-नाव जिसमें अध्यापक द्वोरकिन बैठा था।

खोख़लोव इस समय गर्व से फ़ूला हुआ था। "भाग जाना चाहते थे, कुत्ते कहीं के! लेकिन मैंने उन्हें पकड़ ही लिया!" उसने शेख़ी मारी।

सातवां अध्याय

क्रांति-समिति के कार्यालय में प्रतिनिधियों के स्वागत की सभी तैयारियां पूरी हो चुकी थीं। बड़े हाल में लंबी खुरदरी बेंचों की क़तारें लगी हुई थीं और एक छोटे से चबूतरे पर अध्यक्ष-मंडल की मेज़ रखी हुई थी। उसपर लाल कपड़ा बिछा हुआ था। दीवार पर लेनिन की तस्वीर टंगी थी और लाल पताकाओं पर बड़े बड़े अक्षरों में ये घोषणाएं लिखी हुई थीं: "सोवियत प्रणाली चिरायु हो!" और "जनता की मैत्री चिरायु हो!"

क्रांति-समिति के कार्यालय पर एक नया बड़ा सा झंडा लहरा रहा था। वह मानो लोगों को इस विशाल भवन में आमंत्रित कर रहा था।

सम्मेलन के प्रतिनिधियों की दस व्हेल-नावें किनारे पर पेंदी ऊपर किये एक क़तार में खड़ी थीं। शिकारियों के रहने का बंदोबस्त यारंग में था। वहां वे तरह तरह की ख़बरों पर बहस-मुबाहसा करते थे। सारे तट-प्रदेश के लोगों का ऐसा सम्मेलन ग्राज तक कभी न हुग्रा था।

लोस ग्रपने दफ़्तर में बैठा था ग्रौर 'क़बीला सोवियतें ग्रौर राष्ट्रीय समस्या' शीर्षक ग्रपनी रिपोर्ट पर ग्राख़िरी नज़र दौड़ा रहा था। बात बड़ी ग्रद्‌भुत थी! लोस को यकायक लगा कि उसका धीरज छूटा जा रहा है। हर बात साफ़ साफ़ नज़र ग्रा रही थी लेकिन फिर भी उसे लग रहा था कि उसकी रिपोर्ट में कुछ कमी रह गयी है। ग्रलावा इसके, ख़ानाबदोशों के पड़ावों से कोई प्रतिनिधि न ग्राया था ग्रौर न उसके ग्राने की उम्मीद ही थी, यह बात उसे ग्रखर रही थी।

लोस क़बीला सोवियतों का कार्य-विवरण ले ग्राया ग्रौर फिर एक बार उसे पढ़ डाला। पहले जिस बात को उसने कोई ख़ास महत्व न दिया था वही बात उसे यकायक बहुत महत्वपूर्ण लगी। यह बात थी एनमकाई क़बीला सोवियत का कार्य-विवरण जिसमें मरे हुए कुत्तों को बस्ती की सीमा में फेंक देने की मनाही का ज़िक्र था।

फिर उसने ग्रोसिपोव को बुला लिया।

"देखो, तुम ग्रपना भाषण फिर एक बार ग़ौर से पढ़ लो। उसे ज़रा छोटा कर लो। उसमें कुछ हिस्से ऐसे हैं जो ज़रा भी दिलचस्प नहीं। सीलों के शिकार वाला हिस्सा तुम हटा ही दो। उसमें कोई ख़ास बात है भी नहीं। सब से महत्वपूर्ण बात है वालरसों का शिकार। तुम ग्रपने भाषण में इसी बात पर ज़ोर दो, ख़ासकर उसके संगठनात्मक पहलू पर। यह बात तुम ग्रसरकारी ढंग से बताग्रो कि रोवेंदार खालों वाले जानवरों का शिकार भी इसी पर निर्भर है। ठीक है न? मांस जितना ज़्यादा मिलेगा उतना ही शिकार के लिए

ज़्यादा चारा मिलेगा। इस बात पर तुम विशेष बल दो कि हम दस ग्रौर व्हेल-नावें मंगवा रहे हैं। मोटर वाली व्हेल-नावें।"

"निकीता सेर्गेयेविच, मैंने यह हिस्सा ठीक कर लिया है।"

"बहुत ग्रच्छा। ग्रौर प्योत्र पेत्रोविच कहां है?"

"वह ग्रध्यापकों के साथ है।"

"मैं समझता हूं कि उसे भी बहस के दौरान चिकित्सा के बारे में दो शब्द कहने चाहिए, ठीक है न?"

"बिल्कुल ठीक।"

"नहीं, इस सवाल पर ख़ुद मैं ही कुछ कहूंगा। ग्ररे हां, इसका ख़्याल रखना कि याराक बहस में हिस्सा ले। वह लोगों को बता दे कि लोमड़ियों की खालों की देखभाल का सब से ग्रच्छा तरीक़ा क्या है। यह बात भी महत्वपूर्ण है। हमें बहेलियों के लिए ग्रसरकारी तरीक़े बताने चाहिए।"

लोस ग्रपने दफ़्तर में चहलक़दमी कर रहा था। इस नये उद्यम के महान उत्तरदायित्व का पूरा ख़्याल उसे था। ग्रपनी सारी ज़िंदगी में वह ग्रपने विशेष काम को सब से महत्वपूर्ण मानता ग्राया था। जब वह इंजन ड्राइवर था तब सोचता था कि बस रेल ही सारी दुनिया का ग्राधार है। समझता था कि रेल न रहे तो इन्सान के करते धरते कुछ न बन पड़े! गृह-युद्ध की ग्रवधि में उसकी राय थी कि बख़्तरबंद ट्रेन ही युद्ध का निर्णायक साधन है। बिना बख़्तरबंद ट्रेनों के लड़ाई जीतना नामुमकिन है। ग्रौर इस समय वह समझ रहा था कि क्रांति-समिति की गतिविधियां ही सब से महत्वपूर्ण सरकारी कामकाज हैं।

ऐसा लग रहा था कि लोस की जवानी लौट ग्रायी है। उसने दाढ़ी बना ली थी ग्रौर उसके उन्नत ललाट के बायें घुंघराले बालों की एक लट झूल रही थी। वह लशकरी वर्दी पहने था जो उसे बहुत

ही फबती थी। वर्दी की सिलाई ख़ुद उसने ही की थी। यह पोशाक उसे बहुत पसंद थी। सभी मौक़ों पर वह इसे पहन लेता था। उसकी मोटी सी कमर में चौड़ी लशकरी पेटी थी। बढ़िया पालिश के कारण उसके टॉप-बूट व्हेल की चमड़ी की तरह चमक रहे थे।

यकायक खिड़की में से उसे व्हेल-नावें आती हुई दिखाई दीं।

"और प्रतिनिधि आ रहे हैं!" बड़ी ख़ुशी से उसने कहा।

वह मेहमानों की अगवानी करने के लिए ओसिपोव के साथ बाहर गया। पैरों के नीचे कंकरीला किनारा कटर कटर कर रहा था और हल्की बयार में इंजनों की धड़कन तैर रही थी।

"देखो ओसिपोव, देखो!" लोस ने आश्चर्यचकित होकर कहा। "यह तो मोटर चालित बिदारका है। वाह भई, यह तो बड़ी अद्भुत चीज़ है! इससे तो सारा सवाल ही हल हो गया!"

ओसिपोव के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गयी। वह दंग सा होकर बिदारका को ताकता रहा।

"देखो न, व्हेल-नावों तक को मात कर रही है। आख़िर उन्होंने चमड़े की बिदारका में मोटर लगायी भी कैसे? बात बड़ी दिलचस्प है!" ओसिपोव ने ख़ुशी से कहा।

"लेकिन यह क्या? वे तो एक और व्हेल-नाव खींचे ला रहे हैं! यह व्हेल-नाव आयी कहां से? और दो मोटरें भी? कैसी अजीब बात है! उन्होंने ख़ुद ही तो मोटर नहीं बना ली?" लोस ने उलझनभरे स्वर में कहा।

बस्ती के बाशिंदे, प्रतिनिधि, अध्यापक, क्रांति-समिति के कार्यकर्ता और यहां तक कि डाक्टर प्योत्र पेत्रोविच भी किनारे पर दौड़ आये।

दृश्य बड़ा ही मनोहर था। बिदारका व्हेल-नावों के आगे आगे सरपट दौड़ती हुई किनारे पर पहुंची और बालू में लगभग आधी

पेंदी ऊपर किये रुक गयी। लिम्रोक बड़ी शान से पतवार पर बैठा था। किनारे पर खड़ी भीड़ पर उसने एक विजेता की भांति निगाह दौड़ायी।

हार्दिक अभिवादन का आदान-प्रदान हुआ। लोगों ने तपाक से एक दूसरे से हाथ मिलाया।

"क्यों भई, यह झांकी क्यों बना ली?" ख़ोख़लोव की ओर देखकर लोस ने कठोर स्वर में पूछा। "कहीं विदूषक का अभिनय तो नहीं कर रहे हो!"

ख़ोख़लोव ने कुछ शर्माकर अपनी घुटी चांद और सिर के चारों ओर लटकने वाली बालों की झालर थपथपायी और बिदारका में बैठे हुए साब्लेर की ओर इशारा करते हुए कहा:

"साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, यह मेरी योजना का एक पहलू था। यह सांप अमरीका भाग रहा था।"

लोस ने ग़ौर से ख़ोख़लोव की रिपोर्ट सुनी और फिर हुक्म दिया:

"इन सब को हिरासत में रखो। हर एक को अलग अलग कमरे में बंद कर दो!"

लिम्रोक को देखकर लोस ने दोस्ताना अंदाज़ में कहा:

"ओहो लिम्रोक! तुम भी आ गये!"

"हां! मैं तुमसे मिलने आया हूं!"

"वाह, बहुत अच्छे!"

लिम्रोक ने लोस की ओर कुछ उपहास से देखते हुए हल्के और आग्रही स्वर में कहा:

"मैं देर तक उस बातचीत के बारे में सोचता रहा जो हम लोगों के बीच हुई थी। तुम्हें याद है, जब तुम रुसाकोव के पास आये थे उस वक़्त मेरे यारंग में भी पधारे थे?"

"हां, याद है तो। हमने अमरीकी माचिस के बारे में बातचीत की थी।"

"माचिस कोई ख़ास बड़ी बात नहीं," लिम्रोक ने आह भरकर कहा। "आग, मैं दो लकड़ियों को रगड़कर भी पैदा कर सकता हूं। लेकिन मोटर–बस यही असली चीज़ है! हम यह ख़ुद तो नहीं बना सकते। मैंने ख़ूब सिर मारा। काफ़ी दिन सोचता रहा। आख़िर मैंने आर्टेल में शामिल होना तय कर लिया। मुझ जैसे बड़े शिकारी को मामूली शिकारियों ने मात कर दिया। मैं एनमकाई वाली औरतों से भी पीछे रह गया। बस, मोटर ने मुझे पछाड़ दिया। बुरी तरह से पछाड़ दिया। मैं ऐसा आदमी बनकर नहीं रहना चाहता था कि लोग मेरी खिल्ली उड़ायें। इसी लिए मैं आर्टेल में दाख़िल हो गया। लेकिन अब तो मेरे पास भी मोटर है। तुमने देखा, मेरी बिदारका कैसी दौड़ती है!"

"बहुत ही अच्छी! लिम्रोक, तुमने बिल्कुल ठीक किया कि आर्टेल में शामिल हो गये। तुम बड़े शिकारी हो और सख़्त मेहनत करते हो। तुम अलितेत जैसे नहीं हो। वह तो शिकारियों से रावेंदार खालें मिट्टी के मोल ख़रीदता है। लिम्रोक, तुम मेहनतकश हो और इसी लिए बड़े अनुभवी शिकारी हो। तुम ज़िंदगी के अच्छे जानकार हो। यहां के लोगों को तुम्हारी बात माननी चाहिए," लोस ने भावुकता से कहा।

अपने बारे में लोस कैसे ऊंचे ख़्याल रखता है यह जानकर बूढ़े के मन में संतोष की भावना उमड़ उठी। लेकिन फिर भी उसके स्वर में स्वाभाविक घमंड की झलक थी।

"हां, मैंने कुछ ज़िंदगी देखी है सही। तुम कहते हो कि लोगों को मेरी बात माननी चाहिए, यही न?" उसने पूछा। "हां, माननी ही चाहिए। अब मैं आर्टेल का अध्यक्ष हूं।"

"अच्छा, तुम अध्यक्ष चुन लिये गये?" लोस ने आश्चर्यपूर्वक पूछा।

"हां, मैंने ही लोगों से कहा कि वे मुझे चुन लें।"

इसी बीच मि० निक का संदूक़ क्रांति-समिति में लाया गया।

"ख़ोख़लोव, खोल दो इसे। देखें उसमें क्या है। तुमने देखा कि नहीं?" लोस ने पूछा।

"नहीं, साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, हमारे पास समय नहीं था," ख़ोख़लोव ने अपनी जेब में से चाभी निकालते हुए कहा। यह चाभी उसने मि० निक से ले ली थी।

ताला खुल गया और ख़ोख़लोव ने संदूक़ खोल दिया।

"ओहो! यह तो सोना लग रहा था," उसने कहा। "और यहां, इस कोने में काग़ज़ात हैं।"

"सब निकाल लो," लोस ने हुक्म दिया।

"साथी क्रां० स० प्रतिनिधि, जाने उनमें क्या क्या लिखा हुआ है! ये रूसी में नहीं हैं।"

"कोई बात नहीं, उन्हें निकालकर यहां रख दो। जिनकी यह करतूत है वे ही उनका मतलब बतायें।"

"अरे, ये तो नक़्शे हैं। और यह रही रूसी में लिखी हुई नोटबुक!"

"लाओ, देखूं तो।" लोस ने जल्दी जल्दी पन्ने उलटकर देखा।

"एक और नोटबुक भी मिली।"

"अरे, यह तो द्यागीलेव की नोटबुक है!" लोस ने अचंभे के स्वर में कहा।

ख़ोख़लोव और रुसाकोव ने एक दूसरे की ओर देखा। लोस के चेहरे का रंग बदल गया।

"यह देखो, कुछ और भी।"

"लेकिन ये चीज़ें इस संदूक़ में कैसे आयीं?" लोस ने चिंतित होकर पूछा।

"मेरी चिट्ठी कहां है?" यकायक कुछ याद कर रुसाकोव ने कहा।

ख़ोख़लोव ने द्यागीलेव द्वारा रुसाकोव के नाम लिखी गयी चिट्ठी निकाली और लोस को थमा दी।

लोस ने चिट्ठी पढ़ी। "ओह, इन्होंने तो उसे मार डाला!" हाथों में सिर पकड़कर वह चिल्लाया। "डकैत कहीं के!"

आठवां अध्याय

बड़े सवेरे सम्मेलन शुरू हुआ। बूढ़ा इल्यीच, लिम्रोक, डाक्टर प्योत्र पेत्रोविच और वामचो अध्यक्ष-मंडल की मेज़ के पास बैठे थे। वामचो की बग़ल में लोस बैठा था। हॉल में विभिन्न बस्तियों से आये हुए लगभग पचास प्रतिनिधि और मेहमान बैठे थे। वे लाल पताकाओं से सजायी गयी दीवारों की ओर कुतूहल की दृष्टि से देख रहे थे। वे समझ न सकते थे कि पताकाओं पर क्या लिखा है लेकिन फिर भी उनके आकर्षक रंग-रूप से उन्हें बड़ी ख़ुशी हो रही थी। हालांकि हॉल में काफ़ी गरमी थी फिर भी सारे प्रतिनिधि फ़रदार परके पहने बैठे थे।

"साथियो," लोस ने गंभीरता के साथ कहा। "हम पहली बार इस सम्मेलन के लिए इकट्ठा हुए हैं। महाद्वीप में सब लोग जानते हैं कि यहां आज हमारी बैठक हो रही है। हमारे पास पेत्रोपावलोव्स्क, ख़बारोव्स्क और मास्को से भी अभिनंदन और शुभ कामनाओं के संदेश आये हैं।"

लोस ने मेज़ पर से कुछ काग़ज उठाये, उन्हें पढ़कर सुनाया और गुबेर्निया क्रांति-समिति, सुदूर पूर्वीय प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति और अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी समिति के अधीनस्थ उत्तरी जनता सहायक समिति की ओर से भेजे गये रेडियो संदेश समझा दिये।

"आज हमारे पास व्लादिवोस्तोक से एक और रेडियो संदेश आया है। जिन्होंने यह भेजा है उन्हें आप लोग जानते हैं। यह अन्द्रेई और आये का अभिनंदन संदेश है।"

डाक्टर प्योत्र पेत्रोविच और रुसाकोव ने तालियां बजानी शुरू कीं। लिओक और इल्यीच ने एक दूसरे की ओर देखा। जब उन्होंने देखा कि वामचो भी यही कर रहा है तो वे भी तालियां बजाने लगे। फिर यकायक सभी लोगों ने तालियां बजानी शुरू कीं। सब के चेहरों पर ख़ुशी की मुस्कराहट दौड़ गयी।

ऐसी कोई ख़ास बात तो नहीं हुई—बस, सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा था। लेकिन इस प्रसंग से लोस प्रफुल्लित और पुलकित हो उठा। यह उसके जीवन का एक अविस्मरणीय प्रसंग था। उसे अपने कार्य के फल प्रत्यक्ष दिखाई दिये। हॉल में जो लोग एकत्रित थे उन्हें नवजीवन की राह पर ले चलने के लिए वह एक वर्ष से भी अधिक से अथक परिश्रम कर रहा था। लोस ने भी ज़ोर से तालियां बजायीं। उसका चेहरा मुस्कराहट से खिल उठा।

"साथियो," उसने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए गहरी भावुकता से कहा। "अब हम आपको बता देंगे कि सोवियत प्रणाली क्या है और आपके लिए क्या करना चाहती है, इसी तरह क़बीला सोवियतों का मतलब क्या है और उन्हें क्या क्या करना चाहिए।"

दीवार पर लगी हुई तस्वीर की ओर इशारा करते हुए लोस ने आगे कहा :

"यह हैं लेनिन। उन्होंने सोवियत प्रणाली के लिए संघर्ष किया। वे हमें बताते हैं कि हमारे देश के सभी बाशिंदों को एक दूसरे का दोस्त बनकर रहना चाहिए और एक दूसरे की इज़्ज़त करनी चाहिए। इसी आदमी ने नया क़ानून बनाया। उन्हें यह क़ानून बनाने के लिए दुष्टों का सख़्त मुक़ाबला करना पड़ा। आप तो खुद ही जानते हैं

कि नया क़ानून यहां लागू करना भी इतना आसान नहीं है। इस क़ानून को लागू करने में अलितेत और उसके बाप कोराउगे जैसे लोग रोड़े अटका रहे हैं। यह कोराउगे ओझाई करता है और बड़ा धोखेबाज़ है। वे नये क़ानून से डरते हैं क्योंकि यह उनकी चालबाज़ी को खत्म कर देगा। वे उमदा कुत्तों वाली बरफ़-गाड़ियों पर घूमते हैं और उन्हें कभी गोश्त की कमी नहीं महसूस करनी पड़ती। लेकिन जो लोग उनके लिए वालरसों का शिकार करते हैं उन्हें गोश्त के एक एक टुकड़े के लिए उन्हीं के सामने हाथ फैलाना पड़ता है। यह क़ानून ग़लत है। सोवियत प्रणाली ने यह क़ानून ठुकरा दिया है और ज़िंदगी का नया क़ानून बना दिया है। इस क़ानून की बुनियाद है–इन्साफ़ . . . ''

श्रोताओं को हर शब्द समझाने के लिए लोस बहुत ही धीरे धीरे बोल रहा था। इस जनता के इतिहास में यही पहला अवसर था जब लोग सुखी जीवन के निर्माण के बारे में विचार-विनिमय कर रहे थे।

लोस का भाषण समाप्त होते ही लिओक बड़े ज़ोर से बोल उठा :

"ऐ लोगो! अब मैं बोलूंगा। मेरी बात सुन लो। तुमने मेरी बिदारका देखी है, देखी है न?"

"हां, हां, देखी है!" सारे हॉल ने हामी भरी।

"जिसने अभी तक देखी नहीं, वह किनारे पर जाकर देख ले। यह अच्छी बिदारका है। मज़बूत बिदारका है। फिर भी आर्टेल की व्हेल-नावें मुझसे बाज़ी ले गयीं। मुझे बड़ी शर्म लगी। बहुत से लोग जानते हैं कि मैं कितना बड़ा शिकारी हूं; लेकिन फिर भी मैं पिछड़ गया। तब मैंने ज़िंदगी के नये क़ानून का सहारा लिया। जब पारसाल के जाड़ों में लोस हमारे यहां आया था उस वक़्त मैंने उसके साथ काफ़ी बातचीत की। उस वक़्त मुझे यक़ीन न हुआ। फिर बसंत

आया—और मुझे उसकी याद हो आयी," लोस की ओर इशारा करते हुए लिम्रोक ने भाषण जारी रखा, "फिर मुझे यक़ीन हुआ। आख़िर सच्चाई देखने के लिए मेरे पास एक आंख तो है ही। मोटर वाली व्हेल-नाव पर चलने वाली औरतों ने भी मुझसे ज़्यादा वालरसों का शिकार किया। और फिर मैंने अध्यक्ष बनने का निश्चय किया।"

बूढ़े इल्यीच ने फ़ौरन तालियां बजानी शुरू कीं।

लिम्रोक ने इल्यीच की ओर देखा और शांत स्वर में पूछा: "मैं सच कह रहा हूं न?"

"हां हां, सच है, बिल्कुल सच," इल्यीच ने जवाब दिया।

लिम्रोक अपनी जगह पर जा बैठा।

फिर हर एक ने नयी ज़िंदगी के बारे में बोलना चाहा।

वामचो, याराक, ओसिपोव और अन्य प्रतिनिधियों ने भाषण दिये। इन भाषणों में जो कुछ कहा गया उसमें से अधिकांश बातों का लोस की रिपोर्ट से शायद ही कोई संबंध था लेकिन हर वक्ता ने नयी ज़िंदगी की बात की, यह सही था।

"क्या मैं बोल सकता हूं?" ओम्रितागेन ने कुछ शर्माते हुए पूछा।

"ज़रूर! तुम्हें तो बोलना ही चाहिए," लोस ने कहा।

"हमारी बस्ती के एक शिकारी का यारंग जल गया। वह सिर्फ़ अपने कपड़े बचा सका। लेकिन ओझा ने कहा कि 'ये कपड़े और लपटों से बची हुई बाक़ी सारी चीज़ें भी आग में डाल देनी चाहिए।' और उन्होंने सब कुछ जला डाला। वह शिकारी अब मेरे यारंग में नंगा बैठा हुआ है। ओझा ने उसके पास अपने पुराने कपड़े भेज दिये। शिकारी ने कुछ विचार किया और कहा, 'अच्छा हो कि ये कपड़े मैं न लूं। इन फटे-पुराने कपड़ों की क़ीमत चुकाने के लिए मुझे

दो जाड़ों में लोमड़ियां फंसानी होंगी।' उसने नंगा रहना ही पसंद किया। अब हमें क्या करना चाहिए?" यह कहकर ओम्रितागेन अपनी जगह पर बैठ गया।

यकायक बाहर शोरगुल सुनाई दिया:

"रेऊ! रेऊ! रेऊ!"

पलक झपते न झपते सारा हॉल ख़ाली हो गया। लिम्रोक सब से आगे दौड़ा। बात यह थी कि समुंदर में एक व्हेल आ गया था। रुसाकोव भी बाहर दौड़ा।

"निकीता सेर्गेयेविच! इसे क्या कहोगे?" डाक्टर ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"कोई हर्ज नहीं, प्योत्र पेत्रोविच। समझ लो बैठक स्थगित हो गयी," लोस ने कहा।

इस बीच लिम्रोक किनारे पर हुक्म दे रहा था।

"हमें और थैलियां चाहिए। उनमें काफ़ी हवा भर दो!" उत्तेजित होकर वह गरज रहा था।

बहुत से लड़के कंकरीले तट पर बैठे थे और सील थैलियों के छोटे छोटे छिद्रों में से हवा फूंककर उन्हें फुला रहे थे। जब उनका दम अटक जाता था, तो वे छिद्रों को अपनी ज़बान से बंद कर लेते थे और नाक के ज़रिये फेफड़ों में हवा खींचकर फिर थैलियों में फूंक देते थे। थैलियां फूल गयीं और सचमुच के सीलों जैसी दिखाई देने लगीं। उनके सुफने तक थे लेकिन सिर नहीं थे।

व्हेल ने पानी की सतह पर एक चमचमाता हुआ फ़व्वारा छोड़ दिया।

"बरछैतो! बिदारका पर आ आओ!" लिम्रोक चिल्लाया। "रुसाकोव! तुम मोटर संभालो!"

"सुनो लिम्रोक, जल्दी न करो," इल्यीच ने कहा। "हमारे पास गैस-ओ-लीन जो है। यह बड़ा अच्छा पिशाच है।"

इन दो बूढ़े और अनुभवी व्हेल-मारों ने काम का बंटवारा कर लिया। यह तय हुआ कि लिम्रोक आगे बढ़े और उसकी बिदारका में से अच्छे निशानेबाज़ बरछैत व्हेल के शरीर में अपने बरछे गड़ा दें; फिर पांच पांच नावें व्हेल के दोनों ओर जाकर उसे घेर लें और फिर शिकारी उसके सिर में डमडम गोलियां चला दें। इल्यीच को सब से आगे वाली नाव में रहना था।

"ऐ, पतवार वालो। यहां आ जाओ!" लिम्रोक ने उच्च स्वर में आदेश दिया।

व्हेल धीरे धीरे और शांतिपूर्वक तैरता जा रहा था। उसने सांस लेकर गहराई में गोता लगाया। उस समय उसकी पीठ दिखाई दी। वह एक पहाड़ी जैसी बड़ी थी और उसका काला तेलिया रंग इस तरह चमक रहा था मानो उसपर रोग़न चढ़ाया गया हो। वह बाढ़ से घिरकर डूबने वाले टापू की तरह धीरे धीरे डूबता गया और फिर अपनी पूंछ की एक फटकार के साथ अदृश्य हो गया लेकिन कुछ ही देर बाद दूसरी जगह पानी की सतह फट सी गयी और वहां व्हेल का सिर दिखाई दिया। फिर एक बार ज़ोरदार फ़व्वारा छूटा और धूप में इंद्रधनुष के रंग लिये चमक उठा।

लिम्रोक पतवार वालों को हिदायतें दे रहा था और साथ साथ व्हेल की हरकतों पर ध्यान रखे हुए था।

"वाह भई, आज बढ़िया शिकार होगा! यह कोई सील थोड़े ही है जिसे पकड़ना किसी के बायें हाथ का खेल हो!"

हंसों की पांत में आगे आगे चलने वाले हंस की तरह सागर की शांत सतह पर बिदारका सरपट दौड़ रही थी। उसके पीछे पीछे धड़कते हुए इंजनों के साथ व्हेल-नावें क़तार बांधे चल रही थीं। उन्होंने पांच पांच नावों की दो क़तारें बना ली थीं। लिम्रोक बिदारका की पतवार पर बैठा था और विजयी मुद्रा के साथ पीछे मुड़ मुड़कर

व्हेल-नावों की ओर देख रहा था। "ओह, ऐसे बड़े शिकार का मौक़ा पहले कभी न आया था!"

बिदारका के दोनों कगारों पर चार चार अनुभवी बरछैत बैठे थे। हर कोई चाहता था कि मैं सब से पहले बरछा चला दूं। इसका एक ख़ास कारण था। व्हेल-पर्व में जब ढोलकों की संगत पर लड़कियां नाचती और गाती थीं उस समय पहले नंबर के बरछैत को सम्मान के स्थान पर बैठने का अवसर मिलता था। इसी लिए सारे बरछैत तेज़ चौकसी रखे हुए थे। उनके हाथों में बरछे तैयार थे। उनके पैरों के पास फूली हुई थैलियां थीं जो मोटे वालरस तस्मे के साथ बरछों में बंधी थीं।

बिदारका व्हेल के आगे निकल गयी। लिम्रोक ने झट से नाव घुमा ली और उसे समुंदरी जानवर की दिशा में ले जाने लगा। उसके हाथ की एक हरकत से मोटर बंद पड़ी। सभी लिम्रोक की बात समझ गये।

व्हेल पानी की सतह पर चुपचाप पड़ा हुआ था। बिदारका बिल्कुल आवाज़ न करते हुए उसके सिर की दिशा में जा रही थी। पर वह उसे न देख सका। शिकारियों पर पानी का एक फ़व्वारा छूटा और व्हेल का सिर फ़ौरन ग़ायब हो गया।

"चलाओ बरछा!" लिम्रोक गरज उठा।

बिदारका व्हेल की पीठ से रगड़कर जा रही थी कि चार शिकारियों ने अपने बरछे चला दिये। पानी पर चार थैलियां तैरने लगीं। व्हेल ने अपनी पूंछ से पानी को फटकारना शुरू किया। सागर मथ उठा और बिदारका एक भीमाकार लहर की चोटी पर उछल गयी।

"मोटर!" लिम्रोक चिल्लाया।

रुसाकोव ने रस्सी को झटका दिया। इस समय उसका चेहरा फीका पड़ रहा था। मोटर की धड़कन शुरू हुई और बिदारका ने

चक्कर खाकर रुख़ बदला। बरछे व्हेल के शरीर में गड़े थे। हवाई थैलियां उसके नीचे थीं।

"वह गुस्से में ग्रा रहा है," लिग्रोक ने कहा। "ठीक है, वह चारों थैलियों को घसीटता जाये," व्हेल-नावों की ग्रोर देखते हुए उसने कहा।

कुछ देर बाद थैलियां पानी की सतह पर तैर ग्रायीं। फ़ौरन पानी का एक फ़व्वारा छूटा ग्रौर व्हेल का सिर फिर से दिखाई दिया। इल्यीच ने ग्रपना हाथ उठाया ग्रौर नावों में से एक साथ कई गोलियां छूट गयीं।

बिदारका फिर से व्हेल के नज़दीक ग्राने लगी। रुसाकोव व्हेल के पास नहीं ग्राना चाहता था लेकिन फिर भी मोटर चालू थी। इस समय दुनिया की कोई भी ताक़त लिग्रोक को रोक न सकती थी।

"चलाग्रो बरछे!" वह कर्कश स्वर में चिल्ला उठा।

चार ग्रौर बरछे व्हेल के शरीर में घुस गये। ग्रब वह ग्रपने पीछे ग्राठ हवाई थैलियां खींचता जा रहा था। पानी की सतह पर ज़िंदा सील की तरह उनके सुफने फड़फड़ा रहे थे।

लिग्रोक ने फिर रुख़ बदला ग्रौर इल्यीच के कमान में व्हेल-नावों ने फिर से व्हेल का पीछा करना शुरू किया।

बिदारका ने धीरे धीरे एक वृत्त बनाया। एक बरछैत ने एक लंबे तस्मे में सील की ठप्पेदार खाल की एक ख़ास थैली लगा दी।

लिग्रोक ने दो बार बड़े बड़े वृत्तों में परिक्रमा की। उसका ध्यान गोलियों ग्रौर हवाई थैलियों पर था।

"वह ग्राठ थैलियां खींचने की ग्रादत डाल ले," लिग्रोक ने रुसाकोव से कहा।

फिर वह बिदारका को एक दम घुमाकर इल्यीच की व्हेल-नाव की ग्रोर सरपट दौड़ाता गया।

मोटरें ज़ोर से धड़धड़ा रही थीं। किनारे पर लोगों की काफ़ी बड़ी भीड़ लगी हुई थी। वे यह बड़ा शिकार देख रहे थे।

बिदारका व्हेल-नाव के पास आ पहुंची। बरछैतों ने नाव का कगार कसकर पकड़ लिया। लिम्रोक इल्यीच की बग़ल में आ गया।

"इल्यीच! कैसा बढ़िया शिकार रहा!" वह ख़ुशी से चिल्लाया।

"बहुत बड़ा शिकार!" इल्यीच ने जवाब दिया।

एक साथ जकड़ी हुई ये नावें व्हेल का पीछा करना छोड़कर वृत्ताकार घूमती रहीं। हां, लोगों ने अपने शिकार पर से नज़र न हटने दी।

"खींचे आठ आठ थैलियां अब वह," लिम्रोक ने कहा।

"और इसी में थककर चूर हो जाये," इल्यीच बोला।

उन्होंने अपनी चिलमों में 'पपूशा' तंबाकू भरी और उन्हें सुलगाकर पीने लगे।

"शिकार बहुत जल्दी ख़त्म हो गया," चिलम का कश लगाते हुए इल्यीच ने कहा।

"बहुत ही जल्दी। इल्यीच, तुम्हें याद है मैं तीन दिन किस तरह पीछा करता रहा? बस, अब कुछ ही वक़्त का मामला है।"

"हमें लोस को व्हेल-त्योहार में बुलाना चाहिए। अब मैं अच्छा शिकार कर लेता हूं, यह उसी की मेहरबानी है। देखो, अब मैं फिर से जवान हो गया हूं। तुमने देखा, मैंने किस तरह व्हेल-नावों की रहनुमाई की थी?"

"हमारे शिकारियों ने गोलियां भी ख़ूब चलायीं," लिम्रोक बोल उठा। "एक भी निशाना न चूका।"

व्हेल-नावें अब एक दूसरी से दूर होने लगीं। मोटरें आपस में फुसफुसाकर मानो कह रही थीं कि कैसा बढ़िया शिकार रहा।

घायल ग्रौर बेदम व्हेल ग्राठ हवाई थैलियां खींच रहा था। वह उन्हें गहराई में ले जाता था लेकिन वे उसे फिर से ऊपर खींच लाती थीं।

चिलम पी चुकने के बाद लिग्रोक व्हेल-नाव से ग्रलग हो गया ग्रौर फिर से व्हेल का पीछा शुरू हुग्रा।

"बरछे!" वह चिल्लाया। वह पतवार छोड़कर बिदारका के ग्रगले हिस्से में ग्रा खड़ा हुग्रा।

वह इस समय ठप्पेदार थैली का लंबा तस्मा खोल रहा था। तस्मा उसके हाथ से धीरे धीरे सरकता जा रहा था। कई गज़ तस्मा खोल देने के बाद लिग्रोक ने उसे कसकर पकड़ लिया। ग्रब व्हेल बिदारका को ग्रपने पीछे खींचने लगा। रुसाकोव ने मोटर बंद कर दी।

"हम इस वक़्त व्हेल की सवारी कर रहे हैं!" लिग्रोक ने ख़ुशी से कहा।

सारे बरछैत मुस्करा उठे। लेकिन रुसाकोव की हालत दूसरी ही थी। वह डरा डरा सा व्हेल की ग्रोर देख रहा था।

लिग्रोक को ऐसा लगा कि व्हेल गोता लगाने जा रहा है। उसने झटपट ठप्पेदार थैली पानी में फेंक दी।

"मोटर!" रुसाकोव की ग्रोर देखकर वह चिल्लाया।

मोटर धड़धड़ाने लगी ग्रौर नया कर्णधार बिदारका को ठप्पेदार थैली के पीछे दौड़ाने लगा। लिग्रोक ने बिदारका की नाक पर से झुककर थैली के लिए हाथ बढ़ाया। उसने वह पकड़ भी ली ग्रौर तस्मे में कुछ ढील दे दी ताकि व्हेल बिदारका को झटके के साथ डुबो न दे। ग्रब व्हेल पानी की सतह पर तैर रहा था ग्रौर ग्रपने पीछे बिदारका को घसीटता जा रहा था।

लिग्रोक लगाम की तरह तस्मा पकड़े खड़ा था, मानो बारहसिंगों की गाड़ी हांक रहा हो! व्हेल एक क्षण खुले पानी की

ओर झपट्टा मारता तो दूसरे ही क्षण किनारे की दिशा में तैरता जाता और फिर रुख़ बदल लेता। लिम्रोक तस्मे को कसकर पकड़े था। बिदारका व्हेल की मार्ग-रेखा पर सरपट दौड़ रही थी। आख़िर व्हेल एकदम मुड़ गया और छिछले पानी की ओर जाने लगा।

"चलो, भई चलो!" लिम्रोक चिल्ला रहा था। उसका चेहरा खिल उठा था।

व्हेल बस्ती के पास ही किनारे पर गिर गया। न हिला न डुला। उसके भीमाकार शरीर का आधा हिस्सा कंकरों पर टिका हुआ था। लोगों की भीड़ उसके चारों ओर इकट्ठा हो गयी। क्रांति-समिति के लोग भी दौड़े दौड़े किनारे आ पहुंचे। इसी बीच व्हेल-नावें किनारे लग गयीं और शिकारियों ने व्हेल को काटना शुरू कर दिया।

"वाह भाई रुसाकोव, इस भारी शिकार के लिए मैं तुम्हें बधाई देता हूं," लोस ने कहा। "मैं इस शिकार की बात तफ़सील से सुनना चाहता हूं, बताओ।"

"ब-ब-बाद में बता दूंगा। म-म-मेरा कलेजा अभी तक क-क-कांप रहा है।"

"सचमुच?" लोस ने कहा। "क्या शिकार इतना ख़तरनाक रहा?"

"और क्या? स-स-सीधे व्हेल की पीठ पर चढ़ने की ब-ब-बात किसी ने सुनी भी थी? मुझे तो लगा कि बिदारका टुकड़े टुकड़े हो जायेगी। अरे भाई, व्हेल कोई मज़ाक़ थोड़े ही है। यहां व्ह-व्ह-व्हेलमार तोपों की ज़-ज़-ज़रूरत है।"

जल्दी जल्दी व्हेल को काट दिया गया। दर्जनों आदमी तेज़ छुरे लिये व्हेल की थूथनी पर मक्खियों की तरह रेंग रहे थे। शीघ्र ही उस जानवर का नीचे वाला जबड़ा खुल गया और दो दांत लंबे

डंडों की तरह खड़े दिखाई पड़ने लगे। कई आदमी उसकी लंबी-चौड़ी ज़बान पर खड़े हो गये।

"अब शानदार पर्व होगा!" लिम्रोक ने लोस की तरफ़ मुख़ातिब होते हुए कहा।

"पहले हम बैठक का काम पूरा करेंगे, फिर पर्व का बंदोबस्त।"

इधर लिम्रोक की नज़र रेडियो-आपरेटर मोलोत्सोव पर पड़ी जो केमरा लिये खड़ा था।

"नहीं, नहीं!" लिम्रोक चिल्लाया। "इसे हटा लो!"

"हटा लूं?" मोलोत्सोव ने पूछा! "क्यों, बात क्या है?"

"तुम्हें यह नहीं करना चाहिए," लिम्रोक ने ज़ोर देकर कहा।

मोलोत्सोव ने हाथ हिलाया और फ़ोटो उतारने लगा।

लिम्रोक उसकी ओर दौड़ा और केमरे का स्टेंड दूर हटा दिया। "तुम्हें यह नहीं करना चाहिए!" उसने कठोर स्वर में कहा।

"निकीता सेर्गेयेविच!" मोलोत्सोव ने पुकारा। "यह मुझे फ़ोटो नहीं उतारने दे रहा है।"

"क्या बात है, लिम्रोक?" लोस ने पूछा।

"बात यह है कि एक बार मैंने एक बड़ा व्हेल मारा था, उस समय कुछ अमरीकियों ने भी यही किया था। लेकिन फिर मुझे तीन साल तक व्हेल नज़र न आया। इसी लिए इस जवान को यह काम नहीं करना चाहिए।"

"हां भई, तब दूसरी बात है," लोस ने हामी भरी। "इल्या, हटा लो अपना केमरा।"

"कैसी बेवक़ूफ़ी है!" केमरा फिर से ठीक करते हुए मोलोत्सोव फुसफुसाया।

"नहीं, यह बेवक़ूफ़ी नहीं है!" लोस ने गुस्से से कहा।

नवां अध्याय

सम्मेलन तीन दिन चलता रहा। यह सचमुच बड़े भाषण का पर्व था। तट-प्रदेश में लोगों का इतना बड़ा सम्मेलन इससे पहले कभी न हुआ था। सम्मेलन में एक आदमी बोलता था और बाक़ी सब चुपचाप सुनते थे। फिर दूसरा बोलता था और बाक़ी सुनते थे। यही क्रम बराबर जारी रहा। वैसे ओम्रितागेन की बात सुनने के लिए तीन से अधिक श्रोता कभी न इकट्ठा होते लेकिन इस समय उसने भी सभी लोगों के सामने भाषण दिया। "ओहो! ये लोग मेरी बात भी सुन रहे हैं," उसने सोचा। उसे गौरव की अनुभूति हुई।

लोगों ने क़बीला सोवियतों, व्यापार, रूसी डाक्टर और स्कूल, समुंदरी शिकार और बंदूक़ की गोली की तरह दूर से बरछा फेंकने वाली शिकारी तोप के बारे में बातें कीं। लिम्रोक की मोटर वाली बिदारका के बारे में वे बोले और जीवन तथा उसे व्यवस्थित करने के संबंध में भी उन्होंने अपने विचार प्रकट किये। जो जिस बात को सब से महत्वपूर्ण मानता था, वह उसी के बारे में बोला।

वामचो ने अपने जीवन और अलितेत के साथ अपने संबंधों की लंबी कहानी सुनायी। उसने हर किसी को बता दिया कि किस तरह अलितेत ने लोमड़ियों के चारे पर मिट्टी का तेल छिड़क दिया था और मुखिया वाला काग़ज़ होली में जलवाकर किस तरह बूढ़े ओझा ने उसे धोखा दिया था। ये बातें उसने उद्वेग, आत्मविश्वास और निश्चय के साथ बतायीं।

लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। "ओहो! वामचो कैसा बहादुर बन गया है!"

बैठक समाप्त होने पर लोस ने वामचो को अपने दफ़्तर में बुलाया और बड़े तपाक से उससे हाथ मिलाया।

"वाह वामचो! तुमने कमाल कर दिया। नयी ज़िंदगी के लिए लड़ने का यही तरीक़ा है। सच्चाई और इन्साफ़ की ज़िंदगी के लिए लड़ने वालों को कम्यूनिस्ट कहते हैं। कहो, तुम कम्यूनिस्ट पार्टी में दाख़िल होना चाहते हो?"

वामचो विचारमग्न हो गया।

"लोस," देर तक रुककर उसने कहा, "तुम जो कहो मैं करूंगा। ज़िंदगी की सच्चाई मैं एक अरसे से, दूर से, देखता आया हूं। अब मैं उसे नज़दीक से देखता हूं। अब मैं यह रास्ता नहीं छोड़ूंगा। अब मेरा एक जिगरी दोस्त भी बन गया है। यह है द्वोरकिन।"

"मैं तुम्हें इस इलाक़े के उत्तरी हिस्से की सभी बस्तियों की क्रांति-समिति का प्रतिनिधि बनाना चाहता हूं। तुम्हें कभी कभी क़बीला सोवियतों का दौरा करना होगा और लोगों को नयी ज़िंदगी का रास्ता बताना होगा। अध्यापक द्वोरकिन तुम्हारी मदद करेगा। समझे वामचो?"

"बहुत अच्छा लोस। मुझे मंज़ूर है। अब मैं सफ़र भी कर सकता हूं क्योंकि अलितेत का बढ़िया कुत्ता-दल अब मेरे पास है।"

शाम के समय वामचो को लिग्रोक मिला। उसने लिग्रोक को अपना पार्टी-कार्ड दिखाया। दोनों व्हेल-नाव की पेंदी पर बैठ गये और लिग्रोक उस लाल किताब का बारीकी से मुआयना करने लगा। वामचो ने उसे बता दिया कि लोस कम्यूनिस्ट है और ख़ुद वह याने वामचो भी कम्यूनिस्ट है।

"क्या कहा, कम्यूनिस्ट?" लिग्रोक ने छोटी सी लाल किताब पर से नज़र न हटाते हुए पूछा।

"कम्यूनिस्ट वह आदमी होता है जो नयी ज़िंदगी का निर्माण करना चाहता है।"

"नयी ज़िंदगी?" लिम्रोक ने संदेह के स्वर में पूछा।

"हां," वामचो ने निश्चयपूर्वक उत्तर दिया।

"तुम गोरा आदमी तो नहीं बन गये जो यह काम करने जा रहे हो? तुम्हारे पास काफ़ी माल, बंदूकें और कारतूस कहां हैं? तुम्हारे पास बहुत सी व्हेल-नावें और मोटरें कहां हैं? लोस के पास यह सब कुछ है। तुमने देखा, रुसाकोव कैसे उसकी हर बात मानता है। बेशक वह नयी ज़िंदगी का निर्माण करे, ज़रूर करे। बस, हमें उसकी राह में रोड़े न अटकाने चाहिए।"

"लिम्रोक, तुमने ठीक कहा। न मेरे पास माल है और न मैं सौदागर ही हूं। लेकिन मैं ज़िंदगी बदल डालने में लोस की मदद करूंगा। तुम तो जानते ही हो कि हमारा किनारा कितना लंबा है।"

"उसकी मदद करोगे?.. तो क्या मैं भी उसकी मदद नहीं कर सकता? मैं तो अध्यक्ष हूं," लिम्रोक ने कठोर स्वर में कहा। उसने वामचो के हाथ से उसका पार्टी-कार्ड ले लिया। "तुम यहीं ठहरो। मैं अभी आता हूं।"

लिम्रोक ने लोस को ढूंढ लिया और उंगली से इशारा करते हुए उसे खाड़ी के किनारे चलने को कहा। लोस उसके पीछे हो लिया।

"लिम्रोक, तुम मुझे कहां ले जा रहे हो?"

"आओ आओ, मैं कुछ ख़बर सुनाना चाहता हूं।"

खाड़ी के किनारे पहुंचते ही लिम्रोक ने ऊपर देखते हुए कहा:

"मेरा ख़्याल है कि तुम सही आदमी हो। तुमने बैठक में मेरी बिदारका की तारीफ़ की थी। तुम समझदार आदमी हो। ज़िंदगी बदल डालने के लिए तुमने सौदागरों को हुक्म दे रखा है कि वे बिदारका के लिए भी मोटरें ले आयें। जिन बिदारका वालों को

मोटरें मिलेंगी वे मेरे पास आ जायें। मैं उन्हें समझा दूंगा कि बिदारका में मोटर किस तरह लगानी चाहिए। बस, ऐसा ही हो जाये। मैं मानता हूं कि ज़िंदगी बदल डालने में मैं भी तुम्हारी मदद करूंगा। असल में ज़िंदगी का बदलना शुरू भी हो गया है।"

लोस पीठ पर हाथ बांधे ग़ौर से बूढ़े की बात सुन रहा था। उसे यह देखकर ख़ुशी हुई कि लिम्रोक के मन में नयी रुचि जागृत हो रही है। इधर बूढ़ा आगे कहता गया:

"क्या तुम समझते हो कि ज़िंदगी में जो हेर-फेर हुआ है वह मुझे दिखाई नहीं देता?.. मैं ज़रूर उसे देखता हूं। यह मेरी आंख अच्छी तरह से देख सकती है। वह सब कुछ देखती है और मेरा हाथ?" लिम्रोक ने अपनी चौड़ी हथेली दिखाते हुए कहा: "यह मज़बूत हाथ है! यह हाथ कई काम जानता है। इसी हाथ से मैंने अपनी बिदारका बनायी है। अगर तख़्ते मिल जायें तो यह हाथ व्हेल-नाव भी बना देगा। वामचो व्हेल-नाव नहीं बना सकता लेकिन मैं बना सकता हूं। जाड़े के एक ही मौसम में मैं व्हेल-नाव बना दूंगा। हां, मैं मोटर नहीं बना सकता लेकिन व्हेल-नाव ज़रूर बना सकता हूं," ज़रा रुककर लिम्रोक ने धीरे से कहा, "क्योंकि मोटर लोहे की होती है।"

"लिम्रोक, मुझे ख़ुशी है कि हम-तुम मिलकर एक नयी ज़िंदगी का निर्माण करेंगे। मैं इस बात से भी ख़ुश हूं कि तुम आर्टेल के अध्यक्ष बन गये हो। यह सब बहुत ही अच्छा है। तो तुमने नये क़ानून को अपनाने का पक्का निश्चय कर लिया न?"

"हां तो," लिम्रोक ने लंबी सांस खींचते हुए कहा। उसने अपना हाथ बढ़ाकर वामचो का पार्टी-कार्ड दिखा दिया और कहा: "तुमने ऐसा कार्ड मुझे क्यों नहीं दिया? वामचो को दे दिया लेकिन मुझे नहीं।"

"लिग्रोक, तुम्हें यह कार्ड कहां से मिला?" लोस ने आश्चर्य से पूछा।

"मैंने वामचो से ले लिया। तुम्हें दिखाने के लिए।"

"ठीक है लिग्रोक, मैं मानता हूं कि जब समय आयेगा तो तुम्हें भी ऐसा कार्ड मिलेगा। तुम चाहते हो?"

"ज़रूर चाहता हूं!"

"साथी लिग्रोक, जानते हो यह कैसा कार्ड है? बैठो, मैं बता दूं।"

दोनों कंकरों पर बैठ गये। लिग्रोक के बटुए से 'पपूशा' निकालकर पाइपों में भर ली। पाइप का कश लगाते हुए लोस ने बताया कि इस तरह के कार्ड वाले आदमी को क्या क्या करना चाहिए।

पार्टी की बैठक के बाद लिग्रोक को सदस्य का कार्ड मिल गया। जाने से पहले उसने कहा:

"कल हम व्हेल का त्योहार मनायेंगे और फिर मैं घर चला जाऊंगा। सही ज़िंदगी के लिए मैं रास्ता बनाऊंगा।"

लिग्रोक सारी शाम कंकरीले तट पर अकेला ही टहलता रहा। हाथ में पार्टी का कार्ड पकड़े वह जीवन के बारे में सोच रहा था। यह कार्ड कहां रखे वह? उसके कपड़ों में एक भी जेब न थी। उसने तंबाकू का बटुआ निकाला, 'पपूशा' में कार्ड रखा और बटुआ पेटी के नीचे खोंसकर बस्ती से दूर चला गया।

दूसरे दिन सबेरे व्हेल-पर्व आरंभ होने वाला था। उस समय सब से ऊंचे पद पर बैठने का सम्मान लिग्रोक को ही प्राप्त हुआ था। उसके पास बूढ़े इल्यीच की जगह थी और उसकी दूसरी बग़ल में बरछैत क्मोई और लोस बैठने वाले थे। और रुसाकोव कहां बैठेगा? शायद इल्यीच के पास। आख़िर उसी ने तो बिदारका की मोटर इतनी कुशलता से चलायी थी। उत्सव में लड़कियां गायेंगी,

नाचेंगी। उस समय व्हेल-नृत्य भी होगा। यह नाच ख़ुद लिम्रोक नाचेगा। उसे छोड़कर और कौन दिखा सकता था कि व्हेल कैसे तैरता है, कैसे अपनी पूंछ फटकारता है? और कोई नहीं। केवल लिम्रोक ही यह जानता है। नाच-गाने के बाद लोग अपनी नावों में व्हेल का मांस भर लेंगे और अपनी अपनी बस्ती के लिए रवाना होंगे। हर जगह के लोग कहेंगे, "यह व्हेल लिम्रोक ने मारा। लिम्रोक बड़ा शिकारी है।"

इस तरह आगामी व्हेल-पर्व के बारे में सोचता हुआ लिम्रोक तट पर टहलता रहा।

एक चट्टान के पास आकर वह उसपर बैठ गया और अपना बटुआ निकाल लिया। चिलम सुलगाने से पहले उसने फिर एक बार लाल किताब पर नज़र गड़ा दी।

"हूंह! देखो तो लिम्रोक इस काग़ज़ पर कैसे चिपका बैठा है!" उसने अपने फ़ोटो की ओर देखते हुए आश्चर्य के स्वर में कहा।

वह देर तक फ़ोटो पर नज़र गड़ाये रहा। उसे मोलोत्सोव की याद हो आयी। उसी ने यह फ़ोटो बनाया था। वह नौजवान असल में व्हेल का फ़ोटो उतारना चाहता था। वह नहीं जानता था कि व्हेल का फ़ोटो नहीं उतारना चाहिए। आख़िर व्हेल आदमी थोड़े ही है। आदमी जो जानता है, व्हेल नहीं जानता। लोस को यह अच्छी तरह मालूम था। वह लिम्रोक से सहमत था कि व्हेल का फ़ोटो नहीं उतारना चाहिए। कैसा समझदार आदमी है यह लोस!

लिम्रोक ने वह लाल किताब एक हाथ की दूरी पर पकड़कर फिर से फ़ोटो पर नज़र दौड़ायी। "ठीक तो है–एक आंख वाला फ़ोटो," रेडियो-आपरेटर के हस्तकौशल की प्रशंसा करते हुए उसने कहा।

दसवां अध्याय

सम्मेलन समाप्त होते ही याराक फ़ौरन लोरेन के लिए रवाना हुआ। उसे जल्दी जल्दी रोवेंदार खालों की पैकिंग करनी थी क्योंकि स्टीमर कुछ ही दिन में लोरेन पहुंच रहा था। स्टीमर के संबंध में यह समाचार रेडियो-आपरेटर मोलोत्सोव ने बता दिया था। वह एक मोटर और छप्पर पर तने हुए तारों के सहारे समझ सकता था कि विशाल संसार में घड़ी घड़ी क्या क्या हो रहा है। यह मोलोत्सोव भी अजीब आदमी था। लोस तक उससे ख़बरें पूछा करता था। आख़िर बिना ख़बरों के आदमी का जीना भी क्या जीना?

बरफ़ पिघल चुकी थी। बरफ़-गाड़ी गीले टुंड्रा में फिसलती जा रही थी। कुत्ते धीरे धीरे आगे बढ़ रहे थे।

गोरे आदमियों के बारे में सोचते हुए याराक ने कुत्तों को टिटकारा। वह अपने को गोरे आदमियों का विशेषज्ञ मानता था। वह बहुभाषी भी था। अब वह केवल चुकची ही नहीं बल्कि अमरीकी और रूसी भाषाएं भी बोल लेता था। फिर भी एक बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी कि ये रूसी और अमेरिकन एक दूसरे से इतने भिन्न क्यों हैं? उनकी चाल-ढाल में और रस्म-रिवाज में फ़र्क़ था और स्थानीय जनता के साथ रूसी लोग उस तरह नहीं पेश आते थे जिस तरह अमेरिकन। यद्यपि ये दोनों गोरे थे फिर भी थे एकदम अलग।

याराक को अपना पूरा जीवन स्मरण हो आया – बचपन में वह जाति बहिष्कृत था, उसे दुष्ट पिशाचों का वाहक माना जाता था। फिर चार्ली लाल-नकुए ने उसे अपने यहां रख लिया। चार्ली ने उसे कारतूसों के दस बक्सों के बदले में सारी गरमियों के लिए एक अमरीकी व्हेल-मार स्टीमर पर हमाली करने के लिए भेज दिया

था। उन दिनों इसमें कोई ग्राश्चर्य नहीं था कि याराक ने स्टीमर पर काम किया ग्रौर चार्ली लाल-नकुए ने किराये के रूप में कारतूस ऐंठ लिये। ग्रब जाकर उसे पता चला कि चार्ली झूठा ग्रादमी था। ग्रौर व्हेल-मार स्टीमरों के वे कप्तान? शिकार के वक़्त वे किनारे पर से कितने लोगों को ले जाते थे! यहां तक कि स्त्रियों ग्रौर लड़कियों को भी ले जाते थे। उधर शिकार चलता था ग्रौर इधर इन स्त्रियों के साथ मज़े में समय कटता था। ग्रमरीकियों को यह तरीक़ा बहुत पसंद था। स्त्रियों ग्रौर लड़कियों को वे ले जाते थे—उनके पतियों या पिताग्रों से पूछे बिना! हां, पूछ भी लेते तो क्या फ़र्क़ पड़ता?

यह सही है कि गोरे लोगों का जीवन ग्रौर रस्म-रिवाज जितना याराक जानता था उतना ग्रौर कोई नहीं। ग्रमेरिकन लोग हुक्म देने में बड़े चुस्त थे। ज़ोरों से इधर से उधर हाथ हिलाते हुए वे शिकारियों पर उसी तरह बरस पड़ते जिस तरह बरफ़-गाड़ी के कुत्तों पर गाड़ीवान।

तटवासी लोगों को व्हेलों को काटने के लिए खाना भर मिल जाता था ग्रौर इसका बंदोबस्त भी ख़ुद वे ही करते थे। "यह है ज़िंदगी!" लोगों ने सोचा। डेक पर वे व्हेल का चाहे जितना मांस खा सकते थे। वहां मांस इतना ज़्यादा रहता था कि उसे ग्रक्सर समुद्र में फेंक देना पड़ता था। ग्रमेरिकनों को व्हेल के मांस ग्रौर चरबी की गंध पसंद नहीं थी। उन्हें टीन के डिब्बों का खाना ही पसंद था। वे शिकार में मारे गये व्हेल की हड्डियां भर ले लेते थे ग्रौर उसके पेट में ग्रंबरग्रिस* नामक पदार्थ ढूंढते थे। ग्रौर ग्रंबरग्रिस

---

*एक सुगंधियुक्त पदार्थ जो व्हेल के पेट में पाया जाता है ग्रौर बढ़िया इत्र बनाने में इस्तेमाल किया जाता है।

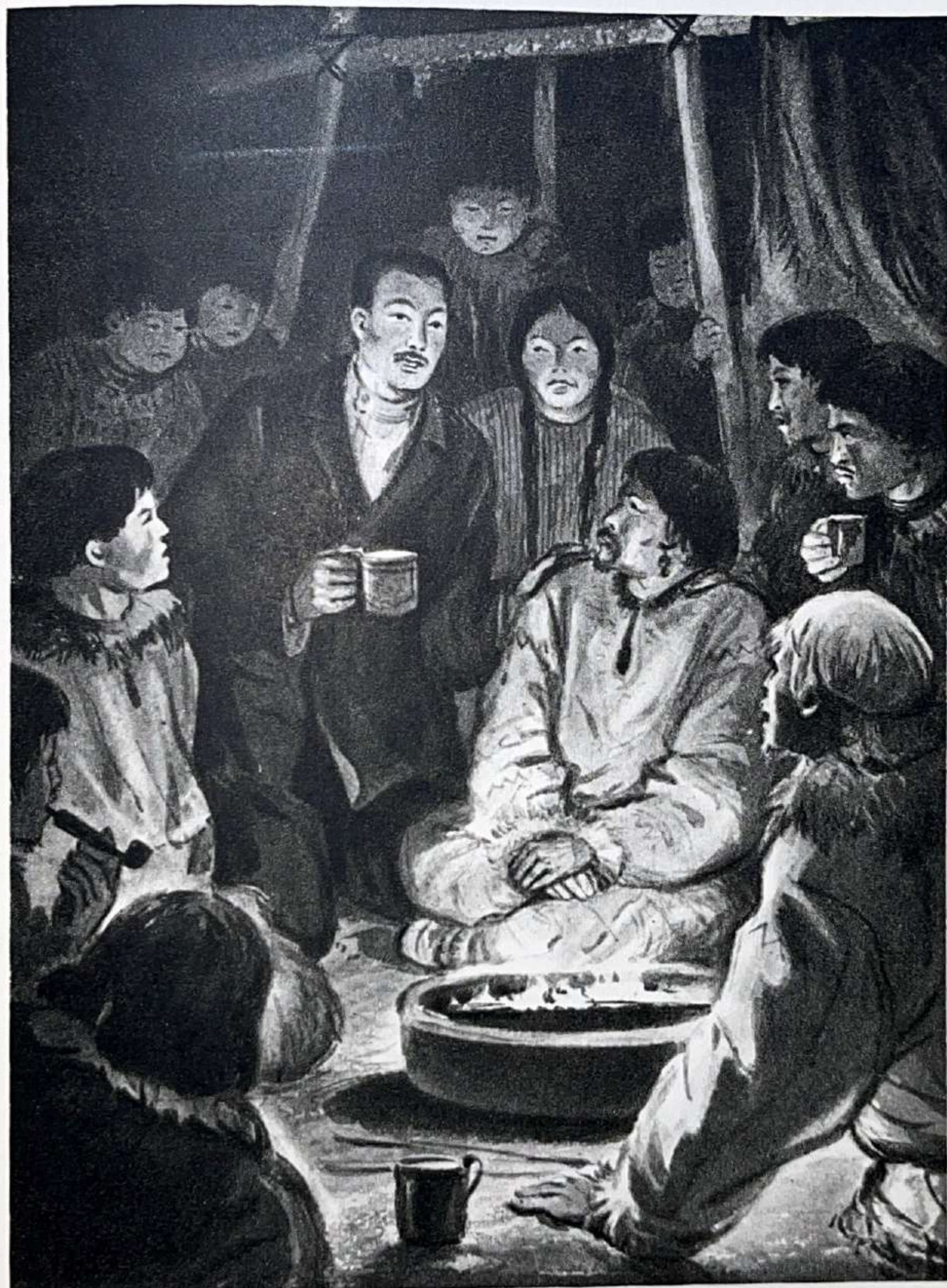
मिलते ही कप्तान सहित सारे जहाज़ी ख़ुशियां मनाते थे। हां, याराक समझता था कि वह इन लोगों का जीवन अच्छी तरह जानता है। लेकिन अब उसे ऐसा महसूस हुआ कि वह अमेरिकनों को तनिक भी नहीं जानता।

याराक मुस्कुराया और उसे याद हो आयी कि किस तरह उसे चार्ली लाल-नकुए ने टांग पकड़कर मेरी से दूर हटा दिया था। वह चुपचाप चार्ली के लोहेदार मकान से बाहर चला गया था। यह थी ज़िंदगी। गोरे लोगों के रस्म-रिवाजों का पालन करना पड़ता था। गोरे आदमी के साथ रहना कोई मज़ाक़ थोड़े ही था! चार्ली के पास माल था और कप्तान उसके दोस्त थे। तट-प्रदेश में चार्ली ख़ुद कभी न घूमा था। बल्कि हर कोई उसके पास आता था। चार्ली लोगों के साथ सिर्फ़ सफ़ेद लोमड़ियों की बात करता था।

इधर रूसियों ने बड़े भाषण के त्योहार में घोषित कर दिया कि सभी इन्सान समान हैं—एस्किमो, चुकची और रूसी। गोरे, काले, पीले सभी इन्सान एक से हैं। यह शायद सही भी था। हूंह... इन नये रस्म-रिवाजों को एकदम समझ लेना आसान नहीं है। ज़रा कोशिश करके देखिये तो सही! यह जोहोव भी तो रूसी है लेकिन है वह अमेरिकन जैसा। कैसा चिल्ला चिल्लाकर बातें करता है।

याराक को लोस द्वारा बताया गया यह गोपनीय समाचार स्मरण हो आया कि जोहोव के स्थान पर कोई नया, योग्य व्यक्ति आ रहा है। याराक को इस बात पर गर्व था कि यह गोप्य केवल उसी को मालूम है। यह सही है कि जोहोव यहां से जाना नहीं चाहता था लेकिन उसे जाना ही था। लोस ही ने ऐसा कह दिया था।

सारे रास्ते में याराक गोरे आदमियों के बारे में सोचता रहा।



पहाड़ी के उतार पर लोरेन बस्ती के यारंग दिखाई देने लगे। याराक ने कुत्तों को टिटकारी दी और व्यापार-केंद्र के मकान की ओर बरफ़-गाड़ी दौड़ायी। वहां जोहोव ने उसकी अगवानी की।

"कहिये प्रतिनिधि जी, क्या हाल है?" उसने व्यंगपूर्वक कहा। "कुछ बताइये तो!"

दोनों कमरे में गये और जोहोव ने मेज़ पर वोदका की एक बोतल रख दी।

"मुझे जलते पानी के साथ तुम्हारी ख़ातिरदारी करनी चाहिए। आख़िर हम-तुम सौदागर जो ठहरे।"

जोहोव की नरमाई देखकर याराक को आश्चर्य हुआ। बोतल का प्रलोभन बहुत बड़ा था लेकिन फिर भी उसने सिर खुजलाते हुए कहा: "नहीं भई, न लेना ही अच्छा होगा... मेरी ग़ुस्सा करेगी। और मुझे उसे एक ख़बर भी बतानी है।"

"तो क्या हुआ, बताओगे," कहते हुए जोहोव ने दो गिलास भर दिये।

याराक ने आह भरते हुए गिलास पर नज़र दौड़ायी और फिर अपनी लाल किताब निकालकर बोला:

"मैं कम्यूनिस्ट पार्टी में शामिल हो गया हूं। यह देखो।"

"कम्यूनिस्ट?" जोहोव ने आश्चर्यचकित होकर पूछा। "लाओ, देखूं तो वह किताब।"

"नहीं, तुम वहीं से देखो।"

"कैसे बुद्धू हो! लाओ, दिखा दो न," जोहोव ने कठोर स्वर में कहा और अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

"नहीं। तुम्हें यह नहीं देखना चाहिए।" यह कहकर याराक ने अपना सदस्य-कार्ड रख दिया।

जोहोव ने अपना गिलास ख़ाली कर लिया और फिर याराक की ओर देखकर उपहास के स्वर में कहा :

"अरे बुद्धूराम, तुम कहां के कम्यूनिस्ट हो? वे लोग तुम्हें उल्लू बना रहे हैं। आख़िर तुम्हें मालूम भी है कम्यूनिज़म है किस चिड़िया का नाम?"

"यह सही है कि मैं इसके बारे में बहुत कम जानता हूं लेकिन लोस कहता है कि मैं बाद में सब कुछ जान जाऊंगा।"

जोहोव कांटे के सहारे एक बोतल में से अचार निकालने की कोशिश कर रहा था।

"जोहोव," याराक ने कहा, "मेरे पास एक ख़बर है। कुछ ही दिन में यहां एक स्टीमर आयेगा। हमें जल्दी जल्दी सब खालें थैलियों में भर देनी चाहिए।"

"हूंह!.. कम्यूनिस्ट!" जोहोव ने अपना सिर हिलाते हुए कहा। "ख़ैर, कहो तो वहां क्या क्या बातें हुईं?"

"मैं अब घर जाऊंगा। ज़रा बच्चे को देखूंगा और फिर जल्दी जल्दी खालों की पैकिंग का बंदोबस्त करूंगा।"

याराक अपने कमरे में गया। एक खटिया पर उसका बच्चा सोया हुआ था। याराक ने मुस्कराते हुए, झुककर, अन्द्रेई के गाल को उंगली से स्पर्श किया। बच्चे ने आंखें खोलीं।

"तुम तो भई चार्ली की तरह बिस्तर में पड़े हुए हो। मेरे मुन्ने, कैसी गोल गोल आंखें हैं तुम्हारी!" याराक ने कहा।

बच्चे ने गाल फुलाये और रोने लगा।

"अरे, रोने भी लगे? कहो, बात क्या है? ज़रा इधर देखो तो।" याराक ने अपना लाल पार्टी-कार्ड निकालकर अन्द्रेई की नाक के आगे हिलाया। "देखा तुमने, हमारे पास कैसी किताब है? कैसी बढ़िया किताब? सुनो, यह किताब पाने पर रोना नहीं चाहिए।"

यारा‍क को खिड़की में से मेरी जल्दी जल्दी घर आती हुई दिखाई दी। वह डाक्टरी चोग़ा पहने थी। उसके रूमाल पर रेड क्रॉस का चिह्न था। रूलतिना धीरे धीरे उसके पीछे आ रही थी।

याराक कपड़ों की अलमारी में छिप गया और किवाड़ बंद कर लिया।

मेरी कमरे में आ पहुंची और अपने बच्चे की ओर दौड़ी। उसने बच्चे को गोद में उठा लिया और हवा में ऊंचा उठाकर बोली :

"बाबू कहां है तुम्हारा?"

रूलतिना ने अंदर आकर साश्चर्य कहा :

"दरवाज़े के पास कुत्ते लेटे हुए हैं लेकिन याराक कहीं दिखाई नहीं देता। कहां है वह?"

अलमारी का किवाड़ खुल गया और याराक ज़ोरों से हंसता हुआ कमरे के बीच आ खड़ा हुआ।

फिर तीनों हंसते हंसते लोटपोट हो गये।

वे मेज़ के पास बैठ गये और याराक ने बड़े भाषण के त्योहार की ख़बर सुनायी।

"जल्द ही यहां एक स्टीमर आयेगा। मुझे जल्दी जल्दी खालों की पैकिंग करनी चाहिए।"

"लोस कितना मालदार है! उसके पास कितनी खालें हैं!" रूलतिना बोल उठी।

"मैं ठीक ठीक नहीं जानता कि ये खालें किसकी हैं," याराक ने सोचते हुए कहा। "यह समझना इतना आसान नहीं है। बड़े भाषण के त्योहार में लोगों ने कहा कि खालों का मालिक है राज्य।"

"राज्य क्या होता है? गोरा आदमी तो नहीं?" रूलतिना ने पूछा।

"नहीं। राज्य के मानी है लोग। तुम, मैं, मेरी, डाक्टर, मास्टर, लोस और हर कोई। बहुत, बहुत लोग! बस, खालों के मालिक वही हैं। और सच कहूं तो यह बात समझ लेना बड़ा मुश्किल है। कुछ भी हो, खालों का मालिक अकेला लोस नहीं है।"

रूलतिना और मेरी अवाक् होकर याराक की ओर देखती रहीं।

याराक अपने साथ रूलतिना को फ़र गोदाम में ले गया, दो लड़कों को बुलाया और वे सफ़ेद तथा लाल लोमड़ियों की खालें थैलियों में भरकर पैकिंग करने लगे। एक एक थैली में वे पचास पचास खालें भरते गये और जोहोव थैलियों को लोहे की मुहरें लगाकर बंद करता गया।

ग्यारहवां अध्याय

सुनहला धुपहला दिन था। निरभ्र नील नभोमंडल की छवि शांत सागर के दर्पण में प्रतिबिंबित थी। अभी तक क्षितिज पर कोई स्टीमर नहीं दिखाई दे रहा था लेकिन फिर भी सारी लोरेन बस्ती पर एक मस्ती सी सवार थी। समुद्र में दूरी पर जब कभी धूम्र-रेखा दिखाई देती है, उत्तरी प्रदेश के निवासी फूले नहीं समाते। बच्चे ख़ुशी से उत्तेजित होकर चिल्ला उठे:

"स्टीमर! स्टीमर!"

स्टीमर ने आकर यथा-स्थान लंगर डाला। सारी भीड़ हड़बड़ाती और ख़ुशी से हंसती-चिल्लाती हुई मोटर वाली व्हेल-नाव की ओर दौड़ पड़ी। इसी समय स्टीमर से एक मोटर-बोट आगे बढ़ा। मोटर की आवाज़ से सारा वातावरण गूंज उठा और मोटर-बोट किनारे की ओर दौड़ने लगा। व्हेल-नाव को पानी में उतारना धरा ही रह गया। यकायक मोटर-बोट से आये की ख़ुशी भरी आवाज़ सुनाई दी।

"या-रा-क!.. देखो, मैं हूं!.. मैं वापस आ गया!"

वह मोटर-बोट के नियंत्रक पहिये के पास खड़ा था और बड़े गर्व से सिर ऊंचा किये बोट को किनारे की ओर ला रहा था। किनारे पर खड़े लोगों को पहले तो पता ही न लगा कि बोट को चलाने वाला कोई और नहीं बल्कि आये है। कोई ऐसा सोच भी कैसे सकता था!

बोट का वेग कम होता गया और किनारे के पास वह रुक गया। आये बोट के अगले हिस्से की ओर दौड़ा और अपने हाथ हिलाते हुए किनारे पर कूद पड़ा।

"काकोमेई आये!" हर कोई चिल्ला उठा।

आये गद्‌गद हो उठा। उसके मुंह से कोई शब्द न निकला।

वह सिर्फ़ मुस्कराया और अपने ऊंचे रबड़ बूटों पर नज़र दौड़ाने लगा।

अन्द्रेई जुकोव के साथ लोस की पत्नी नतालिया सेम्योनोव्ना भी आयी थी।

"ओ हो!" डाक्टर ने ख़ुशी से कहा। "लोस को कितनी ख़ुशी होगी!"

जुकोव ने आगंतुकों का परिचय करा दिया:

"यह है साथी बोदुनोव – सांस्कृतिक सेवा केंद्र का निर्माण निरीक्षक। हम यहां बारह बड़े बड़े मकान बनाने जा रहे हैं!" उसने बड़ी ख़ुशी से कहा। "और यह है फ़र व्यापार-केंद्र का नया व्यवस्थापक साथी स्मेलोव..."

नवागंतुकों ने हाथ मिलाये और अभिवादनों का आदान-प्रदान हुआ।

इसी बीच आये की वाक्‌शक्ति जैसे लौट आयी। उसने याराक की पीठ पर एक धौल जमायी और फिर हंसते हुए बोल उठा:

"देखा याराक तुमने? मैं महाद्वीप में न भूला, न भटका। तुम्हें याद है हम टुंड्रा में महाद्वीप के बारे में कैसी बातें करते थे?"

"मैंने तो कह दिया था न कि सब कुछ ठीक हो जायेगा ?"

आये ने याराक की जाकेट का किनारा पकड़ा और बड़ी शान से नये शब्दों का प्रयोग करते हुए कहा :

"अरे, तुम्हारा सूट तो व्लादिवोस्तोक के किसी जहाज़ी चौकीदार जितना बढ़िया है। ख़ैर, कहो क्या हालचाल है ?"

"मैं उधर उस मकान में मेरी के साथ रहता हूं। फ़र का काम करता हूं। हमारे एक बच्चा भी है।"

"ओहो ! बच्चा ? वाह भई, ख़ूब !" आये ने ख़ुशी से कहा। "मैं इधर काफ़ी घूमता फिरता रहा। अन्द्रेई और मैं, दोनों बस हवा की तरह घूम रहे थे। हमने गरम समुंदर का सफ़र किया। फिर हम व्लादिवोस्तोक लौट आये और मैंने मोटर-बोट चलाना सीख लिया। अब मैं कप्तान हूं कप्तान !" आये ने सगर्व कहा। "और यह है मेरा दोस्त स्मेलोव," उसने एक लंबे और गंभीर तथा विचारपूर्ण मुद्रा वाले व्यक्ति की ओर संकेत करते हुए कहा।

आये ने स्मेलोव को उसके चमड़ेदार कोट की आस्तीन पकड़कर खींचा। इसके द्वारा उसने यह दिखाया कि दोनों की कैसी गहरी दोस्ती है। फिर उसने कहा :

"देखो स्मेलोव, यह है मेरा दोस्त याराक। वह व्यापार-केंद्र में फ़र का काम करता है।"

"ओह, याराक ! बड़ी ख़ुशी हुई तुमसे मिलकर," स्मेलोव ने मैत्रीपूर्ण मुस्कुराहट के साथ कहा।

"तो क्या जोहोव चला जायेगा ?" याराक ने छद्मी मुस्कराहट के साथ पूछा।

"हां, वह चला जायेगा। अब हम एक साथ काम करेंगे।"

"बहुत अच्छा ! क्या तुम कम्यूनिस्ट हो ?" याराक ने पूछा।

प्रफुल्ल और काली आंखों वाले इस नवयुवक के इस अप्रत्याशित प्रश्न से स्मेलोव अवाक् हो उठा। इन जंगली इलाक़ों में इस प्रकार का प्रश्न सचमुच बड़ा ही विचित्र था।

"हां, मैं कम्यूनिस्ट हूं," उसने उत्तर दिया।

"मैं भी कम्यूनिस्ट हूं। यह देखो मेरी किताब!" याराक ने सगर्व कहा।

आये ईर्ष्या के स्वर में बोल उठा:

"मेरे पास ऐसी किताब नहीं है। लेकिन इससे क्या हुआ? मैं कप्तान तो हूं। बोलो याराक, मेरे मोटर-बोट पर घूमने चलोगे! चलो, दूसरों को भी आने दो! समझे?" उसने अपने पुराने दोस्त से पूछा।

दोनों बोट की ओर चले गये। आये ने ज़ोर से पुकारकर हर किसी को बोट के सफ़र के लिए बुलाया।

लोग एक दूसरे की ओर देखने लगे। वे निश्चय न कर पाये कि जायें या न जायें?

"आओ, चढ़ो मोटर-बोट पर! हर कोई आओ!" आये ने चिल्ला चिल्लाकर कहा।

सब से पहले बच्चे दौड़ पड़े। फिर आये की ओर, कुछ सशंक दृष्टि से देखते हुए, शिकारी भी बोट पर चढ़ गये।

"मीशा, शुरू करो!" जहाज़ के डेक पर बनी हुई केबिन की खिड़की में से झांककर आये पुकार उठा।

आये ने नियंत्रक पहिये पर हाथ रखा और पूरी रफ़्तार के साथ मोटर-बोट स्टीमर की ओर दौड़ाने लगा। इस समय उसके चेहरे पर विजय का भाव प्रतिबिंबित हो रहा था।

"काकोमेई आये! कप्तान आये!" सारे लोग हर्षातिरेक से चिल्ला उठे। इतना बड़ा लोहेदार जहाज़ चलाने में उसकी कुशलता देखकर वे दंग रह गये।

मोटर-बोट जब स्टीमर के पास पहुंचा तो आये ने बड़ी कसरत से हैंडिल घुमाया। केबिन से टनटनाहट सुनाई दी और जहाज़ कुछ पीछे आकर रुक गया।

"आइये, अब स्टीमर देख लीजिये," उसने लोगों से कहा।

यद्यपि स्टीमर पर जाना बड़ी ख़ुशी की बात थी फिर भी कोई आगे न आया। कोई भी वहां से हटना न चाहता था। आये जिस जहाज़ को चला रहा था उसी को वे बड़े कुतूहल से देख रहे थे।

आये को यह देखकर ख़ुशी हुई कि उसके जमात वाले उसका जहाज़ छोड़कर जाने को तैयार नहीं हैं। और असल में वह उन्हें जहाज़ पर ले आया था इसी लिए कि वे उसका महान कौशल देख लें।

उसने हत्थे को झटका दिया, फिर टुनटुनाहट सुनाई दी और मोटर शुरू हुई। उसने अपने जहाज़ को स्टीमर की परिक्रमा करायी। फिर वापस किनारे की ओर जहाज़ घुमाया।

"आये, ये लोग जल्दी माल उतारना शुरू करेंगे न?" याराक ने पूछा।

"हम बारह मकान और दस व्हेल-नावें ले आये हैं। दूसरा एक जहाज़ और माल ले आयेगा।"

आये बोल रहा था और इतनी कसरत से पहिया चला रहा था मानो ऐसे कुत्तों की बरफ़-गाड़ी हांक रहा हो जो अपने मालिक की मंज़िल जानते हों।

हर कोई चकित हो उठा। आये सभी कुछ तो जानता था! उसे यह भी मालूम था कि स्टीमर पर क्या क्या माल है। यह रहा आये – बिना बीवी वाला रेवड़ चरवाहा! बात सचमुच ही आश्चर्यजनक थी!

अन्द्रेई किनारे पर खड़ा था और काफ़ी मुसाफ़िरों के साथ आने वाले मोटर-बोट की ओर देखते हुए मुस्करा रहा था। उसने पहचान

लिया कि श्राये जहाज़ चलाने की अपनी कुशलता से क़बीला वालों पर रोब डालना चाहता है।

"श्राये, अब तुम्हें नतालिया सेम्योनोव्ना को लेकर सदर-मुकाम के लिए रवाना होना चाहिए," जहाज़ रुकने पर अन्द्रेई ने कहा। "वह आज ही वहां पहुंचना चाहती है।"

"मैं तैयार हूं," श्राये ने उत्साहपूर्वक कहा।

सारे किनारे से होकर ख़ुद जहाज़ ले जाना कितने गौरव की बात थी – हर किसी की ज़बान पर यही बात सुनाई देती!

"श्राये, हम जल्द ही लंगर उठायेंगे और लावरेंती खाड़ी के लिए रवाना होंगे। तुम अपने जहाज़ पर वहां आश्रो। हां, देर न लगाना। और सुनो, हर बस्ती से जितने मिलें उतने आदमी ले आना। इससे स्टीमर पर से माल जल्दी जल्दी उतार सकेंगे। समझे?" अन्द्रेई ने मुस्कराते हुए पूछा।

"साथी जुकोव, बात बिल्कुल साफ़ है," श्राये ने ख़ुशी से आंख मारते हुए रूसी में जवाब दिया।

श्राये केवल क्रांति-समिति के सदर-मुकाम तक ही नहीं बल्कि एनमकाई बस्ती तक भी बड़ी ख़ुशी से जहाज़ ले जाता। तब क्या तीग्रेना चकित न हो उठेगी! तीग्रेना की याद आते ही उसने एक आह भरी।

बारहवां अध्याय

कंकरीली रेतीली ज़मीन के एक टुकड़े पर सांस्कृतिक सेवा केन्द्र का निर्माण आरंभ हुआ। यह ज़मीन बारहमासी पौधों से ढकी थी। वहां जंगली बत्तख़ों ने अपना डेरा डाल रखा था।

इमारती लकड़ी लाने वाले स्टीमर अपना माल उतारकर चला गया था। मकान बनाने वाले लोगों का दल जाड़ों के लिए वहीं रहा।

ये लोग तंबुओं में और औंधी नावों के सहारे रहने लगे। सब से पहले छात्रालय सहित स्कूल की और बीस बिस्तर वाले अस्पताल की इमारतें बनने वाली थीं।

गुसलख़ाना निश्चित समय के बहुत ही पहले बनकर तैयार हो गया। शरद् की बरसात में भीगे हुए मकान-कामगार इस ग़ुसलख़ाने में जाकर गरम पानी से स्नान करते और शरीर में गरमाहट लाते। इसके बाद वे अपने तंबुओं में जाकर फ़रदार थैलानुमा बिस्तर में, घुसकर सो जाते।

कुछ ही समय में निर्माण स्थल पर दो बड़े बड़े मकानों की नींवें रख दी गयीं।

तट-प्रदेश में और टुंड्रा में दूर दूर तक तरह तरह की ख़बरें फैल गयीं। ओझाओं ने यह बताना शुरू किया कि ये रूसी हमारे बच्चों को बड़े बड़े मकानों के पिंजड़ों में बंद कर देंगे और फिर उन्हें जहाज़ों में बैठाकर जाने कहां ले जायेंगे।

आसपास के बारहसिंगा-पालकों ने अपने सदियों पुराने चरागाह छोड़कर टुंड्रा की गहराइयों का सहारा लिया। टुंड्रा में लोग कहने लगे कि चरवाहा आये अब मशीन वाला बन गया है, उसकी अक़्ल चरने गयी है और अब वह सच्चा शिकारी नहीं रहा है।

लेकिन तट-प्रदेश की बस्तियों वाले समुद्री शिकारियों के बीच आये की इज़्ज़त बहुत ही बढ़ गयी। वह अक्सर अपने जहाज़ पर तट-प्रदेश की सैर करता था और निर्माण कार्य के लिए लोगों की भर्ती कर लेता था। ख़ुद लोस ने भी नहीं सोचा था कि आये द्वारा चलाये जाने वाले मोटर-बोट के कारण इतनी खलबली मचेगी और यह जहाज़ नवजीवन के पक्ष में एक बलशाली आंदोलक सिद्ध होगा।

वालरसों के शिकार का मौसम ख़त्म हो चुका था। इसी लिए लोग बड़ी ख़ुशी से निर्माण स्थलों पर काम करने के लिए तैयार थे।

ये लोग तंबुओं में और औंधी नावों के सहारे रहने लगे। सब से पहले छात्रालय सहित स्कूल की और बीस बिस्तर वाले अस्पताल की इमारतें बनने वाली थीं।

गुसलखाना निश्चित समय के बहुत ही पहले बनकर तैयार हो गया। शरद् की बरसात में भीगे हुए मकान-कामगार इस ग़ुसलख़ाने में जाकर गरम पानी से स्नान करते और शरीर में गरमाहट लाते। इसके बाद वे अपने तंबुओं में जाकर फ़रदार थैलानुमा बिस्तर में, घुसकर सो जाते।

कुछ ही समय में निर्माण स्थल पर दो बड़े बड़े मकानों की नीवें रख दी गयीं।

तट-प्रदेश में और टुंड्रा में दूर दूर तक तरह तरह की ख़बरें फैल गयीं। ओझाओं ने यह बताना शुरू किया कि ये रूसी हमारे बच्चों को बड़े बड़े मकानों के पिंजड़ों में बंद कर देंगे और फिर उन्हें जहाज़ों में बैठाकर जाने कहां ले जायेंगे।

आसपास के बारहसिंगा-पालकों ने अपने सदियों पुराने चरागाह छोड़कर टुंड्रा की गहराइयों का सहारा लिया। टुंड्रा में लोग कहने लगे कि चरवाहा आये अब मशीन वाला बन गया है, उसकी अक़्ल चरने गयी है और अब वह सच्चा शिकारी नहीं रहा है।

लेकिन तट-प्रदेश की बस्तियों वाले समुद्री शिकारियों के बीच आये की इज़्ज़त बहुत ही बढ़ गयी। वह अक्सर अपने जहाज़ पर तट-प्रदेश की सैर करता था और निर्माण कार्य के लिए लोगों की भर्ती कर लेता था। ख़ुद लोस ने भी नहीं सोचा था कि आये द्वारा चलाये जाने वाले मोटर-बोट के कारण इतनी खलबली मचेगी और यह जहाज़ नवजीवन के पक्ष में एक बलशाली आंदोलक सिद्ध होगा।

वालरसों के शिकार का मौसम ख़त्म हो चुका था। इसी लिए लोग बड़ी ख़ुशी से निर्माण स्थलों पर काम करने के लिए तैयार थे।

उन्हें विश्वस्त रूप से पता चला था कि इस काम के लिए रूबल के काग़ज़ दिये जाते हैं। उनके लिए बड़े आश्चर्य की बात थी कि सभी व्यापार-केंद्रों पर ये काग़ज़ स्वीकार किये जाते थे मानो वे लोमड़ियों की खालें ही हों। इनके बदले में चीनी, तंबाकू और बंदूक़ें तक मिल सकती थीं। रूबल के इन काग़ज़ों का उस प्रदेश में सर्वत्र प्रवेश हो गया। ये लोमड़ियों की खालों से भी ताक़तवर बन गये। इसी लिए लोग पैदल या बरफ़-गाड़ियों पर आ आकर निर्माण के काम में भर्ती होने लगे। ओह! अमेरिकन व्हेलमार जहाज़ों पर केवल खाने भर के लिए जी तोड़ मेहनत करने से यह तरीक़ा कितना निराला था!

जाड़ों का आगमन हुआ। अक्तूबर क्रांति की वर्षगांठ की पूर्व संध्या को भवन-निर्माता स्कूल के मकान में रहने गये। अब इस मकान की छत भी बनकर तैयार थी।

आये अपनी बरफ़-गाड़ी को सरपट दौड़ाता हुआ तट-प्रदेश की बस्तियों में गया और वहां के लोगों को बड़े त्योहार के लिए आमंत्रित किया।

जिस भी यारंग में वह चला जाता वहां आसपास के बाशिंदों की भीड़ इकट्ठा होती और आये चाय की चुस्कियां लेता हुआ बोलने लगता :

"यह त्योहार लेनिन ने शुरू किया है। मैंने महाद्वीप पर अपनी आंखों से देखा है कि लोग यह त्योहार कितनी ख़ुशी से मनाते हैं। वे अपने हाथों में लाल झंडे लिये चलते हैं। जानते हो मैंने उस वक़्त कितने लोग देखे थे? चट्टानों पर इकट्ठा होने वाले पंछियों के झुंडों से भी ज़्यादा। उनके चेहरों पर ऐसी ख़ुशी चमक रही थी मानो लंबे जाड़ों के बाद वे पहली बार सूरज के दर्शन कर रहे हों। अब आप लोग ख़ुद देख ही रहे हैं। मोटर वाली व्हेल-नावें आ पहुंची हैं और आप जानते ही हैं कि शिकार के लिए ये कितनी अच्छी हैं। अब हम

भी रूसी त्योहार मनायेंगे!" कुछ क्षण विचारमग्न होकर आये न गंभीरता से कहा, "यह हमारी सच्ची ज़िंदगी का त्योहार है।"

आये एक जाकेट पहने बैठा था। इस जाकेट के नीचे से उसकी चमकदार क़मीज़ दिखाई दे रही थी। उसके घने काले बाल रूसी ढंग से कटे हुए थे और सीधे खड़े थे। उसने बता दिया कि महाद्वीप पर लोगों ने उसकी कैसी आवभगत की और कैसे सभी रूसी उसके लिए कुछ न कुछ करने के लिए उत्सुक थे।

लोग शांतिपूर्वक सुन रहे थे। आये ने महाद्वीप पर देखी गयी हर चीज़ का बड़ी तफ़सील के साथ बयान किया। उसने विशाल चट्टानों जैसे बड़े बड़े मकानों, बस्तियों के बड़े बड़े लैंपों, लोहे के बने हुए रास्तों पर बिजली की सी आवाज़ करती हुई और कुत्ता-दल से दुगुनी रफ़्तार के साथ दौड़ने वाली लोहेदार बरफ़-गाड़ियों जैसी कई बातों का वर्णन किया।

शिकारी, स्त्रियां और बच्चे दंग होकर चुपचाप सुनते रहे। यह आये अब पहले वाला आये नहीं रहा था। क्या यह आये मशीन वाला बनकर अक़्ल का दुश्मन नहीं हो गया था? जाने उस आये का क्या हुआ जो एक चरवाहा और बिना बीवी वाला शिकारी था! लेकिन कुछ भी हो वह एक अच्छा किस्सागो तो ज़रूर था।

ढिबरी के पास एक बूढ़ा लेटा हुआ था। वह एक चिलम पकड़े था जो बुझ चुकी थी। वह बड़े ग़ौर से आये की बातें सुन रहा था।

आये की कहानी ख़त्म होते ही बूढ़ा उठ बैठा और बोल उठा:

"भाइयो, ज़रा इसकी ओर ग़ौर से देखो। यह अब इन्सान जैसा लगता ही नहीं। उसके बाल हमारे लोगों जैसे नहीं रहे। वह उसके ललाट पर नहीं लटकते बल्कि हवा में खड़े से रहते हैं। क्या ऐसे बालों वाला कभी सच्चा शिकारी हो सकता है? देखिये, इसका चेहरा भी आधा सफ़ेद हो गया है। अब वह आधा ही हमारे जैसा

रह गया है। हां, फिर भी एक बार ख़बर उड़ी थी कि आये रुपहली लोमड़ियां भी फंसाता है। यह भी कहा जाता था कि वह अच्छा निशानेबाज़ है। लेकिन मैं मानता हूं कि अब वह नज़दीक के सील का भी निशाना चूक जायेगा। उसकी बातें सुनना हमारे लिए वाजिब नहीं है। उसके बदन पर बारहसिंगे की खाल नहीं है बल्कि वह तांगों के कपड़े पहने हुए है। ऐसा आदमी हम पर कहर ढहा देगा!" बात पूरी करते समय बूढ़े की आवाज़ कांप रही थी।

आये बूढ़े की बात सुन रहा था और उत्तेजित हो रहा था। शिकारी एक दूसरे की ओर देख रहे थे।

"बूढ़े आदमी," उसने बड़े प्रयत्न से अपने को संभालते हुए कहा, "मेरे बाल दूसरे ही तरीक़े से संवरे हुए हैं इससे मैं निशानेबाज़ी थोड़े ही भूल गया हूं?"

"ठीक है दोस्तो, उसके लिए हम एक निशाना तय कर लें और फिर देखें, वह हमारा रहा है कि नहीं? बस, वह बारहसिंगे के सींग का ऊपर वाला सिरा उड़ा दे," बूढ़े ने कहा।

शिकारी जल्दी जल्दी रेंगकर पोलोग के बाहर आ गये। एक लड़का बारहसिंगे के दो शाखदार सींग लिये बूढ़े की ओर दौड़ा।

बूढ़े ने बारीकी से सींगों की जांच-पड़ताल की और फिर धीरे से अपना छुरा निकालकर सींग की एक छोटी सी शाख के बिल्कुल सिरे पर निशान लगा दिया।

"बस, वह यह निशाना मार दे," बूढ़े ने बताया।

"बहुत अच्छा," आये ने कहा।

उसे विंचेस्टर बंदूक़ दी गयी। जो लड़का सींग लाया था उसने सींग बरफ़ में खड़ा कर दिया।

"पीछे रखो, और पीछे! सींग का सिरा अभी मुझे साफ़ दिखाई दे रहा है!" आये बोल उठा।

शिकारियों ने अचरज से एक दूसरे की ओर देखा। "यह पागल तो नहीं हो गया? इतनी दूरी पर से तो सील की आंख का भी निशाना मारना मुश्किल है!"

शिकारियों को आये पर तरस आया। बूढ़े को भी ऐसा लगा कि आये पर तरस खाना चाहिए लेकिन आये विंचेस्टर हाथ में लिये शांति से बरफ़ पर बैठ गया और पूछने लगा:

"यह बंदूक़ पुरानी तो नहीं है?"

"पारसाल के जाड़ों में ही खरीदी है," बूढ़े ने उत्तर दिया।

"अनजानी बंदूक़ से काम लेना ज़रा मुश्किल होता है," निशाना साधते हुए आये ने कहा।

उभरे हुए घुटनों पर उसने अपनी कोहनियां टिकायीं और बड़े ध्यान से निशाना साधा। फिर उसने यकायक बन्दूक़ की मक्खी अपनी आंखों के पास थाम ली और बड़े ग़ौर से देखने लगा।

"इस बंदूक़ से निशाना बिल्कुल ठीक लगता है," विंचेस्टर के मालिक ने कहा। "निशाने साधने की अमरीकी मक्खी हटाकर मैंने खुद अपनी मक्खी लगा दी है। अब बंदूक़ से बिल्कुल सही निशाना लगता है।"

आये ने फिर निशाना साधा। इसपर उसने काफ़ी देर लगायी। लोग उसकी ओर बड़ी अधीरता से देख रहे थे। इधर आये को घबड़ाहट हो रही थी। उसने घुटनों पर से बंदूक़ उठायी और फिर निशाना लगाया। बात बड़ी मुश्किल थी! आखिर उसने गोली चला ही दी।

लोग सींग के पास दौड़े।

"चूक गया!" वे चिल्ला उठे।

आये बरफ़ पर बैठकर सिर खुजलाने लगा।

"आये, तुम चूक गये। बूढ़े का कहना सही था," एक अधेड़ उम्र वाले शिकारी ने कहा।

शिकारियों ने अचरज से एक दूसरे की ओर देखा। "यह पागल तो नहीं हो गया? इतनी दूरी पर से तो सील की आंख का भी निशाना मारना मुश्किल है!"

शिकारियों को आये पर तरस आया। बूढ़े को भी ऐसा लगा कि आये पर तरस खाना चाहिए लेकिन आये विंचेस्टर हाथ में लिये शांति से बरफ़ पर बैठ गया और पूछने लगा:

"यह बंदूक़ पुरानी तो नहीं है?"

"पारसाल के जाड़ों में ही ख़रीदी है," बूढ़े ने उत्तर दिया।

"अनजानी बंदूक़ से काम लेना ज़रा मुश्किल होता है," निशाना साधते हुए आये ने कहा।

उभरे हुए घुटनों पर उसने अपनी कोहनियां टिकायीं और बड़े ध्यान से निशाना साधा। फिर उसने यकायक बन्दूक़ की मक्खी अपनी आंखों के पास थाम ली और बड़े ग़ौर से देखने लगा।

"इस बंदूक़ से निशाना बिल्कुल ठीक लगता है," विंचेस्टर के मालिक ने कहा। "निशाने साधने की अमरीकी मक्खी हटाकर मैंने ख़ुद अपनी मक्खी लगा दी है। अब बंदूक़ से बिल्कुल सही निशाना लगता है।"

आये ने फिर निशाना साधा। इसपर उसने काफ़ी देर लगायी। लोग उसकी ओर बड़ी अधीरता से देख रहे थे। इधर आये को घबड़ाहट हो रही थी। उसने घुटनों पर से बंदूक़ उठायी और फिर निशाना लगाया। बात बड़ी मुश्किल थी! आख़िर उसने गोली चला ही दी।

लोग सींग के पास दौड़े।

"चूक गया!" वे चिल्ला उठे।

आये बरफ़ पर बैठकर सिर खुजलाने लगा।

"आये, तुम चूक गये। बूढ़े का कहना सही था," एक अधेड़ उम्र वाले शिकारी ने कहा।

ग्राये उछलकर खड़ा हो गया ग्रौर कुछ शेख़ी के साथ बोला :

"यह बंदूक़ तुम्हारी है। उसके मालिक तुम हो। तो फिर तुम्हीं सींग का सिरा उड़ाने की कोशिश करके देखो न।"

बंदूक़ का मालिक बरफ़ पर बैठा, उसने निशाना साधा ग्रौर गोली चला दी लेकिन इस समय भी गोली बेकार गयी।

ग्राये के लिए इस परीक्षा की व्यवस्था करने वाले बूढ़े ने गंभीरतापूर्वक कहा :

"ग्राये शायद गोरे ग्रादमियों से शेख़ी बघारना सीख गया है। चलो, जहां मैं बताता हूं वहीं सींग रख दो।"

सींग कुछ नज़दीक लाया गया।

ग्राये ने फिर निशान लगाया। गोली चली ग्रौर फिर एक बार भीड़ निशाने की ग्रोर दौड़ी। सिर्फ़ ग्राये ग्रौर बूढ़ा ग्रपनी ग्रपनी जगह पर रह गये।

"सही! एक दम सही!" शिकारी ख़ुशी से चिल्ला उठे।

ग्राये उछल पड़ा। उसने संतोष की सांस ली।

सींग बूढ़े के पास लाया गया। गोली से खरोंची हुई जगह टटोलकर उसने कहा :

"ग्रब मैं मानता हूं कि तुम हमारे मुल्क के सच्चे ग्रादमी हो। लगता है हमें रूसियों का यह त्योहार देखना चाहिए।"

"यह बहुत ग्रच्छा त्योहार है," ग्राये बोला। "इसमें कुत्ता-गाड़ियों की दौड़ होगी, बंदूक़ चलाने ग्रौर दौड़ने की होड़ होगी, कुश्ती के मुक़ाबले होंगे। हर बात पर पुरस्कार दिया जायेगा। चलिये, ग्रपने कुत्तों को तैयार कर लीजिये। सब से ग्रच्छे गाड़ीवान को बंदूक़ मिलेगी।"

"ग्रोह! कहीं मजाक़ तो नहीं कर रहे हो?" बूढ़े ने शंकित होकर पूछा।

"नहीं, मैं सच कह रहा हूं। खुद आकर देख लीजिये न!"

फिर क्या था! हर कोई नयी ज़िन्दगी के त्योहार की तैयारी में जुट गया।

तेरहवां अध्याय

एनमकाई बस्ती में एक बहुत ही असाधारण प्रथा शुरू हुई। स्त्रियों ने जानवरों को फंसाने का पेशा अपना लिया। क्या यह स्त्री का काम है कि वह कुत्ता-गाड़ी में बैठकर टुंड्रा का चक्कर काटे, शिकार के लिए चारा रख दे और फंदे लगाकर हर रोज़ उनकी जांच-पड़ताल करती रहे? कुछ भी हो अध्यापक द्वोरकिन ने यही सब शुरू कराया था।

बस्ती के लोग उसपर विश्वास करते थे। उनके यारंगों में अब ज़िंदगी की खुशी छायी हुई थी। नयी ज़िन्दगी ने वहां ज़ोर पकड़ लिया था।

खुद स्त्रियों ने जब पहली बार अध्यापक से यह सुना कि वे भी जानवरों को फंसाना शुरू करें तो वे हंस पड़ीं।

"तुम लोग शुरू तो करो। बाद में हम अच्छे कुत्तों की परवरिश करेंगे और फिर हर एक के पास अच्छा कुत्ता-दल होगा," अध्यापक ने आग्रहपूर्वक कहा।

सभी स्त्रियां अध्यापक को प्यार करने लगीं और उसे बुरा न लगे इसी लिए उन्होंने यह काम करने का भी निश्चय किया।

यह बैठक आधी रात को समाप्त हुई। अध्यापक को बाहर से स्त्रियों के हंसी-मज़ाक़ की आवाज़ सुनाई दे रही थी। अध्यापक मुस्करा उठा।

सारे तट-प्रदेश में रूसी लोग बराबर स्थानीय ग़रीब जनता की मदद कर रहे थे। इन्हीं रूसियों ने अपनी स्वचालित व्हेल-नावों

ग्रौर ज़िंदगी के नये क़ानून की सहायता से तट-प्रदेश से भूख को भगा दिया था।

"यह तो ग्रभी शुरुग्रात ही है!" ग्रध्यापक ने कहा।

ग्रब मांस की कोई कमी न थी। हर स्त्री ग्रासानी से टुंड्रा में लोमड़ियों के चारे के लिए ज़रूरी मांस ले जा सकती थी।

ग्रौर जब वाकत पहली सफ़ेद लोमड़ी फंसा लायी उस समय कैसी ख़ुशियां मनायी गयी थीं! यह लोमड़ी ऐसी-वैसी थोड़े ही थी! उसके बदले में रूबल के चालीस काग़ज़ मिल सकते थे!

ग्रब स्त्रियां भी रूबल के काग़ज़ों के बारे में कुछ कुछ समझने लगी थीं। स्त्री द्वारा पहली बार लोमड़ी फंसाने की संस्मरणीय घटना के उपलक्ष्य में वामचो ने एक बैठक बुलायी।

इस ग्रवसर की ग्रपराधिनी वाकत थी। उसपर सब का ध्यान केंद्रित था। सभी के होंठों पर उसका नाम था। बैठक के बाद सारी रात उसकी पलक से पलक न लगी ग्रौर फिर बड़े तड़के, चांद निकलने से पहले पहले वह फंदों की जांच के लिए चली गयी।

यह था नये क़ानून का जादू! कौन इस क़ानून को बुरा कहता! हर ग्रांखों वाला ग्रादमी उसका नतीजा साफ़ साफ़ देख जो सकता था।

वामचो के पास ग्रच्छा कुत्ता-दल था ग्रौर इससे वह टुंड्रा में लोमड़ियों का चारा बिखेर सकता था ग्रौर ग्रासपास की बस्तियों में जाकर सच्चाई का संदेश फैला सकता था।

बस्ती में सिर्फ़ एक ग्रादमी ऐसा था जिसकी ख़ुशी ग्रौर ग्राराम हवा हो गये थे। वह था ग्रलितेत। एनमकाई बस्ती की ज़िंदगी से वह बेचैन हो उठा था। एक ग्रर्से से उसकी शिकारियों की ज़िंदगी की ग्रादत छूट गयी थी ग्रौर वह सोच न पाता था कि ग्रब मैं क्या करूं। लोगों से बातचीत करने की नौबत न ग्राये इसलिए वह दिन भर सोता रहता ग्रौर रात में किसी जंगली जानवर की तरह बस्ती

के ग्रासपास या हिमाच्छादित सागर पर घूमता रहता। जब क्रांति-समिति का कोई ग्रादमी बस्ती में ग्रा जाता ग्रौर ख़बरें सुनने के लिए हर कोई स्कूल की ग्रोर दौड़ पड़ता उस समय ग्रलितेत चट्टानों की शरण ले लेता ग्रौर तब तक वापस न ग्राता जब तक वह रूसी लौट न जाता। ज़िन्दगी की ख़ुशी ग्रलितेत से विदा हो चुकी थी। क़िस्मत ने उसका साथ छोड़ दिया था। उसका हृदय व्यापार के लिए तरस रहा था। निठल्लूपन से वह ऊब उठा था। बेकार बैठने से उसके मन में निराशा के बादल छा जाते। इन गरमियों में भी ब्राउन ने उसे धोखा दिया था। सारे तट-प्रदेश में एक भी जगह ऐसी न बची थी जहां उसे माल मिल सकता। हर जगह लोस की जमात के रूसी व्यापारी डेरा डाले हुए थे। ग्रलितेत के लिए ज़िंदगी एक बोझ बन गयी। उसका परिवार ग्रब तीन पोलोगों के बदले एक ही पोलोग में रहने लगा क्योंकि तीनों पोलोगों को गरम ग्रौर रोशन रखने के लिए काफ़ी चरबी उसके पास नहीं थी। इस ग्रकेले पोलोग में भी ढिबरी की लौ किसी तरह टिमटिमाती रहती।

ग्रलितेत चुपचाप लेटा हुग्रा था। उसकी ग्रांखें खुली थीं लेकिन लगता था कि वह ग्रर्धचेतनावस्था में है। जाने वह क्या सोच रहा था। हर कोई निराश था। पोलोग में उदासी छायी हुई थी।

तीग्रेना सोच रही थी कि ग्रलितेत जल्दी, बहुत ही जल्दी किनारे से सदा के लिए विदा होकर पहाड़ियों में चला जायेगा।

ग्रलितेत पर ग़ुस्सा सवार था। वह भौंहें तरेरकर ग्रपने पिता कोराउगे की ग्रोर देख रहा था। ग्रलितेत उससे भी घृणा करने लगा था। पोलोग में दुश्मनी ग्रौर कड़वाहट ने जड़ें जमा ली थीं।

"कब तक इस तरह पड़े रहोगे? जाकर कुछ चरबी तो ले ग्राग्रो," कोराउगे ने बेटे को याद दिलायी।

अलितेत उछलकर बारहसिंगे की खाल पर बैठ गया और अपने बाप की ओर घूरने लगा। फिर रुखाई से बोल उठा :

"क्या आप देखते नहीं कि कैसे बुरे दिन आ गये हैं! असल में आपको ऊपर वाली दुनिया में जाने की सोचनी चाहिए। एक अर्से से आप किसी काम के न रहे। कहीं आपका यह ख्याल तो नहीं कि अभी भी मेरे काम में आप कुछ मदद दे रहे हैं?"

बूढ़ा ओझा चौंक पड़ा और बड़ी ही ग़मगीन आवाज़ में बोल उठा :

"ओह! मैं यह क्या सुन रहा हूं? क्या आज तक किसी ने दूसरे आदमी को ऊपर वाली दुनिया में जाने के लिए कहा था? क्या मेरी ज़बान पर लक़वा मार गया जो मैं ख़ुद मौत को नेवता नहीं दे सकता हूं? क्या मैं अपनी ज़िंदगी का मालिक नहीं रहा? तुम कहीं ऐसा तो नहीं सोचते कि मैं 'आख़िरी शब्द' नहीं बोल सकूंगा?"

अलितेत उछलकर खड़ा हो गया। "क्या आपको दिखाई नहीं देता कि रूसियों के नये क़ानून ने हमें किस तरह घेर रखा है?" अलितेत ने गरजकर, अनादर के स्वर में पूछा।

ग़ुस्से के दौरे में अलितेत ने दीवारों पर से लकड़ी और हड्डियों की मूर्तियां खसोट लीं और पोलोग के बाहर दौड़ा। कुल्हाड़ी लेकर उसने मूर्तियों को तोड़ना शुरू किया। वह ग़ुस्से से कांप रहा था और कुल्हाड़ी के हर वार के साथ बड़बड़ाता जा रहा था :

"लो, यह लो मेरी ज़िंदगी के मददगारो!"

मूर्तियों के टुकड़े बरफ़ में फेंककर उसने उन्हें पैरों तले रौंद डाला। फिर यारंग में जाकर बंदूक़ उठायी और सीलों का शिकार करने के लिए लंबे डग भरता हुआ हिमक्षेत्रों की ओर चला गया।

बहुत दिन बाद, वह सील की प्रतीक्षा में बरफ़ के एक छेद के पास बैठा हुआ था। यह चौकसी का काम बड़ा ही उबाने वाला

था। जाने कितनी देर राह देखनी पड़े और कब वह मूरख सील हवा में सांस लेने के लिए बरफ़ के छेद में से अपना सिर बाहर निकाले। लेकिन अलितेत गहरे विचारों में डूबा चुपचाप बैठा रहा। काफ़ी देर तक इस तरह बैठे रहने के बाद वह खीझ उठा और बरफ़ के छेद में अपनी बंदूक़ फेंककर बोला :

"बस, सब कुछ ख़त्म हुआ! अब किनारे पर मेरे लायक़ कोई काम नहीं रहा। अब मुझे पहाड़ियों के लिए रवाना होना चाहिए!"

यारंग के बाहर उसे तीग्रेना मिली। वह चिल्ला उठा :

"चलो, जल्दी जल्दी कुत्ता-गाड़ी जोत दो! अब मुझे ख़ानाबदोश बनने के लिए तैयार होना चाहिए।"

तीग्रेना बरफ़-गाड़ी में कुत्ते जोत रही थी। सफ़री पोशाक पहनकर जब अलितेत वहां पहुंचा तो उसका चेहरा कठोर और भयानक लग रहा था। तीग्रेना बड़ी उत्सुकता से कुत्ते जोत रही थी। अलितेत अब बस्ती से टल जायेगा। इस विचार से वह बेहद ख़ुश थी। अलितेत के साथ जीवन बिताना उसके लिए दूभर हो गया था। अलितेत के चले जाने के बाद उसे राहत मिल जाती।

अलितेत ने तीग्रेना पर एक ज़हरीली नज़र डाली। "मैं जानता हूं तुम क्या सोच रही हो," उसने चेतावनी के स्वर में कहा। "फिर तुमने रूसियों से नफ़रत करना छोड़ दिया। अब तुम्हारे पुराने ख़्याल लौट रहे हैं। लेकिन याद रखना, उस मास्टर के पास जाने की हिम्मत न करना। यह तुम्हारे लिए और बच्चे के लिए बहुत बुरा होगा।"

तीग्रेना कुछ न बोली। अब वह जान चुकी थी कि ऐसे मौक़े पर ज़बान को बस में रखना ही अक़्लमंदी है।

अलितेत बरफ़-गाड़ी में बैठ गया और कुत्तों को आवाज़ दी। वे बगटूट दौड़ने लगे। अलितेत ने बरफ़-गाड़ी रोकने के लिए डंडे

का उपयोग नहीं किया। ऐसा करना ठीक भी न था क्योंकि शुरू से सरपट दौड़ाना कुत्तों के लिए हानिकारक था।

तीग्रेना तब तक बरफ़-गाड़ी पर आंखें गड़ाये खड़ी रही जब तक वह एक पहाड़ी के पीछे ग़ायब न हो गयी।

भारी हृदय से वह यारंग में लौट आयी। अपना भविष्य उसके लिए एकदम उदास और नीरस लगा। यकायक गहरी निषेध भावना ने उसे घेर लिया और वह विचारमग्न हो गयी। वह किसी के सामने अपने दिल का बोझ हल्का करना चाहती थी लेकिन वहां ऐसा था ही कौन? नारगिनाउत और उसकी बहन से अपने मन की बात कहना उसने कभी से छोड़ दिया था। फिर उसने वामचो के पास जाकर उससे बातचीत करने का निश्चय किया।

वह धीरे धीरे वामचो के यारंग की ओर जाने लगी। उसके पैर मन मन भर के हो गये थे और चेहरे पर उदासी थी।

वामचो के पास आने पर भी वह समझ न पायी कि बातचीत शुरू कैसे की जाये। वे देर तक चुपचाप यारंग के बाहर खड़े उस दिशा में ताकते रहे जहां अलितेत की बरफ़-गाड़ी ग़ायब हो गयी थी।

"चला गया?" वामचो ने कहा।

तीग्रेना ने सिर हिलाया।

"तीग्रेना, आख़िर तुम्हें हो क्या गया? तुम हमेशा मुझे नयी ज़िंदगी के रास्ते पर चलने के लिए बढ़ावा देती गयीं और फिर ख़ुद ही उस रास्ते से हट गयीं! सुनो, आये को वे लोग महाद्वीप की ओर इसलिए नहीं ले गये कि वहां उसका ख़ात्मा कर डालें। वह वापस आयेगा। हां, मास्टर ने ऐसा ही कहा है। तुम्हारे आंखें तो हैं लेकिन तुम देखती नहीं कि रूसी हमारे दुश्मन नहीं हैं। ज़रा ठीक से देखो तो अपनी आंखों से। रूसी हमारे दोस्त हैं और हमारा भला चाहते हैं। तीग्रेना तुम अपने चारों ओर नज़र दौड़ाओ। देखो,

51—7

कितने लोग अलितेत के फंदे से आज़ाद हुए हैं और अब बसंत में सफ़ेद लोमड़ियों की तरह ख़ुशी से नाचते हैं। अकेली तुम्हीं हो जो अभी तक फंदे में फंसी हो। ये रूसी तुम्हें उससे बाहर निकालना चाहते हैं लेकिन तुम उनपर गुर्रा उठती हो। कहो, क्यों ऐसा करती हो? क्या तुम्हें फंदे में ही फंसे रहना पसंद है?"

"नहीं वामचो। मुझे तो लगता है अब मेरा कलेजा गुस्से से फट जायेगा। फंदे में फंसे रहना मैं कैसे पसंद करूंगी?"

"तीग्रेना, अब हमारे यहां नये क़ानून का राज है। अगर तुम अलितेत के पास नहीं रहना चाहतीं तो छोड़ दो उसे। मास्टर ने मुझसे यही कहा और लोस ने भी। मैं हमेशा उनसे तुम्हारा ज़िक्र करता हूं। अब तो किनारे पर नया क़ानून लागू हो चुका है; लेकिन जब यह क़ानून यहां नहीं था तब तुम कितनी बार अलितेत के घर से भागी थीं, बताओ! अब जब नया क़ानून आ गया है तो तुम अलितेत को छोड़ना नहीं चाहतीं! ऐसा क्यों?"

"लेकिन मैं जाऊं कहां? मेरा कोई और पति थोड़े ही है जिसके पास मैं चली जाऊं?"

"तुम स्कूल के यारंग में चली जाओ। तुम वहां सफ़ाई करोगी, अंगीठियां जलाओगी और चाय बनाओगी। इस काम के लिए मास्टर तुम्हें रूबल के काग़ज़ देगा। वाकत यह काम छोड़ देगी। वह क़बीला सोवियत की मेंबर है और इसके लिए उसे रूबल मिलते ही हैं। उसके लिए ये रूबल काफ़ी हैं। मास्टर ने भी मुझसे कह दिया है कि 'तीग्रेना आ जाये'। वह तुम्हारी रक्षा करेगा। तुम जानती ही हो वह कैसा ताक़तवर है। तुम्हें याद है न अलितेत को उसने कैसे मात दी थी?"

"वामचो, तुम जानते नहीं अलितेत अब कैसा बन गया है। उसका सिर घूम गया है। वह पागल भेड़िये जैसा हो गया है। अब

51-1 8

वह मास्टर का मुक़ाबला पहले की तरह नहीं करेगा। वह उसपर गोली चलायेगा, और मुझपर और आयवाम पर भी। मेरा ख़्याल है कि वह तुम्हें भी ज़िंदा नहीं छोड़ेगा। वह हम सब को जल्द ही पहाड़ियों में ले जा रहा है। मैं वहां बिल्कुल नहीं जाना चाहती। मैं पहाड़ियों में नहीं रह सकती।"

गोई-गोई ने तीग्रेना को वामचो के पास खड़ी देखा और कोराउगे को इसकी ख़बर देने के लिए दौड़ गया।

बच्चे की बात सुनते ही नारगिनाउत ने क्रोध से कहा:

"चुप रहो। तीग्रेना को वामचो से बात करने दो। क्या वह उसके बेटे आयवाम का बाप नहीं है? दिन-ब-दिन आयवाम ज़्यादा ज़्यादा उसपर पड़ता जा रहा है।"

तीग्रेना घर आयी। यद्यपि उसने ओझा की ओर नहीं देखा फिर भी उसे ऐसा लगा कि बूढ़े की तेज़ तीखी नज़र उसपर गड़ी हुई है। वह उसकी ओर पीठ किये बैठ गयी और मन ही मन निश्चय किया कि बूढ़े खूसट को याद दिला दूं कि तुम्हारा दूसरी दुनिया के लिए रवाना होने का वक़्त आ चुका है।

"यह आयवाम किसका बेटा है?" तीग्रेना ने कोराउगे का सवाल सुना।

वह चौंक उठी और बूढ़े की ओर देखे बिना, बेमुरौवती के साथ, खट से जवाब दिया:

"मेरा बेटा।"

"और उसका बाप कौन है?" कोराउगे ने उत्सुकता के साथ पूछा।

"मैं नहीं जानती।"

"नहीं कैसे? जानती हो। तुम उसके बाप को छिपाये रखना चाहती हो? यह छोकरा तो हरामज़ादे वामचो पर, उस ज़िद्दी बूढ़े

वाल के बेटे पर पड़ता जा रहा है जिसे भूरे रीछ ने मार डाला था। यह छोकरा हमारे ख़ानदान का नहीं!" हड्डीला हाथ हिलाते हुए कोराउगे चिल्लाया।

तीग्रेना का चेहरा तमतमा उठा। वह चुपचाप बूढ़े को घूरती रही।

"चुप क्यों हो? मैंने कभी न सुना था कि अलितेत ने वामचो को अपना नेवतुम चुन लिया है। इस छोकरे का नाम आयवाम तुमने कहीं वामचो पर तो नहीं रखा? ऐ?"

"मैंने ख़ुद ही वामचो को नेवतुम चुन लिया। वह सच्चा आदमी है और होशियार शिकारी। आयवाम दो बापों का बेटा है।"

"पागल औरत!" बूढ़ा गरज उठा। "ज़बान बंद करो! बहुत चलने लगी है ज़बान। औरतें कहीं ख़ुद ही नेवतुम चुन लेती हैं?"

"अब ज़िंदगी का क़ानून बदल गया है!" तीग्रेना ने उत्तेजित होकर कहा। उसके जी में आया कि जाकर बूढ़े का गला घोट दे ताकि उसमें से शब्दों के बदले आख़िरी सांस निकल जाये।

"पिशाचों के ग़ुस्से से शायद तुम नहीं डरतीं लेकिन चार्ली के ग़ुस्से का ख़्याल रखना। वह जल्द ही लौट आयेगा।"

"बकवास बंद करो! ज़रा सोचो, तुम्हारे बेटे ने तुमसे क्या कहा था! दुनिया के सारे लोग तुमसे ऊब गये हैं। अब तुम्हें दूसरी दुनिया के लिए रवाना होना चाहिए।"

"आ-आ-ह!" कोराउगे कराह उठा। उसने खिसियाकर खालों वाली बैठक पर अपना सिर पटकना शुरू किया।

"तीग्रेना!" गलियारे से आवाज़ आयी। कोराउगे के साथ जो ज़बानी झड़प हुई थी उससे तीग्रेना उत्तेजित हो उठी थी। वह वामचो की आवाज़ पहचान न सकी।

फिर अपना नाम सुनकर वह जल्दी जल्दी परदे के पास गयी। परदा उठाकर देखा तो वहां वामचो खड़ा था। वामचो ने चुपचाप दरवाज़े की ओर सिर घुमाया और बाहर चला गया।

"जाने क्या बात है? वामचो तो एक अर्से से यहां नहीं आया था," तीग्रेना ने सोचा। उसने झटपट कपड़े पहने और वामचो के साथ हो ली।

"क्या बात है वामचो?"

"तीग्रेना, बड़ी ख़ुशी की ख़बर है। यहां एरमेन आ पहुंचा है और उसने बता दिया कि आये महाद्वीप से लौट आया है। वह अब मशीन वाला बन गया है, कप्तान बन गया है। वह लावरेंती खाड़ी के पास रूसियों के साथ रहता है और काठ के कई यारंग बना रहा है..."

"आये लौट आया?" तीग्रेना ने अपने कानों पर विश्वास न करते हुए कहा। "मतलब यह कि वह वहां मरा नहीं?"

"नहीं, नहीं! एरमेन ने उसे अपनी आंखों से देखा है। वह मास्टर के पास दो काग़ज़ लाया है। एक मेरे लिए और दूसरा तुम्हारे लिए।"

तीग्रेना की आंखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गयीं। "मेरे लिए काग़ज़? कैसा काग़ज़?"

"चलो, मास्टर के पास चलें। तीग्रेना, उसी ने मुझे बताया था कि मैं तुम्हें बुला लाऊं। घबड़ाओ नहीं। हम तुम्हें बचायेंगे। तुम जानती ही हो कि मैं अब कई बस्तियों का मुखिया हूं!"

"अच्छा, चलो वामचो," तीग्रेना तैयार हुई।

स्कूल का मकान काफ़ी गरम था। तेल का बड़ा लैंप सूरज की तरह तेज़ रोशनी फैला रहा था।

"ओहो, तीग्रेना," अध्यापक ने तीग्रेना से हाथ मिलाते हुए कहा। "आओ। बैठो! वामचो, तुम भी बैठो।"

अध्यापक ने कुछ काग़ज़ों पर नज़र दौड़ानी शुरू की। तीग्रेना बारीकी से उसकी हर हरकत देख रही थी।

"तीग्रेना, तुम्हारे लिए आये ने एक चिट्ठी भेजी है। सुनो वह क्या लिखता है: 'तीग्रेना, मैं याने आये महाद्वीप से लौट आया हूं। अब मैं अन्द्रेई का मददगार बन गया हूं। तुम्हें अन्द्रेई की याद है न–अरी, वही जो लोस के साथ हमारे यहां आया था। अब मैं एकदम नया आदमी बन गया हूं। अगर तुम अभी तक मुझे भूल न गयी हो तो आयवाम को लेकर मेरे पास आ जाओ। मैंने अन्द्रेई और लोस के साथ इसके बारे में बातचीत की है। उनका भी कहना है कि 'तीग्रेना आ जाये।' अब अलितेत तुम्हें पहले की तरह नहीं ले जा सकेगा। उसकी ताक़त ख़त्म हो चुकी है। बस। आये।'"

तीग्रेना को ऐसा लगा कि वह नींद में सपना देख रही है। उसके सिर में चक्कर सा आ गया और आंखों के सामने धुंध छा गया। कौन जाने, सचमुच ही ये आये के शब्द थे या वह काग़ज़ ही कुछ बात गढ़कर बता रहा था? आये के मुंह से उसने ऐसे शब्द कभी न सुने थे। और आख़िर आये ने शब्दों को काग़ज़ में भरना भी कहां से सीख लिया? कहीं मास्टर ही तो गढ़ ये बातें नहीं बता रहा है?

अविश्वास की भावना ने उसके चेहरे की ख़ुशी हर ली।

"यह शायद आये नहीं बोल रहा है। क्योंकि वह काग़ज़ पर कभी नहीं बोलता था," तीग्रेना ने दबी आवाज़ में कहा।

द्रोरकिन ने उठकर उसे वह पत्र दिखा दिया। "देखो तीग्रेना," उसने बड़े प्यार से कहा। "यह है उसकी चिट्ठी। ख़ुद आये ने ही लिखी है। मालूम होता है कि मेरे छात्रों की तरह आये ने भी लिखना सीख लिया है। पहले मेरे छात्र भी कहां लिख पाते थे? तीग्रेना, मैं सच कह रहा हूं। यह चिट्ठी ख़ुद आये ने ही लिखी है।"

तीग्रेना ने कुछ रुखाई से चिट्ठी अपने हाथ में ले ली और उसपर नज़र गड़ायी। लेकिन चिट्ठी में ऐसा कुछ नहीं दिखाई दिया जिससे उसे आये की याद आती। काग़ज़ को बड़ी बारीकी से देखती हुई वह उसके टेढ़े-तिरछे चिन्हों का अर्थ लगाने की कोशिश कर रही थी। फिर उसने काग़ज़ घुमा लिया और एकदम आश्चर्य से चिल्ला उठी :

"देखो वामचो, देखो! अरे, यह तो यानराकेनोत का चित्र है। आये और मैं बचपन में वहीं रहती थी। देखो, यह है मेरे पिता कामेनवात का यारंग और यह रहा आये का। बाक़ी यारंग हमारे पड़ोसियों के हैं। कुछ मिलाकर दस यारंग थे वहां। वे सब के सब यहां दिखाई दे रहे हैं। और यह है हमारा पहाड़। आये अक्सर अपनी लाठी से बरफ़ पर इस बस्ती का चित्र बनाया करता था। यह उसी का बनाया चित्र है।"

तीग्रेना की उत्तेजना भरी बातें सुनकर द्वोरकिन मुस्कुरा रहा था।

"तीग्रेना, मैं फिर कहता हूं कि यह काग़ज़ आये ने ही लिखा है। मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कह रहा हूं। मैं तुम्हारी बदक़िस्मती की खिल्ली नहीं उड़ाना चाहता। मैं तुम्हें सच्ची बात बता रहा हूं। आये तुम्हें अपने पास बुला रहा है। वहां के लोग तुम्हारी रक्षा करेंगे। असल में तुम्हें उस शैतान अलितेत से कभी का विदा होना चाहिए था। तुम कल वामचो के साथ चली जाओ। वह त्योहार के लिए वहां जा रहा है।"

तीग्रेना ने वामचो पर एक प्रश्नसूचक नज़र डाली।

"चली चलो तीग्रेना, नहीं तो अलितेत तुम्हें पहाड़ियों में ले जायेगा। फिर वहां से भाग जाना बड़ा मुश्किल होगा।"

तीग्रेना जल्दी जल्दी उठ खड़ी हुई। "चलो वामचो, चलें," उसने निश्चयपूर्वक कहा।

वह बेतहाशा घर की ओर दौड़ी। आयवाम हाथ में गोल कंकड़ लिये बैठा था। वह अपने आप में मगन था और खिलखिला रहा था। तीग्रेना ने उसे गोद में उठा लिया और उसका चेहरा निहारने लगी।

"खेलो बेटा आयवाम, खेलो," उसने कहा।

"कहां गयी थीं तुम?" कोराउगे ने गुर्राकर पूछा। "मास्टर के पास गयी थी न? बेहया कहीं की!"

बूढ़े की चींचीं तीग्रेना की क्रोधाग्नि में तेल के समान थी लेकिन वह बड़ी मुश्किल से अपने को संभाल रही थी। वह उसके साथ बिल्कुल न बोलना चाहती थी। वह चुप्पी साधे रही।

"मैं जानता हूं तुम कहां थीं!" बूढ़े ने कर्कश स्वर में कहा। "अपने पाप के पिटारे में तुमने एक पाप और जोड़ दिया। आह! याद रखो, तुम्हें पछताना पड़ेगा!"

आयवाम बूढ़े के पास गया और उसे पत्थर की गोटियां दिखाने लगा।

"हटा लो इस शैतान छोकरे को! यह हमारे ख़ून की औलाद नहीं है! भेड़िये का बच्चा है यह!"

यह कहकर बूढ़े ओझा ने अपने सख़्त हड्डीले हाथ से उस बच्चे के गाल में एक तमाचा जड़ दिया।

बच्चा चीख़कर रोवेंदार खाल पर गिर गया। उसकी नाक से ख़ून की बूंदें टपकने लगीं।

तीग्रेना बूढ़े पर झपट पड़ी। उसने अपनी ताक़तवर बाहों में पकड़कर उसे उठा लिया और ज़ोर से गलियारे के पक्के फ़र्श पर पटक दिया। बूढ़ा धम से गिर पड़ा। उसके हाथ पैर फैल गये। फिर वह हिला न डुला।

तीग्रेना का चेहरा तमतमा उठा। आयवाम को गोद में उठाकर वह दौड़ती हुई अध्यापक के पास पहुंची।

"मैं अभी यहां से जाना चाहती हूं!" वह बोल उठी।

उसके पीछे पीछे वामचो भी दौड़ता हुआ आ पहुंचा।

"वामचो, जल्दी करो और कुत्ता-गाड़ी जोत दो। मैं फ़ौरन यहां से जाना चाहती हूं।"

"फ़ौरन?" वामचो ने आश्चर्य से पूछा। "लेकिन अब तो रात का समय है। हम सबेरे चले जायेंगे।"

"वामचो, कुछ ही देर में चांद निकल आयेगा। चलो, हम अभी चलें। जाओ वामचो, जल्दी करो।" वामचो को झंझोड़ते हुए उसने कहा।

"मास्टर जी, आयवाम कुछ देर यहीं रहे। मैं समझता हूं कि मुझे अपनी ही कुत्ता-गाड़ी जोत लेनी चाहिए।"

इसी बीच नारगिनाउत दौड़ी आयी। वह काफ़ी उत्तेजित थी।

"बूढ़ा दम तोड़ रहा है," उसने फुसफुसाकर कहा।

"मरने दो उसे," तीग्रेना ने बेपरवाही से जवाब दिया।

"हां, मुझे भी लगता है कि उसकी मौत की घड़ी आ गयी है," नारगिनाउत ने हामी भरी।

क्रोध से थरथराती हुई तीग्रेना ने जल्दी जल्दी कुत्ते जोत लिये और स्कूल के पास पहुंच गयी। वामचो की बरफ़-गाड़ी वहां तैयार खड़ी थी।

उसने बच्चे को गोद में उठा लिया और हाथ में डंडा पकड़े बरफ़-गाड़ी पर बैठ गयी।

"चलो वामचो!"

"ठहरो तीग्रेना, मैं मास्टर से कुछ कहना चाहता हूं।"

"क्या बात है, वामचो?" द्वोरकिन ने पूछा। वह उन्हें विदा करने आया था।

"मेरे वापस आने तक अलेक और बच्चे को स्कूल ही में रहने देना।"

51–2

"ठीक है," अध्यापक ने उत्तर दिया।

बरफ़-गाड़ियां बस्ती से काफ़ी दूर निकल गयीं और यारंग आंखों से ओझल हो गये। फिर तीग्रेना ने अपनी गाड़ी रोक ली।

"वामचो, मेरे कुत्ते तुम अपनी गाड़ी में जोत लेना। अपनी गाड़ी हांकना मुझे बड़ा मुश्किल लग रहा है।"

वामचो ने ऐसा ही किया और फिर चौबीस कुत्तों वाली यह बरफ़-गाड़ी समुद्र तट से होती हुई सरपट दौड़ने लगी।

तीग्रेना आयवाम को छाती से चिपकाये, वामचो के पास बैठी थी।

"तीग्रेना, तुमने बूढ़े को मार तो नहीं डाला?" वामचो ने पूछा।

"नहीं तो! उसने आत्महत्या कर ली!"

ऊपर आकाश में बादलों की आड़ में चांद चमक रहा था–यह हिमानी आंधी का पूर्वसंकेत था।

चौदहवां अध्याय

अक्तूबर उत्सव के अवसर पर लावरेंती खाड़ी के कंकरीले तट पर दो बड़े बड़े मकान बनकर तैयार हुए। एक था बोर्डिंग स्कूल का मकान और दूसरा अस्पताल का। चिमनियों से धुआं निकलने लगा था और निर्माण कामगार गरम आवासों में रहने लगे थे।

सोवियत लोगों की यह परंपरा है कि अपना महान पर्व वे अपने कार्यक्षेत्र की नयी सफलताओं द्वारा मनाते हैं। और ठंडे उत्तरी सागर तट पर भी लोगों ने इसी परंपरा का पालन किया।

उक्त मकानों की छतों पर लंबे लंबे ध्वजदंडों के सहारे लाल पताकाएं फड़क रही थीं।

जाड़ों का आरंभ हो चुका था।

चारों ओर खूंटों से बंधे कुत्ता-दल लेटे हुए थे। शिकारी और बहेलिये इन दो मकानों की परिक्रमा कर रहे थे और इस आश्चर्यजनक रूसी बस्ती का कोना कोना बड़े कौतूहल से देख रहे थे। अन्द्रेई मिख़ाइलोविच जुकोव इस बस्ती का मालिक था।

इस रूसी नौजवान की अचानक समृधि को देखकर लोग दंग रह गये। हां, पहली बार जब वह आया था उस समय उसके पास सिर्फ़ एक कुत्ता-दल ही तो था। और अब देखिये, एकदम निराला आदमी बनके आया है। अब उसकी मस भी भीगी है!

"देखिये," लोगों ने कहा, "हमारे बिना लकड़ी के देश में वह कितनी लकड़ी ले आया है।"

भावी अस्पताल की इमारत में रखे गये 'तितान'* ने तो धूम ही मचा दी। वाह! कितनी अजीब केतली थी यह। उसमें बराबर पानी उबलता रहता था और फिर क्या—चाय का दौर जो सबेरे शुरू होता वह शाम को देर तक जारी रहता। यहां की मालकिन मेरी थी। उसने सफ़ेद चोग़ा पहन रखा था और इससे फ़रदार कपड़े पहने हुए लोगों में वह विशेष बनी-ठनी लग रही थी। मेरी को इस बात पर बड़ा गर्व था कि बड़े त्योहार के लिए आने वाले मेहमानों की ख़ातिरतवाज़ा का काम उसे सौंपा गया है। वह 'तितान', चाय, चीनी और बिस्कुट की थैलियों की मालकिन थी! सचमुच लोगों की ख़ातिरतवाज़ा का काम कितना बढ़िया था! चार्ली थामसन के यहां मेहमानों की इतनी भीड़ कभी न लगी थी।

अन्द्रेई ने फ़िलहाल एक बड़े क्लासरूम को अपना घर बना लिया था। इस कमरे में भी काफ़ी चहलपहल थी। लोस, उसकी पत्नी नतालिया सेम्योनोव्ना और याराक कमरे में थे।

---

*पानी गरम करने की केतली का एक प्रकार।

चुकोत्स्क प्रायद्वीप में आने के समय से आज पहली बार लोस ने शहरी पोशाक पहनी थी।

अन्द्रेई और याराक भी सूट डाटे हुए थे। अन्द्रेई बता रहा था कि साल के आख़िर तक उन्हें पशुचिकित्सालय तथा प्राणिउद्यान प्रविधि केंद्र, आरामदेह आवास, एक भोजनशाला, नानबाई की दूकान, लांड्री और ख़राब मोटरों, फंदों, बंदूक़ों की मरम्मत के मिस्त्रीख़ाने बनाने हैं।

लोस ने आश्चर्य से याराक की ओर देखकर कहा :

"अन्द्रेई, ज़रा याराक की ओर देखो तो – यह तो बिल्कुल नया आदमी बन गया है!"

"आये और मेरी ने मुझे यह पोशाक पहनने के लिए मजबूर किया," याराक ने कुछ हड़बड़ाते हुए कहा। वह मानो पोशाक के लिए क्षमा-याचना कर रहा था। "आये ने कहा कि मास्को में बड़े त्योहार के मौक़े पर हर कोई इसी तरह के कपड़े पहनता है। मेरे गले में यह फंदा भी उसी ने डाल दिया है," लंबी भड़कीली टाई को झटका देते हुए याराक फुसफुसाया। "यहां लोस ने भी ऐसी ही पोशाक पहन रखी है। मैंने उसे इन कपड़ों में पहले कभी न देखा था।"

"वाह भई! ख़ूब! याराक यह पोशाक तुम्हें कितनी फब रही है!" लोस ने कहा। "अच्छा, कहो व्यापार-केंद्र के व्यवस्थापक के साथ तुम्हारी कैसी निपट रही है?"

"साथी लोस, बहुत ही अच्छी! स्मेलोव समझदार आदमी है। वह हमेशा मुझे बुला लेता है और पूछता है, 'कहो याराक, तुम्हारी क्या राय है?'"

"अच्छा, तुमसे सलाह-मशविरा करता है?"

"हां, हां। हम दोनों का काम ठीक चल रहा है। मैं उससे कहता रहता हूं कि हमें अपना व्यापार-केंद्र यहां, सांस्कृतिक केंद्र के

पास ले आना चाहिए। इससे फ़ायदा यह होगा कि लेन-देन के लिए आने वाले शिकारी स्कूल और अस्पताल देख सकेंगे। बसंत ऋतु में व्यापार-केंद्र व्हेल-नावों की मदद से बहुत ही जल्दी यहां लाया जा सकेगा।"

"अन्द्रेई मिखाइलोविच," जुकोव को पहली ही बार उसके नाम और पितृनाम से संबोधित करते हुए लोस ने बड़े उत्साह से कहा, "यह सचमुच बड़ी रोचक कल्पना है। देखो, हम यहां सांस्कृतिक केंद्र के साथ साथ आर्थिक केंद्र भी बना सकेंगे। वाह, यह बहुत ही अच्छा होगा। यहां हम एक सराय क़ायम करेंगे। इसका नाम रखेंगे 'शिकारी घर'। उसमें एक शैक्षणिक कार्यकर्ता की नियुक्ति करेंगे, दीवारों को पोस्टरों से सुशोभित करेंगे और एक सिनेमा प्रोजेक्टर भी मंगवा लेंगे। यहां आने वाले लोगों के बीच हम कितना बड़ा काम कर सकेंगे। व्यापार-केंद्र में कितनी बड़ी संख्या में लोग आते हैं! याराक, तुमने बड़ा अच्छा सुझाव दिया।"

"वाह, कितनी अच्छी कल्पना है!" अन्द्रेई ने हामी भरी। "हम ऐसा ही करेंगे। जाने मास्को में मेरे दिमाग़ में यह विचार कैसे नहीं आया? उन्होंने चुपचाप मेरे लिए एक मकान और दे दिया है। वाह याराक! हम तुम्हारी कल्पना को ज़रूर साकार करेंगे।"

याराक सावधानी से यह बातचीत सुनता रहा। वह समझ न सका कि 'कल्पना' क्या होती है, लेकिन वह यह ज़रूर जानता था कि उसने एक ठोस सुझाव दिया है। उत्तेजित होकर वह आगे कहता गया:

"हमें व्यापार-केंद्र ज़रूर यहां तबदील करना चाहिए। स्मेलोव की भी यही राय है। मेरी बड़े अस्पताल में काम करना चाहेगी और फिर हम रहेंगे कैसे? अलग अलग जगहों में?"

"याराक, ठीक कहते हो तुम," लोस ने समर्थन किया। "हम व्यापार-केंद्र को हटाकर दूसरी जगह कर देंगे।"

"तो फिर हमें एक और मकान के लिए आर्डर देना होगा," अन्द्रेई ने कहा।

"वह किसलिए? एक मकान तुम्हारे पास तैयार है ही। लोरेन वाला वह छोटा अस्पताल बंद कर दिया जायेगा। डाक्टर प्योत्र पेत्रोविच का तबादला भी यहीं होगा। वहां वाले अस्पताल का मकान हम यहां ले आयेंगे–और यही हमारा 'शिकारी घर' बन जायेगा।"

"और मुझे उसमें शैक्षणिक कार्यकर्त्री के नाते नियुक्त कर दीजिये," नतालिया सेम्योनोव्ना ने सुझाव दिया।

"नहीं, यह नहीं हो सकेगा। फिर हम रहेंगे कैसे अलग अलग जगहों में?" लोस ने मुस्कराकर याराक की ओर देखते हुए कहा। मानो वह उसकी सहानुभूति प्राप्त करना चाहता था। "मतलब यह कि क्रांति-समिति का कार्यालय भी यहीं तबदील करना होगा। यही न?"

आये यकायक कमरे में घुस आया और उसकी आंखें आश्चर्य से खुली की खुली रह गयीं।

"काकोमेई!" उसने कहा। "लोस! और मेरी सफ़र की साथी नताशा भी!"

"कहो आये, कैसे हो? देखो हम भी तुम्हारे त्योहार के लिए आ गये। तुम्हारे बिना नताशा भी ऊब सी रही थी। कह रही थी कि मैंने एक अर्से से आये को नहीं देखा।"

नतालिया सेम्योनोव्ना के मन में आये के प्रति आत्मीयता उत्पन्न हुई थी और वह सचमुच ऊब सी रही थी। उसने मुस्कराते हुए अभिवादन के लिए आये की ओर हाथ बढ़ाया।

"कहो आये, काम-काज कैसे चल रहा है?" उसने बड़े प्यार से पूछा।

"बहुत अच्छा। हम नये मकान बना रहे हैं, उत्सव मना रहे हैं।"

"तुम कहां रहते हो?"

"बस यहीं। अन्द्रेई के कमरे के पास ही मेरा कमरा है। आइये, मैं आपको दिखाऊं।"

वे आये के कमरे में गये। यह रिहायशी कमरा नहीं बल्कि मिस्त्रीख़ाना सा लग रहा था। शिकारी आये की मेज़ के सामने वाले पलंग पर बैठे हुए एक मोटर के हिस्से देख रहे थे। कमरे के बीचोबीच एक चौखट खड़ी थी जो बोल्टों से फ़र्श में पक्की बैठायी गयी थी। इस चौखट पर जहाज़ की मोटर टंगी हुई थी।

"नमस्ते साथियो!" नतालिया सेम्योनोव्ना ने शिकारियों का अभिवादन किया।

"यह है लोस की बीवी और मेरी दोस्त। मैं व्लादिवोस्तोक में इन्हीं के यहां रहता था," आये ने नतालिया सेम्योनोव्ना का परिचय देते हुए गर्व और हर्ष से कहा।

वहां के जमघट में अधिकतर जवान लड़के थे जो मोटरिस्ट बनने की तालीम पा रहे थे। नतालिया सेम्योनोव्ना ने इन सब से हाथ मिलाया।

"आये, कहो यह क्या है—कमरा कि मिस्त्रीख़ाना?"

"मिस्त्रीख़ाना अभी तक तैयार नहीं हुआ है। फ़िलहाल वह यहीं रहेगा—इस कमरे में। क्योंकि लोगों को मोटर दिखाना ज़रूरी है। एरमेन, वह खिड़की खोलो तो। मैं तुम्हें भी दिखाऊंगा।"

आये चौखट पर टंगी हुई मोटर के पास गया और एक फ्लायव्हील की रस्सी खींच ली। ज़ोरदार खड़खड़ाहट के साथ मोटर चालू हुई और फ़ौरन सारा कमरा धुएं से भर गया।

शोर सुनकर लोस, अन्द्रेई और याराक दौड़े चले आये।

"क्या बात है?" लोस ने पूछा। "अरे, यहां तो फ़ैक्टरी ही है?"

आये ने मोटर बंद कर दी। "मैं ज़रा मोटर का काम दिखा रहा था," आये ने गंभीरतापूर्वक कहा। "धुआं खिड़की से बाहर चला जायेगा।"

"ठीक है। आये, चलो हम अन्द्रेई के कमरे में चले जायें," नतालिया सेम्योनोव्ना ने सुझाव दिया।

उस कमरे में एक पलंग, एक मेज़ और एक आलमारी थी। सारा कमरा अव्यवस्थित था। मेज़ पर तरह तरह के ड्राइंग, काग़ज़-पत्र और किताबें बिखरी पड़ी थीं।

"अन्द्रेई मिख़ाइलोविच," नतालिया सेम्योनोव्ना ने धिक्कार के स्वर में कहना शुरू किया। "कैसे अजीब ढंग से रहते हो तुम? आये का कमरा मिस्त्रीख़ाना, सोने का कमरा और गोदाम सभी कुछ है। लेकिन जाने तुम्हारा कमरा किस वर्ग में आयेगा। मेरे प्यारे साथी, तुम्हें सभ्य लोगों के ढंग से रहना चाहिए।"

लोस खीस निकालकर मुस्कराया। "एक औरत क्या आयी, कि आलोचना का सिलसिला शुरू हो गया," उसने कहा।

अन्द्रेई परेशान हो उठा। उसने कहा: "नतालिया सेम्योनोव्ना, पहली बात यह है कि आये का कमरा इस हालत में मैंने अभी अभी देखा और मैं समझता हूं कि उसने उत्सव के सम्मान में ही इस तरह का प्रबंध किया है।"

"मैंने मोटर कल ही वहां लगा दी थी," आये ने कहा।

"दूसरी बात यह कि हमें अभी तक बीवियां नहीं मिली हैं," अन्द्रेई आगे कहता गया, "और हम कुआंरों की ज़िंदगी बिता रहे हैं। तीसरी बात यह कि हम लोग आपके आने से कुछ ही समय पहले तंबुओं को छोड़कर यहां रहने आये हैं। मैं जानता हूं कि आपकी आलोचना कठोर है और उचित भी, लेकिन अगर आप मई दिन के अवसर पर हमारे यहां पधारेंगी तो आपको शिकायत का मौक़ा नहीं

मिलेगा। हमारे पास तीन मकान होंगे और इनमें आधुनिक सुख-सुविधाओं से सज्जित आवास।"

"अन्द्रेई, मेरे दोस्त, तुम्हारा कहना ठीक है," लोस ने समर्थन किया। "मास्को भी एक दिन में थोड़े ही बना था? नताशा, तुम थोड़ी प्रतीक्षा करो। हर चीज़ का अपना अपना समय होता है। अन्द्रेई की प्रेयसी इस साल ग्रेजुएट होगी और जहाज़रानी मौसम के अंत में यहां आयेगी। तुम ख़ुद ही देख लेना कि उसके आने से पहले यहां कैसे बढ़िया आवास बनकर तैयार होंगे," लोस ने कनखियों से अन्द्रेई की ओर नज़र दौड़ाते हुए कहा। "ख़ैर, यह सब रहने दो। कहो उत्सव का क्या कार्यक्रम है?"

"आज उत्सव की सभा होगी और कल प्रतियोगिताएं। कुत्ता-गाड़ियों की रेस, चांदमारी और कुश्ती के मुक़ाबिले। जीतने वालों को हम पुरस्कार देंगे। कुत्ता-गाड़ी रेस में पहला पुरस्कार होगा विंचेस्टर बंदूक़।"

"विंचेस्टर?"

"क्यों, चौंक क्यों उठे? निकीता सेर्गेयेविच, इसके लिए मेरे पास रक़म है। ज़रा आये से पूछ लीजिये कि बंदूक़ के पुरस्कार की बात सुनते ही लोगों में कितनी दिलचस्पी पैदा हुई है। कुत्तों की नस्ल सुधारने में इस तरह के पुरस्कारों से अच्छा-ख़ासा प्रोत्साहन मिलेगा।"

"ठीक है। हम देखेंगे।"

पंद्रहवां अध्याय

वामचो और तीग्रेना को बरफ़ीले तूफ़ान के कारण अटक जाना पड़ा। सांस्कृतिक सेवा केंद्र में जब वे पहुंचे उस समय उत्सव का कार्यक्रम आरंभ हो चुका था। आयवाम को रूलतिना के यारंग में

रखकर उन्होंने रूसियों की बड़ी बस्ती की ओर अपनी बरफ़-गाड़ी दौड़ायी। रूसी बस्ती के बड़े बड़े मकान आज रोशनी से जगमगा रहे थे। खिड़की पर जमी हुई बरफ़ की परत में से वामचो को अंदर की झलक मिली। वहां बेंचों पर काफ़ी बड़ी संख्या में श्रोतागण बैठे हुए थे।

"तीग्रेना, चलो अंदर चलें। देखो, बाहर कोई नहीं दिखाई देता। लगता है कि बहुत बड़ी बैठक है और सब लोग वहां बैठे हुए हैं," खिड़की से दूर हटते हुए वामचो ने कहा।

बरामदा पार करते ही उन्होंने देखा कि वह बड़ा कमरा लोगों से ठसाठस भरा हुआ है। यहां तक कि दीवालों से सटकर भी काफ़ी लोग खड़े थे। वामचो भीड़ को चीरता हुआ आगे बढ़ा और बगुले की तरह अपनी गर्दन उठाकर लोस की बात सुनने की कोशिश करने लगा। तीग्रेना सांस रोके उस मंच की ओर देख रही थी जिसपर रूसी और चुकची लोग एक मेज़ के पास बैठे हुए थे। यकायक उसकी नज़र आये पर पड़ी। वह तांगों के बीच बैठा था। पोशाक भी उसकी तांगों जैसी थी। वह बड़े उत्साह से कभी अन्द्रेई के तो कभी मेरी के कानों में कुछ फुसफुसा रहा था। मेरी उसकी बग़ल में बैठी थी। तीग्रेना को ऐसा लगा कि आये अब एकदम अजनबी बन गया है। वह लोस और अन्द्रेई की तरह सूती कपड़े पहने था। और उसके बाल? ओह! कैसे भद्दे ढंग से वे उसके सिर पर खड़े थे!

"तो यही है वह मशीन वाला आदमी!" आये को अपनी आंखों से पीते हुए तीग्रेना ने सोचा। लोस क्या बोल रहा है इस पर उसका ध्यान न था। "आये अजनबी बन गया है! आखिर उसने मुझे बुलाया क्यों? कहीं वह मास्टर मुझे झूठ बताकर यह कोशिश तो नहीं कर रहा था कि मैं उसके शब्दों को आये के शब्द मान लूं? लेकिन वह चित्र तो ज़रूर आये का बनाया हुआ था!"

तीग्रेना का मन बैठने लगा। उसे बुख़ार सा चढ़ गया और वह बहुत ही परेशान हो उठी। वहां खड़ा रहना उसके लिए बड़ा कठिन प्रतीत हुआ। उसके जी में आया कि बाहर पाले में चली जाऊं। उसने सोचा कि काटती हुई हवा मेरे दुखदायी विचारों को मेरे दिमाग़ से उसी तरह भगा देगी जिस तरह बरफ़ अलाव को बुझा देती है।

तीग्रेना दरवाज़े की ओर मुड़ी ही थी कि उसे आये की आवाज़ सुनाई दी :

"अब नतालिया सेम्योनोव्ना का भाषण होगा।"

"हां, यह आये ही की आवाज़ है। उसकी आवाज़ में ज़रा भी फ़र्क़ नहीं पड़ा है। हां, उसमें ज़्यादा ज़ोर और विश्वास ज़रूर पैदा हुआ है।"

गोरे चेहरे वाली वह औरत मंच पर आ खड़ी हुई।

"यह बड़ी भली औरत है," आये ने परिचय देना शुरू किया। "महाद्वीप से हमने एक ही जहाज़ पर सफ़र किया है।"

वह औरत आत्मविश्वास के साथ मेज़ के पास आयी, दबी आवाज़ में आये से कुछ कहा और उसकी ओर देखकर मुस्करायी।

फिर उसका चेहरा बहुत ही गंभीर या यों कहिये कठोर बन गया और उसने जल्दी जल्दी कुछ कहना शुरू किया जो वहां वालों के लिए एकदम दुर्बोध था। तीग्रेना उसपर नज़र गड़ाये खड़ी थी। उसने देखा कि आये भी उस औरत की ओर देख रहा है और उसकी बातें इस तरह सुन रहा है मानो वह कोई परी-कथा सुना रही हो। "कहीं इस गोरे चेहरे वाली औरत ने तो आये को नहीं बिगाड़ डाला? उसी ने तो उसके बाल इस तरह संवारकर उसे रूसी कपड़े नहीं पहना दिये? अरे, ऐसी औरत तो बड़ी आसानी से किसी भी पुरुष के मुंह लग सकती है। ज़रा देखो तो, उसकी ज़बान से शब्द कैसे बराबर लुढ़कते जा रहे हैं," तीग्रेना खिसियाकर सोचती रही।

नतालिया सेम्योनोव्ना यकायक रुक गयी और आये की ओर झुककर उससे फिर से कुछ कह दिया।

आये उठ खड़ा हुआ। बीच में चीरा हुआ अपना कपड़े का थैला उसने ठीक कर लिया और प्रसन्न स्वर में बोलने लगा :

"अब मैं चुकची में तर्जुमा करके बता दूंगा कि नतालिया सेम्योनोव्ना ने क्या कहा। बाद में वह कुछ और बातें बता देंगी। उनका कहना है कि स्त्री और पुरुष की हैसियत बराबर होनी चाहिए..."

तीग्रेना ने कान खड़े करके सुना। उसका चेहरा क्रोध तथा तिरस्कार से लाल हो उठा। "अच्छा, तो आये झूठ बोलना भी सीख गया," उसने सोचा। "क्या वह भूल गया कि लड़की का जन्म सिर्फ़ आधी ख़ुशी की बात है? क्या वह जानता नहीं कि स्त्रियां कभी पुरुष के बराबर नहीं थीं? क्या उसे याद नहीं कि अलितेत मुझे ख़ुद उसकी आंखों के सामने भगा ले गया था? कैसी बकवास कर रहा है यह? वह कहीं ऐसा तो नहीं सोचता कि इनमें से कोई बात ही नहीं हुई? नहीं, आये अब आये नहीं रहा। वह तो उस गोरे चेहरे वाली औरत के दिमाग़ से सोचता है।"

तीग्रेना ग़ुस्से से इस तरह पागल हो उठी कि एकदम चिल्ला पड़ी :

"यह झूठ बोलता है!"

आये ने तीग्रेना की आवाज़ की दिशा में गर्दन घुमायी। एड़ियां उठाकर उसने देखा तो तीग्रेना नज़र आयी। एकदम मंच से कूदकर वह कोहनियों से भीड़ को चीरता हुआ दरवाज़े की ओर बढ़ा।

लेकिन तब तक तीग्रेना ग़ायब हो चुकी थी। उसे ढूंढने के लिए आये बाहर दौड़ा। बाहर चांदनी छिटकी हुई थी। पाले के कारण नये मकान के लट्ठे चर्रा रहे थे और पैरों तले बरफ़ कड़कड़ा रही थी। कोटि कोटि नक्षत्रों से आकाश जगमगा रहा था। कहीं से कुत्तों के समूह-गान की तान सुनाई दे रही थी।

तीग्रेना मकान की दीवार से चिपककर खड़ी रही। उसने अपने परके की फ़रदार किनार वाली टोपी से सिर ढंक लिया। उसकी आंखें मानो किसी मांद में से आये पर गड़ी हुई थीं। उसने देखा कि आये की आंखें उसी को ढूंढ रही थीं। आये को शायद उन सूती कपड़ों में ठंड लग रही थी। और उसका वह पतलून भी कैसा पतला था! ऐसा पतलून तो अमेरिकन लोग गरमियों में पहनते थे। तीग्रेना चुपचाप आये पर नज़र गड़ाये रही।

फिर यकायक आये की नज़र उसपर पड़ी।

"तीग्रेना!" वह ख़ुशी से चिल्ला उठा।

वह उसकी ओर कूद पड़ा, उसकी फ़रदार टोपी पकड़ ली और उसकी अंगार जैसी आंखों से आंखें मिलायीं।

"हट जाओ," तीग्रेना ने ग़ुस्से में भरकर कहा। "तुम मुझे पूरी तरह भूल गये हो।"

"तीग्रेना, मैं कभी का तुम्हारी राह देख रहा हूं। आने वाली हर बरफ़-गाड़ी को देखते देखते मेरी आंखें थक गयीं। तुम तो उसी तरह ग़ायब थीं जिस तरह तूफ़ान में बारहसिंगा..."

तीग्रेना चुपचाप उसकी बातें सुनती रही। यकायक उसे वे दिन याद आये जब वे इसी तरह यानराकेनोत में यारंग के बाहर खड़े खड़े अपने भावी जीवन के कल्पना-चित्र बनाया करते थे। फिर तीग्रेना ने कोमल स्वर में पूछा:

"एरमेन जो काग़ज़ ले आया था – क्या वह तुम्हीं ने लिखा था?"

"हां, हां!" आये ने ख़ुश होकर कहा। "मैंने ही वह लिखा था। और उसपर मैंने चित्र भी बनाया था।"

"मैं अलितेत के घर से फिर भाग निकली हूं। और अब कभी वापस न जाऊंगी। अपनी जान दे दूंगी लेकिन घर नहीं लौटूंगी!" तीग्रेना ने बड़े जोश में कहा।

"बहुत अच्छा!" आये ने प्रसन्नतापूर्वक कहा। शरीर को गरम रखने के लिए वह बरफ़ पर नाच सा रहा था।

"आये, ओझा कोराउगे मेरे हाथों मारा गया। वैसे मैं उसे मारना नहीं चाहती थी। बात यह हुई कि उसने आयवाम को तमाचा जड़ दिया था जिससे उसकी नाक से खून टपकने लगा था। फिर मैंने बूढ़े को उठाकर गलियारे में फेंक दिया, बस!"

"तीग्रेना, तुम घबड़ाओ नहीं। अब मुझमें ताक़त आ गयी है! मास्को में सभी मुखिया मेरे दोस्त हैं। अब हमें किसी बात से डरने की ज़रूरत नहीं..."

आये अच्छी तरह जानता था कि उस अज्ञात मास्को वाले मुखिया लोगों का उल्लेख करने से तीग्रेना पर कुछ विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा लेकिन ये शब्द उसकी ज़बान पर से अपने आप लुढ़क ही पड़े। यह देखकर कि अपनी बात में तीग्रेना कोई दिलचस्पी नहीं ले रही है, उसने बातचीत का विषय ही बदल दिया।

"और तुम्हारा मुन्ना कहां है?"

"फ़िलहाल मैंने उसे रूलतिना के पास रख दिया है। वह भली औरत है।"

"हमें उसे वहां से ले आना चाहिए।"

"नहीं, कोई ज़रूरत नहीं। ठहरो... पहले एक बात बताओ। क्या तुम वैसे ही हो जैसे पहले थे? उस रूसी औरत ने तुम्हें बिगाड़ तो नहीं डाला? अभी अभी तुम उसी की ज़बान में बेसिर पैर की बातें बक रहे थे। और ज़रा अपने कपड़े तो देखो। अरे इन कपड़ों में तो तुम गरमियों में भी ठिठुर जाओगे! और तुम्हारे बाल भी कैसे भद्दे हो गये हैं!"

"तीग्रेना, ये घर पर पहनने के कपड़े हैं। और कपड़ों की क्या बात? चाहे जब बदले जा सकते हैं। कपड़े दिल थोड़े ही हैं?"

"ग्रौर वह गोरे चेहरे वाली ग्रौरत जो तुम्हारी ज़बान के ज़रिये बोल रही थी – कौन है वह? हमारे देश में वह ग्रायी किसलिए है?"

"जानती नहीं? वह लोस की बीवी है।"

"क्या कहा? लोस की बीवी?" तीग्रेना ने ग्राश्चर्य से कहा।

"वह भी एक मुखिया है।"

"ग्रौरतें भी कहीं मुखिया बन सकती हैं? मैंने तो यह कभी देखा न सुना," तीग्रेना ने शक करते हुए कहा।

"वह ग्रौरतों के सवाल की पैरवी करेगी।"

"क्या कहा? 'ग्रौरतों का सवाल?' यह क्या होता है?"

"यह है ग्रौरतों के बारे में नया क़ानून। बड़ा ग्रच्छा क़ानून है यह। वह तुम्हारे बारे में सब कुछ जानती है। उसने कहा कि ग्रलितेत से छुटकारा पाने में वह तुम्हारी मदद करेगी। वाह! बहुत ही भली ग्रौरत है वह। हम महाद्वीप में साथ साथ रहते थे ग्रौर जहाज़ का सफ़र भी हमने साथ साथ किया था।"

"ग्राये, मुझे ऐसा लगा कि तुम पराये बन गये हो, तुम सच्चे ग्रादमी नहीं रहे," तीग्रेना ने कोमल स्वर में कहा।

"यह कैसे हो सकता है, तीग्रेना?" ग्राये ने गदगद होकर कहा। "क्या तुम्हारी ग्रांखें देख नहीं सकतीं कि मैं कैसा हूं? क्या तुम्हारे कान सुन नहीं सकते जो मैं बता रहा हूं? तीग्रेना, मैं वही हूं जो हमेशा था। हां, फ़र्क़ सिर्फ़ यह हुग्रा है कि मैं नये क़ानून की वजह से ताक़तवर बन गया हूं। तुम देख ही लोगी कि ग्रगर ग्रलितेत यहां ग्राये तो मैं किस तरह उसके साथ पेश ग्राऊंगा।"

इस मुलाक़ात के शुरू शुरू में तीग्रेना को डाह भरी ख़ुशी हो रही थी कि तांगों वाले कपड़ों में ग्राये ठिठुरा जा रहा है लेकिन ग्रब उसे उसपर तरस ग्राया। ग्राये को कंपकंपी चढ़ गयी थी। यह देखकर तीग्रेना बोल उठी:

"जाम्रो, उधर उस पहाड़ी के पास जाम्रो ग्रौर शरीर में गरमी पैदा करो।"

ग्राये तीर की तरह दौड़ पड़ा। उसके हाथ ज़ोरों से हिल रहे थे ग्रौर पैरों में पर से लग गये थे। बैठक की बात वह भूल गया। उसे ज़रा भी ध्यान न रहा कि वह बैठक में दुभाषिये का काम कर रहा है।

यकायक तीग्रेना के पास एक लैंप चमक उठा। वह चौंक उठी ग्रौर हाथों से ग्रपना मुंह ढंक लिया।

"ग्ररे, मैंने तुम्हें डरा दिया?" टार्च बुझाते हुए नतालिया सेम्योनोव्ना ने कहा।

उसने तीग्रेना की कमर को ग्रपने हाथ से घेर लिया ग्रौर मुलायम फ़र में उसका हाथ धंस गया। नतालिया सेम्योनोव्ना ने प्यार के स्वर में कहा:

"देखो, यह बिजली का टार्च है।"

टार्च फिर से चमक उठा। तीग्रेना ने चुपचाप इस रूसी ग्रौरत को ऊपर से नीचे तक देखा। फिर साहस बटोरकर उसने धीरे से टार्च के मोटे शीशे का स्पर्श किया। रोशनी ठंडी थी।

"तुम यहां ग्रकेली क्यों खड़ी हो? कितनी ख़ूबसूरत हो तुम!"

गोरे चेहरे वाली इस ग्रौरत का एक शब्द भी तीग्रेना के पल्ले नहीं पड़ रहा था लेकिन उसके पास खड़ी होकर उसकी ग्रटपटी बातें सुनने में उसे बड़ा मज़ा ग्रा रहा था। "तो ऐसी है हमारे दढ़ियल सरदार की बीवी। हो सकता है कि वह सचमुच ही भली ग्रौरत हो?" तीग्रेना ग्रपने ग्राप से तर्क कर रही थी।

इसी बीच ग्राये दौड़ता हुग्रा ग्रा पहुंचा। तेज़ी से दौड़ने के कारण वह हांफ रहा था ग्रौर उसका चेहरा तमतमा उठा था। उसके नंगे सिर पर ग्रोसकण जमे हुए थे ग्रौर सांसों के साथ भाप निकल रही थी।

"क्यों भई, बैठक से भाग क्यों गये? वाह! बड़े अच्छे दुभाषिये रहे! आखिर अन्द्रेई ने दुभाषिये का काम किया," नतालिया सेम्योनोव्ना ने कहा।

"तीग्रेना जो आयी है। देखिये, यही है वह।" आये ने खुशी से मुस्कुराते हुए कहा।

"ओ हो! यही है तीग्रेना!"

"हां, हां! अलितेत को छोड़कर वह भाग आयी है—सदा के लिए।"

"अच्छा, हम पहले अन्द्रेई के कमरे में चलें। आये, अरे ऐसी सर्दी में और इन कपड़ों में तुम ठिठुर न जाओगे?"

"नहीं, नहीं! मुझे यहां काफ़ी गरम लग रहा है," आये ने उत्तर दिया। उसके चेहरे पर खुशियां खिल रही थीं।

अन्द्रेई जुकोव का कमरा काफ़ी गरम था। वहां ये लोग बिना रुकावट के बातचीत कर सकते थे।

नतालिया सेम्योनोव्ना ने तीग्रेना का नाम बहुत बार सुना था। इस लड़की में उसे बड़ी दिलचस्पी थी। वह तीग्रेना से बातचीत करना चाहती थी। सांस्कृतिक सेवा केंद्र के महिला विभाग की व्यवस्थापिका के नाते अपना काम शुरू करने के लिए वह बहुत उत्सुक थी।

उसने सोवियत भूमि में स्त्रियों के स्थान के संबंध में एक ज़ोरदार भाषण देना शुरू किया। वह देर तक बोलती रही। उसके भाषण में प्रवाह था और उत्तेजना भी। उसके भाषण का तर्जुमा करना आये के लिए बड़ा मुश्किल रहा।

नतालिया सेम्योनोव्ना बड़े ज़ोरशोर से तीग्रेना को उपदेश दे रही थी। इसी बीच अन्द्रेई चुपचाप आकर गलियारे में खड़ा हुआ और यह संभाषण सुनता रहा। जब नतालिया सेम्योनोव्ना का भाषण समाप्त हुआ तो वह ज़रा ज़रा मुस्कराते हुए बोल उठा:

"बस, तुम समझती हो कि उसने सब कुछ समझ लिया, है न? नतालिया सेम्योनोव्ना, यहां हम बिल्कुल दूसरा तरीक़ा अपनाते हैं। एक शब्द में कहना हो तो तुम राजनीतिक शिक्षिका की श्रेणी में नहीं आ सकतीं।"

"अच्छा तो फिर तुम्हीं यह काम करो। तुम तरीक़ा जो जानते हो," नतालिया सेम्योनोव्ना ने कहा। उसके स्वर में आहत भावना की झलक थी।

"नतालिया सेम्योनोव्ना, तुम बहुत जल्दी कर रही हो। हर बात का अपना समय होता है। क्या लोस ने तुम्हें यहां की स्थिति नहीं बतायी?"

"मैं देख रही हूं कि तुम और लोस दोनों यहां गधों की तरह काहिल बन गये हो। मुझे तो साफ़ दिखाई दे रहा है कि तुम लोगों ने इस लड़की से कभी बात नहीं की।"

अन्द्रेई ने तीग्रेना से हाथ मिलाया और फिर आये से कहा:

"आये, लोस तुम्हारी राह देख रहा है। वह लोगों से व्हेल-नावों, मोटरों और प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों के बारे में बातचीत कर रहा है।"

"तीग्रेना, मैं अभी आता हूं," कहकर आये बाहर दौड़ा गया।

"अन्द्रेई, तुम इस लड़की को अपना फ़रदार ऊपरी लबादा उतारने के लिए क्यों नहीं कहते? यहां काफ़ी गरम है!" नतालिया सेम्योनोव्ना ने कुछ खीझ के साथ कहा।

"वह नहीं उतार सकती, क्योंकि उसने पूरी सफ़री पोशाक पहन रखी है। सब से पहले उसे अपने बूट उतारने होंगे। देखो, ग़लती तुम्हारी है और फिर भी तुम ग़ुस्सा करती हो! और नतालिया सेम्योनोव्ना, तुमने सभा में अपना भाषण भी ग़लत ढंग से दिया।"

"तो तुम मुझे सिखाना चाहते हो?.. व्लादिवोस्तोक की ज़िला समिति में..."

"हां, उधर महाद्वीप में तुम्हारा यह भाषण अच्छा सिद्ध होता," अन्द्रेई ने बात काटते हुए कहा। "लेकिन यहां..." अपने कंधे सिकोड़कर वह आगे बोलता गया: "इस शब्द-जंजाल का कोई मतलब नहीं। स्थानीय जीवन और रीति-नीति को ध्यान में रखे बिना यह सब बेकार है। तुम ज़रा लोस से पूछो कि वह अपने भाषण किस तरह तैयार करता था। एक एक भाषण पर वह पूरा हफ़्ता ख़र्च करता था। और उसे इच्छित फल भी मिलता था। वैसे यह काम लगता है बड़ा आसान लेकिन... अच्छा हुआ कि आये सभा से चला गया। मुझे मुआफ़ करना। दुभाषिये का काम करते हुए मैंने तुम्हारे भाषण में काफ़ी फेर बदल कर दिया है।"

"इसका क्या मतलब?" नतालिया सेम्योनोव्ना ने भड़ककर पूछा।

"ख़ैर, इसके बारे में हम फिर कभी बोलेंगे।" फिर तीग्रेना की ओर मुड़कर उसने कहा, "बैठो तीग्रेना, यहां मेज़ के पास बैठो। हम चाय पियेंगे। तुम्हें याद है हम बूढ़े वाल के यहां कैसे चाय पीते थे? बड़ा भला आदमी था वाल।"

"हां," तीग्रेना ने रूसियों की ओर देखते हुए कोमल एवं कातर स्वर में उत्तर दिया।

तीग्रेना को ऐसा लगा कि युवा सरदार अन्द्रेई उस औरत को इसलिए डांट पिला रहा है कि वह उसे याने अलितेत की बीवी को उसके कमरे में ले आयी है। वह मेज़ के पास गयी और अपने कंधे झटकाकर उसने अपना परका हटा लिया। वह उसकी कमर तक उतर आया और फ़रदार किनार वाली उसकी आस्तीनें फ़र्श पर झूलती रहीं। परके के नीचे वह चमकीली लाल पोशाक पहने थी। कमरे की

गरमी से उसका चेहरा लाल हो उठा। उसके उन्नत उरोजों पर दो घनी बेनियां लोट रही थीं। अपने सिर को एक झटका देकर उसने अपने कंधों पर से ये बेनियां पीछे की ओर उड़ा दीं।

"लो तीग्रेना, चाय लो। मुझे बड़ी ख़ुशी है कि तुम मेरे यहां पधारीं। जानती हो, अलितेत को मैं अब चाय का प्याला तक नहीं दूंगा। बड़ा ख़राब आदमी है," अन्द्रेई बोला। वह तीग्रेना के विचार ताड़ने की कोशिश कर रहा था।

तीग्रेना ने अन्द्रेई की ओर देखते हुए कहा :

"मैं उसके यहां से भाग आयी हूं और अब कभी एनमकाई वापस न जाऊंगी। मैं जानती हूं कि वह यहां आकर मुझे वापस ले जाना चाहेगा। वह बड़ा ही दुष्ट हो गया है।"

"घबड़ाओ नहीं तीग्रेना। यहां वह बिल्कुल भीगी बिल्ली बन जायेगा। हम उसे यहां से इस तरह खदेड़ देंगे कि वह आख़िरी दम तक याद करता रहेगा।"

"मैं क्या कहूं?.. अच्छा, आये को यहां यारंग मिल गया है?"

"हां तो। उसका कमरा मेरे कमरे के पास ही है।"

अब दुर्बोध संभाषण सुनने की पारी नतालिया सेम्योनोव्ना की थी। वह सुन रही थी और तीग्रेना के चेहरे पर प्रकट होने वाले भाव देख रही थी।

"अन्द्रेई, भले आदमी उसके हर शब्द का तर्जुमा करके मुझे बताओ। आख़िर एक औरत की बात तुम क्या जानो, ख़ाक?"

"तुम ख़ुद ही बोलना सीख लो न।"

"अन्द्रेई मिख़ाइलोविच, कैसी बेहूदी बात करते हो तुम! तुम अच्छी तरह जानते हो कि भाषा मैं एक दिन में नहीं सीख पाऊंगी," नतालिया सेम्योनोव्ना ने भड़ककर कहा। "मैं सचमुच तुम्हें भला आदमी मानती थी..."

"ठहरें नतालिया सेम्योनोव्ना, एक मिनट ठहरो। मैं यह नहीं चाहता कि इसके साथ वाली बातचीत में कुछ रुकावट आये।"

"ज़िंदगी मेरे लिए बोझ बन गयी है," तीग्रेना ने कहा। "कितने जाड़े आये और गये लेकिन उसमें कोई फ़र्क़ न हुआ! मेरा दिल हमेशा दर्द से घिरा रहा। कितनी ही बार मैंने आत्महत्या की भी कोशिश की..."

इसी बीच लोस और आये कमरे में आ पहुंचे।

"यह भी क्या तरीक़ा हुआ? उधर लोग इकट्ठा हुए हैं और आप लोग यहां अकेले गप लड़ा रहे हैं," लोस ने कहा।

"निकीता सेर्गेयेविच, यहां भी बड़ा महत्वपूर्ण काम हो रहा है," मुस्कराकर आये की ओर देखते हुए अन्द्रेई ने जवाब दिया। "इधर ब्याह की तैयारियां हो रही हैं।"

"अरे वाह! शादी-ब्याह में जाना मुझे बहुत ही पसंद है। कौन तीग्रेना? कहो तीग्रेना, कैसी हो?" मुस्कराकर तीग्रेना की ओर हाथ बढ़ाते हुए लोस ने अभिवादन किया। तीग्रेना ने बड़ी कातरता से उससे हाथ मिलाया। लोस ने उसके साथ सहृदयता और कोमलता से बातें कीं। आये को ऐसा लगा कि वह अपने जीवन के सब से सुखद क्षणों का अनुभव कर रहा है। उसका हृदय आनंद से इतना ओतप्रोत हो गया कि उसके पैर कांपने लगे। नया सूट पहने हुए ही वह फ़र्श पर बैठ गया।

लोस हंस पड़ा और उसका मज़ाक़ उड़ाने लगा। तीग्रेना ने लोस को इतना ख़ुश कभी न देखा था। उसने कभी न सोचा था कि यह दढ़ियल आदमी हंस भी सकता है!

"अच्छा!" लोस ने कहा। "तो हम ब्याह का काग़ज़ बना लेंगे।" दरवाज़े के पास फ़र्श पर बैठे हुए आये की ओर देखकर उसने अपने हाथ फैलाये और बोला: "मगर दोस्त, तुम वहां क्यों बैठे हो? क्या मास्को में तुमने यही सीखा है?"

"ओह, मैं भूल ही गया," आये परेशान होकर फुसफुसाया।

इसी बीच याराक और वामचो भी आ पहुंचे।

"और मेरी कहां है?" लोस ने पूछा।

"वह बराबर मेहमानों की आवभगत में लगी रहेगी," वामचो ने कहा। "उसे यह काम बहुत ही पसंद है।"

"अच्छा, बैठो वामचो।"

वामचो को कुछ हिचकिचाहट महसूस हुई। आये और याराक रूसी पोशाक पहने हुए थे। उसने सोचा कि वह अब उसके साथी नहीं रहे।

"वामचो, आओ बैठो न। आज तुम मेरे मेहमान हो," अन्द्रेई ने कहा।

वामचो ने परेशान होकर कहा:

"मास्टर ने मुझे एक क़मीज़ दी थी लेकिन जल्दी में मैं उसे पहनना भूल गया।"

"ओह, यह बात? आओ, मेरे साथ आओ।"

दोनों आये के कमरे में गये। कुछ ही देर बाद वामचो क़मीज़ और जाकिट पहने वापस आया।

जब तीग्रेना ने उसे इस पोशाक में देखा तो वह हंसते हंसते लोटपोट हो गयी।

सोलहवां अध्याय

उत्सव के लिए आये हुए अतिथियों की भीड़ निर्माण स्थल पर घूम रही थी। वे बड़े कुतूहल से हर चीज़ देख रहे थे। ओह! कितनी लकड़ी थी वहां! हर छोटे तख़्ते से भी एकेक डांड़ बनाया जा सकता था। उस प्रदेश में पेड़-पौधे बिल्कुल नहीं थे। अतः वहां हर खपच्ची की बड़ी क़ीमत थी।

अतिथियों का ध्यान उन दो बड़े बड़े मकानों की ओर आकृष्ट हुआ जो देखते देखते वहां उभर आये थे। अतिप्राचीन काल से सागर का कछार बतख़ों के अनगिनत झुंडों का निवास स्थान रहा था। यहां सफ़ेद डैनों, नुकीली पूंछों और रुपहले परों वाली बतख़ों का एकाधिकार था। बाढ़ के कारण जमी हुई रेत में लंबी टांगों वाली नन्हीं नन्हीं चपल चिड़ियां बेरोक फुदकती-दौड़ती रहती थीं।

किनारे से कुछ दूर अन्य ग्रीष्मकालीन निवासियों का अड्डा था। ये थे राजहंस, श्वेत और नीले कलहंस, कलगीदार लवा और हिम-पक्षी। बड़े ही शांत और नीरव स्थान थे ये!

लेकिन अब यही कछार लकड़ी के कुंदों, लट्ठों और तख़्तों से और निर्माण की अन्य साधन-सामग्री से अटा पड़ा था।

जहाज़ों के चले जाने के समय से ये स्थान कुल्हाड़ियों की खटखट, आरों की भनभनाहट और सोवियत लोगों के कोलाहल से गूंज रहे थे। इस तट-प्रदेश में असाधारण घटनाएं घट रही थीं।

डा० प्योत्र पेत्रोविच के चारों ओर शिकारियों और बहेलियों की एक भीड़ सी थी। वह उन्हें काग़ज़ पर बनाया गया चांदमारी का निशाना दिखा रहा था। काग़ज़ पर बनाये गये छल्लों पर उंगली फेरते हुए वह बड़े जोश से विश्वभाषा के सहारे अपनी बात समझा रहा था।

"धांय! धांय!"

शिकारी गर्दन हिला हिलाकर हंस पड़े। वे अपनी विंचेस्टर बंदूक़ें लिये राह देख रहे थे कि चांदमारी प्रतियोगिता कब शुरू होती है। एक ओर कई बोतलें पड़ी थीं जिनके तले चमक रहे थे।

अधेड़ उम्र वाला एक शिकारी डाक्टर के पास गया और काग़ज़ का निशाना एक ओर ढकेल दिया। बोतलों की ओर संकेत करते हुए वह बड़ी ही गंभीरता से बोल उठा :

"सागर के पानी पर सील का सिर ऐसा दिखाई देता है जैसे बरफ़ पर बोतल। काग़ज़ ठीक नहीं। बोतल ही ठीक है। वह पानी में से सिर उठाने वाले सील जैसी लगती है।"

लेकिन डाक्टर ने आग्रह के साथ दोहराया :

"धांय! धांय!"

चारों ओर से बंदूक़ों की धांय-धांय सुनाई दी। शिकारी लोग चांदमारी का अभ्यास कर रहे थे।

इसी बीच लोस, अन्द्रेई, याराक, आये, तीग्रेना और नतालिया सेम्योनोव्ना वहां आ पहुंचे। महिलाएं सहेलियां बन गयी थीं और बड़े ज़ोर-शोर से बातचीत कर रही थीं। तीग्रेना ख़ुश होना चाहती तो थी लेकिन अपने बर्ताव के बारे में सशंकता की भावना उसे निरुत्साहित कर रही थी। कई जिज्ञासु आंखें उसपर गड़ी हुई थीं।

कुछ दूर स्त्रियों का एक दल खड़ा था। ये बढ़िया पोशाकें पहने हुए थीं। तीग्रेना को देखते ही वे कानाफूसी करने लगीं। तीग्रेना ने तुरंत भांप लिया कि वे उसी के बारे में फुसफुसा रही हैं। स्त्रियां समझ न पायीं कि तीग्रेना के बर्ताव के बारे में कैसा रुख़ अपनायें। बूढ़े आदमी भी पसोपेश में पड़ गये। तीग्रेना का भाग जाना और रूसियों के यहां सहारा लेना उनके लिए एक जटिल समस्या बना हुआ था। उसने अपनी जमात का क़ानून तोड़ा था, लेकिन अलितेत ने भी वही किया था। रूसी लोगों ने तीग्रेना का पक्ष लिया। देखिये, वे तीग्रेना के साथ कैसी घुलमिलकर बातचीत कर रहे हैं।

इल्यीच कुछ दूर खड़ा रहकर तीग्रेना के चेहरे के भाव बारीकी से देखता रहा। कुछ देर बाद उसके पास जाकर बोला :

"तीग्रेना, ये रूसी लोग न्यायी हैं। वे सच्चाई के भक्त हैं। देखो, आये के साथ तुम्हारी मंगनी कभी की हो चुकी थी। अब ये रूसी इस मामले में तुम्हारी मदद कर रहे हैं।"

तीग्रेना बड़ी उत्सुकता से बूढ़े का एक एक शब्द सुनती रही ग्रौर हर मिनट उसे ग्रधिकाधिक सुख की ग्रनुभूति होती गयी। मुस्कराकर वह बोली :

"शुक्रिया इल्यीच। तुम भले ग्रादमी हो।"

"तीग्रेना, जाग्रो। तुम भी मुक़ाबले में हिस्सा लो। तुम ग्रच्छी निशानेबाज़ हो। है न?"

शिकारी लोग पैंतरा साधे बरफ़ पर बैठे थे ग्रौर एक घुटने पर बंदूक़ टिकाकर निशाना बांध रहे थे।

"तीग्रेना, यह लो बंदूक़। बड़ी ग्रच्छी है," ग्राये बोला।

तीग्रेना की ग्रांखें उत्तेजना से चमक उठीं। उसने बारीकी से उस विंचेस्टर का मुग्रायना किया। उसने निशाना लगाने की कल पर उंगली रखकर देखा ग्रौर फिर बंदूक़ ग्राये को लौटा दी।

"ग्राये, मैं गोली नहीं चलाऊंगी। परायी बंदूक़ से निशाना मारना मुश्किल है। ग्रगर मेरा निशाना चूक गया तो लोग मेरी हंसी उड़ायेंगे।"

"ग्ररी, यह मेरी ग्रपनी बंदूक़ है ग्रौर बहुत ही ग्रच्छी है।"

"नहीं, छोड़ दो। वैसे ही मेरे बारे में काफ़ी कानाफूसी हो रही है। तुम ही इस बंदूक़ से काम लो।"

बंदूक़ों की धांय-धांय सुनाई देने लगी। शिकारी बड़ी ग्रधीरता से ग्रपनी पारी की राह देखते हुए बैठे रहे। विजयी निशानेबाज़ को मान-मान्यता के ग्रलावा एक प्राइमस स्टोव, मिट्टी के तेल का एक डिब्बा ग्रौर कारतूसों के दस पैकेट मिलने वाले थे।

हरेक ने सांस रोककर ग्रपनी ग्रपनी बोतल का निशाना साधा। बंदूक़ों की लगातार धांय-धांय से सभी रोमांचित हो उठे। तीन सौ से ग्रधिक गोलियां छूट चुकी थीं। ये गोलियां इस ठंडे तट-प्रदेश में नये उत्सव के निमित्त मानो सलामी के रूप में थीं।

लड़के दौड़े दौड़े बोतलों के पास जाते और ठीक निशाना मारने वाले शिकारियों के नाम पुकारते। अब उत्तेजना चरम सीमा पर थी।

"आये," तीग्रेना यकायक बोल उठी। "दो मुझे बंदूक़।"

"लो, यह लो!" आये ने उसे बंदूक़ थमाते हुए कहा। "वामचो तीन में से दो ही निशाने मार सका।"

बरफ़ पर बैठते बैठते तीग्रेना ने वामचो की ओर देखा और हंसकर बोली :

"ओह वामचो! तुमने स्टोव खो दिया।"

वामचो चुप्पी साधे रहा।

तीग्रेना की बंदूक़ से धांय से गोली छूटी और आये उसका निशाना देखने के लिए दौड़ पड़ा।

"ठीक, बिल्कुल ठीक!" वह ख़ुशी से चिल्लाया। एक क़दम दूर हटकर उसने कहा: "फिर चलाओ गोली!"

"ज़रा और दूर हटो जी। अगर तीग्रेना का हाथ कांप उठा तो कुछ का कुछ हो जायेगा!" भीड़ में से किसी की आवाज़ सुनाई दी।

"चलाओ तीग्रेना, चलाओ गोली!" आये ने आग्रह किया। तीग्रेना की आंख पर उसे अपनी आंख जितना ही विश्वास था।

दूसरी गोली भी ठीक निशाने पर बैठी। फिर आये ने बोतल अपने हाथ में उठा ली और उसकी पेंदी तीग्रेना की ओर करके खड़ा हो गया।

"तीग्रेना, चलाओ गोली," वह चिल्ला उठा। "बोतल मेरे हाथ ही में रहे।"

तीग्रेना ने बंदूक़ नीची कर ली।

"लगता है बच्चू का दिमाग़ ख़राब हो गया है!" बूढ़े इल्यीच ने निषेध के स्वर में कहा। "उससे कहो कि बोतल बरफ़ पर रख दे।"

तीसरी बार गोली छूटी लेकिन इस बार निशाना चूक गया।

"आये ने मेरा निशाना बिगाड़ दिया," तीग्रेना ने परेशान होकर कहा।

वामचो सहानुभूति के साथ उसकी ओर देखकर मुस्कराया।

दोपहर को कुत्ता-गाड़ियों की दौड़ शुरू हुई। दर्जनों बरफ़-गाड़ियां क़तार बांधे खड़ी थीं। कुत्तों की ज़बानें लपलपा रही थीं और बड़ी अधीरता से वे अपनी जोतों के साथ खींचा-तानी कर रहे थे।

उस दिन बरफ़-गाड़ी में कुत्ते हमेशा की तरह दो क़तारों में नहीं बल्कि पंखे की शकल में जोते गये थे। उत्सव के निमित्त यह ख़ास ढंग अपनाया गया था। बम में चार कुत्ते जोते गये थे और इनके आगे तीन, दो और एक के हिसाब से। अगुआ कुत्ता स्वाभाविक ही सब से आगे था। हर गाड़ी में दस-दस कुत्ते थे। इस तरह जोतने में फ़ायदा यह था कि हर कुत्ता चाबुक की पहुंच में आ सकता था।

क्षण-प्रति-क्षण उत्सुकता बढ़ रही थी। लोग ज़ोर-शोर से बहस कर रहे थे, फुरती से हाथ नचा रहे थे और यह भांपने की कोशिश कर रहे थे कि सेहरा किसके सिर होगा।

बूढ़ा इल्यीच बड़ी व्यस्तता से अपने बेटे एरमेन की गाड़ी के चारों ओर कुदक-फुदक रहा था। उसने जल्दी जल्दी कुत्तों की जगहें बदल दीं और अपने बेटे को आख़िरी हिदायतें दे दीं। फिर उसने अगुआ कुत्ते का कान मरोड़ा और ख़ुद एक ओर हो गया।

भला ऐसा कौन हो सकता था जो पुरस्कार में नयी विंचेस्टर और कारतूसों के बीस पैकेट पाने की इच्छा न करता हो! हां, यह सही है कि दूसरा और तीसरा पुरस्कार भी था—आटे का बोरा, कई गज़ छीट, तंबाकू और दूसरी सटर-पटर चीज़ें। भला बंदूक़ के आगे इनकी क्या हस्ती!

"कहो इल्यीच, तुम्हारा क्या कहना है?" लोस ने पूछा।

बूढ़े ने जैसे मतलब समझकर आंख मारी। फिर दौड़ा-दौड़ा अगुआ कुत्ते के पास पहुंचा और उसकी पेटी फिर से ठीक कर दी।

"अन्द्रेई मिख़ाइलोविच, तुम किस गाड़ी पर बाज़ी लगा रहे हो?" डाक्टर ने पूछा।

"आये वाली गाड़ी पर।"

"और मैं याराक वाली गाड़ी पर।"

"ओहो, तब तो तुम्हारी जीत कोसों दूर रही। आये अलितेत की गाड़ी पर सवार है और याराक थामसन की।"

"निकीता सेर्गेयेविच, क्या आप इस बाज़ी में नहीं शरीक होना चाहते?" डाक्टर ने पूछा।

"चाहता क्यों नहीं? मैं एरमेन वाली गाड़ी पर दांव लगाता हूं।"

अन्द्रेई हंस पड़ा।

"क्या कहते हो, निकीता सेर्गेयेविच? अरे, उसके भी कोई कुत्ते हैं? वे तो बिल्लियां हैं, बिल्लियां!"

"कोई बात नहीं। अभी तुम हंस रहे हो लेकिन नतीजा देख ही लेंगे। बोलो, इसी पर लगाते हो बाज़ी?"

"किस चीज़ की बाज़ी होगी?"

"देखो, अगर एरमेन अव्वल आयेगा तो तुम मुझे अपना रीजिक नामक कुत्ता दे देना और अगर आये बाज़ी ले जाये तो तुम मेरे कुत्ता-दल से मनचाहा कुत्ता लेना।"

"ठीक है, मैंने तुम्हारी चुनौती स्वीकार की," अन्द्रेई बोला। "लेकिन मुझे तुमपर तरस आता है। तुम ज़रूर हार जाओगे।"

"सेने से पहले अंडे न गिनो। तो फिर हो जाये न?"

"हां, हां। मैं इशारा दे रहा हूं!"

अन्द्रेई ने पुरस्कार वाली बंदूक़ से एक गोली चलायी।

गाड़ियां फ़ौरन दौड़ पड़ीं। चारों ओर शोरगुल हुआ, ललकार-पुकार सुनाई दी और चाबुकों की फटकारें कानों पड़ने लगीं। एक गाड़ी के कुत्ते शुरू ही में आपस में उलझ पड़े। दर्शकों में हंसी के फव्वारे छूटे। गाड़ीवान गाड़ी से कूद पड़ा, उसने जल्दी जल्दी कुत्तों को ठीक किया और आवेश से चाबुक फटकारता हुआ फिर से गाड़ी दौड़ाने लगा। कुछ देर बाद आगे वाली गाड़ियां पहाड़ी की बग़ल में से निकल आती हुई दिखाई दीं और भीड़ में हलचल मच गयी। दर्शकगण उतेजना में चीखे-चिल्लाये और अपने दस्ताने और टोपियां हवा में लहराने लगे। वे इतने उत्तेजित थे मानो खुद ही गाड़ियां दौड़ा रहे हों।

"याराक! याराक!"

"आये! आये!"

जैसी कि उम्मीद थी, दबंग कुत्तों वाली वही दो गाड़ियां सब से आगे थीं। इनके कुत्ते हवा से बातें करते हुए एक दूसरे को पछाड़ने की कोशिश कर रहे थे। उनकी आंखों से मानो चिनगारियां फूट रही थीं। एक गाड़ी कहीं ज़रा सी आगे गयी कि दूसरी के कुत्ते फ़ौरन झपट्टा मारकर उसके साथ हो लिये।

जैसे ही अंतिम परीक्षा की घड़ी आयी कि आये उछलकर घुटनों के बल बैठा और कुत्तों पर कोड़ा फटकारने लगा। कुत्ता-दल आगे झपट पड़ा। याराक के कुत्ते भी ज़ोरों से टूट पड़े और सीधे आये के कुत्तों से आ टकराये। फिर क्या था? दोनों दलों के कुत्ते भौंकते-गुर्राते आपस में बुरी तरह उलझ गये। कोड़ों की फटकारों की परवाह न करते हुए उन्होंने एक दूसरे को काटना शुरू किया।

याराक और आये ने पूरा ज़ोर लगाकर उन्हें अलग कर दिया।

इसी बीच एरमेन की गाड़ी सरपट दौड़ी आयी। वह मार्ग के कुछ किनारे से दौड़ रही थी। गाड़ी पर एरमेन खड़ा था। उसका

सिर नंगा था और एक हाथ में रास सम्हालकर वह दूसरे हाथ से कुत्तों पर ज़ोरों से चाबुक फटकार रहा था।

भीड़ की उत्तेजना चरम सीमा पर थी।

बूढ़े इल्यीच ने अपना दस्ताना बरफ़ पर पटक दिया, टोपी झटके से उतार ली और बड़े ज़ोर से गरज उठा:

"आओ एरमेन, आओ! जीते रहो पट्ठे!" लोस ने अपने हाथ लहराते हुए बूढ़े का साथ दिया।

एरमेन अव्वल आया। उसके पीछे पीछे वामचो आ पहुंचा।

लोस उत्तेजना से हांफता हुआ अन्द्रेई के पास दौड़ा और हंसकर चिल्ला उठा:

"अन्द्रेई, चलो, अब दो अपना रीजिक!"

इल्यीच ने एरमेन की बरफ़-गाड़ी के अगुआ कुत्ते को लाड़-प्यार से थपथपाया। कुत्ता बरफ़ पर पसरा हुआ था और उसकी गरम ज़बान लपलपा रही थी। एरमेन भी बरफ़ में लेटा हुआ अपने माथे का पसीना पोंछ रहा था।

"मैं जानता था। आख़िर चार्ली और अलितेत की लड़ाई छिड़ ही गयी। मैंने जान-बूझकर ही इन छोकरों को नहीं बताया कि वे अपनी गाड़ियों को अग़ल-बग़ल में न दौड़ायें। बड़े-बूढ़ों से इन्हें कुछ तो सीखना चाहिए," इल्यीच ने कहा। अपनी चालाकी पर वह ख़ुश था।

शाम को देर तक, एक के बाद एक, प्रतियोगिता होती रही। जवान शिकारियों की दौड़, लड़कियों की दौड़, वज़न-उठान और कुश्ती के मुक़ाबले बड़े दिलचस्प रहे। शिकारी लोग खेलकूद के बड़े ही शौक़ीन थे और 'वालरस-शिकार', 'व्हेल पर्व' और 'बिदारका-निर्माण' जैसे उत्सवों के अवसर पर शक्ति, कुशलता और सहनशीलता की प्रतियोगिता का आयोजन करते थे।

लेकिन रूसियों के बड़े बड़े यारंगों के पास जो प्रतियोगिताएं हुई वैसी ग्राज तक कभी न हुई थीं। अक्तूबर क्रांति से चला ग्राता हुग्रा यह नया उत्सव नवजीवन तथा जनता की खुशी का उत्सव था। उसमें संबंधित जाति के सभी उत्कृष्ट गुण प्रतिबिंबित होते थे ग्रौर उसके फलस्वरूप सर्वत्र प्रसन्नता छा जाती थी।

बूढ़ा इल्यीच ग्रांखें सिकोड़कर 'बोरा'-धारी ग्रादमी की बात बड़े ध्यान से सुन रहा था।

उधर डा० प्योत्र पेत्रोविच एक नयी प्रतियोगिता ग्रर्थात् बोरा प्रतियोगिता की शर्तें समझा रहा था। लोगों की भीड़ उसे घेरे खड़ी थी। प्रतियोगिता के लिए चालीस बोरे लाये गये थे।

इल्यीच एकदम ग्रागे बढ़ा ग्रौर ग्रपने लिए बोरा मांग लिया। "मुझे ग्रब वे दिन याद नहीं जब मुझसे तेज़ दौड़ने वाला कोई न था," बोरे में पैर रखते हुए उसने मुस्कराकर कहा। "मुक़ाबले में भाग लेने वाले ग्रादमी को कैसी खुशी होती है यह जाने बिना ही मैं मरने जा रहा था। लेकिन नहीं! ग्रब मैंने देखा कि मैं भी बोरे में खड़ा रह सकता हूं।"

बोरे का किनारा ग्रपने पेट के पास पकड़कर वह उसमें खड़ा हो गया ग्रौर बड़ी चुस्ती से इशारे की राह देखता रहा।

तगड़े नौजवान बोरों में क़दम खोलकर खड़े थे। उन्होंने ज़ोरदार शुरुग्रात करने की कोशिश की लेकिन फ़ौरन गिर पड़े। हंसते हंसते लोट-पोट होकर वे जल्दी जल्दी उठ खड़े हुए ग्रौर फिर से ग्रागे झपटने की कोशिश करने लगे। लेकिन जितनी ही उन्होंने जल्दी की, उतने ही ज़्यादा वे गिरते गये। सारी भीड़ ने क़हक़हा लगाया।

इस बीच इल्यीच बड़ी गंभीरता से ग्रौर शांत भाव से ग्रागे फुदकता जा रहा था। वह नौजवानों के पास पहुंच गया। उनसे ग्रागे

निकल गया और उनकी तरह एक बार भी पीछे न देखते हुए सब से पहले मंज़िल तक जा पहुंचा। वह एक बार भी नहीं गिरा। लाइन पर पहुंचकर वह पीछे को घूमा, बरफ़ पर बैठ गया लेकिन झट से उठकर फुदकता हुआ वापस आने लगा।

ज़ोरदार ठहाकों से वायुमंडल गूंज उठा। इल्यीच की जीत हुई थी। वह बरफ़ पर लेटा और चिल्लाया:

"भाई जल्दी करो। यह बोरा मेरे पैरों से खिसका लो ताकि मैं तंबाकू के चार बंडल ले सकूं!"

तीग्रेना दौड़ती हुई उसके पास पहुंची और बोरा हटा लिया।

"'बोरा' वाला आदमी कहां है? वाह भाई शुक्रिया। लोस ने मेरी जान बचायी और तुमने मेरी जवानी लौटायी। जल्दी करो, मुझे तंबाकू तो दो।"

हंसते हंसते लोगों के पेट में बल पड़ गये।

"इन नौजवानों को भी बूढ़ों से कुछ सीखना चाहिए," इल्यीच उपदेशक के स्वर में बोला।

"तीग्रेना, देखो कैसा बढ़िया त्योहार है यह," आये ने सगर्व कहा। "अन्द्रेई और मैंने मिलकर ही इसका बंदोबस्त किया था। मैं उसका मददगार हूं न!"

सत्रहवां अध्याय

अलितेत अभी तक पहाड़ियों में ही था कि कोराउगे के देहांत और तीग्रेना के भाग जाने की ख़बर उसके पास पहुंची। पिता की मृत्यु का उसपर कुछ भी असर न हुआ क्योंकि इस घटना में अप्रत्याशित कुछ नहीं था। अलितेत केवल यही कहकर रह गया कि "मैंने तो उससे कहा था कि वह ख़ुद ही ऊपर वाली दुनिया के

लिए रवाना हो जाये लेकिन उसने नहीं माना। अब मौत उसे अचानक उठा ले गयी।"

ओझा कोराउगे की मृत्यु की एकमात्र साक्षिणी थी अलितेत की पहली बीवी नारगिनाउत और उसे इस घटना से ख़ुशी ही हुई। यद्यपि वह अलितेत की भावनाएं जानती थी फिर भी उसने बूढ़े की मृत्यु का सही कारण नहीं बताया। उसने सोचा कि अलितेत कहीं ग़ुस्सा न हो जाये। उसने अपनी बहन को याने अलितेत की तीसरी बीवी को भी सच्ची बात नहीं बतायी।

तीग्रेना के चले जाने के बाद नारगिनाउत जल्दी जल्दी बूढ़े का शव पोलोग में खींच लायी और फ़ौरन लोगों को ख़बर कर दी कि बूढ़ा ऊपरी दुनिया को चला गया। उसने शायद तीग्रेना से बहुत ग़ुस्सा होकर दम तोड़ा था!

कुछ भी हो, तीग्रेना के भाग जाने से अलितेत भड़क उठा। पहाड़ियों का कामकाज छोड़कर वह उसी दिन घर की ओर रवाना हो गया। वह जानता था कि तीग्रेना को वापस ले आने की राह में कितनी अड़चनें हैं। लेकिन फिर भी उसने हर हालत में उसे लौटा लाने का निश्चय किया। उसे अच्छी तरह मालूम था कि ज़माना बदल गया है और तीग्रेना के भाग जाने में रूसियों ने ज़रूर दख़लन्दाज़ी की है। वह पूरे तौर से जान चुका था कि तीग्रेना को फिर से पाना अब भगौड़े कुत्ते को वापस लाने जितना आसान नहीं रहा। इन बातों के ख़याल ने उसकी क्रोधाग्नि में जैसे तेल उंडेला। पागल आदमी की तरह वह दो दिन और दो रात कुत्तों को बराबर दौड़ाता रहा और साथ साथ तीग्रेना को वापस लाने के विभिन्न उपाय सोचता रहा।

उसे अपने बूढ़े और किफ़ायती दोस्त लिओक की याद हो आयी। इस राह से होकर जाते हुए अलितेत अक्सर उसके यहां ठहरता था।

लेकिन अब शायद उसकी भी अक़्ल पर परदा पड़ गया था और वह आर्टेल में दाख़िल हो गया था। आख़िर किनारे पर यह सब क्या हो रहा था!

अलितेत को इन पीड़ादायक प्रश्नों का कोई उत्तर न मिला। वह जल्दी जल्दी घर आया, नारगिनाउत से सारी घटना का विस्तृत ब्यौरा पूछा और फ़ौरन तीग्रेना की खोज में रवाना हो गया। उसे फिर लिग्रोक का और उसके साथ अपनी पुरानी मैत्री का स्मरण हो आया और उसने निश्चय कर लिया कि लिग्रोक से एक बार मिल ही लूं। उसके मन में विचार आया कि मैं लिग्रोक को रूसियों से अलग कर दूंगा और फिर वह शायद तीग्रेना को छुड़ा लाने में मेरी मदद करेगा। "रूसी लोग उसकी बात मानते हैं," अलितेत ने सोचा। "वह उन्हें हमारे क़ानून के बारे में और तीग्रेना की बेहयायी के बारे में बता देगा।"

अलितेत को ख़बर मिली कि लावरेंती खाड़ी के पास एक बड़ा त्योहार मनाया जा रहा है और उसमें शरीक होने के लिए किनारे के सभी बाशिंदों को नेवता दिया गया है। उसने यह भी सुना कि लिग्रोक को भी रूसी त्योहार में बुलाया गया है लेकिन वह गया नहीं।

त्योहार के लिए रवाना होने का समय आया ही था कि लिग्रोक की पीठ में यकायक दर्द शुरू हो गया। और वह पीठ पीछे हाथ बांधे कराहता और ओय्, ओय् करता हुआ इधर उधर दौड़ता रहा। वह इस तरह कराह रहा था मानो उसे तीव्र वेदना हो रही हो। लेकिन लोगों को धोखा देना इतना आसान न था। लोग जानते थे कि दर्द होते हुए भी लिग्रोक कभी कराहता नहीं। असल में वह इसलिए कराह रहा था कि त्योहार में नहीं जा सका था।

अलितेत को अपने यारंग में देखकर लिग्रोक फूला न समाया।

"ओहो, तुम आ गये?" लिग्रोक ने उसका अभिवादन किया।

"हां, मैं काम से आया हूं," अलितेत ने इस स्वागत से बढ़ावा पाकर कहा।

आराम से बारहसिंगों की खालों पर बैठकर उसने पाइप निकाली और एक मोटी सी अमरीकी माचिस फट से रगड़कर अपने आगमन के महत्व पर जैसे बल दिया। पाइप सुलगाकर उसने घुमा-फिराकर बात शुरू की।

"अगर ये रूसी यहां देर तक रहे तो मेरिकन माचिस मिलना नामुमकिन हो जायेगा।"

"माचिस वाली बात छोड़ दो। माचिस कोई ख़ास चीज़ थोड़े ही है?" लिग्रोक ने लोस के शब्दों का प्रयोग करते हुए जवाब दिया। "आग आग ही है। चाहे वह मेरिकन माचिस से निकले, चाहे रूसी माचिस से और चाहे दो लकड़ियों से ही। आग आग है और आग कैसी भी हो, वह गरम होती है।"

लिग्रोक के इन तर्कों से अवाक् अलितेत उसे सिर्फ़ घूरता रहा। वह समझ न सका कि आगे क्या कहे।

"तुम भी आर्टेल के आदमी बन गये?"

"हां, बन गया। मैंने तय किया है कि मैं नयी ज़िंदगी अपनाऊंगा। यह ज़िंदगी बुरी नहीं है। इसमें जितना चाहो गोश्त उड़ाओ!"

"हां, यह ज़िंदगी बुरी नहीं," अलितेत बुदबुदाया। "लेकिन बात यह है कि ये रूसी बड़े झगड़ालू हैं। इन्होंने हमारे लोगों के बीच दुश्मनी के बीज बोये हैं।"

"भाई मैंने तो ऐसा नहीं देखा," लिग्रोक ने अपनी एक आंख अलितेत पर गड़ाकर व्यंगपूर्ण स्वर में कहा।

"मेरिकन इनसे अच्छे थे।"

"अच्छे थे?" लिग्रोक ने पूछा और फ़ौरन ख़ुद ही जवबा दिया, "रूसी समझदार हैं। हां, यह सही है कि सब के सब ऐसे नहीं हैं। उनमें से उम्र में जो बड़े हैं वे सचमुच समझदार हैं। लोस ही को देखो न–वह ऐसा आदमी है जो ज़िंदगी को जानता है। एक जवान रूसी व्हेल की तसवीर खींचना चाहता था। लेकिन लोस ने उसे मना कर दिया। वाह, क्या नज़र थी उस वक़्त लोस की! 'इसे कहते हैं आदमी' मैंने सोचा। वहीं मैंने तय कर लिया कि ज़िंदगी बदल डालने में मैं उसकी मदद करूंगा। देखो, यह है वह छोटी सी किताब, इसे कार्ड कहते हैं। यह किताब ख़ुशियां लाती है," लिग्रोक ने अपना पार्टी-कार्ड दिखाते हुए कहा। "मैं 'आगे बढ़ने वाला' आदमी हूं। ऐसी है यह किताब, समझे?"

अलितेत ने वह छोटी सी लाल किताब अपने हाथ में लेकर उलटी-पुलटी और लिग्रोक की फ़ोटो पर नज़र गड़ा दी। लिग्रोक आगे बोलता गया।

"सुना है कि ब्राउन वापस नहीं आया। लोग कहते हैं कि वह धोखेबाज़ बन गया है। वह मेरिकन है। है न?"

अलितेत ने लिग्रोक का कार्ड लौटा दिया, पाइप का ज़ोरदार कश लगाया और देर तक विचारों में डूबा रहा। उसे यह स्वीकार करने में शर्म लग रही थी कि उस अमेरिकन ने उसके साथ चालाकी की है। आख़िर वह बोल उठा:

"हो सकता है कि स्कूनर टूट गया हो। कुछ परवाह नहीं। देखो, मैं अपती रोवेंदार खालें तुम्हारे पास ले आऊंगा। रूसियों के साथ तुम्हारी दोस्ती है। तुम उनसे माल ख़रीद सकोगे। बस, आधा माल अपने लिए रख लेना और आधा मुझे दे देना। मैं तो भाई उनका दुश्मन हूं। वे मुझसे सौदा नहीं करना चाहते।"

"ओह, यह माल तो बहुत हो जायेगा। तुम्हारे पास तो सारे टुंड्रा की खालों का अंबार है।"

"हां, काफ़ी माल होगा।"

"और आधा माल मेरा हो जायेगा? लेकिन इतना माल पाकर मैं करूंगा क्या? लेन-देन तो मुझे पसंद नहीं। मैं बड़ा शिकारी जो हूं!" लिग्रोक गर्व से बोला। "ये गोरे चेहरे वाले लोग भले ही सौदागरी करें। अपना माल वे ख़ुद जो बना लेते हैं। मैं बनाता हूं सिर्फ़ तस्मे और उनके बदले में पाता हूं बारहसिंगों की खालें जो मेरी जीविका के लिए ज़रूरी हैं। माल का अंबार पाकर मैं क्या करूंगा?"

"तुमसे कौन कहता है कि सौदागरी करो। तुम माल देकर ज़िंदा बारहसिंगे ले सकते हो। क्या तुम नहीं चाहते कि अपने पास बारहसिंगों का एक बड़ा रेवड़ हो। किनारे का हर बाशिंदा यही सपना देखता है न?"

"क्या कहा, बारहसिंगों का रेवड़?" लिग्रोक ने कुतूहल से पूछा। "तुम मुझे बारहसिंगों का रेवड़ भेंट करना चाहते हो? यह बात मेरी समझ में नहीं आती। अरे भाई, मैं तुम्हारा रिश्तेदार थोड़े ही हूं!"

"सुनो, तुम मेरी मदद करो और मैं तुम्हारी करूंगा।"

"मैं इसपर विचार करूंगा। मैं लोस से सलाह कर लूंगा। वह समझदार आदमी है और हम दोनों दोस्त बन गये हैं।"

"उससे सलाह-वलाह न करो। मुझे इन रूसियों से नफ़रत है," अलितेत ने कहा और उसके चेहरे पर उदासी छा गयी। "तीग्रेना भागकर उनके पास चली गयी है। लगता है कि वे उसे वहीं रखना चाहेंगे। लेकिन कुछ भी हो मैं उसे वापस लाकर ही रहूंगा। आख़िर ये रूसी हमारे लोगों को बिगाड़ क्यों डालते हैं और क्यों हमारे बाप-दादों से चले आये रस्म-रिवाज तोड़ डालते हैं? कितने साल मैंने उसे खिलाया-पिलाया और कैसे कैसे कपड़े-लत्ते उसके लिए लाता रहा।"

"हां, बाप-दादों के रस्म-रिवाज नहीं तोड़ने चाहिए," लिम्रोक ने हामी भरी। "क़ानून क़ानून है। अगर पुराना क़ानून दम तोड़ दे तो उसकी जगह नया क़ानून पैदा होना चाहिए। आख़िर बिना क़ानून के आदमी रहे भी तो कैसे? बिना क़ानून के कुत्ते रह सकते हैं... और तुम्हीं बताओ – हमारे बाप-दादों का क़ानून तुमने क्यों तोड़ डाला? बोलो, क्यों तोड़ डाला? क्या तीग्रेना यानराकेनोत वाले उस जवान की याने आये की मंगेतर नहीं थी? मैंने सुना है कि बचपन से ही उसकी मंगनी पक्की हो गयी थी। तो फिर तुम क्यों उसे भगा ले गये?"

"मैं धनी हूं, मेरे पास खाने-पीने की काफ़ी चीज़ें हैं। क्या आये उसे अच्छी तरह खिला-पिला सकता?"

"सुना है कि अब वह एक लोहे के जहाज़ का कप्तान बन गया है। अब उसके पास काफ़ी खाना-पीना है।"

"लेकिन मुझे तीग्रेना के बिना चैन नहीं आता। उसके बिना मुझे खोया-खोया सा लगता है। कुछ भी हो, मैं उसे लाकर ही रहूंगा।"

"तुम्हारी मर्ज़ी," लिम्रोक कुछ हिचकते हुए बोला।

"लेकिन लिम्रोक, तुम मेरे दोस्त हो। लोग तुम्हारी बात सुनते हैं और रूसी तुम्हारा कहना मानते हैं। तुम्हें किनारे की बस्तियों में यह बात फैलानी चाहिए कि घर लौट जाना तीग्रेना का फ़र्ज़ है। मेरे पहुंचने से पहले ही यह बात फैल जाये।"

लिम्रोक चुप रहा, फिर यकायक पीठ पीछे हाथ बांधकर कराहने लगा:

"ओय, ओय! मेरी पीठ में कैसा दर्द हो रहा है! काम ही की वजह से यह दर्द होता है। मैं लकड़ी की व्हेल-नाव बनाने की सोच रहा हूं। लोस ने मुझे तख़्ते देना क़बूल किया है।"

एक औरत ने मेज़ पर मग ला रखे और चाय डालना शुरू किया।

"चलो, चाय हो जाये," लिग्रोक बोला।

अलितेत खट से बोल उठा :

"मुझे चाय नहीं चाहिए। मैं जल्दी में हूं। मैं चला।"

"ऊंह, तुमने सोचा कि तुम लिग्रोक को उल्लू बना सकोगे! नहीं, यह तुम नहीं कर सकते। और आज तुम चाय तक नहीं चाहते? अच्छा भाई, इतनी जल्दी है तो फिर विदा।"

अठारहवां अध्याय

त्योहार के बाद लोस ने निर्माण स्थल पर क्रांति-समिति की बैठक बुलायी। बैठक में निर्णय किया गया कि लोरेन का अस्थायी अस्पताल बंद किया जाये और रेड क्रॉस सेवकों को सांस्कृतिक सेवा केंद्र के नवनिर्मित अस्पताल में भेज दिया जाये। व्यापार-केंद्र के बारे में भी ऐसा ही निर्णय किया गया। बोर्डिंग स्कूल और पशु चिकित्सा एवं प्राणि-विज्ञान प्रविधि केंद्र के निर्माण का काम तेज़ी से करने के संबंध में एक प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।

बरफ़ीले तूफ़ान के बावजूद निर्माण स्थल का काम बराबर जारी रहा। अन्द्रेई जुकोव जी-जान से नये काम में जुटा रहा। रिहायशी मकान अभी तक तैयार नहीं हुए थे। यद्यपि काम की अच्छी प्रगति हो रही थी, फिर भी अन्द्रेई को लोस के सलाह-मशविरे की बड़ी ज़रूरत महसूस होती थी।

"निकीता सेर्गेयेविच, तुम बार बार हमसे मिला करो। तुम जानते ही हो कि मैं अच्छा-ख़ासा प्रशासक और कार्याध्यक्ष नहीं हूं।"

"ठीक है अन्द्रेई। लेकिन तुम अपने को इतना छोटा न मानो। तुम्हारा काम अच्छा हो रहा है। काम का रुख़ भी तुमने सही अपनाया

है। बस, काम पूरा करने के लिए कुछ ग्रौर चुस्ती ग्रौर दृढ़ता ज़रूरी है।"

वे बरफ़ में खड़े थे। पास ही लट्ठों का ढांचा उभर रहा था। लोस ग्रन्द्रेई के कंधे पर हाथ रखकर बोला:

"ग्रन्द्रेई, प्यारे दोस्त, कुछ ग्रौर हिम्मत ग्रौर ग्रात्मविश्वास से काम लो। चादर देखकर पैर फैलाग्रो लेकिन इस बात का ख़याल ज़रूर रखो कि फ़ोरमैन बराबर काम कर रहे हैं। उससे कह दो कि कार्यक्रम के ग्रनुसार काम पूरा होना ही चाहिए। भले ही बरफ़ीला तूफ़ान हो या ग्रौर कुछ। लगाम ठीक से पकड़े रखो ग्रौर ज़रा भी ढील न दो। नहीं तो बहानों का तांता लग जायेगा। लोग उत्तर की कठिन स्थिति का नाम लेंगे, तूफ़ानों का ज़िक्र करेंगे फिर थकान का उल्लेख होगा ग्रौर ऐसे ही कई बहाने ग्रागे ग्रायेंगे। तो यह बात है, ग्रन्द्रेई मिख़ाइलोविच।"

लोस ने ग्रांख मारी ग्रौर ग्रागे बोला:

"ग्रौर सुनो, एक महीने बाद मैं तुम्हें ग्रौर फ़ोरमैन को ग्रपनी रिपोर्ट पेश करने के लिए क्रांति-समिति में बुला लूंगा।"

"ग्रौर हमें फटकारोगे, यही न?"

"हां यही। ग्रब प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों के बारे में। ध्यान रखो कि तुम्हें ग्रपने इलाक़े में शिकार का मौसम शुरू होने से पहले मोटर-चालकों का प्रशिक्षण पूरा करना चाहिए। ग्रौर इसके बारे में कोई किंतु-परंतु नहीं चलेगा। ग्रोसिपोव शीघ्र ही यहां ग्रा पहुंचेगा। ग्राये इस मामले में बहुत उत्साही है लेकिन ग्रभी ख़ुद उसे काफ़ी मदद की ज़रूरत है। हां, यह सही है कि इधर वह बड़ा ग्रादमी बन गया है। दिन दूनी रात चौगुनी उसकी प्रगति हो रही है। बड़ी ख़ुशी की बात है कि हमें ग्रच्छे ग्रच्छे कार्यकर्ता मिल रहे हैं!"

"हां, ग्राये की हैसियत सचमुच बढ़ गयी है। ग्रब वह 'बीवी वाला ग्रादमी' है ग्रौर उसके एक बेटा भी है," ग्रन्द्रेई ने खुशी से कहा।

"ग्रौर देखो, तुम्हें तीग्रेना को भी कुछ काम देना होगा। मुझे वह लड़की बड़ी ग्रच्छी लगती है। वह ज़रूर ग्रच्छा काम करेगी। वह बड़ी साहसी है।"

"मैंने पहले ही डाक्टर से कह दिया है। हम तीग्रेना को नर्स के पद पर नियुक्त कर रहे हैं।"

"ठीक है, शुरू में उसके लिए इतना काफ़ी है। वह कुछ कामकाज सीख-समझ ले ग्रौर जब यहां की क्रांति-समिति ज़िला कार्यकारिणी समिति बन जायेगी तो हम उसे समिति पर चुनवा लेंगे। वह ग्रच्छी कार्यकर्त्री सिद्ध होगी। नये जीवन-पथ के लिए वह तरस रही है–यह उसके ख़ून ही में है।"

इधर तीग्रेना को काठ के यारंग का जीवन बड़ा ग्रजीबोग़रीब लग रहा था। वहां की हर बात उसे विचित्र लग रही थी। पुरानी ग्रादतें त्यागना भी कठिन लग रहा था। शुरू शुरू में इस नये जीवन से वह ऊब उठी। उसे ग्राश्चर्य हुग्रा कि ग्राये ने कैसे इतनी जल्दी नयी ग्रादतें डाल लीं। ख़ैर, कुछ भी हो, ग्राये के साथ ग्रपना जीवन उसे बड़ा ग्रच्छा लग रहा था। ग्रसल में इसी के लिए वह तरस रही थी। उसके साथ रहते हुए वह कैसी भी नयी ग्रादत ग्रपना सकती थी।

एक दिन ग्राये एक किशोरी को ग्रपने साथ ले ग्राया ग्रौर बोला :

"तीग्रेना, यह है बेर्ता। रूलतिना ने उसे एक जाड़े के लिए हमारे यहां रहने की इजाज़त दे रखी है। वह हमारे ग्रायवाम के साथ खेलेगी। तुम जब ग्रस्पताल जाग्रोगी तो बच्चा ग्रब घर पर

अकेला न रहेगा। देखो, दरवाज़े में कुंडी लगी हुई है। जब हम यहां नहीं होंगे तो दरवाज़े में ताला लगा सकेंगे। महाद्वीप में तांग लोग इसी तरह रहते हैं।"

तीग्रेना ने ठहाका लगाया।

"फिर यहां कोई रीछ नहीं ग्रा सकेगा..." फिर यकायक उसके मन में यह भयानक विचार ग्राया कि "कहीं ग्रलितेत ग्रायवाम को उठा ले जाने ग्राया तो?"

दरवाज़े के पास जाकर उसने कुंडी की जांच की।

"बेर्ता, देखो इस तरह कुंडी चढ़ाया करो। जब तुम मेरी या ग्राये की ग्रावाज़ सुनो तभी दरवाज़ा खोलना।"

ग्राये एक चारपाई घसीट लाया ग्रौर तांगों के जीवन के विशेषज्ञ की तरह बिस्तर बनाने लगा।

फिर ग्रायवाम को उस छोटी सी चारपाई पर सुलाकर बोला:

"तीग्रेना, इस मुन्ने को भी नये तरीक़े से रहने दो।"

मुन्ना हंस पड़ा।

"ग्राये, वह इतना छोटा है कि नये तरीक़े से रहना उसके लिए दूभर हो जायेगा। वह उधर से गिर पड़ेगा ग्रौर बेचारे की टांग टूट जायेगी। फिर वह शिकारी नहीं बन सकेगा।"

"ग्ररी, गिरेगा कैसे? इसमें छड़ें जो लगी हुई हैं। रूसी कारीगर ने ख़ास मेरे लिए यह काम किया है। देखो, ये छड़ें कैसी मज़बूत हैं। ग्रौर वैसे ख़ुद ग्रायवाम भी गिरना नहीं चाहेगा। ग्रब वह सब कुछ समझने लगा है।"

ग्राये सभी तरह के रूसी मामले निपटाने के लिए ग्रक्सर ग्रासपास वाली बस्तियों के दौरे करता था ग्रौर लौटते समय हमेशा सील का मांस ले ग्राता था। कभी कभी तो वह दो-दो तीन-तीन दिन बाहर ही रहता था। तब तीग्रेना का मन ऊबने लगता।

"बेर्ता," उसने एक दिन कहा, "ग्रायें जल्दी ही लौट ग्रायेगा। चलो हम तांगों वाला खाना तैयार कर लें।"

"हां चलो। मुझे मालूम है कि रूलतिना चार्ली के लिए कैसा ख़ास खाना बनाया करती थी।"

"ग्ररे यह तो मैं भी जानती हूं। मेरिकन जिम ने ही मुझे सिखा दिया था।"

तीग्रेना मांस के टुकड़े बना रही थी कि इतने में नतालिया सेम्योनोव्ना वहां ग्रा पहुंची। उसे देखकर तीग्रेना हड़बड़ा उठी। ऐसा काम करते समय कोई देखे तो वह झेंप जाती थी। उसने झटपट मांस ढंक दिया ग्रौर एक कोने में छिपा दिया।

नतालिया सेम्योनोव्ना सीधे ग्रायवाम के पास जाकर उसके साथ खेलने लगी। उसने सोचा कि तीग्रेना यों ही परेशान न हो उठे। ग्रायवाम ने हंसते हुए ग्रपने हाथ उसकी ग्रोर बढ़ाये ग्रौर चुकची में कुछ बोल उठा। तीग्रेना ख़ुशी की मुस्कराहट छिपाते हुए उन्हें निहारती रही। उसे यह जानकर बड़ी ख़ुशी हुई कि नतालिया सेम्योनोव्ना ग्रायवाम को प्यार करती है। वैसे वे ग्रभी तक एक दूसरे की बात शायद ही समझ पाती थीं। लेकिन मुस्कराहट के द्वारा उनके परस्पर सहानुभूति के भाव गहरे होते जा रहे थे।

नतालिया सेम्योनोव्ना कुछ छीट ले ग्रायी थी ग्रौर ग्रायवाम की ग्रोर इशारा करते हुए यह समझाने की कोशिश कर रही थी कि यह कपड़ा उसी के लिए है। उसने एक क़मीज़ की कटाई की ग्रौर वह तथा तीग्रेना मिलकर सीने लगीं। वे सीती जा रही थीं ग्रौर हंसते जा रही थीं ताकि चुप रहते रहते ऊब न जायें।

शाम को नतालिया सेम्योनोव्ना एक छोटा सा टब ले ग्रायी ग्रौर उसमें कुनकुना पानी उंडेलकर ग्रायवाम को उसमें बैठा दिया। बच्चा ज़ोर ज़ोर से रोने लगा ग्रौर उसकी ग्रांखों में ग्रांसू उमड़ ग्राये।

तीग्रना के जी में आया कि नतालिया सेम्योनोव्ना के हाथ से बच्चे को फ़ौरन छीन ले। लेकिन आयवाम का रोना बंद हो गया। अब वह हंस रहा था।

वह पोखरे की बत्तख़ की तरह कमरे में चारों ओर पानी उछालने लगा।

"वाह नताशा, वाह!" तीग्रेना रूसी में बोल उठी। लेकिन वैसे यह बेकार का खेल उसे दिल से पसंद न था।

इधर बच्चा बड़ा ख़ुश था। लग रहा था जैसे वह नयी ज़िंदगी के लिए ही पैदा हुआ हो। नहाने के बाद वह गहरी नींद में सो गया। तीग्रेना अस्पताल चली गयी। उस शाम को वहां उसकी ड्यूटी थी।

वह सफ़ेद चोग़ा पहने थी जो पेटी से कसा हुआ था। इस पोशाक में वह बड़ी रोबदार लग रही थी। यहां उसके चारों ओर ख़ुशदिल और सीधे-सादे लोग थे। तीग्रेना को भी यहां बड़ा अच्छा लग रहा था।

"तो यह है नयी ज़िंदगी!" उसने सोचा।

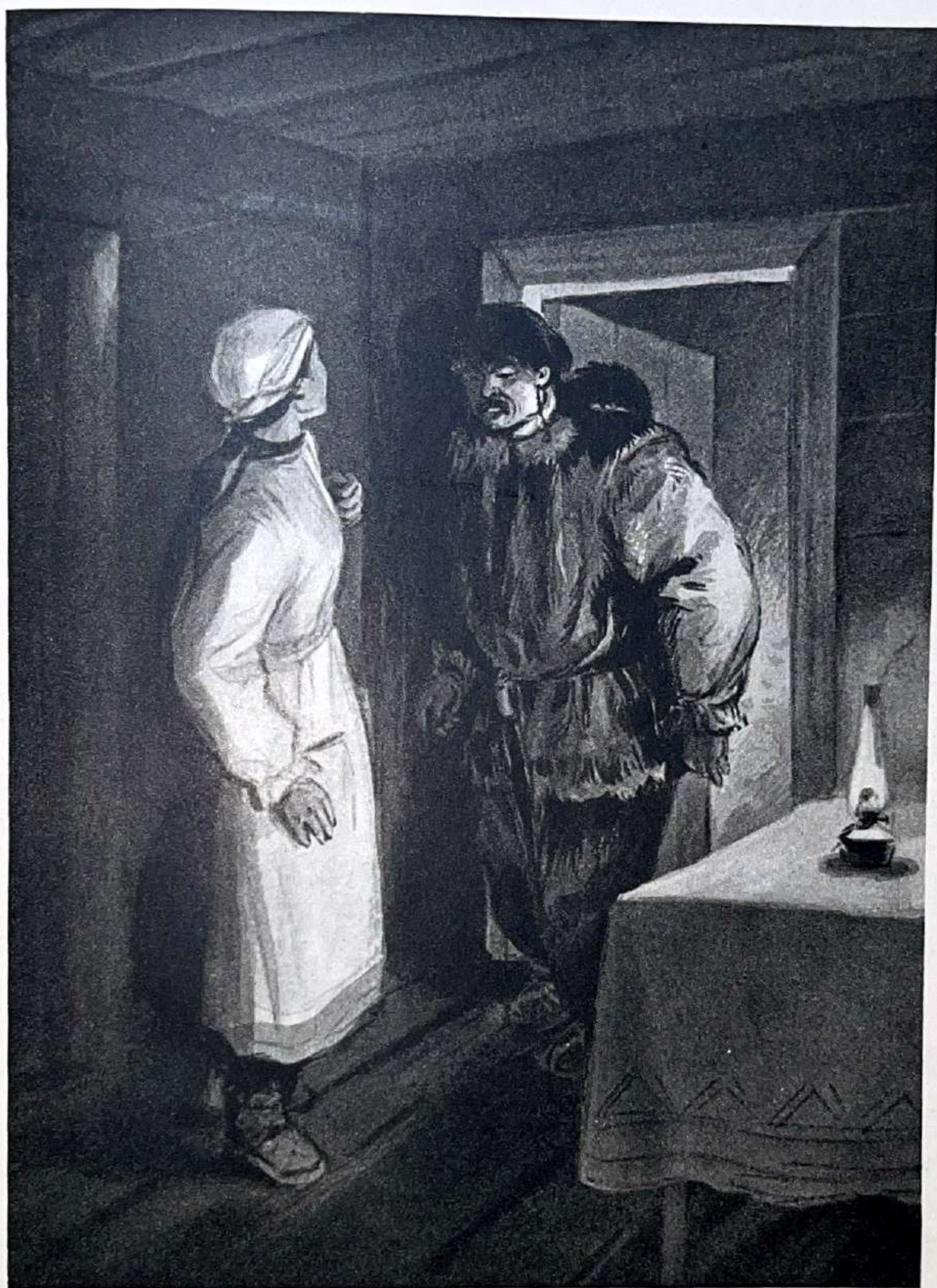
तीग्रेना पर नज़र दौड़ाते हुए डाक्टर ने अपनी प्रशिक्षित नर्स से कहा:

"ज़रा मैडम आये की ओर देखो तो! वाह भाई, तुम औरतों पर तो पोशाक जादू कर देती है। पूरा नक़्शा ही बदल डालती है।"

"कुछ भी हो डाक्टर, आप तीग्रेना पर ज़रा ज़्यादा ध्यान देने लगे हैं," नर्स बोली। "मुझे शायद आपकी बीवी को तार देना चाहिए।"

"इसमें आश्चर्य क्या है? वह सचमुच सुंदर है।"

डाक्टर ने तीग्रेना को काम के घंटों में भी आयवाम के लिए घर जाने की इजाज़त दे रखी थी। वह पाले में भी अपनी अस्पताली



पोशाक पहने और सिर पर सफ़ेद रूमाल बांधे बार बार घर की ओर दौड़ती। उसे इस पोशाक में देखना आये को बड़ा अच्छा लगता था। वह उसे रूसी ओज़ाइन कहा करता था। तीग्रेना हंस देती थी। चोग़ा उतारकर वह आये के कंधे पर रख देती और खिलखिलाकर हंसते हुए अपनी पेटी कस लेती। मां की देखादेखी आयवाम भी हंस उठता।

आये गाल फुलाकर शीशे में देख लेता और ख़ुद भी हंस उठता। उस समय उसके चेहरे पर बड़प्पन का भाव दिखाई देता।

"आये, मुझे जल्दी जल्दी रूसी सिखाओ न। अस्पताल में सिर्फ़ हाथों और आंखों से काम करते हुए आदमी ऊब जाता है।"

एक दिन शाम को वह दौड़ती हुई घर पहुंची, गलियारे का दरवाज़ा खट से खोला और देखती क्या है कि सामने अलितेत खड़ा है।

तीग्रेना का चेहरा फक पड़ गया और वह एकदम पीछे हट गयी। उसकी घिग्घी बंध गयी और वह अलितेत के उग्र चेहरे को चुपचाप घूरती रही।

संकुचित गड्ढों में धंसी हुई अलितेत की चमकदार आंखों से चिनगारियां फूट रहीं थीं। उसकी क्रूर नज़र तीग्रेना पर गड़ी हुई थी।

"बरफ़ जैसे सफ़ेद कपड़े में तुम्हें लपेट किसने दिया?"

तीग्रेना को मानो सांप सूंघ गया। उसके मुंह से एक शब्द भी न निकल सका। अलितेत की पेटी से लटकने वाले रेमिंग्टन छुरे की चमकदार पीतल की कड़ी पर उसकी नज़र पड़ी।

"अब तुम चुकची औरत नहीं रहीं और न हमारी जमात का क़ानून तोड़ने से ही डरती हो। ऐं? क्या तुम्हारा यह ख़याल है कि तुम्हारे इस पागलपन से पिशाच ख़ुश हो जायेंगे?"

तीग्रेना एक क़दम पीछे हट गयी। वह चीखना चाहती थी लेकिन उसकी आवाज़ गले ही में अटक गयी।

"मुझसे कतराओ नहीं। मैं तुम्हारा शौहर हूं। बरसों से तुम मेरे यारंग में गोश्त गटकती आयी हो। और तुम्हें याद है, कामेनवात जब ज़िंदा था तो मैंने उसे चार कुत्ते देकर तुम्हारी क़ीमत चुकता कर दी थी। उतार दो ये बेकार के कपड़े और चलो मेरे साथ। इस शैतान की गढ़ी से हम फ़ौरन चले जायें। यहां तुम्हारा सत्यानास हो जायेगा। तुम्हारे बरताव से दुष्ट पिशाच बिगड़ उठे हैं। देखो, मेरी बरफ़-गाड़ी में सोलह कुत्ते जुते हैं।"

तीग्रेना ने गर्दन उठाकर अलितेत की ओर क़दम बढ़ाया और साहसपूर्वक उसकी आंखों से आंखें मिलायीं।

"नहीं!.. तुम मेरे शौहर नहीं हो।" तीग्रेना गरज उठी। "मेरा शौहर है आये। तुम मुझे उसके पास से छीन लाये थे। असल में तुम्हीं ने हमारी जमात का क़ानून तोड़ा।"

अलितेत ने उसे ज़ोर से एक ओर ढकेल दिया और बाहर के दरवाज़े की ओर झपट पड़ा।

तीग्रेना ने साहस बटोरकर फ़ौरन उसे रास्ते से हटा दिया और तीर की तरह बाहर को दौड़ी। फिर पीछे न मुड़ते हुए वह नतालिया सेम्योनोव्ना के कमरे की ओर भागी और एकदम कमरे में घुस गयी। उसका चेहरा पीला पड़ रहा था और वह मारे डर के कांप रही थी। नतालिया सेम्योनोव्ना के पास जाकर उसने उसके गले में बाहें डाल दीं और सिसकती हुई फुसफुसाने लगी :

"बड़ी मुश्किल है, नताशा।"

"क्या हुआ तीग्रेना? किसी ने तुम्हें परेशान तो नहीं किया?" नताशा ने घबड़ाहट के स्वर में पूछा।

"आये तो यहां नहीं," तीग्रेना ने रूसी में जवाब दिया।

नतालिया सेम्योनोव्ना ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कोमल सहानुभूतिपूर्ण स्वर में कहा :

"अरी पगली, वह जल्दी ही आयेगा। वह सिर्फ़ तीन दिन के लिए मिलीशियामैन के साथ गया है। वे दोनों आज ही वापस आयेंगे। देखो, मौसम कैसा बढ़िया है और रास्ता भी साफ़ है ..."

इसी बीच गलियारे से अलितेत की आवाज़ सुनाई दी:

"किस दरवाज़े से तीग्रेना चली गयी?"

तीग्रेना साहस बटोरकर दरवाज़े की ओर झपटी और दोनों हाथों से कुंडी चढ़ा दी।

"अलितेत!" वह घबड़ाकर फुसफुसा उठी।

"अलितेत!" नतालिया सेम्योनोव्ना ने आश्चर्य से दोहराया। "कोई बात नहीं तीग्रेना, उसे अंदर आने दो। तुम बिल्कुल न डरो!" दरवाज़ा खोलने के विचार से उसने तीग्रेना को ज़ोर से एक ओर ढकेल दिया। लेकिन तीग्रेना पूरे ज़ोर के साथ कसकर कुंडी पकड़े रही।

"जब अलितेत सामने नहीं होता तो तुम बड़ी बहादुरी की बातें करती हो," तीग्रेना ने कठोर स्वर में कहा। "इधर तुमने अलितेत की आवाज़ सुनी और बस, बंध गयी तुम्हारी घिग्घी। तुम्हीं उसे मौक़ा दे रही हो। लगता है कि तुम वैसी ही कमज़ोर हो जैसी भेड़िये के आगे हिरनी। मैं तुम्हें डरने नहीं दूंगी। आने दो उसे अंदर।" तीग्रेना ने कुंडी हटायी और दरवाज़ा खोल दिया।

"आओ अंदर!" नतालिया सेम्योनोव्ना ने हुक्म सा देते हुए कहा। "बोलो, तीग्रेना से तुम क्या चाहते हो?"

अलितेत आगबबूला हो उठा था। उसने इस रूसी औरत की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखा। वह फुफकार उठा:

"तुम औरत हो। तुमसे बातें करना फ़िज़ूल है। मैं तुम्हें अपने यारंग में ले जाकर ही सांस लूंगा," यह कहते हुए अलितेत ने तीग्रेना की बांह पकड़ ली।

नतालिया सेम्योनोव्ना ने बीच में आकर अलितेत के पंजे से तीग्रेना की बांह छुड़वाने का प्रयास किया किंतु व्यर्थ।

"इस गोरे चेहरे वाली औरत को क्या चाहिए?" अलितेत गुर्रा उठा। उसने पूरा ज़ोर लगाकर नतालिया सेम्योनोव्ना को ऐसा धक्का दिया कि वह फ़र्श पर लुढ़क गयी।

शोरग़ुल सुनकर आये दौड़ आया। वह अभी अभी दौरे पर से लौटा था।

"जल्दी करो, लोस को बुलाओ," नतालिया सेम्योनोव्ना चिल्ला पड़ी।

"नताशा, एक मिनट ठहरो," आये बोला और फिर अलितेत की ओर मुड़कर उसने कांपते हुए स्वर में कहा:

"क्या तुम भूल गये कि अब मैं सफ़ेद लोमड़ी नहीं हूं और न तुम भेड़िया हो। छोड़ दो तीग्रेना को!" वह चिल्लाया और उसी क्षण अलितेत का गला पकड़ लिया।

अलितेत ने किसी तरह अपने को छुड़ा लिया और दोनों फ़र्श पर ढह गये। नतालिया सेम्योनोव्ना बाहर जाकर मदद के लिए पुकारने लगी।

आये और अलितेत में गुत्थंगुत्था हो रही थी। तीग्रेना ने अलितेत की टांग पकड़कर उसे दरवाज़े की ओर घसीटना शुरू किया।

इसी बीच लोस दौड़ता हुआ आ पहुंचा। अन्द्रेई और मिलीशियामैन भी उसके साथ थे।

"गिरफ़्तार करो उसे," लोस ने हुक्म दिया।

अलितेत कमरे के बीचोंबीच खड़ा, हांफता हुआ, अपने माथे का पसीना पोंछ रहा था।

"सरदार!" वह बोल उठा। "तीग्रेना मेरी बीवी है। तुमने ख़ुद उसे मेरे यारंग में देखा है!"

"ले जाओ इस बदमाश को यहां से!" लोस गरज उठा।

उन्नीसवां अध्याय

तट-प्रदेश में एक आश्चर्यजनक घटना घटी थी। रूसियों ने अलितेत को काठ के यारंग में बंद कर रखा था और वह उसमें उसी तरह बैठा था जिस तरह जाल में सील। यह ख़बर चारों ओर जंगल की आग की तरह फैल गयी। लोगों ने भयानक अफ़वाहें उड़ा उड़ाकर उसे और भी उग्र स्वरूप दे दिया था।

समुंदरी शिकारियों के यारंगों में, बहेलियों की बस्तियों में, बरफ़-गाड़ियों के मार्गों पर और टुंड्रा की गहराइयों में हर किसी की ज़बान पर अलितेत का नाम था। यहां तक कि जहां कहीं दो या तीन आदमी मिल गये कि बस, इसी बात की चर्चा छिड़ जाती थी।

ओझाओं ने अफ़वाह उड़ा दी कि रूसी लोग लकड़ी के मज़बूत यारंग बनाकर उनमें चुकची लोगों को पकड़ पकड़कर बंद कर देना चाहते हैं।

अब लोगों को बड़ी बड़ी नदियों के किनारे रहने की हिम्मत न होती। उन्होंने सोचा कि रूसी लोग गरमियों में अपनी स्वचालित व्हेल-नावें लेकर आयेंगे और सभी बारहसिंगा-पालकों को पकड़ लेंगे और बाद में उनका ख़ात्मा कर डालेंगे। हम बारहसिंगा-पालकों को अब बड़े बड़े पड़ावों में नहीं बल्कि एक-एक या दो-दो यारंगों की छोटी छोटी बस्तियों में बंटकर रहना चाहिए। ये रूसी लोग तो हमारे रेवड़ों को चौपट कर देने पर तुले हुए हैं।

कुछ लोगों ने बता दिया कि यह सही नहीं है क्योंकि लोस और अन्द्रेई तो चुकची लोगों के दोस्त हैं।

कुछ भी हो हालत बड़ी मुश्किल हो गयी। यहां तक कि बड़े त्योहार की ख़बर को भी ग्रहण लग गया।

लोस अपने कमरे में चहलक़दमी करता हुआ अन्द्रेई, याराक, वामचो और आये के साथ उक्त स्थिति की चर्चा कर रहा था।

"अलितेत को रिहा कर देना चाहिए। वह यहां से टल जाये," याराक ने सुझाव दिया, "उसी की वजह से तो ये अफ़वाहें उड़ रही हैं।"

"उसे रिहा करना बुरा होगा," वामचो उत्तेजित होकर बोला। "वह छूटा कि और भी ख़तरनाक अफ़वाहें उड़ेंगी।"

आये चुप बैठा था। वह समझ रहा था जैसे इस सब का दोषी वही है।

लोस अन्द्रेई के पास रुककर बोला: "देखो अन्द्रेई, यहां जब क्रांति शुरू होती है तो यह सब ऐसा ही होगा। यही सच्चा संघर्ष है। हमें यहां होशियारी से काम लेना चाहिए। हमें किसी न किसी उपाय से यहां की कुलकशाही और ओझाई का सामना करना चाहिए।"

"मैं समझता हूं कि सिर्फ़ अलितेत को रिहा करना भारी भूल होगी, और कुछ नहीं," अन्द्रेई बोला। "हमें अलितेत की चालाकी और धोखेबाज़ी की खुलेआम जांच करवानी चाहिए। कहो साथियो, तुम लोगों की क्या राय है?"

"यही ठीक होगा, यही ठीक होगा।" आये चिल्ला उठा। "हमें लोगों को सच्चाई बतानी चाहिए और दिखानी भी चाहिए।"

"सुनो साथियो," लोस बोला। "मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं कि हम इन सब बेबुनियाद अफ़वाहों का पर्दाफ़ाश कर देंगे और इसमें ज़रा भी देर न लगेगी। हम अलितेत की खुली जांच का बंदोबस्त करेंगे। लेकिन एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस सुनवाई के समय अलग अलग बस्तियों से ज़्यादा से ज़्यादा लोग आने चाहिए। आये का कहना बिल्कुल ठीक है। लोग ख़ुद ही अलितेत को देख लें और उसकी कहानी उसी की ज़बानी सुन लें। लोगों को पता लग जाये कि वह असल में है कैसा। हम सभी लोगों के सामने उसे खड़ा करके उसकी ज़िंदगी का, धोखेबाज़ी का और उसकी ज़ुल्म-ज़बरदस्ती

का क़िस्सा सुनायेंगे। फिर देखेंगे वह क्या सफ़ाई देता है। हम उसका मुंह खुलवायेंगे। हां, इस मामले का फ़ैसला करने के लिए बूढ़े इल्यीच ग्रौर लिम्रोक जैसे ग्रधिकारी व्यक्तियों की ग्रावश्यकता है। यह बहुत ही ज़रूरी बात है। हमें हर चंद कोशिश करके लिम्रोक को यहां लाना चाहिए।"

"निकीता सेर्गेयेविच, यह बहुत ही ग्रच्छा होगा!" ग्राये बड़े उत्साह के बोल उठा।

"तो साथियो," ग्रन्द्रेई ने कहा, "ग्रब तुम तीनों को ग्रलग ग्रलग बस्तियों में जाकर ग्रलितेत की ज़िंदगी की खुली जांच सुनने के लिए लोगों को बुला लाना चाहिए।"

तीनों नौजवान फ़ौरन रवाना हुए।

"ये हैं सजीव सूचनाएं। समझे दोस्त ग्रन्द्रेई?" उन तीनों को रवाना होते हुए देखकर ग्रौर मुस्कराकर लोस बोला। "ग्रौर सुनो, तुम उस कुतिया के पिल्ले ग्रलितेत को भरपेट खाने पीने को दे देना। जांच के समय वह भूखा ग्रौर मरियल न दिखाई दे। तुमने सुना है न, लोग क्या कहते हैं? कहते हैं कि हम उसे खाने पीने को कुछ नहीं देते।"

"तुम फ़िक्र न करो। वह तो भूखे भेड़िये की तरह खाने पर टूटता है ग्रौर हर खाने के बाद केतली भर चाय पीता है। कहता है कि 'मैं काठ के यारंग में रह रहा हूं तो मुझे खाना भी तांगों वाला ही मिलना चाहिए। वही नमकीन खाना मुझे दीजिये।'"

"इस मुक़दमे में तीग्रेना को बड़ा ग्रहम पार्ट खेलना होगा। ग्रसल में बहुत सी बातें उसी पर निर्भर हैं। वह ग्रपनी बात पर ग्रटल रहेगी न? ग्रगर डिग गयी तो सारा गुड़ गोबर हो जायेगा।"

"क्या कहते हो निकीता सेर्गेयेविच? तीग्रेना तो अलितेत की जानी दुश्मन है। उसकी सारी ज़िंदगी इसी मामले पर निर्भर है। मैंने उससे बातचीत कर ली है। और अब तो नतालिया सेम्योनोव्ना उसके साथ है। तीग्रेना उससे दूर होने का नाम भी नहीं लेती। जाने कैसे एक दूसरे की बात जानती हैं?" अन्द्रेई बोला। अंतिम वाक्य बोलते समय उसके चेहरे पर आश्चर्य सूचक भाव प्रकट हो रहे थे।

"दोस्त अन्द्रेई, मैंने भी यही सोचा था। इसके अलावा और कुछ हो ही नहीं सकता। आज़ादी की प्यास हर ईमानदार आदमी के ख़ून में होती है, भले ही उसके विकास का स्तर कुछ भी क्यों न हो। चलो, हम तीग्रेना से मिल आयें।"

दोनों पास वाले कमरे में चले गये।

"कहो तीग्रेना, क्या हालचाल है?" लोस ने पूछा।

"आये को आप लोगों ने दूर क्यों भेज दिया?" तीग्रेना ने कुछ घबड़ाकर पूछा। "क्या अलितेत यहां नहीं है? इस वक़्त शायद वह ग़ुस्से में है। काठ का यारंग तोड़कर वह भाग जायेगा। वह बड़ा ताक़तवर है। लगता है कि कुछ अनहोनी होगी।"

"तीग्रेना, कुछ फ़िक्र न करो। अलितेत बाहर नहीं आ सकता। मिलीशियामैन पहरा जो दे रहा है।"

"अगर वह मेरे पास आ जाये तो मैं उसपर गोली चला दूंगी। यह देखिये, आये मेरे पास बंदूक़ छोड़ गया है।"

"अन्द्रेई, तीग्रेना से कह दो कि मैं रात उसी के साथ बिताऊंगी," नतालिया सेम्योनोव्ना बोली।

अन्द्रेई ने जब तर्जुमा करके बताया तो तीग्रेना नतालिया सेम्योनोव्ना की ओर देखकर रूसी में बोली:

"अच्छा, नताशा।"

बीसवां अध्याय

अलितेत के जीवन की जांच से संबंधित समाचार के लिए वह समय उपयुक्त न था। उस समय सफ़ेद लोमड़ियों की असाधारण बाढ़ सी आ गयी थी। यहां तक कि लोमड़ियां बस्तियों में घुस आती थीं और कुत्ते उन्हें पकड़ लेते थे। शायद ही ऐसा कोई बहेलिया रहा हो जो ख़ाली हाथ घर लौट आया हो। कभी कभी तो एक ही शिकारी के फंदों में दो-दो तीन-तीन लोमड़ियां फंसी मिलतीं। अपने यारंग की ओर बरफ़-गाड़ी दौड़ाता हुआ शिकारी दूर ही से चिल्ला उठता, "एक और लोमड़ी ले आया हूं!"

ठिठुरे हुए जानवर को पोलोग में गरमाया जाता और शिकारी उसे अपने घुटनों पर रखकर बड़ी सावधानी से उसकी क़ीमती खाल उतार लेता। छुरे की नोक से वह लोमड़ी के होठों से लेकर चीरना शुरू कर देता और बड़ी सफ़ाई से इस तरह खाल उतार लेता मानो पैर से मोज़ा उतार रहा हो। मुर्दा जानवर का लाल लाल मांस धीरे धीरे दिखाई देने लगता। फिर एक टिकठी पर खाल फैलाकर वह बड़ी ख़ुशी से चिल्ला उठता, "इसपर चाय की चालीस से कम ईंटें न लूंगा!"

लेकिन यह सब हुआ कैसे? इधर अलितेत जहां जहां गया वहां यही कहता गया कि शीघ्र ही टुंड्रा से सफ़ेद लोमड़ियां ग़ायब हो जायेंगी क्योंकि रूसी लोग उनका ख़याल नहीं रखते और अब वहां कोई अमेरिकन तो है नहीं।

और इधर तो सफ़ेद लोमड़ियों के ऐसे झुंड के झुंड आ रहे थे जैसे पहले कभी न आये थे।

अब क्या किया जाये? याराक खालें खरीद लेता था। उसका कहना था कि अलितेत की जिंदगी की जांच के मौक़े पर हर किसी

को हाज़िर होना चाहिए। हां भई, ख़बर तो बड़ी दिलचस्प थी। यह सही है कि जांच की ख़बर बाद में उनके पास ग्रा ही पहुंचेगी लेकिन खुद ही जाकर उसे सुनने में दुगुना मज़ा था। इसी लिए लोमड़ियों के शिकार का मौसम होने पर भी लोगों ने सांस्कृतिक सेवा केंद्र के लिए रवाना होने का निश्चय किया। सोचा कि फंदों की निगरानी कुछ दिन ग्रौरतें कर लेंगी। एनमकाई की ग्रौरतों ने जाड़ों भर यह काम कर दिखाया था। दूसरी बात यह थी कि याराक के ग्रामंत्रण को ठुकराना भी ठीक न था। ग्रब वह सौदागर जो था! ऐसे ग्रादमी का ग़ुस्सा मोल लेना ग्रक़्लमंदी न थी।

सारे तट-प्रदेश में फैला हुग्रा सनसनीखेज़ समाचार स्त्रियों ने विशेष उत्सुकता से सुन लिया। कइयों ने तीग्रेना की क़िस्मत के बारे में ख़ास दिलचस्पी दिखायी। कुछ ग्रौरतें परेशान थीं कि ग्राख़िर इस सब का नतीजा क्या होगा जबकि कुछ तीग्रेना के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रही थीं।

ग्राये ने लोगों से कह दिया कि ग्रलितेत फिर तीग्रेना को ले जाने के लिए ग्राया है लेकिन नया क़ानून तीग्रेना के साथ है।

जांच के दिन बड़े सबेरे से ही सांस्कृतिक सेवा केंद्र की ग्रोर जाने वाली बरफ़-गाड़ियों का तांता सा लग गया।

ग्रलितेत की जांच का काम दोपहर को शुरू हुग्रा। जहां जांच चल रही थी वह बड़ा कमरा लोगों से ठसाठस भरा हुग्रा था। हर कोई बड़ी ग्रधीरता से सोच रहा था कि, "ग्राख़िर होगा क्या? जांच का मतलब क्या है?"

लोस एक छोटे से मंच पर एक ख़ास मेज़ के पास बैठा था। इस समय उसका चेहरा बहुत ही गंभीर तथा कठोर था। उसकी एक बग़ल में इल्यीच बैठा था ग्रौर दूसरी बग़ल में लिग्रोक। दोनों के चेहरे पर प्रसंगानुकूल गंभीरता छायी हुई थी। उन्हीं को निर्णय करना

था कि अलितेत का बर्ताव सही था या ग़लत। लोस ने अपना स्थान ग्रहण करते हुए यही कहा था।

मिलीशिया के पहरे में अलितेत आ पहुंचा। उसे आगे लाकर एक अलग बेंच पर बैठाया गया।

लोग खड़े होकर अलितेत को इस तरह घूरने लगे मानो उसे पहले कभी देखा ही न हो। हर कोई फुसफुसाने लगा और सब की फुसफुसाहट के मेल से वैसी ही आवाज़ पैदा हुई जैसी किसी ख़ामोश दिन में किनारे से टकराने वाली लहरों से पैदा होती है।

"देखो, देखो, वह ज़रा भी दुबला नहीं हुआ! लोग कहते थ कि ये रूसी उसे खाना नहीं देते। अब तो साफ़ है कि किसी ने ऐसे ही यह अफ़वाह उड़ा दी थी।"

"अरे, यहां तो उसकी ख़ास इज़्ज़त की जा रही है! देखो न, उसे एक पूरी बेंच दी गयी है। सब लोगों से अलग एक ख़ास जगह पर वह बैठा है। ये रूसी अलितेत से मेल-मिलाप करने की तो नहीं सोच रहे हैं?"

लोस खड़ा हो गया और एक काग़ज़ पढ़कर बताने लगा कि अलितेत पर अमुक अमुक आरोप लगाये गये हैं। फिर अलितेत की ओर मुड़कर कहा:

"प्रतिवादी अलितेत, तुम्हें अदालत से कुछ कहना है?"

"क्या कहा—'अदालत?'" अलितेत धीरे से बोल उठा।

"अदालत से बात करते समय तुम्हें खड़ा होना चाहिए।"

अलितेत ने बैठे बैठे ही चारों ओर नज़र दौड़ायी और कुछ रुककर कहा:

"क्यों? मैं खड़ा क्यों रहूं? आदमी खड़ा हो, लेटा हो या बैठा, ज़बान उसके मुंह में उसी तरह चलती है। देखो, सब लोग बैठे हैं फिर मैं ही क्यों खड़ा हो जाऊं?"

"जब तक उसके कान खुले हैं, बैठने दो उसे," इल्यीच बोला।

"साथी इल्यीच, तुम्हें जो कुछ कहना है, बाद में कहना," लोस ने बात काटकर कहा।

"क्यों? बाद में क्यों? मैं अभी बोलना चाहता हूं। मैं इस चार्ली को अच्छी तरह जानता हूं। बहुत दिन हुए, इसने मेरे दो बढ़िया कुत्ते छीन लिये थे," बूढ़े ने गद्गद स्वर में कहा। "वह उन्हें मुफ़्त में ले गया! ऐसे ही भगा ले गया," बूढ़ा ऊंचे स्वर में चिल्ला उठा।

"साथी इल्यीच, यह सब बताने का मौक़ा तुम्हें बाद में मिलेगा," लोस ने फिर से आश्वासन देते हुए कहा। वह कोशिश कर रहा था कि मुक़दमे की सुनवाई में शांति और सुव्यवस्था रहे। लेकिन बूढ़ा बड़े आवेश में था और उसे रोकना असंभव था।

"नहीं, नहीं, मैं अभी बोलना चाहता हूं," वह ज़िद्द पकड़कर बोला।

"बोलने दो इल्यीच को," लिओक ने गंभीरतापूर्वक कहा।

अब तो लोस को भी मानना पड़ा।

अलितेत सभी को बारीकी से देख रहा था। अब वह बूढ़े इल्यीच को घूरने लगा। उसे ऐसा लगा कि इस बूढ़े के हमलों से लोस उसकी रक्षा कर रहा है।

इल्यीच को याद हो आया कि 'बड़े भाषण' के त्योहार के अवसर पर हर वक्ता ने मंच के किनारे के पास आकर भाषण दिया था। फिर वह भी जल्दी जल्दी उठकर आगे बढ़ा। श्रोताओं को संबोधित करके वह शांत स्वर में बोलने लगा:

"भाइयो, ज़रा इस आदमी की ओर देखो तो। क्या यह चार्ली अच्छा आदमी है? नहीं, बिल्कुल नहीं। बताओ, उसने मेरे कुत्ते छीने थे कि नहीं? हां, हर किसी को यह मालूम है। पनान्तो का अगुआ कुत्ता भी उसने हड़प लिया था न? हां तो। उस कुत्ते का

नाम भी उसने बदल दिया। चार्ली नाम रखा उसने। ख़ुद अपने को भी वह चार्ली कहता है।"

"मैंने यह नाम छोड़ दिया है। मैं फिर से अलितेत बन गया हूं," अपराधी ने चिल्लाकर कहा।

"ओहो?" इल्यीच को आश्चर्य हुआ। "यह ख़बर मैं आज ही सुन रहा हूं।"

"यह ख़बर सही है," लिग्रोक ने हामी भरी। "मेरिकन उसे धोखा दे गये और वह फिर से अलितेत बन गया!"

"ठीक है, अलितेत ही सही," इल्यीच ने कुछ घबड़ाकर कहा। फिर अपनी पेटी कसकर बोलता गया:

"तीन पहाड़ियों के पास वामचो के चारे पर तांगों वाली लैम्प की चरबी किसने उंडेली थी? इसी अलितेत ने," बूढ़े ने अलितेत की ओर उंगली उठाकर कहा। "कहो, क्या वह अच्छा सौदागर भी है? हमसे खालें अच्छे दाम पर कौन ख़रीदता है? अलितेत या याराक? बताओ!" इल्यीच रुक गया। उसके चेहरे पर ख़ुशी की मुस्कराहट थी। उसने मानो सब से गंभीर आरोप सिद्ध कर दिया था। "यह अलितेत मिट्टी के मोल खालें ख़रीदता था। अब हर कोई यह बात जानता है। बड़ा ख़राब आदमी है यह। हर तरह से ख़राब। वह सच्चाई को पैरों तले कुचलता है और धोखेबाज़ी की पूजा करता है। तीग्रेना को ज़बरदस्ती आये के यहां से कौन उठा ले गया? यही अलितेत न? उसने हमारी जमात का क़ानून तोड़ दिया। आख़िर तीग्रेना को आये के यहां से वह क्यों ले गया? क्या आये बचपन ही से उसका मंगेतर नहीं था? तीग्रेना ख़ुद ही बताये कि वह अलितेत की बीवी बनना चाहती थी या नहीं।"

इल्यीच ने ख़ुद ही तालियां बजायीं और अपनी जगह पर जा बैठा।

ग्रलितेत उठ खड़ा हुग्रा ग्रौर इल्यीच को संकेत करते हुए बोला :

"उमकातागेन झूठ बोल रहा है!"

"यहां कोई उमकातागेन नहीं है," लोस ने बात काटी।

इल्यीच ग्रपने स्थान में कुलबुलाया ग्रौर फिर कुछ ऊपर उठकर ग्रलितेत पर तेज़ नज़र गड़ाते हुए बोला :

"ग्रहा! सुन लो। यहां इल्यीच ने भाषण दिया। उसने सिर्फ़ सच्ची सच्ची बातें कहीं। ग्रब तक वह कभी झूठ नहीं बोला। हां, बहुत दिन हुए यहां कोई एक उमकातागेन था। मैं उसे जानता था। वह भी कभी झूठ न बोलता था।"

"सरदार," लोस को संकेत करते हुए ग्रलितेत बोला, "पहले तो हर कोई कहता था कि ग्रलितेत ग्रच्छा ग्रादमी है। मैं ख़ुद भी जानता हूं कि मैं ग्रच्छा ग्रादमी हूं। ग्रौर मेरा दोस्त लिग्रोक जानता है कि जब यारंगों में भूखमरी फैलती थी तो मैं हर किसी को गोश्त का एकाध टुकड़ा ग्रौर चरबी दिया करता था। बहुत सा माल मैंने मुफ़्त में दे डाला।"

"ग्रब मैं तुम्हारा दोस्त नहीं रहा," लिग्रोक बीच ही में बोल उठा।

ग्रलितेत ने हैरान होकर चुप्पी साध ली। फिर वह तीग्रेना के बारे में बोलने लगा :

"वह तो ग्रभी नादान छोकरी है। ग्राख़िर ग्रौरत ज़ात जो ठहरी। मेरे यारंग में उसे कभी भूखा न रहना पड़ा। ग्रगर कोई कुत्ता ग्रपने मालिक की बात न माने तो हर कोई जानता है कि उसे कोड़े लगाने पड़ते हैं। ग्रौर मैं इसी लिए तीग्रेना को वापस ले जा रहा हूं। कई शिकारियों के पास तो एक बीवी के लिए भी काफ़ी खाना नहीं था लेकिन मेरे यारंग में खाने की कभी कमी न थी। इसी लिए मैंने तीग्रेना को दूसरी बीवी बना लिया। बताइये, इससे उसका क्या बुरा हुग्रा? क्या मेरे यारंग में उसे कभी भूखा रहना पड़ा?"

"फिर तीग्रेना तुम्हारे यारंग से भाग क्यों गयी? ग्रौर एक बार नहीं, कई बार," लोस ने टोककर पूछा।

ग्रब भी ग्रलितेत को लगा कि लोस उसका समर्थन कर रहा है।

"हां, मैं भी यही पूछता हूं कि वह क्यों भाग गयी?" वह उत्सुकता से बोल उठा। "बस, इसी लिए कि वह बेसमझ है।"

हर कोई जानता था कि रूसी सरदार को ग्रलितेत बिल्कुल पसंद नहीं है। हर कोई मान बैठा था कि वह ग्रलितेत को ख़ूब डांट-फटकार सुनायेगा लेकिन इधर बात बिल्कुल उल्टी हो रही थी। ग्रलितेत के साथ यह वैसे ही शांत स्वर में बोल रहा था जैसे कोई शिकारी ग्रपने दोस्त से बोलता है। इन रूसियों को समझना बड़ा मुश्किल था! ख़ुद ग्रलितेत को भी ग्राश्चर्य हुग्रा ग्रौर वह ग्रधिकाधिक ढिठाई से बोलता गया। ग्रलितेत ने सोचा कि वे दोनों ग्राज तक इतने दोस्ताना ढंग से कभी न बोले थे।

"बैठो ग्रलितेत," लोस ने कहा। "तीग्रेना, ग्रब तुम बताग्रो कि ग्रलितेत के यारंग में तुम क्यों न रहना चाहती थीं ग्रौर ग्रभी भी नहीं चाहतीं।"

"ग्रौरत से पूछने की क्या ज़रूरत?" ग्रलितेत कुछ गुस्ताख़ी से गरज उठा।

"चुपचाप बैठे रहो!" लोस ने कठोर स्वर में कहा।

तीग्रेना उठी ग्रौर ग्रलितेत पर नफ़रत की नज़र डालती हुई चुपचाप खड़ी रही। वह मानो बोलने के लिए साहस बटोर रही थी। उसका दिल धड़क रहा था।

"बोलो तीग्रेना, सब कुछ कह दो न," ग्राये ने फुसफुसाकर कहा। वह उसके पीछे ही बैठा था।

तीग्रेना ने ग्रपनी कहानी शुरू की:

"मेरा बाप कामेनवात ग़रीब ग्रादमी था। वह बूढ़ा हो गया था ग्रौर ग़रीब था। उसने बहुत दिन पहले ग्रलितेत से कुछ माल ले लिया था लेकिन उसके बदले वह खालें नहीं दे सका। बुढ़ापे की वजह से वह लोमड़ियां फंसाने नहीं जा सकता था। इसी लिए वह ग्रलितेत से डरता था। कामेनवात का मन मेरे साथ था लेकिन उसकी ज़बान वही बोलती थी जिससे ग्रलितेत ख़ुश होता था। फिर ग्रलितेत मुझे ज़बरदस्ती ले गया। मैं उसके साथ रहने लगी। एक दिन उसका दोस्त एचावतो हमारे यहां ग्रा धमका। यह बुड्ढा बड़ा नीच था। उस रात को ग्रलितेत ने मुझे उसके पास भेज दिया। लेकिन मैं वहां से भागकर ग्रपने बाप के पास चली गयी। ग्रलितेत मुझे वापस ले ग्राया। मेरी हालत ग्रौर भी ख़राब हो गयी। मेरा कलेजा मसोस उठा। मैं फिर भाग गयी ग्रौर ग्रलितेत मुझे फिर पकड़ लाया। उस वक़्त यारंग में एक ग्रौर बीवी ग्रा चुकी थी। यह थी पहली बीवी की बहन। उन दोनों में हाथ की उंगलियों जैसी दोस्ती थी। मैं शिकार के लिए बाहर जाया करती। मैं बरफ़ में बैठी रहती, ठिठुर जाती लेकिन घर जाने को मन न करता। मैं कितने सील पकड़ लाती थी। ग्रलितेत ग़लत कह रहा है कि वह मुझे खिलाता पिलाता था। ग्रसल में ग्रपना खाना मैं ही कमाती थी ग्रौर उसके कुत्तों की ख़ुराक का भी बंदोबस्त करती थी। उसके पास चार कुत्ता-दल थे। उनके लिए काफ़ी ख़ुराक की ज़रूरत थी। लोग जानते हैं कि मैं कितना शिकार मार लाती थी।"

"तीग्रेना, ग्रदालत को बताग्रो: तुम ग्रलितेत के पास वापस जाना चाहती हो कि नहीं?" लोस ने पूछा।

"नहीं। बिल्कुल नहीं!" तीग्रेना बोली। "ग्रगर तुम ख़ुद हुक्म दो तो भी नहीं जाऊंगी। वहां जाने के बजाय मैं चट्टान से कूद पड़ूंगी।"

"सरदार," अलितेत बोला, "वह तो औरत है। उससे पूछना बेकार है। क्या मालिक कभी अपने कुत्ते से पूछता है कि वह कहां जाना चाहता है? उसकी ज़बान बहुत बड़बड़ाने लगी है। उफ, वह शायद भूल गयी कि मैंने उसकी क़ीमत अदा कर दी है। मैं उसे मुफ़्त में थोड़े ही उठा लाया हूं। मैंने उसके बाप कामेनवात को एक-



दो नहीं, चार कुत्ते दिये थे और काफ़ी बड़ा क़र्ज़ा भी माफ़ कर दिया था।"

तीग्रेना बहुत ही उत्तेजित हो उठी। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसके जी में आया कि उसे करारा जवाब दूं लेकिन आये ने रोक दिया।

"ठहरो तीग्रेना, ठहरो! अलितेत को बोलने दो। लोस वैसे भी उसका विश्वास थोड़े ही करता है," आये फुसफुसाया।

लेकिन तीग्रेना को ऐसा लगा कि इस जांच का नतीजा यह होगा कि उसे अलितेत के हवाले कर दिया जायेगा। इस विचार से वह सहम गयी।

लोस अलितेत को रोककर बोला:

"तीग्रेना, तुम घबड़ाओ नहीं। तुम्हें ज़बरदस्ती अलितेत के पास कोई नहीं भेजेगा।"

अलितेत और तीग्रेना के जीवन से संबंधित इस जांच का काम शाम तक चलता रहा। तट-प्रदेश में इस तरह की जांच पहले कभी न हुई थी। ओह, जांच के अवसर पर ख़बरों की भरमार सी होने लगी। ये ख़बरें बड़ी दिलचस्प थीं। मेरी ने अदालत को बताया कि कैसे अलितेत तीग्रेना को चार्ली लाल-नकुए के पास ले गया और कैसे आये ने उसका मुक़ाबला किया। फिर लोस की पत्नी नतालिया सेम्योनोव्ना ने सार्वजनिक वकील के नाते भाषण दिया। उसके भाषण में एक ओर उत्कट स्नेह था तो दूसरी ओर तीव्र क्रोध। अन्द्रेई उसके भाषण का तर्जुमा करता गया और लोग दिल लगाकर उसकी बात सुनते रहे।

"वाह भाई, हमने ऐसी ख़बर आज तक कभी न सुनी थी। हमने ठीक ही किया कि ऐसी ख़बर सुनने के लिए यहां आ गये। हमारा आना बेकार नहीं गया। तो यह है नये क़ानून की करामात! यह क़ानून ग़रीबों का साथ देता है," लोग कहते गये।

अदालत ने यह फ़ैसला सुनाया कि अलितेत और तीग्रेना का ब्याह रद्द समझा जाये, तीग्रेना को अलितेत की जायदाद का हिस्सा मिले और अलितेत को हिरासत से रिहा किया जाये।

इन आश्चर्यजनक घटनाओं से लोग दंग रह गये। अलितेत के जीवन की जांच का समाचार अपने सगे-संबंधियों को सुनाने के लिए वे जल्दी अपनी अपनी बस्तियों की ओर चल दिये। वाह, कैसा बढ़िया समाचार था!

इक्कीसवां अध्याय

अलितेत का मन जैसे भंवर में फंस गया था। स्वयं उसे पूरा विश्वास था कि वह भला आदमी है लेकिन लोगों ने उसके बारे में कुछ का कुछ कह दिया था। आख़िर मामला क्या है? इन लोगों की आंखें तो नहीं ख़राब हो गयीं जो उन्हें ठीक ठीक दिखाई नहीं देता? या वे भूल गये कि अलितेत कैसे हर किसी की मदद करता था? अलितेत ने कभी किसी को माल या खाना देने से इन्कार न किया था। जाने इन लोगों को हुआ क्या है! क्या वे सच्चे आदमी नहीं रहे? दूसरों की बात छोड़ दो लेकिन लिग्रोक कैसे बदल गया? उसकी अक़्ल कहां चरने चली गयी?

"मुझे तो लगता है कि ये रूसी जल्द ही पहाड़ी लोगों को भी बिगाड़ देंगे।"

एक आह भरकर अलितेत घर से बाहर निकला और अकेला ही सीधे अपने कुत्तों की ओर चल दिया।

"नहीं, पहाड़ियों में काम करना इन लोगों के लिए टेढ़ी खीर होगी," अलितेत चलते चलते सोच रहा था। "बड़े बड़े रेवड़ों के मालिक उनकी कुछ ख़ास परवाह नहीं करेंगे। उन्होंने एचावतो के पड़ाव में सोवियत क़ायम की लेकिन उसने उन चरवाहों को खदेड़ दिया। एचावतो सब कुछ जानता है।"

अलितेत को एक ओर लिग्रोक बरफ़ में से बाहर निकले हुए कुछ तख़्तों का मुआयना करता हुआ दिखाई दिया। लिग्रोक ने झुककर हुंकारते हुए एक तख़्ता उखाड़ लिया। विशेषज्ञ की दृष्टि से उसने तख़्ते की जांच-पड़ताल की, उसे झुकाने की कोशिश की और फिर इस नतीजे पर पहुंचा कि अगर इस तख़्ते को बरफ़-गाड़ी

की हाल की तरह गरम पानी में डुबाकर रखा जाये तो वह ग्रासानी से झुक सकेगा।

ग्रलितेत उसके पास ग्रा पहुंचा।

"लिग्रोक," वह बोल उठा, "तो तुमने मुझसे दोस्ती छोड़ दी।"

लिग्रोक ने उसपर ग्रांख गड़ायी ग्रौर फिर गंभीरता ग्रौर बड़प्पन की भावना से उत्तर दिया:

"हां, छोड़ दी।"

"भला क्यों?"

"क्योंकि तुम झूठे ग्रादमी हो।"

"मैंने भी तुम्हें दोस्त मानना छोड़ दिया," ग्रलितेत न व्याकुल होकर कहा ग्रौर ग्रपने कुत्तों के पास चला गया।

कुछ न कुछ काम में लगे रहने की ग्रपनी ग्रादत के ग्रनुसार लिग्रोक ने तख़्ता उठाया ग्रौर उसे झुकाने की कोशिश करने लगा। तख़्ता झुकने लगा। "ग्रलितेत इसी तरह झुक रहा है," लिग्रोक ने सोचा।

ग्रलितेत को दूर से ग्रपना कुत्ता-दल दिखाई दिया। कई दिन से उसने ग्रपने कुत्तों को न देखा था ग्रौर परेशान होकर सोच रहा था कि वे ज़रूर दुबले हो गये होंगे। उसे विश्वास था कि उन्हें ठीक से खिलाया नहीं जा रहा है। लेकिन पास ग्राते ही उसका डर काफ़ूर हो गया। कुत्ते उसे ग्रच्छे तगड़े दिखाई दिये। वे उसकी ग्रोर दौड़ पड़े ग्रौर ग्रपने मज़बूत पंजे उसके सीने, पीठ ग्रौर बग़लों पर टिकाकर खड़े हो गये। ग्रलितेत ग्रपने कुत्तों से घिरा खड़ा था ग्रौर उनकी थूथनियां थपथपा रहा था।

एक लड़का सील के मांस से भरा हुग्रा तसला लेकर ग्राया ग्रौर कुत्तों के ग्रागे मांस के टुकड़े फेंकने लगा। लेकिन फिर भी कुत्ते ग्रलितेत से दूर नहीं गये।

ग्रलितेत ने इस लड़के को पहचान लिया। यह था चोवका जो यानराकेनोत की बस्ती में रहता था।

"चोवका, तुम क्यों मेरे कुत्तों को खिला रहे हो?" अलितेत ने पूछा। "तुम कहीं इन्हें अपने कुत्ते तो नहीं समझते?"

"नहीं, पराये कुत्तों को मैं अपने क्यों कहने लगा? अन्द्रेई के कहने पर मैं इन्हें खिला रहा हूं।"

"अन्द्रेई?" अलितेत ने आश्चर्य से पूछा।

"हां अन्द्रेई।"

"अरे, यह कैसे," अलितेत ने सोचा। अदालत वाली घटना के बाद अलितेत समझ न पाया कि अन्द्रेई असल में चाहता क्या है।

वह देर तक विचारमग्न रहा। फिर उसने हर कुत्ते की पीठ पर हाथ फेरकर देखा।

"इनकी खिलाई ठीक हो रही है। लाओ, तसला मुझे दे दो। मैं ख़ुद इन्हें खिलाना चाहता हूं।"

अलितेत एक हाथ में तसला पकड़े दूसरे हाथ से कुत्तों के जबड़ों में मांस के टुकड़े फेंकने लगा। एक एक टुकड़ा गटककर वे दूसरे के इंतज़ार में खड़े रहे। उनकी आंखें और टुकड़ों की आशा में चमक रही थीं।

रवाना होने से पहले अलितेत ने अन्द्रेई से मिलकर बातचीत करने का निश्चय किया। "आख़िर अन्द्रेई ने किसलिए मेरे कुत्तों को खिलाना चाहा था?"

अन्द्रेई उसे एक कमरे में मिला। कमरा काफ़ी बड़ा और साफ़-सुथरा था। उसकी दीवारों पर कई रंगविरंगे काग़ज़ लटक रहे थे। कुछ काग़ज़ों पर से अजनबी रूसी चेहरे नीचे की ओर देख रहे थे। कमरे में वैसी ही कुर्सियां थीं जैसी उसने चार्ली लाल-नकुए के यहां देखी थीं। अलितेत एक कुर्सी पर बैठ गया।

"तुम यहां किसलिए आये?" अन्द्रेई ने रुखाई से पूछा।

"सरदार," अलितेत बोला, "मैं जल्दी ही घर वापस जाऊंगा। इधर तुमने मेरे कुत्तों का अच्छा ख़याल रखा। बिल्कुल सच्चे आदमी की तरह।"

"चलो, अपनी राह लो। लेकिन ध्यान रखो कि अगर तुमने तीग्रेना को अपनी जायदाद का हिस्सा नहीं दिया तो मूछों वाला मिलीशियामैन तुम्हारे पास आ जायेगा। और फिर मामला तुम्हारे लिए भारी पड़ेगा, समझे?"

"ठीक है। मैं तुम्हें काफ़ी लोमड़ियां दे दूंगा। मेरे पास जितनी हैं, सब की सब दे दूंगा। अब उन्हें रखकर मैं करूंगा क्या? मेरिकन मुझे धोखा दे गये। फिर ये खालें मैं तुम्हें दे डालूंगा। सिर्फ़ एक बात करना। तीग्रेना को मेरे साथ चलने के लिए कह देना। उसके बिना मैं मर जाऊंगा। यह सही है कि वह औरत है लेकिन उसकी खोपड़ी में यहां की दूसरी औरतों से कुछ ज़्यादा अक़्ल है। तीग्रेना मुझे ज़रूर चाहिए।"

"तुम्हारे पास वह कभी न आयेगी।"

"अगर वह मेरे पास लौटकर न आयी तो वसंत में तुम्हारी नदियों का पानी ख़ून से लाल हो उठेगा," अलितेत ने धमकी दी।

अन्द्रेई हंसकर उठ खड़ा हो गया और दीवार पर लटके हुए एक बड़े नक़्शे के पास जाकर बोला:

"देखो ये सब नदियां–येनिसेई, लेना, इंदिगिर्का, कोलिमा, चाउन और अमगुएमा–ये सभी बड़ी बड़ी नदियां हैं।"

"अमगुएमा को मैं जानता हूं। मैंने कई बार उसमें सफ़र किया है।"

"ये कभी भी ख़ून से लाल न हुईं," अन्द्रेई कहता गया। "हम जानते हैं कि हमारी नदी भी लाल न होगी।"

इसी बीच लोस आ पहुंचा। अलितेत को देखकर उसकी भौहें चढ़ गयीं। "यहां क्या हो रहा है?" उसने कठोर स्वर में पूछा।

"यह मुझे धमकी दे रहा है कि वसंत में हमारी नदी ख़ून से लाल हो जायेगी," अन्द्रेई ने रूसी में जवाब दिया।

"चले जाओ यहां से!" अलितेत की ओर देखकर लोस गरज उठा। "और याद रखो, फिर कभी यहां न आना!"

अलितेत का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। वह तुरंत बाहर चला गया।

बाईसवां अध्याय

अलितेत समझ चुका था कि वह तीग्रेना से भी हाथ धो बैठा है और व्यापार से भी। उसने फ़ौरन एनमकाई के लिए रवाना होने का निश्चय किया। रास्ते में उसे चोवका मिला। अलितेत ने उसे अपनी बरफ़-गाड़ी जोतने के लिए कहा।

"अलितेत," चोवका बोला, "मैं अभी अभी आये के यारंग में गया था। वहां तीग्रेना बैठी थी। उसने कहा कि मैं एनमकाई से जो कुत्ते ले आयी थी उन्हें अलितेत वापस ले जाये। उसने कहा कि ये कुत्ते तुम्हारे हैं। वह नहीं चाहती कि वे यहां रहें।"

"जोड़ दो उन्हें मेरे कुत्ता-दल के साथ और रास्ते के लिए बरफ़-गाड़ी में कुछ गोश्त भी रख दो," अलितेत बोला।

सुबह की राह न देखते हुए अलितेत उसी रात को चल पड़ा। आकाश अभ्राच्छादित था, तारे छिप गये थे और धरती पर अंधेरा छाया हुआ था। रात की ख़ामोशी में कुत्ते दुलकी चाल में दौड़ रहे थे। अलितेत सारी रात अपनी बरफ़-गाड़ी दौड़ाता रहा। पौ फटने के समय उसे याद आया कि अभी तक कुत्तों को खिलाया नहीं गया है। लेकिन उन्हें खिलाने के बदले उसने फ़ौरन निश्चय कर लिया कि रास्ते में बिल्कुल न रुकते हुए सीधे एनमकाई पहुंच जाऊं। फिर

वह पागल की तरह बरफ़-गाड़ी दौड़ाने लगा। आज तक उसने अपने कुत्तों के साथ इतना क्रूर व्यवहार कभी न किया था। अकारण भी वह कुत्तों पर लाठी तानता रहा और अट्ठाईस कुत्तों वाली वह हल्की सी बरफ़-गाड़ी इस तरह तेज़ दौड़ती गयी मानो उसमें पर लग गये हों।

इन खुले मैदानों की ख़ामोशी में अलितेत को गुस्सा आ रहा था। जांच के समय और उसके बाद अन्द्रेई और लोस के साथ बातचीत करते समय भी वह इतना क्रोधित न हुआ था। रूसियों की याद आते ही उसमें तिरस्कार की भावना भर गयी।

उसके सामने से कुहरा रेंगता सा गया। उसे 'रीछ-कान' कगारे की याद हो आयी। यहीं पर उसने लोस और अन्द्रेई को मरवा डालने की कोशिश की थी। उस प्रसंग का स्मरण होते ही उसने अपने ही को एक ज़ोरदार गाली दे डाली। "कैसा मेरकिचकिन हूं मैं!"

बरफ़-गाड़ी पर सवार होकर उसने यकायक लाठी तानी और पूरा ज़ोर लगाकर बम में जुते हुए कुत्ते की पीठ पर जमा दी। वह बेचारा चीखकर गिर पड़ा और दूर तक घिसटता गया। उसके पैर बेकाम हो गये। अलितेत ने बरफ़-गाड़ी रोक ली, कुत्ते को जोत से छुड़वा लिया और रास्ते में फेंक दिया। बरफ़-गाड़ी फिर हवा से बातें करने लगी।

"इन रूसियों को देखकर आंखों में दर्द होता है और उनकी बातें सुनकर कान कांप उठते हैं। आखिर उस वक़्त 'रीछ-कान' कगारे की तेज़ चट्टानों को मैं कैसे चूक गया?" अलितेत ने सोचा। "और वह ब्राउन? वह तो पक्का बदमाश है! 'चोंच दर्रे' के पास महीना-महीना मैं उसकी राह देखता रहा। लेकिन सब बेकार। ये तांग एक ही थैली के चट्टे-बट्टे होते हैं। उन्होंने किनारे के सभी बाशिंदों को, यहां तक कि लिग्योक को भी बिगाड़ डाला। यही लिग्योक अब अपने को 'आगे बढ़ने वाला' आदमी कहता है।

उसके पास अब एक छोटी सी लाल किताब है जिसमें उसका एक आंख वाला चेहरा चिपका हुआ है। बस, पुरानी ज़िंदगी चौपट हो रही है। पुराने रस्म-रिवाज अभी तक सिर्फ़ पहाड़ियों में जड़ जमाये हुए हैं। हां, लेकिन ये रूसी पहाड़ियों में भी आने-जाने लगे हैं।"

अलितेत रात की ख़ामोशी में विचारों में डूबा हुआ बैठा था। दांत पीसकर वह मन ही मन बोला: "मुझे अब फ़ौरन पहाड़ियों का रास्ता पकड़ना चाहिए। इन रूसियों से दूर दूर रहना चाहिए। पहाड़ियों में वे बार बार नहीं आते। उधर एचावतो के पास अभी भी मेरे कुछ बारहसिंगे बचे हुए हैं। पापिल के पास भी कुछ हैं। छोटे छोटे पशुपालकों के रेवड़ों में भी मेरे कुछ जानवर हैं। अब मुझे अच्छे चरागाहों पर क़ब्ज़ा कर लेना चाहिए।"

घर पहुंचते ही नारगिनाउत को जगाकर वह चिल्ला उठा:

"अरी बुढ़िया सील। अपने शौहर की अगवानी करने के बजाय तुम खुर्राटे ले रही हो! उठो, कुत्तों को कुछ खिलाओ-पिलाओ!" यह कहकर अलितेत बिना कपड़े उतारे ही रोवेंदार खालों पर ढह पड़ा और शीघ्र ही नींद में डूब गया।

बड़े तड़के अलेक ने द्वोरकिन को जगाया।

"मास्टर," वह घबड़ाकर बोली, "अलितेत लौट आया है। मुझे उससे डर लगता है। वह अकेला ही लौटा है। जैसे ही उसे पता लगेगा कि उसका बेटा गोई-गोई भाग गया तो वह ग़ुस्से में आयेगा और जलता पानी चढ़ा लेगा। फिर सब के लिए एक मुसीबत खड़ी हो जायेगी।"

"लेकिन गोई-गोई गया कहां?"

"यह कोई नहीं जानता। उसने नारगिनाउत से सुना कि अलितेत उन सब को पहाड़ियों में ले जाना चाहता है तो वह भाग गया। गोई-गोई पहाड़ियों में नहीं जाना चाहता।"

"आखिर कहां गया होगा?"

"मुझे नहीं मालूम," अलेक ने जवाब दिया। "हो सकता है कि कहीं बरफ़ के बीच बैठा हो।"

अध्यापक मुस्कराया। "नहीं अलेक, वह बरफ़ में भाग जाना चाहता था लेकिन उसकी उम्र ही क्या है। बरफ़ में चला जाता तो मर जाता बेचारा। फिर मैंने उसे रोक लिया।" इसके बाद अध्यापक धीमे स्वर में बोला, "अलेक, गोई-गोई मेरे कमरे में ही सो गया है। वह मेरे पास ही रहे..."

अलेक को बड़ा आश्चर्य हुआ।

"यह देखो, मैं वामचो की बंदूक़ ले आयी हूं," वह उत्तेजित होकर बोली। "यह तुम अपने कमरे में रख दो। लगता है कि अलितेत बहुत ही ग़ुस्से में होगा।"

"ठीक है अलेक, तुम फ़िक्र न करो। बंदूक़ मेरे पास भी है। ख़ैर, तुमने क्या कहा कि अलितेत अकेला ही आया है? मतलब तीग्रेना उसके साथ नहीं है?"

"हां हां, वह अकेला ही आया है।"

"अलेक, मैं जानता था कि उसे अकेला ही आना पड़ेगा।"

"क्या तुम रूसी ओझा हो?" अलेक ने अचरज से पूछा। द्वोरकिन मुस्करा उठा।

"अलेक, मैं अध्यापक हूं बस।"

"जाने अलितेत के मन में क्या है। वह शायद हमें मार डालेगा।"

"नहीं अलेक, यह नहीं हो सकता," द्वोरकिन ने शांत स्वर में कहा।

अलितेत काफ़ी देर तक सोया रहा। इस दौरान नारगिनाउत बराबर परेशान रही कि अलितेत को कैसे बताया जाये कि गोई-गोई भाग गया है।

अलितेत जब चाय पी रहा था, उसी समय नारगिनाउत बोली :

"इधर तीन दिन से गोई-गोई का कुछ पता नहीं।"

"याने? कहां गया वह?" अलितेत ने रुखाई से पूछा।

"मुझे मालूम नहीं। वह शायद किनारे को छोड़कर पहाड़ियों में नहीं जाना चाहता। वह कहीं भाग न गया हो!"

नारगिनाउत को आश्चर्य हुआ जब अलितेत ने शान्त स्वर में कहा :

"जो पिल्ला अपने मालिक का हुक्म नहीं मानना चाहता उसे रखकर भी आख़िर क्या करेंगे? भाग जाये अपनी बला से।"

अलितेत उठ खड़ा हुआ और अपने को ओझा घोषित कर दिया। साथ में खाना-वाना कुछ न लेते हुए वह चट्टानों के पास चला गया और तीन दिन पिशाचों की मानता करता रहा। तीन दिन के उपवास के बाद वह घर लौट आया। वह बहुत ही दुबला हो गया था और उसके कपड़े फटकर चिथड़े हो गये थे। यद्यपि वह भूखा था फिर भी उसने शाम तक खाने का नाम न लिया। शाम को नारगिनाउत उसके लिए सील का मांस ले आयी।

"पागल कहीं की! क्या अलितेत इतना ग़रीब हो गया है कि तुम उसे यह गोश्त खिला रही हो! यह तो किनारे पर रहने वाले चूहाखोरों को ही पसंद आ सकता है। मुझे बारहसिंगे का गोश्त दो!" अलितेत चिल्ला उठा।

"अलितेत, अब तुम ओझा बन गये हो और ओझा कभी इस तरह चिल्लाकर नहीं बोलते," नारगिनाउत ने उसे उपदेशक के स्वर में स्मरण दिलाया।

"कह दिया न, कि मेरे लिए बारहसिंगे का गोश्त ले आओ," अलितेत और ज़ोर से चिल्लाया।

"हमारे यहां बारहसिंगे का गोश्त नहीं है। हमें जाकर बारहसिंगा लाना चाहिए।"

"तो फिर हम किनारे से ग्राज ही विदा लेंगे ग्रौर रात को ही पहाड़ियों के लिए रवाना होंगे – बस, हमेशा के लिए।"

"लेकिन हम ग्रपनी सारी चीजें बटोरेंगे कैसे? हमारे पास ग्रब सिर्फ़ तीन बरफ़-गाड़ियां बची हैं। हर चीज़ तो तुम नहीं ले जा सकोगे। हमारा यह यारंग, वह लोहेदार भंडार..."

"बेवक़ूफ़ कहीं की! ख़ानाबदोश के लिए लोहे की क्या ज़रूरत?"

"फिर वह मास्टर उसे ले जायेगा। भला, हम क्यों उसके लिए यह छोड़ दें?"

"ग्रोहो, लगता है कि तुम भी तीग्रेना जैसी ग्रच्छी सलाह दे सकती हो। उधर तीग्रेना की ग्रक़्ल पर परदा पड़ गया है ग्रौर वह बेवफ़ा हो गयी है। ग्रच्छा, तुम यह रंभा लेकर समुंदर पर जाग्रो ग्रौर कुत्ते की शक्ल वाले टीले के ग्रागे बरफ़ में एक गड्ढा बना दो। गड्ढा दो क़दम लंबा ग्रौर डेढ़ क़दम चौड़ा हो। जाग्रो।" यह कहकर ग्रलितेत खालों पर फिर पौढ़ गया।

एक ग्ररसे से ग्रलितेत ने हजामत नहीं बनायी थी। वह लोहे के तारों जैसी भूरी ग्रौर विरल दाढ़ी सहला रहा था। उसके खिंचे हुए गालों पर सिकुड़न पड़ी थी ग्रौर उसकी उत्तेजित ग्रांखें संकरे गड्ढों में से झांक रही थीं।

"भंडार ग्रौर यारंग के सभी खंभे, तख़्ते ग्रौर लट्ठे उखाड़कर एक ढेर बना लो। ग्रत्तेनेउत को इस काम में लगा दो। देखो, ग्राज रात को हमें सांस लेने की भी फ़ुरसत नहीं मिलेगी।"

सारी बस्ती जब गहरी नींद में डूब गयी थी, उस समय ग्रलितेत ने भंडार की पनारीदार चादरें उतारीं ग्रौर ग्रौरतें उन्हें बरफ़-गाड़ी पर लादकर समुंदर के पास बरफ़ में बनाये गये गड्ढे की ग्रोर ले गयीं।

ग्रलितेत के व्यापारी भंडार का ढांचा ग्रंधेरे में व्हेल के कंकाल

जैसा लग रहा था। लोहे की चादरों की आख़िरी किस्त जब गड्ढे की ओर ले जायी गयी तो अलितेत ख़ुद भी जल्दी जल्दी वहां चला गया। एक चादर हाथ में उठाकर वह देर तक उसके लहरदार और कलईदार हिस्से पर नज़र गड़ाये रहा। फिर वह गड्ढे के किनारे चला गया और चादर उसमें छोड़ दी। चादर नीचे खिसकती गयी और गहराई में ग़ायब हो गयी। अलितेत ने, एक के बाद एक, चादर गड्ढे में छोड़ना शुरू किया।

नारगिनाउत जल्दी जल्दी एक एक चादर उठाकर उसके हाथ में दे रही थी। वह बड़ी ख़ुश थी। अब नयी ज़िंदगी शुरू हो रही है। इसमें न व्यापार होगा और न लोहेदार भंडार ही। यह ऐसी ज़िंदगी होगी जैसी सभी सच्चे आदमियों की होती है। वाह, कैसा मज़ा रहेगा। बड़े से रेवड़ के पास रहेंगे और पेट भर खाना मिलेगा। अलितेत के साथ और भी लोग रहना चाहेंगे। वे उसके बारहसिंगों की रखवाली करेंगे और उसके पास रहकर अपना पेट पालेंगे।

औरतों ने झटपट सभी लट्ठों और तख़्तों को घसीटकर उनका एक ढेर बना दिया।

"अरे, ये चीज़ें तुम यहां क्यों ले आयीं? ले जाओ चौकी वाले मचान के पास। वे लोग इस मचान से काम लेना चाहेंगे। तुम यह सारी लकड़ी मचान के चारों ओर लगा दो।"

हवा का झोंका ज़मीन से सटकर चल रहा था।

अलितेत सारी रात जी-तोड़ मेहनत करता रहा। तीन बरफ़-गाड़ियां तैयार खड़ी थीं। उनपर पहाड़ियों की ज़िंदगी के लिए ज़रूरी घरेलू चीज़ें लदी हुई थीं।

आकाश में उत्तर-ध्रुव-प्रभा की रंगबिरंगी किरणें झिलमिला

उठीं। गुज़रते हुए एक बादल के पीछे से चांद की कोर ने पलभर झांककर देखा। हवा हहरा रही थी।

अलितेत मिट्टी के तेल का डिब्बा लिये मचान के पास आ पहुंचा। लकड़ी के ढेर पर तेल छिड़ककर उसने एक जलती माचिस उसपर फेंक दी। सूखी लकड़ी के ढेर से फ़ौरन आग की प्रचंड ज्वाला धधक उठी।

अलितेत आसुरी आनंद से इस अभूतपूर्व होली पर आंखें गड़ाये खड़ा था। धधकती हुई आग की लपटों को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वहां पुराणकथा का कोई शतबाहु राक्षस खड़ा हो।

औरतें बरफ़-गाड़ी पर बैठी हुई भयचकित दृष्टि से यह हृत्कंपकारी दृश्य देख रही थीं। उधर मचान धड़धड़ाकर धराशायी हो रहा था।

"बस, हो चुका," अलितेत बोल उठा। वह आगे वाली बरफ़-गाड़ी के पास दौड़ा और पीछे मुड़कर होली की ओर इस तरह देखा मानो उसकी लंबी लंबी लपटों से डर रहा हो। फिर हवा में डंडा घुमाता हुआ वह कुत्तों को संकेत कर ज़ोरों से चिल्ला उठा।



पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है:

२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

ТИХОН СЕМУШКИН

АЛИТЕТ УХОДИТ В ГОРЫ

На языке хинди

"इस पुस्तक के सभी चरित्र वास्तविक जीवन से लिये गये हैं। याराक, वामचो ग्रौर ग्राये जैसे कई चुकची नौजवानों से ग्रौर लोस ग्रौर जुकोव जैसे सोवियत देश के संदेशवाहकों से मैं मिला। स्थानीय जनता को लूटकर मालदार बनने वाले ग्रौर विदेशी निवासियों के एजेंटों का काम करने वाले ग्रलितेत जैसे चुकची कुलक भी मैंने देखे..."

